

वन्देमातरम्

पाली जिला स्वतंत्रता संग्राम से विकास के सोपान तक

प्रेरक-प्रणेता
श्री मोहनराज जैन

सम्पादक मण्डल
डॉ जवाहरचन्द्र पटनी डॉ माधोसिंह इन्दा
चन्दनसिंह एडवोकेट रामलाल मोहबारशा
प्रकाशनारायण मोहनोत

सम्पादक
महेन्द्र जैन

प्रकाशक
वन्देमातरम् ग्रंथ प्रकाशन समिति
बाली-306 701 (पाली-राजस्थान)

वन्देमातरम् ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाली

मोहनराज जैन

संयोजक

जवाहरचन्द्र पटनी (फालना)	सुभाष रावल (पाली)
चन्दनसिंह (बोया)	कान्ति राका (सादडी)
प बट्टीनारायण शर्मा (बाली)	मोहनलाल शर्मा (लाठाडा)
इब्राहीम जई (बाली)	प्रकाशनारायण मोहनोत (खीमेल)
दाऊलाल शर्मा (बाली)	केवलचन्द गुलेच्छा (पाली)

वन्देमातरम्

प्रकाशक

वन्देमातरम् ग्रंथ प्रकाशन समिति
बाली-306 701 (पाली-राजस्थान)
फोन 2039

1993

मूल्य दो सो रुपये मात्र

मुद्रण

मे पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर-4
मे सर्वेश्वर प्रिन्टर्स, जयपुर-3

आवरण मुद्रण

मे जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर-1

मुख पृष्ठ एवं अन्य चित्रों के आकल्पक एवं रचनाकार
मोहनलाल शर्मा व्याख्याता
पो लाठाडा सादडी



मेरे प्रेरणा-स्रोत

गुलामी ता एक मन स्थिति की परिचायक हे पर उससे भी अधिक भयावह हे- शोषण, भय, आतक और पराधीनता से उत्पन्न दारुण निर्धनता, जो एक जीवन की ही नहीं पीढिया की हे, एक गाव की नहीं हजारों गावा मे फेली अधेरी झोंपडियो की हे सेकडा-हजारो गावा मे बसे उन अनाम लोगो ने, विशेषकर किसानो और पिछडी जाति के निरीह लोगो ने मुक्त भाव से जो सहन की हे, वे ही हैं मेरी प्रेरणा के असली स्रोत। उनकी अन्तज्वाला ने ही इस कथानक के नायको मे गुलामी के विरुद्ध क्राति की - सघर्ष की चिनगारिया पेदा की।

ऐसी ही अन्तज्वाला ने पैदा किया जबाली ग्राम के मूला जी चौधरी को, जिन्होंने इन्दरवाडा मे सीना तान कर गोलिया खायीं और शहीद हो गये, देवली-पाबूजी के मास्टर रामेश्वरजी को, जो ठाकुर की पिस्तोल के सामने सीना खोलकर खडे हो गये सोजत के हरिभाई किकर को, जो स्वय अत्याचारो के विरोध स्वरूप चिता मे जल कर स्वाहा हो गये, गूदोज के रामप्रतापजी शर्मा और पाली के रामप्रसादजी गाधी को जिन्हे मैंने लहु-लुहान होते देखा नीमाज के क्रातिकारी माधालालजी सुथार को जिनको अत्याचारी ने भरी सभा मे पीट-पीट कर हड्डी-पसली तोड दी चण्डावल के हीरागर श्री छेलारामजी को, जिनके सिर पर जूता की भार पडी और हर चोट पर वे 'भारत माता की जय' का घाघ करते रहे।

क्राति की वह अन्तज्वाला सैकडो दिलो मे धधकने लगी थी। उसकी दास्तान सुनकर रोगटे खडे हो जाते हैं। 85 वर्षीय मास्टर पूरणमलजी जब श्री छेलारामजी की दास्तान सुना रहे थे तो मेरे साथ उपस्थित जानेमाने छायाकार श्री काति राका, लेखक व इतिहासकार डॉ जवाहरचन्द्रजी पटनी, पत्रकार श्री सुभाष रावल तथा यशवन्तजी रुचिर की आखो में आसू छलछला आये थे। उसी क्रम मे बगडी की बृहद् जनसभा मे जब गोलिया चलीं तो अनेक लोग तो शहीद हुए ही, जेल मे सड-सडकर श्री मीठालाल काठेड सरीखे हानहार युवक को अपनी जान से भी हाथ धोना पडा।

मुझे आज भी आश्चर्य होता है यह सोचकर कि जब मैं विद्यार्थी जीवन मे अपने गाव देवली-पाबूजी मे जागीरी जुल्मो के विरुद्ध हाथ मे तिरगा लेकर लोकनायक जननारायण जी व्यास द्वारा सिखाये गये गीत-"मत दूध लजाइ जे पाछो मत आई जे बेटा राड सू"

गाता हुआ ठाकुर द्वारा निषिद्ध क्षेत्र गोचर में गाया को चराने के लिए रवाना हुआ तो गाव के भाले भाले, अनपढ़ मजदूर और उपेक्षित वर्ग के बालक और बूढ़े स्त्री-पुरुष टट्ट के टट्ट वही गीत गाते हुए मेरे साथ हो गये थे। जागीरी जुर्माने के विरुद्ध उठी यह आवाज असाधारण थी, उत्प्रेरणा से ओत-प्रोत थी और वही शक्ति थी जो दारुण कष्टों में भी एकजुट होकर आजादी मिलने तक सघर्ष करती रही।

ये तो कतिपय छुटपुट उदाहरण हैं जो प्रेरणा बन कर उम्र समय यहाँ वहाँ उभरे थे। वस्तुतः अन्याय और शोषण लागू-वाग और बैठ-बेगार तथा चेदखलिया का इतिहास तो बहुत लम्बा है। 'उछाला' और 'गधारोपण' जैसे क्रूर आदेश मिलने पर ताँ खेत-बेरे मकान-जानवर माल-असबाब आदि सबकुछ छोड़कर सेकड़ों परिवारों का गाव छोड़कर अनजानी दिशाओं में पलायन करना पड़ा था।

काँग्रेस के रूप में पाली जिले के गाव-गाव में जाकर तथ्य एकत्र करने का अवसर तो मुझे मिला ही था पर इस ग्रंथ के लिए सामग्री संकलन का यथेष्ट कार्य किया है ब्लाक और तहसील स्तरीय सयाजका ने जिसका सम्पादन मण्डल के सदस्यों ने जाचा, पग़्गा और सवारा है। फिर भी एक कमी मुझे हमेशा खटकती रही है और रहेगी कि बावजूद अथक प्रयत्नों और पत्र व्यवहार के भी बहुत सी अमूल्य जानकारियाँ, चित्र आदि मुझे उपलब्ध नहीं हो पायीं। मुझे विश्वास है इस कमी की पूर्ति मेरे अन्य इतिहासकार साथी अवश्य करेंगे। प्रस्तुत ग्रंथ के पीछे मेरे प्रेरणा-स्रोतों का अटूट श्रृंखला रही है तो इसमें संकलित सामग्री का एक प्रमुख उद्देश्य भी यही रहा है कि हमारी भावी पीढ़ी का अन्याय और शोषण के विरुद्ध निर्भय होकर सघर्ष करने की उदात्त प्रेरणा मिल सके। मेरा विश्वास है यदि यह सम्भव हुआ तो भारत का भविष्य सुखी, समृद्ध और गौरवपूर्ण होगा।

'वन्देमातरम्' का समर्पण इस ग्रंथ के प्रेरणा-स्रोत उन अमर शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को पूरा श्रद्धा के साथ करता हूँ जिनके महान् त्याग कठोर तपस्या एवं यशस्वी बलिदान के फलस्वरूप गुलामी की श्रृंखलाओं में जकड़ी जनता को सदियों बाद निरंकुश शासन और सामन्ती व्यवस्था की क्रूर प्रताड़नाओं से मुक्ति मिली।

आर, अन्न में कवि वर माखनलाल चतुर्वेदी की इन पावन पक्तियों के साथ मैं अपने भावा को विराम देना चाहूँगा

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिध प्यारी को ललचाऊँ ।
चाह नहीं ममता के शव पर हे हरि डाला जाऊँ ।
चाह नहीं दवा के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर डठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वन माली उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शोश चढ़ाने जिस पथ जाए वीर अनेक॥

□ मोहनराज

सम्पादकीय

राजस्थान का इतिहास शौर्य, त्याग और साधना का इतिहास है। यह वीर भूमि अपनी यशस्वी ऐतिहासिक परम्पराओं मातृभूमि की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले वीर सपूता तथा भोली-भाली जनता द्वारा किये गये उत्कट सघर्षों के लिए विध-विख्यात है। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि राजस्थान के इतिहास की गौरवमयी गाथा का अभाव में भारतीय इतिहास का ज्ञान अपूर्ण ही होगा।

'स्वराज्य मेरा जन्मदिन अधिकार है'-लोकमान्य तिलक के इस उद्धोष ने भारत की आजादी के युद्ध में एक नया जोश पैदा कर दिया था। देश के कोने-कोने में स्वतंत्रता-संग्राम में उतरे हजारों-लाखों क्रान्तिकारियों की भांति पाली जिले के सैकड़ों वीर सपूता को भी आजादी की चाह ने त्याग और बलिदान हेतु प्रेरित किया। उन वीरों की यश गाथाएँ आज भी चांगे और प्रेरणा-दीप की भांति जगमगा रही हैं।

सन् 1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध में पाली जिले की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी, जहाँ आऊवा के टाकुर खुरानसिंहजी ने अग्नेजी फाजो के विरुद्ध कड़ा मोर्चा लिया और उसे हरा दिया। इस विजय की गूज "झल्ले आऊवा" नामक लोकगीत में जिले के हर गाँव में सुनी जा सकती है। मारवाड़ का 'मानखा' प्राचीन काल से ही अपना आन पर अडने वाला तथा प्राण न्योछावर करने वाला रहा है। श्रम और माहस उसके जन्मजात गुण हैं। धन का धनी, वचन का पक्का, भयकर से भयकर मुसीबत और प्रलयकारी तूफान से जुड़ते रहना तथा जुझारू की तरह हसते-हसते प्राण दे देना उसकी प्रकृति रही है। सामंती जुल्मों दमना और अत्याचारों के विरुद्ध शोषण के शिकार उन भाले-भाले किसानों तथा गरीब वर्ग के लोगों ने विरोध स्वरूप अनेक 'ठठाला' आयोजित किये थे। वे अपने खेत, बेंरे, मकान माल-असबाब आदि सब कुछ छोड़कर 'गधारोपण' की रस्म अदा करते हुए, धन-धान्य उत्पादन के साधनों को निष्प्रभावी करते हुए रजवाड़े की सौमा से बाहर अनजानी राह पर कूच कर जाते थे। वे अन्याय के आग झुकते नहीं थे अपितु आततायी को घुटने टेकने पर मजबूर कर देते थे।

पाली जिले के अनगिनत ग्रामों में हुए इन्हीं सघर्षों के ऐतिहासिक आकलन एवं सर्वांगीण विश्लेषण का एक विनम्र प्रयास है- 'चन्द्रमातरम्', जिसमें स्वतंत्रता आन्दोलन समाज सेवा, नवनिर्माण एवं विकास की गाथा को पाँच चरणों में गूथा गया है। ये पाँच चरण हैं 1 क्रान्ति चरण, 2 सेनानी चरण, 3 सेवा चरण, 4 विकास चरण तथा 5 अशेष चरण।

'क्रान्ति चरण' में पाली जिले के तत्कालीन सामन्ती शासन व परतंत्र भारत में पीड़ित जनता की करुण कहानी है। जिसमें एक आर उस क्रूर युग की भू-व्यवस्था, लगान, लाग-बाग, लाटा-कूता, बेट-बंगार आदि की बानगिया हैं ता दूसरी ओर गाँव-गाँव में घटित क्रान्ति की लोमहर्षक घटनाओं का चित्रण हुआ है। आजादी के आंदोलन में अहिंसा की डोर पकड़कर बढने वाले गांधीजी के अनुयायियों की भी पाली जिले में एक लम्बी फहरिस्त है, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद चट्टमूल सामन्ती व्यवस्था तथा अग्नेजो की दमन नीति का डटकर विरोध किया तथा अनेक शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक यातनाएँ

सहीं। इन सबका विवेचन किया गया है- 'पाली जिले में स्वतंत्रता आन्दोलन के ढढते चरण' नामक अध्याय मे और इमी प्रकार रोगटे खडे करने वाली जानकारी देता है, 'ऐसा भी जमाना था ' नामक अध्याय, जो स्वयं ग्रथ के प्रेरक-प्रणेता श्री मोहनराज जी की लेखनी से नि सूत है।

'सेनानी चरण' मे पाली जिले के सेनानियों के जीवन-वृत्त हैं, जिनमें उनके द्वारा स्वतंत्रता आन्दोलन मे किये गये योगदान, उनके व्यक्तित्व तथा सघर्षमय जीवन से जुडे प्रेरक घटना-प्रसंगो का विवेचन है। 'सेनानी चरण' को पूर्णता प्रदान करने की दृष्टि से जिले के राजनैतिक कार्यकर्ता एव जन प्रतिनिधिया के सक्षिप्त परिचय भी दिये गये हैं जो स्वतंत्रता मग्राम से लेकर नव निर्माण के सहयागी-साक्षी रहे हैं।

जिले के सामाजिक विकास एव जन जागृति मे सेवाभावी सस्थाओ और व्यक्तिया का विशेष योगदान रहा है। 'सेवा चरण' के अन्तर्गत जिले की प्रमुख समाजसेवी सस्थाओ, प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ताआ तथा युवा प्रतिभाओ की चित्रमय झाकी प्रस्तुत की गयी है। 'विकास चरण' प्रारम्भ होता है- जिले के प्राचीन बंधव, सास्कृतिक सम्पदा एव साहित्य-सृजन परम्परा के सचित्र विवरण स, जिसमे उद्योग, कृषि शिक्षा, स्वास्थ्य, सिचाई, सहकारिता आदि के क्षेत्र मे हुयी विकास-क्रान्ति के विविध सोपानो का विवेचन है।

'अशेष चरण' मे जिले के महत्वपूर्ण आकडे, ग्राम आर नगरा के नाम जनसख्या तथा अन्य उपयोगी सूचनाए दी गयी हैं। ग्रथ के अन्त मे जिले का माचित्र देकर इसको ओर अधिक उपयोगी एव सग्रहणीय बनाने का विनम्र प्रयास किया गया है।

'वन्देमातरम्' के निर्माण का मूल उद्देश्य जहा एक ओर भारतीय स्वतंत्रता आदोलन मे पाली जिले का योगदान एव स्वाधीनता सेनानिया का परिचय देना रहा वहीं दूसरी ओर जिले के ऐतिहासिक एव भोगोलिक महत्व को रेखांकित करते हुए यहा के सामाजिक सास्कृतिक धार्मिक, राजनैतिक, शक्षिक, आर्थिक पर्यटन कला एव औद्योगिक क्षेत्रा मे हुयी प्रगति का सचित्र विम्बुत लेखा-जोखा प्रस्तुत करना भी रहा है। यह कहे कि हमने 'वन्देमातरम्' को पाली जिले का एनसाइक्लोपीडिया बनाने का विनम्र प्रयास किया है। हम अपने उद्देश्य में कहा तक सफल रहे हैं, इसका निर्णय तो इतिहासविद् एव सहृदयी पाठकगण ही करेगे।

ग्रथ की सामग्री का सचयन साधारण कार्य नहीं था। जिले की युवाशक्ति से लेकर बडे-बुजुर्गों तक ने इस कार्य मे पूरी रुचि के साथ योगदान किया है। और, उन समस्त प्रतिभाओ को एकजुट करने का श्रेय है जिले के प्रचार स्वाधीनता सेनानी, युवाहृदय कर्मयागी श्रीमान् मोहनराज जी जैन का, जो 'वन्देमातरम्' के सबल प्रणेता एव नियामक हैं। ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सम्पादक मण्डल उन सभी जानी-अनजानी प्रतिभाओ तथा विज्ञापनदाताओ का आभारी है जिनके सहयाग से ग्रथ इस रूप मे आपके हाथा में पहुंच सका है।

□□□

वन्देमातरम्

एक
दो
तीन
चार
पाँच

क्रान्ति चरण
सेनानी चरण
सेवा चरण
विकास चरण
अशेष चरण



पं. जवाहर लाल नेहरू

स्वतन्त्रता आन्दोलन
के
ज्योति-पुज



नेताजी सुभाषचन्द्र बोस



महात्मा गांधी



सरदार वल्लभभाई पटेल



भीसाबा

सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत

○

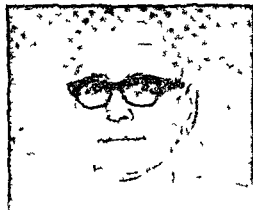
आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरिस्वर
जिहिन अनेक शिक्षण संस्थाया व
द्वारा शिक्षा जगत म शान्ति की

भारत वसरी मिश्यामलत्री महाराज
स्वतंत्रता व प्रेरक एवं शान्त शक्ति
एव जनोपयोगी संस्थाया व संस्थापक



अग्रदूत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसा
अग्रदूत व द्वारा समाज म नया
शान्ति के सूत्रधार

स्वाभा रामानंद जी महाराज
आदिवासी क्षेत्र म शिक्षा एवं
न्यायनी आंदोलन के प्रगता



महामण्डलेश्वर था महान्याय दजा गिरि
वाली निवासी अमरिका म उच्च शिक्षा
प्राप्त आवू म अभिनव शिक्षण
संस्थान व संस्थापक

पना वाना व नाम से विख्यात
मुनिभूषण बलभदर निजयजा
जिहिन समाज सुधार और शिक्षा
क्षेत्र म शान्तिवाग वाय विव



वन्दे-मातरम्

वन्दे मातरम् ।

सुजला सुफला मलयज - शीतला
शस्य - श्यामला मातरम् ।

शुभ्र ज्योत्स्ना - पुलकित - यामिनीम्
फुल्ल - कुसुमति - शुमदल - शोभिनीम्

सुहासिनी सुमधुर - भाषिणीम्
सुखदा वरदा मातरम् ॥

कोटिकोटि - कण्ठ - कलकल - निदान - कराले
कोटिकोटि - भुजै धृत - खरकरवाले
के वले मा तुमि अवले ।

बहुबल - धारिणी नमामि तारिणी
रिपुदल - वारिणी मातरम् ॥

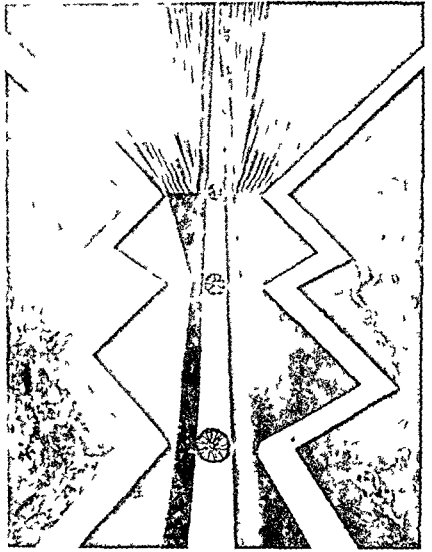
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्व हि प्राणा शरीरे ।

बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तौमारइ प्रतिमा गडि
मदिरे मदिरे ।

त्व हि दुर्गा दशप्रहरण - धारिणी
कमला कमल - दल - विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी
नमामि त्वा ।

नमामि कमला अमला अनुला
सुजला सुफला मातरम्,
वन्दे मातरम् ।

श्यामला सरला सुस्मिता भूपिता
धरणी भरणी मातरम् ॥



4597

सूकः

प्रगल्भ चरण

- स्वतन्त्रता आन्दोलन
- पाली जिले की स्वाधीनता कान्ति
- ऐसा भी जमाना था
- चित्र वीथी

क्रान्ति चरण

- 1 स्वतंत्रता आन्दोलन की पूर्ण पीढिया 1
- 2 पराधीनता बराम स्वाधीनता प्रा माधोसिंह दामा 3
- 3 मातृता युग की भू-स्वयंस्था सगात साग-बाप धीर
बट-जगार श्री चन्नासिंह एम्बोस्ट 6
- 4 पाली जिले म भूमि सुधार तब धीर भय
श्री मुन्नावारसिंह गहसोत 11
- 5 पाली जिले म स्वतंत्रता आन्दोलन क बड़ते चरण 14
- 6 एतिहासिक 28 मार्च 1942 एक सस्मरण
श्री दयासिंह गहसोत 35
- 7 एसा भी जमाना था श्री मोहनराज जन 37
- 8 चित्र-वीथी 49



: 1 :

स्वतंत्रता आन्दोलन की पूर्व पीठिका



भारत दश भारत सम्यता और संस्कृति की परंपरा की दृष्टि से विश्वपटल पर आज भी श्रेष्ठ एवं पथ प्रदर्शक माना जाता। भारत की इस प्रसिद्धि में राजस्थान राज्य की भागीदारी कम हल्केपूण नहीं है। 'वीर भोग्या वसु धरा' की बात का उजागर करने का यह राजस्थान हमारे राष्ट्र के इतिहास में शूरवीरता और नाम की कममूमि रहा है। शताब्दियों तक इस भूमि पर तिहासिक युद्ध लड़े गये और उस घर्ती के वीर पुत्रान देश के तिहास में अनेक पृष्ठ जोड़े हैं, जिनमें स्वर्णखरो में उनकी गाथाएँ कित हुई हैं। राजस्थान के इतिहास के लेखक बनल टाड अपनी प्रसिद्ध कृति—'एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान' लिखा है कि राजस्थान में कोई ऐसा छोटा राज्य भी नहीं है समे धर्मोपीती (शूरोप का एक स्थान) जसी रणभूमि नहीं हो। यद ही ऐसा कोई नगर मिले, जहाँ लियोडिनाथ (एक यूनानी र) क समान मातृ भूमि पर बलिदान होन वाला वीर पुरुष पत्र न हुआ हो

Rajasthan is the collective and classical denomination of that portion of India which is the abode of heroes in the familiar dialect of these countries it is termed 'Rajwada' but by the more refined Rathaena directed to Rajputana the Common designation amongst the British to denote the principalities

या प्राचीनता की दृष्टि से भी राजस्थान बहुत समृद्ध रहा। राजस्थान में प्राचीन सम्यता के अनेक ऐसे अवशेष मिले हैं, उनके आधार पर इस क्षेत्र की मोहनजादड़ो के समकक्ष और उससे पूर्व का माना जाना लगा है। आज राजस्थान कहे जाने वाले प्रदेश में कभी प्रागतिहासिक काल में सरस्वती घाटी सम्यता पुष्पित परलंबित हा रही थी। इस भायता की साक्षी पीलीबंगा में गईं से प्राप्त अवशेष दे रहे हैं और अब भी यह सारा प्रदेश तिहासकारों व पुरातत्वविदों के लिए अनुसंधान का चित्तकषण बनना हुआ है।

इसके बाद राजस्थान के क्षितिज पर सामंतकालीन व्यवस्था उदय होता है। राजस्थान छोटे-छोटे अनेक राज्यों में विभक्त

था जहाँ राजा महाराजा अथवा नरेश शासन करते थे। इन प्रदशा को और भी छोटे छोटे भागों में बाँट लिया गया था, जिनका शासन प्रबंध जागीरदारा और सामन्त-सरदारों द्वारा संचालित होता था। ग्रामीण अंचलों में बिलखे इन छुटभैयों का बड़ा दबदबा था। अतः और शोषण का लुला नश्य था। निरंकुश अत्याचार व गुलामी के बोझ से ग्रामीण जनता की कमर टूट गई थी। बाद में अंग्रेजों के उदयकाल में राजपूताना की ये रियासतें जा अपने शासन की जातिगत सत्ता से राजपूतों की भूमि 'राजपूताना' नाम से अभिहित की जाती थी, अंग्रेजों के सत्ता को नकारने के लिए संधि करने लगे। लेकिन इनमें पारम्परिक कलह के कारण एकता का और राष्ट्र के साथ अंगीभूत होने की भावना का भ्रमाव था। फलस्वरूप ये सभी रियासत अंग्रेजों के सत्ता क समक्ष नतमस्तक हो गई और राजस्थान की जनता दाहरी सिहरी गुलामी का भार वहन करने लगी।

सन् 1857 के स्वतंत्रता-संग्राम में दौरान, हालांकि राजस्थान के प्राय सभी राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया था, परंतु इनके बाद अनेक राजा अंग्रेजों के खिलाफ हो गए। 21 अगस्त, 1857 को जोधपुर राज्य में स्थित एरिनपुरा छावनी में ब्रिटिश फौज के भारतीय दस्तों ने बग़ावत कर दी। बागी सैनिक ए. जी. जी. के सदर मुकाम आरू पट्टुच गए और वहाँ पर बनल हाल और कई अंग्रेज अधिकारियों का मार डाला। फिर वहाँ से, 'बलो दिल्ली मारो किरगों' के नारे के साथ दिल्ली के लिए कूच किया। माग में पड़ने वाले मारवाड़ व एक बड़े ठिकाने आठवा के ठाकुर दुर्गासिंह चापावत न इन बागी-सैनिकों का नतूत्व समाल लिया। फिर 13 सितम्बर, 1857 को बागी-सैनिकों ने मारवाड़ की जनता के नाम एक अपील निकाली, जिसमें साफ लिखा गया कि मारवाड़ और मेवाड़ के कई ठिकाने—आठवा आसोप अलनियावास गूलर सलूम्बर, कोठारिया कानोड आसोद लसापी इत्यादि उनके साथ हैं इसलिए सारी जनता एक जुट हाकर उनका साथ दे।

मारवाड़ के जागीरदारों और सलूम्बर रावत व बीच हुए पत्र-व्यवहार से इन बात की पुष्टि होती है कि आसोप-ठाकुर की अगुवाई में दिल्ली जाकर 25 हजार सैनिकों के साथ अंग्रेजों पर



हमला करने की योजना थी। इसकी भनक लगने पर अजमेर के चीफ कमिश्नर सर पट्रिक लारेन्स ने जोधपुर के महाराजा तत्समिह से मदद मांगी। महाराजा ने अपने किर्नैदार प्रोनार्डसिंह पवार के नेतृत्व में एक दजन तोपों के साथ 10 हजार सैनिक भेजे। पर बागी फौजिया ने उनके छव्के छुड़ा दिए। सेनापति पवार मारा गया। सारी तोपें युद्ध सामग्री एवं एक लाख रुपये विद्रोहियों के बन्धु के आ गये। अब सर पट्रिक लारेन्स और जोधपुर के पोलिटिकल एजेंट मसन दन-बल समेत भाउवा पहुंचे। 18 मितम्बर को फिर घमानान युद्ध हुआ। मेसन का सिर काटकर भाउवा के गढ़ के दरवाजे पर लटका दिया गया और सर लारेन्स जलते पाव अजमेर दौड़ पड़ा। तभी से आठवा क्षेत्र में जो लोक गीत प्रचलित हुआ वह आज भी इस तरह गाया जाता है—

नाल बाज चम बाजे, नलो बाजे बाकियो।
एजेण्ट को मारकर, दरवाजे पर टाकियो ॥

1858 के जनवरी (माघ महीने) माह की 20 तारीख का कनल होम्स फिरंगियों की करानी हार का बदला लेने की नीयत से अपने 1800 सैनिकों के साथकर नवाजों के साथ आऊवा आ घमवा। यद्यपि कुशालसिंह होम्स के अधानव आने से सबते म आ गये मगर उहान अपने पास मौजूद मात्र 700 सैनिकों के साथ पूरे जाण व आत्म विश्वास से अपनी पिछड़ी मातो से जल पुफकारते होम्स का मुचाबला चार दिना तक किया।

राशन और सामनों की सीमित मात्रा को मध्येनजर रखत हुए अपने सरदारों और कामदारों की सलाह पर 23 जनवरी की रात के घने अंधकार में बरसात की मौसम का लाभ उठाते हुए कुशालसिंह भाग निकले और तात्या टापे से मिलने मेवाड़ जा पहुंचे। मगर तात्या टापे उन दिना जनरल रोज की फौज से घिरी लक्ष्मीबाई की सहायतापत्राण गए हुए थ। अन्तत फिरंगिया ने अपनी दस्ता और चातुय के बूते पर किलदार को प्रलाभित कर किले का दरवाजा खुलवा दिया और आऊवा के गढ़ पर अपना अधिकार जमा लिया। इस तरह देखते ही देखते भाउवा अब फिरंगिया की अधःप मोच और पयु मानसिकता की प्राण में भुलसने लगा। गोरी चमठी में बह रहे काले लहू में बदले और आतक की भावना इतनी उभ थी कि आदमी से लेकर पेड़-पौधे तक रोदे जाने लगे। बंदहवास कल्पे आम शुरु हो गया। मदिरों की दीवारें ध्वस्त की जाने लगी मूर्तिया खडित की जान लगी।

आऊवा ठाबुर कुशालसिंह अब भी अपने पूरे जोश-खरोज

और आत्म विश्वास के साथ अपनी जागीर की पुन प्राप्ति सपन करते रहे। तात्या टोपे से सम्पर्क में अशकल रहने पर मेवाड़ में कोठारिया के राबत जोधसिंह के महा शरण में 1860 तक कोठारिया में रहने के बाद नीमच में ब्रिटिश रिया के गमक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात् एव अदालत में लीजियन बागिया और फिरंगिया के खिलाफ रहे मामला पर मुकद्दमे ठोक दिए गए। गवाही के लिए ठाबुर और शेप बचे रणबाबुरे योद्धा भी सनिक अदालत में हुए। इस अदालत में वे अविवाश आरोपी में बरी कर दिए

कोई पाच हजार घरों की बस्ती वाले इस गाव के ध्वस्त खडित शिबारें, इसमें रखी तोपें, जीण शीण किले के एन सामने जूभाऊ बीरो की याद में बना मंदिर की ध्वस्त दीवारें और खडित मूर्तिया अपने की कहानी आज भी बहती हैं।

पाली जिला पश्चिमी राजस्थान का प्रवेशद्वार म सक्ता है। यह मारवाड़ रियासत का भाग रहा है। स्वतंत्रता संग्राम में पाली जिले में आऊवा ठिकाने के सिंह चापावत की भूमिका अविस्मरणीय रही है।

इस के आदालन में अहिंसा की डोर को पकडकर गांधी जी के अनुयायियों की भी एक बड़ी सख्या रही है जीवन पयन्त सपन करते हुए मामन्ती-व्यवस्था व अंग्रेजों लिया था। छुआछूत, बठ-बेगार आदि के उन्मूलन हेतु शारीरिक यातनाएं सहनी पडी, क्योंकि अयाचार, शोषण के इस अधकारपूण युग में सामंती शासन में की कामना करना ब्यथ था। अनेक छुटमइया की तथा अंग्रेजों की बन्धीयती न लोकहित की प्राथिण नीति का नहीं होने दिया। देश की आजादी के बाद भी राजनतिक अयवस्था देश के सत्ता को दिखाई दी तो स्थानीय स्तर पर विरोध किया। सामन्ती व्यवस्था को नरन के लिए जो जिले ब्यापी आंदोलन हुए उनमें अग्रगण्य रहा है। पाली जिले में आजादी के आंदोलन के आजादी के बाद सुयवस्था हेतु सपन में भाग लेन जाने सनानिया की एक लम्बी सूची है, जिसमें प्रमुल है—स्व० किंकर, भागीलालजी आलीशान, मीठालालजी त्रिवेदी फूलच दजी बापना, यशवतराजजी खचर, माधोलालजी मीठा लालजी कांडेड, रामप्रसादजी गांधी, धनराजजी



: 2 :

पराधीनता बनाम स्वाधीनता

□ प्रो० माधोसिंह इन्वटा □

पराधीनता सब दुःखों की जननी है मयानक मानसिक पीड़ाआ का उद्भव-स्थान है पतन की पराकाष्ठा है भ्रान्त जीवित चिन्ताओं को रात्रि हृ तथा भ्रमावधानी का बढ़ाने वाली प्रमादन्तरी ततापकारिणी नीद है। पराधीनता से मानव सत्तापो का घर बन जाता है। बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, पराधीन इन्द्रिया सुन्न हो जाती है और हृदय-नमल सूखने लगता है पराधीन जन कभी शांति में नहीं रहता, सुख-समृद्धि के निमित्त तडपता रहता है कसब्यपालन हेतु तरसता है और अशुद्ध बुरे के विषय से बचित हो जाता है। रैन मूल होगा जो इस सब भ्रमावययी परत त्रता की चालना करेगा? कौन जामगा जीवन का जजरित करने वाली इन दास्य वृत्ति से जीवन को निर्जीव और शून्य बनाने पर सतुष्ट होगा? शक्ति तथा सम्मान का विनष्ट करने वाली इस पराधीनता से क्या कोई स्वप्न म भी सुख का अनुभव कर सकता है? भक्त प्रवर कवि तुलसी न इन सभी विसगतिया को अनुभव करत हुए रामचरित मानस म लिखा है कि 'पराधीन सपनेहू सुख नाही। वास्तव मे युगदष्टा कवि, चतुर चित्तरे चिन्तक और समाज सुधारक भक्त की यह सामाजिक सकट से रक्षा करने के लिए यह मानवोचित वेतावनी है। ये शब्द भक्त के शुद्ध हृदय स निक्ले हुए प्रेरणाप्रद उद्गार हैं।

मानव के लिए पराधीनता के विविध प्रकार दुःखदायक होते हैं। शारीरिक पराधीनता मे व्यक्ति बारगार म बंद कर दिया जाता है तथा उसका मन स्वतंत्र बना रहता है। मानसिक पराधीनता बडी भयकर होती है। मानसिक रूप से पराधीन मानव पशु-नुल्य जीवन व्यतीत करता है। महान आत्माएं अपने मन को अपने बश म रखती हैं मन के बगीभूत नहीं होती। जो मन पर असवार है-सो कोई साधु एक' कहकर सुधी जना मे मानव के लिए मन पर विजयी होना आवश्यक बताया है। परत त्रता का एक और रूप है—सामाजिक परत त्रता। इसमे एक देश, एक जाति, एक समुदाय का दास बना लिया जाता है। इस पराधीनता मे मानव के गुणों का शन शन ह्रास होता है। मनुष्य परमुखापेशी, पराश्रित और हतोत्साही बन जाता है। इस पराधीनता को नष्ट करने के लिए सघप होते हैं, ससार के इतिहास का निर्माण होता है। सभी प्रकार की पराधीनता को दूर करने के लिए ससार के धमवत्ता,

नामाजिक महामानव और चित्तक युगा से मानव को प्रेरित करत आ रहे हैं।

'पराधीन सपनेहू सुख नाही' उक्ति है ता पुरानी पर स्वाधीनता की श्रमिड ललक अपने अन्तस्तल मे छिपाए हुए है। सोन के पिजरे मे बंद ताता भी सुखी नहीं रहता। वह मुक्त आकाश मे स्वतंत्रतापूर्वक अपने पख फडफडान क लिए हमेशा विकल रहता है। इसी भावना मे अनुप्राणित हाकर वह अपने पख और सिर बार-बार पिजरे की सलाखों स टकराता है ताकि उहे तोडकर दूर भगन मे बनारलियों की हरियावल मे उड जाए और सघन डालिया पर बैठकर उमुक्त मधुर स्वरा म गीत गाए। जब एक अकिचन पक्षी मे स्वाधीनता की इतनी ललक दिखाई देती है तो फिर बुद्धिमान और सशक्त मनुष्य ना ता कहना ही क्या! उसकी स्वाधीनता की ललक का मला शब्दा के तान-बाने मे रूपयित कस विया जा सकता है?

स्वाधीनता की प्राप्ति क लिए मनुष्य न बाल-काठरिया की नारकीय यातनाएं सही हैं, लाठिया और गालिया खाई है फासी के तल्लो पर प्राणा को सावनिया भूलो के समान भुलाया है। कौन मनुष्य या ही अकाल मृत्यु का शिकार होना चाहता है या अपने योवन को जेलो की काल-काठरिया म सडाना चाहता है? सामायत कोई भी नहीं। लकिन जब स्वाधीनता की श्राय उसने हृदय मे, उसकी प्राण वेतना म सुलग जाती है, तब वह बडे स बडे कष्ट को तो क्या, प्राण तक की परवाह नहीं करता। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान उठाए गए कष्ट और किए गए प्राणा के होम इती कारख तो आज भी अनुकरणीय एवं प्रेरणा का अजस स्रोत माने जाते हैं क्योंकि उसम सहज मानवीय स्वाधीनता की अमर ललक अन्तर्निहित थी। इस प्रकार की अमर ललक ही सल्लुतिया और राष्ट्रो का निर्माण विया करती है। यह ललक ही देश और जातियों की स्वाधीनता का भी कारण बनती है। आज जो विश्व के दशो मे आशातीत प्रगति की है उनके मूल म भी यही ललक विद्यमान है। इस ललक के अभाव म नई भी व्यक्ति समाज और राष्ट्र अपने प्रतिबल तक को बनाए नहीं रख सकता। यह वह ज्योति है जो वेतना के रूप म हमेशा प्रज्वलित रहकर राष्ट्रो का



हमना करने की योजना थी। इसकी मजबूत मजदूरी पर धर्ममेर के चीफ कमिश्नर मर पंडित लारेज ने जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह के मदद मागा। महाराजा ने मात्र 10 हजार मजदूर भेजे। पर नेतृत्व म एच दजन तोप के साथ 10 हजार मजदूर भेजे। पर यामी फौजिया ने उनसे छुड़ा दिए। मनापति पवार मारा गया। मारी तोपें युद्ध मामथी एव एव ताल म्पने बिदोहिया के वस्त्रों में छपा गए। श्रम मर पंडित नरेम धोर जोधपुर के पीसिस्टिबल एजेट मेमन दन-वत ममेत धावना पढ़ने। 18 मिसम्बर को फिर पमामान युद्ध हुआ। मेमन का फिर मारकर धावना क मड के दरवाजे पर सटवा दिया गया और मर लारेज उरटे पाव धर्ममेर दौड़ पडा। तभी म भादुवा क्षेत्र म जो लोभ-गीत प्रचलित हुआ वह धर्म भी इन तरह गाया जाता है-

नेज बाज चग बाज मन्ने बाजे बाबियो।
एजेष्ट को मारकर, दरवाजे पर टाकियो ॥

1858 के जनवरी (माघ महीने) माह की 20 तारीख को बनन हाम्प फिरेमिया की बरारी हार का बदला देने के ध्यान 1800 मजदूरों के समूह नेवाजने के साथ धावना म पमका। यद्यपि मुगलसिंह हाम्प के धरमभंग धाने से सखन म धा गए मगर उहाने धरने पाव मीरूद मात्र 700 सजिनों के साथ पूरे जोग म धाम्य विषयवात से धरनी सिध्ती माता से जन दुपकारते होमन का मुकामना धार दिना तक किया।

रामन धोर मधुना की सीमित माना को मध्येनजर रखते हुए धरने मरदार धोर धामदार की सहाय पर 23 जनवरी की रात के पने धरमार म बदलात की मोसम का लाम उठाते हुए मुगलसिंह माग निरन्ते धोर तात्या टोपे व मिलते मेवाह जा पढ़ने। मर मर तात्या टोपे जन दिनों जनरल रोज की चीज से फिरो लन्धीबाई की म्हामताप गए हुए थ। धरमत्त फिरेमिया ने धरनी दस्ता धोर चातुप के मूत पर निरन्तर को प्रसाहित कर किने का दरवाजा मुकवा दिया और धावना के मड पर धरना धरिधरन जगय सोच धोर म्पु मानसिध्ता की धाम म म्भूतसने नाग। गोरी बगदी म वह रहे बने न्हू म बन्दे धोर धालन की मायना इतनी उम की नि धादमी से न्कर वेड-नीपे लर रोडे जाने लने। बह्मशास बले धाम मुक हो गया। मदिदर की दीवारें ध्वस्त की जाने लनी मूतिया सहित की जाने लीं।

धावना ठाडुर बुभालसिंह धम भी धरने पूरे जोग-ररोम

धोर धाम्य विषयवात से माप धरनी जागीरी की पुन प्राप्ति के लिए संपन्न करते रहे। तात्या टोपे से सम्पन्न म धरमभंग रहने पर उहाने मेवाह म कोठारिया के रावत जायसिंह के महा मरण की तथा 1860 तक कोठारिया म रहने के बाद नीमच के सिद्धिमा धरिधरन रियो के ममस धरमसमागण कर दिया। ललबकाए एव सजिन धदातत म सीरियज धरिधरन के विनायक जग कर रहे मागतो पर मुकदमे ठोक दिए गए। पवाही के लिए सखन ठाडुर धोर मेष बने रणयाडुरे मोडा भी सजिन धदातत म उत्सिध्द हुए। इन धरमभंग म के धरिधरन धारोपी ने बरी बर दिए गए।

माई पाव हजार परी की बसो बाने इन माव के विल ध्वस्त सहित दीवारें, धरम रलो तोपें, जोग मोग बुधमाल धोर किने के ऐल सामने जुमरू धीरो की माद म बना कीर्तिस्तन मदिदर की ध्वस्त दीवारें धोर सहित मूतिया धरने मौरवमदी प्रतीत की बहानी आज भी बहती है।

पारती जिला पत्रिमयी राजमधन का प्रवेगद्वार माना जा सकता है। यह मारवाह रियासत का माग रहा है। मारतम स्वतन्त्रता-मधाम मे पानी जिले म धावना ठावने के ठाडुर बुभाल सिंह धामावत की मूतिया सहितसरोम रही है।

इन के धा-दोलन म धरिधरन की धोर को पबडकर बन्दे बाने गाधी जी के धनुषधामिया की भी एव बड़ी सख्या रही है जिहान जीवन-पथत संपन्न करते हुए मामन्ती-धरमभंग व अंग्रेज स लोहा लिया था। धुधपूत बठ-मेगार धरिधरन के उमूलन हेतु उह धरम धरतीरक धातनाए सहनी पडी यथोक्ति धरमयाधार उलोडन धोर गोणन के इत धरमाराएण म्पु मे सामतो धामन म जन-न-धाम की धामना करुता धरम था। धरम धुधमधना की तथा धामन की अजना की बदलीयती म लोभसिंह की धरमिक नीति का निरामो भी नही होने दिया। देश की धावनी के बाद भी सामाजिक एव राजतन्त्रिध धरमभंगवा देश के सारुतो की दिशाई दी तो उहाने इसन स्थानीय स्तर पर विरतन किया। सामन्ती धरमभंग की सभूल मत्त करने के लिए जो जिले धरामी धा-दोलन हुए उनमे पारती जिला धरमभंग रहा है। पारती जिले म धा-दोलन के माग नेन बाने स्वतन्त्रता धा-दोलन के बाद मुकमता हेतु मधमे मे माग नेन बाने स्वतन्त्रता सेनानिया की एक लन्धी मूकी है जिसे प्रमुख है—स्व० हरिनाई किन्कर मारोलाखजी धा-दोलन मीठातालजी त्रिवेदी नाका, मूलन-दरी धरमना यमगतधरनी धरिधरन मारोलाखजी प्रातिकारी मीठा तालनी बाडेड रामप्रसादी गाधी धरनराजी धर्मा धरिधरन।



: 2 :

पराधीनता बनाम स्वाधीनता

□ प्रो० जाधोसिंह इन्दा □

पराधीनता सब दुःखा की जननी है मयानक मानसिक पीडाप्राप्त का उद्भव-स्थान है, पतन की परकाष्ठा है, अज्ञात जीवित चिन्ताप्रो की रात्रि है तथा असावधानी को बढ़ाने वाली प्रमादभरी सतापवारिणी नौद है। पराधीनता स मानव सत्तापो का घर बन जाता है। बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, पराधीन इन्द्रिया सुप्त हो जाती है और हृदय-नमल सूखने लगता है पराधीन जन कभी भाति से नहीं रहता, सुख-समृद्धि के निमित्त तडपता रहता है, नक्तव्यपालन हलु तरसता है और अन्धे बुरे क विवेक से वञ्चित हो जाता है। कौन मूल होगा जा इस सब अभावमयी परत-त्रता की चाहना करेगा ? कौन अग्रामा जीवन को जजरित करने वाली इस दास्य वृत्ति से जीवन को निर्जीव और शून्य बनाकर सन्तुष्ट होगा ? शक्ति तथा सम्मान को विनष्ट करने वाली इस पराधीनता स क्या कोई स्वप्न म भी सुख का अनुभव कर सकता है ? भक्त प्रवर कवि तुलसी न इन मभी विसगतिया का अनुभव करते हुए रामचरित मानस म लिखा है कि 'पराधीन सपनहू सुख नाही। वास्तव मे युगवृष्टा कवि चतुर चित्तरे चिन्तक और समाज सुधारक भक्त की यह सामाजिक खण्ट से रक्षा करने के लिए यह मानवोचित चेतावनी है। य शब्द भक्त के शुद्ध हृदय से निकले हुए प्रेरणाप्रद उद्गार है।

मानव के लिए पराधीनता के विविध प्रकार दुःखदायक होत हैं। शारीरिक पराधीनता मे व्यक्ति कारागार मे बंद कर दिया जाता है तथा उसका मन स्वतंत्र बना रहता है। मानसिक पराधीनता बड़ी भयंकर होती है। मानसिक रूप स पराधीन मानव पशु-मुष्य जीवन व्यतीत करता है। महान आत्माए अपने मन को अपने वश म रखती हैं मन के वशीभूत नहा होती। जो मन पर प्रसवार है-सो कोई साधु एक कड़कर सुधी जना मे मानव के लिए मन पर विजयी होना आवश्यक बताया है। परत-त्रता वा एक और रूप है—सामाजिक परत-त्रता। इसमे एक देश, एक जाति, एक समुदाय को दास बना लिया जाता है। इस पराधीनता मे मानव के गुणो का शन शन ह्रास होता है। मनुष्य परमुखापेक्षी, पराधित और ह्योत्साही बन जाता है। इम पराधीनता को नष्ट करने के लिए सधय होते है, सत्कार के इतिहास ना निर्माण हाता है। सभी प्रकार की पराधीनता को दूर करने के लिए सत्कार के धमवेत्ता

सामाजिक महामानव और चित्तक युगा से मानव को प्रेरित करते आ रहे है।

'पराधीन सपनेहू सुख नाही' उक्ति है ता पुरानी पर स्वाधीनता की अमित ललक अपने अन्तस्तल म छिपाए हुए है। सोने के पिजरे मे बन्द तोता भी सुखी नहीं रहता। वह मुक्त अनाश मे स्वतंत्रतापूर्वक अपने पख फडफडान के लिए हमेशा विकल रहता है। इसी भावना से अनुप्राणित हाकर वह अपने पख और सिर बार-बार पिजरे की सलाखो मे टकराता है ताकि उहे ताडकर दूर गगन मे बनानियो की हरियावल मे उड जाए और सघन डानिया पर बठकर उमुक्त मधुर स्वरा म गीत गाए। जब एक प्रकिचन पक्षी मे स्वाधीनता की इतनी ललक दिखाई देती है ता फिर बुद्धिमान और सशक्त मनुष्य का ता कहना ही क्या ! उसकी स्वाधीनता की ललक वा मला शब्दा के ताने-बाने म रूपायित कैसे किया जा सकता है ?

स्वाधीनता की प्राप्ति म लिए मनुष्य न काल-काठरिया की नारकीय यातनाए सही हैं, लाठिया और गानिया साई है, फासी के तख्तो पर प्राणो को सावनिया भूलो के समान भुलाया है। कौन मनुष्य यो ही अकाल शूलु का शिकार होना चाहता है या अपने जीवन का जेलो की काल-काठरिया म सडाना चाहता है ? सामायत कोई भी नहीं। लेकिन जब स्वाधीनता की आग उसके हृदय मे उसकी प्राण चेतना मे सुलग जाती है तब वह बडे स बड बष्ट की तो क्या प्राण तक की परवाह नहीं करता। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान उड़ाए गए बष्ट और किए गए प्राणा के होम इसी कारण ता आज भी अनुकरणीय एव प्रेरणा का अजस सात माने जाते हैं क्योकि उसमे सहज मानवीय स्वाधीनता की अमर ललक अन्तर्निहित थी। इस प्रकार की अमर ललक ही सङ्कतिया और राष्ट्रो का निर्माण किया करती है। यह ललक ही देशो और जातियो की स्वाधीनता वा भी कारण बनती है। आज जो विश्व के देशो मे आशातीत प्रगति वा है उसके मूल म भी यही ललक विद्यमान है। इस ललक के अभाव म वाई भी व्यक्ति समाज और राष्ट्र अपने अस्तित्व तक को बनाए नहीं रख सकता। यह वह ज्योति है जा चेतना के रूप म हमेशा प्रज्ज्वलित रहकर राष्ट्र वा



गिर ता रासती ही है उठ प्रगति-पथ पर धावपन धमपन भी परती रहती है ।

पराधीनता का प्राणी विविध रूप में अनुभव करता है । हमम राजनीतिव पराधीनता सब पराधीनताका का कारण मानी गई है । राजनीति का धनन अधीन रखकर ही हम व्यक्तित्व रूप में स्वाधीन रहती है । हमारी अधनोति हमारे लिए पत्र-पत्रन जाती है । हम धार्मिक धार्मिक धोर जानिगत स्वतंत्रता प्राप्त हुआ जाती है । हम स्वतंत्र धोर धन का धानन करे हम विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता हा यह मनी की दृष्टि है । पराधीन का धनन कोई व्यक्तित्व नगी होता । चाहे काँ साग मुन्दर हो बुद्धिप्रा हा कमठ हो धोर धनशानी हो यदि यह स्वाधीन नहीं है ता उपकी मुन्दरता उपकी बुद्धिमत्ता उपकी कमठता उपका धन धोर उपका धान-गमन विमो की काम का नगी । एने प्राणी की बुद्धि विधान में पक जाती है । कमठता उम सामग्र नगी जाती । दूरर ताग ही उमका नाम उठाल है । धन-गमनति दूरर के उपभोग में धानी है तथा उपका धन पराधीन व्यक्ति का धानन धनन बन सकता है । हमार पराधीन युग म हमारी धन-गमनति को नष्ट किया गया धनन विरम भेज दिया गया । हमारा मारा बच्चा माल कोधिया म धन मकर विरम भेजा जाता था धोर वही से जो धनकर धानन का उमके धनने भारी रकम की जाती थी । गरोजनी नायदू जनी भारत-वाकित्वा का अधजी साहित्यकार। म स्थान न मिन मका । पराधीनता के कायकाल म हमारे कजाकारा व कारीगरा के काय पाव काटकर उठ वपु धना दिया गया था धोर भारतीय कजा कोशत को मिटा दिया गया था । पराधीन देशा का धाननवर्णन धनभेद देना करने दीर्घा द्रप धोर मारकाट जमे धमिय धाननवर्णन की सट्टि करता है । धन पराधीनता समार म गमम बड़ा धमिशाप सिद्ध हुई है ।

महात्मा गांधी के अनुयायी श्री विद्योती हरि ने एन स्थान पर कहा है—

पराधीन जे जन नहीं स्वग नरक ता हूत ।
पराधीन जे जन नहीं स्वग नरक ता हूत ॥

जा सोम पराधीन हैं धनने लिए बही स्वग है ही नहीं स्वग भी उनने लिए नरक बन जाता है दुःखा का धर सिद्ध होता है । सब सुख-मुविधाभा को प्राप्त करने भी वे मन्नु दुःखी रहन हैं । पराधीनो की भावनाए ऐसी धमविन धोर द्रप धानि स लिख रहती है कि व्यक्ति सब कुछ प्राप्त होने पर भी धनने धाननको हीन समझने समता है । यह तसवार पाकर धनना हो हाथ काट लेता है । रूप उमकी धरि-वहीन बना धानता है धन उमे क-भूष लोभी व स्वार्थी

धनानन मुग म धरित कर म्ता है । शक्ति धारक धन मन्मत बना धनने का मुग म धार म्ता है । यह मन्म न भी मुग का धनुमध नहीं कर सकता । एना प्राणी परमुपाधनीकी काकर राष्ट्र को धधीन बना । धानन व गतिता पर नाशता है ।

पराधीनता का धानन काठन के लिए मधन एव म र्पिहाग की पुरारवति हुई है । पराधीन सोम म बुद्ध एव भी व्यक्ति हुए हैं जिन क ह्मन्म न तर्जिन न मुग व धानन-मन्नाय का जगति विधमान थी । उम धाननहित नाव उठ धनितान क लिए प्ररणा नी । रोम देश क धानन न विरहू बन गया । पन्नाजाल इटलीकाधियों न करकर नी । एम की कागमारी का नाम हुआ । धानन की राज्य जगति न गमता धानि भावा का जगाया । भारत न भी बयों तस धाननधार महरर स्वाधीनता प्राप्त की । दूरर के पन्ने के धूने के लिए धीटी तस भी मधन करती रहा है । पन्नु-धनी सब प्राणों की बाजी मगा देन है । गाँव गिहू धानि प्राणी स्वय तो धोलकर बुद्ध बह नहीं मका पर धनन पर धाननला करने धानन को प्राण रहने जीवन नहीं रहने धने । जीवनता न एन एनी स्वामाधिव गहूज बुद्धि होनी है कि जा उठ विमो क धनना म धूने की प्ररणा देनी है ।

धा भी धनमात्र मुग स्वतंत्रता प्राति का युग है । भारत के गमन ही धुरीण की कई जातिया न धनीका एगिया तथा धाननू किया की धानि मजातिया के देशा पर धमिधार किया हुआ था । उनका धनी म धानन होता रहा था । भारत की स्वाधीनता क परधात् उमम प्ररणा प्राप्त कर विमान छोटे-दाट देशा को भी मुक्ति मित गई । इमम मधुन राष्ट्र मध जमी मस्थाभो ने निशानध महामय दिया । मानव मात्र को मुक्ति दिताने के लिए विचार-स्वतंत्र म प्रमति हुई । धानि मानवता की धनुदिव प्रमति स्वतंत्रता म ही समध थी । स्वतंत्र धाननवर्णन द्वारा मन्मता धोर मन्मति का विधान होता है । स्वतंत्र व्यक्तित्व के धारक ही धाननीय भावनाधो व धाननात्मा मे मधन करने की धमता रचते हैं । मानव-मानव म म मन्मभावना व मन्मधतिया के प्रवेण की धान स्वतंत्रता का मधमध बनन धान स्वाधीन व्यक्ति ही कर सकत हैं । देश म धान विधान कन्म-नीशल साहित्य धानि सब स्वतंत्र धाननवर्णन म ही धनन सकते है । देशो के मामाजिक धानिक राजनीतिव धाननवर्णन का मुन्दर धन से निर्माए स्वतंत्रता के धाननवर्णन म ही हुआ है । नि मन्मदेह धनी स्वतंत्रता प्राप्त देशा म परस्पर धमध बन रहा है परन्तु धानन नामरिध काशाधित है कि शीध ही स्वाधीनता मनी धाटो को दूर कर देगी ।

राजनीतिव स्वाधीनता प्राप्त कर नेन के पधधात् मा हम धानन वई धुराधयो भी पराधानता को नष्ट करने के लिए धनने स



ही सघष करना पड़ रहा है। भारत में पराधीनता की बेडिया कटन के बाद महगाई और अष्टाचार से सघष आरम्भ हुआ, पर 42 वर्षों तक प्रयास कर लेने पर भी मफलता प्राप्त नहीं हो सकी। हीनता, अन्धविश्वास, अन्ध-यय चरित्रहीनता आदि रोग पराधीनता के युग में ही घर कर चुके थे। इनस मुक्ति होन पर ही पराधीनता से सच्ची मुक्ति कहलायेगी, अन्धया हम मानसिक दासता के पाश में बन्धे ही रहने। देशवासिया ने पराधीनकाल में अग्नेजे के अनक कादों का अनुकरण किया। अनेक अन्धगुण हमने प्रविष्ट हो गये और गुणों के अनुकरण की प्रवृत्ति न रही। गुणों के अनुकरण में हमारी गुलामी बाधक बनी।

पराधीन काल में हम अन्धगुणों का न छोड़ सके। हमने अपने गुणों को भी त्याग दिया। पैय निष्ठा त्याग शक्ति आदि सद्वृत्तियों में हम गुलामी में छोड़ दिया और अग्नेजों के गुणों पर ध्यान न देकर उनकी भाषा व देशभूषा की ही हम नकल करते रहे। इसका मयानक परिणाम हम अन्ध भोगना पड़ रहा है। मारते दुजों ने चाक्री बप पूव इस दाप को बता दिया था—

परभाषा, परभाव पर भूषण, पर-परधान।
पराधीन जन को अहै, यही एन पहचान ॥

इस पराधीन अन्धगुण के कारण आज हमारा जीवन कुत्रिम बन गया है। हमार यहा स्वाधिया द्वारा जो अष्टाचार और घोठाले आदि हो रहे हैं वह युगो पराधीन रहन के कारण हैं। पराधीनता ने हमारा रहन-सहन, देश भूषा, खान-पान आदि सब बदल कर रख दिया। विदेशी शासन ने हमारे सदगुणों को मिटा दिया। गुलामी का प्रभाव आज भी सखत देखा जा सकता है। बहूत स भारतवासी आज अग्नेजों के समान भावों का आदान प्रदान करते हैं। उह रूसी, जापानी, अग्नेजों, अमरीकी और हिल्पी भाव इतने मुरुचिपूण प्रतीत होते हैं कि अपने देशीय भावों के प्रति उनमें मन मस्तिष्क में कोई

स्थान नहीं रहा है। बोल चाल, हाव भाव नाच रग, गायन आदि पर पराया का पूण प्रभाव पडा हुआ है। इस दाम वृत्ति के कारण देश में हल्पा, मारकाट, तलाव, छीना भपटी सभी का बाजार गरम है। जब तक अपनी मातृभूमि में सम्बन्धित व्यवहार व वातावरण को नहीं पनपामा जायगा, जब तक हम अपने को विचारधारा से स्वतंत्र नहीं रखत, तब तक देशप्रेम और राष्ट्रहित की बातें करना बेमानी है। पराधीनता में दक्षित आज का युवक दुराग्रही दुष्ट ति और दुविनीत हो गया है। उसका मातृभूमि स वसे लगाव हो सकता है ? वह तो देश, देशवासिया, देश के नियमा प्रवृत्तिया आदि से पवरा कर विदेशों की ओर भागने की तयारी कर रहा है। अपने देश को ठगने और दूसरों की सेवा करन की उसकी लालसा उसके स्वयं के जीवन के लिए घातक है।

भारतीयों ने अग्नी तक राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की है, अग्नेजों के चगुल से अपने आपको छुड़वाया है। अग्नी उस आधिक, मानसिक आदि अनेक क्षेत्रों में स्वाधीनता प्राप्त करनी है। यह तभी संभव है जब प्रत्येक भारतीय यह समझने लगे कि स्वाधीनता की नमक रोटी ही वास्तव में अमृत होती है, जबकि पराधीनता की मायन-मलाई जहर में वम नहीं होती। जब भारतवासी स्वाधीनता के मूल्य को ठीक ढग से समझेंगे, तभी वे समाज देश और विश्व के लिए उपयोगी मिद्ध होंगे। तभी वे वास्तविक मानव पद प्राप्त कर सकेंगे।

अन्तत, मार रूप में कहना यह ठ कि स्वाधीनता मग्नी प्रकार की प्रगति और व्यावहारिक मुखा का द्वार है। इससे विपरीत पराधीनता तो सपने में भी मुखा के द्वार के अग्ने सोंडे का ऊचा फाटक लगाकर उसे बंद कर देती है। अर्थात् पराधीन व्यक्ति कभी सपने में भी वास्तविक मुखा की कल्पना नहीं कर सकता।



स्वाधीनता राष्ट्र का प्रथम चरण है।

—स्वामी विवेकानन्द

स्वतन्त्रता राष्ट्र का अक्षत यौवन है।

—फोय



: 3 :

सामन्ती युग की भू-व्यवस्था, लगान, लाग-बाग और बैठ-बेगार

□ श्री चवटल मिश्र एडवाकेट □

फारवाड राज्य की स्थापना व उसमें पूर्व किसानों से लगान प्रति हल रकमा (नगदी) म लिया जाता था पर 17वीं शताब्दी में यह व्यवस्था लट्टार्द में बदल गई और वही 1/6 ता वही-वही 1/5, 1/3 और 1/2 तक पैदावार का हिस्सा लगान के रूप में लिया जाने लगा था। उस युग में भूमि के बार्द पेट्ट नहीं था। जितनी भूमि वास्तविक धाता था और पैदावार लेता था उसी आधार पर लगान देना पड़ता था। सालमा गावा में यानी जामपुर दरवार के गावा में ता सन् 1912 में भू प्रबन्ध करक चापी (खातदाने) पेट्ट काश्तकारों का देवर नववी लगान मुबदर कर दिया था, पर जागीरी गावा में वही लट्टार्द की पूर्ववत् स्थिति बनी रही।

लगान वसूली में लट्टार्द व कूना में किसान बहुत पराना हात थे। जागीरदारों के कामदार हवालदार व शास्त्रियों की मनमानी व भ्रष्ट तरीका के कारण किसान की पैदावार की ताली महीना लाटा में पड़ी रहती। लट्टार्द-व्यवस्था में सभी वास्तविक अपनी कुल पैदावार लगान व उनालू फसल गाव के बाहर एक जगह लाटा में लात। वही पर अपनी अपनी पैदावार साफ करके लाती बनावत, फिर जागीरदार अपनी सुविधा व मर्जी पर वहा फावर लगान का हिस्सा-जा भाग बहलना था प्रबल करता और रावल में पहुँचाता सब कही बचा हुआ लगान व पैदावार किसान अपने घर ले जा सकता था। लेकिन अपना हिस्सा से जावे उसक पूर्व ता लाग-बाग की वसूली गाहूवार के बज की वसूली मुरु हा जाती थी। इसलिए अधिकतर किसान ता खाली हाथ पेट्टेडा भटककर ही घर लौटने की मजबूर हात थे।

लट्टार्द-व्यवस्था में ठाकुर जागीरदारों की मनमानी इस हद तक बढ़ गई थी कि उनालू फसल की लट्टार्द थावण मावडे तक नहीं होने दी। वर्षा से भीगकर भारी पैदावार बरबाद हा जाती थी। उसे बीमक लग जाती थी। चारिया ता हौती ही थी कमी-अभी धाग भी लग जाती थी। रात दिन का पहरा देना पड़ता था। अपनी फसल पैदा करने से किसान महसूस रहता और धारण्य होना यह जानकर कि इस स्थिति से उबरने का बार्द उपाय-कानून नियम

मुनबार्द करन वाला नहीं था। फारिन लोच-परिपेट के व्यापक फादालन और वास्तविकता में व्यापक भारी समन्ताप को देखकर मर्द सन् 1941 में तत्कालीन चीफ मिनिस्टर डेनाल्ड फील्ड ने जागीरदारों के नाम निम्न फ्राण्ट जारी किया- 'हाकिमा का यह हिस्सापत जाती है कि जवा ही उनका पाग प्रत्यक्ष या पराध रूप से यह सिद्धापत धावे कि लाटे ममय पर नहीं बिप जा रह है सब उह मीजूना रिवाज के माफिक इस काम को शोध पूरा करने में लिए धमनी भज देना चाहिए। अगर हासल स यह मासूम हा कि लाटा करन में धयायपण देनी हो रही है ता सबयित हाकिम गाव हासात की रिपोट चीफ मिनिस्टर का भज और यह भी सुभाव कि किसानों का जा अनुचित नुसमान हुमा है उसमें लिए बितना हजजाना जागीरदार द। किसानों का उम रकम का बिलान की मजूरी महकमा सान देगा।

'फारवाड के सभी जागीरदारों-बजरिय हुकम हाजा यह जता दिया जाता है कि वे इस हुकम की पूरी-पूरी तामील करें। अगर ऐसा नहीं किया गया ता जा तरीका ऊपर बताया गया है, प्रबलियार किया जावगा। इनका भी विशेष नाम नहीं हुमा बयानि जागीरदारों में समझिन हाकर जाधपुर दरवार पर देवाव डाला और पर-ताना के हाकिम की जागीरदारों का वक्ष लेन वाल ही अधिकतर वे इमी कारण लट्टार्द का लकर चाणा' भाटू' राडावाग चपदावत निम्बाज धाकडी पोमावा पार' भादि घनेक स्थाना पर फादा-सन हुए। हासात इतन बढ़तर थ कि यदि किसान उनकी स्त्री व बच्च अपने सत में एक मबिया मिच कनी हासा या साग भाडी भी चोरी क्षिप घर साने की या सान की बाधिया करता ता जागीरदार के बारिडे फौड टाकरे व नपडा तब की तलाशी लेते व धममानित करते और जूता व बेंती में पिटाई होने।

फारवाड की 3/4 भूमि जागीरी क्षेत्र थी और पासी जिले के तत्कालीन परगने-दूरी वाली, सोजत और जलारण में सर्वाधिक गाव जागीरी के थे। यहा क किसानों का स्थिति ता वास्तव में दयनीय थी। इस कारण दो फसलों क्षेत्र होते हुए भी यहा के किसान गरीब और पेट्टे हाव थे। जागीरदार जब चाहे किसान का



उसकी भूमि से बेदखल कर सकता था। कई गावों के किसानों ने कमी न खत्म होने वाले इन जागीरी जुल्मों से परेशान होकर उस जमाने में संगठित निग्रमख 'उद्धारवा' (गंधारोपण) कर गाव, घर, बेड़े, खेत छोड़ दिये। ऐसे अनेक उदाहरण आज भी वड लोग की याद में ताजा हैं।

सन् 1920-21 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किसानों को सामन्ती शोषण से मुक्त करने के लिए आवाज बुलंद कर दी थी। कांग्रेस ने सन् 1929 में कराची अधिवेशन में यह घोषणा की थी कि भारतीय जनता की गरीबी दूर करने और दशा सुधारने के लिए आवश्यक है कि समाज के वतनम आर्थिक व सामाजिक ढांचे में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये जावें और धोर असमानताओं को दूर किया जावे। इसके लिए आवश्यक है— देश के जागीरदारा जमींदारों व पूँजीपतियों के शोषण से यहाँ के किसानों को मुक्त कराना। महात्मा गांधी ने हरिजन के 2 जनवरी 1936 के अंक में लिखा—हमारे पूँजियों द्वारा हम वास्तविक समाजवाद प्राप्त हुआ है। जिन्होंने हमें सिखाया कि 'सभी भूमि गोपाल की' है तब सीमा की रेखा कहा है? मनुष्य ही उस रेखा को बनाने वाला है, वही उसे मिटा सकता है। कांग्रेस द्वारा श्री जे. सी. कुमारस्वामी की अध्यक्षता में गठित 'भूमि सुधार समिति' की सन् 1948 की रिपोर्ट में स्पष्ट उल्लेख है—(1) भूमि पर जोतने वाले का ही अधिकार हो। (2) मध्यस्था के लिए कोई स्थान न हो। विवाय विधवाओं, विधवाओं, नाबालिगों व अन्य अपाहिज व्यक्तियों के भूमि को शिकमी काश्त पर देने का अधिकार नहीं होना चाहिए। (3) जो व्यक्ति 6 वर्ष तक लगातार भूमि जोतता या रहिए, उसको स्वामित्व रूप से खातदारी अधिकार प्राप्त हो जाना चाहिए। समिति का सुझाव था कि खातेदार को इस बात के साथ पट्टा दिया जावे कि वह स्वयं काश्त करेगा और भूमि शिकमी काश्त पर नहीं देगा।

सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजशाही और सामन्तशाही के उन्मूलन की और जनप्रतिनिधियों का ध्यान गया। सन् 1952 में राजस्थान में जागीरदारी उन्मूलन कानून बना और इन राजस्थान में 6,09,575 जागीरों और पाली जिले में 10 हजार 433 जागीरों जल कर ली गई। इनमें जागीर जूना जागीर, मोम, धर्मा, इनाम, सेवा, अनुदान, घुस-बाडोली सभी प्रकार की जागीरें शामिल थीं। लेकिन आज भी देवस्थान मंदिरों की डोली जागीरें जल नहीं हुई हैं और महल-पुजारी जागीरदार बने हुए हैं।

राजस्थान काश्तकारी कानून 1955 के लागू होने पर रिवाज में जिनके नाम दज थे, वे सभी खातेदार मान लिये गये। इससे

किसानों को स्याई लाम और कई अधिकार प्राप्त हो गये। पर इस कानून से अनेक ऐसे लोगों को भी खातेदारी अधिकार प्राप्त हो गये जो स्वयं काश्त न करके भूमिहीन मजदूरों में, शिकमी काश्तकारों व नौकरी से अथवा अल्पकालीन विराया-विधियों पर काश्त करवाते थे। ऐसे लोग जिनमें जागीरदार अपसर, राजनेता, पूँजीपति अधिकतर हैं, वे वास्तविक काश्तकारी का बन्दुबा मजदूर रखकर या 1/2 हिस्सा लटाई पर काश्त कराते रहे हैं। ऐसे बड़े लोग नगरों में रहते हैं और केवल लगान वसूली करने गावा में खेत पर आते हैं। ये अष्ट तरीकों से पण विषय काला घन सफेद करत हैं।

सीलिंग कानून बनने में भी बड़े-बड़े भू-पतियों से अतिरिक्त भूमि प्राप्त नहीं की जा सकती—बेनामी दस्तावेज बनाने अथवा अदातली अष्टक पैदा करके आज भी हजारों बीघा सिंचित भूमि बड़े-बड़े जागीरदारों के बँटों में और सही काश्तकारों की बीघा भूमि के लिए तरस रहे हैं।

किसानों से लाग-बाग

'लगान (माग) अर्थात् पर लाग बुरी, यह पुरानी कहावत है। ज्यों ज्यों लोग व शोषण वृत्ति बढ़ती गई, लगान के अलावा लाग लगती गई और बढ़ती रही। किसानों में उसकी पदावार का हिस्सा लगान में लेने के बाद बची हुई पैदावार से सँकड़ा तरह की लागें वसूल की जाती थी। इस तथ्य का प्रमाण तो इसी समय मिल जाता है कि दिनांक 22 जून, 1947 को राजस्थान होने के पश्चात् महाराजा हनुवन्तसिंह जी द्वारा घोषित मदेश में लाग-बाग के रूप में वसूल की जा रही हुजूमत की 85 लागें माफ करन का ऐलान किया था। बड़ी सख्या में लाग बाग माफ करने के बाद भी जागीरदारी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की अनक लागें प्रचलित थीं और राजस्थान के काश्तकारी कानून, 1955 के लागू होने तक भी कुछ न कुछ वसूलियाँ की जाती रही थीं। लटाई के बाद इस प्रकार की लागें वसूल करने का आम रिवाज जागीरी गावा में था।

पल्ला-साग' में रेजे के पड़ेवड़े के पल्ले पर अनाज लिया जाता था, इसलिए इसका नाम 'पल्ला-साग' हो गया। 1 जागीरदार का पल्ला, 2 ठुकरानीजी का पल्ला 3 माजी सां० का पल्ला, 4 बुजर सां० का पल्ला 5 बाईजी लाल का पल्ला 6 कुबराजीजी का पल्ला 7 कामदार का पल्ला, 8 फौजदार का पल्ला 9 हवलदार का पल्ला 10 कृषकारिया का पल्ला, 11 पावखा-मेहमाना का पल्ला, 12 गाव नाबन्दी का पल्ला, 13 सिंघातर (गांठे-गुंरी) का पल्ला, 14 मोम-नाग, 15 चौकी-दारी लाग 16 देवताओं की लागें-दश 26 बनीया की लाग



जिगम नाई, दर्जो डोली, सरपरा, मेपवान, हरिजन मणा, माची
 कुम्हार ग्वाला 27 मलवा लाग, 28 पूला लाग (पैलु जागीर-
 दार के बींग क बरीब कारिदा ब बमीला वा दिय जाने थ)
 29 लरडा (राकडे म) 30 भुंभी लाग, 31 चरली, 32 पात
 रती (मुपार-मुहार पर) 33 हाटडा (माची मेपवाल पर)
 34 धाणी 35 उवरिया 36 चहोला (बलगाडी) 37 राजक
 (रायवा पर बवरा लाग) 38 राण या उररडी लाग (रायका
 पर) 39 गरिया या गड्डा (रायवा न ऊन क धाना के बसल)
 40 ततावट (ऊन की बिनी पर रायवा स) 41 रजा लाग
 (मपवाला स) 42 धाडूरी (मवेगी की धापी माल)
 43 धावल (धमडा रगन वान मपवाला म) 44 बदगा (रग्यो)
 लाग 45 भाडा-लाग (भाप-गञ्जी बचन वान माली म)
 46 मटका (कुम्हार स) 47 बुरिया लाग (ऊटा के टाला वाया
 म प्रतिवष एक वा दा टाडिया ऊट) 48 बाकलिया (दूध-लाग)
 प्रति सप्ताह हर दज वान किमान की बारी धानी थी। मेहमान
 भान पर ब्यादा बगूल हाता थ। 49 धाडा रातक (इम लाग म
 किमाना म दूध भजन, पी धाडा व बछा क लिए तिया जला
 था) 50 हमली-नु डलिया कुधर या मबर क जम पर
 51 बाता लाग (गाव क किगी क धर जीमण मागूहिर मिच्छार
 भोजन-भादी ल्योहार मातर भादि पर हाता था तब जागीरगर स
 चर सभा कारिदा ब बमीला क बरीब बींग वाप लगत थ।
 दस सत्र स चर बाई मण तक मिठाई क नाम बगून निय जान
 थे। 52 गलावा लाग (शादी की बरीला पर) 53 जकारी
 लाग (शादी क बाद जुहार बरन जान पर नजराना दना पडता
 था) 54 हुकमनामा लाग (जागीरगर क दहात पर)
 55 मबेया (बातोसरा सात क भुट्ट), 56 धाम मारी (मवगी
 चराई) 57 जवारिया (धाडा क लिए हरी धाल का चारा),
 58 बजावा क माटी नाग (कुम्हारा स) 59 पडका (यह प्रमाज
 की लाग थी) और बरीब 20 तरह क फल लगत थ। बम
 कारिया मेहमाना ल्योहारा व भमल-नाम्बाजू क नाम पर बगून
 निय जात थ। 60 लूग-बापडी (रायवा स) 61 हल नाग
 62 माच 63 हाली 64 उछाला लाग 65 नूडा सपाई,
 66 जाडी लाग 67 भावला लाग 68 तलवटी 69 रागरज,
 70 धावी 71 सरडाबर लाग 72 मुपनमट लाग 73 मला
 लाग 74 वेरली पर लाग, 75 परवाना या मुकराना वारात,
 76 दरखत काटने की माल 77 तल लाग (दीपावली पर)
 78 हावा छपाई (व्यापारी म) 79 तबरी लाग 80 नाता
 लाग 81 नातर 82 गज छपाई 83 हुकुम वाक 84 धाणी
 लाग 85 पडका कड, 86 मेहतराई 87 बीबी लाग 88 नीवा

लाग 89 जगडा लाग, 90 नजराना लाग 91 गूरी लाग
 92 डावी लाग 93 दाता लाग, 94 बिगवा लाग, 95 पात
 बीयाई, 96 झूला लाग, 97 होला लाग, 98 बिचाडी लाग,
 99 दहज लाग, 100 तरणा लाग, 101 हाटडी लाग
 102 पिबाई लाग 103 पाग लाग, 104 बवरा लाग
 105 दागनाग, 106 पुवागा लाग 107 बीपर लाग
 108 बगरवत ताला यमरियाव लाग, 109 धवग लाग
 110 भुंभी लाग 111 रामा-नामा लाग, 112 पढाक लाग,
 113 पनीया लाग 114 प्रतराई लाग, 115 बमटा लाग
 116 बोडारी गध लाग 117 मरगड़ी या गध की लाग
 118 गीचडी लाग 119 पी लाग 120 पीडा की पंर लाग
 121 भापोरा परवाना लाग, 122 बीला लाग, 123 बावनी
 लाग 124 नूडा लाग 125 जाजम रा गपया लाग 126 भाव
 लाग 127 डोरी पूजन लाग 128 वेपडी या छाया लाग,
 129 धारागत की लाग 130 नूता लाग 131 बीनारणी माल
 132 परिया लाग 133 बनीला लाग 134 भरती लाग
 135 माहिरा लाग 136 मुजरा लाग 137 हजूर पत्रमाइम
 लाग 138 माड लाग 139 राली लाग 140 ग्वाला लाग।

घोर भी घनमित लागे बनीं कुछ घोर कही कुछ मनमानी
 दर म बगून हाती थी और विमान क धामजन का बेवनी की हासत
 म धपनी तारी बमार्द स हाय धान की मजदूर कर दिया जाता
 था। मधमध ही उम जमान का बाबनगर दयिता, दरिद्रता दुःस
 पराधीनता घोर धमहायता का पशुवत जीवन बिता रहा था। न
 उनवे मया के घोर न घरा के हो मुम्तजिल पट्टे थ। येत एव पर
 स बेदव न किया जाना धामवान थी। इमलिण उसे जागीरदार क
 कारिदा की दया पर ही रहना पडता था। स्पष्ट है लटाई

'लाग-भाग' का एक रोचक पर सही उदाहरण

एक ठाकुर साहब घोड़ी पर सवार हो गांव के धारो
 और बीडे रहे थे। तभी एक चक्रेते से टकरा कर ठाकुर
 गिर पड़े। घोड़ी मर गई और ठाकुर घायल हो गये।
 गांव के लोग एकत्रित हो ठाकुर साहब से कुशल पूछने राबले
 ने गये। ठाकुर साहब ने कहा-हल्ले हुए घोड़े के मरने पर
 बहुत शोक व्यक्त किया और कहा-सपने भी नहीं है। तबो घोड़ी
 कहाँ से लार्जे? इस पर गांव वाला ने प्रेमवस उन्हें 500
 रुपया उधार देना स्वीकार कर लिया। और, इस तरह तभी
 से 'चक्रेचक्री' नाम की लाग गांव के प्रत्येक परिवार से बहुत
 हुने लाग गई।



से लाग-भाग की मार अधिक थी। लूकड़ स लूकड़ की दुम मारी थी।

वह्न का ता यह कहा जाता है कि दशो राजा रजवाडा के वस्त्र में कोई टैस नहीं था पर म लोगों तथा बेगार वेनामी टवम ऐमे थे जिनस ब्राह्मण व राजपूता के भलावा शायद ही कोई बचा हा। विमाना व भलावा भी भ्रम कोमा पर या तो बतिपय लागें लगी हुई थी या बगारी म भ्रपन आपको खपाना पडता था। महा जन श्रीर व्यापारी वग को भी कई लागें नकदी के रूप में देने के भलावा जागीरदार के यहा मेहमाना के लिए रसोडा का सामान तालकर पहुंचाना पडता था। उसके लिए बिस्तर, पलंग, लाट पहुंचने हात थ, श्रीर नासा भाखा लाग ता थी हा। ये सारी लागें व जबरन वसुली जागीरी प्रथा समाप्त हाने पर गव गाव में हुए आंदोलन के फलस्वरूप बंद हुइ।

सामंती युग और बेगार प्रथा

हकीकत में तो बेगार प्रथा दास प्रथा का ही एक रूप है। जागीरी गावों में ज्या ज्या जागीरदार की आवश्यकता बढ़ती गई, त्या-त्या प्रजा से बेगार में काम लने की माशा भी बढ़ती गई। बिना मजदूरी या एवजाना दिय काम लने की प्रथा का नाम ही बेगार है। जागीरी गावों में हर व्यक्ति का 'भूनायिक' मात्रा में बेगार में काम करना पडता था। पर कुछ जातियाँ तो ऐसी थी जिन्हें बेगार में दिन रात पिसना पडता था। मेघवाल सरगरा आदि वग जो भूमि हीन मजदूर थे उन्हें तो बेगारी ही माना जाता था। राखले के काम के लिए जब 'बाह' बुला लिया जाता था। जागीरदार की फल्ल बटाई का नाम हो, सभी के लिए मुफ्त जूते मिलाई एव अन्य चमड़े का काम हा, ऊंट घोड़े के लिए रिजका, घास चारा साने का काम हो, घोड़े के लिए दाना दलिया तैयार करना हो, रसादे के लिए अनाज पिसाई का काम हा सदेण चिट्ठी पत्री लान स जाने का काम हो, कपड़े धाने का काम हो धाडा व मवेशी की देल रेख एव सफाई का काम हो वह सब इही लोगा का बारी-बारी से बेगार में करना पडता था।

फिसाना को बलगाडिया जागीरदार का सामान लाने व ल जाने एव मेहमाना के लिए रात दिन बारी-बारी से बेगार में बुलाई जाती थी। इसी तरह दर्जी मुफ्त में सभी के—जागीरदार के परिवार एव उनके कमचारी-बारिदा के कपड़े सीते थे। साइया का न केवल हजामत बनाने का काम करना पडता था वरन् रसोई बनान व बरतन साफ करने का काम भी करना पडता था। कुम्हार मिट्टी के पड़े व बरतन देता और मकान बनाने व मरम्मत के लिए इन्हें देने के भलावा सारा पानी भरता था। सुधार न केवल खाट बाजोट पाट

फर्नीचर आदि लकड़ी का सामान मुफ्त में बनाकर देता था, वरन् रसोडा की नित्य काम आने वाली लकड़ी भी फाडता था। कारीगर मकान बनाते या मरम्मत का काम करते थे, सुहार लोहे का सारा सामान बनाकर देते एव मरम्मत करते। सुनार सोने के जेवर बनाते और मजदूरी बेगार में करते थे। रायका लोग जागीरदार की मवेशी रेखड आदि मुफ्त में चराते ग्वाले का काम करते दूध दुहने का काम करते और मेहमानों के ग्रान पर अग्रया ल्योहारो पर बकरा देते और खाल व ऊन भी मुफ्त में दनी पडती थी। मेया चौकीदारी करते उन्हें रोज हाजरी देनी पडती थी। हरिजन सफाई-दुहारी करते और घावी कपड़े धाने का काम करते और माली रोज दबताघ्रा के लिए राखले में फूल लाता। उस रसोडे के लिए साम-

अहिंसक शक्ति की अपूर्व विजय

बाली में जोहड़ की 7000 बीघा गोचर भूमि का महा राजा जोधपुर ने अपनी निजी सम्पत्ति घोषित कर अपने चहेते लोगों को हाईकोर्ट के हथगन आदेश के विपरीत इनायत कर दी। बाली की मवेशी को चरने से रोक दिया गया। जन-आंदोलन को दबाने और आतंकित करने के उद्देश्य से पूर्व-महाराजा हनुवतसिंहजी के द्वितीय पुत्र हुकमसिंह जी 50-60 कारिदो सहित शस्त्रों से सज्जित हो गोचर भूमि में जा पहुँचे। वहा बाली के प्रमुख आन्तिकारी मोहनराजजी पणुपालको के एक बहद सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। जब लोगों को भय से विचलित होते नहीं देखा तो हुकमसिंह जी भ्राव देखा न ताव मोहनराजजी पर पीछे से तलवार से वार करने के लिए आगे बढ़े। तभी ग्राम जनता उत्तेजित हो गई। तत्काल मोहनराजजी ने पीछे मुड़कर गजब का साहस व फुर्ती दिखायी और हुकमसिंहजी के तलवार पकड़े हाथ को कलाई को इतनी ताकत के साथ पकडा कि उठा उभा तलवार बाला हाथ वहीं का वहीं रह गया और जन आक्रोश के आगे तलवार धायिस म्यान में चली गई। उन्हें अपने घर का रास्ता लेना पडा।

श्री द्योदमलजी सुरारण बडोनारायणजी शर्मा असलम भाई, बुधारामजी डांगी, बाबूभाई रावल आदि बाली नगर के अनेक मुखियाओं ने एकत्रित जन समूह को शात और अनुशासन में बनाये रखा अन्यथा कुछ भी पडित हो सकता था। हिंसक आक्रमण पर अहिंसक शक्ति की वह एक उल्लेखनीय विजय थी।



जिमम नाई दर्जी, बोली सरगरा, मेघवाल, हरिजन, मरणा माली
 कुम्हार भाना, 27 मनवा लाग 28 पूला लाग (बहुत जागीर
 दार के बीच क बचीब कारिदा व बचीला का शिप जात पं)
 29 पखडा (रोकडे म), 30 भुंगी लाग 31 चरली 32 रात
 रली (मुधार-मुठार पर) 33 हाटडी (मानी मघवाल पर)
 34 धाणी 35 उवरिया 36 बटोला (बलगाडी), 37 राजरा
 (राजका पर बकरा लाग) 38 राद या उगरडी लाग (राजका
 पर), 39 गरिया या गड्डा (राजका म ऊन क धारा के बडल)
 40 ननावट (ऊन की बिधी पर राजका म) 41 रजा लाग
 (मेघवाला म) 42 धापुरी (मवेगी की धापी लाग)
 43 धावल (बमदा रगन बाल मघवाला म) 44 बगणा (रग्गी)
 लाग 45 धाडा-लाग (साग-मन्गी बदन वान मानी म)
 46 मटका (कुठार म) 47 कुरिया लाग (जटा क दासा बाना
 म प्रतिवप एव मा दा टाटिया जट) 48 चाकलिया (दूध-नाग)
 प्रति गन्दाह हर दाजे वान विमान की बारी मानी थी। महमान
 भान पर ज्यादा बगुल होना था। 49 घोडा रातब (इन लाग म
 विमाना स दूध मगनन थी, घोडा व बघना क लिए लिया जाता
 था) 50 हगली-कु टरिया कुबेर मा मबर क जम पर
 51 बाना लाग (गाव के बिधी क पर जीमण नागृहिक मिष्ठात्र
 भाजन-बादी ल्योहार भाग्य भादि पर होना था तब जागीरदार म
 तकर समी कारिदा व बचीला क बरोर बीस काम लगत थ।
 दम सर म लवर डार्ड मण तब मिठाई क काम बगुल बिप जात
 थ। 52 शलोका लाग (मानी की बटोली पर) 53 जवारी
 लाग (शानी क बाण जुहार करने जात पर नजराना दना पडता
 था), 54 हुननामा लाग (जागीरदार के देहान पर),
 55 मनीया (जातोमरा गाव के भुट्टे), 56 पात मारी (मवेगी
 चराई) 57 जवारिया (घाडा क लिए हरी धाल का चारा),
 58 कजावा व माटी लाग (कुठार म) 59 कडका (बहु भनाज
 की लाग थी), धौर बरीव 20 तरह क पडव नवत थ। कम
 चारिया महमाना ल्योहार व भमसत-सम्बाधू के नाम पर बगुल
 बिप जात थ। 60 नुग-नापडी (राजका म) 61 हवा लाग
 62 माच 63 हानी 64 उजाला लाग 65 बूडा थपाई
 66 जाडी लाग 67 भावली लाग 68 तलबडी, 69 रगरेज
 70 धाडी 71 खरडाकर लाग 72 मुगतमर लाग 73 मला
 लाग 74 खेरली पर लाग, 75 परवाना या मुकराना बारात
 76 दरखत काटन की लाग 77 तल लाग (दीपावली पर)
 78 तासा छपाई (पापारी म) 79 तबारी लाग 80 नाला
 लाग 81 नालर, 82 गज द्यम् 83 हुडुम वाच 84 धाणी
 लाग, 85 खडला कड 86 महनराई 87 चोली लाग 88 नीवा

लाग, 89 जपडा लाग 90 नजराना लाग 91 पूगरी लाग,
 92 दापी लाग 93 दानी लाग, 94 विमवा लाग 95 गान
 चौधार्ड 96 भन्सा लाग, 97 होना लाग, 98 बिचाडी लाग,
 99 बहज लाग, 100 तरखा लाग 101 हाटडी लाग
 102 विगाई लाग, 103 पाग लाग, 104 बकरी लाग,
 105 दापानाग 106 चुडाडा लाग 107 चौपर लाग
 108 बमगयन ताता वगेरिया लाग 109 पबण लाग
 110 चुंगी लाग 111 रामा-गामा लाग 112 पदाब लाग
 113 बनीया लाग, 114 धमरार्ड लाग, 115 बमडा लाग
 116 कौडारी पच लाग 117 गरगुडी मा गप की लाग
 118 लीबडी लाग 119 ची लाग 120 पीडा की पर लाग,
 121 धापारा परवाना लाग 122 चीला लाग, 123 बावनी
 लाग 124 बूडा लाग 125 जाजम रा रपवा लाग 126 भाव
 लाग 127 डारी पूजन लाग, 128 मेपडी या छाला लाग,
 129 भागावत की लाग 130 नूता लाग 131 पीमाली लाग
 132 परिया लाग 133 बगना लाग 134 बरोनी लाग,
 135 माहिरा लाग 136 मुजरा लाग 137 हजूर परमाइश
 लाग 138 गाड लाग 139 राली लाग 140 रमात लाग।

धौर भी धनगिगत लागें कहा कुछ धौर कहा कुछ मनमानी
 दर स बगुन हाती थी धौर विमान व धामजन का बेवसी की हातत
 म धपनी मारी कबाई स हाथ धान की मजदूर कर शिमा जाता
 था। मजमुच ही उम जमाने का बाबनवार दामता दरिद्रता, दुख,
 पराधीनता धौर धनहायता का पशुवन जीवन बिता रहा था। न
 उसक मता के धौर न परा न ही मुस्ताकिल पई है। मेथ एव धर
 स बदनल किया जाना धामवात थी। इसलिए उम जागीरदार के
 कारिगा की दया पर ही रहना पडता था। स्पष्ट है लटाई

‘लाग-बाग’ का एक रोचक पर सही उदाहरण

एक ठाकुर साहब घोडे पर सवार हु गाव के धारों
 धोर वीह रहे थे। तभी एक चबूतरे से टकरा कर ठाकुर
 गिर पड़े। घोडी मर गई धौर ठाकुर घायल हो गये।
 गाव क लोग एकत्रित हो ठाकुर साहब से बुझल पूछने राखते
 ये गये। ठाकुर साहब ने बराहते हुए घोडे के मरने पर
 बहुत शोक व्यक्त किया धौर कहा-‘वपये भी नहीं है। मेथ घोडी
 कहा से लाऊँ? इस पर गाव वालो ने प्रेमवसा उहाँ 500
 रुपया उधार देना स्वीकार कर लिया। धौर, इस तरह तभी
 से ‘पूडचडी’ नाम की लाग गाव क प्रत्येक परिवार से बगुल
 होने लग गइ।



स लाग-बाग की मार अधिक् थी। लूकट स लूकट की दुम मारी थी।

कहन का ता यह कहा जाता है कि दशौ राजा रजवाडा क वक्त म नाई टक्स नही था पर ये लागें तथा बेगार बेनामी टैक्स ऐसे थे, जिनस ब्राह्मण व राजपूता के भलावा शायद ही कोई बचा हा। किसान क भलावा भी अग्र्य कौमा पर या तो कतिपय लागें लगी हुई थी या बेगारी म अग्रन आपका खपाना पडता था। महा जन श्रीर व्यापारी वग का भी नई लागें नवदी के रूप म दने के भलावा जागीरदार ने यहा मेहमाना के लिए रसाडा का सामान तोलकर पहुंचाना पडता था। उसने लिए बिस्तर, पलंग खाट पहुंचाने हात थ श्रोग कासा माणा लाग ता थी ही। ये सारी लागें व जबरन वसूली जागीरी प्रथा समाप्त हाने पर गाव-गाव म हुए प्रादोलन के फलस्वरुप बन्द हुइ।

साम-ती-युग श्रीर बेगार-प्रथा

हकीकत म तो बेगार प्रथा दास प्रथा का ही एक रूप है। जागीरी गावा म ज्या ज्यो जागीरदार की आवश्यकता बढती गई त्या-त्या प्रजा स बेगार म काम लन की मात्रा भी बढती गई। बिना मजदूरी या एवजाना दिख काम लन की प्रथा का नाम ही बेगार है। जागीरी गावा मे हर व्यक्ति का यूनानधिक मात्रा म बेगार म काम करना पडता था। पर कुछ जातियाँ ता एसी थी जिह बेगार मे दिन रात पिसना पडता था। मेघवाल सरगरा आदि वग जा भूमि हीन मजदूर थे उह तो बेगारी ही माना जाता था। रावले के काम के लिए जब चाहे बुला लिया जाता था। जागीरदार की फगल कटाई का काम हो सभी के लिए मुफ्त जूत सिलाई एव अग्र्य चमडे का काम हा अँट पाडा के लिए रिजदा, धास चारा लाने का काम हो घोडो के लिए दाना दलिया तैयार करना हो रसोड के लिए अनाज पिमाई का काम हो, स-देश, चिट्ठी-पत्री लाने ल जान का काम हो कपडे धाने का काम हा पाडा व भवेशी की देल रेल एव सफाई का नाम हो वहा सब इही लोगो को बारी-बारी से बेगार म करना पडता थ।

किसाना की बैलगाडिया जागीरदार का सामान लाने व ल जाने एव मेहमाना के लिए रात दिन बारी-बारी से बेगार म बुलाई जाती थी। इसी तरह दर्जों मुफ्त म सभी के-जागीरदार के परिवार एव उनके कमचारी-बारिदा के कपडे सीते थे। माधयो को न केवल हजामत बनाने का काम करना पडता था वरन् रसोई बनान व बरतन साफ करन का काम भी करना पडता था। कुम्हार मिट्टी के पडे व बरतन देता श्रीर भवान बनाने व मरम्मत के लिए इटें देने के भलावा सारा पानी भरता था। सुयार न केवल खाट बाजोट, पाट

फर्नीचर आदि सबडी का सामान मुफ्त मे बनाकर देता था, वरन् रमोडा की नित्य काम आने वाली लकडी भी फाडता था। कारीगर मकान बनात या मरम्मत का काम करत थे, सुहार लाहे का सारा सामान बनाकर देत एव मरम्मत करत। सुनार साने के जेवर बनात श्रीर मजदूरी बेगार म करते थ। रायका लाग जागीरदार की भवेशी रेवड आदि मुफ्त मे चरात खाले का काम करत दूध दुहने का काम करत श्रीर मेहमाना के आन पर अग्रवा ल्योहारा पर बकरा देत श्रीर खाल व उन मो मुफ्त म दर्जो पडती थी। मेणा चौकीदारी करत उह रोज हाजरी दर्जो पडती थी। हरिजन सफाई बुहारी करते श्रीर घाबी कपडे धाने का काम करत श्रीर माली रोज देवताप्रा के लिए रावले म फूल लाता। उसे रसाड के लिए साग

अहिंसक शक्ति की अपूर्व विजय

बाली मे जोहड की 7000 बीघा गोचर भूमि को महा राजा जोधपुर ने अपनी निजी सम्पत्ति घोषित कर अपने चहेते लोगो को हाईकोड के स्पगन आदेश के विपरीत इनायत कर दी। बाली की भवेशी को चरने से रोक दिया गया। जन-आंदोलन को दबाने श्रीर प्रातिकृत करने के उद्देश्य से पूव-महाराजा हुनवतसिंहजी के द्वितीय पुत्र हुकमसिंह जी 50-60 कारिदो सहित शस्त्रो से सज्जित हो गोचर भूमि मे जा पहुँचे। वहा बाली के प्रमुख आन्तिकारी मोहनराजजी पयुवालको के एक बृहद सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। जब लोगो को भय से विचलित होते नहीं देखा तो हुकमसिंह जी प्राव देखा म ताव मोहनराजजी पर पीछे से तलवार से चार करने के लिए आगे बडे। तभी आम जनता उत्तेजित हो गई। तत्काल मोहनराजजी ने पीछे मुडकर गजब का साहस व धुर्तली दिखायी श्रीर हुकमसिंहजी के तलवार पकडे हाथ की कलाई को इतनी ताकत के साथ पकडा कि उडा हुया तलवार वाला हाथ वही का वहाँ रह गया श्रीर जन प्राक्रोस के प्रागे तलवार वापिस म्यान मे चली गई। जहें अपने घर का रास्ता लेना पडा।

श्री छोटमलजी सुरासा बहीनारायणजी शर्मा असलम भाई, बुधारासजी डांगी, बाबूभाई रावल आदि बाली नगर के अनेक मुखियाओ ने एकत्रित जन समूह की शक्त श्रीर धनु शासन मे बनाये रखा अग्र्यथा कुछ भी घटित हो सकता था। हिंसक आक्रमण पर अहिंसक शक्ति की वह एक उल्लेखनीय विजय थी।



जिसम भाई, बर्षों, दोली, सरगरा, मधवाल, हरिजन, मण्णा माली, मुम्हार च्वाला 27 मलवा लाग 28 पूला लाग (ये पूल जागीरदार के बीस के करीब कारिदा व कमीणा वा दिय जाते थ), 29 खरडा (रोकडे म), 30 भुपी लाग 31 चरली, 32 खात रली (सुभार-सुहार पर) 33 हाटडी (माचो मधवाल पर) 34 घाणो, 35 उबरिया 36 चहोला (बनगाडी), 37 फाज (रायवा पर बनरा लाग), 38 खाद या उखरडी लाग (रायवा पर), 39 गरिया या गड्डा (रायका स ऊज क धाणा के बडत) 40 तलावट (ऊज की बिशी पर रायका स) 41 रजा लाग (मधवाला स) 42 धारूरी (मवेशो की धापी साज), 43 धावल (धमडा रगने वाल मेघवाला स) 44 बदला (रम्मी) लाग, 45 धोडा लाग (साग-मन्नी वेचन वाल मालो म) 46 मटवा (मुम्हार स) 47 कुरिया लाग (ऊटा क टाला बालो स प्रतिवप एक वा दा टाडिया ऊट) 48 चाकतिया (दूध-लाग) प्रति सप्ताह हर दाज वाल किसान की बारी धाती थी। मेहमान धार पर ज्यादा बनूल हाता था। 49 धोडा रातब (इस लाग म निमाना स दूध मखन धी घाडा व बछ्णा क लिए लिया जाता था) 50 हलसी-कुडलिया, कुवर या भवर व जम पर 51 बासा लाग (गाव के किमी व घर जौमण मासुहिक मिष्ठात्र भोजन-शादी त्योहार भासर धादि पर होता था तब जागीरदार स लकर सनी कारिदा व कमीणा व करीब बीस कास लगत थ। दस सेर स लकर ढाई मण तक मिठाई व बासे बनूल किये जात थ। 52 शलोका लाग (शादी की बढीला पर) 53 जवारी लाग (शादी के बाद जुहार करत जान पर नजराना दना पडता था), 54 हुकमनामा लाग (जागीरदार क दहान्त पर), 55 मकीया (कातीसरा साख व मुट्टे) 56 धाम मारी (मवेशो चराई), 57 जवारिया (धोडा क लिए हरी घास का चारा) 58 कजाव व घाटी लाग (मुम्हार स) 59 फडका (यह धनाज की लाग थी) और करीब 20 तरह क फल्ले लगत थ। कम कारिया मेहमाना त्योहार व धमल-तम्बाजू व नाम पर बनूल किय जात थ। 60 लुग-नापी (रायका स) 61 हल लाग 62 माच, 63 हाली 64 उखला लाग 65 बूडा घपाई 66 जाडा लाग 67 भावली लाग 68 तलवटी 69 रगरज 70 धाली 71 खरदाकर लाग 72 सुगमट लाग 73 मला लाग, 74 मेरणी पर लाग, 75 परवाना या सुजराना बागत, 76 दरसत चाटन की लाग 77 तल लाग (दीपावली पर) 78 ताला छ्पाइ ('वापारा स) 79 तवारी लाग 80 नाता लाग 81 नावर, 82 मन छ्पाई 83 हुकुम वाव 84 घाणो लाग 85 खडला वड 86 मेहतराई 87 चौका लाग 88 नीवा

लाग 89 जगडा लाग, 90 मजराना लाग 91 गूरी लाग, 92 डावी लाग 93 दाती लाग, 94 बिसवा लाग, 95 खात चौपाई, 96 भडूला लाग, 97 होला लाग, 98 बिवाठी लाग, 99 दहज लाग, 100 मेरणा लाग 101 हाटडी लाग 102 पिवाई लाग, 103 पाग लाग, 104 चबरी लाग, 105 दापालाग, 106 धुवाडा लाग, 107 चौधर लाग 108 बसरपत ताला पसरियान लाग, 109 पवण लाग 110 चुमी लाग 111 रामा-सामा लाग, 112 पडाम लाग, 113 पढीया लाग 114 भलराई लाग, 115 धमडा लाग, 116 कोठारी लख लाग 117 खरगनी या गध की लाग 118 खीचडी लाग, 119 धी लाग 120 धोडा की फेर लाग, 121 धापोरा परवाना लाग 122 बीला लाग, 123 चावनी लाग 124 बूडा लाग 125 जाबम रा गप्या लाग 126 फार लाग 127 डारी पूजन लाग 128 वेपडी या छाणा लाग, 129 धारायत की लाग 130 नूता लाग 131 पीलाणी लाग, 132 पेरिया लाग 133 बढीला लाग 134 भरती लाग, 135 माहिरा लाग 136 मुजरा लाग 137 हजूर फरमाइश लाग 138 साड लाग 139 राली लाग 140 रसाल लाग।

और भी धनमिनत लागें वही कुछ और वही कुछ मनमानी दर स बनूल हाती थी और किसान व ग्रामजन का बेवसी की हालत म धरनी सारी बमर्द स हाथ धाले की मजबूर कर दिया जाता था। सचमुच ही उम जमान का शासनकार दामता दरिद्रता, दुख, पराधीनता और धमहायता का पशुवत जीवन बिता रहा था। न उसके सेता के और न धरो के ही मुम्तबिल पृष्ठ थे। धेत एक धर स बेदखल किया जाना धामवात थी। इसलिए उस जागीरदार के कारिया की दया पर ही रहना पडता था। स्पष्ट है सटाई

'लाग-बाग' का एक रोचक पर सही उदाहरण

एक ठाकुर साहब घोषो पर सवार हो गाव के चारो ओर दौड रहे थे। तभी एक बधुरते से टकरा कर ठाकुर गिर पड। घोडी सर गई और ठाकुर घायल हो गये। गाव के लोग एकत्रित हो ठाकुर साहब से दुःख पूछने रावल भे गये। ठाकुर साहब ने कराहते हुए घोडे के धरने पर बहूत शोक धमक किया और कहा-सपये भी नहीं हैं नयो घोडो कहा से लाऊँ ? इस पर गाव धालो ने प्रेमवश उहाँ 500 रुपया उधार देना स्वीकार कर लिया। और, इस तरह तभी से 'पूडबडो' नाम की लाग गांव के प्रत्येक परिवार से बनूल होने लग ग।



से लाग-बाग की मार अधिक थी। लूकड़ से लूकड़ की दुम मारी थी।

कहन का ता यह कहा जाता है कि दगी राजा रजवाडा के वक्त म कोई टैक्स नहीं था पर ये लागे तथा बेगार बेनामी टैक्स ऐसे थे, जिनसे ब्राह्मण व राजपूता के अलावा शायद ही कोई बचा हो। किसान के अलावा भी ग्रय बीमा पर या ता कतिपय लागें लगी हुई थी या बेगारी म अपन अपका खपाना पडता था। महा-जन और व्यापारी वग को भी कई लागे नकदी के रूप म देन के अनावा जागीरदार के यहा मेहमाना के लिए रसोडा का सामान तोलकर पहुंचाना पडता था। उसके लिए विस्तर, पलव खाट पहुंचाने हात व श्रोग कासा माण्डा लाग तो थी ही। ये सारी लागें व जबरन वसूली जागारी प्रथा समाप्त हाने पर गाव गाव मे हुए आंदोलन के फलस्वरूप बंद हुं।

सामंती युग और बेगार-प्रथा

हकीमत म तो बगार प्रथा दाम प्रथा का ही एक रूप है। जागीरी गावा म ज्या ज्या जागीरदार की आवश्यकता बढ़ती गई, त्या-त्या प्रजा स बेगार म काम लने की मात्रा भी बढ़ती गई। बिना मजदूरी या एवजाना दिय काम लन की प्रथा का नाम ही बेगार है। जागीरी गावो मे हर ब्यक्ति का 'यूनाधिक' मात्रा मे बेगार मे काम करना पडता था। पर कुछ जातियां तो ऐसी थी जिह बेगार मे दिन रात पिसना पडता था। मधवाल सरगरा आदि वग जो भूमि हीन मजदूर थे उह ता बेगारी ही माना जाता था। राबले के काम के लिए जब चाह बुला लिया जाता था। जागीरदार की पसल बटाई का काम हो सभी के लिए मुफ्त जूते सिलाई एव ग्रय चमडे का काम हा अंड घाडा के लिए रिजका, घास चारा साने का काम हो घोडा के लिए दाना, सलिया तैयार करना हो, रसाडे के लिए अनाज पिसाई का काम हा, सदेश बिट्टी पत्री साने ले जाने का काम हो कपडे धाने का काम हा घाडा व मवेशी की देख रेख एव सफाई का काम हो वह सब इही लोगा का बारी-बारी से बेगार म करना पडता था।

किसाना की बैलगाणिया जागीरदार का सामान लाने व ल जाने एव मेहमाना के लिए रात दिन बारी-बारी से बेगार मे बुलाई जाती थी। इसी तरह दर्जे मुफ्त मे सभी के-जागीरदार के परिवार एव उनक कर्मचारी-कारिदा के कपडे सीत थ। शायो को न केवल हाजमत बनाने का काम करना पडता था वरन् रसोई बनान व बरतन साफ करने का काम भी करना पडता था। कुम्हार मिट्टी के पडे व बरतन देता और मकान बनाने व मरम्मत के लिए दूठे देने व अलावा सारा पानी भरता था। सुधार न केवल खाट, बाजोट, पाट

फर्नीचर आदि लकड़ी का सामान मुफ्त मे बनाकर देता था वरन् रसोडा की नित्य काम आने वाली लकड़ी भी फाडता था। कारीगर मकान बनाने या मरम्मत का काम करते थे सुधार लोहे का सारा सामान बनाकर देते एव मरम्मत करते। सुतार साने के जेवर बनात और मजदूरी बेगार म करते थ। रायका लोग जागीरदार की मवेशी रेवड आदि मुफ्त मे चराते खाले का काम करते दूध दुहन का काम करते और मेहमाना के आन पर अथवा त्योहार पर बनवा देते और खाल व ऊन भी मुफ्त म दनी पडती थी। मेणा चौकीदारी करते उह रोज हाजरी दनी पडती थी। हरिजन सफाई सुहारी करते और घोबा कपड धान का काम करते और माली राज देवताघ्रा के लिए राबले म पूल लाता। उसे रसोडे व लिए साग

आहिसक शक्ति की अपूर्व विजय

बाली मे जोहड की 7000 बोया गोचर भूमि को महा राजा जोधपुर ने अपनी निजी सम्पत्ति घोषित कर अपने चहेते लोगो को हाईकोर्ट के स्थगन आदेश के विपरित इनायत कर दी। बाली की मवेशी को चरने से रोक दिया गया। जन-आंदोलन को दबाने और आतंकित करने के उद्देश्य से पूर्व-महाराजा हनुवतसिंहजी के द्वितीय पुत्र हुकमसिंह जी 50-60 कारिदो सहित सशस्त्रो से सज्जित हो गोचर भूमि मे जा पहुंचे। वहा बाली के प्रमुख आतंककारी मोहनराजजी पयुपलको के एक बृहद सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। जब लोगो को भय से विचलित होते नहीं देखा तो हुकमसिंह जी आवा देखा न ताव मोहनराजजी पर पीछे से तलवार से वार करने के लिए आगे बढ़े। तभी आम जनता उत्तेजित हो गई। तत्काल मोहनराजजी ने पीछे मुडकर गजब का साहस व फुर्ती दिखायी और हुकमसिंहजी के तलवार पकडे हाथ को कलाई को इतनी ताकत के साथ पकडा कि उडा हुआ तलवार थाला हाथ वही का वहाँ रह गया और जन-आक्रोश के आगे तलवार वापिस म्यान मे चली गई। उहाँ अपने घर का रास्ता लेना पडा।

भी छोटमलजी सुराणा बडौनारायणजी शर्मा असलम भाई, बुधाराणजी डांगी, बाबूभाई रायल आदि बाली नगर के अनेक मुखियाओ ने एकत्रित जन समूह को शात और अनु-शासन मे बनाये रखा अन्वया कुछ भी घटित हो सकता था। हिंसक आक्रमण पर आहिसक शक्ति को वह एक उल्लेखनीय विजय थी।



मंजी देनी पडती थी। यह था बेगार मे नाम करने का हाल। मना करने पर जता की मार भूप मे और घोडा की पायना मे गुर्गा बनापर बिठा देना बता मे पिटाई और सबके मामने भ्रमनामित करना माधारण बात थी। प्रजा लाचार व बेवस थी, क्याकि निरकुम नामता के लगातार बढ़ते जुमा व मोपण के विरुद्ध नोड शिवामत मुनेे वाला नही था। अधिपतर डिगणा को गुलित एव "मायिग अधिभार प्रायल था।

बाग्नेम एव लोख परिपर के सगठित सयप ने लोगो म बेतना जाणत की उह भपने अधिभारो का बोध हुमा और उनके लिए गाव-गाव मे धा दोलन हुए और जागीरी प्रया की समाप्ति के माय ही घोषण की ये तीना प्रथियाए- नटाई लाग बाग और अगार प्रया ममाल हई।

भूमि-सुधार आन्दोलन

लटाई लाग-बाग व बेगार प्रया के विरुद्ध लोग जन धा-दोलन के पनस्वरूप सवत 2005 म भारतवाड के जागीरी गावा म भी भू प्रबन्ध का बाय प्रारम्भ करना पडा था ताकि किसानो को खालना गावा की मर्ति बाधी (खातेदारो) पट्टे मिल सकें लगान रोकड म निवचित हो तथा वेदखलियो से उनको सकारा मिल सकें। पर जागीरदारो ने भू प्रबन्ध (सेटलमेन्ट) के विरुद्ध मोर्चा कायम किया और बिबनर ठाडुर की सभ्यक्षता मे मगठित होकर वेदलमेन्ट का बाय ही रोक दिया। जोधपुर महाराजा को बिबनर दिनाने पर पौज व पुदस्वार भेजकर र्वा हुमा बाय करलाना पडा। इधर साण्डरवा ठाडुर एव इचर ने निपदह गाव के पाम जमाई बाण की नहर का काम यह बहकर बसपुलक राण किया कि हमारी जागीरी की भूमि म सखार वा नहर नही सोदन हो। इन सरदारो को भी बासी किले म नद रवा गया तभी बाय भाते बडा। पर जागीरदारो द्वारा निवट भयिप्य म राजमाही एव जागीर प्रया का प्रन्त हाते देखकर सन् 1948 म सखबाग ठाडुर के मेहुव म एव विमाल जुपुस दस हजार स भी अधिभ एव सगम्भ नोगा का जोधपुर गहर मे धामोजित किया गया जिनमे सखबाग ठाडुर माधोमिह हाय म तसवार लिये घोडे पर सवार थे और अध जागीरदार तथा उनके सहयोगी राजपूत पदल थे, तेजिन इम भव प्रदगन का भारतवाड की धामोसी राजपूत पदल के दिल पर भारी उडा प्रभाव हुमा और प्रगतिशील ताकती और लोख-परिपर की पपना धा-दानन त करने का धवपर निव गया।

बेदम बाग्नेस की राष्ट्रीय सरकार बन चुकी थी, अत धीरे धीरे जागीरदारो पर भी देशी राज्या म प्रभुत्व लगे रहे। लोख जागरूक होकर मुनाबसा कर रहे थे। भूमि-ब-दोबस्त की प्रगति के साथ-साथ पाली जिले म वेदखलियो का जुम बढ रहा था। बायतकारा को उनकी अच्छी उपज देन वाची ब-जामुदा पुस्तती भूमियो-जेरा ने वेदखल वर जागीरदार स्वय धरने नाम सातेदारो म लिखाना चाहत थे। इसी सिलमिले म ग्राम इस्तरबाडा मे चौरी मूलाराम को मारा गया और उनकी मदद म दोडे देवली पाठुकी ने बाग्नेस बायकर्ता रामेश्वरजी रामगोपालजी, रामजी-गालजी आदि पर ब-डूकी से हमला कर उह पायल कर दिया गया। ऐसी अनेक घटनाओ के फलस्वरूप जोधपुर राज्य म उही दिन म बनी लोख मित्र सरकार ने वेदखलियो को रोकने मे पूव एक एक परिषप-पत्र परलना हाकिमो ने नाम जारी किया और फिर भारतवाड टिनेन्ती प्रोबेक्शन अडिनिस्त जारी किया। सन् 1948 म ही लटाई लाग-बाग एव सरक्षण प्रायल हुमा। सन् 1948 म ही लटाई लाग-बाग एव बेगार प्रया समाप्ति हेतु आदेश जारी हुए। गावा म कयबलाना दरवार तथा जागीरदारो के सुराडित शिकार क्षेत्र भी ममाल लिये गये। सभी ठिकानो मे हो रहे भ्रमनामुक्ति जुला एव धर्याचार के पीछे कामदार व उनके सातहत काम करने वाले बारी-दा की विइत बुकि काम करती थी और अधिभतर ठाडुर लोग ऐण धाराम, नचा-पत्ता सर-नपाटा या शिकार मे मकमूल रहते थे। कामदार और बमबारी मनमाना मोपण करते थे। इनमे नई जागीरदारो की पूव-पीडिया के मार ल्याव व बलिदाना पर पाली फेरल जागीरदार बग को हमेला के लिए लोगो की नजरा से गिरा दिया था।

सन् 1952 मे जागीरदारो उभूतल बनत बना तो जागीर दारो ने भू-बामिया वा धा-दोलन छेड दिया। बाली जिने मे निम्बोरानाग महुदेव रथान पर इहोने सपना जिनिल रवापित किया जहाँ मे प्रतिदित लत्यामहिमा का एव जया नरे लगता हुमा बाली बाजार म निवलता और निरपारिप्यो देवर जेत भेज दिया जाता। इस धा-दोलन के प्रतिनिधिया-स्वयक बाली स मोहल राजकी ने भूमि-नुब नामक हस्तलिखित एव पट्टीय दलिख पथी निबालना शुरू किया जिनका मग्माददन विजयमजजी गुराणा बरते थे। उमम जागीरी-नुब ममालित के पक्ष म नेव होत थ और सत्याग्रहियो तथा अध प्रमुख लागाम म उनकी प्रतिमा तितरित की जाती थी।



: 4 :

पाली जिले मे भूमि-सुधार तब और अब

□ श्री सुखवीरसिंह महलोत □

प्रथम विश्व महायुद्ध के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस यह समझ गई थी कि केवल विदेशी गुलामी से छुटकारा पाना ही उसका उद्देश्य नहीं होना चाहिये बल्कि वास्तविक स्वराज्य के लिए देश के जमींदारों, जागीरदारों, पूँजीपतियों आदि में भी छुटकारा दिलाने पर ही भारतीय जनता को असली स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है। वास्तव में भारतीय स्वतंत्रता की समस्या किसानों का जमींदारों, जागीरदारों आदि से मुक्त कराने से गूँधी हुई थी। नवजागत किसान वर्ग का साथ लेने के लिये यह आवश्यक था कि उनका आश्वासन दिया जावे कि विदेशी शासन के अंत के साथ साथ जमींदारी व जागीरदारी प्रथा का अन्त करना भी आवश्यक होगा। अतः मई 1929 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने यह प्रस्ताव पारित किया कि— 'भारतीय जनता की गरीबी व बुरी हालत को दूर करने के लिए और जनता की दशा सुधारने के लिए आवश्यक है कि समाज के वर्तमान आर्थिक व सामाजिक ढाँचे में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये जावें और घोर असमानताएँ दूर की जावें।' इसी कारण कांग्रेस ने कराची अधिवेशन में महात्मा गांधी ने यह प्रस्ताव पारित कराया कि किसानों के मूल अधिकारों में 'कृषि-लगान अथवा वृषक द्वारा दिये जाने वाले राजस्व में पर्याप्त कटौती और अहितव्ययी क्षेत्रों में ऐसे काल तक के लिए, जितना आवश्यक समझा जावेगा लगान माफी और जहाँ नहीं आवश्यक समझा जावेगा—छाटे जमींदारों को जो इस कटौती से प्रभावित होंगे सहायता दी जावेगी।

बाद के वर्षों में गांधीजी ने एक नया नारा लगाया कि समस्त भूमि गोपाल की है। 'हरिजन' के 2 जनवरी 1936 के अंक में उन्होंने लिखा कि हमारे पूर्वजों द्वारा हम वास्तविक समाजवाद प्राप्त हुआ है जिन्होंने हमें सिखाया कि समस्त भूमि गोपाल की है। तब सीमा की रेखा कहाँ है? मनुष्य ही उस रेखा को बनाने वाला है तथा वहीं उसे मिटा भी सकता है। गोपाल का शान्तिक अर्थ यहाँ से है लेकिन इसका अर्थ भगवान से भी है। आधुनिक भाषा में इसका तात्पर्य राज्य अथवा जनता से है। यह कहना कि भाजकल भूमि जनता की नहीं है यह भी सत्य ही है। इसी कारण 1942 में "भारत छोड़ो" प्रस्ताव में यह घोषणा भी

की गई कि कांग्रेस का उद्देश्य दश में एमी सरकार की स्थापना करना है जो कि किसानों, मजदूरों व अन्य वर्गों की सही सवा कर सके और सर्वोच्च सत्ता भी उसी में निहित हो।

"भारत छोड़ो" प्रस्ताव पारित करने के बाद ही कांग्रेस के सभी नेता गिरफ्तार कर लिये गए और जब वे छोड़े गए तब शीघ्र ही सरकार ने चुनावों की घोषणा कर दी। अतः 1946 के चुनावों के समय कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र में बतलाया कि भूमि पद्धति में सुधार, जो कि हिंदुस्तान में अत्यावश्यक है, के लिए आवश्यक है कि राज्य व किसानों के बीच मध्यस्था को हटाया जावे और इसलिए ऐसे मध्यस्था व अधिकार उनका उचित मुद्रावजा देकर छीन लिए जावें।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कांग्रेस ने जी सी कुमारस्वामी की अध्यक्षता में एक भूमि सुधार समिति बनाई जिसने काफी जांच-पड़ताल के पश्चात् जुलाई 1948 में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसकी कुछ मुख्य सिफारिशें निम्नलिखित थी—

- 1 भारत की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में मध्यस्था के लिए कोई स्थान नहीं रहना चाहिए। भूमि पर भूमि जातने वाले का ही अधिकार रहना चाहिए।
- 2 सिवाय विधवाओं, नाबालिगों अथवा अन्य अप्रतिष्ठित व्यक्तियों के भूमि को किसी भी शिकमी कारण पर देने से रोका जाना चाहिये।
- 3 जो व्यक्ति 6 वर्ष तक लगातार भूमि जातता चला आ रहा है उसका स्वामित्व रूप से छातदारी अधिकार प्राप्त हो जाना चाहिए।

समिति ने यह भी सिफारिश की कि भूमि जातने वाले का भूमि पर रियाई हस्तांतरण करने योग्य व पैतृक अधिकार केवल निम्न शर्तों पर प्राप्त होने चाहिये—

- (क) भूमि शिकमी कारण पर नहीं दी जाय।
- (ख) केवल उसी व्यक्ति का भूमि दी जाय जो वास्तव में काम करता हो।



वाद के बरों में बन्द प्रस्तावों व उद्धारों में कांग्रेस द्वारा इन भूमि मन्त्र की प्रस्तावों का बार बार दाहुराया गया और राज्यों की कांग्रेसी सरकारों को इन सुधारों का कार्यान्वित करने के लिये कहा गया। नासिक कांग्रेस के अधिवेशन में स्पष्ट शब्दों में घोषणा की गई कि जमींदारी जागीरदारी व अन्य प्रकार के सामन्तवाद का शोधान्निर्गमन उन्मूलन किया जाय।

यह भी कांग्रेस की नीति भूमि सुधारों के लिये। उनको त्रिआन्वित तो राज्य को ही करनी थी। अतः अब हम राजस्थान की भूमि मन्त्र की समस्याओं को ध्यान देवें।

स्वातन्त्र्यपूर्व राजस्थान में जागीर-प्रथा का स्वरूप

सन् 1949 के पूर्व राजस्थान विभिन्न छाटी-बंटी रियासतों में बंटा हुआ था। इन रियासतों की भूमि दो बड़े भागों—खालसा व जागीरों में बंटी थी। खालसा भूमि में काश्तकारों का सीधा संबंध रियासत से था लेकिन जागीर क्षेत्रों में काश्तकारों का सीधा संबंध जागीरदारों से था। जागीर भूमि धारण प्रणाली को फाँट भंगिया में विभक्त किया जा सकता था—जागीर जूता जागीर, नाम, धर्मार्थ अनुदान मोहिबारा इनाम मेवा अनुदान तथा स्थायी लगान मुक्त जमीनों व भूमिप्राप्तियों व भूनीति मूला इस्तमरारों आदि। राजस्थान में तब 50 126 वर्ग भूज भूमि खालसा के अन्तर्गत थी तो 77 118 वर्ग भूज भूमि जागीरों के अन्तर्गत थी।

जागीरदारों व शासकों के बीच में सम्बन्ध विभिन्न रियासतों में विभिन्न प्रकार के थे। कहीं-कहीं तो उनके अपने क्षेत्र में पूर्ण अधिकार प्राप्त थे और अन्य स्थानों पर उनके बिना किसी राजनतिक प्रभाव के प्रथम जनपदाय सत्ता के केवल राजस्व अम्नि-हस्तान्तरियों की श्रेणी में खदेड़ दिया गया था। समस्त भूमि राजा अथवा जागीरदारों को राजस्व प्रदान करती थी। भूमि में कृषक का व्यक्तिगत अधिकार नहीं के बराबर था। जहाँ पर बन्दोबस्त नहीं हुआ था वहाँ पर कृषकों के सुधारण अधिकारों की व्याख्या नहीं रूप से करना असम्भव नहीं था। यद्यपि कानून से काश्तकारों के कोई सुरक्षित प्रथम भाग अधिकार नहीं थे फिर भी विधि या प्रथा के अनुसार वह अपनी भूमि में स्थायी व वगानुगत अधिकार रखता था जब तक कि वह लगान देना था। जिन क्षेत्रों में पूर्ण धारण निहित और अस्पष्ट था और जहाँ अधिक लगान प्रचलित था वहाँ काश्तकारों की स्थिति श्रेष्ठ जोतने वाले नौकर के समान थी। काश्तकारों की स्थिति उन स्थानों में और भी खराब थी जहाँ पर लगान जिनमें (साटकर) लिया जाता था। जहाँ पर राजस्व फसल की अनुमानित मात्रा पर (बूँतकर) लिया जाता था वहाँ

उमका अनुमान मनमाने ढंग में लगाया जाता था और कहीं-कहीं बीघों की मात्रा पर और कहीं-कहीं हल व साधारण पर भी लिया जाता था। इन सबसे अलावा काश्तकारों को कई प्रकार की लागतें बाँटनी पड़ती थीं, जिनका दान के बाद काश्तकारों के पास उपज का साधा हिस्सा भी नहीं रहता था। इनके अलावा काश्तकारों से बेगार भी ली जाती थी। बेगार का कोई मर्यादित नियत नहीं था। खालसा क्षेत्र में सरकारी कर्मचारियों सरकारों कायम तथा जागीरों गांवों के जागीरदारों व उनके परिवारों से मनावाए जाव काश्तकारों को बेगार तिनालने को विवश कर वत था। जो उनसे फाटगा का नहीं मानता था उनके लिए काठ की मजदूरी का जूता भी मार तैयार थी। इससे किसान बड़े परेशान थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्षों पहले काफी लागतें समाप्त कर दी गईं लेकिन जागीरी गांवों में ये चलती ही रही। व लागतों-बाँटों पूर्णतया राजस्थान टिर्निसी एक्ट के 1955 में लागू होने के बाद ही समाप्त हुईं। बेगार के विषय में फ्रान्सेज स्वतंत्रता पूर्व काल में काफी चर्चा और रियासतों सरकारों में बेगार प्रथा को सरकारों की भी घोषित कर दिया, लेकिन बेगार सरकारी अधिकारों के लिये ही रहे। इसी प्रकार जागीरी गांवों में भी बेगार ली जाती रही। यह अथर्व हुमा कि उच्च जातियों काफी सीमा तक बेगार से छूट पा गईं लेकिन पिछड़ी जातियाँ से, और वह भी परीक्षा में, बेगार ली जाती रही।

सन् 1952 में राजस्थान में जागीरदारी उन्मूलन कानून बना और उसके फलस्वरूप सन् 1965 के अंत तक 6,09 575 जागीरों का उन्मूलन कर दिया गया। कुछ जिलों में जमींदारियाँ व दिस्वेदारियाँ भी थीं। ऐसी 3,18,860 जमींदारियाँ सन् 1960 तक समाप्त कर दी गईं।

पाली जिले में भूमि सुधार

इस प्रकार कांग्रेस की भूमि सुधार मन्त्र की नीतियों का पालन करते हुए राजस्थान में भूमि सुधार शुरू किये गये और वह प्रक्रिया अब भी धारू है। इन भूमि सुधारों के कारण काश्तकारों की जितनी लाभान्वित हुए, यह हम देखना है। राजस्थान का 27 जिला में काश्तकारों की स्थिति को देखकर यहाँ हम केवल एक जिला पाली के ही भूमि सुधारों पर गौर करेंगे।

पाली जिले का निर्माण 1949 में हुआ था। तब इसका केवल 23 प्रतिशत भाग खालसा था, शेष 77 प्रतिशत भाग जागीर भूमियाँ में बंटा था। एसी जागीरें 10 433 थीं जो बाद में



पुनर्गृहीत कर ली गई। जागीरा के पुनर्ग्रहण के बाद सभी जागीरी भूमियों पर सीधा नियंत्रण सरकार का हाँ गया लेकिन मन्दिरा की डोली भूमिया मन्दिरों के पुजारिया के ही नियंत्रण में रही। राजस्थान काश्तकारों अधिनियम के तहत अधिनियम लागू होना क समय काश्त करने वाले को खातेदार घोषित कर दिया गया लेकिन मन्दिरा की डोली भूमि के काश्तकार खातदार नहीं माने गये। इन कारणों के पुजारियों की मर्जी से ही काश्त कर सकते हैं और उनकी इच्छा के अनुसार उपज का हिस्सा लगान के रूप में देते आ रहे हैं। अतः मन्दिरों के पुजारी सभी भी उन भूमियों के नियंत्रण में बँधें हैं।

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 में लागू हो गया और तब जो भी रेकाड में काश्तकार दर्ज थे वे खातेदार बन गये। तब यह नहीं देखा गया कि रेकाड में दर्ज काश्तकार वास्तव में काश्त करते हैं या भूमिहीन मजदूरों में काश्त कराते हैं। अतः हजारों मजदूर काश्तकार भी शिकमी काश्तकार ही रह गए। उन भूमियों के खातेदार नये जागीरदार बन गये हैं जो अपने शिकमी काश्तकारों से मनमाना लगान (ज्यादातर उपज का तिहाई या चौथाई भाग) लेते गये। ये नये जागीरदार या ता बड़-बड़े राजनेता या उद्योगपति हैं या अक्षर ही जो ज्यादातर नगरों में रहते हैं और केवल लगान देने गाबा में चले आते हैं। काश्तकार बने ये लोग अपने को खातेदार काश्तकार बतलाकर अपना काला धन मजदूर करते रहते हैं। इस प्रकार हजारों वास्तविक काश्तकार सभी भी गरीब व भूमिहीन हैं।

जागीरी उन्मूलन के समय जागीरदारों के पास हजारों बीघा भूमि खुदकाश्त में रहने दी गई। इनके काश्तकार भी भूमिहीन होने पर भी खातेदार नहीं बन सके। वे सभी भी भूतपूर्व जागीरदारों को उपज का काफी बड़ा भाग देकर ही खेतों में काम करते हैं। या सीलिंग कानून बनाकर बाकी भूमि बड़े जागीरदारों व खातदारों से लेने का प्रयत्न किया गया लेकिन बहुत कम भूमिहीन काश्तकार

लाम उठा सके। आज भी वे भूमिहीन काश्तकार अपने भूतपूर्व जागीरदारों (बड़े खातदारों) के मजदूर बन हुए हैं।

जहाँ तब लागूवाग व बेगार का सबाल है पहले जमीं वाल नहीं है। फिर भी पाली जिने के गाबा में पिछड़ी जाति व काश्त कारों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति विशेष मुश्किल नहीं है। गाबा में अब भी सामंतीवाल के समय में प्रचलित छप्राकृत व अग्र उत्पीड़न चलता आ रहा है और इसके प्रमाण हैं साडराव मणिलारी विरामी आदि के तथ्यावधि मामलों के अग्र्याचार जा प्रतिदिन हम समाचार पत्रों में पढ़ते आ रहे हैं। सन् 1949 में साडराव के मामलों की नामन्तवादी नीति की सभी मता प्रस्तुता करते थे और अब भा (1986 में) मता उमी प्रवाग ममना कर रहे हैं। तब क्या इन 40 वर्षों में भूमि पर अब काश्त करने वाल इन सभीगा की सामाजिक व आर्थिक स्थिति मुश्किल है? यह एक चुनौती है हम सबके लिए।

जागीरदारों के नीकरा—नामदार मयाग कणवारिया आदि का काश्तकारों के साथ दुर्व्यवहार पहले होता था तथा उनके द्वारा नाजायज बेदमनियां हानी थी। वह अब अबश्य कम हो गया है लेकिन पिछड़ी जाति के काश्तकारों के साथ अब भी पटवारिया गिरदावरा आदि का जैसा व्यवहार होता है वह मुक्तमोपी काश्त कार ही जानते हैं। इन विषय में न लिखना ही उचित है। आज भी ऊपर बरतार है तो नीचे पटवार वटावत गाव-गाव में प्रचलित है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भूमि पर काश्त करने वाले का सरकार में सीधा सम्बन्ध हो। बहुप्रा मजदूर हाली भूमिहीन काश्तकार शिकमी काश्तकार आदि नाम व काश्तकार होने ही नहीं चाहिए। वर्तमान कानून के अनुसार काश्तकारों की श्रेणियां होनी चाहिए—खातदार या गरवातदार। सभी पटवारी ग्राम पंचायत के नियंत्रण में काम करें। तब ही भूमि सुधारों से वास्तविक काश्तकार पूणतया लाभान्वित हो सकेंगे। तब ही समाजवाद का नाग मफल हो सगा। □

सुनने वाला कौन था ?

पाम दांतोवाग के चौधरी टीकमजी को फातना ठाकुर ने बलगाड़ी लेकर चारोंद ठाकुर की सेवा में बेगार में भेजा। वहाँ पहुँचने पर टीकमजी को दूसरे काम में लगा दिया गया। टीकमजी ने बताया—उस बेगार से ६ माह बाद वे घर लौटे। सगभग साल भर उनका खेत-मुआं सूना पड़ा रहा। परिवार को हातत छस्ता हो गई, पर सुनने वाला और देखने वाला कौन था ?



: 5 :

पाली जिले मे स्वतन्त्रता-आन्दोलन के बढ़ते चरण

आऊवा के प्रथम स्वातन्त्र्यवीर सुशालसिंहजी

सन 1857 का प्रथम पवित्रात्मक प्राजापि न युद्ध ग्राम आऊवा और त्रिठीडा की भूमि पर अंग्रेजी फौजा और पाऊडा तथा ग्राम-ग्राम की जागीरी सनाघा व बाब आऊवा व ठाकुर सुशाल सिंहजी व नेतृत्व म लडा गया था । अंग्रेजी सनापनि कपूत भगन का मिर बाट कर आऊवा गाव के दरवाजा पर लटकाया गया था । यह म्म बात का शानक था कि अंग्रेजी साम्राज्यवाण व प्रति लोपा म कितना राप था, कयानि अंग्रेजी साम्राज्यवाद न मारे देम व देशी रियामता व राजाभा व स्वाभिमान का कुचल दिया था । आऊवा व स्वातन्त्र्य युद्ध व इन गीत का शक-शक म ताग भूम भूम कर गात ह —

1

भल्ले आऊवा

वाणियो वाली गावर माय वाली लोग पडियो ओ
राजाजी रे बैला तो फिरगी लडिया ओ
काली टोपी रो ।

ह आ काली टोपी रो, फिरगी कलाव कोपी ओ
काली टोपी रो ।

बारला तोपों रा गोला धुङ्गड के लागे आ
मायली तोपा रा गोला तबू तोडे ओ
भल्ले आऊवा ।

ह ओ भल्ले आऊवा आऊवा घरती रो घाबो-२ ओ,
भल्ले आऊवा ।

मायला तोपा तो छुट आऊवाला-३ पूजे ओ,
आऊवा रा नाप तो सुगाली-४ पूजे ओ
भगडो आदरियो ।

हे आ भगडो आदरियो आऊवा भगडा ने बाबो ओ
भगडो आदरियो ।

राजाजी रा योतिया वाला रे सार बीड ओ
आऊवा रा पोडा तो पछाडी तोडे ओ,
हे ओ भगडो हूँ न दो, भगडो हूँ न दो पारी जीत हूँ ला ओ
भगडो हूँ न दो ।

2

मुजरो ले लेनी

मुजरो ले लेनी बावतिया होली रग राबो
मुजरो ले लेनी ।

मायां री तिकारमा पारां हाकम बडिया ओ
गोली रा मगिडा भाईं भावर दिलायो ओ,
मुजरो ले लेनी ।

मुजरो ले लेनी, बावतियां होली रग राबो,
टोली रो टोबाघत टल ने गोरा लेने माया ओ
कोट रे कगुरे रे माय होल घुराया ओ
मुजरो ले लेनी ।

मुजरो ले लेनी बावतिया होली रग राबो
मुजरो ले लेनी ।

भाला रा भनकामु बैला गोरा टोव न लाया ओ
घाडा री टापा सु टण्ण तोप घलाया ओ,
मुजरो ले लेनी ।

मुजरो ले लेनी बावतिया, होली रग राबो ।
मुजरो ले लेनी ।

टोली रा दिबाघत टल ने, गोरा सामा माया ओ,
कोट रे कगुरे-२ बडया भाया, गोला लाया ओ,
मुजरो ले लेनी ।

मुजरो ले लेनी बावतिया, होली रग राबो,
मुजरो ले लेनी ।



भाल र भलका मे भाया, तरवारा न तोली ओ,
परती रा दुश्मन सू भिड्या, चाली गोली ओ,
मुजरो ते लेनी ।

तोह र निठिया सू भाया, चादी गोली चाली ओ,
तोरा रा तरखाटा सू, आ घरती हाली-2 ओ,
मुजरो से लेनी ।।

एरिनपुरा छावनी मे विद्रोह

आऊवा के युद्ध के पूत एरिनपुरा (छावनी), मौजूदा सुमेरपुर व शिवगज शहर म स्थित अग्रेजी फौज की छावनी के जोषपुर राजन के सिपाहिया ने विद्रोह कर आग लगा दी और शास्त्रागार चूट कर खाड़ के रास्ते आऊवा पहुंचे जहा उह ठाकुर खुशालसिंहजी का नेतृत्व मिला, जिससे अग्रेजा के झारे पर जोषपुर महाराजा ने अपनी फौज आऊवा के ठाकुर से लड़ने के लिए रवाना कर दी, पर पाली के निष्ठा हुए युद्ध म जोषपुर की सेना के दो सेनापति अनारसिंह एव राजमल मारे गये। तब अग्रेजा ने अजमेर से अपनी फौज रवाना की पर ठाकुर खुशालसिंह की फौज ने आक्रमण कर उसे हरा दिया। जोषपुर महाराजा ने अग्रेजा के आदेश पर आऊवा की जागीरी जब्त कर ली। अग्रेजा ने पुन मारी सेना लेकर हमला किया और भीषण गोलाबारी के कारण मारी नर-सहार हुआ। आऊवा गाव तहस नहस हा गया। ठाकुर खुशालसिंह व उनके साथी पक्षडिया म छिपकर अग्रेजी के बदला लेने की योजनाएँ बनाए लगे, पर वे सफल नहीं हो सके ।

बाली क्षेत्र के आदिवासी भील-गरासियों का विद्रोह

बाली क्षेत्र से लगे हुए मेवाड़ (उदयपुर जिला) के आदिवासी ग्राम म मोतीवालजी तजवलत न लाग-बाग व शोणण के विरुद्ध आंदोलन छेड़ रखा था। उसका प्रभाव बाली क्षेत्र के गाना बेडा जागीरी गावो पर पडना स्वाभाविक था। आदिवासी गावो मे शोणण के विरुद्ध सबसेप्रथम विद्रोह ना शल बनाया। सन् १६२१-२२ म श्री छोटमलजी सुराणा (बाली) ने उह और सहयोग दिया। पाली के प मूलच-दजी मट्ट ने गरासियों के सहयोग से इन गावो के विद्रोह इतना तेज हो गया कि स्थानीय ठाकुर-जागीरदार भी डरभौत हो गये। तब जोषपुर महाराज श्री उम्मेदसिंह ने ७ जनवरी १६२२ को अपनी फौज (रिसाला) भेजकर उस विद्रोह को दबा दिया ।

पाली मे सेधा-मण्डल की स्थापना

सन् १६३१ मे पाली म श्री जेठमल राठी व श्री मुक्नचंद जैन के नेतृत्व म सेवामण्डल की स्थापना हुई। इस सस्था मा उद्देश्य

राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए काय करना था। इन्हान पाठशालाआ एव वाचनालय की स्थापना कर बडा महत्वपूर्ण काय किया। इसके पूव श्री जयनारायण याम तथा आन दरारजजी सुराणा द्वारा स्थापित मारवाड हितकारिणी सभा के प्रतिनिधि के रूप म छोटमलजी सुराणा (बाली) मूनच-दजी मट्ट (पाली) व हरिमाई बिचर ने काय प्रारंभ कर दिया था ।

मारवाड प्रजा-मण्डल की स्थापना

स्व जयनारायण व्यास द्वारा पुष्कर मे गठित मारवाड प्रजा-मण्डल की एक शाखा सन् 1934 म पाली मे खोली गयी। यह विशुद्ध राजनीतिक मंच था। इसकी स्थापना म स्व० अमयमल जन (जोषपुर), श्री मानमल जन (जोषपुर) तथा स्व० अचनेश्वर प्रसाद शर्मा (जोषपुर) ना विशेष सहयोग रहा। पर यह सस्था शुभ मे ही संस्कार के दमन का शिकार बन गयी और इसकी गतिविधियों को दबा दिया गया ।

उद्योग मण्डल की स्थापना

श्रान्तिकारी विचारा के धनी श्री फतेहराज पुरोहित नराची (अब पाकिस्तान) से पाली आये और छद्म रूप से राजनतिक गतिविधिया चलाने की दृष्टि स उद्योग मंदिर, पाली नामक सस्थान की स्थापना की। पाव छतरिया नामक स्थान पर सबकी फतेहराज जोशी जेठमल राठी चिमनीराम बुनावत, मूलचंद मट्ट, मुजफ्फर करीम रामचंद्र आर्य आदि नायकता मिलते और मोटिया मे राज-नैतिक गतिविधियों के विभिन्न कायनमो की योजनाएँ बनात ।

मारवाड लोक परिषद् की स्थापना

सन् 1938 मे मारवाड लोक परिषद् की स्थापना हुई और तत्काल ही पाली सादडी, सुमेरपुर, पाणेरान, साजत चण्डावल, निमाज, बगडी, रायपुर म मारवाड लोक परिषद् की शाखाएँ स्थापित कर उत्तरदायी शासन की माग रखी गयी और सार जिले म प्रमुख नायकताओं ने प्रचार का काय तेज कर लिया। बाली म स्व० छोटमल सुराणा सादडी मे श्री फूलचंद बापना एव सुभासपुर म श्री भी एल राजगुह, पाणेरान म कहेयालालजी बधिक सोजत-बगडी म मांडालालजी बाणा चण्डावल म मांगीलालजी झालीशान निमाज जतारण म श्री माधोलाल श्रान्तिकारी ने नेतृत्व प्रदान कर जन-जागृति पैदा की ।

रायपुर, सोजत, बगडी, चण्डावल, निमाज आदि राष्ट्रीय चेतना और सामंतशाही के विरुद्ध विद्रोह के सशक्त नेत्र बनत बले गये। पूरे पाली जिले म श्रान्ति की लहर जाग उठी अनेको बलिदान हुए ता सघष की लोम हथक घटनाओं ने जम लिया। आगे के घुटना म उही प्रमुख घटनामा को विस्तार मे दिया जा रहा है—



स्वतन्त्रता-सघर्ष की प्रमुख घटनायें

पानी जिले में स्वाधीनता आंदोलन की गतिविधियाँ दिनों दिन बढ़ती गयीं और ग्राम ग्राम में क्या-क्या नये कार्यक्रमों बुझने लगे। लाकूँ परिवर्तन की आशाएँ स्थापित होती गयीं और सामंती जुल्मों के खिलाफ आंदोलन जारी पकड़ता चला गया। पानी जिले में मुख्यतया बगडौं सोजतराड बण्डाव, रायपुर निमाज चाणान दखली पादूजी आदि एक गाँव में जहाँ मगडिन रूप से लम्बी अवधि तक आंदोलन चले और मारवाड लाकूँ परिवर्तन के ननाभाक श्रमदा पानी सादडीं सजत भूदाज कोरेख जाली, निमाज, माजत राड बण्डावस आदि ग्रामों में प्रमुख कार्यक्रमों में सामंती प्रथा विरोधी आंदोलनों को मागदमन एवं नतुल्व मिलता था। इन आंदोलनों और इनमें भूमिका निभाने वाले सनाधिया तथा बाप फनाभा ना सक्षिप विवरण यहाँ दिया जा रहा है

रायपुर

जनता का ऐतिहासिक कूच

रायपुर की जन और गाँवएँ स पांडित जनता जब टिकान के मत्स्यारार स तंग भा गईं सब सफना की तादाद में ग्रामवासी जायपुर दरवार थी उम्मदगिहजी का जा उन दिना मरदासमाम भाये हुए थे अपनी दुख भरी दास्तान सुनाने दिना 17 11 41 का पदम हा चल पड़े। इस पद-यात्रा में खी-मुसप मिलकर 400 से अधिक व्यक्ति थे और नतुल्व कर रहे थे गाँव रायपुर के सठ कुमालाल जी और लानच-बजा पगारिया। दरवार में जायपुर जाकर प्रधानमंत्री डोनाल्ड फोल्ड से मिलने का बहा। वहाँ स काफी लाग पदल ही जायपुर पहुँच कर यहाँ मन्काराराम में तूती की भावाज कौन मुन ? तीन दिन तक रायपुर के लोग भटक रहे। फिर मारवाड लाकूँ परिवर्तन के तावावधान में 21 11 41 को गिरदाकाट में इन उपलभ्य में मावजनिक सभा का आयोजन किया गया जिनमें सबकी जयनागएँ व्याम मधुदादास मायुर श्रमयमल महता आदि नेताश्रा के भागल हय और सुनवाद न हान पर रायपुर टिकाने के जुलमा के खिलाफ मत्स्यारह करन का एगल किया। फन्सवरूप जीप मिनिस्टर ने तागिय 25 11 41 का 'लाग-नाग जाच कमटी का रायपुर भेजा।

छ कार्यक्रमों को देश निजाला

रायपुर जागीरदार का भागएँ चरमगामा वार कर गया था। मनमाने ढंग से मुकदम बनाकर फमाना मर्बगिया का फाटक में डाल देना बाणकारा का घरेट छुआकर बगार में गाडीं लकर नेहमाना की धारित तबन्मह में बर्दी देना तक बाहर क्षेत्र देना

सुभारा से दिन भर लकड़ी फडबाना, कुम्हारा से पानी भरवाना, रेगरा से दिन-रात डट धांडा के चारा मगवाना और दस बेगार के लिये गाँव का भाम्बी मठ लिये सारे दिन घुसता रहता। लोगों को राटी भी पूरा नमीव नही थी। इन हालातों को बदलने के लिये कमर कसी सबकी मधुदारबबखजी मरदारबबखजी, भगवतीप्रसादजी गणदारबबखजी पूमापालजी, लालचन्जी, जमातुद्दीनजी, जव्वार बखजी सिरवी हीराजी परिहार, जोगाजी रावणाराजपूत, गणारामजी माली, सदाकबखजी रसीदबखजी आदि कार्यक्रमों में। इन लोगों को न कबल गुण्डा द्वारा पिटाई कएयी गईं और भूटे मुकदमे बनये गये नरन जागीरदार की शिकायत पर छ प्रमुख कार्यक्रमों-सब श्री भगवतीप्रसादजी जमातुद्दीनजी, लालचन्दी पूमापालजी, गणदारबखजी मधुदुगबखजी का जोयपुर दरवार में जरिये आदेश स 4952 सा बी दिनाक 27 मई, 1944 को डिकेन फाफ इण्डिया रूलस की धारा 26 (1) डा के तहत रायपुर टिकाने में ग्रामों में प्रवेश न करन का आदेश जारी कर दिया। कई दिना तक ता कुछ कार्यक्रमों जस में स्थित फतहगड के किल और दीपवास के गड में चारी धिये रहे फिर भारत मे आजाद हास पर ही रायपुर लौट सक।

मृतकों को शमशान घाट ले जाने की मनाई

रायपुर में मृतकों को शमशान तक ले जाने का कमीनी रास्ता रोडकर उस रास्ते से न चल जाने का आदेश टिकाने ने दिनाक 19 3 41 का जारी किया और ग्राम रास्ते पर फाटक लगाकर रास्ता रोक दिया। इस नातिरमाही आदेश ने माग गाँव में भयान्तोप की भाग फला बी। धारा 147 जावदा फौजदारी लगा दी गई। रायपुर के मुखिया आगवानों को गड में बुधा कर बिठा दिया, पर लाग नही मान।

रायपुर लोक परिवर्तन को शाला स्थापित

एगो बिकट परिस्थितिया में दिनाक 28 3 41 को मारवाड लोक-परिवर्तन के नेता सबकी जयनारायणजी पास, मधुदादासजी मायुर आदि रायपुर भाये और लोक-परिवर्तन को शाला स्थापित कर श्री गणेशमलजी को अध्यक्ष एवं श्री विशालसतजी का मन्त्र चुना गया। अगले दिन रेल्वे स्टेशन से रायपुर तक विशाल जुलूम निकालकर सभा की गई। इसने बाद ता दमनकर जारी स चला।

गुण्डों द्वारा हमला और सभा भय

परेशान होकर लाकूँ-परिवर्तन के प्रमुख कार्यक्रमों की गणदारबखजी ने मारवाड लोक-परिवर्तन नेता श्री जयनारायणजी



व्यास को आमंत्रित किया। दिनांक 22-4-41 को दरवाजे व बाहर 5000 स अधिक लोगो को विराट सभा श्री गणेशमलजी की अध्यक्षता मे हुई। रायपुर ठाकुर गोविंदसिंह जी ने प्रासपास वे ग्राम करमावास निम्बडा, लिलाम्बा, सबलपुर, चावडिया से अपने पिटू व माटे के गुण्डा का इकट्ठा किया। ज्या ही जयनारायणजी व्यास मायल देन लडे हुये करीब 200 गुण्डो ने सभा मच पर हमला कर दिया। गणपारबक्षजी व उनके भाइयो सहित अनेक कायकर्ता घायल हुये, पर श्री जयनारायण जी व्यास को सुरक्षित बचा लिया गया। सभा म एकत्रित जनसमूह ने हिम्मत रखी और हमलावरो का लाडिया और तलवारें छाडकर भागना पडा। ठाकुर ने प्रादमिया ने श्री मोहनदास साद व उनकी पत्नी पर भी हमला कर बुरी तरह घायल कर दिया। इनका इलाज जोधपुर मे बिडम अस्पताल मे कराया गया। भारपीट के विरोध-स्वरूप रायपुर म दिनांक 29 4 41 को सम्पूर्ण हडताल रती गई।

प्रमुख कार्यकर्ता

रायपुर क्षेत्र के जिन कायकर्ताओं ने सामन्ती जुल्म से टक्कर ली उनम कतिपय अग्र प्रमुख कायकर्ता श्री रामस्वरूपजी बघ, राणीलालजी, धीमलालजी, पुखराजजी गुप्ता, थीरामजी माहे खरी, धीमलालजी छोपा रामाजी सीरवी अणुदरामजी दरजी, शंकरलालजी (बाबरा), दामोदरजी कच्छवाह (संदडा), अमर चंदजी बाहरा, लालचंदजी बोहरा श्री गेनारामजी चौधरी बूरा रामजी सुधार कानमलजी जैन प्रादि प्रमुख थे।

पीपलिया गाव म लोक-परिषद के अध्यक्ष थे श्री प्रेमराजजी बोहरा और प्रमुख कायकर्ता रतनलालजी चौधरी। श्री सुखलालजी सगुचा पू० पू० विद्यामन रायपुर ने आजादी के पश्चात् इस क्षेत्र के विमाना म जाग्रति लान म साहस व लगन स काय किया है। स्वर्गीय सम्पतराजजी शाह ने न केवल पीपलिया को एक उद्योग नगरी बना दिया अपितु रायपुर पचायत समिति के प्रधान पद पर रहते हुए अनेक विकास काय करवाये।

बर के श्री देवराजजी चौहान (प्रधान पचायत समिति रायपुर) व स्वर्गीय श्री बालूलालजी (पूर्व सरपच) ने बडी लगन व परिश्रम स सामाजी तत्वा का मुकाबला किया। सेदडा के प० नदलालजी नानगा गाव के गजराजजी जन पेमारामजी सेन, बिजानारामजी सेन रूधारामजी सुधार, पूनारामजी सुधार एव गिरी गाव के श्री राममुखजी सानार, बिजारामजी छोपा, अमर-चंदजी सवग जीवराजजी ताराचंदजी रेगार तथा श्री अशोभाई व शंकरलालजी बाबरा गाव (बाग) की सेवायें भी नही मुनाई जा सकती।

देवली रायपुर म नगर कांग्रेस कमेटी के सन् 1948-49 के लिए निम्नानुसार चुनाव हुए - समापति-श्री मिश्रीलाल कटारिया, मन्त्री-श्री चंपालाल बालानी प्रचार मन्त्री - श्री पुणेद्र काला कोपाध्यक्ष - श्री रामजन।

सोजत-बगडी-घण्डावल

लोक जागृति की राजधानी-सोजत

स्वाधीनता के आंदोलन म सोजत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इस क्षेत्र ने सर्वाधिक स्वतंत्रता सनानी दिये है और वर्षों तक लगातार आंदोलन को चलाये रखन का श्रेय भी लगभग इसी नगर के कायकर्ताओं को जाता है।

दि० 26 1 41 को शाम को कचहरी के पास श्री गुमानमल मिश्री के समापतित्व म आयोजित आम-सभा मे मारवाड लाक परिषद क नेता जयनारायणजी व्यास मधुरादासजी माथुर, किसान-मलजी मेहता के भाषण हुए। लोक परिषद की काय शैली एव जिम्मेवार हुन्नमत की माग पर प्रकाश डाला गया। इसी समय म म्युनिसिपैलिटी की माग रखी गई और सोजत परगना लाक-परिषद के निम्नानुसार चुनाव हुए

अध्यक्ष- श्री अनराजजी सिंघी मन्त्री- श्री मुनालालजी बघ (सोजत) कोपाध्यक्ष- श्री विजयशंकरजी शर्मा (सोजत रोड) सदस्यगण- श्री मीठालालजी त्रिवेदी, श्री नटवरलालजी, श्री रूपचंदजी बघ, श्री हरिरामजी आभा, श्री भरूलालजी स्वगकार व श्री मागीलालजी व्यास।

लोक-परिषद का विस्तार

सोजत मे ही सन् 1941 की मारवाड लाक-परिषद की प्रतिनिधि-सभा का प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसम मारवाड के विभिन्न हिस्सों से सैकडा प्रतिनिधि एव सदस्य एकत्रित हुए। पाली से सबंधी सुमेरराज जी डागा, सोजत से हरिसंकरजी शोभा व मागीलालजी शाय संदडा से मीठालालजी त्रिवेदी, बाली स छाटमलजी सुराणा एव मोडारामजी, जतारण से अमरचंदजी बोहरा, गणेशमलजी सबलेचा, शंकरलालजी माहेखरी तथा देसुरी स कर्हयालालजी बदिच व अनापचंदजी पूनमिया ने प्रतिनिधित्व किया।

उस वष लाक-परिषद का विस्तार निम्न स्थाना पर किया गया-सोजत शहर, सोजत रोड, बगडी राणावास कटारिया चंडावल मारवाड जंक्शन, जैतारण, निम्बाज दबली, गिरी नानगा, खिनाबडी, बाली, मुण्डारा सुमेरपुर कोट खोमेल, सादडी चाणेरवा, नाडोल, रानी, पाली एव सेदडा।



स्वतन्त्रता-सघर्ष की प्रमुख घटनायें

पाली जिले में स्वाधीनता आन्दोलन की गतिविधियों दिना दिन बढ़ती गयी और ग्राम ग्राम में ज्या-ज्या नये कार्यक्रमों उद्भूत गये लोक परिषद की शाखाएँ स्थापित होती गयी और सामंती जुल्मा के खिलाफ आन्दोलन जारी पकड़ता चला गया। पाली जिले में मुख्य तथा बगड़ी भोजपुरी चण्डवाल रायपुर, निमाज चाणोद दबली पावूजी धादि एन गाँव जहाँ संगठित रूप से लम्बी अवधि तक आन्दोलन चले और मारवाड़ लोक परिषद का नेता प्रा. क. शलावा पाली सादरी साजल यूसुफ घणेशराव बाली, निमाज, साजल राठ चण्डवाल धादि ग्रामों के प्रमुख कार्यकर्ताओं से सामंती प्रथा विरोधी आन्दोलन का मागदशन एवं नतूल मिलता था। इन आन्दोलनों और इनमें भूमिका निम्नान् वान सनानिधा तथा काय कर्ताओं का संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है

रायपुर

जनता का ऐतिहासिक कूच

रायपुर की दमन और शापण से पीड़ित जनता जब ठिकाने के अत्याचारों से तप गई तब सड़कों का सादाद का ग्रामवासी जोषपुर दरवार श्री उम्मेदगिहजी का जा उन दिना सरदारसमूह प्राय हूए थे अपना दुख भरी दास्तान सुनते दिना 17 11 41 का पदल ही चल पड़े। इस पन्थाना में सौ-गुरुय मिलकर 400 से अधिक व्यक्ति के और नतूल कर रहे थे गांव रायपुर के सठ पूमात्ताली श्री और लाकचंदजी पयागिया। दरवार न जोषपुर जाकर प्रधानमंत्री डोनाल्ड फी-ड से मिलन का कहा। वहाँ से बाप्री लाग पंदल ही जायपुर पहुँच पर वहाँ नवकारखान में तूनी की आवाज कोन सुन ? तीन दिन तक रायपुर के लाग भटकत रहे। फिर मारवाड़ लोक परिषद के तत्वावधान में 21 11 41 का गिरदीकाट में इस उपलक्ष्य में सावजनिक मभा का आयोजन किया गया जिसमें सबकी जयनायाएल ब्यास मधुसूतान माथुग भ्रमयमल महता प्राति नेताभा के मापए ह्वय और सुनवाई न हान पर रायपुर ठिकाना के जुल्मा के खिलाफ सत्याग्रह करने का एलाज किया। फनस्वरप कीफ मिनिस्टर न तारिल 25 11 41 का 'लाग-बाग जाच नमते' का रायपुर भेजा।

छ कार्यकर्ताओं को देश निकाला

रायपुर जागीरदार का शापण चरमसीमा पर कर गया था। मनमाने ढंग से मुकद्दम बनाने पयाना मवगिया का पाटक में डाल देना शाहबारा का मरुट छुडाने बगार में भांडी लकर मेहमाना की खातिर तबग्रह में कई दिना तक बाहर भेज देना

मुथारा से दिन भर लकड़ी पडवाना, कुम्हारों से पानी भरवाना, रेणो से दिन रात ऊट घोडा के चारा भगवाना और इस बेकार के लिये गांव का भाभी लठ लिये सारे दिन घूमता रहता। लोग का राटी भी पूरी नसीब नहीं थी। इन हालातों को चरमने के लिये बमर कभी सवधी मखदुमबखजी, सरदारबखजी, भागवतीप्रसादजी गणपारबखजी पूमात्ताली, लाकचंदजी, जमातुद्दीनजी, जम्वार बखजी सिरवी हीराजी परिहार, जीयाजी रावपारबखत, गगारामजी माली, सदानबखजी रसीदबखजी धादि कायकर्ताओं ने। इन लोगों की न केवल गुण्डा द्वारा पिटाई करायी गई और झूठे मुकद्दमे चलाये गये, वरन जागीरदार की शिकायत पर छ प्रमुख कार्यकर्ताओं-सबकी भगवतीप्रसादजी, जमातुद्दीनजी लाकचंदजी पूमात्ताली, गणपारबखजी मखदुमबखजी को जोषपुर दरवार ने जरिये आदेश से 4952 ती की दिना 27 मधु 1944 को डिफन प्राफ इण्डिया रुल्स की धारा 26 (1) डी के तहत रायपुर ठिकाना के ग्रामों में प्रवेश न करने का आदेश जारी कर दिया। कई दिना तक ता बुध कायकर्ता जगल में स्थित फतहगढ़ के किले और दीपवाम के गढ में चारी छिय रहे, फिर भारत के आजाद होने पर ही रायपुर लौट सके।

मुक्तकों को शमशान घाट से जाने की घनाई

रायपुर में मुक्तकों का शमशान तक ल जाने का कदीमी रास्ता राकवर उस रास्त से न ल जाने का आदेश ठिकाने दिना 19 3 41 का जारी किया और ग्राम रास्ते पर फाटक लगाकर रास्ता रोक दिया। इस नादिरशाही आदेश ने सारे गांव में घसन्ताप की श्राप फना दी। धारा 144 जाबता कीबदारी लगा दी गई। रायपुर के मुसिया आगवानों का गढ में बुता कर बिठा लिया, पर लोग नहीं माने।

रायपुर लोक परिषद को शाखा स्थापित

एसी विरुट परिस्थितिया में दिना 28 3 41 को मारवाड़ लोक-परिषद ने नेता सबकी जयनारायणजी ध्यस मधुसूदासजी मायुर धादि रायपुर प्राय और लोक-परिषद की शाखा स्थापित कर रेणेशमलजी को अध्यक्ष एव की निषानसालजी का मंत्री चुना गया। प्रगले दिन रेन्ले स्टेशन से रायपुर तक विशाल जुलूस निकालकर समा की गई। इसने बाद लो दमनक जा से चला।

गुण्डों द्वारा हमला और समा गण

परेशान हकर लाक-परिषद के प्रमुख कार्यकर्ता श्री गणपारबखजी ने मारवाड़ लोक-परिषद नेता थी जयनारायणजी



व्यास को ग्रामप्रति किया। दिनांक 22-4-41 को दरवाजे के बाहर 5000 से अधिक लागा की बिराट समा श्री गणेशमलजी की अध्यक्षता में हुई। रायपुर ठाकुर गाँव दसिंह जी न आसपास के ग्राम करमावाम, निम्बेडा लिलाम्बा, सबलपुर, चावडिया से अनन्य पिटठू व भाटे के गुण्डा को इकट्ठा किया। ज्या ही जयनारायणजी व्यास भाषण देने लगे हुये करीब 200 गुण्डा ने समा मच पर हमला कर दिया। गणकारबक्षजी व उनके भाइया सहित अनन्य कार्यकर्ता धायल हुये पर श्री जयनारायण जी व्यास को सुरक्षित बचा लिया गया। समा में एकत्रित जनसमूह ने हिम्मत रखी और हमलाकार का लाठिया और तलवार छोड़कर भागना पडा। ठाकुर के भादमिया ने श्री मोहनदास साद व उनकी पत्नी पर भी हमला कर बुरी तरह धायल कर दिया। इनका इलाज जोषपुर में बिडम अस्पताल में कराया गया। मारपीट के विरोध-स्वरूप रायपुर में दिनांक 29 4 41 को सम्पूर्ण हड़ताल रखी गई।

प्रमुख कार्यकर्ता

रायपुर क्षेत्र के जिन कार्यकर्ताओं ने सामन्ती जुल्मों से टपकर ली उनमें कतिपय अग्र्य प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामस्वरूपजी बघ, रागीनालजी धीमूलाजजी, पुखराजजी गुप्ता, श्रीरामजी माहे-श्वरी धीमूलाजजी छोया रामाजी सीरवी अणुदरामजी दरजी, शकरनालजी (बावरा) दामोदरजी कच्छवाह (सेंढा) अमर च दजी बाहटा लालच दजी बोहरा, श्री गेनारामजी चौधरी, भूरा रामजी सुधार कानमलजी जन आदि प्रमुख थे।

पीपलिया गांव में लोक-परिपद के अध्यक्ष थे श्री प्रेमराजजी बोहरा और प्रमुख कार्यकर्ता रतनलालजी चौधरी। श्री मुखलालजी सेणुआ भू० पू० विधायक रायपुर ने आजादी के पश्चात् इस क्षेत्र के किसानों में जागृति लान में साहस व लगन से कार्य किया है। स्वर्गीय सम्पतराजजी शाह ने न केवल पीपलिया को एक उद्योग नगरी बना दिया, अपितु रायपुर पंचायत समिति के प्रधान पद पर रहते हुए अनेक विकास कार्य करवाये।

बर के श्री देवराजजी चौहान (प्रधान पंचायत समिति, रायपुर) व स्वर्गीय श्री बाबूलालजी (पूर्व सचिव) ने बड़ी लगन व परिश्रम से सामन्ती तत्वा का मुकाबला किया। सेढा के प० न देलालजी, नानणा गांव के गजराजजी जन, गेनारामजी सेन विजयारामजी सेन हृषारामजी सुधार पुनारामजी सुधार एव गिरी गांव के श्री राममुखजी सानार, विजयारामजी छोया अमर च दजी सबग, जीवराजजी, तारारच दजी रैगर तथा श्री श्रलीमाई व शबरलालजी बाबरा गांव (धारा) की सेवार्थ भी नहीं मुनाई जा सकती।

देवली रायपुर में नगर कांग्रेस कमेटी के सन् 1948-49 के लिए निम्नानुसार चुनाव हुए - समापति-श्री मिश्रीलाल कदारिया मनी-श्री चपालाल कालानी प्रचार मनी - श्री पुणेद्र काला कोषाध्यक्ष - श्री रामजस।

सोजत-बगडी-चण्डावल

लोक जागृति की राजधानी-सोजत

स्वाधीनता के आंदोलन में सोजत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इस क्षेत्र में सर्वाधिक स्वतन्त्रता-सेनानी दिव्य है और वर्षों तक लगातार आंदोलन को चलाय रखने का श्रेय भी लगभग इसी नगर के कार्यकर्ताओं का जाता है।

दि० 26 4 41 को शाम को कचहरी के पास श्री गुमानमल सिंधी के समापतित्व में आयोजित आम-सभा में मारवाड लोक परिपद के नेता जयनारायणजी व्यास, मथुरादासजी माधुर किशोर-मलजी मेहता के भाषण हुए। लोक परिपद की कार्य शैली एवं जिम्मेवार हड़मत की मांग पर प्रकाश डाला गया। इसी समय में मूनिंसिपैलिटी की मांग रखी गई और सोजत परगना लोक-परिपद के निम्नानुसार चुनाव हुए

अध्यक्ष-श्री अनुराजजी सिंधी मनी-श्री मुनालालजी वैद्य (सोजत) कोषाध्यक्ष-श्री विजयशकरजी शर्मा (सोजत रोड), सदस्यगण-श्री मोठालालजी त्रिवेदी, श्री नटरलालजी श्री रूपच दजी बघ श्री हरिरामजी आम्हा श्री भरुलालजी स्वणकार व श्री मांगीलालजी व्यास।

लोक-परिपद का विस्तार

सोजत में ही सन् 1941 की मारवाड लोक-परिपद की प्रतिनिधि-सभा का प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसमें मारवाड के विभिन्न हिस्सों से सऊडा प्रतिनिधि एवं सदस्य एकत्रित हुए। पाली से स्वश्री सुमेरराज जी डागा, सोजत से हरिश्चकरजी आम्हा व मांगीलालजी आम्हा, सेढा से मोठालालजी त्रिवेदी, बाली से छोटमलजी सुराणा एवं मोडारामजी जैतारण से अमरच दजी बोहरा गणेशमलजी सक्लेचा, शबरलालजी माहेश्वरी तथा देसूरी से कहुयालालजी बदिन व अनोपच दजी पुनमिया न प्रतिनिधित्व किया।

उस वष लोक-परिपद का विस्तार निम्न स्थानों पर किया गया-सोजत शहर, सोजत रोड, बगडी राणावात कटालिया, चंडावल, मारवाड जनशन जैतारण, निम्बाव देवली, गिरी, नानणा, खिनावडी, बाली मुण्डारा, सुमरपुर काट, खोमेल, सादडी, धाणराव, नाडाल, रानी, पाली एवं सेढा।



विद्रोह का केन्द्र-बिन्दु बगड़ी नगर

जुल्मों की बहानी का गोपनीय पत्र

स्वाधीनता प्रादानन म बगड़ी का नाम चिरमरणीय रहेगा। सन् 1926 की गर्मिया की एक दापहर, नगर क प्रमुख व्यवसायी गुणेशमलजी काठेड मोनाम्पमनजी लोढा, प्रमोदलचन्दजी मोढा गाँव के मुख्य माग पर स्थित भेरजी मोनी की दुकान पर बैठे थे। इतन म माग के ठाकुर भेरसिंहजी का उधर ने निरलता हुआ। दुकान पर बैठे मेठ व भेरजी सोनार ने खड़े होकर 'वणी' खम्भा एव जय माताजी की गद्दी की। फिर क्या था, रातले मे मुलाकर सभी की पिटाई की गई। नगर के प्रमुख व्यापारियों की पिटाई से गाँव म तो मनानी फँती हो पर मन ही मन विद्रोह की भावना भी बनवती हो गई और प्रारम्भ हो गया-बगड़ी नगर म सामन्तशाही के विरुद्ध प्रामवातिया का प्रादोलन।

दिनांक 14 5 42 को स्वतंत्रता सेनानी रणछोडरामजी गढ़ानी के समापितत्व मे बगड़ी मे जागीरी जुल्मों के विरुद्ध एक महती सभा हुई। इतका मारे क्षेत्र पर इतना व्यापक प्रभाव पडा कि मारवाड राज्य के इन्स्पेक्टर जनरल थाफ पुलिस ने तत्कालीन मुख्यमंत्री डी०एम० फोड को दिनांक 20 5 42 को गोपनीय पत्र लिखकर जानकारी दी। वह पत्र इन प्रकार है—

Confidential

GOVERNMENT OF JODHPUR

No -1769

Jodhpur Dated-20 5 1982

From-

The Inspector General of Police Jodhpur

To-

The Chief Minister Jodhpur

Subject -Meeting of Lok Parishad at Bagri

In a meeting of the Lok Parishad held at Bagri on 14 5 1942 Ranchor Dass Gattani said that he had been to Chandawal to defy orders under section 144 Cr P C but as all luck would have it the ban was removed before his arrival

Referring to the State of affairs in Jagir villages he said -that Zulams were being perpetrated by the Jagirdars on the poor people who did not get even handful of grain to feed themselves He was sure he said that if an impartial committee was appointed 95 of the Lags realised by the Jagirdars would be held illegal He remarked that although His Highness the Maharaja Sahib Bahadur and the Chief Minister were aware of the alleged high-handedness of the Jagirdars in Gundol Nadol and Chandawal they still kept silent and instead of making an enquiry into the matter promulgated orders under section 144 Cr P C banning all meetings at Chandawal for a period of one month He added that the Jagirdars who were being defended by the Government wanted to annihilate the existence of the Lok Parishad but neither they nor even the Government itself could ever crush it Continuing he said that the Jagirdars in Pargana Phalodi were not doing Lata; but on the contrary were demanding unwarranted Lags from the cultivators The Jodhpur Government he said had not paid any heed to this grievance of the cultivators

He further remarked that the small Jagirdars would soon perish Leader like Mahatma Gandhi he said considered it to be a hell to live in 1262 jagir villages of Marwar The Chief Minister he said was under the impression that the Jagirdars were contributing a lot towards war fund but in fact all money came out of the pockets of the poor people He added that the function of the Government was to ensure safety of the lives and

बगड़ी के वयोवृद्ध नागरिक श्री मुवलचन्दजी बरडिया ने सरभरण मुनात हुए भागे बताया कि इसी प्रादोलन के निमित्तिये म उनके पिता श्री रूपचन्दजी बरडिया तथा पुरयाप्तमजी वणव की सुरी तरह म पिटाई की गई। गम्भीर चोटों के कारण जब पुरयोत्तमजी को लोग मोजन क्षयपाल म ले जा रहे थे तो घुडमवार भेजकर ठाकुर ने धायता को ले जान बाजो को पीटा। हू जुम और उत्पीडन विरोध की भाग म भी का काम करता है। सन् 1930 म इसी बगड़ी नगर म विद्रोह का वातावरण फैलन वाला की संरेखाम पिटाई कर उनकी प्रतिष्ठा गिराने की इच्छि से ठाकुर ने बीस लडगा को बाजार म भेजकर मवयी जावतराजी काठेड रूपचन्दजी बरडिया, धाममनजी सूया महिल धनेच लोग की पिटाई की। अब ता ये धारणाओं रोजमर्रा की घटनाएँ होने लगीं। बगडा के कई परिवार निर प्रतिष्ठि वन्ते जा रहे इन सामन्ती जुमां के कारण बगड़ी क निरुट ही स्थित मोजन रोड पर छापर छाया हू गय। श्री गणेशमन जी काठेड व मीढालालजी काठेड ने मोजन राख को केन्द्र बनाकर राष्ट्रीय प्रादोलन की गतिविधियां तेज कर दा।

7 5 41 क निर मारवाड लोक-परिषद् क संस्थापकान म रावले के बाहर मदान म ही सांभनायक जयनारायण व्याल की अध्यक्षता म एक बहद् सभा का आयोजन किया गया। हुजार की सभा म गाँव क माग एकत्रित हुए। गणेशमनजी व उनके पुत्र मीढा सामन्ती काठेड ने मारी व्यवस्था की। इस सभा म मोलाना रिपानुश्रीन मधुसारागजी माधुर तथा श्री जयनारायणजी ध्याग के भागन हुए। व्यागजी का भाषण प्रारम्भ होत ही सामन्ती गुणां ने साडीतना शुरू कर मारसीट शुरू कर दी। सभा मग हू गई। घोष माग धारण हुए। मीढालालजी काठेड एक मरजी मोनार के बानी चोटें धार्य।



property of the people and suggested that some steps against the Jagirdars were necessary for the same. He said that the Government realised its mistake in promulgating orders under section 144 Cr P C and ultimately lifted the ban.

One Hira Lal said that Ranchor Dass Gattani held a public meeting at Chandawal where nothing untoward happened but on the contrary the Kunwar kept himself quite aloof. The loose administration of the Jodhpur Government he said had given an encouragement to the Jagirdars to raise their heads.

Sd -
Inspector Central of Police Jodhpur

लोगों का आंदोलन और तज हो गया। जागीरी-जुल्मा के विरुद्ध मारवाड़ राज्य द्वारा जांच हुयी और ठिकाना की व्यवस्था काट आफ बाट स ने अंतगत ली गयी। इसी दौरान मारवाड़ लोक-परिपद का उत्तरदायी शासन के लिये आंदोलन चला और बगडी नगर के स्वतंत्रता सनानी श्री मीठालाल साटेंड का इसी आंदोलन के स्थिरस्थल म गिरफ्तार किया गया और जेल दूइ। जेल की मयकर यातनाओं के कारण युवक मीठालालजी काटेड अस्वस्थ ही नहीं हा गये उनका शरीर ही जते टूट गया। जेल से बाहर आने के पश्चात् मी लगतार बीमार रहे और युवावस्था म ही उहाने प्राणों की आहुति दे दी।

चण्डावल

बीषण लाठी प्रहार व गिरफ्तारियां

चण्डावल ग्राम सामन्ती जुल्मा म विरुद्ध सघष म अग्रणी रहा हे। यहाँ जनजागृति का शख फूका सन् 1934 म स्व० म गी नालजी झालीशान ने। श्री झालीशान महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये सविनय श्रवना आंदोलन म भाग लेकर मध्यप्रदेश की एक जेल म, जहा उहू लेल घाणी मे बैल की जगह जातकर अमानवीय यातनाएँ दी गयी थी, छूटकर अपने गाँव चण्डावल आय थ। उहू वहाँ कमठ कायकर्ता के रूप म मिल गये सबधी छेलारामजी हिरामर, नममलजी मूधा, जुगराजजी राममुलजी पुराहित, डॉ० दयालसिंहजी गहलीत तजाराजजी जाट, मास्टर पूरणमलजी, चादमलजी गादिया मगराजजी पीकरणा प्रभुजी जाट, पाबूरामजी जाट धनराजजी भारती, टिकमारामजी मास्टर जिहाने बठ बेगार व लाग बाग म फम लागी के संगठित करने का सफल प्रयास किया।

छलारामजी पर जूतो की मार

गांधी टापी पहनने के अपराध मे श्री छलारामजी हिरामर की चण्डावल राकले मे बुलाकर तिर पर जूतो स 101 बार पिटाई की गई और छेलारामजी हर मार पर 'व-देमातरम्' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाते रहे।

28 माच, 1942 को उत्तरदायी शासन-दिवस

सन् 1942 की 28 माच को मारवाड़ लोक-परिपद व तत्वाधान म उत्तरदायी शासन माग दिवस मनान का निश्चय किया गया, पर चण्डावल मे घारा 144 जान्ता फौजदारी लगा दी गया। 27 माच की शाम को ही 250 जागीरी लठ्ठा ने, जा तलवारा माला व बंदूका से लस थे, समास्थल तथा गाँव म आने व सभी रास्तो पर नाबाबदी कर दी थी। पूर गाँव म आतक का वातावरण छा गया था। किसी का समास्थल पर पहुचन नहीं दिया गया। देवल स श्री शकरलाल कालानी दलबल सहित चण्डावल पहुँच थे, पर उहू भी पीटा गया और गाँव म नहीं जाने दिया। इसी प्रकार साजत रोड कटालिया बगडी कर्मावास सोडिया आदि गाँव स आये लोगी की भी पिटाई कर उहू भगा दिया गया। श्री राममुलजी पुरोहित का उनके घर म घुसकर बुरी तरह स पीटा गया। वे बेहोश हा गय। फिर मागीलालजी त्रिवेदी ने साजत स आय सबधी मीठालालजी काका व विजयशकरजी दवे, मोहन लालजी महु जसवन्तराजजी सिधवी को आत दखा तो भारत माता की जय के नारे लगाने शुरु कर दिय। फिर क्या था लाडिया एम मालो से लस ठिकाने के कारि दे लाक परिपद व इन कायकर्ताओं पर टूट पड़े। श्री मीठालालजी काका की आख के पान माला नुस गया। विजयशकरजी की पसलिया तोड दी गयी। सारे गाँव मे हाहाकार मच गया। लाठीबाज म अनेक घायल हुए। चादमलजी गादिया, महिमादेवी किंकर हरिमाई किंकर, माधोलालजी सुधार (निमाज) को भी बेरहमी से पीटा गया। इन घायलो को सोजत व जोषपुर ले जाने म व मारवाड़ लोक-परिपद व सहायगी-पिप लिया के सठ श्री प्रेमराजजी बाहरा ने बक्त पर मदद की। अपनी बार न घायलो का पहुँचाया। इस काय म चण्डावल के सठ मिथी मलजी ने सधिय सहायग दिया। इस दमन व आतक के बाबजूद भी कायकर्ताओं का जाब ठण्डा नहीं पडा। घारा 144 को तांने के लिए मारवाड़ लोक-परिपद के अग्र्यक्ष श्री रणछोड दासजी गट्टानी के नेतृत्व मे कायकर्ताओं का जल्दा चण्डावल म उसी समास्थल पर एकत्रित हुमा और समा की गयी। लागी न इस विजयास्तव के रूप मे मनाया।

गाँव-गाँव मे आंदोलन

ग्राम विलावास म जागीरदार द्वारा वक्त पर लाटे नहीं करत के कारण आंदोलन छिड गया और सबधी चिमनारामजी सोरवी, नारायणदासजी वण्णव, मवरलालजी सानी पनजी सोरवी न गाँव के किसानो को संगठित कर आप हिस्स की लटाई की चौयाई बट करवाकर ही दम लिया। इस सत्याग्रह मे सोजत के



दो० अग्निन दनमलजी व श्री मोहनलालजी भट्ट का सक्रिय सहयोग रहा ।

बिलावास ठापुर ने लोग म भय एव श्रातक पंथा बदले के लिए नोट के सामने मया हाथ लम्बी नाथ का जूता बनवाकर सटका रखा था । दिनांक 27 4 41 व 8 5 41 को बहूद् भ्राम समाग्र्य का आयोजन किया गया, जिसमें नाहूमलजी पणारिया, भ्रवर लालजी योगेश्वर, मुदरनाथजी, गुरुवरणदासजी रावत ने लोक परिषद् ने उद्देश्यो पर प्रकाश डाला और श्री बजरगलालजी गोपल, (सोजत रोड) ने जरखा कताई का प्रस्थान किया । लोक-परिषद् ने निम्नातुसार चुनाव हुए

समापति - श्री पुष्पराजजी लूणिया, उपसमापति योगेश्वर मुदरनाथजी, मंत्री भवरलालजी स्वणकार, उपमंत्री मोतीलालजी मानस्यदा, बोधायथक्ष-पद्मलालजी बाग, सदस्य-लूदारामजी चौधरी, गारधनजी, हस्तीमलजी धाष्ठा हुकनारायजी मास्टर, मागोलालजी ।

ग्राम बोधम एव साधिया म 21 5 41 व 25 5 41 को चण्डावल ने कायकता श्री मागोलालजी त्रिवेदी व डा० दयालसिंह जी गहलोत म श्राममदाया का आयोजन किया जिसम श्री आशा रामजी भूतडा (साधिया) व श्री मगलसिंहजी (बोधल) ने उल्गाह पुष्प काय किया । ग्राम बुधालपुरा म 5 5 41 को श्री नरसिंह दासजी वैष्णव ने सभापतित्व म हुई ममा म निम्बाज के श्री मापो लालजी श्रान्तिकारी श्रमरक्ष-दजी जैन, सालमच-दजी मिश्रीमलजी, गणेशमलजी सवलेचा न श्रोजस्वी भाषणा द्वारा लोगो को जागृत किया ।

ग्राम धाबडी म वास्तकारा का सामूहिक बेदखली के विरुद्ध श्री हमराजजी बाटिया गुमनाजी सीरवी माहनजी मेघवाल, बिधाना जी शाक्षण न लोगो को मण्डित कर मांचा लिया और सफलता प्राप्त की । इसी प्रकार धारियानीव म श्री माणारामजी जाट एव श्री मभूतमलजी ने जागीरदार क विरुद्ध मांचा सनाला ।

दिनांक 28 3 41 को सोजत धाममण्डी के चौब मे श्री धनराजजी साधी की अध्यक्षता मे एक विराट सम्मेलन म जिन्मे वार हड़मत कायम करन की प्रतिज्ञा हुआर लोगो ने नी । धनराजजी ने स्पष्ट शब्द म घोषणा की कि जिम्मेवार हड़मत कायम करावे रहुगा । उहाने जिम्मेवार हड़मत का श्रेय भी स्पष्ट किया ।

सोजत नगर

साजननगर लोक परिषद् के नय चुनाव मे समापति माणक नाथजी मोधी एटवोकेट मंत्री दयालनरजी ध्यात, बोधायथक्ष

रामपालजी लम्डा एव सदस्य चुभ्रीलाली मू दडा, वध छोमालालजी, दुर्गाव-दजी मिषवी, रगराजजी मेहता चुने गये और परमना लोक-परिषद् के लिए श्री माणवलालजी सिषवी ने घनाना मुद्रा लालजी वंथ तथा रिखबदासजी सेठिया चुने गये ।

सोजत की महिला सत्याग्रही

पाली जिले म महिला स्वतंत्रता सेनानिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । इस प्रसंग म श्रीमती मुगीलादेवी मिथी (सोजत) का नाम सदैव स्मरण किया जाता रहेगा । इहाने कलकत्ता मे स्वतंत्रता आंदोलन म नेतृत्व प्रदान कर महिलाप्रा मे जागृति पैदा की और सत्याग्रह मे दौरान कई बार जेल भी गई । सन् 1942 म जोधपुर म लोक-परिषद् द्वारा चलाये जा रहे सत्याग्रह म भाग लेन के लिए महिलाप्रा का एक जय्या श्रीमती महिमादेवी बिंकर (सोजत) एव श्रीमती मुगीलादेवी गायल (सोजत राट) ने नेतृत्व म जोधपुर पहुँचा और आंदोलन म भाग लिया ।

श्रीमती महिमादेवी बिंकर और श्रीमती मुगीलादेवी गायल ने सन् 1942 मे अग्रजो । भारत छोडो आंदोलन म साजन राट पर एक जुलूस का नेतृत्व किया । पुलिस ने लाठीचार्ज किया । य दोना महिलाप्रा घायल हो गई पर इहाने हाथ मे भण्डा मही गिरने दिया । इहाने सोजत व पाली म अनेक समाधा का आयोजन कर महिलाप्रा म जागृति पदा की ।

लोक-परिषदो के चुनाव

बघडी नगर दिनांक 14 6 41 को बगडी नगर लोक परिषद के चुनाव निम्नातुसार हुए—

समापति श्री भवरलालजी ध्यात, उपसमापति श्री शुभकरगणजी श्रीमाली मत्री- श्री माडालालजी जन, प्रचारमची- श्री भ्र-लालजी स्वणकार, बोधायथक्ष-श्री लालागमजी श्रीमाली सदस्य- श्री माहनलालजी सोनी श्री कन्याधाममत्री श्रीमाली ।

रासावास राणावाम म लोक परिषद् के समापति श्री रूप ब-दजी मण्डारी व मत्री श्री कूलच-दजी बाटिया चुने गये ।

देवली कला दिनांक 28 3 41 को ग्राम क्वला कला म लोक-परिषद् के पदाधिकारी के चुने गये समापति-श्री शंकर लालजी कालानी मंत्री- श्री हृणजी शर्मा बोधायथक्ष-श्री मागोलालजी छारीवाड ।

चण्डावल दिनांक 29 4 41 को चण्डावल लोक-परिषद् के निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये समापति-श्री देवराजजी बाग मत्री- श्री दयालसिंहजी गहलोत प्रचारमत्री- श्री मागो-



लालजी त्रिवेदी, कोपाध्यक्ष— श्री नथमलजी सूधा सदस्य— श्री पूरणमलजी शर्मा, श्री अमरलालजी जाशी व श्री रामसूरजजी पुरोहित ।

सोजत परगना लोक परिषद के सन् 1948-49 के लिए ममापति श्री मीठालालजी 'काका' एव प्रतिनिधि श्री मोहन लालजी मट्ट एव डॉ० श्री अमिन दनमलजी मेहता चुने गये ।

सामती श्रातक

गाधी-टोपी वालो को सजा

कुशालपुरा ठाकुर ने एक फरमान जारी कर एसान किया कि जा भी गाधी टोपी पहनेगा उसे ग्यारह रुपये जुर्माना और 11 जूता की सजा दी जावेगी ।

भडाई मए लापती की माग

श्री आईदान जो जाट के घर मीरग के आयोजन पर चण्डा वल के ठाकुर न डाई मण लापती का काना मागा और न देने पर सारी लापती बूल मे मिलाने की धमकी दी ।

बिठोडा के वीर सेनानी

मारवाड जकशन के पास स्थित बिठोडा गाव मे जागीरी श्रातक के विरुद्ध सघष करने बाने मनानी स्व० गौरीशंकरजी व्यास एव लालदामजी वण्य बाना नाम मारवाड लोक-परिषद के इतिहास मे सदैव याद किया जाता रहेगा । इहाने इस क्षेत्र के जागीरदार के हाथो बडी यातनाए सही हैं । 'यापन महयोग के भ्रमाव मे भी ये श्रतक रह । इस क्षेत्र क अथ प्रमुख कायकर्ता थे—मवधी च दुलालजी जैन (खारची), श्री पदमसिंहजी गुडा, श्री दुर्गासिंह श्री नगरामजी चौधरी (लाबिया), श्री चुनीलालजी मेघवाल (काराडी) श्री छोगा लालजी चौधरी (देवली झाऊवा) सोहनराजजी घोवा (देवली झाऊवा), देवीलालजी दूदोड, बालूरामजी घामली, ईश्वरलालजी घामली, सुरजकरणी खारची, गुलाबसिंहजी पुरोहित (देवली झाऊवा) छोटूरामजी (झाऊवा) जिहोने जागीरी जुल्मा के विरुद्ध सघष जारी रखा ।

प्रमुख कायकर्ता

इसके अलावा सोजत क्षेत्र के प्रमुख कायकर्ता जिहाने स्वा धीनता प्रादोशन को प्रागे बढ़ाया और मामन्ती जुल्मा के विरुद्ध प्रादोलन को तेज किया उनम प्रमुख रहे सवधी भवरलालजी व्यास (बगडी) मिथीलालजी कातरैल (बगडी) शुभकरणी श्रीमाली (बगडी) लालारामजी श्रीमाली (बगडी), मोहनलालजी सोनी (बगडी), वल्लभामलजी श्रीमाली (बगडी) मोतीलालजी राका

(बगडी), बजरगलालजी गोयल (सोजत रोड) मुनालालजी वध (सोजत रोड), इपाशकरजी व्यास (सोजत) यशवतजी कचिर जमालदीनजी (सोजत रोड), हरिसिंहजी (रूपावास) पोकररामजी मावला (सोजत), हीरालालजी टाक (सोजत) जबरजी मेहता (सोजत रोड), मुरारामजी (हीगावास) जसवतराजजी सिधवी (सोजत), धेवरजी परिहार, रामेश्वरजी (सोजत), श्रीमती लालजी राका (बगडी), अमरलालजी जोशी (चद्रावल), श्रीमती मटनागर (सोजत), मदनलालजी जोशी (सोजन) श्रीमती सुभोला सिधवी (सोजत), पुषराजजी, सुषराजजी लूणिया (बिलावास) नारमलजी पगारिया (बिलावास), योगेश्वर सुरेंद्रनाथजी (बिलावाम) भवर लालजी स्वणकार (बिलावाम), मोतीलालजी गालछा (बिलावाम) चौधरी पद्मनालजी काय (बिलावास) लूम्बारामजी चौधरी (बिलावास) गोरधनजी (बिलावाम) हस्तीमलजी झाडा (बिला वाम), हुकमारामजी मास्टर (बिलावास), आशारामजी भूतडा (बिलावाम), भारतजी, नथमलजी सूधा (चण्डावल), चादमलजी गदिया (चण्डावल), रामसुखजी पुराहित (चण्डावल) बदारामजी जाट (चण्डावल), प्रभुजी जाट (चण्डावल), फूलजी जाट (चण्डावल) जुगराजजी जाट (चण्डावल) भंवरलालजी पुराहित (चण्डावल) प्रेमराजजी बाहरा (पीपलिया) रतनलालजी चौधरी (पीपलिया) श्रीमती जसवतराजजी (सोजत) श्री अनराजजी निधी (सोजत), श्री रूपचंदजी वध (सोजत), श्री अश्वत्थ रहमानजी (मार वाड जकशन), श्री भागीलालजी ममाली (जोखवर) हरसिंहजी चौधरी (मारवाड जकशन) प्रेमराजजी जैन (वोपारी) प्रेमारामजी (घनला), बंगारारामजी मेघवाल (पाचेटिया) ।

क्रान्ति व सघर्ष की धरती निमाज

जतारण क्षेत्र म मुख्यत निमाज राम उलूना बड, डिगरना, सवरिया, निम्बाल बिराटिया बावरा, काणेचा, दवराया कुशालपुरा, आमरलाई आनेलाई हाजीवास गावा म जागीरदाग का बडा श्रातक था । मनमान दान की लडाइ, लाय-वाग तथा बैड-बेगार के कारण लोग बडे दुःखी थे । इस क्षेत्र म सवप्रथम मण्डित रूप मे जन जागृति का काय प्रारम्भ किया निमाज के श्री माधान्वा नुधार क्रान्तिकारी और बिराटिया निवासी मोहनान जागी ने । इहाने गाँव गाँव घूमकर लोक-परिषद की ग्रासाए म्थापन का और कायवर्तिका की टोलियाँ बनाइ ।

दिनांक 5 I 41 को श्री जयनारायणजी व्याम न निमाज म एक बिलान-ममलन को सम्पाधित किया । इसके पूव परवरी मन् 1940 म रणछोड दामजी गट्टानी ने निमाज म लोक-परिषद की गाना की स्थापना की जिनके माधोलालजी प्रयश, श्री



धमरचदजी बाहुरा-मन्त्री और सठ लालचदजी बापाध्वश बुने गय । मारवाड लोक परिपद क अन्वयश्री मयपुरादासजी मायुर, निशारमलजी मेहता अचलेश्वर प्रसादजी शर्मा और नरसिंहदासजी लूकड न दिनांक 3 4 41 का एक विराट समा का सम्बोधित कर लाक-परिपद क उद्देश्या पर प्रकाश डाला और लोग स सगठिन हाकर जागीरी जुल्मा का मुखाबला करने का आह्वान किया । इसस प्रेरित हाकर दिनांक 22 5 41 तथा 23 5 41 का श्री धमर चदजी जन के समापतित्व म समा हुई । इसम ब्यावर के मोलाना प्रसर माहम्मद जी मिश्रीमलजी गाथा, सठ सालमचदजी व माधोलालजी सुवार क आजन्वी मापण हुए । ठिकाने की बददलत जामी का परदाभाग किया गया । निमाज म अ्युनिसिपिण्टी की स्थापना का प्रस्ताव भी पास हुआ । इन सफल समाघ्रा स जागीर-दार निमाज व श्रय जागीरदार का दबदबा कम हान लगा । श्रव जागीरदार गुणधर्मी पर उतर आम्र और दिनांक 3 11 41 को श्री धमरचदजी बाहुरा क समापतित्व म आयाजित समा म जब श्री छगनलालजी चापामनी वाला क जापण क बाद श्री मयुरा दासजी मायुर मापण देन सखे हुए ता निमाज ठाकुर क पचास स अग्रिक सठता न समा मच पर हमला बोल दिया और धमरचदजी बोहरा का मारपीट करव बेहाण कर दिया अन्वक वायवर्ताभा क मन्त्रीर चाटे प्रायी । लकिन श्री माधोलालजी सुधार आतिर तन यही मारा लगात रह—“मार मुमीबत सनी संहग—गुलाम बावर नहा रहग ।

प्रथम सत्याग्रही

निमाज के उल्लाहा वायवर्ता श्री गमीचदजी रावा न महात्मा गाधी क आदेशानुसार दिनांक 17 2 41 का मद्रास म सत्याग्रह किया और तीन माह क कठार करावत ली सजा हुई । इस घटना न निमाजवासिया म दूता उल्लाह भर दिया । श्री नेमीचद की जय बोलत हुए एक बडा जुलूम आयाजित किया गया ।

जतारण परगना लोक परिपद

जतारण परगना लाक परिपद क माच 1941 म तिम्नानुमार पदाधिकारी चुने गय—

समापति —श्री गुणेशमलजी सकलषा

मन्त्री —श्री माहनलालजी चौधरा

बापाध्वश—श्री शबरलालजी

सदस्यगण—सबश्री राममुखजी सुनार (गिरी), शबरलालजा

कालानी (देवली), माधोलालजी (निमाज)

मिश्रीलालजी (निमाज), चापलालजी

(निमाज) ।

मारवाड लोक परिपद के लिए निम्न प्रतिनिधि चुन गये—
सब श्री गुणेशमलजी सकलषा (जतारण), श्री धमरचदजी बोहरा (निमाज) श्री शबरलालजी माहेश्वरी (देवली) ।

ग्राम विराटिया, बलूदा व कुमालपुरा मे मारपीट

ग्राम विराटिया क बमठ वायवर्ता श्री मोहनलालजी जासी द्वारा आम बलू दा व कुमालपुरा म ममा आयाजित करन पर जागीरी गुण्डा द्वारा मारपीट का गई । जुलुदा म श्री धीमूलालजी बारटिया का उनके घर म घुसकर रात को एक बजे इतना मारा कि बेहाशी की हालत म उह जतारण अस्पताल मे भर्ती कराना पडा । ग्राम कुमालपुरा क वायवर्ता श्री दधीमल तथा उनकी पत्नी को रात के समय उनक मकान की छत फोडकर इतनी बुरी तरह जागीरदार के लठता न पिटाई की कि उह भी विदम अस्पताल आपपुर मे भर्ती करवाना पडा ।

कुम्हारो ने गाँव छोडा

ग्राम आरवाई व गिरदा के कुम्हारो न जागीरदार द्वारा रात दिन ली जाने वाली बेगारा स तम आरव अथना गाँव ही छोड दिया ।

जागीरदारा की सभायें

श्री माहनलालजी जासी न गाँव गाव जाकर जागीरदारा को लाग-बाग नही देने हेतु किसानो को सगठित किया फलवरदप जागीरदार भी सगठित होने के लिए सभायें करत लग । उन्हाने हाजीवास निराटिया व गापालद्वारे म मीटियें की और तय किया कि लाक परिपद क किसी भी वायवर्ता को गाव म घुसन ही नहा निमा जाये और आ जायें तो मारपीट कर भगा दिया जाय । पडयत्र रचकर जागीरी गुण्डा ने श्री मोहनलालजी जासी पर रात को हमला बाल दिया और बुरा तरह से पिटाई की । लाकनायन श्री जयनारायणजी ब्यास को सूचना मिलत ही वे दिनांक 26 7 41 को विराटिया पहुँचे । गाँव वाली ने सगठित होकर ब्यासजी का स्वागत किया और जागीरदारो के लठता ने समा म गोरगुल व त्रुछान मचाया पर समा भग नही होने पाया । विराटिया के अन्वक प्रमुख वायवर्ताभा म श्री दुलराजजी जन पद्मलालजी जैन वकीर मोहम्मदजी रगरेज व पूलारामजी चौधरी मुखिया वे ।

इन क्षत्र के बमठ वायवर्ताभा मे श्रय प्रमुख नाम थे—
सबश्री वासुदेवजी शास्त्री एडवोकेट बशीरावजी ब्यास रिपमराजजा मुणोत, रहीमबक्षजी शबरलालजी ब्यास पुषराजजी चौहान, पुषराजजी पटवा, बुध्रीलालजी माटो, श्री पाल हाकनी चौहान,



धनराजजी एडवोकेट भवरलालजी भाटी, गुणेशमलजी सक्लेचा व मोहनलालजी चौधरी जतारण निवासी, बलुदा ने सब श्री गोकुलजी जाट, सूरजकरणजी छलानी सेठ भीममचदजी, हापू महाराज पानीया, दयालदासजी बण्णव, हीरालालजी कलाल, हीरादासजी महाराज केसारामजी मेघवाल, मूलारामजी सन, हस्तीमल जी सन, रामरखजी माली बदीलाल जी ध्यास, श्री धीसुलालजी बोरडिया, श्री गिरधारीजी व बलुदा के सेठ श्री भीममचदजी । मुम्बा वाले महाराज श्री हीरादासजी को तो जेल की यातायाँ भी सुगतनी पडी ।

बुधालपुरा म चादमलजी गादिया, श्री मोतीलालजी गुरासा, श्री हरिश्चन्द्रजी नरसिंहदासजी बण्णव, बालूरामजी सुधार व दधीमलजी, बालू शानदपुर के बालामलजी मोहनलालजी सिंधी, अमरचदजी सेवक, शवरलालजी जैन, बाबूलालजी सुधार व मांगुजी जाट, डिगरनाके के लालूजी जाट, बाबरा म श्री शकर नाथ, रास म श्री शकरलालजी सुधार, मालूरामजी गुजर, मोडवाड म श्री धानारामजी जाट, गाँव गरणिया म श्री रामारामजी जाट, पाल का गाँव म श्री गोपारामजी मेघवाल, काणेचा ग्राम मे श्री वस्ती रामजी जाट अलकूटा जी व नंगारामजी मेघवाल, दवरिया मे श्री सूरारामजी सिरवी, हरीरामजी भाभी अंबेदूलसखाजी, बालूजी दवासी, मालूरामजी कुम्हार, लक्ष्मीरामजी चौकीगर डूगारामजी चौकीगर तेजारामजी माम्बी, उजीरखाजी तली, गाँव ध्रागेवा मे भीमाजी रंगर ग्राम सागावास म गोरधनजी नाई, पूनारामजी चौधरी ।

किसानों के प्रभावशाली नेता सेठ श्री रिखबदासजी

पूरे जतारण क्षेत्र के किसानों मे अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे निमाज के सेठ श्री रिखबदासजी राका, बडे निर्भीक व साहसी । श्री राकाजी जागीरदारों के पूरे श्रातक व जोर के बावजूद भी मारवाड एसेम्बली के सदस्य चुन गये और एसेम्बली म सामन्ती बहुमत होते हुए भी उन्होंने जागीरदारों की तीव्री मालोचनायें की थी । निमाज बस्त्रे मे लोक परिपद् के कायकर्ताया का एक संगठित निष्ठावान दल था, जिसम मकधी मिथीलालजी गोधा, अमरचदजी बाहरा सठ लालच र्जी मिथीलालजी पोला श्रीमोहन लालजी कुम्भकर जालारामजी मेघवाल भवरलालजी कडारा बपालालजी ठोलिया, छलारामजी, हरिजन दगलूरामजी मेहतर जालारामजी माली डूगरमलजी खाडप, रतनचदजी राका, सागरमचदजी राका थे जा लगतार सामन्ती जुन्मों के विरुद्ध लड़ते रहे । गाँव धासरलाई के सेसमलजी जन, गुजरारामजी बागडी मणेशनालजी जोशी व हापूजी जाट प्रमुख थे ।

निम्बोल के सेठ लूणकरणजी

निम्बोल गाँव के प्रमुख कायकर्ता सेठ लूणकरणजी का नाम मारवाड के स्वतंत्रता आंदोलन म सवना याद किया जाता रहेगा । ब्रिट जागीरदार की मजदूर शारीरिक श्रानतनाएँ सहनी पडी । जागीरी गुण्डा ने इनके नाम को चोट पहुँचाई । निम्बोल म अग्र्य प्रमुख कायकर्ता थे श्री शवरलालजी घाची, जेठारामजी चौकीदार, सूरजमलजी सुधार । ग्राम डिगरणा के श्री हुबर्महिजी ने इस क्षेत्र म सामन्ती तत्त्वा का प्रभाव समाप्त करन का महत्वपूर्ण काय किया था ।

पाली

पाली परगना की राजनतिक हलचल

पाली परगना म आजादी के सपन की हलचला की कहानी काफी पुरानी है । मारवाड राज्य की प्रमुख मण्डली होने स वहा पर जाष्टि की ज्योति प्रकट करन का श्रेय मकधी जेठमलजी राठी, मुन्नचदजी जन, मूलचदजी भट्ट और व श्री फनहराजजी पुरहित (अब महामाया हरिहरनाथजी दिल्ली कट) को है । जेठमल जी व भुवनचदजी ने पाली सेवा मंडल की स्थापना कर बाघ परम किया और श्री फनेहराजजी पुरहित, जा श्रान्तिकारी व और पूरे अंग्रेजी राज्य से निष्पासित थे—ने बरवाची से आकर उद्योग मण्डल नामक संस्था स्थापित कर स्वतंत्रता संग्राम हेतु लोगों का तयार किया । इस काय मे इहूँ सवधी पत्रानालजी यान्त श्री मुन्नचद करीमजी व श्री जेठमलजी राठी का सहयोग भी प्राप्त हुआ । जोधपुर के मगीप होन स जोधपुर के तत्कालीन नता सवधी जयनारायणजी ध्याम, आनन्तराजजी मुराणा, अमयमलजी जन रणछोण्दामजी गड्डानी मानमलजी जैन, छगनराजी चौपामनी दाता भवरलालजी मरपि व अचलेश्वर प्रमात्जी शमा गिब करणजी, विस्तूरकरणजी श्रादि का मगिय महयोग एव मागन्शन मिन्ता रहा ।

कुछ ही समय पश्चात् 1938 मे मारवाड लोक परिपद् की शाखा मन्वप्रथम पाली म व तपश्चात् परगने के अग्र्य ग्राम म स्थापित हो गई । श्री चिमनीगमजी कुमावत, रामचदजी ध्राय, वरचत्तसलीजी जयारी, रामप्रनापजी शमा उन दिनों अग्रिय पति के बायकर्ता थे ।

मन् 1939 मे पाली शहर की घानमण्डी मे जोधपुर म अग्र्य श्री मानमल जन व श्री छगनराजजी चौपामनीवाला ने सामन्ती जुन्मा के विरुद्ध सपन देडने तथा मारवाड मे उत्तरणयी शासन कायम करन के उद्देश्य स एक ग्राम सभा आयोजित की । इस ग्राम सभा मे लोगो मे अग्रार जोश मग । उत्तेजित मीड को तितर बितर



करन व लिए पुलिस न लाठी धाज किया जिंगम थी चौपागनी
वाला व मानमलजी जन पावल हा गय ।

पाली परगना लोक परिषद 1941 के चुनाव

पाली परगना लोक परिषद के चुनाव सन् 1941 के लिए
निम्नानुसार हुए —

समापति—सबथी सुमरराजजी डागा एडवाकट, उपमहापति—
मूलचन्दजी मट्ट मन्त्री—गिरधारालालजी गण उपमन्त्री—मुजफ्फर
बा जी बावाप्यध—रामप्रसात्जी गांधी समुक्त बापाप्यध—
डेठमलजी राठी सदस्य—बिमनीरामजी कुमावत माधोसिंहजी
भागव एडवोकेट ।

लोक परिषद को प्रथम आम सभा

दि० 25 2 41 को श्री शोकतसा (सयद) को अध्यक्षता म
गांधी बटला म बृहत् आमसभा वा आयोजन हुआ जिंगम थी
सुमरराजजी डागा एव थी मूलचन्दजी मट्ट क धाजन्वी भाषण हुए ।
मना म सबसम्मति स जा प्रस्ताव पास किया गया वह प्रबिकल
रूप स यहाँ दिया जा रहा है —

प्रस्ताव सं० 1— आज को समा पाली शहर की तरक्की
के लिए महाराजा साहब एव चीफ मिनिस्टर सा० स प्रयत्न करती
है कि मिल के मालिक न विराया कमान की गरज स काठडिया
बनानी खुद की है जिनस पाली शहर की बार्द तरक्की नहीं होगी
और राज्य क पट्टे सींग की आमदनी मारी जायेगी । एसी हालत
का देखत हुए राज्य और पाली पब्लिक के इन्टेरेस्ट (जनहित) म
कोठडिया का बनना एवदम बन्द किया जाव । इसके प्रतावा कार्
जमीन स्टेशन पर दी जाव ता पाली पब्लिक का कसगन रेट पर
नो जाव । पाली की तरक्की के लिए जा मिल खुलाने की पब्लिक
को मशा था उस मध्य नजर रखत हुए पाली की आजादी एव
उन्नति के वाक्य उपाय बन्द किय जावें ।

मिल नैनजमट का पाली के लोग का नीकरिया देने के लिए
मजबूर किया जाय और जा लोग काम नहा जानते है उनक लिए
ट्रेनिंग को व्यवस्था मिल मालिक स करवाई जाव ।

गुदोज, डेण्डा एव खरवा लोक-परिषदो के चुनाव

माह अक्टूबर, 1941 म सबथी सुमरराजजी डागा, मूलचन्द
जी मट्ट व रामप्रसात्जी गांधी ने खरवा डेण्डा एव गुदोज का दौरा
किया और लोक-परिषदो की स्थापना कर नियमानुसार चुनाव
करवाव —

आम खरवा समापति—श्री सुवराजजी नाहर, मन्त्री—श्री
मातोवालजी स्वणकार, बापाप्यध—श्री मिथीलजजी जैन, सदस्य—
श्री पुत्रीवालजी श्रीमाली, श्री ननमलजी गुनार चौधरी जेठानी
(रामपुरा), चौधरी बुपाजी (रामपुरा) भार्ताजी (बढेरवास),
सूत्तानी नेनपुरा नवाजी जाभाजी (विणपुर) ।

आम गुदोज समापति—ठातुर अमरसिंहजी, मन्त्री—
श्री रामप्रताप जी शर्मा, बापाप्यध—श्री हृगरमजी जैन, सदस्य—
श्री गुवनाराजजी, पुत्रीवालजी थी बत्तीरामजी ।

आम डेण्डा समापति—ठातुर जवाहरसिंहजी, मन्त्री—
श्री मुक्तानमजी जन बापाप्यध—श्री पुत्रीवालजी जन ।

पाली परगना लोक परिषद (1942) के चुनाव

सन् 1942 क लिए पाली परगना लोक-परिषद क चुनाव
निम्नानुसार हुए —

समापति—श्री मूलचन्दजी मट्ट, उपमहापति—श्री रामप्रसात्
जी गांधी मन्त्री—श्री मुजफ्फरजीरामजी उपमन्त्री—श्री मगराम
जी माटी बापाप्यध—श्री बिमनीरामजी, सदस्य—श्री सुमरराजजी
डागा व थी छैनबिहारीजी । थी बरकतमलीजी असाठी बाफो
सक्रिय रहे ।

दि० 5 व 6 मई सन् 1946 की मारवाड लोक परिषद की
एतिहासिक प्रतिनिधि सभा म पाली जिल के निम्न पदाधिकारिया
ने भाग लिया था—सबथी रामप्रसाद गांधी (पाली) मूलचन्द
बापना (सादडी) निहामचन्द परमार (देवली पातुजी) मोठालाल
त्रिवेदी (सोजत) मंगीलाल शालीशान (बण्डावण), पनपतिराज
मण्डारी (सोजत) माधोवाल सुपार (निमाज), माधोसिंह भागव
(पाली) ।

5 2 48 को पाली परगना लोक परिषद के चुनाव

समापति—श्री रामप्रताप शर्मा गुदाज तथा मारवाड लोक
परिषद के निम्न प्रतिनिधि चुने गय —

सबथी माधोसिंह भागव इबाहीम, रामप्रसाद गांधी पन्ना-
वाल ब्यास, अजुम जोशी हृगरमल सोडा मोलीवाल स्वणकार ।

गुदोज, लाम्बिया एव खरवा आतक के शिकार

श्री रामप्रताप शर्मा मगरामजी जागिड एव अमरसिंहजी
जागीरदार के बिबुध गुदाज म बहुत लम्बे धरसे तक सपय करते
रह । उनके साथ मारधीट, मुकदमेवाजी व गिरफ्तारी की प्रनेक
घटनाएँ पटी । इनकी जमीन जल्द की गड पर ह इहोने कमी थी





हिम्मत मही हारी और जिल भर मे आदालत की धूम मचाते रहे । गुदाज के श्री झगरमलजी लाढा को जागीरदारो ने बहुत यातनाएँ दा, पर इहाने नडा सधप किया । इसी तरह खरवा म श्री मांतीलाल स्वणकार और लाविया म श्री लालूराम शर्मा का अनेक यातनाएँ जागीरदारो द्वारा दी ग । श्री लालूरामजी शर्मा सन् 1935 के पूव म ही स्वाधीनता आदोलन के विचारा स प्रभावित होकर जन जागृति का बाय करने लग गय थ । इनके घर-बरे पर नद बार चोरिया करवायी गइ । खसिहाना म आग लगवा दी गइ पर घुन के घनी श्री लालूरामजी लगातार सधप करत रहे ।

प्रमुख कायकर्ता

पाली परगना क्षेत्र के स्वतन्त्रता सनानिया क साथ-साथ, प्रमुख कायकर्ताम म मवथी मूलचदजी डागा, वल्लमदासजी अरोडा शकरलालजी (मासद) बरतनप्रसो अमारी, चम्पालालजी बाफना दाममलजी बाहुरा माधोसिंहजी भागव श्रीमती रानीदेवी भागव, भिमनोरामजी कुमावत, जसरारजजी धाची करुणाशकरजी व्यास रामनिरामजी शमा हरीरामजी धवरतनजी व्यास, विजयकिशनजी व्यास डा० गगारामजी माटी मुजफ्फरअलीजी चूडीगर बसीराम जी पशवा मोहम्मद शरीफ गणपतलालजी फोफलिया गगारामजी माली हुन्नर साहब शौकत साहब छागालालजी गादिया, चम्पालाल जी सुराणा एव ग्राम गुडा ऐंदवा क लिलमारामजी मेणा सोनी भवरजी बिनावरा दिलदार खा, देवराजजी भावरी कुदमनलजी, धीमूलालजी जन ग्राम खारडा के शिवरतनजी वध गू दोज क गोरधनजी शर्मा डडा के जवाहरसिंहजी धीमूलालजी शर्मा रामपुरा क जेठाजी चौधरी पडासना क भीकारामजी चौधरी नीमसा क रतारामजी चौधरी सुमारामजी आड बाथीरामजी गुजराती, भूमतरामजी चाधरो मुभापजी रावल राणमलजी मणियारी रामाजी मधवाल (गू दाज), अमरसिंहजी (गू दोज) वानमसजी डासी भवरलालजी महुता, पीरसिंहजी भूपाज भरुवालजी जन ने सामन्ती तत्वा क विरुद्ध आदोलन म महत्वपूर्ण भूमिका प्रदा की है ।

बाली

आजादी का सधप

आजादी की लडाई म बाली परगन की भूमिका विशेष महत्व पूण रही है । मेवाड इलाके के अन्तगत आदिवासी गरानिया क्षेत्र म तो सामन्ती और निरबुडा राजाशाही क विरुद्ध सन् 1920-21 म ही आगलन द्दिड गया था, जिसके प्रमुख मूधधार थे श्री छोटमलजी सुराणा (बाली) और श्री मूलचदजी अट्ट 'मोर (पाली) । इस आदालन का विस्तृत वणन पूव म किया जा चुका है, पर आजादी

के इस आदालन की गम्भीरता को इसी स आका जा सकता है कि इसे दबावे के लिए जोधपुर महाराजा को अपनी फौज (रिहाला) भेजनी पडी थी ।

सधप के नायक श्री सुराणा

बाली परगना मे स्वाधीनता आदालन क प्रमुख नायक रह है स्वर्गीय छोटमलजी सुराणा । इनके त्याग और सधपमय जीवन की कहानी इसी श्रम क अग्रज आपको पढ़ने को मिलेगी । इहाने सन् 1920-21 के आदिवासी आदोलन से लकर अपन जीवन की अन्तिम सास तक राष्ट्र और दरिद्रनारायण की सेवा क प्रति समर्पित भाव से जो बाय किया वह अपन आप मे एक आदश है । बाली परगना के गाव माटून और देसूरी परगना के ग्राम खरोकडा मे सामन्ती तत्वा के प्रत्याचारी के विरुद्ध इहाने जा मफल सधप किया, उसस दबी हुई शोषित जनता की हिम्मत बडी । बाली किले म सन् 1939-40 म जब इह नजर-बंद रखा गया तो स्थानीय लामा म से सबकी विजयमल सुराणा, द्वारकादाम गुप्ता आटाराम चौधरी मांगीलाल अग्रवाल आदि आने आय और आजादी के आदालन स जुड गय ।

घुन के घनी श्री राजगुरु

उधर सुभेरपुर म श्री बाबूलाल राजगुरु ने स्वाधीनता आदालन का भ्रष्टा गाड दिया था जिह समय-समय पर सिरोही प्रजागण्डल के नेता गाडुलभाई अट्ट और शिवगज क श्री दबीचद सागरमलजी सधिय रूप से सहयोग एक मय दशक इत रह थ । जन जागृति क साथ माध लोक-परिपद् की शाखाएँ गांधो म स्थापित की गइ और जागीरी जुल्मा, विशपकर बैठ-बेगार क लाग-भाग का लकर अनेक स्थाना पर आदालन खडे हुए ।

खुडावा फालना पर बिसात प्रदशन

खुडावा फालना पर श्री फूलचदजी बाफना क नतृत्व म 13 अप्रैल, 1946 के दिन एक विशाल प्रदशन आयोजित हुआ । जागीरी-गुडा द्वारा भारी पथराव हुआ । सबथी चम्पालाल राणावन, तेजराज राणावत, माहुल माधी, गामाराम छोपा, रूपचन्द बागरेचा, भीकमचद गारधनसिंह परभार करीम वकम, उमराव खाँ, पृथ्वीराज भीकमचद, पुखराज गुलाव आदि स्थानीय कायकर्ताम का बहुत सहयोग मिला । इस प्रदशन म गाडवाड के अनेक ग्रामा के कायकर्ता शरीक हुए । रात के समय श्री फूलचदजी बाफना और श्री जैवीचदजी सागरमलजी (शिवगज) का फानना पुलिस चौकी म स जावर पिटाई की गई । इसस अनन्नाप की आग और अग्रिय भडक गयी । बाधा म पुराहिता का दरखता से बाय लिया गया । उनके परिचारा पर डाय जागीरी जुन्म की



(नमस्कार) करके आशीर्वाद लेने के लिए जाता था और रिश्तेदार और बरिष्ठ लोग आशीर्वाद के साथ रुपया नारियल देते थे पर जागीरदार को जुहार करते वक्त बरराजा को रुपये भेंट करने पड़ते थे। यह जवारी लाग' नहीं देने पर ठाणुर मुण्डारा न तजमलजी चेलाजी जन के विरुद्ध बाली हुन्नमत में एक रुपये का दावा दायर किया। वाकिम बाली न दिनांक 7 4 41 का दावा तो खारिज किया ही उल्टे जागीरदार पर खर्च के रूप 25 और 6 आन की छिड़ी दी। इससे मारवाड भर में तहलका मच गया।

मुण्डारा गांव में थाइ के दिना में किसान से दूध की लाग का भी लोग न जमकर विराध किया। इस कर विरोधी आन्दोलन में श्री अमृतलालजी मेहता न सनिय भाग लिया और जागीरी गुण्डा द्वारा उनकी पिटाई करवायी गई। विराध करने पर लक्ष्मीचन्दजी महता का भी पीटा गया।

हुजाना का प्राधा हिस्सा लटाई में

सन् 1940-41 में लटाई के मामले को लेकर एक जबरदस्त आन्दोलन चला। परम्परागत नियमानुसार जागीरदार पैदावार का सातवा हिस्सा लटाई में लता था पर उसमें प्राधा हिस्सा लटाई का हूचम जारा कर दिया। महाना तक लाटा में अनाज पड़ा रहा। किसानों का भारी क्षति उठानी पड़ी। मारवाड लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने लता में काफी जागृति पैदा कर दी थी। श्रीमोठा लानजा हुजाना इस वक्त प्रमुख कार्यकर्ता रहे।

बाकली जागीरदार का आतक

दिनांक 5 12 41 की घटना है। बाकली लोक परिषद् के अध्यक्षता प० श्री मोतीलाल शास्त्री व द्वारकादासजी गुप्ता प्रचाराय बाकली पहुँच जहाँ युवकों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। श्री लक्ष्मीचन्दजी के समापनित्व में सभा का आयोजन कर 21 रुपये की धली भेंट की गई। लेकिन मीटिंग का ऐलान करने वाले गाँव भावों की घुरी तरह से पिटाई की गई और लोग का राकले में बुलाकर धमकाया गया। जागीरदार की इन हरकतों से जनता में जोश उमड़ पड़ा और लोक परिषद् की शाखा की स्थापना की गई

- 1 जनराजजी चिमनाजी सभापति
- 2 उम्मदचन्दजी मंत्री
- 3 पुनराजजी जवानमलजी उपमन्त्री
- 4 पृथ्वीराजजी चिमनाजी बापायधर

सदस्यगण—सबथी वीरचन्दजी रतनाजी धाकी भवूताजी नवाजी सुधार मनरूपजी, सरमलजी, जसराजजी वीरचन्दजी,

टेकाजी किशनलालजी भादानी मेघवाल सदारामीगेजी। ये चुनाव धाणेराव निवासी श्री चादमलजी सिधवी के समापनित्व में आयोजित आम सभा में सम्पन्न हुए। इसी सभा में बाड में क्षतिग्रस्त मनाजा की मरम्मत के लिए मिट्टी खान पर लगाय टैम का भी विराध किया गया।

साण्डेराव में लोक-परिषद् की प्रथम सभा

दिनांक 16 5 41 का साण्डेराव में घाचिया के चौक में स्थानीय कार्यकर्ता श्री महादत्तजी श्रीमाली न एक सभा का आयोजन किया जिसमें श्री लक्ष्मीनारायणजी छोटमलजी सुराणा द्वारकादासजी गुप्ता अमृतलालजी महता के जाशीय भागण हुए। निम्नाद्यानाथ के मेले में उस वक हुए भीषण हुल्लड क फलस्वरूप लाकौ रुपया की हानि के लिए पुलिस की निंदा की गई। श्री महादत्तजी के प्रयत्न से अन्नक सदस्य बनाय गये। साण्डेराव क प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री चुन्नीलालजी वध तथा श्री गुमनारामजी मार कुम्हार थे।

बाली परगना लोक-परिषद् क चुनाव

वक 1940-41 के लिए बाली परगना लोक-परिषद् की कार्यकारिणी का चुनाव निम्नानुसार सम्पन्न हुआ—समापति सबथी मोडारामजी थोटाजी (कोट), उपसमापति छोटमलजी सुराणा, प्रधानमंत्री द्वारकादास गुप्ता सुक्त मंत्री श्री अमृतलालजी बदल राजजी मेहता, (मुण्डारा), बापायधर श्री माँगीलालजी ध्रुवाल, सदस्य-बद्रीनारायणजी शर्मा, मुन्नराजजी सुराणा प्रमराजजी महता, थोटासराजजी चौधरी हमाजी रपाजी सुधार लूबजाजी रूपाजी चौधरी तथा बांशी नगर की भार स य प्रतिनिधि और चुन गये—सबथी भीषमचन्दजी मगाजी भगवतीदासजी बण्णव, भवतमलजी, बालचन्दजी, प्रेमचन्दजी, हिम्मतमलजी।

मुण्डारा के निम्नानुसार प्रतिनिधि चुन गये—

सबथी फाऊलालजी हसाजी श्रीमाली बद्रीनारायणजी केशवजी दव, सदस्य-चन्दजी ताराचन्दजी महता नवाजी छीपा, चनारामजी वैराणी, किस्तूरचन्दजी जोशी बमाजी भीमाजा सुधार।

बाली नगर लोक-परिषद् के चुनाव

दिनांक 18 2 41 को श्री छोटमलजी सुराणा की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में निम्नानुसार चुनाव हुए —

समापति—सबथी भीषमचन्दजी, मन्त्र-विजयमलजी सुराणा, राजाचौ-माँगीलालजी ध्रुवाल उपमन्त्रा—द्वारकादासजी गुप्ता।



गजनीपुरा के मन्तरूपरामजी (पूव विधायक) व भराजी चौधरी, वृन्माराजजी चौधरी (राजपुरा), धाणेराम के ही श्री नयमल ताराचन्द सिधवी न ब्रह्मदावाद न महात्मा गांधी द्वारा चलाय गये मत्याग्रह न भाग लेकर जेल यतनाए मही । श्री नयमल का व्यापार ब्रह्ममन्त्रवाद मे था पर अपन कारोबार की परवाह न करत हुए इन्हाने राष्ट्र प्रेम स प्रेरित हो सत्याग्रह मे आम लिया ।

नारलाई न सवन्धी देवायकर, नाडाल न चौधरी लिखमाराय, मागीलाल धाय, पीयाजी, मालाजी चौधरी, गुराँ प्रमाद खतन, हस्ती भल सानीगरा, परतेहचद जन, फौजमल रामचद खारडा न लाग रामजी धाची हीरासालजी धाची, साबलता न जटाशकरजी श्रीमाली पिलावणी मे गुलराजजी छीपा सीमाडा न रामदत्तजी परिहार, मास्टर व मशाराजजी महाराज, लक्ष्मीरामजी पुराहित पमारामजी चौधरी सुकनाराजजी साटेड चुनीलालजी वैष्णव व लालचदजी पादिया बुमी न रामनिवासजी परिहार, रामराजजी मेहता, सोमयर भादरलाऊ एव इन्टरवाडा मे जोरावरमलजी, रामगोपालजी राम लालजी, चम्पालालजी मण्डारी, मागीलालजी ब्रडोडा पनजी सुहार, निम्बाडा मे तेजसिंहजी पुरोहित, खोड न नयमलजी लाडा बन्धायर मलजी जन, बीमाराजजी चौधरी, लक्ष्मणपुरीजी आदि कायकर्ता सन्धि थे । बिजोवा न चदनमलजी भरूमलजी पालरेवा बेसरी मलजी चौधरी इटदडा न गुननाराजजी चौधरी, रानी न अनन्त रामजी देवे प्रेमराजजी मेहता चोचोटी मे मानमलजी जन एव रामा रामजी चौधरी कीरवा न डूगरमलजी बापना व देवली पाबूजी मे निहालचदजी परमार सोहनराजजी जन, बजाजी चौधरी मास्टर रामश्वरजी, पंडित पुरुषोत्तमजी श्रीमाली पंडित विधाधरजी श्रीमाली, चम्पालालजी श्रीमाली श्री बगीलालजी श्रीमाली, श्री मुनारामजी चौधरी रूपारामजी चौधरी तथा मोहनराजजी जन सक्रिय कायकर्ता थे । पाली जिले न तिरवी समाज प्रमुख कास्तरवारी काँम है और सामन्ती लडाइ, लाग-बाग व वठ वेगार से ये श्रायधिक पीडित थे । इनके धममुह श्री मातीबाबाजी (रानी) पूव विधायक चाली न इस जाति की नामन्ती जुतमो के विरुद्ध संगठित करन का महत्वपूर्ण काय किया था ।

सधर्ष की प्रमुख रणस्थली देवली-पाबूजी

पाला जिले न सामन्ती जुलमो के विरुद्ध लडे गये सधर्षो न मवाधिक संगठित सधर्ष देवली-पाबूजी की घरती पर लडे गये और यहाँ की जनता न लगातार सात वर्षो तक मन् 1944-45 मे लेकर 1951-52 तक सधर्ष चलाया । इस सधर्ष का नायक थे- श्री माहनराज जन, जो विद्यार्थी-जीवन स ही (सन् 1939-40 से ही) राजनीति न सन्धि हो गये थे । देवली न सन् 1941-42 मे

ही नौकनायक जयनारायण व्यास द्वारा लोक परिषद् की शाला स्थापित हो ग् थी ।

गोचर भूमि के लिए सत्याग्रह

जाधपुर दरवार के प्रमुख मरजीमान श्री माधामिह का देवली पाबूजी एव तीस अध्प ग्रामा की नई जागीर इनायत की गई थी । उहाँने देवली न नगद लगान के र्मान पर लटके की घोषणा की । गाववाला के नही मानन पर जागीरदार न गाचर भूमि पर कजा कर ग्राम मवशिया का चरन स राक दिया और गोचर भूमि न नय बरे यादकर बन्जा कर लिया । श्री माहनराज, जा उन दिना इदार होनकर कालेज न पढत थे उहाँने जागीरी जुल्मा के विरुद्ध आग लन की बागडार सम्भाली । गाव की पूरी जनता काग्रम के भण्ट के नीचे संगठित हो ग् । इनके प्रमुख साथी थे श्री निहालचदजी मास्टर श्री रामेश्वरजी चौधरी गजाजी एव साहनराजजी जन । मन लम्बे सधर्ष न दोरार जागीरदार द्वारा बाहर न बुलाय गुण्टा द्वारा बद्का लाडिया न हमले किये गये । छाने स गाव न 200 बूड सवारा की परड करवायी गइ, आगजनी एव पमना को नष्ट करन की कद वारणतों की गइ 100 मे भी अधिक ग्रामवासिया पर अनक फौजगरी मुकदमे बनाकर रात दिन देसूरी एव वाली न पशिया पर बुलाकर डेरान किया गया । जोधपुर दरवार का संरक्षण प्राप्त हान के कारण पुर्मिन न भी गावा न आतक का राज्य कायम कर रवा था । कइ दिन तब मवेषो का घरा न रोक् रला गया । कइ किमाना के नेत एव कुएँ छुडवा दिय पर ग्रामवासियो न लावा रूपया की हानि उठाकर भी हिम्मत नहा हारी । मगठित शक्ति घसममव का भी सधर्ष बना मकनी है यह ग्रामवासियो न करके लिखा दिया । जागीरदार का सम्पूर्ण बहिष्कार सफल हुआ । उह नौकर एव मजदूर मिलना तो दूर रहा हरिजनो ने भी सफाई करना बंद कर लिया । जागीरदार को मजबूरन देवली छोडकर जाधपुर तथा जालोर परगन के गाव तीरवी न निजाम कला पडा । श्री बगीलाल श्रीमानी न गाचर लुडाए के लिए 11 दिन की मूल हडताल की ।

रावला कोटडी मे स्कूल की स्थापना

देवली गाव न मध्य मे ठिकाने की एव 'बनी कान्डी' नामक भवन स्थित था । मास्टर रामश्वरजी शमा न विद्यालय का उत भवन न प्रवेश कराकर स्कूल खोल दिया । जागीरदार का सारा मामान गाव वाला के मद्दाग मे बाहर फक किया गया । कुवर मज्जनमिह जो कि याद न विधायक एव प्रमुख रह घोडे पर मवार हा पिल्लाल लकर धाय पर मास्टरजी मीना तानकर लडे हा गय । तत्काल ही गाववाला न कुवर मां एव उनक नौकरा का पर लिया और उह जान बचाकर भागना पडा । उहाँन भवन न नाजायज



कत्रे का दावा भी 'यायालय' में प्रस्तुत किया जा सकता है प्रभाव में
कारिज हा गया। उस भवन में हा नया म्कल भवन बना।

मोहनराजजी पर ब'दूक से हमला

माहनराजजी न कनिज की पट्टा छ़ाडकर कई महीना तक
गाय क मवणी चरान का वाय स्वय किया। एक दिन कुवर मज्जन-
मिह व'दका में एक लाटिया में लम च'द नोकरा का लवर गाकर
भूमि में मवणी बाहर ल'डन के लिए हमनावर हाकर था गय।
गाय के 50-60 बायबताप्रा में जि'ग हाकर बाहर निकलन स मना
कर दिया। श्री मज्जनमिहजी न सम्मुख लडे माहनराजजी पर
ब'दूक का निगाना साधा, पर उमी क्षण दृशरीय चालकार ही कहिए
चोप की गाँवें मडक गट। घाडा चमक गया धोर ब'दूक छूटन क
पूच ही हाय स गिर ग' धोर हमलावरा का मागना पटा। फिर ता
ग्रामवासिना में गोचर भूमि में लाड गय दा धुआ का झट व कजाडे
महित मिट्टी में भर दिया धोर उनकी खडी पमलें चरा दी।

मारवाड के कृषि व राजस्व मंत्री नाथूराम निर्धा देवली ध्राये

द्वि'ग लिना पालना स्टेशन पर आयोजित विमान-सम्मेलन में
श्री माहनराज न लाल-परिषद् क नेता श्री नयनारायण व्यास एव
विज्ञान-नेता श्री बलदेवराज मिश्रा क सम्मुख देवली ग्राम के जागीर
दार क लु'मा की ददमरी बहाना रखा। धाडे ही लिना बाद मार
वाड में काक-परिषद् एव दरवार का मिला-जुला मविमण्डन बना।
कृषि एव राजस्व मंत्री श्री नाथूरामजी मिश्रा देवली यात्र धोर
ग्रामवासिना की द'मरी शिक्षायात सुनी। उ'हान स्वय सारे हलात
का नजरा स देना श्री'ग तलान हा गाकर भूमि सम्बन्धी धायणा
कर जागीरदार का किमी नी प्रकार का दवल न दन ह'तु पाव'द
किया। ग्राम देवली के एम पौच वर्षीय लम्बे मधप में ग्रामवासिना
न धनुडी एकता एव मगडिन शक्ति का प्रदर्शन किया। इनके प्रमुख
नायक ध श्री माहनराजजी जन धोर सहयागी ध भी निहानच'द जी
परमार सोहनराजजी, बजाजी चौधरी, बदाजी चौधरी, रूपारामजी
चौधरी, पुरषारामजी श्रीमाला मास्टर रामचन्द्रजी परमार
बपलालजी श्रीमाली व विचारजी मारां। इन धा'दालन में स्त्री
पुरष वच्च मनी शरीक ह'ए। स्त्रिया न गीत गा-गाकर पुरषा
का उल्हाड बनाया। राज प्रात मवशा देकर चरान क लिण स्वय
मवका का दल निर'रता ता यह गीत गाया जाता—

मत दूध लजाइये पाछो मत ध्राईये बेटा राड सू।
जो जायो सो जावसो, कोई रिबरिज मरे कपूत
करतक करता जा मरे, लच्छो रेग सपूत।
जिन धरती रे धान स धो प्रबल बलिणो शरीर,
उन धरती पर दुलखा परिडयो, वीर न छोडे धीर।।

पाछो फिरजे जोत ने पू, या रहिजे रण खेत,
जा बेटा मैदान में अब तज दे धर रो ह'त।।

एक गीत ओर—

मुलक ने मोटयारा माया देना पडसी,
देग में मोटयारों, माया देना पडसी।।
मरघरा मूधा मानविषा, काजसरे सिर मूधा
करिया रण रा राज सजायो,
जुलम जोर रो जड ने बाटो, भूट मूठ रो छाई पाटो
हिलमिल हाय लगायो।
ध्रायो ध्रपणो देश उबारो, भारत मा रो भार उतारो,
सर दे नाक बचायो।।

मूलाजी चौधरी की हत्या

जवाली ग्राम क निवासी श्री मूलाराम चौधरी का बापी का
एक बेरा इ'दरवाडा ग्राम म था। जागीरदार उम बदलल करना
चाहता था। देवली-बाबूजी के बापेसी बायबता मथ श्री विशाल
च'द जी परमार मास्टर रामेश्वरजी रामलालजी धाचा सामसर,
रामगोपालजी इ'दरवाडा व मूलाजी चौधरी की मदद में बर पर
दार मग रहे। जागीरदारों ने रात के समय बन्दूका से हमला
किया। मूलारामजी वहाँ मार गये धोर मथ मनी बायबता बुरी
तरह में घायल हुए जिनका जाधपुर न इलाज करवाया गया।

ग्राम कोटडी में नई लहर

जागीरदार गाँव कोटणा (नाडोल) के धातक, जुलम एव
वेगार स परेशान हाकर मेघवाला के 40 परिवार मवान-सत
छ़ाडकर ध्रप गावा में जा बसे। देवली बापेस के कायकर्तारा का
एक दन श्री माहनराजजी क नतुलव में वहाँ पर गहुचा धोर जन-
सा'दाला छड दिया। पनस्वरूप सारे मजाना एव खेता स
जागीरदार का कन्ना हटाकर मथवान-परिषदा का पुन धावा
किया गया। गाँववालो ने बठ-वेगार एव लाग-जग ब'द कर दी।
इस कायक्रम में गाँव बाटणी के प्रमुख नायकता लादाजी व
मीमरामजी सुधार मोतीराम जी तथा चतराजी व विमनाजी
चौधरी प्रमुख सहयागी हैं।

ग्राम छोड के राजनीतिक सम्मेलन

ग्राम खोड गच्छीय धा'दालन में ध्रपणी स्थान रखता ह।
यहाँ के प्रमुख जननेता श्री नयमनजी लोडा के प्रयत्ना स खोड में
मारवाड साक-परिषद का विशाल पैमान पर सम्मेलन हुआ जिस
जिम्मेवार ह'दमत कायम करने का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया
गया। इस सम्मेलन की मारवाड लोक-परिषद् के प्रमुख नेता सब



श्री जयनारायणजी व्यास, मधुरादासजी माधुर, रणछाडदास जी मट्टाना, मानमल जी जन फूलचंद जी बाफना आदि ने सदोषित किया। पाली के सब श्री रामप्रसादजी शर्मा, रामप्रतापजी शर्मा (गुदोज), मिठांलालजी बाका (सोजत), मूलचंदजी मट्ट (पाली) खाड के नयमलजी लाडा के अतिरिक्त सब श्री बत्तावरमल, लक्ष्मणपुरी, सीमामारम चौधरी तथा पनेचंदजी महता न भी इस सम्मेलन को सफल बनाने में अथक परिश्रम किया।

श्री नवारामजी माह पर जुलूम

चाणाद ठिकाणे के ग्राम बालराइ म लोक परिषद के वायवता श्री नवाराम माह कुम्हारा के साथ ठिकाणे के बमचारिया न मारपीट एव बेजा हरजते करने मे कोई बमर नही रखी, नई भूठे मुकदमे भी बनाय। इसी प्रकार श्री अचलचंदजी छोपा को भी सामन्ती जुल्मा के विरुद्ध लडन के कारण परशान किया गया, पर य बायवर्ता अडिग रहे।

ग्राम खरोकडा मे आंदोलन का शीर्षणेश

ग्राम खरोकडा माफी जागीरदारा का गाव था, अत चौधरिया, कुम्हारा मेघबाला, सरगरा आदि कीमा को बेगार निवा लन के लिए मजदूर यातनाएँ दी जाती थी। गाव के लोग घर से छानकर अग्रय जान को मजदूर हो गये थे पर बाली न स्वतंत्रता मेनानी श्री छद्मलजी सुराणा न वहा जावर लोग को संगठित किया, उनम जाग्रति पदा की और बठ-बेगार व लाग बाग क विरुद्ध एक मफल आदालन चलाया। इसका प्रभाव सारे गावा पर हुआ।

लोक परिषदो के चुनाव

सन् 1940 म लोक-परिषद की शाखाओं के चुनाव हुए। खरोकडा मे निम्नानुसार पदाधिकारी चुने गये-

समापति-सबथी नदकिशोरजी शर्मा उपसमापति-हिम्मतमलजी परमार मंत्री-अमृतलाल जी सोनी कोषाध्यक्ष-फूलचंदजी राठौड, नवस्यगण-कह्यालालजी वैदिक, प्रमोदकुमारजी गुरा, धीरजमलजी बच्छावत, अनोपचंदजी व नगराजजी पुनमिया।

परगना कमेटी के प्रतिनिधि -

सादही स अनोपचंदजी पुनमिया, फूलचंदजी राठौड फूलचंदजी बाफना अमृतलालजी सोनी पुखराजजी कोठारी देवीचंदजी शर्मा राजमलजी तलोसर, नदकिशोरजी शर्मा, चामलजी पुनमिया, विरदोषचंदजी मोलेचडा, धाणेराव स कह्यालालजी वैदिक, नाडाल मे हिम्मतमलजी परमार व अमृतचंदजी।

इदरवाडा लोक-परिषद के चुनाव

दिनांक 15 2 41 को ग्राम इदरवाडा (सामसर) म लोक-परिषद के निम्नानुसार चुनाव सम्पन्न हुए -

समापति-मदथी रामगोपालजी मंत्री-जारावरमलजी जन सयुक्त मंत्री रघुनाथजी कोषाध्यक्ष-मांगीलालजी अराडा सदस्य-रामलालजी ध्राम, बनजी लोहार, पनजी चौधरी, बनजी सिरवी चतराजी, मायारामजी, मातीजी गुमनाजी (प्रतापगढ) वृलजी (निम्बोडा), बालमुकंदजी अरोडा (सामेसर) सुरजोद हुसनजी अली माहूमदजी।

देसूरी परगना लोक परिषद के चुनाव

दिनांक 22 11 41 को देसूरी परगना लोक-परिषद के चुनाव इस प्रकार हुए-

समापति-सबथी अनापचंदजी पुनमिया उपसमापति-हिम्मतमलजी परमार प्रधानमंत्री-फूलचंदजी बाफना प्रचारमन्त्री-कह्यालालजी वैदिक, कोषाध्यक्ष-पुखराजजी कोठारी सदस्यगण-फौजमलजी (नाडाल) प्रेमराजजी महता (रानी) मगनारामजी सोनार (सादही), प्रमोदरतनजी गुरा (नाडाल) दानमलजा इवाजी (धाणेराव), देवीसालजी व्यास (सादही) सुमरमलजी वकील (देसूरी), चंदनमलजी (बिजावा)।

देवली-पावड़ी मे लोक-परिषद

सन् 1942 के लिए देवली पावड़ी मे मंत्री श्री मोहनराजजी द्वारा आयोजित किसान-सम्मेलन म सैकड़ो सदस्य लोक-परिषद के बनाय गये। इस सम्मेलन को श्री जयनारायणजी व्यास व श्री बशीधर जी पुरोहित जोधपुर न सम्बाधित किया। इसी सम्मेलन म देवली ग्राम के विकास की याचना बनाई गई और लोक-परिषद के निम्न पदाधिकारी चुन गये -

समापति-श्री निहालचंदजी परमार उपसमापति-बजाजी चौधरी, मंत्री-रामेश्वरजी शर्मा कोषाध्यक्ष-सोहनराजजी जन सदस्य-मोहनराजजी, पुरुषोत्तमजी रूपारामजी चौधरी चम्पारामजी श्रीमाली, बुधारामजी चौधरी विद्याधरजी महाराज चुभ्रीलालजी वण्यव।

सामती तत्त्वो से सघर्ष

नाडोल मे श्री कह्यालालजी वैदिक को पिटाई

सन् 1941 के अक्टूबर माह मे श्री कह्यालालजी वैदिक (धाणेराव) नाडोल मे किमानो का डिनाने की ज्यादतियों के विरुद्ध आन्दोलन करने हेतु समझा रहे थे कि सामन्ती मुण्डा-तला ने उन पर हमलाकर बुरी तरह स पिटाई की। सोमाजी धात्री के अग्र व किसानों के बला को जबरन फाटके मे डालकर मनमाने पाटक शुल्क वसूल थिय जाते थे। ठिकाणे के फौजदार का इतना श्रातक था कि श्री धीरजमलजी बच्छावत, सादही का उनके मित्र श्री राजमलजी नाडोल बातो के यहाँ ठहरे से भी रोक दिया गया।



श्री जयनारायणजी व्यास मयुरादासजी मायुर रणछोडदास जी गृह्णनी मानमल जी जैन फूलचंद जी बाफना आदि न संबोधित किया। पाली के सब श्री रामप्रसादजी गांधी रामप्रतापजी शर्मा (मुदाज) मीठालालजी काका (सोजत) मूलचंदजी मट्ट (पाली) चाड के नयमलजी लोडा के अतिरिक्त सब श्री बरतारमल लक्ष्मणपुरी खीमाराम चौधरी तथा पनचंदजी मेहता न भी इस सम्मेलन का सफल बनान में अग्रक परिश्रम किया।

श्री नवारामजी मारु पर जुलम

चाणाद ठिकाणे के ग्राम बालराड म लाक परिपद के कायकता श्री नवाराम मारु कुम्हार के साथ ठिकाण के कमचारिया न मारपीट एव बेजा हरकत करन मे कोई कसर नही रखी कई भूठ मुकुन्द भी बनाय। इन्ही प्रकार श्री अचलचंदजी छोपा का भी सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध लडने के कारण परेशान किया गया पर य कायकर्ता अडिग रहे।

ग्राम खरोडा मे आन्दोलन का श्रेयण

ग्राम खराकडा माफो जागीरदारा का गाव था अत चौधरिया कुम्हारो मधवाला सरगरा आदि कौमो को बेगार निबालन के लिए भयकर यातनाएँ दी जाती थी। गाव के लोग घर खत छुटकर अग्रज जाने को मजबूर हो गये थे पर बाली क स्वतन्त्रता सनानी थी छोटमलजी सुराणा न वहा जाकर लोगो का सगठित किया उनम जायुति पदा की धीर बैठ बेगार व नाग बाग के विरुद्ध एक सफल आन्दोलन चलाया। इनका प्रभाव सारे गाँवा पर हुआ।

लोक परिपदो के चुनाव

सन् 1940 मे लाक-परिपद की शालाग्रो के चुनाव हुए। खरोडा म निम्नानुसार पदाधिकारी चुने गये-

सभापति-सबश्री नदकिशोरजी शर्मा उपसभापति-हिम्मतमलजी परमार मन्त्री-अमृतलाल जी सानी कोषाध्यक्ष-फूलचंदजी राठोड सदस्यगण-कह्यालालजी वैदिक प्रमोदगुमारजी गुरा धीरामलजी बच्छावत अनापचंदजी ब नगराजजी पुनमिया।

परगना कमेटी के प्रतिनिधि -

सादडी स अनापचंदजी पुनमिया फूलचंदजी राठोड फूलचंदजी बाफना अमृतलालजी सोनी पुखराजजी कोठारी देवीचंदजी शर्मा राजमलजी तलोसरा नदकिशारजी शर्मा चादमलजी पुनमिया बिरदीचंदजी गोलचन्द्रा घाणराव स कह्यालालजी वैदिक नाडोल स हिम्मतमलजी परमार व अमरचंदजी।

इदरवाडा लोक-परिपद के चुनाव

दिनांक 15 2 41 का ग्राम इदरवाडा (सोमसर) म लाक परिपद के निम्नानुसार चुनाव सम्पन्न हुए -

सभापति-सबश्री रामगोपालजी मन्त्री-जारावरमलजी जन सयुक्त मन्त्री रघुनाथजी कोषाध्यक्ष-मागीलालजी श्रारोडा सदस्य-रामलालजी श्राय बनजी लोहार पनजी चौधरी बनजी मिरवी चतराजी माथारामजी मातीजी गुमनाजी (प्रतापगड) धूलजी (निम्बोडा) बालमुकंदजी श्ररोडा (सोमसर) सुरशीद टुसनजी अली माहमदजी।

देसूरी परगना लोक परिपद के चुनाव

दिनांक 22 11 41 का देसूरी परगना लाक परिपद के चुनाव इन प्रकार हुए-

सभापति - सबश्री अनापचंदजी पुनमिया उपसभापति-हिम्मतमलजी परमार प्रधानमन्त्री-फूलचंदजी बाफना प्रचारमन्त्री-कह्यालालजी वैदिक कोषाध्यक्ष-पुखराजजी काठारी सदस्यगण-फौजमलजी (नाडोल) प्रमराजजी मेहता (रानी) मगनारामजी सानार (सादडी) प्रमोदरतनजी गुरा (नाडोल) दानमलजी इदाजी (घाणराव) देवीलालजी व्यास (सादडी) मुमरमलजी बकील (देसूरी) चदनमलजी (बिजोवा)।

देवली-पावूजी मे लोक-परिपद

सन् 1942 के लिए देवली पावूजी म मन्त्री श्री माहनराजजी द्वारा आयोजित किसान-सम्मेलन म सकडा सदस्य लाक-परिपद क बनाय गये। इस सम्मेलन को श्री जयनारायणजी व्यास व श्री बशीरर जी पुरोहित जोधपुर न सम्बाधित किया। इसी सम्मेलन म देवली ग्राम के विकास की याजना बनाई गई धीर लाक-परिपद क निम्न पदाधिकारी चुने गये

सभापति - श्री निहालचंदजी परमार उपसभापति-बजाजी चौधरी मन्त्री - रामशरजी शर्मा कोषाध्यक्ष-साहनराजजी जैन सदस्य - माहनराजजी पुरुषोत्तमजी रूपारामजी चौधरा चम्पालालजी श्रीमाजी बुषारामजी चौधरी बिद्याधरजी महाराज बुनीसालजी वण्णव।

सामती तत्त्वो से सघण

नाडोल मे श्री कह्यालालजी वैदिक की पिटाई

सन् 1941 के अक्टूबर माह म श्री कह्यालालजी वैदिक (घाणराव) नाडोल म किसानो का ठिकान की ज्याणतिया क विरुद्ध आन्दोलन करन हेतु समभा रहे थ कि सामन्ती गुण्डा-तत्वा न उन पर हमलाकर बुटी तरह म पिटाई की। सामाजी धापी एव अग्र किसानो के बला का जबरन पाटक म डालकर मनमान पाटक ग्णक बमूल बिये जाते थे। ठिकान के फौजदार का इतना श्रावक था कि श्री धीरजमलजी बच्छावत सादडी का उनक मित्र श्री राजमन्त्री नाडोल वालो के यहाँ ठहरन से भी रोक दिया गया।



बन्धु का भावा भी स्वाभाविक म प्रयुक्त किया जो मनुष्य क प्रभाव म प्राप्तिक हो गया । उम भवत म हो गया इतुम भवत बना ।

मोहनराजजी पर ब'रूबा म हमसा

माहात्माजी म की आज का पत्रां सादर कर् मदाना तक भाव क मवनी परा का भाव मय किया । एक दिन बहर मज्जन-मिष्ट ब'रूबा म एवं प्राणिया म भाव ब'रूबा मोहरा का लकर भावर भूमि म मवशा बाहर म'रुत क विण हमाराय हाकर धा एव । मीव क 50-60 बावकर्तिया म विण हाकर बाहर विचलन म माता कर दिया । था मज्जनामित्रा न म'मुल मर माहात्माजी पर ब'रूबा का विचलन भाषा पर उमा धा' म'रुत म म'रुत की कर्तिया धीर का भाव मरक म' । पाया लमक एवा धीर ब'रूबा पूजन क पूव ही भाव म गिर म' धीर हमलाकर का भाषा म परा । विण भा प्रामवागिया म भाषा भूमि म मा' मय म' म'रुत का धर म क'बा' म'रुत मिष्ट म मर दिया धीर उकरा मरुत म'ने परा म ।

मारवाड़ क हृषि व राजस्य मत्री माधुराम मिषी देवनी धारि

इहा मिया फामला स्टेशन पर धाराविज विमान-मयमय म श्री माहनराज न साध-मरिपद क उमा था उरुतामयन धरम एवं विमान-मया श्री मय'राम मिषी क म'मुल म'रुत धाम क जगार मर क मुमा का द'मरा क'रुता मया । पाव ही मिया बा' मार बा' म साध-मरिपद एवं दरवार का मिषा मुता मविम'रुत बना । हृषि एव राजस्य मया था माधुरामत्री मिषी दयमा धारि धामवागिया की द'मरा मिषा मने मुता । उरुता मय मार हायाव को नजरा म दगा धीर लकरा हा माघर भूमि लम'रुत धारिया कर जागार'र का विना भा प्रकार का मयन न एव इतु पाव' किया । धाम दवता क इम पाव कपीव मयव मयम म प्रामवागिया म धनुटी मकता एव मगडिन मलि का प्र'मने किया । मयक प्रमुण नायक व श्री माहनराजजी जन धीर म'रुताया व था निहालम' जी परमार माहनराजजी ब'रुनी धीरधी ब'रुनी धीरधी म'रुतामत्री धीरधी मु'रुतामत्री श्रीमानी माण्डर राधमरुता परमार कपालाजी श्रीमाला व विद्याधरजी माला । इम धारासन म र'रुता पुदप वकव ममा मरुत हूए । मिषा न गात मा माकर पुण्या का उल्लाह ब'रुता । राज प्रात मवशा लकर चरान क विण ह्यव मयता का दन नि'रुता ता पर मीन माया जावा—

मत हूष लताइने पाछी मत धारिने धटा राइ स । जो जाया सी जायसी, कोई रिबरिब मरे कपूत कतक करती जा मरे, लखी मेर लपूत । जिन धरती रे धान सँ श्री प्रबल बलियो शरीर, उन धरती पर तुलसी पडियो, धीर न छोडे धीर ।

पातो किरने ओण मे व, या रहिने रान लप जा देता वीरान मे एव लर दे धर रो हेन ॥

एव मीन और—

मुणक मे मादवासी भाषा देना परमा, देन मे मोदवासी, भाषा देना प'रुनी ॥ मयपरा मया भाग्यवया का'रुनी गिर मुषा कर्तिया रान रा राज म'रुतो मुणम और रो ज'रु मे काटी भू'रु रो लाई पाटी हिमामिन भाव लगायो । पाको धारणी देन उरुनी, भारत मा रो भार उरुनी गर दे मय ब'बायो ॥

मुताजी धीरधी को हया

उरुताय धाम क विचलन श्री मुतायम धीरधी का धानी का एव वरा इ'रुतवाहा धाम क एव । जगार'र मुव ब'रुतम कला बा'रुता था । म'रुनी-मा'रुता क बावमा क'रुतम मय था नि'रुतम ब'रुता परमार माण्डर राधमरुती मयम'रुती धारिया माधमर मयम'रुतामत्री म'रुताय व मुताजी धीरधी को म'रुत म ब'रु पर राव मर रहे । जगार'रमा । राव क मयम ब'रुता म हमसा किया । मुतायमत्री ब'रुती मार मय धीर धार्य ममा बावकर्ता मुती लरु म धायन एव विचलन जग'रुत म म'रुत क'रुताया एवा ।

धाम कौटुकी मई लरु

जगार'र मीव काटडा (माठाव) क धारक मुम एव बगार म परेमात हाकर मयमाया क 40 परिवार मयान-एव सादर'र धार्य मीव म जा वग । दवनी बावग क बावकर्तिया का एक दम श्री माहनराजजी क ल'रुत म ब'रुती पर ल'रुवा धीर जन धारा'रमात ए' किया । मयम'रुत मारे मकता एव मता म जगार'रमात का ब'रुता हटाकर मयवाल-मरिवाहा का पुन धारवा किया गया । मयवाल मे ब'ट बगार एव साय-बाग ब'रुत दी । इम बावत्रम म मीव काटडा क प्रमुण बावकर्ता मा'रुती व धामारायजी मुषार मातीराम जो तथा चतराजी व विमनाजी धीरधा प्रमुण ल'रुताया है ।

धाम लोह म राजनीतिक सम्भेसन

धाम लोह राष्ट्रीय धारासन म धरणी र'रुता र'रुता है । यही मे प्रमुण जननेता श्री मयमलजी लोड़ा क प्रयत्ना स लोह म मारवाड साध-मरिपद का विचलन ममाने पर सम्भेसन हूया जिसम जिम्मवार हूयुमत कायम क'रुने का ऐतिहासिक प्रन्ताव पारित किया गया । इम सम्भेसन को मारवाड़ लो'ध-मरिपद मे प्रमुस नेता लख



की जयनारायणजी व्यास, मधुसूदासजी माधुर, रणछोडदास जी गट्टानी, मानमल जी जन, फूलचंद जी बाफना आदि ने सवाधित किया। पाली के सब श्री रामप्रसादजी भाषी रामप्रतापजी शमा (गुदाज), भीडालालजी बाका (सोजत), मूलचंदजी मट्ट (पानी) लोड के नयमलजी लाडा के अतिरिक्त सब श्री बरतारमल लक्ष्मणपुरी, सीमाराम चौधरी तथा पनेचंदजी मेहता न भी इस सम्मेलन का सफल बनाने में अथक परिश्रम किया।

श्री नवारामजी माह पर जुलम

बाणाद ठिकाने के ग्राम बालराई में लोक परिषद के वायकर्ता श्री नवाराम माह कुम्हार के साथ ठिकाने के नमकारिया न मारपीट एवं बेजा हरकतें करने में कोई बसर नहीं रखी, कई झूठे मुकदमे भी बनाये। इसी प्रकार श्री अचलचंदजी छीपा को भी सामती जुल्मों के विरुद्ध लड़ने के कारण परेशान किया गया, पर यवायकर्ता अडिग रहें।

ग्राम खरोकडा में आंदोलन का शीर्षण

ग्राम खरोकडा माफी जागीरदारा का गांव था अत चौधरिया कुम्हारों मेघवाला सरगरो आदि कोमा को बगार निका लन के लिए मजदूर यातनाएँ दी जाती थी। गांव के लोग घर खेत छाड़कर अग्रज जान को मजदूर हो गये पर बाली के स्वतंत्रता-सनानी श्री छाटमलजी गुराणा न वहाँ जाकर लोमा को संगठित किया उनमें जागृति पदा की और बट-बैंगार व लाग बाग के विरुद्ध एक सफल आंदोलन चलाया। इनका प्रभाव सारे गावा पर हुआ।

लोक परिषदों के चुनाव

सन् 1940 में लोक परिषद की शाखाओं के चुनाव हुए। खरोकडा में निम्नानुसार पदाधिकारी चुने गये—

समापति—सबधी नदकिशारजी शर्मा उपसमापति—हिम्मतमलजी परमार मंत्री—अमृतलाल जी सोनी कोषाध्यक्ष—फलचंदजी राठोड, सदस्यगण—कहैयालालजी वैदिक, प्रमोदकुमारजी गुरा, धीरजमलजी बच्छावत अनापचंदजी व नगराजजी पुनमिया।

परगना नभेटी के प्रतिनिधि —

सादवी स अनापचंदजी पुनमिया, फूलचंदजी राठोड फूलचंदजी बाफना अमृतलालजी सोनी पुष्पराजजी कोठारी दबीचंदजी शर्मा, राजमलजी तलीसरा, नदकिशारजी शर्मा चांदमलजी पुनमिया, बिरदोचंदजी गालच्छा, धाणेराम स कहैयालालजी वैदिक, नाडोल स हिम्मतमलजी परमार व अमृतचंदजी।

इंदरवाडा लोक-परिषद के चुनाव

दिनांक 15 2 41 को ग्राम इंदरवाडा (सोमसर) में लोक-परिषद के निम्नानुसार चुनाव सम्पन्न हुए —

समापति—सबधी रामगोपालजी मंत्री—जारावरमलजी जैन समुक्त मंत्री रघुनाथजी, कोषाध्यक्ष—मौंगीलालजी अराडा सदस्य—रामलालजी अग्रय बनजी लोहार पनजी चौधरी बनजी मिरवी चतराजी मायारामजी भातीजी, गुमानाजी (प्रतापगड) धूलजी (निम्बोडा) बालमुक्तजी अरोडा (सोमसर), बुरशीद हुमानजी अली माहम्मदजी।

देसूरी परगना लोक-परिषद के चुनाव

दिनांक 22 11 41 को देसूरी परगना लोक परिषद के चुनाव इस प्रकार हुए—

समापति—सबधी अनापचंदजी पुनमिया उपसमापति—हिम्मतमलजी परमार, प्रधानमंत्री—फूलचंदजी बाफना प्रचारमंत्री—कहैयालालजी वैदिक कोषाध्यक्ष—पुष्पराजजी काठारी सदस्यगण—फौजमलजी (नाडोल) प्रेमराजजी मत्ता (रानी) मयनारामजी सानार (सादवी) प्रमोदरतनजी गुप्ता (नाडोल) दानमलजी इदाजी (धाणराव) दबीलालजी व्यास (सादवी) सुमरमलजी वकील (देसूरी) चंदनमलजी (बिजावा)।

देवलौ पाबूजी के लोक-परिषद

सन् 1942 के लिए देवलौ पाबूजी में मंत्री श्री मोहनराजजी द्वारा आयोजित किसान सम्मेलन में सक्डो सदस्य लोक-परिषद के बनाये गये। इस सम्मेलन की श्री जयनारायणजी व्यास व श्री बशीधर जी पुराहित जाधपुर ने सम्बोधित किया। इसी सम्मेलन में देवलौ ग्राम के विकास की योजना बनाई गई और लोक-परिषद के निम्न पदाधिकारी चुने गये —

समापति—श्री निहालचंदजी परमार, उपसमापति—बजाजी चौधरी मंत्री—रामेश्वरजी शर्मा कोषाध्यक्ष—साहनराजजी जन, सदस्य—मोहनराजजी, पुरोहितमजी रूपारामजी चौधरी, चम्पालालजी श्रीमाली बुधारामजी चौधरी, विद्याधरजी महाराज चुनीलालजी वज्जवा।

सामती तत्त्वों से सघन

नाडोल में श्री कहैयालालजी वैदिक को पिटाई

सन् 1941 के अक्टूबर माह में श्री कहैयालालजी वैदिक (धाणेराम) नाडोल में किसानों को ठिकाने की ज्यादातिया के विरुद्ध आंदोलन करने हेतु मजबूत रहे थे कि सामती गुण्डा-तत्त्वा न उन पर हमलाकर बुरी तरह स पिटाई की। सामाजी घापी एव अग्र किसानों के दलों को जबरन फाटन में डालकर मनमान फाटन शुल्क वसूल किया जात थे। ठिकाने के फौजदार का इतना आतंक था कि श्री धीरजमलजी बच्छावत मादवी को उनके मित्र श्री राजमलजी नाडाल वाला के यहाँ ठहरने से भी रोक दिया गया।



: 6 :

ऐतिहासिक 28 मार्च, 1942 • एक सस्मरण

□ श्री दयालसिंह गण्डलोट व्याख्यर □

स्वतन्त्राधीन मारवाड लाकपरीपद् द्वारा 28 मार्च व दिन मारवाड म पूण उत्तरदायी स्वराज्य की माग की गयी थी अत यह दिन उत्साहपूर्वक मनाया जाना स्वाभाविक था । सन् 1942 के साजत परगने म राष्ट्रीय नेताभान न यह दिवस विज्ञान प्रादोलन व जन-जागृति के अग्रणी कर्म-बण्डावल म मनाने का निश्चय किया । उस समय उमम सम्मिलित होने वाले सभी नेताभा व कायकताओं की हत्या व पडयत्र की लामहत्या कहानी बात इस काण्ड म अजनी बायकर्ताभा व राष्ट्रीय नेताभा की भयकर चोटें प्राया ।

समाराह की पूव मध्या पर जागीरदार की धार स अतक की दृष्टि म बन्दूकना, माला व लाठियों से नर्स नगमग डारें मो भाडें व टटटुभा को पाडा पर तथा पैदल सार गाव म अतक फलान की दृष्टि स एक प्रदशन यात्रा निकली । उनकी हिट लिस्ट म अकित मारे कायकर्ताभा पर नजर रखन क लिए कहीं वे भागकर वच न निकल, अतक घरा पर कडा पहरा बढाया गया ।

प्राय समाराह के लिए निश्चित ममय म दो घण्टे पूव लठला व माला-बन्दूकधारिया न सभा स्थल का घेर लिया और सायन अतक बढ गय । यह पदशन घोर अतक कुछ ह् तक किसी का बही स वहा न आने दन मे मफल हो गय । सभा-स्थल पर कवल दन पत्तियों का लखक ही श्रोता के रूप म उपस्थित था ।

यह स्मरणीय है कि जागीरदार का प्रथम श्रेणी का मजिस्ट्रेट होने व अपनी स्वय की पुलिस रखन का अधिकार प्राप्त था । इसी पुलिस के थानदार न मुझे एकांत म त जाकर समझान का प्रयत्न किया कि उस तरह क माहौल म किसी भी तरह की मोटिंग होने की कोई सम्भावना नहीं है, तथा उस मोटिंग म सम्मिलित होना अन्दरे मे खाली नहीं है । यह सम्मति भी दी कि एक मला आदमी होने के नाते मेरा बडा बठना मुझे 'यथ परधानी मे डाल दगा । मैंने उत्तर मे थानदार साहब का मेरे प्रति उनकी इस शुभकामना क लिए धन्यवाद दिया और बताया कि मैं वहा मोटिंग करने नहीं, बल्कि यदि कुछ कहा जाय तो मुनने आया हू । फिर भी यदि व लाग मेरे साथ मारपीट करेय तो मैं यह जानने हुए शिवायन भी नहीं करूंगा कि व बेचारे शत्रय पीकर अपने भाप न नहीं है । और, मैं पुन अपनी जयज प्राकर बढ गया ।

इतन म आपसी गुर-गुराहट मे एसा नात हुआ कि बाहर के मगमान आ गय है और वे बाहर ही गक दिय गये है । लेवक उठ कर उनन मिला और सारी परिस्थिति म उह अवगत कराया ।

लेवक गाव के विद्यालय म प्रधानाध्यापक होने के साथ ही पास्ट मास्टर भी था । डाक बण्डावल रेन्वे स्टेशन रवाना करनी थी अत मोया पोस्ट धारित गया । सयाग की बान स्कूल भवन की चामी खपरसितन के पास रहा करती थी जो ठिकाण क बमचारी की पत्नी थी । बमचारा वग मारा का सारा उस पडयत्र स जुडा हुआ था या जाड दिया गया था । विवक होकर वाहर ही बठना पडा । पान का रास्ता घटना के त्र बना हुआ था । ठाकुर साहब सडक पर भावती हुई सीढिया पर आकर इस सार काण्ड का सवालन कर रहे थ । बीसिया लोग इधर उधर भाग-बीड कर रहे थे । इनमे म कुछ न शराब पी रती थी । मुझे बाद मे मालूम हुआ, बाहर मार-पीट या मार-नाट आरम्भ हो गई थी । मुझे डाक बन्द करने के लिए आदर जाना था । पास म ही स्थित जन मंदिर स एक माग स्कूल म आन का था । मैं उधर से भीतर आया, डाक रवाना की ही थी कि आनताईया की 'चाण्डा माता की जय की आवाज सुनाई दी ।

डाकखान की सिडकी सडक पर खुलती थी । मैं वहाँ बठा हुआ था कि भीड मे म आवाज आई कि मास्टर का बाहर निकालो इतने बहुत तार बिटुिया दी है । मुझे उनकी मजप अवस्था म उमसता का आभास तब हुआ जब मेरे बहुत स स्नेही भी उस समय जन-जलूल बाल रहे थे जिह वान मे बहुत सेन ही हुआ । मैं विडकी म दल रहा था कि भीड परिपद् क वरिष्ठ कायकर्ता थी राममुल पुरोहित पर आधाधुष लाठिया बरसा रही था ।

जब मुझे बाहर जाते देखा ता श्री मागीलाल त्रिवेदी उपक आनीशानजी, का स्थानीय लाकपरीपद् क मनी तथा इस सभा क सयाजक थ ममा म्यगिन करने की धापणा करन बाहर की तरफ रवाना हुए । ज्या हा उहान आवन मरानुभावा का दख, उनका हृय प्रेयावियय स आशालित हा उठा और ओर से जय हिन' बायकर उनका आनदन किया ।

'जयहिंद' का पाप पूरा होते-हीते उन पर लाठियां की वर्षा मूसलानी हो गई। एक सवार ने घोड़े को दौड़ाकर ठाकुर साहब को सूचना दी कि साठी चल गई है। ठाकुर साहब का आदेश हुआ— बहून अर्घ्य किया, श्रव बाकी सब को भी सम्भालो। बाहर से घ्राये गज्जना मन्मोजत सोजत रोड, कटलिया, बगडी, देवली, बर्माबास, सोडिया घ्रादि घनेब गावो के लोग थे। सबको ही 'सूनायिक' रूप म हमले का शिकार बनाया गया। मोठालालजी बाबा की भीत के पास माले की बोट लगी। विजयशकरजी दवे की पसलिया की हड्डियो म फेंककर हो गया। बर्कोल साहब जसबलराजजी निपवी तथा मोहनराजजी भी अछूते गही रहे।

गाव मे भी आततायी नाम कर रह थ। शालीमानजी पर प्रहार करके यह दल गाव के चुने हुए कायनतामा को देवन गया। परशुराम घ्रामेठा जो अपना सेत हथके जाने का प्रबल प्रतिराप कर रहे थे वा मकान सबसे पहले पडता था। वहां रात के पहले से मकान होकर घ्रामेठा-बग उहू अपने बीच म लंबर बठा था। घ्राणे भी चादमलजी मादिया, जिनवा दाप था बेवल एक भी मिनट म कुछ बोलना, को पीटा गया। वहां से यह दल राममुखजी के महा पर पहुंचा।

यह सत्य है कि मारने वाल से बचाने वाला बडा हाता है। एक कायवर्ता किमी तरह पीसलिया पडूबा और स्वर्गीय नेठ थी प्रेम

राजजी बोहरा (मैम बेवल वाले) से मिला और घायला को इलाज के लिए अग्रयत्र ले जाने के लिए उनकी गाड़ी मांगी। बोहराजी समाज मुधारक नो दर्ज के थे ही, उदारता व राष्ट्रीयता भी उनम फूट-फूट कर गरी थी। उनकी गाड़ी के पडूचते ही घायलो को लंबर चण्डावल के स्वर्गीय सठ मिथीलाल लुगिया हर प्रकार के सहयोग के लिए बमर बस कर साथ गये। सोजत अस्पताल वाला के ना बहन पर घायला को जापपुर ले जाया गया, जहां उनके उपचार की समुचित व्यवस्था हुई।

चण्डावल म 144 घारा लगा दी गई। लोग परिपद न इन तोहने वा निगम लिया। प्रथम सत्याग्रही बनने का श्रेय मिला युवक नेता श्री रणछोडदास गट्टानी को, जो बाद मे हार्डिवाट के जज भी रहे। श्री गट्टानी के प्रवेग के ठीक पहले घारा 144 व 116 उठा ली गई और धार्मिक विजयोलास मे जब श्री गट्टानी के नेतृत्व म कायनतामण उसी स्थान पर मसाह करने जा रहे थे, जहां कि पटना पटी थी, कहते हैं जागीरदार वा मुन खोलने लगा और यह मरने मारने पर उताह हो गये, पर टिकाने के ममभगर लोग ने उहू पकडे रता।

उही दिने एक मिगन लेबर स्टेपड निप दल-बल सहित बहा घ्राये हुए थे। चण्डावल-बाण्ड की मूज ने उनके बान लोल दिप और मारत की स्वतंत्रता मे हो रही देर को उहाने घोडा समेटा। ❖





: 7 :

ऐसा भी जमाना था

□ श्री मोहनराज जैत □

लेखक ने पाली जिले के अपने गांव—देवली पावूजी में तो लम्बे समय तक ठिकानेदारों से सघय किया ही था, मगर अन्य जागीरदारों—लाहोद, घाणेराम बोया, धीमाडा श्रादि के जागीरी जुमों के विरुद्ध भी अपने क्रांतिकारियों का सफल नेतृत्व किया था। उन्हीं को लेखनी से दिल बहलाने वाले ऐतिहासिक प्रसंग तथा उन दिना पत्र पत्रिकाओं में छपे समाचारों की बतरणें यहां प्रस्तुत हैं—

—सम्पादक

1 कोल्हू में बैल की जगह जोत कर छ माह की यातना

अंग्रेजों का साम्राज्य और उन्हीं की जेल। पाली जिले के चण्डावल ग्राम के स्वतंत्रना सेनानी स्वर्गीय मागीलालजी त्रिवेदी सन् 1931-32 में असहयोग आन्दोलन के दौरान मध्य प्रदेश की बुलढाणा जेल में दूस दिने गये थे। वहाँ विभिन्न प्रकार की यातनाएँ—पत्थर की कब्ररी कूटना, आटा पीसने की चक्की चलाना तो ही दी जाती थी मगर त्रिवेदीजी को लगातार छ माह तक तेल की घासी (कोल्हू) में बैल के स्थान पर जोतकर जिन में घाठ घाठ घटे तक अमानुषिक यातनाएँ भी दी गइं। फिर भी पाली जिले का यह नौजवान सपूत माफी मागने को तयार नहीं हुआ।

2 एक सौ एक जूतों की मार हर चोट पर 'भारत माता की जय !'

सन् 1939-40 का किस्सा। चण्डावल (सोजत) ग्राम में मारवाड लोक परिषद् की सभा को जागीरदार के घुड़सवारी ने नाठी प्रहार कर भग कर दिया था जिसमें परिषद् के शीपस्य नेता भायल हुए। इस सभा को आयोजित करने में थी मागीलाल त्रिवेदी व मीठालालजी काका का हाथ था। उनके साथ ही वही का अनुमति जाति (सरगरी) के एक नौजवान—छलाराम चौहान ने बड़े साहस स जागीरी-हमसावरों का मुकाबला किया था। उसने बाद ठाकुर का हुकम हुआ जिससे उसके भादमी छलाराम को एक दिन रावल में पकड़ कर ले गये। देखत ही देखते वहा रावल में मकड़ों की सख्या में अमानुषिक इकट्ठी हो गयी। ठाकुर का हुकम हुआ—इस हुरामजादे को 101 जूते लगाये जायें। उस नौजवान को रावल के चौक में बटा दिया गया और ठाकुर के टुकड़ा पर पलने वाले

कारिदे एक एक कर करते लगे छलाराम के सिर पर जूता की वर्षा। पूरे एक सौ एक जूतों की मार और हर मार पर छलाराम 'भारत माता की जय SS का नारा बुलद करता रहा।

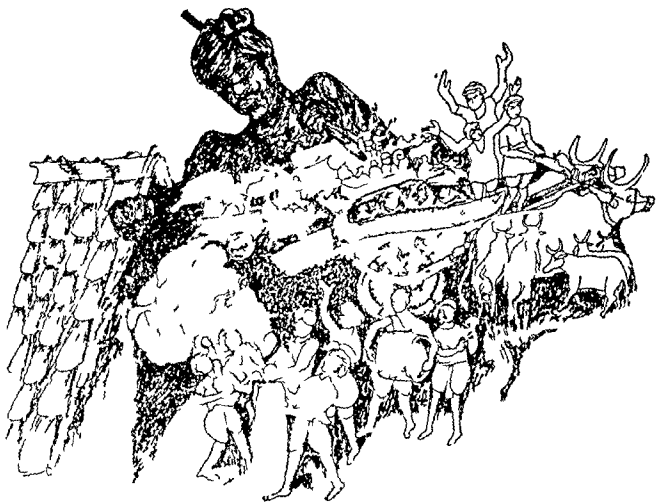
श्राखिर उम भारत माता के लाडले सपूत का मकान, जेत सभी कुछ खर्च कर चण्डावल से देश निकाला देकर निकाल दिया गया। वह टूट गया पर भुका नहीं।

3 बोया (वाली) के राजपुरोहितों की अमानुषिक यातनाएँ

यह हादसा अश्विक पुराना नहीं, भारत के आजाद हान के साथ ही जागीरी प्रथा की समाप्ति की आवाज अश्विक जार से बुलद हुई जिसने गाव गाव में जागीरी जुल्म बढने लग। बोया गाव के ठाकुर ने उसी गाव के छोलीदार माफीदार राजपुरोहिता स अश्विक कातकारों के समान ही बठ बैंगार व लाग बाग वमूल करन की ठानी। मना करन पर हुकम हुआ कि सभी राजपुरोहिता—मद, श्रौत बच्चे सभी को रावले में बाद कर दा। घुड़सवारी ने रात को घेरा डालकर सभी को खदेडा और गाव से तीन किलोमीटर दूर रावल में श्रौता व बच्चा का काठरी में बाद कर दिया तथा पुरप वग को पडोस के जगल (जोड) में भजडे के वृक्षों में लटका कर रस्सी में बांध लिया। गाव में केवल के प्रामीण ही इस अत्याचार के शिकार नहीं हुए जिनक पास जमीन नहीं थी।

4 ठाकुर के हाथ से पिस्तौल गिरी गाव वालों ने बन्दूक छीनी।

श्री रामशंकर प्रसाद शर्मा देवली पावूजी में 'मास्टर साहब' के नाम से जाने जाते थे। देवली में विद्यालय के लिये काई उपयुक्त



जागीरी कुर्मों से पीड़ित ग्राम जनों द्वारा गाँव छोड़ कर उदात्ता करने तथा गाँव के दरवाजे बंद तथा रोपण करने का एक दृश्य ।

ग्राम नहीं था जिसमें शर्माजी का अपना पाठशाला एक बबूतर पर खूब मनाया पड़ती थी। गाँव के बीधाबाध ठाकुर की एक पुरानी कोठड़ी था—पुराना लम्बा चौड़ा खाली मकान। ठाकुर और गाँव वाला व बीध मधम ता चम हा रक्षा था उस तौरान गाँव वाला ने उस कोठड़ी का ताला ताककर ठाकुर का पुराना पड़ा सामान बाहर खन म डाल दिया तथा प्रात ही डाल बाजा क गाँव उमम स्कूल का उद्घाटन करके बच्चा का पढ़ाना शुरू कर दिया तथा बाहर बायल मवन का बोरा लगाकर निरगा भण्डा पन्ना लिया। ठाकुर बाहर गवन म रहत थे सुनत ही घाय बबूना हा मम। बूबर त थोडे पर सवार हाकर चद बारिना क साथ कोठड़ी न प्रवश कर बहा बैठ शर्माजी व बच्चा का धमकाना शुरू किया। द्रतन म ही बिजली की तरह गाँव म खबर फल गई। सबडा सामगामी दकटु हो गय और पन् लिया बूबर साहब को। बूबर साहब न पिस्तौल

निकाली तो शर्माजी मोना तान कर सामा भा गय—चन्नाया तुम्हारी पिस्तौल! उस माहौल मे पिस्तौल हाथ से गिर गई और बूबर साहब डरकर सर पर पन् रखकर माग। आज उसी स्थान पर शानदार स्कूल मवन बना हुआ है।

देवली पावूजी से गोबर का लम्बा लघव चला

इन पत्तियां न लखक न धपना कावेज की पढ़ाई स्थगित कर समुच गाँव क भवशा को साल भर तक चरान का बाय किया। एक दिन जब मैं व धय साथी बापबर्ता—हिहालचन्नी परमार रामधरजी बनारी चौपरी मोहनराजजी चम्पातालजी श्रीमाल आदि 100 के लगभग कायकता हाथ म लाटिया लिये गीत गात हुए मरेथो चरा रहे थे सहसा बूबर साहब सत्तो से लख व थोडे पर सवार हा धपन बारिना क साथ धा धमके। ज्या ही हुम सम्मल



ग्राम चण्डायल के नौजवान छलारामजी पर ग्राम जनता के सामने 101 जूता की मार और हर मार पर सेनानी द्वारा 'भारत माता की जय' का उदघोष।

पर खड़े हुए और उन्होंने बंदूक सम्भाली कि माघर में चर रही गाँवें भड़क उठीं। इसी भगदड़ में धोड़े चमक गये और हमारे सामन तनी हुई बन्दूक कुवर साहब के हाथ में गिर गई।

यह सब इतना जल्दी घटित हुआ कि सार ही लोग हमारा लक्ष के निकट पहुंच गये। कुवर साहब के लिये भागना भी मुश्किल हो गया।

5 चालीस मेघवशी परिवारों को घरों से निकाला
पटना 1945-46 की है। मरिया में दक्की ग्राम (गांव कोटरी) के सादाजी मुघार ने अपने गांव व ठाकुर के जुटने की गालान मुनात हुए बताया कि किम प्रशार 40 मेघवशी परिवारों को उनके घरों से बेदमल कर उनके घरों में घाम भरवा दी है और मेघवशी को गांव छोड़कर भागना पड़ा है। हमारे गांव कोटरी में

घाम की धोर में मना करने का निश्चय किया और वहाँ कि निश्चित तारीख को उन सभी मेघवशी का जन्म बुलाया जाय और गांव कोटरी में, उरत और महमते हुए ही सही, पर प्राथी रात तक सभी लोग इकट्ठे हो जायें।

6 हिन्दूजी भील को जिन्दा जला डाला

चागाद ठाकुर व ट्रेक्टर पर वही व हिन्दूजी भील में बगार का काम किया जाता था। जब उसने बिना दत्तन काम करने से मना किया तो ठाकुर और उनके कारिग्रे घाम बबूला हो गये। चाणो डिबाना मारवाड के डिबाना में धरणी था। उह मला यह फन वनास्त हाता? एव मुवह हिन्दूजी पर पड़ाल धिक्कर ठाकुर के कारिग्रे में घाम लगा दी। हिन्दूजी तलाव ही जनकर राण का दर हो गया।



चाणोद में हिंदूजी भील को सामंती तत्त्वों ने टूटकर का तेल डालकर जिंदा जला दिया ।

एक राक्षसी कृत्य के विरोध में कांग्रेस की ओर से गाँव में बुद्धूत निवाला गया जिस पर जमींदारी गुब्बाने ने भारी पथराव कर उस तिनकर बितर करवा चाहा । धात्रमण म कई डायकतां भन्गीर रूप से भायल हुए, जिनमें रामप्रतापजी शर्मा (एटावाक) रामप्रसादजी काशी (पाली) व पुषराज जो परिहार (चाणोद) मुख्य थे ।

7 साण्डेराव ठाकुर ने जवाई बाँध की नहर रोकी

बात कुछ पुरानी है । तत्परातीन ठाठुरा की हडयमी, उनकी पुनन मिजाजी और मनक व या लो गाव-गाव म हजारो विरुध प्रचलित है पर अथन गाव म भान वाली कायतकारा व स्वय व चिए पुषहाली साने वाली नहर को धौत समकी म रोवन वा उवाहरल्य अयत्र भायद ही मिल ।

जवाई नहर व खुदन का बाय मिन्द व साण्डेराव ने समीप

पहुचा । साण्डेराव के कुवर अपने दल-दल सहित बुद्धी नहर के बीच में बढ गये और एसानिया—कीन मेरी भूमि म नहर खाद सवता है ? वे मरले मारने पर धामादा हो गय । धाविर जोषपुर स बुलिव पडुकी और उन्हें गिरफतार कर बानी के बिल में मजर बढ रखा गया ।

मैने (मोहनराज) साण्डेराव की उसी घटना का उल्लेख सन् 1952 म श्री गांडुलमाई मट्ट की अध्यक्षता म आयोजित एक सभा म किया ता उता दुराणही दल न नाठिया स श्री गोडुल माई मट्ट व मरे ऊपर हमला कोल दिया) सभा म अयाति पतान व मग करने के आरोप म साण्डेव कुवर पर एक मुवदमा चला और बानी हाकिम न उस ठाठुर कुवर को दण्डित किया ।

8 मूलारामजी चौधरी को गोलियों से भूना

यह दिन बहलाने वाली घटना सन् 1946 47 की है । जवाली



ग्राम इंदरवाडा (सोमेश्वर स्टेशन) में चौधरी मूलारामजी को उसके बेटे से बेदखल करने पहुँचे ठाकुर ने बंदूक की गोली मार कर हत्या कर दी। कांग्रेसी कार्यकर्ता मास्टर रामेश्वरजी (देवली), रामलालजी तथा रामप्रसादजी माली बुरी तरह घायल हुए।

निवासी मूलाराम चौधरी ग्राम इंदरवाडा (सोमेश्वर स्टेशन) में अपनी खातदारी के बरे पर काश्तकारी करता था। तभी गुडा जेतसिंह के जागीरदाराने उस बदखल करने की धमकिया दी। मूलाराम ने देवली-पावजी का प्रस बमटी के कायकर्ताओं को अपनी दुख भरी वास्तान सुनाई। देवली ने महालक्ष्मी जी परमार रामेश्वर जी शर्मा सोमेश्वर से रामलालजी धाबो इंदरवाडा से श्रीराम गोपालजी माली प्रादि मूलाराम का सहयोग देने का आश्वासन देने उसके बेटे पर गये और रात को वही ठहरे। उसी रात जागीरदाराने बंदूकों से हमला कर मूलाराम को वहीं ठर कर दिया। रामेश्वर जी राम लाल जी तथा रामभापालजी उस घटना में गम्भीर रूप से घायल हो गये जिन्हें जोधपुर के विण्डम अस्पताल (अब महात्मा गांधी अस्पताल) में भर्ती कराया गया। इस हत्याकाण्ड की तीक्ष्ण प्रतिभिया हुईं।

देवली कांग्रेस के अध्यक्ष मोहनराज जनन काश्तकारा का सम्मेलन आयोजित कर उस समय मारवाड में नया भूमि बंदोबस्त के फलस्वरूप बड़े पमाने पर हो रही बदखलिया का रोकने के लिये एक सशक्त आन्दोलन खड़ा किया। मारवाड लोक परिषद् के दबाव व प्रभाव के कारण जोधपुर स्टेट से एक सरक्यूलर निगलकर परगना हाकिमा का बेदखलिया रोकने के आदेश दिय गये। प्राणिकर कुछ समय पश्चात् ही सरकार ने मारवाड टिनेटस प्राडवशन आर्डिनेंस जारी कर बेदखलिया करन पर पाबंदी लगा दी।

इस प्रकार स्वर्गीय मूलारामजी चौधरी की महादत में लागे विसाना के हिता की रक्षा की।



चाणोद मे हिन्दूनी भील को सामंती तत्वों ने दुबटार का तेल डालकर जिदा जला दिया ।

इस राक्षसी हृदय के विरोध में कांग्रेस की जार से गाँव में जुलूस निकाला गया जिस पर जागीरी गुण्डा ने भारी पथराव कर उस तितर बितर करना चाहा । भाषमण सं कई कार्यकर्ता गम्भीर रूप से घायल हुए, जिनमें रामप्रतापजी शर्मा (गुलोज), रामप्रसादजी गांधी (पाली) व पुष्पराज जी परिहार (चाणोद) मुख्य थे ।

7 साण्डेराव ठाकुर ने जवाई बाँध की नहर रोकी

बात कुछ पुरानी है । तत्कालीन ठाकुरा की हठधर्मी, उनकी चुनव मिजाजी और सनव के या तो गाँव गाँव में हथौरा विस्त प्रचलित हैं पर अपने गाँव में धान वाली बाँसतवारा व स्वयं के लिए पुराहाली लाने वाली नहर को घोंस घमनी से रोवन का जवाहरराज अजय गांधी ही मिले ।

जवाई नहर के मुदन का बाय मिन्ट व साण्डराव के समीप

पहुँचा । साण्डेराव के कुँवर अपने दल-दल सहित खुदती नहर के बीच में बैठ गये और एतान किया—कौन भरी भूमि में नहर खोद सकता है ? वे मरने मारने पर धामादा हो गये । धाँवर जोधपुर से पुलिस पहुँचा और जहाँ विरपतार कर बानी के किल में नजर बंद रखा गया ।

मैंने (मोहनराज) साण्डेराव की उसी घटना का उल्लेख सन् 1952 में श्री गोबुधनाई मट्ट की अध्यक्षता में धायाजित एक सभा में किया था उसी दुराग्रही दल ने लाठियों से श्री मानुल भाई मट्ट व मेरे ऊपर हमला बोल दिया । सभा में अग्रान्ति फलाने व मय करने के आरोप में माण्डव कुँवर पर एब मुनदमा चत्ता और वाली हाकिम ने उस ठाकुर कुँवर को दण्डित किया ।

8 मूलारामजी चौधरी की गोलियों से मूना

यह दिल दहलान वाली घटना सन् 1946-47 की है । जबाली



ग्राम इंदरवाडा (सोमेश्वर स्टेशन) में चौधरी मूलारामजी को उसके बेरे से बेदखल करने पहले ठाकुर ने बहूक की गोली मार कर हत्या कर दी। कांग्रेसी बायकर्ता मास्टर रामेश्वरजी (देवली) रामलालजी तथा रामप्रसादजी माली बुरी तरह घायल हुए।

निवासी मूलाराम चौधरी ग्राम इंदरवाडा (सोमेश्वर स्टेशन) में अपनी खातदारी के बारे में काश्तकारी करता था। तभी गुला जैनसिंह के जागीरदारों ने उस बदखल करने की धमकियाँ दीं। मूलाराम ने देवली-बाबूजी काँग्रेस कमेटी के बायकर्ताओं का अपनी दुख भरी यास्तान सुनाई। देवली सह निहालचंद जी परमार, रामेश्वर जी शर्मा, सोमेश्वर तथा रामलालजी गांधी इंदरवाडा से श्रीराम गोपालजी माली आदि मूलाराम का सहयोग देने का आश्वासन देने उसके बेरे पर गये और रात को वही ठहरे। उसी रात जागीरदारों ने बहूका से हमला कर मूलाराम को वहीं डेर कर दिया। रामेश्वर जी राम लाल जी तथा रामगोपालजी उस घटना में गम्भीर रूप से घायल हो गये जिन्हें जोधपुर के विण्डम अस्पताल (अब महात्मा गांधी अस्पताल) में भर्ती कराया गया। इस हत्याकाण्ड की तीव्र प्रतिभियाँ हुईं।

देवली कांग्रेस व अध्यक्ष मोहनराज जैन ने काश्तकारों का सम्मेलन आयोजित कर उस समय मारवाड़ में नया भूमि बंदावस्त के फलस्वरूप बड़े पैमाने पर हो रही बेदखलियों को रोकने के लिये एक सशक्त आन्दोलन खड़ा किया। मारवाड़ लोक परिषद् के दबाव व प्रभाव के कारण जोधपुर स्टेट से एक सरवयुलर निकालकर परगना हाकिमा को बेखलिया रोकने के आदेश दिये गये। आखिर कुछ समय पश्चात् ही सरकार ने मारवाड़ टिनेटस प्राबन्धन आर्डिनंस जारी कर बेदखलियों को रोकने पर पाबंदी लगा दी।

इन प्रकार स्वर्गीय मूलारामजी चौधरी को शहादत न लामो किसानों के हितों की रक्षा की।



चाणोद में हिन्दूजी भील को सामंती तत्त्वों ने द्रुकटर का तेल डालकर जिंदा जला दिया ।

इस राक्षसी कृत्य के विरोध में कांग्रेस की आर स गाँव में जुलूस निकाला गया, जिन पर जागीरी गुण्डा ने भारी पथराव कर उम तितर बितर करना चाहा । आरमण स कई वीरकता गम्भीर रूप में घायल हुए जिनमें रामप्रतापजी शर्मा (मुदोज) रामप्रसादजी गाधी (भाली) व पुवलराज जी परिहार (बाणाद) मुख्य थे ।

7 साण्डेराव ठाकुर ने जवाई बाँध की नहर रोकी

वात कुछ पुरानी है । तत्कालीन ठाकुरा की हठधर्मी उनकी तुनक मिजाजी घोर सनक व या ता गाव गाव में हजारों किसान प्रचलित हैं पर अपने गाव में धान वाली काश्तकारा व स्वयं ने लिए खुशहाली लाने वाली नहर को घाँस पत्तों से रोबने का उदाहरण अत्यन्त शायद ही मिले ।

जवाई नहर व मुदने का बाय मिन्हा व साण्डेराव के समीप

पहुँचा । साण्डेराव व कुबर अपने दल-बल सहित खुदती नहर के बीच में बठ गये और एलान किया—कौन मेरी भूमि में नहर खोद सकता है ? वे पहले मारन पर धामादा हाँ गया । आखिर जोधपुर स पुलिस पहुँची और उह गिरफ्तार कर वाली व किले में नजर बंद रखा गया ।

मैंने (मोहनराज) साण्डेराव का उसी घटना का उल्लेख सन् 1952 में श्री गोबुलभाई मट्ट की अध्यक्षता में आयोजित एक सभा में किया तो उसी दुराग्रही दल ने लाटियों से श्री गोबुल भाई मट्ट व मेरे ऊपर हमला बोल दिया । ममा में अशान्ति फलाने व भा करने व आरोप में साण्डेराव कुबर पर एक मुकदमा चला और बाकी हानि में उस ठाकुर कुबर को दण्डित किया ।

8 मूलारामजी चौधरी को गोलियों से भूना

यह दिल दहलाने वाली घटना सन् 1946-47 की है । जवाली



ग्राम इंदरवाडा (सोमेश्वर स्टेशन) में चौधरी मूलारामजी को उसके बेरे से वेदखल करने पहुंचे ठाकुर ने बंदूक की गोली मार कर हत्या कर दी। कायेती कायकर्ता मास्टर रामेश्वरजी (देवली) रामलालजी तथा रामप्रसावजी माली बुरी तरह घायल हुए।

निवासी मूलाराम चौधरी ग्राम इंदरवाडा (सोमेश्वर स्टेशन) में अपनी खातिदारी के बेरे पर बाश्तकारी करता था, तभी युद्धा जेतसिंह के जागीरदारा न उस वेदखल करने की धमकियाँ दीं। मूलाराम न देवली-पावूजी कांग्रेस कमेटी के कायकर्ताओं को अपनी दुल मरी दास्तान सुनाई। देवली से निहालचंद जी परमार, रामेश्वर जी शर्मा, सोमेश्वर स रामलालजी पांचो, इंदरवाडा से श्रीराम मापालजी माथी झादि मूलाराम का सहयोग देने का प्राश्वासन देने उसने बेरे पर गये शौर रात को वही ठहर। उसी रात जागीरदारा न बहूका सं हमला कर मूलाराम का वही डेर कर दिया। रामेश्वर जी राम लास जी तथा रामगोपालजी उस घटना में गम्भीर रूप से घायल हो गये जिह जोधपुर के विण्डम अस्पताल (मग महात्मा गांधी अस्पताल) में मर्ती कराया गया। इस हत्यानाण्ड की तीव्र प्रतिशिया हुई।

देवली कांग्रेस के अध्यक्ष माहनराज जन न काश्तकारा का सम्मेलन आयोजित कर उस समय मारवाड में नय भूमि बंदोबस्त के फलस्वरूप बडे पैमाने पर हो रही बदखलिया को रोकन के लिये एक सशक्त प्रा-दोलन खडा किया। मारवाड लोक परिषद् के दबाव व प्रभाव के कारण जोधपुर स्टेट स एक सखयूलर निवालकर परगना हाकिमा को वेदखलियाँ रोकन के आदेश दिय गये। आश्विन कुछ समय पश्चात् ही सरकार न 'मारवाड टीनेट्स प्रोडक्शन आर्डिनैस' जारी कर वेदखलियाँ करने पर पावनी लमा दी।

इस प्रकार स्वर्गीय मूलारामजी चौधरी की शाहादत न लावा किसाना के हिता की रक्षा की।



ब्राजवा के ठाकुर कुशालसिंह जी

सन 1857 में अंग्रेज बन्दाओं ने जोधपुर रिसाले की फौज से ब्राजवा ठाकुर कुशालसिंहजी के नेतृत्व में लड़े गये स्वातंत्र्य युद्ध में अंग्रेज बन्तान का सिर काटकर मुख्य द्वार पर लटका दिया गया ।





लोमहर्षक घटनाओं की खबरें जो उन दिनों अखबारों में छपी थीं

9 महाराजा के भाई के गांव लिलिया में कांग्रेस जुलूस पर तलवारा से हमला

लिलिया ग्राम में हाया में तिरगा लिये शांत नागरिकों के जुलूस पर जागीरदारों के मशरूफ गुप्ते ने तलवारा से हमला बोले गिया। जुलूस का नतुल कर रहे जतारण कांग्रेस के प्रधानमंत्री श्री माधालालजी सुधार का सिर बुरी तरह से फट गया है। अनक कायकता धायलावस्था में विडम्ब अस्पताल जोधपुर में धाध गये है, जहा उनकी हालत चिंताजनक है। दूसर कायकता थी मदनलालजी का कित्ता गुप्त स्थान पर ले जाकर उह बतल करने की आशका की जाती है। श्री माधालालजी का शरीर तलवारा की चाटा से वलुहान हा गया था व अभी तक अघत है।

(लोकमत - 5 नवम्बर 1948)

10 निम्बोल के लूणकरणजी पर प्रायुघातक हमला

हुदू समय पूव निम्बाल में जागीरी गुण्डा ने, जिनम ठाकुर के लडक भी शामिल थ, वहा क प्रमुख कांग्रेसी कायकर्ता श्री मूलकरणजी पर मरी सगा में हमला कर उनके नाक वान काट लिये थ। इस हमल में जतारण परगना के सभी जागीरदारों की साजिश थी। और, जहा-जहा भी कांग्रेस कमेटिया थी वहा इस प्रकार मशरूफ आक्रमण हुए थे। अभी दो रोज पहले ही जोधपुर सरकार ने निम्बाल ठाकुर क अघराधी लडके को गिरफ्तार करवाया था। अथ पता चला है कि सरकार ने इस ठिकाने का अघन प्रबन्ध में नेन का हुधम निकाल दिया है। और मटकमें कोट आघ वाड की मुपुड ठिकाना कर दिया जावेगा। (लोकमत-1 दिसम्बर 1948)

11 सोमावा (सुभेरपुर) के ठाकुर ने खड़ी फसल चरा दी

15 जून 1948 का समाचार है कि पामावा के ठाकुर न जारा सुधार को बदखल करन की नीयत स काफी फसल जवरन काठक अघन रावल में मगबाली और बाकी में खुल मवशी छोडकर मारी फसल बरबाद कर दी। जात हुमा है कि श्री जारा न 2000/- रुपये खच करके अघना कुमा तैयार करवाया है, पर जागीरदार उस हद प्रकार स तग कर अघने कच्चे में लेना चाहता है। सुभेरपुर कांग्रेस कमेटी के मनी थी वां एल० राजपुर किसान का मदद कर रहे है।

12 सोजत में गोचररक्षा के लिए श्री मोतीसिंहजी द्वारा बूल हडताल

गाव रडावास के ठाकुर ने गोचर जनमी पर कब्जा करके

गाव में अगतक पला रखा है और मवशी भूखे भर रहे है। माह मई 1949 में गाव वालो ने कई रिपोर्टों की पर सरकार द्वारा कई मुनवाई नही हुई। इस पर प्रेमसिंह के गुटे थ ही प्रमुख राजपूत कायकर्ता श्री मोतीसिंहजी बूल हडताल पर डटे हुए है। उनकी भूख हडताल का चालीसवा दिन है और व बहुत ही कमजोर हा गये है। (जनमत दि० 21 जून 19५0 मगलवार)

13 खारडा में किसान कायकर्ताओं पर हमला

1 माच, 1950 को ग्राम देवली-वावजी नगर कांग्रेस कमेटी के कायकर्ता खारडा निवासी श्री सादुरामजी एव हीरालालजी धाकी पर जागीरी गुण्डो ने रात का हमला करके उनक साथ मारपीट की है, साथ ही जागीरदार के प्रभाव से नाडोल पुलिस चौकी के मशी हसरामजी ने इन दोनों भाइया को पुलिस चौकी में बन्द कर दिया और कहा कि तुम ठाकुर साहब का विराध करना छाड दो वरना तुम्हारे खिलाफ मुकद्मा चलाया जावगा। देवली कांग्रेस कमेटी न कायकर्ता श्री निहालचदजी न इस मामले की शिवायत उच्च अघिकायिका से की है।

14 सोननाचक की घोषणा

दिनांक 10 जून, 1947 को पाली के मिल मजदूरों की एक सभा में साननाचक श्री जयदारायण व्यास न घोषणा करत हुए वहा "चाह मिल मालिक मजदूरों की मागा के बारे में मुझे कच स्वीकार करें या नहीं करें मैं मारवाड के लोक परिपद के अघ्यक्ष क नाते स्वत ही इस मामले में पब हू और पचायत करन का मुक अघिकार है। यह नतिक रूप से मेरा कतब्य हा जाता है कि मैं मजदूरों का घाट घण्टे के दिन की माग के बारे में उपयुक्त निणय दू और उस मिल अघिकायिका स भी मजूर करवाऊ। यद्यपि मैं मारवाड में श्रीयोगीकरण की उभ्रतशील दखना चाहता हू पर मैं किसी भी शत पर मजदूरों क हित को कुचलत हुए देखन पर राजी नहीं हा बनता।

15 बगडी ठिकाने में मीठालालजी काठक की निमम पिटाई

28 सितम्बर 1948 का सोजत परगन क प्रमुय कांग्रेसी नेता श्री गणेशमल काठक के सुपुन श्री मीठालाल काठक एव उनक मतीजे श्री अशुतलाल काठक को बगडी ठिकान क काट म बुलाकर निमम पिटाई की गयी। श्री मीठालाल काठक स्वतन्त्रता-प्राप्तलन में हुई जेल की सजा के बाद लगातार बीमार ही रह है—वकिन कांग्रेस का प्रचार गावों में करत रहत है। इमी स नाराज हाकर ठिकान के बादिदा न यह हरकत की है। इन कायकताओं की हालत चिन्ताजनक बताई जाती है। इन घटना स जनता में मारी रोप व्याप्त हो गया है।



पानगर था बजराराजजी लाडा पर धामराजराज म लाटिया स हमना कर उनकी पुरी तरह पिटाई की क्याकि हमनी हाल हो सम्पन्न हुए निमान सम्मेलन क बसत उहाल थी नापुराम मिथी थी मोठापालजी बाबा क अपन नतामा बा अपना यहा ठहरान क अपराध किया था। बाणाद क बाजार म लाग यदि थी लाडाजी का नहा छुडात ता उनका जीवित बचना मुश्किल था। सततगठ क पुर्निस धानदार का दमकी शिवायत का गया पर टिकान की मिली मनन क कारण बाई बायवाही नहीं हू। था लाडा न प्रधानमन्त्री जामपुर राज क पाम शिकायत भाा है।

(साक्षर-9 दि० 1948)

22 निम्बाज ठापुर क नीबरा की नादिरशाही

जतारण परगना काप्रेस कमटा क मन्त्री थी माधालालजी मुथार पर लीलिया गाव म एक प्राणघातक हमल क बाप घब चम्प्य हाकर लोटन पर निम्बाज सियाठ चडावल बलूना नालिया ककिन लाम्बिया बाबू निम्बाल धादि गावा की जनता न उनक स्वागत म समाए की तथा जुनूस निकाल।

निम्बाज म थी धमरचञ्जी बाहरा क समापतित्व म स्वागत नमा प्रायाजित हू। उस मग बरन क लिए ठापुर क जादमी थी श्रीमसिंह नामक कामगार सरदारमल टिकाना फ्राडिटर थी वनीदास व मदनलाल भण्डारी कामदार लाडिजी बणासाल नाई तथा सब दूरवधर के भाइया ने लाडिया धीर हथियारा म लग हाकर हमला किया धीर हूतलहबाजी की। सकिन काप्रेस क बाप नतीप्रा क साहस श्पता एव सट्टिपुता क कारण य गुण्ड समा मग नहीं कर सक। (साक्षर-9 दि० 1948)

23 विपलिया बला मे किसान-सम्मेलन

10 सितम्बर 1948 का याम विपलिया (रायपुर) म सठ वानमवजो के सभापतित्व म किसाना का एक विशाल सभा का आयोजन किया गया जिसम जतारण परगना काप्रेस कमेटी क मन्त्री थी माधालालजी मुथार न अपन आज्ञस्वी भाषण म कहा कि जागीरी जुन्मा क कारण गावा म लाग परेशान हैं मयभीत हैं। उह समिति हाबर धापस सहभाग स जुल्मा स लडना चाहिए। नगर काप्रेस के मन्त्री थी रतनलालजी चौधरी न भी किसाना का मण्डित होने की सलाह दी धीर प्रौढ शिक्षा के द्वारा निरक्षरता मिटाए पर जार दिया। (साक्षर परिषद् बुलटिन)

24 बगडो मे लास के लिए कफन नहीं

27 फरवरी 1946 का साजत राड पर प्रायाजित एक मना म थी मधुदासजी माधुर, डारकादासजी पुराहित धनपत राजजी मधुदारी के भाषण होने के पश्चात् ज्योही थी जयनारायणजी

व्यास भापए दन रखे हूंग ता एव कापयती न रखे होकर बहा नि बगडो म एक मयवाल भाई की लास बिना कफन क पडो है। बगडोल क कारण एव पक्ति का बवल प्राधा मज कपडा दन का ही सरकारी हुकम है यह भी जिना धामनी के लिय ही किया जा सकता है, मुर्दा लागो क लिए नहीं।

ममा म सरकार क हाकिमा क दम रख्य की तीव्र निन्दा की गई।

25 मुकद्दमे धीर मारपीट

मेजहला ठापुर क गाव पानडी (गोजत) म काप्रेस क सदस्या के विरुद्ध मुकद्दम धीर मारपीट की गई है। जसत इस गाव क बापस की भागा लोको गई है अधिवाज निवासी सदस्य यन गये है। मामली तत्वा की बजा हकता क विरुद्ध सत्य द्विडा हूया है। धमनी धमनी स्थानीय काप्रेस के सदस्य थी पदाराम ब्राह्मण धीर सानी गोपाल के विरुद्ध भूठ बलात्कार के मुकद्दम चलाय गय है। लागा को उनक पर जलान धीर मारपीट की धमकिया बला म गुलाकर दी जाती हैं। साधतारामजी किसान का कोट म कुत्कार उनस मारपीट कर पर्जो दस्तावज पर ध्रुष्टा करवाया है। जागीरदार क धातक स ममस्त जनता परेशान धीर धातकित है।

(साक्षर-29 सितम्बर 1948)

26 कपड म शक्कर के लिए धमनी दो

28 10 46 का विपलिया को एक विशाल जनसभा म साक परिषद् क नेता सवथी जयनारायणजी न्याम माधुर सा०, डारकादासजी मोठापालजी बाबा का ध्यान हाकिम साहब क उस हुकम की धार दिलाया गया जिसम लिग्या था कि हू ग्रेश का प्राधा मज कपडे व फ्राट धान की शक्कर के लिए लिखित धमनी दनी पडेगी। गाव म धमनी लिखाई के एव धाने स चार धाने तक दन पडत है। इस हुकम का जन विरोधी बहुर कडो निन्दा की गई। सभा म ही विपलिया के सठ थी प्रेमराजजी ने कहा कि गाव वालो का मुक्किया के लिए व धमनिया के डापट छपवाकर लोगो को बितरण कर देगे।

27 महाराजा धमनीसिंहजी क गाव नारलाई मे नादिरशाही

नारलाई (दिपुरी परगना) म कामदार की बजा हकता स गाव वाल परेशान हा गय है। काप्रेस के बायकर्ता थी रेवाशकर दवे के विरुद्ध कामदार न कई भूठे मुकद्दमे बनाकर उह फमाने की कायवाही की है, क्याकि थी रेवाशकरजी न टिकाने की जयदतिया क विरुद्ध शिकायतें की है धीर किसाना को सर कानूना लागूबाग देन स रोका है। जागीरदार ने गाव भर की गोचरभूमि रोक दी है धीर मवशी बा फाटक म डालकर मयमाना जुर्माना बसूल करत है।



निसानो से मलवा बसूल कर कामदार और हवालदार खुद हूख्य रहे हैं। इतना ही नहीं, स्थानीय कांग्रेस कार्यालय से बोड की चारी करवा दी है और गांधी स्मारक कोष के पास्टर फाइल दिये हैं। कामदार और हवालदार की हरकत से आम जनता नस्त है।

(लोकमत—25 नवम्बर 1948)

28 रघु जाट और उसकी गाय तीन दिन से भूखे-प्यासे रावले में बंद

जोधपुर महाराजा के माइ के जागीर गांव आसरेलाई (जता रण) में प्राण पर मयकर अत्याचार¹ किया जा रहे हैं। रघु पुत्र हीरा जाट अपनी गाय को फाटक से छुड़ाने गया तो उससे कामदार ने पचास रुपये मागे। देने से इंकार करने पर उसे रावले की एक औरडी में बंद कर खूब पिटाई की गई। रघु का मतीजा माना गया और रघु को छुड़ाने गया तो उससे तीन सौ रुपये माग। जैतारण हाथिग ने दोगा को छोड़न का हुक्म दिया पर कामदार ने कोई परवाह नहीं की। आज तीन दिन से गाय और रघु भूखे-प्यासे रावले में बंद हैं।

(लोकमत—28 नवम्बर, 1948)

29 स्पेशल गजट (मारवाड राज पत्र) में छुपी आत्मा के विरुद्ध लोभो से बसुली

20 अक्टूबर, 1948 क दिन स्पेशल गजट में जोधपुर दरबार न आना जारी कर पूरे मारवाड में सारी लाग-बाम माफ कर दी, फिर भी जागीरदार जबरन लागें बसूल करने पर आभासा है। खैरवा ठिवाणे के कामदार साडा मुकनमलजी का लाटा के बत्त गजट दिवाया गया तो उहोने कहा—इस पर दरबार के दस्तखत नहीं हैं, जोधपुर दरबार के दस्तखता से यह हुकम लागी कि खरवा ठिवाणे की सारी लागें माफ कर दी है तमी मानगे।

(लाकमत—6 नवम्बर, 1948)

30 श्री माधोलालजी की हालत चिंताजनक

श्री माधोलालजी सुधार, मंत्री-परगना कांग्रेस समिती जतारण जिन पर लीतिया में जागीरी मुण्डा द्वारा प्राणघातक हमला हुआ है उनकी हालत बड़ी गम्भीर है। उनके तलवार का बहुत गहरा घाव लगा है। उनकी स्थिति खराब होती जा रही है। कल रात जोधपुर राज्य के लाकप्रिय मंत्री श्री डाक्टरवासुजी पुरोहित न अस्पताल जाकर उनकी देखभाल की और डाक्टर ने इलाज के बारे में जानकारी ली। सत साधारणजी समापति—जोधपुर परगना, कांग्रेस समिती उनकी रात दिन देखभाल कर रहे हैं।

(लाकमत—6 नवम्बर 1948)

31 जुलूस पर पत्थरबाजी और जनता में नई चेतना

चाणोद ठिकाने का प्रातक इतना था कि मन्नाभा में आना ता दूर, कोई कार्यक्रम वायवर्त भी यदि गांव में आ जाता ता स्थितदार पानी मिलाने से भी उरते थे। जब मारवाड लोक परिषद् की आर से एक सम्मेलन बुलाया गया तो पाली के कायक्ता मधवी रामप्रसाद जी गांधी, रामप्रताप जी शर्मा—गुदाज तथा म्वली से गय हम लोग सबकी साहनराज जी, निहालचंद जी रामेश्वर जी बजाजी चौधरी रूपाजी चौधरी के मिवा वहा ममा स्थल पर काम आने को तैयार नहीं हुआ। आखिर गांव में जुलूस निकालन की योजना बनाई गयी और स्थानीय कायकर्ता श्री पुवराज जी परिहार अचलदास जी, नैसा जी चौधरी, मेराजी डाली, साहनराज जा आदि के सहयाय से काफी लाग जमा हा गये। जुलूस नारे तगाता हुआ रावल के चौक में पहुचा तो चारतरफ से पत्थरा की बर्षा हाने लगी। जुलूस के लाग नारे तगाते हुए बाजार की दुकाना क बरा मदे में राटे हो गये, पर कुछ कायक्ता बराबर चौक में नार लगाते रहे। इसी पत्थरबाजी में श्री रामप्रताप जी शर्मा (गुदाज) के सिर पर गम्भीर चोटें आइ और वे खून में लक्षय हो गय। इस एक ऐतिहासिक घटना से पूरे गांव में ही नहीं पूरे क्षेत्र की जनता में नया जोश और नई आशा का संचार हा गया आर चाणोद में कांग्रेस का बडा मजबूत संगठन श्री पुवराज जी परिहार के नेतृत्व में बन गया जिसने बाद के कई आदालना में सफलता प्राप्त की।

32 आखिर कैसाजी कुम्हार टूट गये

वालराइ गांव के बसा जी मार कुम्हार का टूट हुए हाथ क पट्टी बाधकर घूमत हुए गांव वालों ने ही नहीं बाली व दनूरा हुहमत की कचहरिया में हजारों लाग न दवा है। श्री बसाजी का कांग्रेस की समाभा में आने-जाने के कारण न कवल बरा व खना में कम्पल किया गया था, बरन् बुरी तरह पिटाई कर उनक हाथ ना तोड़ लिये गये थे। फिर अचनक भी परिहार, मरपच न उनका महयोग लिया लेकिन तब तक तो सघप करत-करत वेना नाद टूट चुके थे।

33 संगठन ही शक्ति बना

एक बार हुआना घाम के आह्वण जागीरगारा न ठाकुर माणराव को लाटा लटाना व तप-भाग तना बंद कर दिया। फिर क्या था सघप छिन्ना ही था। गांव में ममा-सम्मान प्रायोजित हुए। बंद मुकद्दम मैकवा किसानों पर ठिगान की तरफ में चलाये गये पर श्री दवीविजन जी व्याम, मेवोलाल जी आह्वण और गता जी मणा न बडी हिम्मत में गांव का संगठित किया आर मवको शाणन में मुक्त किया।



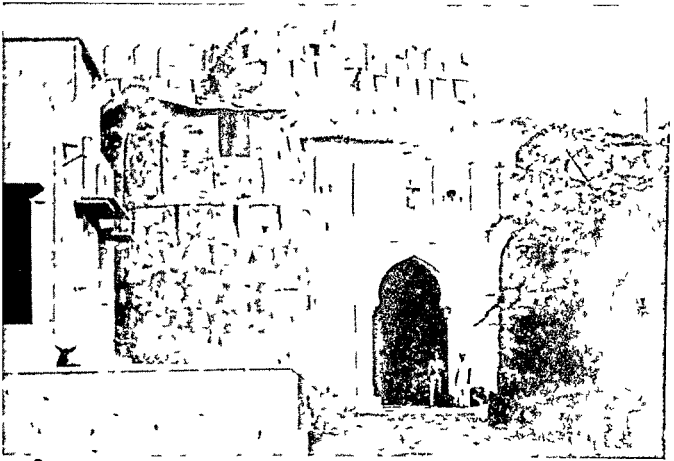
34 अनेका जोश—प्रभुव साहस

मुम्बयुर के थो थो एल राजगुरु, गणेश जी चौधरी (माती) और मनसुखभाई पटेल को एक हाथ म लाठी और दूसरे हाथ म लालटन लकर छाटे छोटे गावा म मीटिंग करके लोमा को जाग्रत करत अनेवा न दया हे। गावा म खान पीन ना तो क्या प्रन्न, बठन व टहरन का स्थान दन स भी लाग घबरात थे क्याकि जमीरदारा के गुण्डे लोमा के साथ मारपीट कर उनको घपमानित करत थ। एक बार शम वारटा म श्री माहनराज जी एडवोकेट (बाली) एक मीटिंग लन गय। व ताना सायी भी साथ थ। ठाकुर क डर म जैन धर्मशास्त्रा की चबूतरी पर भी उनका बठन नही

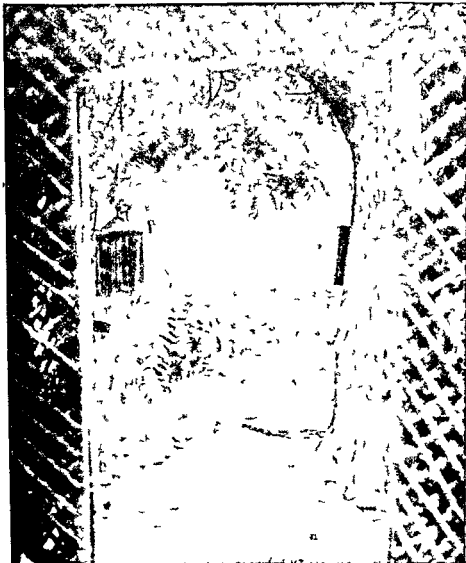
दिया गया। मीटिंग म सुनन तो कौन आता ? पर, श्री राजगुरु और भाई गणेश जी ने हिम्मत की और हमने प्रत्येक मीटिंगे म जाकर भाषण दिये। लाग घरा म बठे सुनते रहे। जब हम गाव से रवाना हुए तो हमारे ऊपर परवर और धूल मिट्टी फेंक कर हम सचमुच धावल ही कर दिया। रात का दा बजे मुम्बयपुर पहुच कर मरहमपट्टी बरवाई और मध्दरामजी का दा के यहा खाता लाया। पर उत्साह एसा था कि दूसरे ही दिन फिर उमी जोश के साथ हाथा म लालटन लकर निकल पडे गावा म जन जागरण के लिए।



सोजत के विख्यात स्वतंत्रता सेनानी श्री हृदिभाई 'किकर' ने भ्राजारी के परचात बढते हुए श्रष्टाचार, पक्षपात शोषण व दयनीय गरौबी से प्रतल होकर भ्रातमदाह कर लिया।



वाली का ऐतिहासिक बिला ↑
जहाँ स्वतंत्रता सेनानियों को
बंद में रखा जाता था। प्रमुख
रूप से रणछोडदासजी गढ़ानी
छगनराजजी चोपासना वाला
धीर छोटमलजी सुराणा को
यहाँ कारावास में रखा गया।



गांधी बाग (बासा) की यह
झोंपड़ी जहाँ मास्वाद सोन
परियद की गुप्त मन्त्रालय
होती था।

५५०७

स्वाधीनता-संघर्ष

के

बोलते चित्र



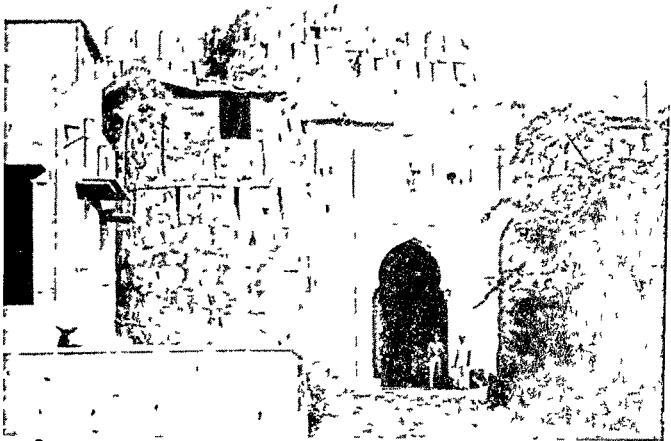
34 अनोखा जोश-धनुष साहस

मुमैरपुर व श्री बी एल राजगुरु, गणेश जी चौधरी (माली) और मनसुखभाई पटेल का एक हाथ म लाठी और दूसरे हाथ म लालटा लकर छाटे छाटे गावा म मीटिंग करके लोग का जाग्रत करत अनका न दया है। गावा म लाल पीन का तो क्या प्रश्न, बठन व टहरन को स्थान देने स भी लाग धवरात ये क्याकि जागीरदारों के गुण्ड लोग का साथ मारपीट कर उनका धममानित करत थ। एक बार ग्राम कोरटा म श्री माहुराज जी एडवोकेट (बाली) एक मीटिंग लन थ। व तीना साथी भी साथ थ। ठापुर के डर म जन धमशाला की चबूतरी पर भी उनका बठन नहा

दिया गया। मीटिंग म सुनने तो कीन छाता ? पर, श्री राजगुरु और भाई गणेश आ न हिम्मत की और हमन प्रत्येक मौकिल म जाकर भाषण दिये। लाग घरा म बडे सुनते रह। जब हम गाव स रवाना हुए तो हमार ऊपर पत्थर और घूल मिट्टी फेंक कर हम सचमुच घायल ही कर दिया। रात को दो बजे मुमैरपुर पहुच कर मरहमपट्टी करवाई और मछारामजी इन्दा के यहा खाना चाया। पर उल्हाह ऐसा था कि दूसरे ही दिन फिर उमी जोश के साथ हाथा म लालटेन लकर निकल पडे, गावा म जन जाग्रत के लिए।



सोजत के विश्वास स्वतंत्रता सेनानी श्री हरिभाई 'किबर' ने धारादी के परबत बढ़ते हुए अछटाचार, पक्षपात शोषण व वधनीय गरीबी से प्रेत होकर आत्मदाह कर लिया।



वाली का ऐतिहासिक किला ↑
जहाँ स्वतन्त्रता सेनानियों की
कद मे रखा जाता था । प्रमुख
रूप से रणछोडवासजी गढ़ानी
छयनराजजी चौपासनी वाला
धीर छोटमलजी सुराणा को
यहा मारावास म रखा गया ।

गाधी बाग (पाली) की वह
भीपरी जहाँ मारवाड लोक
परिपद की गुप्त मन्त्रणाएँ
होती थी ।

५५०४

स्वाधीनता-सघर्ष

के

बोलते चित्र

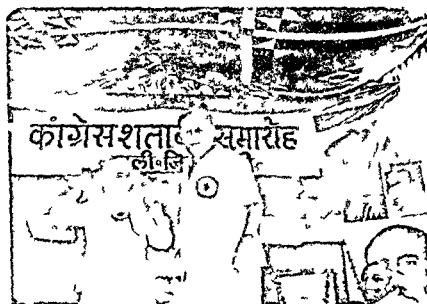


छोटमल सुराणा मैदान (बाली किले का मैदान) में आयोजित

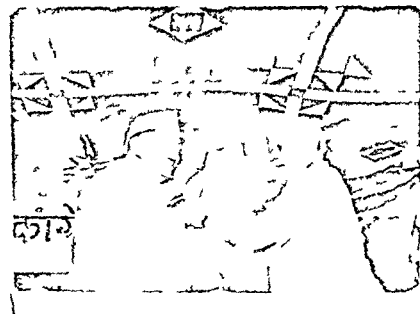
कांग्रेस शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में स्वतंत्रता सेनानियों का अभिनन्दन



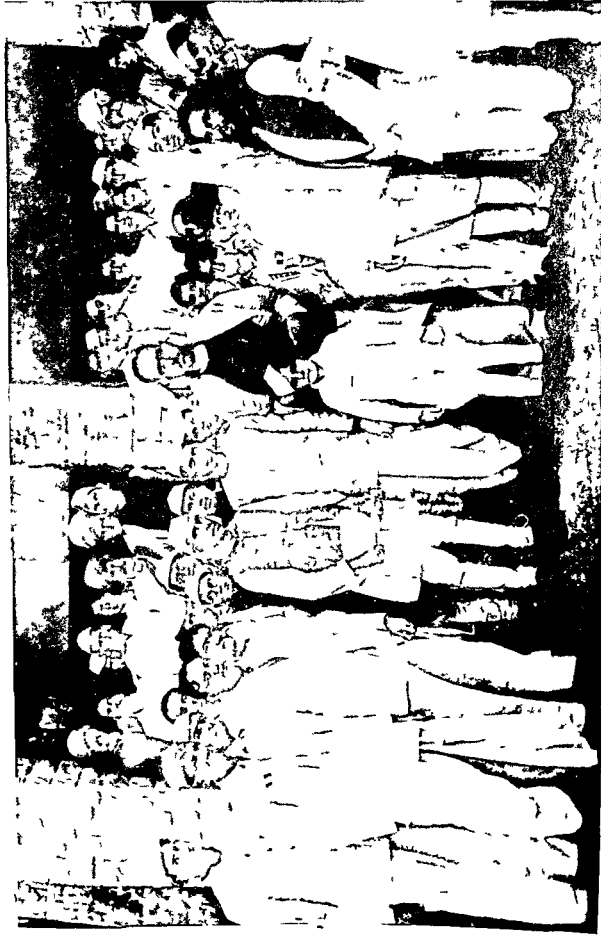
श्री रणछोडगंस जी गट्टानी बाला किले में नजरबन्दी काल के सम्मरण सुनाते हुए।



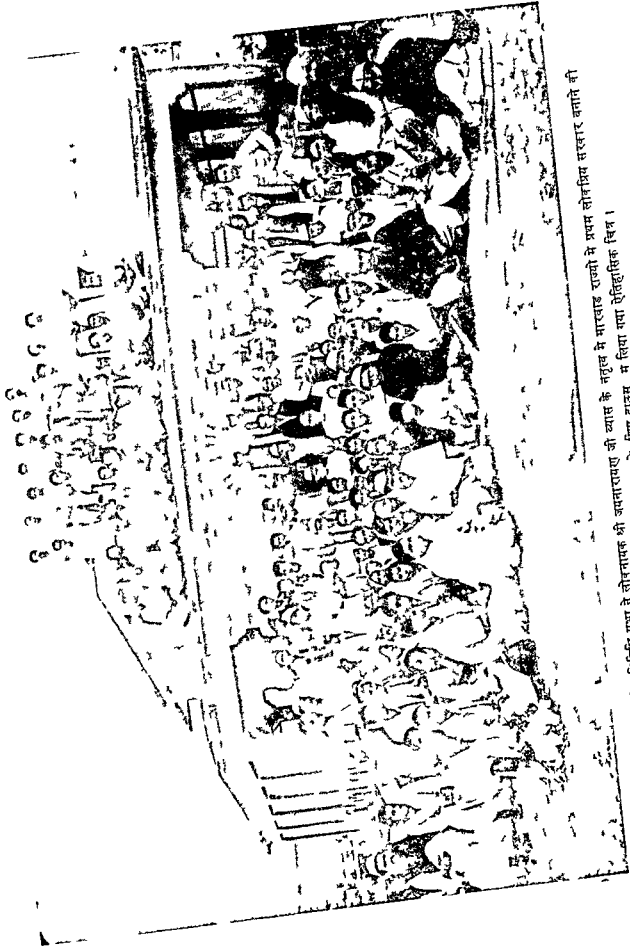
श्री मधुसूदान जी माधुर अपने शत्रुग साथी श्री गट्टानी जी का स्वागत करते हुए।



श्री पुत्रचन्द जी बापना (सादर) का स्वागत कर
हुए मारवाड राज परिवर्त के पूर्व सम्मरण भी प्रभु
दास का माधुर।



मारवाड लोक परिसर के माध्यम से १० जवाहरलाल नेहरू, सोपनायक श्री जयनारायण व्यास, जेरे वामीर श्री जेल मन्डुला और उनके पुत्र
[श्री जाल्म मन्डुला। साथ में हैं सर्वश्री भूलचन्द बाका, विजयमल मुराणा, मधुरावास माथुर, रणछोडदास गृहनी भादि।



भारत के लोक प्रिय सखार बनाने की
 भारत के नरुल के भारत राज्को के प्रथम लोक प्रिय सखार बनाने की
 भारत के नरुल के भारत राज्को के प्रथम लोक प्रिय सखार बनाने की
 भारत के नरुल के भारत राज्को के प्रथम लोक प्रिय सखार बनाने की

भारत के नरुल के भारत राज्को के प्रथम लोक प्रिय सखार बनाने की
 भारत के नरुल के भारत राज्को के प्रथम लोक प्रिय सखार बनाने की



श्रीः

सेवागि ८५७

- पाली जिले के स्वाधीनता सेनानी
- पाली जिले के राजनैतिक कार्यकर्ता
- पाली जिले के जन प्रतिनिधि

Himachal Conductor (P) Ltd

Manufacturers of

AAC & ACSR Conductors Stay Wires & Various Machines

Regd Office & Works P O SAPROON 173211

Dist SOLAN (H P)

Himachal Aluminium Co. (P) Ltd

Manufacturers of

Converts & Manufacturers of Aluminium Rods

Regd Office & Works

PLOT NO 6 INDUSTRIAL AREA

PARWANOO 173220 Dist SOLAN (H P)

Salecha Cables (P) Ltd

Manufacturers of

AAC & ACSR Conductors Binding & Stay Wires

Works INDUSTRIAL AREA

MEHATPUR 174315 Dist UNA (H P)

Jain Cables (P) Ltd

Manufacturers of AAC & ACSR Conductors

Regd Office & Works

P O JHUNTHA 306310

Via RAIPUR MARWAR Dist PALI (Rajasthan)

Himachal Tubes & Wires Ltd

Manufacturers of

Galvanised and High Tensil Galvanised Steel Wire

Works Via BILLANWALI LUBANA

P O BADDI (Nalagreh) Dist SOLAN (H P)



पाली जिले के स्वतन्त्रता सेनानियो का हादिक अभिनदन ।

सी. धर्मीचन्द जैन



4507

पाली जिले के स्वाधीनता सेनानी

[सक्षिप्त परिचय]



नाँव की इंट

श्री हरिभाई किकर



विपम धार्मिक सकट
स उसमें हुए परिवार मे
जमे, पल और तरह-तरह

का मधुमय जीवन बितात हुए ही मृत्यु को भ्रालिगन करने वाले स्वर्गीय हरिभाई जी किकर का जन्म सोजत के ग्राडा बाजार में बोनया श्रीमाली जेठमलजी के पुत्र हिमतराम जी देवे के घर मे कातिक वदी 6, विश्रमी सम्बत् 1950 तदनुसार तारीख 31-10 1893 का हुआ। इनकी माता का नाम सुखिया देवी था। विधि विदम्बना से इनके दादाजी के वक्त मे खाति-मीते और भर-यूरे समृद्ध परिवार पर जब मुसीबत के बादल छाये तब सोजत मे जेल म मरे दादा के बाद इनके पिताजी का भी बर्जा न चुकाने पर जेल हुई। इनके पिताजी निम्बाहेडा के पास ग्राम विनोता के कारखाने थे। पिता की मृत्यु के बाद वासिय कहलाने पर इनको फिर भी बकाया बर्जा न चुकाने के कारण एक माह जेल की सजा भोगनी पडी। बताया जाता है कि इनके किसी बिरादरी भाड ने सोजत मे 623) २० कलदार देकर, लेनदार के हाथ से मवान छुडवाया था। इनके पिता की मृत्यु के समय इनकी आयु 17 वष की थी और इससे 4 वष पूव इनकी माताजी का देहात हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा निम्बाहेडा मे ही हुई।

ये देहान पर यह पुठोली (जिला चित्तौड़) म सन् 1914 म अध्यापक हुए। इनका परिचय पुठोली ठातुर रामप्रतापसिंह जी और श्राद्धी ठातुर मोपारसिंह जी से हुआ। ठातुर रामप्रतापसिंह जी के कारण ही यह सन् 1916 मे वतमान राजस्थान के प्रणेता विजयसिंह जी पथिक के भी सम्पर्क म आये। पथिकजी टाडगड किले मे फरार होकर मेवाड गये थे। यही से हरिवल्लभजी की राज नीतिक चेतना प्रारम्भ हुई। कई बार अपने जीवन मे इन्हाने स्वी कर किया था कि इनके राजनीतिन मुघ पथिक जी ही हैं।

पुठोली म कानपुर का 'प्रताप' शखवार यह बरा पडा करते थे। प्रताप' क जन्मदाता एव सम्पादक गणेशशर्कर विद्यार्थी के लखा का इनके ऊपर विशेष प्रभाव पडा और दश सवा बी भावना इनम अधिक बलवती हुई। पथिक जी स नजदीकी सम्ब ध बनाये रखत हुए यह विद्या प्रचारिणी समा चित्तौड़ द्वारा संचालित पुठोली पाठशाला मे पढात रहे। सवा, नगरी और खोट आदि गावा म इहाने पाठशालाएँ भी खाली।

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मलन क प्राठव अधिवेशन म यह 1918 मे प्रतिनिधि के रूप म समा की आर स इंदौर भेज गय। इनके साथ सेवारामजी अग्रवाल और सुवचदजी भी थे। इस सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा गांधी ने की थी। सन् 1919 म विद्या प्रचारिणी समा की तरफ स यह श्रीकारलाल जी काबरा क साथ नवम् अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मलन के बम्बई अधिवेशन म गये। सम्मलन म इहान एव भजन सुनाया। उसकी दा पत्निया इस प्रकार हैं—

न चाहू मान दुनिया मे, न चाहू स्वग को जाना।
यही बर द मुम्मे माता रूँ भारत पर दीवाना ॥

बिजोलिया प्रा'दोलन

गुजरात के बारडाली किसान प्रा'दोलन-कारिया की तरह मेवाड राज्य का किसान जब जागीरी बच्टा स मुक्ति पान के लिए सघष पर उतारू हुआ और जब पथिकजी ने अपने शिष्य—ब्रह्मचारी हरिजी एव रामनारायणजी चौधरी शानासालजी गुप्त, माधु सीता रामदासजी आदि के साथ बिजोलिया मे सरयाग्रह का विमुक्त बजाया तभी सन् 1921 म राजस्थान सवा सघष की स्थापना की गइ। मेवाड के महाराणा, बिजोलिया के ठातुर और अग्नेजी हुकूमत को जबरदस्त त्तिर दद का सामना करना पडा। उस वक्त पथिकजी क नेतृत्व मे ऊपरमाल के गाव गाव मे खलनाद कृत हुए आजादी का पाठ पढात हुए ब्रह्मचारी हरिजी न पहाड पहाड घूम कर ग्राम वासियों का तयार किया था। इहे न भूल सताती थी, न प्यास। यह गाव-गाव घूमत हुए किसानों का हिम्मत बधाते हुए उह आग बढ़ा रहे थे। पथिकजी फरार, स्वयं ब्रह्मचारीजी फरार और फरार दसा आजादी के सिपाही जिनका एक दूसर स सीधा मन्मन् महिला कायमरूँ वी द्वारा बना हुआ था, जागीरदार का एक एक कुचाल का पता रखते थे मे।



तिर पर जग झोर मुह पर दाढ़ी मुँहा स मुशोमित हरिजी, जा उन दिना ब्रह्मचारी हरिजी के नाम स जाने जात थे, बिजौनिया ब्राह्मणेन के बाय-बताईया के साथ बायम के भविष्यना म भाग लेने जात रहे झोर मुवाह के दोन दुखी भ्रमबागिया की बरखा पुकार पुर्जोर ब्राह्मण व माय बायेम के मच मे दग भर के धाये हुए प्रतिनिधिया के मुनात थ। नतीजा पड़ हुआ कि बिजालिया ब्राह्मणन की घम गैश भर म मच गई और तरण राजस्थान व प्राय बह-बडे भ्रमवारा न हम भ्राणेनन की गवरा को छापना शुरू किया।

ब्रह्मचारी हरिजी और राजस्थान गया मच के मन्त्री राम नारायणजी चौधरी आदि बायबताईयो की महत मयन् हुई। मेवाड म महाभाजी के नाम स मगणर राजस्थान म विमान भ्राणेनन के जमनाता विजयसिंहजी पबिक का भ्राणोवाद रप नामा और सन् 1922 के जून माह म अग्नेजी हुजमत, महाराणा उजयपुर बिजौनिया के ठाकुर और भ्राणलन के बायबताईया—रामनारायणजी चौधरी व भाणिकपलानजी वर्मा आदि के बीच ममभेता हुआ जिसम लाग बाग-बेवार प्रादि की समाप्ति के माय विमाना भी जीत हुई।

पहली गिरफ्तारी

जिन जिन बिजौनिया का आंदोलन चरम शीमा पर चल रहा था उही दिना ब्रह्मचारीजी सन् 1922 के फरवरी माह म पारमाली म गिरफ्तार किये गये। नवीन राजस्थान का पहला ब्रह्म भी उक्त गिरफ्तारी का कारण बना। उस वक्त 15 सर जून की सड़ियां इनकाना परा म डाली जाती थी और 15 सर अनाज रोजाना पीसने का किया जाता था। कारण यह था कि माण्डल (मेवाड) के हाकिम बिठुलान बगानी द्वारा भेजी गई 200 कौजिया की गांठियों ने 63 किसानों सहित ब्रह्मचारीजी को, मुराम गांव म मभा करने पर पारमाली म गिरफ्तार किया था। भ्रान्त करन पर, 6 माह की सजा सुनते म बाण्ड रुहा किया गया। इनके मेवाड प्रबन्ध पर निवेद याता लागू का गई। यह आना सन् 1947 म हठी।

मीकर (जयपुर राय) म विमाना और राजा म तनाव उत्पन्न होने पर जनवरी 1924 म राजस्थान मेवा मच के मन्त्री रामनारायणजी चाधरी द्वारा भेजे जान पर एक मन्दादशता क नाते, वहाँ की पूरी जानकारी लेने के लिए ब्रह्मचारीजी सीरर गये। ठिकाना या मानून होने पर इन्हें ऊँट पर बिठा कर दश निकाला द किया गया।

सन् 1925 म फरवर के नीमूचाणा गांव म राजपूत विन्गदारा पर मलाराजा की भागा म गोली चलाई गई थी। लगभग 95 आदमी मार गये थे और 250 के लगभग घायल हुए थे। राजस्थान गया सच की मार म मधवी बन्धैपालान बलमत्रो लादुराम जाती के माय ब्रह्मचारी हरिजी भय बन्धन कर, वहाँ की पूरी जानकारी लेने के लिए नीमूचाणा गये थे।

दुसरी गिरफ्तारी

मेवाड छोड़न के बाद ब्रह्मचारी हरिजी सन् 1930 म व्यावर म नमन सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किये गये। आपकी भ्रजमर जेल म डण्ड-बेडी और काल काठरी की सजा भी हुई। गांधी इरविन पेन्ट के धारा पर 10 माह जेल म रहने पर वे रिहा किये गये। धीरा के माय अचनेस्वरप्रसाद वर्मा (मामा) भी जेल म थे।

सन् 1931 म 1934 तक ब्रह्मचारी जी हाथीनी शिक्षा मण्डल के प्रचार मन्त्री रहे। इहान कूनी के गरडया राम की धपना केन्द्र बनाया और लगभग 32 विद्यालय सजाकित किये जो कासागर म भाणिकपलान की वर्मा की सरकार को मोंप दिव म। सरकार ने सभी छात्राणकी का शिक्षा विभाग के अध्यापन मान किया था। कूनी से भी आपकी देश निकाला दिया गया था।

सन् 1931 म ब्रह्मचारी हरिवल्लभ जी न जयपुर धाम समाज म एक विधवा स्त्री महिमास्त्रीजी से श्रतजोतीय विवाह किया। आदी के बाद ब्रह्मचारी हरिजी हरिमाई विवर बहताए। सन् 1932 म मरिमाजी भ्रजमेर जेल म भी रही। व सन् 1934 म सपलोक गिरफ्तार भी हुए।

हरिमाईजी सोम्यमूर्ति थे। वे गीतकार, भाषक कवि, विचारक भ्राणलन वक्ता व पत्रकार भी थे। वे कई पत्रा म प्रकाशनाय समाचार भेजा करते थे। राजस्थान और राजस्थान से बाहर बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली पंजाब गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य भारत मे रहने प्रपने याता स लोगों को मोह लिया था। बह-बडे मारवाडी सम्मलनी म बडे आदर के माय बुलाये जाते थे। वे पके समाज सुधारक थे और उनकी वाता का सीया असर जगत पर पड़ता था।

हैदराबाद, मिर्जाराबाद, हिंगणघाट वर्धा, भ्रमरावनी, धामणगाव, आकोला, मलवापुर जलगाव, एरडोल धुनिया आदि गावा म ब्याह सगाई और धाय माभाजिक उभवा म हरिमाईजी बह प्रेम से सपलोक बुलाये जाते थे। यह माबरमती धायम म गांधीजी के माय भी रहे।



उनकी छोटी छोटी, लाक हितकारी बट्ट बित्तों धाज भी उनकी याद दिलाती है। इन बित्तों में हरिमार्इजी ने जन-साधारण का सामाजिक बुद्धिगत स दूर रहने का पाठ सिखाया था।

तोसरी गिरपतारिया

मध्य भारत क गोपीवृष्ण विजयवर्गीय, राजस्थान के माणिक्यल वर्मा शोभालाल गुप्त, रामनारायण चौधरी, चन्द्रगुप्त वाण्ये प्रवासचन्द्र कविरत्न और हरिमार्इज उपाध्याय आदि के साथ हरिमार्इजी न अजरमर म जेल यात्रा की। महिमादेवी जी भी जेल गन्। यह सन् 1932 की बात है। महारमा माधी के मोलमेज काफेस स लौटन क बाद भारत मर मे ग्राम गिरपतारियां हुई थी। चन्द्रमन शर्म भी इनके साथ थे। इन दाना को 30 सेर अनाज पोमन क लिय राजाना दिया जाता था।

सन् 1937 म इनके बाहिन पर की हड्डी टट जाने पर इह अजरमर क विक्टारिया अस्पताल म बडी मुश्किल स भती कराया गया। सामाजिक और राजनीतिक कायकर्मिण स एक एव रूपया इकट्ठा कर माणिक्यलालजी न इलाज कराया। शोभालालजी गुप्त न भी मदद दिलावद। यह छ महीने बाद ठीक हुए।

सन् 1940 के लगभग लीचन फलोदी मे इहाने विद्यालय चलाया। सन् 1941 म सूरसागर जोधपुर म बालिका पाठशाला का जम दिया। उस समय प्राय केवल 40) एं भासिक निवाह इतु लेत थे। छ महीन म प्रापने 10000) एं जनता से इकट्ठा कराया और पक्का विद्यालय बनाने प्रच्छे अध्यापक व अध्यापिका का रखकर विद्यालय जनता का सौप दिया। मण्डेर म भी आपन कया विद्यालय चलाया।

अतिम दो गिरपतारिया

सन् 1942 म मारवाड लाक परिपद के कायकर्मिण की सहयोग देते हुए उहोने उत्तरदायी शासन की माग को लेकर जोधपुर आन्दोलन म भाग लिया। उह सटल जेल म रखा गया। छूटने पर वह सोजत राड आये और गिरपतार किये गय। इह मोचिया बिला (विजय तालाव पलेस जोधपुर) मे रखा गया। इसी आन्दोलन म हरिमार्इजी की पत्नी महिमादेवी जी सोजत को मुर्खीसादेवी और जतारण की भलकार दवी आदि ने औरता का जत्या लकर जोधपुर म आन्दोलन म भाग लिया था।

महिमाजी, हरिमार्इजी के लिए वरदान बनकर आई थी। उहोने इनके सुख दुख म पूरा साथ दिया। जिन्दगी भर वे प्रचार कार्यों म इनक साथ घूमती थी। 20 सितम्बर 1944 के दिन न्यावर म महिमादेवी जी का स्वयंवास हो गया। उन दिनों हरि

मार्इजी की आर्थिक स्थिति का सहज आदजा टन बात स लगाया जा सकता है कि महिमाजी की श्मसान यात्रा का मारा व्यय हरि मार्इजी के एक मित्र ने वहन किया था।

हरिमार्इजी नडा करते थे कि जयजब वे जेल गय उनका सारा माल अरबाव जािक हाथ लगा लूट कर ले गये और जेलो स छूटन पर इह पर गृहस्थी चलाने और पुस्तका का बरीदान क लिए हमेशा परेशान रहना पडा।

सन् 1942-44 के आन्दोलन के बाद वे राजस्थान गश्ती पुस्तकालय का संचालन करत रह। अपने कथा पर मकडा रूपया की पुस्तकें लादे हुए व गाव-गाव घूम घूम कर धार्मिक, सामाजिक सद्ग्रथ बेचत रह। इन पुस्तका की बिनी से जा कमीशन इह मिलता, उसस यह अपना गुजारा करत थे।

समाज और राजनेताम स अपेक्षित सत्कार इह कम ही मिला। निरमिमान व निस्वाय भाव मे काम करने की इनकी प्रवृत्ति ने इह किसी के आग भुकन नही दिया। अपने हाथ पर चलत व अपने जीवन काल तक सदैव परोपकारी ही बन रहे। सन् 1955 म जब हरिमार्इजी बीमार पडे तब शोभासालजी गुप्त का मालूम होने पर उहोने रामनारायणजी चौधरी को दिल्ली पत्र लिखा। चौधरीजी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू को हरिमार्इजी की बीमारी की सूचना दी। नेहरूजी न 500) एं हरिमार्इजी को भेजे जो इहाने लौटा दिय। सन् 1960 म हरि मार्इजी ने पं नेहरू को एक पत्र मे लिखा था कि मैं 70 वष का हू और अस्वस्थ हू। सुना जाता है कि एक बार तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल गुखाडिया न इह 250) एं सहायताय भेजे थ वह भी इहाने वापिस कर लिये। हरिमार्इजी कुछ समय भारत सबक समाज के वेतन भोगी सगठक भी रहे।

वे पद के भूने नही थ। नेताओं की चाटुकारिता उह बिल कुल पसद नही थी। अतिम दिना म अपने स्वर्गीय छोटे भाई की पत्नी मधुसुवादी की मवात्रा से सतुष्ट थ। शरीर मे वे काफी कमजोर हा चुके थे।

सन् 1967 म हरिमार्इजी का सांनिपातिक अवर हुआ। इस खुबार न इनके सारे शरीर को भुकभोर दिया। वह बुधका मे चरित्र की कमी अनुभव करते थे और उह भारतीयता न पर जात हुए समझत लग थे। देश दिशा भी उनकी चिन्ता का कारण था। देश कियर जा रहा ³¹ इस विषय पर भी मिलन बाला स वह चचा चलाया करत थे। हरिमार्इजी इस बात से भी चिन्तित थे कि उन



मिर्ग पर जटा और मुह पर दागी मूछा से सुशानित हरिजी, जा उन दिनों ब्रह्मचारी हरिजी के नाम म जाने जाते थे विजोलिया आन्दोलन क वाय कर्ताओं के साथ काप्रस के अधिवेशनो म भाग लेने जात रहे और मेवाड के दीन दुखी ग्रामवासिया की करखा पुकार पुरजार आवाज के साथ काप्रम क मच म दश भर के ध्राये हुए प्रतिनिधिया का सुनात थे। नतीजा यह हुआ कि विजोलिया आन्दोलन की भूम देश भर म मच गई और तरुण राजस्थान क ध्य बड़े बड़े अखबारा ने इम आन्दोलन की खबरा को छापना शुरू किया।

ब्रह्मचारी हरिजी और राजस्थान सवा सध के मन्त्री राम नारायणजी चौधरी आदि कायकर्ताओं की मेहनत सकल हुई। मेवाड म महात्माजी के नाम म मशहूर राजस्थान म विमान आन्दोलन क जन्मदाता विजयसिंहजी पधिक का आगीवाद रग नाया और सन् 1922 क जून माह मे जपेजी डूकमत महाराणा उदयपुर विजोलिया के ठाडुर और आन्दोलन के कायकर्ताओं—रामनारायणजी चौधरी व माणिक्यलालजी वर्मा आदि के बीच गमभोता हुआ जिसम लाग बाग बेगार आदि की समाप्ति के साथ विमानो की जीत हुई।

पहली गिरफ्तारी

जिन दिना विजोलिया का आन्दोलन चरम सीमा पर चल रहा था उठी दिना ब्रह्मचारीजी सन् 1922 के फरवरी माह मे पारसाली म गिरफ्तार किये गये। नवीन राजस्थान का पहला अक्रु भी उक्त गिरफ्तारी का कारण बना। उस वक्त 15 सर वजन की बडिया इनके दोना परा मे डाली जाती थी और इहू 15 मेर अनाज राजाना पीसन का दिया जाता था। कारण यह था कि माण्डलम (मेवाड) के हाकिम विठ्ठलाल बगानी द्वारा भेजी गई 200 फौजिया की टानिया मे 63 किसान मलिन ब्रह्मचारीजी को मुरास गाव म समा करन पर पारसाली म गिरफ्तार किया था। अपीन करने पर 6 माह की सजा सुगतन के बाट इहू रिहा किया गया। इनके मेवाड प्रवेग पर निवेध आना नामु की गई। यह आना सन् 1947 म हठी।

सीकर (जयपुर राज्य) म किसाना और राजा म तनाव उत्पन्न होन पर जनवरी 1924 म राजस्थान सेवा सध के मन्त्री रामनारायणजी चाधरी द्वारा भेजे जाने पर एक सम्बादनाता के नाते वहाँ की पूरी जानकारी लेने क लिए ब्रह्मचारीजी सीकर गये। विमान को मालूम हाने पर इहू जेट पर बिठा कर दश निवाला दे लिया गया।

सन् 1925 म अखबर क नीमूचाणा गाव के राजपूत विस्वदारा पर महाराजा की आना मे गोबी चलाई गई थी। लगभग 95 आदमी मारे गये थे और 250 के लगभग धायल हुए थे। राजस्थान सवा सध की ओर स सबधी कहेयालाल बलमशी लादूराम जोशी के साथ ब्रह्मचारी हरिजी भेप बदल कर, वहा की पूरी जानकारी लेने के लिये नीमूचाणा गये थे।

दूसरी गिरफ्तारी

मेवाड छोडन के बाद ब्रह्मचारी हरिजी सन् 1930 म ब्यावर म नमक सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किय गये। आपका अजमेर जेल मे डण्ट-बेडो और काल कोठीरी की सजा भी हुई। गांधी इरविन पेक्ट के आधर पर 10 माह जेल म रहने पर व रिहा किये गये। ओरा के साथ अचनेश्वरप्रसाद शर्मा (मामा) भी जेल मे थे।

सन् 1931 स 1934 तक ब्रह्मचारी जी हाडीती शिक्षा मण्डल के प्रचार मन्त्री रहे। इहाने बूनी के गरडया ग्राम को अपना केन्द्र बनाया और लगभग 32 विद्यार्थय सचालित किये जो कालांतर म माणिक्यलाल जी वर्मा की सरकार को सौंप दिय गय। सरकार ने सभी अध्यापको को शिक्षा विभाग के अध्यापक मान लिया था। बूदी से भी आपको दश निवाला दिया गया था।

सन् 1931 म ब्रह्मचारी हरिवल्लभ जी ने जयपुर प्राय समाज म एक विधवा स्त्री महिमावतीजी स अतर्जातीय विवाह किया। शादी के बाद ब्रह्मचारी हरिजी हरिमाई किकर बहलाए। सन् 1932 मे महिमाजी अजमेर जेल मे भी रही। वे सन् 1934 म सपलीक गिरफ्तार भी हुए।

हरिमाईजी सौम्यमूर्ति व। व गीतकार, गायक कवि, विचारक, आन्दोलक, वक्ता व पत्रकार भी थे। वे कई पत्रा म प्रकाशनाय समाचार भेजा करते थे। राजस्थान और राजस्थान स बाहर बवाल, बिहार उत्तर प्रवेश दिल्ली पत्राव गुजरात महाराष्ट्र और मध्य भारत म इहोने अपने गीता से लोगो को माह लिया था। बड़े-बड़े मारवाडी सम्मेलना म बड़े आदर के साथ बुलाय जात थे। वे पक्के समाज सुधारक थे और उनकी बाता का सीया असर जनता पर पडता था।

हैदराबाद सिक्कराबाद हिंगणघाट वर्षा अमरावती धामणगाव आकोला मलकापुर जलगाव, एरडोल धूलिया आदि गावा म ब्याह सगाई और अन्य सामाजिक उत्सवा म हरिमाईजी बड़े प्रेम से मपलीक बुलाये जात थे। यह गावरमती आधम म गांधीजी के साथ भी रहे।



उनकी छोटी छोटी, लकड़ हितकारी कई किताबें आज भी उनकी याद दिलाती हैं। इन किताबों में हरिभाईजी ने जन-साधारण को सामाजिक बुद्धि तथा सद् रचन का पाठ सिखाया था।

तीसरी गिरफ्तारी

मध्य भारत के गांधीचिन्तन विजयवर्मा राजस्थान के भाण्डवताल बर्मा शोमालाल गुप्त, रामनारायण चौधरी, चन्द्रगुप्त बाण्ये, प्रकाशचन्द्र कविरत्न और हरिभाऊ उपाध्याय आदि के साथ हरिभाईजी ने भ्रमण कर जेल यात्रा की। महामादेवी जी भी जेल गईं। यह सन् 1932 की बात है। महात्मा गांधी के गोलमेज कार्यक्रम से लौटने के बाद भारत भर में ग्राम गिरफ्तारियाँ हुई थीं। चन्द्रगुप्त शर्मा भी इनके साथ थे। इन दोनों का 30 सत्र अनाज पीसने के लिए राजाना दिया जाता था।

सन् 1937 में इनके दाहिने पैर की हड्डी टूट जाने पर इन्हें अजमेर के ब्रिक्कारिया अस्पताल में बड़ी मुश्किल से भर्ती कराया गया। सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं से एक एक रूपदा इकट्ठा कर माणिक्यलालजी ने इलाज कराया। शोमालालजी गुप्त ने भी मदद दिलवाई। यह छ महीने बाद ठीक हुए।

सन् 1940 के लगभग खीचन फलोदी में इन्होंने विद्यालय चलाया। सन् 1941 में सूरमागर जोधपुर में बालिका पाठशाला का काम दिया। उस समय प्रायः केवल 40) २०) मासिक निवाह हटने लगे थे। छ महीने में आपने 10000) २०) जनता से इकट्ठा कराया और पक्का विद्यालय बनाकर अच्छे अध्यापक व अध्यापिकाओं का रखकर विद्यालय जनता को सौंप दिया। मण्डार में भी आपने क्या विद्यालय चलाया।

अन्तिम दो गिरफ्तारियाँ

सन् 1942 में मारवाड़ लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं का सहयोग देते हुए उन्होंने उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर जोधपुर आन्दोलन में भाग लिया। उन्हें सेंट्रल जेल में रखा गया। छूटने पर वह साजत राड प्राय और गिरफ्तार किए गए। इन्हें मोरिया जिला (विजय तालाब प्रेस जोधपुर) में रखा गया। इसी आन्दोलन में हरिभाईजी की पत्नी महामादेवी जी, साजत को मुण्डोलादेवी और जलारण की भूलकार देवा आदि ने अरोतो का जवाब लेकर जावपुर में आन्दोलन में भाग लिया था।

महामाजी हरिभाईजी के लिए बरदान बनकर आई थी। उन्होंने इनके मुल-बुख में पूरा साथ दिया। जिन्दगी भर वे प्रचार कार्य में इनके साथ घूमती थीं। 20 सितम्बर 1944 के दिन ब्यावर में महामादेवी जी का स्वर्गवास हुआ गया। उन दिनों हरि-

भाईजी की शारीरिक स्थिति का सहज आदामा इन बात से लगाया जा सकता है कि महामाजी की शमसान यात्रा का सारा व्यय हरिभाईजी के एक मित्र ने वहन किया था।

हरिभाईजी कहा करते थे कि जब जब वे जेल गये इनका सारा माल बसवाव जितने हाथ लगा, लूट कर ल गये और जला स छूटने पर इन्हें घर पहुंचाई चलाने और पुस्तिका का खरीदने के लिए हमेशा परेशान रहना पड़ा।

सन् 1942-44 के आन्दोलन के बाद वे राजस्थान गश्ती पुस्तकालय का संचालन करते रहे। अपने बच्चा पर मकड़ा रपया की पुस्तकें लादे हुए वे गाव-गाव घूम घूम कर धार्मिक, सामाजिक सद् ग्रंथ बेचते रहे। इन पुस्तकों की बिक्री से जा कमीशन इन्हें मिलता उसमें यह अपना गुजारा करते थे।

समाज जीव राजनताम्रा से अप्रसिद्ध सत्कार इन्हें कम ही मिला। निरभिमानी व निस्वार्थ भाव से काम करने की इनकी प्रवृत्ति ने इन्हें किसी के आग्रह भुक्त नहीं दिया। अपने हाथ पर चलते वे अपने जीवन काल तक सदैव परोपकारी ही बन रहे। सन् 1955 में जब हरिभाईजी बीमार पड़े तब शोमालालजी गुप्त का मालूम होकर पर उन्होंने रामनारायणजी चौधरी को दिल्ली पत्र लिखा। चौधरीजी ने तत्कालीन प्रयागमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू का हरिभाईजी की बीमारी की सूचना दी। नेहरूजी ने 500) २०) हरिभाईजी को भेजे जो इन्होंने लौटा दिये। सन् 1960 में हरिभाईजी ने पं० नेहरू को एक पत्र में लिखा था कि मैं 70 वर्ष का हूँ और अवस्थ है। सुना जाता है कि एक बार तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल खुल्लाडिया ने इन्हें 250) २०) सहायता भेजे थे वह भी इन्होंने वापिस कर लिये। हरिभाईजी कुछ समय भारत सक्क समाज के वेलन मोगी संगठन भी रहे।

वे पत्र के भूले नहीं थे। नताम्रा की चाटुकारिता उन्हें पिन तुल पसन्द नहीं थी। अन्तिम दिना में अपने स्वर्गीय द्यौट माई की पत्नी मधुबाबाई की सेवाओं से सतुष्ट थे। शरीर ने व काफी कमजोर हो चुके थे।

सन् 1967 में हरिभाईजी का साम्प्रदायिक ज्वर हुआ। म्म तुवार ने इनके सारे शरीर का फूफूँ भर दिया। वे बुद्धि में चर्च की कमी अनुभव करते थे और उर्ध्व भारतीयता में पराजित समझते लगे थे। देश दिया भी उनकी चिन्ता का कारण था। विषय जा रहा है म्म विषय पर भी मिनत बागन बट्ट चलाया करते थे। हरिभाईजी इस यात्रा में भी विभिन्न दि-



जीत जी उनका नाम श्रीरुद्र गार्हपत्य का अनुपाय करने वाला उठ मित्र नहीं रहा था।

मृत्यु की घातिका

जीवन के भागिरी दिन, 74 वर्ष की आयु में 30 11 67 का जब मधुराबाई रागन की बीमारी उन गई हुई थी हरिभाईजी का फूलोला समाप्त करने के लिए मकान के बीतरी बमरे में मजदूरी रफमा का पुस्तकें विद्या कर, उन पर फारा और मिट्टी का तब छिन्न कर (नन की पीपी दूर हटा कर) धाय तथा ली और उगी पर बटकर जीवन-नीला समाप्त कर दी। नेमा वाला ने उक्त ममाधिपत्र धटे पाया।

हरिभाईजी का जीवन दम के लिए समर्पित था। व धपने पास धान वाला का माहस बघाने थे लजिन दैव मुविपाक। आत्म ग्राह करने व दम गभार में चल बस।

—श्री महाकत 'शक्ति'



शेयामूर्ति

श्री कलचन्द वाफना



'पाण-जीवन और उच्च विचार' व प्रतीक श्री जनक-वाफना गरल, कर्मठ पण निरदल व्यक्ति

हैं। जैसी उनकी बाह्य निमल छवि बस। भी - है। व म् क-प्रता-संधाम में विन्नी शायन, राजापाहा व मयम-तशाही के विश्व बूचन रहे तथा धनेक घातनाण सहन करने पर भी पनी नहीं भुने। धपने निष्ठाणा पर अटिन रहने वान अहितारवक शक्ति व संतानी तथा मानवता व पुजारी वाफनागी धाय भी दक्षिणाराधण की सेवा में मलनन हैं।

धाफना जम पाली जिले के सादवी नगर में 14 मार्च, 1913 का हुआ। धापकी प्रारम्भिक शिक्षा माई-दर (बम्बई), तपयबाव सादवी और जोयपुर में हुई। जाधपुर में धापकी ऐसे शिक्षक मिने जो पाठ्यक्रम के साथ-साथ स्वतंत्रता-संग्राम की बीर-गाथाएँ भी सुनाते थे। बस धापने मन में राष्ट्र प्रेम जागृत हुआ। ऐसे धाप्या

पना में धपने गणेशोत्सवों की शोभा तथा गांधी-प्रज्ञानी पाठ उ-तगनीय हैं। धापने ग् 1932 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। व वय धाप मध्यापक रहे। धापने ग् 1934 में गान्धी पहनने प्रारम्भ की। मिल क बयदा में पर्वी का उपाय हुआ है जब धापका यह गात हुआ तब म अहिंसा की पुनीत भावना म धापका रादी पाठक की।

धाफना श्री विद्यार्थी जीवन में ही सामाजिक सेवा करने में भाग लेने लग गे। जोयपुर में मारवाड लोक-परिषद् की स्थापना होने पर धाप इनके गन्थ बन गये और धापन देवूरी मादवी, धायराव मुमरपुर पालना और मानी क्षेत्र में का-परिषद् की शाखाओं की स्थापना की। ग् 1940 में मारवाड लोक-परिषद् ने वहुते गत्यायुह में धापन सक्रिय रूप में भाग लिया। त् 1942 में स्वतंत्रता आन्दोलन में धाप गिरफ्तार कर लिये गये और बीरब दो वर्ष तक जेल में रहे। जेल की अवधि में धापने पुनः सरदारपुराण की मयुर्विज्ञ (डिटेनस) की प्राणपातक बीमारी हो गई फिर भी धाप विचलित नहीं हुए। जेल अधिकाधिको ने धामाधचना पत्र लिखन पर पराल पर छोड़ने की शल रगी परन्तु धापन तथा धापकी यह लक्ष्मी न यह स्वीकार नहीं किया। यह पटना धापने राष्ट्रम और दक्षिण में घोरन है।

ग् 1944 में जेल में मुक्त हा जाने के बाद धाप स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए पूर्णरूप सक्रिय हो गये। धापने जनता को जागृत करने के लिए व्यापन दौरा किया। धाप मारवाड लोक परिषद् में प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए और धपन सक्रिय-कान में राय भर में का-परिषद् के गठन-पक्ष और आन्दोलन-पक्ष को व्यवस्थित और सक्रिय बनाना। विशाल राजस्थान व निर्माण व मयय धाप मारवाड लोक-परिषद् के प्रधानमंत्री के और राजस्थान निर्माण के बाद पठित हीराताल शास्त्री के नेतृत्व में जो राजस्थान का पहला मंत्रिमण्डल बना उसमें धाप स्वायत्त शासन मन्त्र ब। धापने लयमग दो वर्ष तक राजस्थान में स्वायत्त शासन मन्त्र का काम कुशलतापूर्वक किया।

ग् 1941 के बाद म धापका भूबान भूदान और सर्वोप्य की और होन तथा। धापन सर्वोप्य का संदेश गा-गाव में पहुंचाया। धापने गिराही जानार, बाडमेर तथा पानी के अनेक भूमिहीन को भूदान के प्रसंगत भूमि वितरित करवाई। धापने भूदान पत्र हेतु पद यात्रा की तथा जनता को नैतिक और मानवीय आदर्शों के प्रति सजग किया। धाप दो बार प्रमुख जिला परिषद् पाली तथा दो बार प्रधान रात्री और देवूरी के लिए चुने गये। म् पण पर रहने हुए धापने जनता की निष्ठापूर्वक सेवा की।



आप अनेक शिक्षण संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। श्री पाशवनाथ उम्बेदे महाविद्यालय फालना श्री पाशवनाथ विद्यालय बरवाणा तथा मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी आदि संस्थाओं के निमाए एव विवास मे आपकी महत्वपूर्ण और प्रशाननीय भूमिका रही। मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी के आप संस्थापक सदस्या मे हैं, जिसमे आपने जीवनदान देने की घोषणा की थी। आज विद्यावाडी का जो रूप है उसको सभारने व सजाते म आपका योगदान अविस्मरणीय है।

समाज कल्याण, समाज शिक्षा और रचनात्मक कार्यों मे आप आज भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं।

आप स्वतंत्रता सेनानी, समाज-सुधारक, शिक्षा प्रेमी और अहिंसात्मक क्रांति के अग्रदूत हैं। आप राष्ट्रपिता गांधी के दशन से विशेष प्रभावित रहे हैं। आपने महावीर और गांधी दशन से अहिंसा और प्रेम का पीपूष पीकर अपने जीवन का निर्माण किया। फल स्वरूप आपने सबप्रथम सदाचार का दीपक अपने भीतर प्रज्वलित किया और बाद मे समाज म प्रकाश फैलाने का सफल किया। आप गांधीजी के दशन का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि वे कयनी और करनी मे समानता के पक्षपाती थे। इस सम्बन्ध म गांधीजी के जीवन का एक प्रेरणास्पद प्रसंग मुवाते हुए आप कहते हैं—'गांधी जी के पास एक बुडिया धपने लडके का लेकर आई। उसने गांधी जी से कहा कि मेरा बेटा बीमार है, डाक्टरों ने कहा कि इसे गुड मत खिलाया परंतु मेरा बेटा मानता नहीं और गुड खा नेता है। अत आप इसे भमझाकर गुड खाना बंद करवाओ।' बापूजी ने कहा सात दिन बाद खाना, इसका उपाय करूंगा। सात दिन बाद वह बुनिया अपने बेटे को लेकर उपस्थित हुई। तब गांधी जी ने उसके लडके को गुड नहीं खाने के लिए समझाया। गांधाया की वाणी मे ऐसा प्रभाव था कि लडका मान गया। बुडिया ने भुक्तवा कर कहा—'आप यह बात उम उसी समय कह देते जब मैं पहली बार आपके पास आई थी। मुझे इसके लिए दुबारा आना पडा। इस पर गांधीजी ने कहा—'बहिन मैं स्वयं पट्टे गुड खाता था। जा काम मैं स्वयं करता था, उसने लिए इस लडके को कैसे मना कर मकता था? अब मैंने गुड खाना बंद कर दिया, तब मैं इसे कह रहा हूँ।'

यह कथा प्रसंग अनुकरणीय है। आधुनिक युग मे नेता, समाज सुधारक एव धर्मांधाय लक्ष्मणार मापण ता करत हैं परंतु उनका प्रभाव नहीं पडता। कारण स्पष्ट है, इनकी कयनी और करनी मे अत्यंत अंतर है। इसलिए व सब प्रभावहीन हैं।

वाफानाजी ने स्वतंत्रता संग्राम मे जो बलिदान दिया है वह स्वर्णाधारा म अकित करने योग्य है। उनके अहिंसात्मक समाज रचना के वायनम अनुकरणीय है। वे सादगी से रहते हैं। व दृढ़ प्रथा और मामाजिक धार्मिक आडम्बरो के विरुद्ध हैं तथा इसे प्रूपण एव आयाय कहते हैं।

गने दरिदरानारायण की सेवा करन वाले स्वतंत्रता सेनानी, निर्भीक वक्ता, भारतामाता के चरित्रवान सपूत के जीवन से यदि हम नि स्वाय भवा का पाठ सीख लें तो हमारा जीवन सफल हा जायगा। हमारा मस्तक उनके सद्गुणा का स्मरण कर नत मस्तक हो जाता है। अत म उनके जीवन दशन को इत श्रद्धा म अभिनयक कर उनको स्नेह सुगम अर्पित है—

'मंदिर ह, मस्जिद ह, चर्च ह, गुआरी ह पुराहित है मयासी ह, लकिन पृथ्वी धार्मिक नहीं हो सकी है—कमोकि अमों पासक जो उपदेश देते हैं वह उनके जीवन म चरिताथ नहीं हुआ है उनकी करनी और कयनी मे अंतर है।'

—प्रो० जवाहरचंद पन्नी, फालना



गरीबों के मसीहा

श्री भीठालाल काका



पात्री के स्वतंत्रता सेना निया म स्वर्गीय भीठालाल काका का मूध य स्थान रहा है। काका का जम श्रीमाली ब्राह्मण

समाज म हुआ था। उनके पिता साहिबरायजी तथा माता सानाबाई जाति प्रथा ऊचनीच वग भेद, सवणता आदि के कट्टर समर्थक थे, जबकि काका छुआछूत मिटाकर आम आदमी का मानव हान का हक दिलान के पक्षधर रहे हैं। जब काका मधवाला, भीला व अन्य निम्न जातियों के मय वार्ता व दु लब्ध का सुमकर घर म भोजन हेतु प्रवेश करत ता उनको रसोई म प्रवेश नहीं करन दिया जाता। अपने ही घर म उह 'अद्वैत' सम्वाधन व वसा ही 'यवहार मिलता था। छुआछूत का सबसे बडा प्रमाण यह रहता है कि उहें भोजन भी ऊपर स परोसा जाता तथापि सहजगीन



सपपगील राह क राही बारा दस अयमाजनक व्यवहार का भी कवन नाममश्रु क प्रयोग करके हम कर टाल दन थ। दूसरी तरफ हम विचार करें कि इस बड़ा काई पाप नहीं है कि एक माप अयन जत दूसर मानन का जानवर स भा देय मान। अयन घर म कुत विल्ली धा सवन है उनका हम प्यार म स्पश करत ह हमार बचन गादी म उठाकर उन्क साव बचत है लकिन प्मान का छन म उनकी बराबर म मानव का घम भ्रष्ट होता है। उस मन्म म बाबा की मायता था कि अस्पृश्यता स आपस म भेदभाव और कटुता का भाव उत्पन्न होना है। साथ ही म इस बान कर बन दन थ कि समय क साथ प्रत्येक आदमी का बदलना होगा।

गरीबा क मसीहा—बाबा प्रतिदिन दलित वग क सीह लाम जान थ। बड़ा अघर काई बामार होना था—उमक दुख दन् निवारण हेतु उम चिकित्सा सुविधा या आर्यन सहायता, जा भी होना था— अनाज बपडा या दवाइयाँ उपलब्ध करवात थ। अघर किनी दलित क साथ अमाय अत्याचार होता तो बाबा उह कात्रनी प्रजिया द्वारा विधि-वेत्ताया और सम्बन्धन अधिधारिया के माध्यम स मुक्ति सम्भव करवात।

बाबा क व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता था कि उताम अयनी जमीन भी जा जातीरी स प्राप्त हुइ थी कात्तकाग का दे थी और उताम मर गारा दिया— जमीन किमकी जान जिसकी।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान बाबा स्थानीय सामंतगोही के खिलाफ हुए। जिस समय बाबा मारवाट लाक-परिष्कार क अयक्ष ५ उस समय का चण्दावल हत्याकाण्ड चर्चित रहा है। चण्डावल क विमाना का अयनी महन्त का हक दिलात व लिए बाबा मागीसालजी विरुद्ध आनीशान क साथ जब चण्डावन पहुच ता नरवालीन ठापुर भापागसिंह द्वारा गाव का सामा ५८ ही राक दिय गय और ठापुर क गुर्गा (भाउता गुण्डा) न उन पर लाठिया धार नाया स हमला किया जिसम काबा मन्मोर रूप स पावन हो नहीं हुए वन्नु अयनी एक आन की राजनी भी ला बठ। पावल अवस्था म काबा का सोजत अस्पृश्यता न भर्ता करवाया गया। जब यह खबर मन्म म उनकी माताजी का भिला कि बाबा की पिटाई हरिजात द्वारा की गयी है ता याकि कट्टरता की अनुमादक उनकी माताजी न बह लकटा जा उस समय उनक मय म थी अस्पृश्यता पहच कर उसी म उनकी पिटाई शुरू कर दी। उस समय बाबा का मागी-यात्रा दन हुए महामा गाथी का भी घम भजन बहुर नला-बुरा कहा। गाय शान्त होन पर ही बाबा मा म बच पाप बदाकि मा क लिए गयम बड़ा अस्वहाय कारण थ था कि बाबा एक ब्राह्मण म धार उनका पिटाई हरिजात द्वारा की गयी थी।

सन 1970 म बाबा अचानक पदापात की बपट म था गये। उस समय उनक पास अयनी बीमारी के इलाज के लिए धन का पूणत अभाव था। इसलिए मलातीन चिकित्सा मात्री भी माहन छगानी और मुयमत्री बरकनु-ताला १ दवाइया मुय्या करवायी। बीमार अवस्था म तलातीन मुयमत्री बरकनु-ताला न जब मरकारी सहायता की घनराशि उठ देन की पशबन्ध की और कहा कि आपन दक्ष के लिए बहुत कुछ किया है आप लागी की बढोत दग आजात हुया है क्या राज्य सरकार आपक लिए इतना मा भी नहीं कर सकती? ता बाबा का उत्तर था—क्या मेरी सेवाया की कामत सरकार बन्द रूपाम अत्र कर मुझम उच्छा होना चाहता है? इस पर मुयमत्री निहतर थ।

स्वर्गीय बाबा का स्वत शता-जन्मेतन म सक्रिय भाग लन क लिए सरकार न उह ताअपन और पेंशन की स्वाकृति प्रदान की जिसका भी गरावा के इन मसीहा न लने म इकार कर दिया। तामपत्र के विषय म उनका बहना था कि इनके भ्रष्ट नीतयज्ञाही के हाथ गये हुए हैं और इसम भ्रष्टाचार की रू धा नहीं है।

स्वर्गीय बाबा बहुत मायाविन थ। वे मारवाडी गुजराती मराठी हिन्दी संस्कृत जयजी म यवारायन अयन विचारों की अग्रि अग्रि कर दत थ। व बक्तय म इस बाल पर बल देने थे कि आपिन-अग, पीडित गग को दुःखा म छुटकारा दिलाता ही मानव भाव की मवा है। इसलिए बाबा अयम अचन म गरीबों के मसीहा क नाम स जान जात थे।

वीर पुत्र

श्री मागीलाल त्रिवेदी 'आलोशान'



श्री मागीलालजी 'आनीशान का जन्म चण्डावल ग्राम म पंडित वशीलाल त्रिवेदी के मुपुत्र रामधरजा एव माता मगीबाई क यहा विजादाशधी विधवाी सवत् 1956 तदनुमार 14 अगस्त मन् 1899 का हुया। बचपन म उनके गदा बशीलालजी ने इह वेदान्त ज्योतिषि और शिा की शिक्षा दी। प्रायुवेद का भी साज रण पान इदीर क बच हुरामजा स मिला।

भी बप की प्रायु म मागीलालजी अयने मामा जयकण्ठजी क माय सातुका वरार जिला बुजदाना के आसलगाव गय और पूजा पाठ का काम करन लये। उछ वर्षों के बाद इनक माना पिता भी पीपलगाव आकर बस गये। मागीलालजी अयनी माता क पास स पीपलगाव था यद और पिता के साथ पूजा पाठ के काम म लग गये।



11 वष की आयु में मा से लेकर पाच रपयो की जया पूजी म मुगणित द्रया की दुकान खानी, जा अचड़ी चल पडी। धीरे धीरे ब्रुछ एजितिया भी ल ली और इनकी आयिक स्थिति में सुधार आने लगा।

14 वष की आयु में जब अखिल भारतीय माहेश्वरी महामभा के आयस सठ गोविन्ददास ये, तव यह महामभा के प्रचारक नियुक्त हुए। वे अपनी दुकान भी चलाते रहे और प्रचारक का काय भी करत रहे।

इही लिना मागीलालजी खामगाव के प्रताप अलाडा के च्यायाम शिक्षक पत्रालालजी व्यास के सम्पक म आय और आय समाज म काम करन लगे। गाव एवतमाल में 135 मुस्लिम परि चारो को शुद्ध किया और हिंदू धम म लीटाया।

सेठ बालकिशन दास मट्टूध और सेठ तेजनाथ चण्डक के आय्रह में सुगणित सामान भी दुकान उठाकर कपास का धधा शुद्ध किया। इस काय म उक्त दाना सेठा ने उह सहायता दी।

सन् 1917-18 म लाखमाय बालगगाधर तिलक के भाषणो का आय पर विशेष प्रभाव पडा और बाबासाहब पराजप के नेतृत्व में होमरूल आंगनन म भाग लिया। पडित हरिकवल्लभ दवे की ज्यष्ठ पुत्री त्रिवेदीजी की पत्नी होरादेवी दश सेवा में इनकी सहायिनी बनी। 1919 म इनके एक बच्चा पैदा हुआ। यह व्यापार के साथ साथ सेवा भी करते रहे। इनकी मा, पत्नी और बच्चा बीमार रहते। 1924 म उनकी पत्नी का देहांत हो गया। उसने 4 दिन बाद उनका पुत्र भी चल बसा।

मागीलालजी मन् 1924 म कांग्रेस के प्राथमिक सदस्य बने जो आयीवन रहे। पत्नी और पुत्र का न्यायकम चण्डावल धारक किया। बीमार पिता का इलाज इही दिना जाधपुर म कराने के बाद उहें पीपल गाव में गय जहा उनके पिता का देहांत हा गया। 7 2 27 का गाधीजी के खामगाव आने पर इह उनकी सुरक्षा का काय सापा गया। वे इन लिना हरिजन उत्थान के काम म लगे थ।

सन् 1930 म गाधीजी की दाटीयाथा म शामिल हुए और जनगाव जागोद कांग्रेस के तहसील मंत्री बनाये गये। तहसील काया लय पीपल गाव रखा। इहाने जगल सत्याग्रह म भाग लिया और धिपकर काम करते रहे। अखिर मन् 1931 म गाधी इरविन समझौते के बाद जब नयक-सत्याग्रह व जाल मत्याग्रह स्थपित हुए तब यह जनता में प्रकट हुए और आमलगाव कस्बे म दास की दुकान पर विवेदिग किया। शराव के ठेकदाराने गुण्डा द्वारा इनकी

जमकर पिटाई करवाई। गले के पास की हड्डी-हमती टूट गई। पीपल गाव म इलाज कराया गया तब ठीक हुए। विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में 5 7 बार पकडे गये और द्वाइ दिये गये।

सन् 1932 म गोलमेज काफे स से लीटने पर महात्मा गाधी का गिरफ्तार किया तब गेज मर में आन्दोलन चल पडा। 26 जनवरी को इद क दिन माटरगाव में भाषण देने पर त्रिवेदीजी 28 व गिरफ्तार किये गये। इह 9 माह की सजा हुई। इनका डाक्टरी मुधायना भी नहीं कराया गया। इह एक के बाद एक कोल्हू स तेल घेटन पत्थर फोडने और चक्की पीसने के काम म लगाया गया। इहाने तीन चक्किया तोड दी। इसके अपराध म इनके अडा डण्डा तीन महीने तक लगाया गया। जेल म साधारण कर्िया को खराब खाना मिलता था। इस के लिए कर्िया में सत्याग्रह करवाया। 12 दिन बाद नेहू की बारिया मिलन लगी। अक्किा रिया ने इस सबके लिए दनका और भी कई धाननाए दी।

त्रिवेदीजी जेल म छूटने पर खामगाव आ गय और कांग्रेस क रचनात्मक कार्यों म भाग लेने लगे। सन् 1933 में आकोला जिला कांग्रेस क डिप्टेटर बन और नवा माह फार रहे। सन् 1934 म बालापुर तहसील क एक गाव म पुलिस ने गिरफ्तार किया। एक साल की इह सजा दी गई और आकोला जेल भेज दिया गया। मध्य पदश के गवर्नर और कांग्रेस म समझौता हान पर साडे चार माह बाइ छोडे गये।

सन् 1934 म न पीपलगाव आय। उन दिना हैजा फलन पर धर धर जाकर जनता की नवा की। सन् 1934 क अरन म इनके ताऊजी के लडके रूपदत्तजी पीपलगाव आये और इह चण्डा चल ल और। इहाने अपने लिए काम शुरू निकाला। महावीर मडल और महावीर वाचनालय प्रारम्भ किया। दयानिहंजा नयमलजी भेट्टा, जुगराजजी मट्टू मीठालाल बाबा पूरणमल शमा शंकरलाल माधुर, मुल्ग्यार अहमद अमारी आदि मनी कनक सहयोगी थे।

बठनेहार बेराजगोरी आदि के बिनाफ जागोरणर म मषय मोल लिया। मागीलालजी न कहा—मैं बेकार हू मुझे काम पा। उन दिना मारवाड लाक परिषद के नेता जननारायण व्यास जाधपुर राज्य म निर्वाचित थे। मागीलालजी न गेजराजजी क मन्याग म और महावीर मण्डल क कायकताजा में जिनवर 15 मइ 1934 म मुल्ग्यार अहमद की आयक्षता म एक ममा मर बाजार चण्डावल म की। धी दयालमिह गहनेल, पूरणमलजी और मागीलालजी मागीलाल के भाषण हुए। जागोरी जुन्मा के बिनाफ डटकर बाबा



गणपथील राहू वे राही बाबा इत अणमानजनक यवहार का भी बयान 'नाममत्र शब्द' का प्रयोग करके हम कर टाल दत थ। दूसरी तरफ हम निचार कर कि इनस बडा कारी पाप नही है कि एव भाव अणन जस दूसरे मानव का जानवर स भ हय मान। अणन घर म पुत बिलो घ्रा सवत है उनका हम प्यार स स्पश करत ह हमार बचन मादी म उठावर उन्क साथ सलत है लभिन ह मान का छूने म उनकी बराबरी म मानव का धम भ्रष्ट होता है। इम स दभ म बाबा की मायता थी कि अस्पृश्यता स आपम म भेत्माव और बटुता का भाव उत्पन्न होता है। साथ ही व इस बात पर बल दन व कि समय क साथ प्रत्येक घादमी का बदलना हागा।

गगीका वे मसीहा—बाबा प्रतिदिन दलित वग क मीहला म जान थ। बहा अमर कारी बामार हाता था—उसक दुख र्ण निगारण हनु उस चिबित्सा मुबिया या धार्मिक सहायता, जो भी होना था—अनाज बण्डा या दवा'या' उपल य करवात थ। अमर किमी दलित के साथ अयाय अत्याचार हाता ता बाबा उह वानुनी प्रत्रिया द्वारा विधि-वस्ताप्रा और सम्बन्धित अधिकाारिया क मायम से मुक्ति सम्भव करवात।

बाका क 'यत्तित्व की सबसे बडा विशेषता था कि उहान अणनी जमीन भी, जा जागीरा म प्राप्त हुई थी, वास्तवारा का द दी और उहाने यह नारा दिया—'जमीन किसकी जात जिसकी।

स्वतंत्रता प्रादान क लौचन बाबा स्थानीय सामग्रहाही क विचार हुए। जिस समय बाका मारवाड लाक-परिप' क अयक्ष उ उस समय का चण्डाबल हत्याकाण्ट चर्चित रहा ह। चण्डाबल क विमाना को अणनी महनत का हक दिलान के लिए बाका मामीलालजी त्रिवेदा आलाशान क साथ जय चण्डाबल पृह्व ता तत्वानीन ठाठुर मापालसिंह द्वारा गाव का सीमा पर ही राक दिय गय और ठाठुर क गुर्गा (माडेती गुण्डा) न उन पर लाठिया और मात्रा न हमला किया जिसम बाका गम्भीर रूप स पायल ही नही हुए वरन् अणना एक आल की रोगनी मा छा बटे। धायल अयस्या म बाबा का साजत अस्पताल म भर्ती करवाया गया। जब यह खबर इस रूप म उनकी माताजी का मित्रा कि बाबा की पिटाई हरिजना द्वारा की गयी है ता धार्मिक बट्टरता की अनुमान्क उनकी माताजी न बह लखडी जा उस समय उनक हाय म था अस्पताल पृह्व कर, उसी स उनकी पिटाई शुरू कर गी। उस समय बाबा का गानी मसोच दत हुए महात्मा गांधी का भी घम भ्रजक कहकर मला-पुरा कहा। साथ शान्त होन पर ही बाबा मा म बच पाय क्यार्थि मा क नि'ए सबन बडा असहनीय कारण यह था कि बाबा एक ब्राह्मण न और उनकी पिटाई हरिजना द्वारा का गयी थ।

सन 1970 म बाबा अचानक पक्षाघात की चपट म आ गय। उस समय उनक पाप अणनी बीमारी के इलाज क लिए घन का पूणत अभाव था। इसलिए तत्वानीन चिबित्सा मत्री श्री माहन अगलती श्री मुण्यमत्री बरवन्तु नावा ने दबाइया मुहैय्या करवायी। बीमार अयस्या म तत्वानीन मुण्यमत्री बरवन्तुनावा न जब सरकारी महायता की घनराशि उह देन की पताबन की और नहा कि आपन देश के लिए बहुत कुछ किया है, आप लागी की बदालत दश आजाद हुआ है, क्या राज् सरकार आपने लिए इतना सा भी नही कर सकती? ता बाबा का उत्तर था—क्या मरी गवाधा की कीमत सरकार चन्द रुपया म प्राव कर मुमन उच्छेण हांना चाहती है? इस पर मुण्यमत्री निरत्तर थ।

स्वर्गीय बाका का स्वतंत्रता आन्दोलन म सक्रिय भाग लेने के लिए मरखार न उह ताअपत्र और पेंशन की स्वीकृति प्रान्त की जिम्का भी गरीबी क इम मसीहा न लने से इकार कर दिया। तामपत्र क विषय म उनका कहना था कि हमने अष्ट नौकरशाही क हाथ लग हुए हैं और इतम अष्टाचार की बू आ रही है।

स्वर्गीय बाबा बहू भाषाविन थ। वे मारवाडी, गुजराती, मराठी, हिंदी संस्कृत अरेजी म यथाम्यान अणन विचारा की धर्म व्यति कर देत थ। वे यरुय म इम बात पर बल दते थ कि शापित वग भीडित वग को दुसा स छुटकारा दिलांना ही मानव माय की सवा है। इसलिए बाका ग्राम्य अचल म गरीबी क मसीहा क नाम स जाने जात थ।

वीर पुत्र

श्री मागीलाल त्रिवेदी 'आलीशान'



श्री मागीलालजी 'आलीशान का जय चण्डाबल ग्राम म पडित वशालाल त्रिवेदी क सुपुत्र रामेश्वरजी एव माता मनीबाई क यहा विजयादशमी विभ्रमी सब् 1956 तदनुसार 14 अक्टूबर सन् 1899 का हुआ। बचपन मे उनक दादा बशीलालजी न इहू बगत् ज्योतिषि और द्विनी की शिक्षा दी। शाकुबंद का भी साया रण नाम इदोरे क बच हठुरामजी स मिला।

नो बध की श्रापु म मागीलालजी अणने मामा असकरएजी क साथ तालुका बरार जिला सुल्ताना के आसलगाव गय और पूजा पाठ का काम करन लग। कुछ वर्षों क बाद इनके माता पिता भी पीपलगाव आकर बस गये। मागीलालजी अपनी माता के पास स पीपलगाव आ गय और पिता के साथ पूजा पाठ के काम म लग गये।



11 वष की आयु म मा से लकर पाच रूपयो की जमा पूजी मे सुगणित द्रयो की दुकान खाली, जो घञ्ठी चल पडी। धीरे धीरे कुछ ऐजिसिया मी ल ली और इनकी आयुनि स्थिति म मुषार आने लगा।

14 वष की आयु मे जब अखिल भारतीय माहेजवरी महाममा के अध्यक्ष नेठ गोविन्ददास थे, तब यह महासभा के प्रचारक नियुक्त हुए। वे अपनी दुकान मी चलाते रहे और प्रचारक का काय भी करते रहे।

इही दिना मागीलालजी खामगाव के प्रताप अलाबा के व्याधाम शिक्षक पन्नालालजी व्यास के सम्पर्क मे प्राये और प्राय समाज मे काम करने लये। गाव एक्टमाल मे 135 मुस्लिम परि वारो को शुद्ध किया और हिंदू धम म लौटाया।

सेठ बालकिशन दास भट्ट और सेठ तेजनाथ चण्डक के प्राग्रह स सुगणित सामान की दुकान उठाकर कपास का धन्धा शुरु किया। इन काय म उक्त दोनों सेठी ने उहे सहायता दी।

सन् 1917-18 मे लोकनाय बालगमाधर तिलक के भाषणा का प्राप पर विधेय प्रभाव पडा और बाबासाहब पराजपे के नेतृत्व म होमरूल आन्दोलन मे भाग लिया। पंडित हरिवल्लभ दवे की ज्येष्ठ पुत्री त्रिवेदीजी की पत्नी हीरादेयी देश सेवा म इनकी सहायिनी बनी। 1919 मे इनके एक बच्चा पैदा हुआ। यह यापार के साथ साथ देश सेवा भी करते रहे। इनकी मा पत्नी और बच्चा बीमार रहते। 1924 म उनकी पत्नी का देहांत हा गया। उनके 4 दिन बाद उनका पुन भी चल बसा।

आलीशानजी सन् 1924 म कांग्रेस के प्राथमिक मदय बने जो आजीवन रहे। पत्नी और पुत्र का त्रियाकम चण्डाबल आवर किया। बीमार पिता का इलाज इही दिना गोधपुर म करने क बान उह पीपल गाव ले गये जहा उनके पिता का देहांत हो गया। 7 2 27 का गांधीजी के खामगाव आम पर इह उनकी सुरक्षा का काय सोपा गया। वे इन दिना हरिजन उत्थान के काम मे लये य।

सन् 1930 म गांधीजी की दाीयात्रा म शामिल हुए और जलगाव जामोद कांग्रेस के तहसील मची बनाये गय। तहसील काया लय पीपल गाव रखा। इहोने जल-सत्याग्रह मे भाग लिया और छिपकर काम करते रहे। आखिर सन् 1931 मे गांधी इरविन समझोते के बाद जब नमक-सत्याग्रह ब जाल सत्याग्रह स्थपित हुए तब यह जनता म प्रकट हुए और प्राप्तलगाव कन्वे मे दारू की बुनानो पर पिकेटिंग किया। शराब के टैकसरा म गुञ्जे द्वारा इनकी

जमकर पिटाई कराई। गल के पास की हड्डी-हसली टूट गई। पीपल गाव म इलाज कराया गया, तब ठीक हुए। विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन म 5 7 बार पकडे गये और छोड दिये गये।

सन् 1932 म गालमज काप्रेस म लौटत पर महात्मा गांधी का गिरफ्तार किया तब देश भर म आन्दोलन चल पडा। 26 जनवरी को इद के दिन माटरगाव म नापण देने पर त्रिवेदीजी 28 का गिरफ्तार किये गये। इह 9 माह की सजा हुई। इनका डाक्टरी मुआयना भी नहीं कराया गया। इह एक के बाद एक कोर्ट से लेख बेटेने, पत्थर फोडने और चक्की पींगने के काम म लगाया गया। इहाने तीन बकिन्धा तोड दी। उनके अपराध मे इनक आडा इण्डा तीन महीने तक लगाया गया। जेल मे साधारण कठिना को खराब खाना मिलता था। इस के लिए बकिया से सत्याग्रह करवाया। 12 दिन बाद गेहू की बोरिया मिलने लगी। अधिका रिया न इस सबके लिए उनका और भी कइ यातनाए दी।

त्रिवेदीजी जेल मे छूटने पर खामगाव आ गये और काप्रेस क रचनात्मक कार्यों म भाग लेने लग। सन् 1933 म आकोटा जिला काप्रेस के डिप्टर बन और मवा माह फरार रहे। सन् 1934 म बालापुर तहसील के एक गाव म पुलिस ने गिरफ्तार किया। एक साल की इह सजा दी गई और आकोटा जेल भेज दिया गया। मध्य प्रदेश के गवर्नर और काप्रेस म समझौता होने पर साडे चार माह बाण छाडे गये।

सन् 1934 म व पीपलगाव आये। उन दिना हूजा फलन पर घर घर जाकर जनता की सेवा की। सन् 1934 के अंत म इनके ताऊजी के लडके रूपतजी पीपलगाव आय और इह चण्ण बल ले आये। इहोने अपने लिए काम ढूढ निकाला। महानीर मडल और महावीर वाचनालय प्रारम्भ किया। दयालमिहजी, नथमलजी मेहता, युगराजजी मट्ट, मोठालाल बाका, पूरखमल कामा शंकरलाल मायुर, मुन्ध्यार अहमद जसागी आदि सभी उनके सहयोगी थे।

बठ-नेगार बेराजगारी आदि के बिनाफ जागीरदार स मध्य मोल लिया। मागीलालजी न कहा—मैं बकार हू, मुझे काम दा। उन दिना मारवाड लोक परिषद् क नेता जयनारायण व्याम जायपुर राज्य म निर्वासित थे। मागीलालजी ने देणारामजी के सहयोग स और महावीर मण्डन के वायकताना से मिनकर 15 मई 1934 म मुन्ध्यार अहमद की अध्यक्षता म एक मन्ना मन्ड बाजार चण्डाबल म की। थी स्यालसिंह गहलगत, पूरणमलजी और मागीलालजी आलीशान के भाषण हुए। जागीरी बुलमा क विवाफ डठकर बाला



गया। जयनारायण व्यास उन दिना व्याकर स 'श्रीगीवान' धरवार निवासत थे।

सन् 1934 म मारवाड लाक परिषद् की शाखा चण्डावल म नायम की गई। सन् 1940 मे मारवाड लाक परिषद् वा संस्थापक प्रारम्भ हुआ। श्रीलीलानजी जोधपुर म गिरवार निय गये। पुलिस ने उनकी पिटाई की और मुत्तारा की नायुना स नीचा। इट मुकदमा चने पर मजा मुना दी गई और जेल भेज दिया गया। छुटने पर चण्डावल आये और 11 फरवरी, 1942 का जागीरी धरवारना की बिगड सुबी जाच की माग का लकर भूल-बूझताल शुरु कर दी। तबलीन कीफ मिनिस्टर के आदेश पर साजत फ़ािम मिदखरनाय चण्डावल पहुँचे। मारवाड लाक परिषद् ने महामंत्री विजोरमल महाल नी चण्डावल आय। दोना के भाग्यसना पर उहान भूल इत्ताल तोडी। इस नाम म चण्डावल ठिकाने की जनता न पूरा मगमन दिया। जागीरदार की और स श्री मालीलालजी श्रीलीलान और छत्रजी को बदल म चण्डावल ठिकाने स बाहर निकाल दिया गया।

28 माच सन् 1942 को चण्डावल म समा बुलान पर जागीरदार डार नमिया व ठिकाने के भाडे के आदमिया स मारवाड लोक परिषद् के भागवतीभा का पिढावाम गया और खदेडा गया। लगनग 27 भागवती भायल हुए। श्रीलीलानजी और छला नामजी निवासित निय गये।

18 मई 1942 को लाक परिषद् क भागशे की रणछाडदास टाढनी चण्डावल भाये और सफन समा हुँ जिसम ठिकाने बाजा के शमन पस्त हा गय।

मारवाड लाक परिषद् क आ दालन के 15वें डिक्टेटर विष्णुदल पुराहित 16वें डिक्टेटर श्री मालीलालजी श्रीलीलान व श्री यशवत की शबर का दिनाम 5 2 43 वा जाधपुर म भलग घलम स्थान म गिरातार किया गया और तबलीन सवाल मजिस्ट्रेट हरराज मिपवी द्वारा इनका मित्र मित्र मजायें दी गये। मालीलालजी की गिरफ्तारी के साथ उहान प्रथमा उत्तराधिकारी विजयशबर देवे मिरमारी के साथ प्रथमा उत्तराधिकारी विजयशबर देवे मारवाड को 17वा डिक्टेटर घोषित किया। देवे के भागकाल म मारवाड का परिषद् और जाधपुर राज्य म समझौता हुआ और समी राज नतिन भागवती और निन म रख हुए मजरेदी रिहा कर दिव गये। श्रीलीलानजी परिषद् क भाया म रुचि नत रहे और व चण्डावन म ही भाग्यरत रहे।

देग विमानन के बाद म मारवाड जनत पर प्रस्थापी मिगिर म सहायता भाग करत रहे। व उम्मद हा शाता साजत क दा घप

सन्दी मातरम्

अवस्थापन रहे। धपने अंतिम दिना म ग्राम विवास भायी म, विशेषकर तासाव व वाप भायी म दिलचस्पी लेत रहे और नेहट नाचनालय चलत रहे। दिनाम 5 अगस्त, 1976 वा चण्डावल म श्रीलीलान जी वा देहात हा गया। के जीवन के अंतिम मूढ वर्षों म लकचे स पीडित भी रहे।

टूट गये पर भुंके महौं श्री कन्हैयालाल वैदिक

□

पाली जिल क प्रथम प्रातिकारी स्वतंत्रता संगामी के रप म विरमाय है-श्री कन्हैयालाल वैदिक, धागेराव। वैदिकजी प्राति मारी धाडोलम म कलकत्ता म शामिल हुए। यह नी तथ्य सही है कि उन दिना म भारतीय विशेषकर प्रवाल के प्रातिकारिया की गतिविधियो स अग्रज सरदार प्रातित थी। चटगाव म भायत गतिविधियो की टोली म वैदिकजी को अहम् भूमिका रही थी। प्रातिकारिया की टोली म वैदिकजी के अहम् भूमिका के सरकारी मरु-इस टोली का प्रमुख भाग था-समी प्रवार के सरकारी मरु-इस टोली का प्रमुख उद् भाग प्रलग के-डा पर पढुचाना और मरुमागारा का नुटकर उद् भाग प्रलग के-डा पर पढुचाना और जहा मौका मिलत रहा जेज व उनके विपारिधिया वा सफया करती रही। सन् 1919-20 मे प्रपन दल के भाग सारियो सहित भाप गिरफ्तार कर लिये गये और भापकी जैवर म नज्जद रला गया। उहे नारावास के दौरान प्रभागीय यातनाएँ दी गइ फस-स्वरुप भापका स्वास्थ्य विस्तृत गिर गया। स्वास्थ की गिरावट न परिवारजना और समझी घयो का चिन्तित किया। उहे चटगाव स धपने पतक भाव धागेराव (मारवाड) प्राता पडा। यहा प्राकर उहान भाव और आसपास मे देना तो पाया कि मारवाड म नी राजभाही और सामतभाही के मरुमाग परराजडा पर है तो चटगाव की बहु लो, जो उनके मन म जोर-बुलम के विरुड प्रज्जित हुँ थी वो यह जय सामतभाही के विरुड गते हुए दनीप्यमन हा उठी।

कन्हैयालालजी के पिता श्री मृतालालजी श्रीमाली ग्यातिप के मरुडे माता व। तबलीन जागीरदार एव घमाडव व्यक्तिया म इनकी प्रतिष्ठा थी। इनक पूवजा की बहुत समय पहले धागेराव नाडाल चापदी चाणोड भगवानपुरा मादि गावो म भाफी जागार क बेरे एव भूमि मिली हुँ थी। परतु, भागत स लोले के बाद स्थानीय पुलिस की तो उनकी मुज गतिविधिया की भनक तक नहीं पडी। पर अग्रे की राज की सुनिन ता इह बुड ही रही थी। उन्हो

सन्दी मातरम्



**प क हैयालालजी वदिक
युवावस्था मे**



दिनो राजस्थान क अग्रणी स्व-तन्त्रतासैनानी श्री विजयसिंहजी पधिक माणिक्यलालजी वर्मा आदि कई नेता विचार विमर्श हेतु तथा पुलिस की धावा स आभल होकर भूमिगत होन की दृष्टि से क-हैया लालजी क यहा आत रहत थ ।

शहीद चन्द्रशेखर आजाद को एक बार चार दिन के लिए श्री रामनारायणजी चौधरी ने अनातवाह म इन्हीं के साथ रहने के लिए भेजा था । इन सभी गुप्त हरकत का राज आखिर खुल ही गया । इनक घर की तलाशी ली गई । बहुत सारे पत्र कागजात पुस्तक जल्द की गई । एक अग्र्य तलाशी म कुट्ट शस्त्र और बम बनान की सामग्री भी बरामद की गई । उक्त सम्पूर्ण घटनाक्रम स स्थानीय पुलिस भी सतक हो गई । सन् 1940 म क-हैयालालजी का उनके छोटे भाई स्वतन्त्रता सेनानी महिधरजा के साथ नाडाल म नजरबंद कर दिया गया तथा इन लोगो की माफी की जमीनी तत्कालीन स्टेट की आना स ठिठाना धाणेराल ने जम्त कर नी । इन सारा परिस्थितिना न क-हैयालालजी वदिक और उनके परिवार की आर्थिक स्थिति का कमजोर कर दिया मगर य तो दूट जाना-पर भुक्ता नहीं जानत थे । अभावो की जिदगी इनका स्वभाव बन गया था ।

आप जागीरी जुल्मा, बढ वगार लाटा व जागीरदारा के बमचारिया द्वारा मनमाने ढा के अमानुषिक अत्याचारो क विरुद्ध सपथशील जीवन व्यतीत करन लगे । अम तो राष्ट्रीय चेतना की सहर दूरस्व गावा मे भी व्याप गयी । अदिकजी ने कई बार बडी हानि उठायो, पर वे सपथ के पथ पर डटे रहे, हटे नहीं । यह कहना सही है कि पालो क स्वतन्त्रता सेनानी वदिकजी उग्रवादी थे । गांधी बाद मे उनको आस्था नहीं थी । यह उसे गतिहीन तथा आयाव-हारिक समझत थे । आजादी की प्राप्ति के बाद उहाने राजनीतिक गतिविधिया स सहाय के निम्ना था और भारत माता का वह सपूत सन् 1973 मे अपनी जन्मभूमि धाणेराल म ही काल-कवलित हा गया ।



बहादुर और सत

श्री छोटमल मुराणा



समाज की वास्तविक सेवा क लिए कभी एस सवामाची 'यक्ति भी जन्म नैत है तिन पर न कवल

एक प्रात धलिक सम्पूर्ण राष्ट्र एक इतिहास बाद मे गव करता है । सब पर प्यार सुटान वान और अपने लिए कुछ न चाहा वाले लोग इम युग म बडी कठिना' स मिल पाते है । एस ही लागो की पक्ति म श्री छोटमल मुराणा थ । आपका जन्म नागौर वे एक मध्यम श्रेणी परिवार म श्री सीमायमलजी मुराणा क घर 7 जून 1902 ई के दिन हुआ । आपके पिता बालो (जिला पाली) म बकील थ । आपके प्रारम्भिक शिक्षा यहा पीपल के वक्ष के नीच छपर म हुई जहा गुरासा सा' लटवा को एज्ज करके पढाया करत थे ।

आप प्रारम्भ म ही उद प्रतिज्ञा साहसी एवं आत्म विष्वासी हान के साथ सत्यवत्ता व । उम समय भारत अग्रजो का गुलाम था और अर्थजी शासका के दुयवहार स सभी भारतीय अत्यन्त दुखी थे । मुराणाजी की चढती उम थी । उनके मांस म देश प्रेम हिलोरे ले रहा था । 17 वष का उम्र म आपके वस्त्र विभाग मे सरकारी नौकरी मिली । उम गिना सरकारी नौकरी का बडा ही महत्व था । सरकारी नौकरी मे हान के कारण मुराणाजी क परिवार का समाज मे काफी जादर-सलवार हुआ करता था ।

एक दिन सरकारी अफसर ने निरीक्षण के दौरान मुराणाजी स ऊपर की आम्दनी का प्रतिज्ञत मागा तो उम्हाने तपाक स कहा— 'थीमान् ! न मै रिखत सता हूँ और न ही देता हूँ । यह मुनकर अपसर बडा क्षु'ध हुआ । पर धुन के घनी व देश प्रेम के दीवान का क्या परवाह । रिखत वाली नौकरी उह रास नहीं घापी, उहाने बिना सोच विचार उम नौकरी का ठोकर मारकर घर की राह ली । आपके मित्र व घरवाल बहुत चिन्तित हुए ।

सरकारी नौकरी का निवाजलि दकर आप देश क स्वतन्त्रता सश्राम म तूद पडे । उत समय राजनीति क आराध म गांधीजी उज्वल नद्यन के समान चमक रहे थ । मुराणाजी न मन ही मन अपने को गांधी के आदर्शों का अनुयायी मान लिया । सन् 1920 ई

जीवन दीप जले ऐसा, सब जग को ज्योति मिले ।



मे गांधीजी श्रमहयोग आन्दोलन में रत थे और अग्रजों को नहीं तप्या स श्रमगत कराने के लिए सत्याग्रह कर रहे थे। सुराणाजी ने श्रम को आज्ञा देने के उम समय की बड़ी मानत हुए मोडवाड को श्रमना कायक्षेप बनाया और उसी क्षण श्रमन विचारों के श्रुतुल्ल ममान के स्वयं निर्माण हेतु लाक सगठन के काय म जुट गए।

वह मामतवाक था। सम्पूर्ण भारत म जागीरी प्रथा जारा पर थी। जागीरदार तथा सरकारी कारिग्रे किसानों मे मनमाना टक्स वसूलकर श्रमना ऐश्वर्यमय जीवन जी रहे थे। राजपुताना रियासत को गाडवाड म जागीरी का सबम बडा टिकना बडा गाव था। ये जागीरदार किसानों के हितों को उपसा कर गांवा म नाटा बाटा, बंट वगार लाग बाग की जबरत वसूली करते थे जिससे किसान श्रमधिक दुखी थे।

आज्ञा देने के इस दुबारे म सबप्रथम किसानों को इस दुखती हूँ रम पर हाथ रखा। इन्होंने किसानों का इस नीपण समस्या म उमारन क लिए सत्याग्रह असहयोग व अहिंसावादी नीतिया का सहारा लिया। किसानों को गदन लम्बे श्रम म जागीरदारों के पावा के नीच खीं हुई थी और व श्रमनी गमन का साधुत रखने के लिए उनके पावा को सहला रहे थे। सुराणाजी ने माट्टण म खेतीहर किसानों (शाहणों) का संगठित किया उनसे श्रमनी श्रोजखी बाणी स नट प्ररणा भरी उह सलकारा श्रमने प्रधिकार के प्रति मचत किया। नई जागृति भरत समय यह उगाहरण लिया कि नम म्हाणों चारो-बाटा म्हाणों जमावणों विलावणों माणी श्रर धी जागीरदार खावे धा केडी रीत है ?' किसान माइया यह बताना कि फिर धी पर किसका अधिकार है ? किसानों का समवेत स्वर सुनाई दिया— म्हाणों। दूसरे उगाहरण ने तो किसानों को प्राणें खान दी कि खेत म्हाणा हल म्हाणों धीज म्हाणा, बिजरी निपण म्हाणों मेहनत म्हाणों, साठो प्रायो ता धान रप्य म 12 प्राणा उगागे (जागीरदारों का)। आ कठारो चाय है ? किसानों की ही वाली म उहान एक नई खेतना भरी।

जिस समय सुराणाजी गावा म जाग्रति का श्रल्ल जगा रह थे उस समय जागीरदार अग्रजों के सरक्षण म ऐश्वर्यमय जीवन जीन हुए मन्नास हू रहे थे। गाव बडा जा उस समय मन् 1924 ई० क प्रासपाम गणमाय टिकना माना जाता था, के विरुड उहाने जमकर धावा लिया। माट्टण क वास्तकारा को सलवार कर गमठित किया और सत्याग्रह म घरना देकर बैठ गए। किसानों ने जागीरदारों म असहयोग किया, श्रमशोगत्या जागीरदारों ने जोर जुम्य की आजम उठाली किसानों की गमन पर स बरहमी का पांव उठा दिया। इस माट्टण क सत्याग्रम सुराणाजी का गाडवाड क्षम म विम्यान कर दिया।

सुराणाजी श्रमवरत सधप के लिए हृतमवल्प थे। श्रामन जहा जहा जोर-जुलम देला, उसी क्षण वही पालवी लगाकर सत्याग्रह के लिए छड गये। श्रानावानी हुई तो मिड गये। कोई लडन को उताक हुषा तो लड गये, पर मीदान हाथ स नहीं जाने दिया। इस आज्ञादी के दीवाने ने गाडवाड की भूमि म धूमत समय जब यह पाया कि तहसील देवुरी क गाव खरोबडा पर श्रयाय और श्रयाचार का घटाटोप है, सेठा ने गरीबों को आज्ञावित गुलाम बनाये रखने के लिए म्हाणों की जजीरा से जकड दिया है सरकारी कारिग्रे ने सेठों की मिलीभगत स श्रमनी ही जेबें भरनी प्रारम्भ कर दी है और दूसरी तरफ बेचारा किसान सेठ जागीरदार तथा सरकारी कारिग्रे-इन तीना का बमर पर चढाये गे रहा है जिसने कारण उसकी कमर और गदन भुक गई है, वह बमर शीधी बन क लिए गिडगिडा रहा है किन्तु इस तिवडी का पत्थर दित पीसजन का नाम नहीं ले रहा है उस समय सुराणाजी स्वतंत्रता का श्रल्ल जगाने के लिए गाव खरोबडा गये और गिरी हुई लाठी को उठाकर किसानों के हाथों म थमा दी। इसम उस तिवडी को एव धक्का लगा। दूसरी ओर सुराणाजी श्रुपका के ममीहा बन गये। सुराणाजी न कजगरा व वास्तकारा को संगठित कर इस श्रमानवीय यवहार के विरुड मोर्चें लिया। इस मोर्चे से मठ-साहकार तथा सरकारी तन् सुराणाजी के विरुड हो गया। फिर भी सुराणाजी सत्याग्रह पर अडे रहे। श्रत खरोबडा गाव के किसानों और गरीब गुरुवा को जागीरदारों व सरकारी तन् द्वारा मरक्षण प्राप्त हुआ और व रहमी का ताण्डव नय समाप्त हुआ। किसानों को तो आपने मोर्चे स राहत मिल गई, पर स्वयं के निण एक प्रति-न्डी मोर्चें बन गया। इनसे उह श्यक्तित रूप म श्रनेक यातनाए भी सहन करनी पडी।

गोडवाड के किसानों और शोपण पीडित जनता के यह ममीहा श्रमनी व्यासि स अजमर, मेवाड और मारवाड के प्राति कारिया स श्रममृक नहीं रहे सने। पत्र श्यवहार क सूत्र म के अय प्राता स भी जुडे रहे। मारवाण लाक-परिपू' तथा "मारवाड हितकारिणी समा क मन्त्रिय सदस्य क रूप म जुडे रहे और के गोडवाड की घरा का शोपणमुक्त करने क लिए सामाजिन तथा राजनतिक जाग्रति का प्रचारित एव प्रचारित करन म जी जान स जुट गए। श्रापने प्रेरक के रूप म श्री श्रान-राज सुराणा श्री भवरसाल सरति तथा श्री जयनारायण व्याम क नाम प्रमुन हैं। सुराणाजी का श्रमनी मित्र महमी पर नाज था, बर्षाति सब हर समय सहयोग एव जन-भवा क लिए तत्पर रचन थे।

बेडा एव खरोबडा क जागीरदार सुराणाजी के सम्ब सधप न या ही नाराज थे, दूसरी श्रर श्रापको विराट्टरी म ही पनपने



हुए मठ भी इनकी प्रसिद्धि स इंध्या रखते थे एब इनकी जनति पर प्रश्नवाचक कि-हू लगाने के लिए वेताब थे। जन एक बार जब यह नपरिखार बैलगाड़ी में सवार हा, बाली को लोट रहे थ, तो कतिपय विराधिया ने इहे "यकिगत प्रताडना देन के लिए इनक परिवार को लुटाया। जब लुटेरे बतगाडी की तरफ आते दिखायी दिय, तो स्वयं अपनी एक मात्र तलवार ल, पत्नी से धीरज बधवाते गाडी से कूद पडे। घटा सधप के बाबजूद गाडी तो लूटी गई पत्नी न महज भाव स जेवर लुटारा को माप दिये। आजादी की दीवानगी म सारा समय बीत जाने क कारण घर की धामदनी मद रही और एक स्थिति म आकर घर का आर्थिक ढाका गडबडाया पर घन क लिये सुराणाजी कभी विचलित नही हुए। न ही उहाने सठो की तरह अहमद की टोपी मेहमद को पहनाने की चेष्टा की—अर्थात् घन म घन कमान की नीति म उनका विश्वास नही रहा।

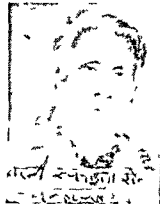
सुराणाजी स्वाबनम्बी हान क कारण हमेशा अपने हृदय म श्यामी शान्ति की हो अधिक महत्व देत हुए अपने हाथ से ही शबत और चूण बनाकर बेचने लग। इस शबत और चूण की स्तरीय बनावट को लेकर उनके जीवित उपमाक्ता आज भी उहू याद बिया करत है। बहून का अनिप्राय यह है कि गाडवाड की घरा ना यह लाडला सपुत हाथ क हुनर म भी माहिर था।

बैन, जहा आपन सरकारी तन और जागीरदारो को भाडे हाथा लिया बहा जमाखारो मुताफाखारो तथा भ्रष्ट सठा का भी नही बरूथा। इसी सधम मे उनकी ईमानदारी के अन्नक सटीक उदाहरण भी मिलत है।

एक उदाहरण सुराणाजी की जिंदादिली बतान लायक है। एक बस मालिक जीर सुराणाजी क बीच कस्टम मे माल क विवाद के प्रश्न को लेकर बहस हो गई। बस मालिक ने टायर क नीचे नुचल कर मारने की धमकी के साथ उनका खागी ऊ बा और गांधी टोपी का फाउकर फर दिया। जान से मारने की धमकी पर उहू इतना त्रिब नही आया जितना गांधी टोपी के अपमान पर। उनका जहा भगडा हुआ था, उसी स्थान पर भूख हडताल कर दी। इनक इस अपमान की बात बाली की जनता को सहन न हा सक्ती और एव जप मोड उस बस मालिक को जता की सहन न हा क लिए उनका पीछा करने का तयार हुई लेकिन तत्कालीन जिलाधीश न आश्वासन द दिया कि दापो व्यक्ति को शीघ्र ही पकड कर लाया जायगा व 3 4 दिन म उसे पकड कर लाया भी गया। बस मालिक ने सुराणाजी स क्षमायाचना करते हुए कहा— जो भी मण्ट आप मुझे दंगे मुझे मजूर है। इस पर सुराणाजी न उहू दण्ड के रूप मे एक खादी का भन्ना व टोपी कापिस हायालय क में भेंट करने का दण्ड सुनाया। भन्ना व टोपी कापिस कायालय का

मटकर, किसी की बात से भ्रमित होकर एक आशय पुरुष के साथ बसा धिनीना यवहार करने पर पश्चाताप करता हुआ बस मानिक नतमस्तक हा गया।

निरंतर सधप की आवाज बुलंद करन वान सुराणाजी कब तक खर मगत अन्तत सरकार क अंग वापुन न सन् 1940 ई० म दफा 6 ए०एम०जी० राजद्रोह का मुकाम्या चलाकर इहू बाली के जिले की जल म डान दिया। जल मे इहू कई प्रकार की शारीरिक यातनायें तथा धमकिया भी मिली कि तु व अपन पक्ष स नहा हट और न इहू डिगा पाई गरीबी, भुखमरी और बरूचा की बक्सी। इतना मजूर हू पर भुक्ना आपन कभी सीखा नही। इसा जेल म उनक साथ स्वतंत्रता सेनानी श्री रणटाडदासजी गट्टानी जोधपुर बाल भी थे। गट्टानी सा द्वारा रचित स्वतंत्रता प्ररित गीता स सुराणाजी प्रभावित थे।



स्वातंत्र्यवीर

श्री छेलाराम

□

पण्डेय वरनमन जी मास्टर
(चण्डावल) पुरानी स्मृतिगा क
गण्डार म स अनमाल सस्मरण

सुना रहे थे। यकायक उत्तेजित हा बहून लगे—हमार गाव क इस छलजी हीरागर की बहादुरी सहनशक्ति और राष्ट्रमक्ति की तुलना मे राजस्थान का आजा क कोड नंता सडा नही रह सकता। इनक शरीर की एक एक हड्डी-पसली तथा दूध दूध चमडी कीडा लाठियो व जूता की मांग के निशाना स मरा पडी है। इनका साहस तो दबिय—सन् 1935 की बात होगी चण्डावल ठिबने म छलजी की बुलाकर ठापुर न अपन नीकरो को आदेश दिया—इनको 108 जूत लगाय जाए। बस हूकम की देर थी—घडाघण पजन लगे सिर पर जूत। जूत मारन वाला एक यकता तो हूगर आग्या बुलाया जाता पर छलजी का देखिय—हर जूत की मार पर इनन मूह से निबलना भारत माता की जय का उद्घाप। गाव क सकडा लाय विस्मित थ और आपस म वाताप भी करत कि छत्रता म इतनी शक्ति वहा स प्रा गई। सबमुक, यह ता 'भारतमाता' और 'मट्टामा गांधी' के नाम का चमत्कार है।



77 वर्षीय छलारामजी का जन्म अष्टमशासक अजमेर मुस्य माग पर स्थित पाथी के चण्डावल ग्राम में सन् 1913 में हुआ। ये जाति के हीरागर (अनुसूचित जाति) हैं अतः उम जमान में अधिक पढ़ाई भी नहीं कर सके। तबिन वायफाल स ही जागीरी जुमा, बट बगार व साग-बाग की धमानीवीय यातनाएं इन्होंने स्वयं अपनी नजरों में देखी थी और बिमाता तथा भूमिहीन मजदूरों, विधवाओं अनुसूचित जाति के लोगों के दुःख-पद का चित्र स्वयं उनकी छाया के प्रागे सजीव ताजता था। इस प्रष्टमूमि ने युवक छलाराम व तत्कालीन व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह की भावना भर दी और इस जोग बुरत की सामान्य-व्यवस्था का समाप्त करने हेतु उनका युवक हृदय एतपदान लगा।

उम समय स्वर्गीय मागीलालजी दिनेशी छालीशान चण्डावल के ही नहीं सारे क्षेत्र में ('पावर में उकर पाती तब क') आजादी के समय में कायरन सभी कायबतोंप्रा के अनुयायि। उन्होंने छलारामजी में एक साहसी, सपन करने वाला और समर्पित राष्ट्रीय भावना में भ्रोन प्रोत व्यक्तित्व देवा और सन् 1934 में मारवाड लोक परिषद् में महान् नना तपनारायणजी 'याम की चण्डावल बुवावर छलारामजी का मारवाड लोक परिषद् का सदस्य बनाकर स्थानीय माया में दीक्षित कर दिया। अथ क्या था, छलारामजी रात दिन अज्ञेय-नाप्रायशगही गजासाही और मातृ-तशाही का विरुद्ध सपन करने की योजना बनाते समाए करने धाम जनता को संगठित करने में लग गये। मला जागीरदार चण्डावल को ये हृदयें फल बदाशत हाती। उ हाने भी छलजी तथा इनका नवजवान उसाही साधिया को बुचलने का बुचन रचा। और वही सामन्ती हृषकण्ठे-मारपीट निष्कासन, जन्मी फौजदारी मुकदम प्रादि उनजी पर भी चलाये जान लगे।

सन् 1934 में सभप्रथम छलजी का चण्डावल जागीरदार ने अयन कोट में बुवावर बाघ दिया और बुरी तरह पिटाई की। मार करने में इस घटना में बडा धातन पण हो गया। रिश्वतदार और परिवारजन न इन् राष्ट्रीय आन्दोलन में अयन होन की सलाह दा पर छलजी तो निरासी धानु के ही बने हुए हैं—उहोंने दून उत्साह में इस काम को करना मुट किया। मौसाथ स इह जोधपुर का तत्कालीन नेता जयनारायणजी 'याम रणछोडशासकी गढ़ानी, मधुरादानजी माधुर अचरशबरप्रसादजी धामा तथा सोजत के भीठावाजी 'बाबा', हरिमाईजी किंकर प्रादि का प्रोत्साहन और सन्धि सहयोग मिला। इनके विश्वसनीय साथी ये इनके ही ग्रामवासी मागीलालजी छालीशान भायाजी नयमलजी मूया चानमलजी गांधिया रामगुपजी पुरोहित, देवाराजजी जाट प्रभुजी जाट शररतलजी बालानी (देवलो बलां) घुलजी जाट, जुगराजजी

भूट, भवरलावजी पुरोहित। य सभी स्वतन्त्रता-सनानी मिल जुलकर आन्दोलन की स्पर्धा तयार करत एक-दूसरे का पूरा सहयोग देते और लागू में प्रचार कर एक अनुसूचित यातावरण बनाते। पाली जिन में माण्डो बगडी व पानी की तरह ही चण्डावल भी प्रातिकारिया का एक प्रमुण म था और महा कायबतों दूर-दूर तक गावा में जाकर जन जागृति पण करत और संगठन बनाते थे।

छलारामजी के साहम और कायबत के कारण चण्डावल तथा धातपास के सारे जागीरदार व्याकुल हो रहे थे। सन् 1935-36 की सर्वाधिक घटना है। छलारामजी को पकड कर चण्डावल रावल में लाया गया और गाव में लोग का मामन ठातुर चण्डावल ने अयन नीकरो को धातुन दिया कि छलाराम की मफेद टापी फाडकर जूतो-तन नुचल दा। बैसा ही किया गया और पिटाई शुरू की तथा रस्ता में बाधकर जल में पटक दिया। पर यह तो कमी नहीं फुलने वाला छलाराम ही तो था—जोर जार में 'महात्मा गांधी की जय' और 'भारत माता की जय' का नार लगाता रहा। साग गाव में तनाव बढ गया। जागीरदारों ने गाव की जनता को धातकित करने के लिए गाव में धोटे पीडिये पर जनता का राप बढता ही गया। प्रागिर छलारामजी को जल में छोडना ही पडा। इसी घटना में भीठावालजी 'बाबा (साजत) तथा अथ कई कायबतों जागीरी घुण के हमला में धायन हुए, बडयो का चोटा में सन बहा सारा शरीर लहू-तुहान हो गया पर समास्थल छोडकर कोई नहीं भागा। धायला का मात्रत अस्पताल पहुचाया गया।

सन् 1942 में मारवाड लोक-परिषद् द्वारा चलाय गया जिम्मेदार हुनगत के आन्दोलन में छलारामजी ने फूलचन्दजी बापना (सावडी) के नेतृत्व में सत्याग्रह किया। जाधपुर राय क तत्कालीन चीफ मिनिस्टर मर डानलड पीड का 'नाजा निवालय हुए जुलूस निवाला घुडमवारो के जुलूस का तिनर बितर करने के लिए लाठी प्रहार किया जिसमें छलारामजी की पमनिया टट गइ और बाहिने हाथ में चाटें धाने स हडिडिया टट ग। इसी सत्याग्रह के सिलसिले में इन् चार माह तक जेल में रखा गया। य क्या ही अल में छूटकर अयन ग्राम चण्डावल धाये कि जागीरदार के धादमिया ने घेर लिया और रात को जब सारा गाव सा रहा था, छलजी को पकडकर घर में निवाल कर गाव में निष्कासित कर लिया और रहने के दा प्लाट तथा काजत की 20 बीघा भूमि भी जन् कर ली। अथ तो छलजी का न ता घर-दा-न गाव और न ही रोजी राटा का कोई साधन। तबिन वे तो इस ही ईशवीय प्रमाण मान कर दून उरसाह स आजादी के समय में जुट गये। गाव-गाव



जाकर लोमा का सगठित करना, आन्दोलन कराना और मारवाड लोक-परिषद् की शाखाएँ स्थापित कर सदस्य बनाना इनका रात दिन का काय हो गया। ये 15 अगस्त, 1947 के आजादी के स्वर्णिम प्रसंग तक यही काय निरन्तर करते रहे।

उनके त्यागमय जीवन सतत परिश्रम और राष्ट्र की आजादी प्राप्त करने के उच्च ध्येय के प्रति समर्पित भाव न इन्हें पाली जिल का एक जनप्रिय नेता बना दिया और ऐसे ही कमठ स्वतंत्रता सनानिया की कमन्स्यसी चण्डावल ग्राम बन गया नातिकारिया का तोष-स्थल।



जन जाग्रति के अग्रदूत

श्री मूलचन्द भट्ट



श्री मूलचन्द भट्ट 'मोर' पाली जिल के उन अग्रणी नेताओं में हैं जिनके राष्ट्रीय चेतना जगाने में नीबू के पत्थर का काम किया

है। भट्टजी का जन्म 7 दिसम्बर सन् 1904 को पाली में हुआ था। उनका प्रारम्भिक शिक्षण यहीं पर हुआ पर सन् 1918 से 1921 तक का कायकाल बनारस व कानपुर में रहा। उन्नी दौरेन ये अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों और कवियों के संपर्क में आये और विरासत में प्राप्त उनकी काय रचि जाग्रत हो गई। वे कविताएँ और लस लिखन लग। भारत में इन्हीं दिनों राष्ट्र का आजाद करवाने के आन्दोलन में जाद पकड़ रखा था और मन्त्री प्रबुद्ध लोग की शक्ति और ध्यान इस और लगना स्वामाविक था। भट्टजी राजस्थान के अग्रणी किसान नेता श्री मातीलालजी तेजावत के संपर्क में आये व भीष्मा निरामिया का सगठित करने में लग गये, पर पुनिस की अतिवकारी गतिविधियां व कारण पाली लौट आये और साहित्य-सेवा में लग गये।

सन् 1929 में भट्टजी सवप्रथम श्री जयनारायण दास के मर्क में आये और ब्याबर में उड़ाने लक्षण राजस्थान तथा आगोवाण पत्रा में सवाभ्यन्ता-सम्पाक का काय किया। इन्नी दौरेन सन् 1932 में देग में सवत्र नमक-सत्याग्रह चला और भट्टजी को भी श्री हरिभाडू किंकर तथा अमोलचन्द्रजी साम्बचन्द्रजी मुगाणा के साथ अजमेर सट्टल जेल में तीन माह की जेल मुगनी पड़ी। सन् 1934-35 में पुन पाली उनकी कायस्थनी बनी और

राष्ट्र की आजादी के लिए मधुपशील व्यक्तियों से बराबर खत हुए साहित्य-साधना करने लगे। पर गांधी व ता जन्मा की आग लगी दृष्ट थी। बैठ बेगार लाटा कूता व म लाग-आग के काण किसान व गरीब वग दुखी थे। मारवाड लोक-परिषद् की स्थापना के साथ ही पाली में भी उसकी शाखा लाना गद और अपन साथी सवथी सुमेरराज डागा रामप्रसाद गांधी रामप्रताप शमा के साथ सन्निह होकर काय प्रारम्भ कर लिया लोक परिषद् के सदस्य बनाना, समा-सम्मेलन करना और लागा व जाग्रति पदा करना अब इनका रात दिन का मुख्य काय हो गया। इन्हीं सिलसिल में खेरवा, चाणाद आदि अनेक स्थानों पर इनके साथ जागोरी गुण्डों ने मारपीट की, लाठियों से इन पर हमला किया और मरणामन घायल अवस्था में लोगों ने इन्हें घर पहुँचाया। पर यह बीर तो अदम्य उत्साह और लगन लिये हुए था। फिर सय इन कार्यों में दूत उत्साह में जुट गये।

पाली में बालिय मताधिकार के आचार पर चुनी हुई नगर पालिका के लिए चने आन्दोलन का आघने श्री सुमेरराज डागा व रामप्रसादजी गांधी व साथ नेतृत्व किया। इन्ही दिना मारवाड में हो रही मधुमगुमारी के लिए प्रति घर आठ आने (आज के 50 पैसे) का टकन लगाया गया था। उसके विरोध में आन्दोलन लाना किया और टकन माफ करारक मफनता प्राप्त की। इसमें लोक-परिषद् की लोकप्रियता बढ़ी और सगठन मजबूत हुआ।

सन् 1942 के आन्दोलन में इन्हें कविता, मवाद व लया द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रचार करने का काय सौपा गया था जिस इन्होंने वसूची पूरा किया। फलस्वरूप तत्कालीन महाराज जोषपुर श्री उम्मेदसिंह न भट्टजी को राजकवि के पद से हटाकर इन्हें प्रतिमाह मिनन वाली र 201 00 की राशि देना बन्द कर दिया और मारवाड व 14 ठिकाना में मिलन वाली प्रति ठिकाना रम्य 201 00 की सेंट भी बन्द कर दी। इस परिचार पर आधिक मकठ बढ गया, अमावा ने घर लिया त्विन इनकी लगनी में छिया शक्ति और अधिक निररकर मामन धाई। भट्टजी वपी तब पानी जिला पत्रकार सघ व अध्यक्ष रह और ममय-ममय पर टकन लग व कविताएँ भारत व सभी प्रमुग समाचार-पत्रा व पत्रिकाओं में छपती रहीं।

श्री जयशंकरप्रसाद बाबू गुनादगय व्यानमलान वमा आचाय विश्वरवर दयान, गणेशशंकर विशारथी ताननायक जयनारायण व्यान गणशीलान व्यान उम्ता नमिहृगय बाबा, जगन्गीरसिंह गहलान हरिभाई किंकर, माणकतान वमा, अम्बिका कवि आदि प्रसिद्ध साहित्यकारों व राजनिविन नेताओं व साथ इनका निवट का सम्पर्क रहा है। भट्टजी जीवन भर साहित्य-साधना और राष्ट्र सेवा में लग रहे।



कमनिष्ठ सेनानी

श्री मोहनराज जैन



26 जनवरी 1939 के

शुभ प्रसंग में सरदार हार्दई स्कूल
जाधपुर की प्रायश्चात मभा बंद

मानरम् के राष्ट्रीय गीत से गूज उठी। एक विद्यार्थी ने गाथा टापी
न मजबूत कर चालीस गाथी टापी पहन विद्यापिपा की टापी क
नायक क रूप में मंच पर बंदमातरम् गीत गाया तब वहाँ क
प्रधाप्याचम्य एव कर्मापकमण अवाक रह गय। इम तथ्याकथित
दुःकृत्य के निष जाधपुर के तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्री १० पी०
बाक्स ने जयवन्त कानज के प्राचाय श्री साहनी का यह लिखकर
भजा कि उस विद्यार्थी का बालक न प्रवेश नहा लिया जाए और
फनम्बन्ध उस कालज शिक्षा के लिए प्रवेश नहीं मिला। जाधपुर
श्री नहीं अजमर के राजकीय कालज में भी प्रवेश नहा दिया गया।

यह विद्यार्थी और बार्द नहा अज क कमनिष्ठ स्वतंत्रता
सेनानी श्री मोहनराजजी जन क जा राजस्थान क पाली जिल क
प्रतगत एक छोटे से ग्राम देवली-याबूजी में एक प्रमुद्ध परिवार में
जन्म भ। मोहनजी की माता श्रीमती नंदा देवी और पिता
श्री मलमलजी पारसिक और उदार प्रकृति के थ। काम में इन्हें
श्रष्टि दम्पति का विपुल सम्मान और स्नेह था, क्योंकि मुक्त दुल्ल म
उनका बर-रहस्त जनना क लिए मदा सुजा रहता था। माता
प्राय बीमार रहती थी। बालक मोहन क मन में उसकी वदना थी
जो प्राय चलकर राष्ट्र वरणा क रूप में मुचरित हुद। छाठ नौ
वष क मोहन को छाटकर माता स्वयं शिक्षा दे गे। चारा भाइया
गवथी साहाराज हस्तीमन मोहनराज एव बन्तामल का अर्पार
दुन हुभा। पिताया की कारजिक छाया में घोर बारे य बडे
हान लग।

मोहनजी का जन्म 15 अगस्त 1920 का हुभा था। यह
मधोग है कि इसी पावन दिन सन् 1947 में हम राष्ट्रपिता गांधी
जी क नरुत्न म स्वतंत्रता मिली थी।

मनुष्य अर्पण माय्य का स्वयं निमाता है यह कथन मोहनराज
जी के जीवन पर खरा उतरता है। वान यह बनी कि इनक

परिवार के कुलमुष्ट श्री प्रतापरतनजी ने इनकी जन्म पत्नी देखकर
इनक पिता को बताया था कि बालक के शिक्षा का योग नहीं है।
इस पर बालक मोहनराज ने उसी क्षण वह जन्म-पत्नी काटकर फेंक
दी और वह स्वयं अपनी नयी जन्म-पत्रिका बनाने में मन्त्रिय हो
गया। यह घटना प्रेरणा देता है कि ज्योतिषिया क बचकर म प्रान
की प्रपक्षा मनुष्य का पुण्याथ कर अर्पण माय्य का निमर्ण स्वयं
करना चाहिए।

मोहनराजजी ग्राम्य-मोक्षाल में श्री जटमलजी पुराहित
विलोचणी से पडे। फिर बरकाणा विद्यालय में प्रवेश लिया।
बरकाणा में 1934 में मारवाड के विद्यालयों की वाद विवाद
प्रतियोगिता में मोहनराजजी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विषय
था ग्राम्य जीवन का महत्त्व। इन्हें स्वयं पदक प्राप्त हुभा।
बरकाणा में सर्वश्री मायवतजी शुक्ल, नत्पीलालजी हरिप्रकाशजी
आदि गुरुजना ने इन मेवावी छात्र के जीवन निमर्ण में विशेष
यागदान दिया।

निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी

स्वतंत्रता आन्दोलन की चिनगारिया भारत क बोने-बाने
में फलन लगी। जोधपुर में सन् 1939 में लोक परिषद की बैठक
श्री सुमनशजी जाशी की अध्यक्षता में गिरदी कांठ प्राणण में हुई।
एक मज्जन क भावएर दन के बाद लाठी चार्ज हुभा। उसमें एक
डण्डा मोहनराजजी पर भी पडा। यह स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रथम
प्रसंग था। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने इस बडुके प्रसाद का
मोठे मादक क समान चया है।

सन् 1940 की एक प्रातिकारी घटना उल्लखनीय है।
स्वामी दुमाराज द क नरुत्न म व्यावर में जब तिरगा भण्ण
फहराया गया तो श्री मोहनराजजी ने निमय्य होकर गाया—

Up up the National flag

Down down the Union Jack

इस पर इन्हें तथा श्री अणभराज जन (जैतारण) का गिरफ्तार कर
लिया गया था।

मोहनराजजी का विद्यार्थी-जीवन उस तूफान के समान था
जा पीडे नहीं मुडता। न ता उह अर्पण म अध्ययन की चिन्ता थी
और न वचन-बचन की। वह लालच व गुलामी के उस घट वृक्ष
का उपाहन के लिए आसुर के जितने भारत माता को दुधी और
हीन बना लिया था। सन् 1942 में अर मोहनराजजी हालकर
पत्तिय इंदौर में स्नातक पक्षा में पण्ट थे, उस समय श्री तेजबहादुर
समू जो वायसराय की एजजीक्यूटिव काउन्सिल के सदस्य थ, मायण
देन प्राये। वायभम का श्रीगणेश हाने ही वाला था कि मोहनराज

बन्दी मोहतरम्

श्री सेनानी चरण 14

बन्दी मोहतरम्



जी त्फान की तरह मच पर पहुँचे और वदेमातरम् के नारे से समा को गुंजा दिया। उस समय श्री मोहनराजजी छात्र भूमिवन के अध्यक्ष भी थे। समा म सभू साहब का 'गुड प्रयास' पर भाषण सुनन के लिये 200 अग्रेज अध्यक्षी भी आये थे। इस हंगामे मे सभू साहब अपना भाषण नहीं द पाय। वे तुरत बार से चले गये। श्री सभू के जान के बाद माहनराजजी के नेतृत्व मे विद्यार्थीगण हात के बाहर निकले और उहान अन्नक अग्रेजा के गालो पर चपतें लगायी। इस हंगामे म मोहनराजजी के विरुद्ध गिफतारी वारंट निकला और कितना सुखद आश्चय कि होलकर वारेज के राष्ट्र-प्रेमी प्राचाय श्री राजू और उनकी अग्रेज पत्नी ने स्वय के आवास म 11 दिना तक उहें अपने बच्चे के समान छियाकर रखा। थोडे ही गिनो पश्चात् 'अग्रेजा मारत छोडो' आन्दोलन के पश्चात् विद्यार्थिया का नतुत्व करत हुए इह इदौर म गिफतार कर लिया गया और सात विद्यार्थी नेताभा के साथ नगरपालिका की आवावा चुत्तो की पाटक के बटपरे मे दूम दिया गया। किंतु तीसर दिन ही रात मे जेल तोडकर य मुक्त हा गये तथा कस्ब मे भूमिगत रहकर काय करते लगे।

जुभाह क्रांतिकारी

श्री मोहनराजजी के विद्यार्थी जीवन की दो आन्तिकारी घटनाए उल्लेखनीय हैं। एक बार उनक ग्राम क ठाकुर श्री माघीसिंह म नय सिर मे लटाई व लाग-वाग वसूल करने का आदेश जारी किया और पूरी गाचर भूमि को खुदकाशत मे परिवर्तित कर दो घुए खुदवा दिये। गाव का पशुधन धरा म ही बंद हा गया। तार मे सूचना मिलते ही यह स्वतंत्रता सेनानी बालेज छाडकर इन्तर स गाव देवली पहुँचा। उसके नतुत्व म ग्रामवासियो ने डोल नगाडे बजाते हुए गाचर भूमि मे प्रवेश किया और जागीरदार के घुएँ को पुन गाचर भूमि मे परिणत कर दिया। यह आन्दोलन आठ माह चला। दो बार गाव के कूबर सज्जनसिंह अपने नौकरा के साथ बढूँ के तलवारों लेकर आय पर उनके बार गिफ्तल गये। एक बार सा भारतमाता का यह बीर सिपाही उनक सामन सीमा तानकर खडा हो गया। वे निशाना चूक गये और बढूँ भी नीचे गिर पडी। यह घटना उस स्वतंत्रता प्रेमी युवक की याद दिताती है जिसने अपने जीवन का महत्व नहीं दिया जिसका आत्मा की धरमता म गहरा विश्वास है तथा जिसकी रग रग मे अमर अहीद मगतीसह और नेताजी सुभाषचद बोम की जैसी दश मर्तिक की ऊर्जा प्रवाहित थी। दूसरी घटना है ग्राम के राबले की कोठडी भवन पर जबरत बन्ना कर स्कूल खोलने की।

एव अय घटना है जब कोठडी ग्राम के ठाकुर की ज्यादतिया ने तग आकर चालीस मेघवाल परिवार गाव छाडकर चले गये।

मोहनराजजी व उनके साथी कायकर्ता कोठडी गाव पहुँच। उन मेघवाला की सगठिन किया। अपने धरो से निष्कासित मेघवाला क धरा म जागीरदार की मरी हुई घास को उ हान जना दिया तथा लागो को पुन उनके धरा म बसाया।

श्री मोहनराजजी न बी० ए०, एल० एल० वी० तक शिक्षा प्राप्त की तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाा वाली म आकर बकालात करते लगे। इसके साथ-साथ वे सामती एव नौकरशाही जुत्मा स नरत जनता को मुक्त करन क लिये कांग्रेस के सक्रिय कायकर्ता क रूप म निरंतर प्रयत्नशील रहे। उनक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के जुभाह सम्मरण भी कम रोचक नहीं है।

मन् 1948 म देश आजादी की प्रथम वषगाठ मना रहा था, पर तु वाली के पास गेया ग्राम के जागीरदार का वहा के पुराहित परिवारा मे बगार लन हनु किय जाना वाता अश्यावार मानवता पर गहरा बाला धब्बा था। एक बार रात्रि म पुराहित पुत्र्य वग को चाकलाई के पास जपल म खेजडी के दूधो म बाध दिया गया और महिलाभा का राबले की पाल म बिठा दिया गया। निर्भीक माहनराजजी न उदता ब हिम्मत के साथ जागीरदार के मारी आतक के बावजूद पुरोहित परिवारा को उनके चगुल स छुडायो ही नहीं-वरन् जाच करवाकर ठिकाना बोयो की वाट प्राफ वाडस म जत करवा लिया।

जागीरदार चामुण्डी ने जागीर की जल्दी के मय स गावाई जगल ठेकगारा का बच दिये। यह घटना सन् 1949 की है। गाव के जन प्रतिनिधिया ने मोहनराजजी का सूचना दी। दुक्षा क प्रेमी, पर्यवरण रक्षक माहनराजजी सामाय जनता की रोजी राटी का बचाने हनु चामुण्डी जनता के बीच पहुँचे और आसपास क गावा की जनता को मगठिन किया। जागीरी गुप्ता तत्वा व जनता के बीच मध्य चला। ग्रामवासिया म दूध न काटन व न बटन दन की प्रतिना की। फनस्वरूप गावाई बनी को बचा लिया गया। मोहनराजजी का यह महान् सपय मेजडकी की ऐतिहासिक गाथा एव वतमान चिपका आदालन की याद गिजाना है।

चापा ठिकान का कोमेनाव गाव के कायनाम गिकार खाना बाण्ड को नी मुताया नहीं जा सकता। मन् 1948 की बात है। सामती नाग अपने मनारजन हेतु वासलाव गाव क पाय ही पहाडी के चारा और ऊंची ऊंची वाडा की वाड बनाकर जगती मुधरा और अय जगती जानबरा की रलत थे। इच्छानुसार चाणोद कूबर अपने अय ठाकुरा के माथ यहा आत गिकार सलत और मनोरजन करत परन्तु इन मनारजन का मूल्य गरीब ग्राम-वासिया का अपने पशुधन की बलि दकर जुबाना पडता था। जगली जानबरा वा पशुधन पर भावमण प्रतिगिन बन्ने लगा। यह



कमनिष्ठ सेनानी श्री मोहनराज जैन

26 जनवरी, 1939 के शुभ प्रसंग में यरदार हार्द स्टूल, जाधपुर की प्राथमाभा बाद मानस्य के राष्ट्रिय गीत से गूज उठी। एक विद्यार्थी न गावी टाली म मजधज कर चालीस गाथा टाली पहलू विद्याधिया की टाली क नायक क रूप म मक पर बदमानस्य गीत गाया तब वहा क प्रयातलाय एव अघ्यायकयण अवाक रह गय। इस तथारथित दुष्टय के लिय जाधपुर क तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्री ए० पी० काशम ने जगवत वानज क प्राचाय श्री साहनी का यह लिलकर नज कि उम विद्यार्थी का वानज म प्रवेग नहा दिया जाए और फरन्स्य उम कालज शिक्षा के लिए प्रवच नही मिला। जाधपुर नो नही प्रजमेर के राजकीय कालज म श्री प्रवेग नही टिया गया।

यह विद्यार्थी श्री बार्क नही साज के कमनिष्ठ स्वतंत्रता ननानी श्री माहनराजजी जैन थ जा राजस्थान क प लो जिन क प्रतगत एक छोटे स ग्राम दवना वाक्की म एक प्रबुद्ध परिवार म जम 4। माहनजी का माता श्रीमती नंदा देवी और पिता श्री मानमलजी धामिक और उदार प्रकृति क थ। ग्राम म इस प्रेरित क्षमति का विपुत्र सम्मान और स्नेह था, क्योंकि मुत्त दु ल म उनका बरवहस्त जनता क लिए सदा गुला रटता था। माता प्राय बीमार रहता थी। बालक माहन क मन म उमका वपना थी जो साग चलकर राष्ट्र-वपना के रूप म मुखरित हुद। साठ नो वष क माहन का छाडकर माता स्वग तिधार गई। चार। भाइया नबथी सोहनराज, हस्तीमन माहनराज एव बन्धामल का अपार दुःख हुआ। पिताथी की कारगिक छाया म घोर जारे य बडे होन लय।

माहनजी का जम 15 अगस्त 1920 का हुआ था। यह मयाग ह कि इना पावन दिन गनु 1947 म हम राष्ट्रपिता गांधी जी क मनुष्य म स्वतंत्रता मिला थी।

मनुष्य ध्यत माय का स्वय निमाता है यह कथन माहनराज जी क जीवन पर मरा उतरता है। बाग यह बना कि इनर

परिवार के कुलगुरु श्री प्रतापरतनजी ने इनकी जम पनी देलकर इनक पिता को बताया था कि बालक के विद्या का याग नहीं है। इस पर बालक मोहनराज ने उसी क्षण वह जम पनी फाडकर फक दी और वह स्वय धपनी नयी जम-धमिका बनाने म सभिय हो गया। यह घटना प्रेरणा देता है कि व्योतिपिया क चक्कर म ग्राम की प्रपक्षा मनुष्य का पुत्राप्य कर ध्यत माय का निर्माण स्वय करना चाहिए।

माहनराजजी ग्राम-पोशाल म श्री जेटमलजी पुराहित विलोवणी स पले। फिर बरकाणा विद्यालय म प्रवेश लिया। बरकाणा म 1934 म मारवाड क विद्यालया की बाद विवाद प्रतिकीमिता म माहनराजजी न प्रथम स्थान प्राप्त किया। विषय था 'ग्राम्य जीवन का महत्व। इट स्वग पदक प्राप्त हुआ। बरकाणा म सबथी मागप्रतजी शुवल नवीलालजी हरिणशरजी सादि गुरुजना न इस मवावी छात्र क जीवन निर्माण म विशेष यागदा दिया।

निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी

स्वतंत्रता आंदोलन की विचारिया भारत के कोन-काने म फनन लगी। जोधपुर म सन् 1939 म लोक परिदय की बठक थी मुमनशजी आशा की धायक्षता म गिरदी कोट प्राणण म हुई। एक सज्ज क मापण दन के बाद लाठी काज हुआ। उसम एक टण्डा माहनराजजी पर भी पडा। यह स्वतंत्रता आंदोलन का प्रथम प्रमाद था। हमार स्वतंत्रता सनामिया न इस कटुडे प्रसाण का माडे मोदक के समान चला है।

सन् 1940 की एक फागिकारी घटना उल्ललनीय है। स्वामी कुमाराम द क नेतृत्व म ब्यावर म जब तिरया भण्डा पहराया गया ता श्री मोहनराजजी न विषय होकर गायो—

'Up up the National flag
Down down the Union Jack

इस पर इहे तथा श्री अ्यमराज जन (जतारण) का गिरफ्तार कर लिया गया था।

माहनराजजी का विद्यार्थी-जीवन उम तूफान के समान था जा पीडे नही मुडता। न ता उह ध्यत मायक की विता थी और न वयम-सचर का। वह तालक न गुलामी के उस बट हण का उपाहन के लिए फ्रातुर थे जिमने भारत माता को दु ली और हीन बना दिया था। सन् 1942 म जय मोहनराजजी होलकर कणिज इरौर म स्थातक कथा म पडते थ, उस समय थी तनपहाडुर सनु जा वामसराय की एक्जोगुट्टिय काउन्सिल क सदस्य थ, मापण दने प्राये। काययन का श्रीगणध जाने ही वाला था कि माहनराज



जी तूफान की तरह मच पर पहुंचे और 'बन्धेमातरम्' के नारे से समा की गूजा दिया। उस समय श्री माहनराजजी छात्र यूनियन के अध्यक्ष भी थे। समा में सत्र साहब का 'युद्ध प्रयास' पर भाषण सुनने के लिये 200 अग्रज अधिवारी भी धाये थे। इस हंगाम में सत्र साहब अपना भाषण नहीं दे पाये। वे तुरन्त बार से चले गये। श्री सत्र के जाने के बाद माहनराजजी ने नेतृत्व में विद्यार्थिगण हाल के बाहर निकले और उन्होंने अन्नक अग्रजा के गाला पर चपटें लगायीं। इस हंगामे में मोहनराजजी ने विरुद्ध गिरफ्तारी वारंट निवृत्ता और कितना सुखद आश्चय कि होलकर कलेज के राष्ट्र-प्रेमी प्राचार्य श्री राजू और उनकी अग्रज पत्नी न स्वयं के भावाम में 11 दिनों तक उन्हें अपने बच्चे के समान छिपाकर रखा। पाठे ही दिना पश्चात् 'अग्रजा भारत छोडा आन्दोलन के पश्चात् विद्यार्थिया का नेतृत्व करत हुए इह द्वादर में गिरफ्तार कर लिया गया और सात विद्यार्थी नेताओं के साथ नगरपालिका की भ्रावारा बुता की फाटक के बटपरे में रूस दिया गया। किन्तु, तीसर दिन ही रात में जेल तोड़कर य मुक्त हा गय तथा कस्बे में भूमिगत रहकर काय करत लग।

जुआर क्रांतिकारी

श्री मोहनराजजी के विद्यार्थी जीवन की दो प्रान्तिकारी घटनाएँ उल्लेखनीय हैं। एक बार उनके ग्राम के ठाकुर श्री माधोसिंह ने मय सिरे स लटाई व लाग-बाग यत्न करने का आदेश जारी किया और पूरी गाँव भूमि को खुदकायत में परिवर्तित कर दो चुए खुदवा दिये। गाँव का पशुघन घरा में ही बंद हा गया। तार स भूचना मिलते ही यह स्वतंत्रता सेनानी कलेज छोड़कर इदौर स गाँव दबली पहुँचा। उसके नेतृत्व में ग्रामवासियों ने डोल नगाडे बजाते हुए गाँव भूमि में प्रवेश किया और जागीरदार के दुर्जे का पुन गाँव भूमि में परिणत कर दिया। यह आन्दोलन आठ माह चला। दो बार गाँव के कुंवर सज्जनसिंह अपने नौकरों के साथ बंदूकें व तखतारें लेकर धाये पर उनके बार निष्फल गय। एक बार ता भारतमाता का यह वीर निपाहो उनके सापने सीता तानकर खडा हो गया। वे निशाना चूक गये और बंदूक भी नीचे गिर पडी। यह घटना उस स्वतंत्रता प्रेमी युवक की याद दिलाती है, जिसने अपने जीवन को महत्व नहीं दिया, जिसका आत्मा की धमरता में गहरा विश्वास है तथा जिसकी रंग रंग में अमर शहीद मगतसिंह और नेताजी सुभाषचंद बोस की जैसी देश प्रेम्ति की ऊर्जा प्रवाहित थी। दूसरी घटना है ग्राम के रावले की कोठड़ी भवन पर जबरन कजा कर स्त्रूल खालन की।

एक अय घटना है जब कोठड़ी ग्राम के ठाकुर की ज्यादतिया में लग आकर बालीस मेघवाल परिवार गाँव छोड़कर चल गये।

मोहनराजजी व उनके साथी कायकर्ता कोठड़ी गाँव पहुँचे। आपन मेघवाला को संगठित किया। अपने घरों स निष्कासित मेघवाला क घरों में जागीरदार की मरी हुई घास को उहाने जला दिया तथा लागा को पुन उनके घरों में बनाया।

श्री माहनराजजी न बी० ए० एल० एन० ग्री० तक शिक्षा प्राप्त की तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाली में आकर बकालात करत गये। इसके साथ साथ वे सामाजी एव नौकरशाही जुलमा स नस्त जनता को मुक्त करत के लिये कांग्रेस के सक्रिय कायकर्ता के रूप में निरंतर प्रयत्नशील रहे। उनके स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वे जुआर सम्मरण भी कम रोचक नहीं हैं।

मन् 1948 में दश आजादी की प्रथम बपगाठ मना रहा था, पर तु बाली क पास गोमा ग्राम के जागीरदार का बहा क पुराहित परिवारों से बेगार लेन हतु किय जान वाला अत्याचार मानवता पर गहरा नाला घ बा था। एक बार रात्रि में पुराहित पशु वग का चाकलाई के पाम जगल में खेजडों के वृक्षों स बाध दिया गया और महिलाओं को रावले की पोल में बिडा दिया गया। निर्मीक मोहनराजजी ने अन्ततः हिम्मत के साथ जागीरदार क मारी आतक के बावजूद पुरोहित परिवारों को उनके चुलु स छुडाया ही नहीं-वरन् जाच करवाकर ठिकाना बोया को कोट भाक वाडस में जडन करवा लिया।

जागीरदार चाणुशेरी के जागीर की जती के मय से गावाड जगल ठकेदारों का बच दिय। यह घटना सन् 1949 की है। गाँव क जन प्रतिनिधियों ने मोहनराजजी का सूचना गी। वृक्षा के प्रेमी, पर्यावरण रक्षक मोहनराजजी सामा य जनता की राजी राटी का बचाने हतु चाणुशेरी जनता के बीच पहुँचे और भासपास क गाँव की जनता को मगठित किया। जागीरी गुण्डा तत्वा व जनता के बीच मघप चला। ग्रामवासियों न वृक्ष न काटने व न कटन दन की प्रतिना की। फनम्बरूप गावाई बने को बचा लिया गया। मोहनराजजी का यह महान् सघप नेजडकी भी ऐतिहासिक गाथा एव वसमान चिपका आन्दोलन की याद दिलाता है।

चाणो ठिकान का कोसेगाव गाँव के बायलाना शिकार-खाना काण्ड का गी मुताया नहीं जा सकता। सन् 1948 की बात है। सामाजी लोग अपने मनोरजन हतु कोसेलाव गाँव के पाम ही पहाड़ी के चारो आर ऊंची ऊंची काटो की बाड बनाकर जगली सुधरा और अय जगली जानवरा का खलत थे। इच्छानुसार चाणो कुंवर अपने अय ठाकुरों के माय यहा आते, शिकार खलत और मनोरजन करते परतु इन मनोरजन का मूल्य गरीब ग्राम वासियों का अपने पशुघन की बलि बेकर चुकाना पडता था। जगली जानवरा का पशुघन पर आन्मण प्रतिदिन बढते लगा। यह



जा उहोन गाधीजी द्वारा अजेजा स लडा जा रही अहिमम लडाई व सम्भय म दिवो जी पी।

है अरुप राखर कुण्डित लुण्डित
तेनायं करतीं गह प्रमाण,
रण तेरी तेरी बजती है
उठता है तेरा मय्य भात।

उक्त घटना म जा साहज क परिचय युवक माहनराजजी न बाजा की गोचर भूमि (जाड) म गिया इनग पूव केवल 20 वष क युवक माहनजी ने पाव देवली की गोचर भूमि म कुवर राजन मिह भोर 30 40 व दूकघारी लोमा के समक्ष इसी प्रकार दे चुने प-उम ममय कुवर राजनसिंह (भूतपूज गिला प्रमुष, पाली) ने फौज-दारी व बीवानी मामल भी बनाय थ जा प्रसफज रहे।

हरिजन उदार की भाजना म प्रेरित श्री मोहनराजजी 1950 51 म गान्धी मन्त्री मण्डल द्वारा चापित हरिजन दिवस' कायधम पर श्री छोटमल गुराणा के साय भोग घाय व बाजी हाई स्कूल के प्राणम म घायोजन हुआ। नेहरुवा द्वारा चाप बनाकर परोसी गई। अनेक भुठे घमंनुयायो वहा म लिखक म परतू श्री माहनराजजी न सहाय चाप-पाल ही नही किया वरन् प्रत्यक म गले मिन। हरिजना के पर ध्यान की सफाई अघन हाथा स की। फलस्वरुप एक भोर उहोन हरिजना के दिना म स्थान प्राप्त किया ता दूसरी भोर उनके जन समाज न उह विररुहृत किया।

निष्ठाशील नेतृत्व

मोहनराजजी जिस किसी पद या क्षेत्र म रहे उहाने पूण निष्ठा लगन एवं उत्सव की भावनासा का नेकर काय किया। सन् 1950 स 1980 की अर्धधि म उहाने पाच बार पाली जिला काँग्रेस के अध्यक्ष पद को सुनामित करने के साय-साय सस्था को सुमण्डित किया। इनकी सेवा भावना व चांगेस दल के प्रति निष्ठा व ईमानदारी व कारण ही 1950 स अरु तब प्रदस काँग्रेस कमटी क सदस्य रहे। केवल प्रदेस काँग्रेस कमटी का सदस्य भी चुना गया। इह अखिल भारतीय काँग्रेस कमटी का सदस्य शताब्दी के वष

सन् 1984-85 म समूण भारत म काँग्रेस शताब्दी के वष मर अामोजन चल। इन हटु अधिकाज मया एम पी एम एल ए या पदेन काँग्रेस कमटी क सदस्या ना ही नियुक्त किया गया। सहा अखिल भारतीय काँग्रेस कमटी द्वारा मोहनराजजी को पाली जिला काँग्रेस शताब्दी समारोह का संयोजक बनाना अघने धाय सिद्ध करता है कि श्रेष्ठ काय की पूछ अरुषय हांती है। अघने उक्त दायित्व को विभिन्न गाठिया प्रदगमिया, सम्मेलना प्रविषण गिधिरा साहित्य प्रकाशना आदि के अामाजन द्वारा वरुषी निमाया तथा जिन का नाम रोजान किया।

सन्दी मातरम्

दु मयद गूबना गाकुलमाई मट्ट व दबीच दजी, तागरमलजी क पाप पन्नवी। उनक आदशानुमार परीबा क नवक मोहनजी निरगा हाय म नेकर जय हिन्ड व भारत माता क जयघाप क साथ गाव क लोमा सहित कायनाला (शिवायराजना) स्थल पर प्नुच। उहान वहा लगी बाड की हानी जना दी तथा सदा-मना क लिय गिनार पान क समाप्त कर दिया। इस काय म आजाद हिंद फौज क वडा सहयोग उह मिला।

सफल सत्याग्रही

आजादी के अनेक वर्षों व बाद भी सामाजी जाक नष्ट नही हुआ था। माहनराजजी की जम कुण्डली म समवन सह निखा है कि व सामाजी नाग क उठन हुए पण का हमसा कुशलन म विजय श्री प्राप्त करेग। इसी क स दम व बाला गावर का सघष समव तथा समी सघषां म अघना विशेष महत्व रखता है। बाली जाहड की मात हजार बीघा भूमि सदिया स गावर भूमि रही है जिल पर मवणी करत अघये है। विबाद का विषय उन ममय बना जय भूत पूव जाधपुर दरवार न इस भूमि का निजी मण्डित वज करवाकर अघन मजीदाना का बरणीम कर मवली की स्वतंत्र चराई पर रोक लगा दी। यह बाली क पशुपालका भोर समाज सबका क लिए चिन्ता का विषय बन गया। माहनराजजी न लागी का नेतृ व किया। मघष प्रारम्भ हुआ 101 गुरप व महिलासा की भूल हउतान क नाय। माहनराजजी न सक्डा की सदया म जनना क नाय पूरा मवणी का लकर जाहड म प्रवक्ष किया। राज्य की पुलिस ने भारी दखल किया परतू उसक प्रयास विफल रहे। फिर ता प्रतिदिन 500 स 1000 तक गुरपा क साथ मजसिया का जाहड म चरान का कायधम बनता गया। इसस जागरणरा ने अघनी हाय पर विप्र होकर समठिन होना प्रारम्भ किया। जाधपुर क नू पू दरवार श्री राजसिंह क छोट भाई श्री हुबमसिंह उक दूद बना क नेतृप म एक दल तनवारा-बदूका व अस्त्र शस्त्र स सजधय कर मरन भारत क नय उतासू हा गया। एक आर हिमक दल वा जिसका लक्ष्य मोहनराजजी की हत्या कर अहिमम पशुसायका क अघिकारा क अागलन का समाप्त करना था ता दूसरी आर अघन अघिकारा की रक्षा करन बाजा समठित अहिमम दल था।

आखिर हुआ वही कि सत्य अहिमा व आत्म-वन क सामन दूद बना की नपी तलवार इठी अरुषय परतू तलवार के हाथ का मोहनजी द्वारा परकट कर तलवारन मान म तलवार नीच गिर पडी। राजा के 40-50 लोमा के मुह लठक गय। बदूका की नाले नीची हो गयी। उन ममी ने अघन धाडे जायं माड ली भोर लोठ गय। यह दृश्य याद दिलाता है श्री माहनवाल द्विवेदी की उन पवित्रयो की

सन्दी मातरम्



पंचायत समिति वाली क प्रधान के रूप म सन् 1960 स 1964 तक ग्राम विकास के कार्यों मे सलम रहकर आपने हर गाव म विशाककर आदिवासी क्षेत्रा मे स्कूना की व पंचजल की सु यवस्था की। आदिवासी बालिका के अध्ययन हेतु स्कूना के साथ छायाबासा की स्थापना की। रोजगार मुलम बरवाया।

बाली क्षेत्र की जनता न आपकी सवा भावना मे प्रभावित हुकर 1962 म 1967 एर 1972 म 1977 दो बार राजस्थान विधान सभा का सदस्य चुनकर भेजा। विधायक-बाल म अपने 'यत्नित प्रयत्ना स अपन क्षेत्र के गावा का विद्युतीकरण बरवाया खेता म विद्युत-पंपा मे सिंचाई सुनम हान लगी। कच्ची सडकों पक्की व तारकोल की बनी। केन्द्र की सहायता से हेरिखेत्र माधुर उखाण क्षेत्र फालना मे बनवाकर फालना वा कायाकल्प कर गिया तो बाली नदी पर राज्य सरकार द्वारा विशाल पुल बनवाकर बवाकालीन यातायात को मुलम बरवाया। आज भी बाली नदी का पुल आपक काय की यथोगाया गा रहा है।

कृषि एव भूमि-नुधार विषयका का पास बरवान म बहुत बड़ी भूमिका निभान क माय थी जन न उह लागू करवाने मे अपना बहुत बडा योगदान दिया। विधायक काल म इनके द्वारा किय गय रचनात्मक काय भी मुलाय नहा जा सकत। शराब वदी हेतु सब प्रथम राजस्थान सरकार के विधानसभा पटल पर 77 बाग्रेसी विधायका का हेताक्षरयुक्त ज्ञानन प्रस्तुत किया तथा पशु बलि निषध विधेयक को पास बरवाने म भी प्रमुख भूमिका निभाई।

श्री माहनराजजी ने अब तक अनेक सामाजिक सांस्कृतिक शक्षणिक व साहित्यिक सस्थाओं मे सस्थापक, सदस्य पदाधिकारी रहकर जनता की अट्ट सवा की है तथा सतत् कर रहे ह। इनम कुछ सस्थाए हैं -

गरर बालिका विद्यापीठ विद्याबाडी—खीमल शक्षणिक मस्था स पाठक परिचित हाग। सस्था का नाम सम्पूर्ण राजस्थान म प्रसिद्ध है साथ ही दश की प्रसिद्ध शक्षणिक सस्थाभा म विद्या बाडी का अपना स्थान है। उक्त सस्था के सस्थापक सदस्या म श्री माहनराजजी एक हैं जिहान तन मन धन से सस्था की सवा की व धन भी कर रहे हैं।

श्री पाशवनाथ उम्मद जन कालज फालना श्री पाशवनाथ जैन विद्यालय बरवाणा जेता शक्षणिक सस्थाभा की काय-समिति क सदस्य एव मंत्री रहकर आपन शिक्षा के प्रति अपनी गहरी रचि का परिषय दिया। बरवाणा सस्था के ता 1940 स समातार काय समिति के सस्य एव गन 15 बर्यों स आप मंत्री चुन जात रहे ह। यह इस बात का प्रमाण है कि श्री जन की काय शक्ती एव सवा भावना स लाभ अत्यन्त प्रभावित हैं।

साहित्यिक एव सांस्कृतिक गतिविधिया मे गहरी रचि रमन बाल माहनजी ने एक अगुनी सस्था का बाली म जम दिया जा विद्योत्तमा' क नाम स राजस्थान म विरयात है। विद्योत्तमा आप फन फूल रही है ता इसका मुख्य कारख यही है कि इन आज जस सस्थापक सदस्य एव अध्यक्ष न स्वाथ रहित बलगत मे दूर रहकर साहित्यिक एव सांस्कृतिक भावना से मितित किया है।

मन्च अर्थो म भारत क दरिद्रनारायणा क पुजारी मोहनजी न विकलागा एव असहाया की सवा करन का सक्त्प लिया और विकलाग प्रशिक्षण केन्द्र फालना और भगवान श्री महावीर मडिकल रिचन सेटर के सस्थापक-सदस्य मानव कल्याण सवा सच, बाली के सस्थापक-सदस्य एव मंत्री सर्वोदय केन्द्र खीमल क मंत्री एव राजस्थान प्रदाय नशाबदी समिति की कायकारिणी के सदस्य है तथा प्रत्येक क्षेत्र म काय कर जन-जन के हृदया म बस गय है। इन समय आप राजस्थान ग्रामदान बोड के अध्यक्ष पन् पर धासीन है।

कृतिमता एव नतिक मूल्या के ह्रास के युग म श्री माहनराज जन जस निरडल और निरूपट कमधोगी का जीवन सचमुच प्रेरणा सपद है। आज भी इस कमधोगी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी क आदर्शो का अनुगमन करत हुए शराब वदी सर्वोदय राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की अखल जगत हुए भारत के नरिद्रनारायणा की सवा मे सलग्न है। यह स्वतंत्रता सनानी आज भी शक्षणिक और साहित्यिक काय बलापा स नयी पीढी का सस्कारित करत हुए मानवता की पुलवारी का सींच रहा है। विनाबाजी के सर्वोदय म सम्यद्ध और विद्योत्तमा जसी साहित्यिक सांस्कृतिक सस्था क प्राणरूप म श्री माहनराजजी महाकवि जयशकर प्रमाण का इन पत्निया को साधक कर रहे है -

यह नीड मनाहू कृतिया का यद् विश्व कम रग-रचल है।

—श्री दाऊलाल शर्मा



सतत सघपशील

श्री माधोलाल 'क्रातिकारी'

'मार मुनीबत सभी सहगे—
मुलाम बनकर नहीं रहेंगे'—
इस नार क साथ जनारण दूतमन
क प्रत्येक गाव म ही नही,



जेल में थे, बराबर सम्पर्क करते रहे और गुप्त सद्यष पहुँचाने में बड़ी कारगर भूमिका निभाई। माधोलालजी की राष्ट्रीय गति विधियाँ से क्षेत्र के सारे जागीरदार परेशान थे और उनके विरुद्ध कई पद्धत रचे गये। निमाज ठिकाने द्वारा धांधले के लिए धास की बीसवा चाचा का विरोध करने के फलस्वरूप टिबान न इनको जेल में डाल दिया। इन्होंने जेल में 11 दिन का अनशन किया फिर शिकायते होने पर तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री महदी हुसैन द्वारा जाच हान के पश्चात् ही इन्हें छोड़ा गया। लीलिधा गांव की सभा में इन पर तलवार से हमला किया गया। धायलावस्था में साथी गोकुलरामजी चौधरी मवरजी कण्डारा तथा बलू दा व कालू व कायकर्ताभ्रा न इन्हें जायपुर पहुँचाया जहाँ इनका उपचार हुआ।

आजादी के पश्चात् श्री माधोलालजी निमाज के सरपंच चुन गये और क्षेत्र के विकास में जुट गये। माधोलालजी बुद्ध होत हुए आज भी बड़े उत्साह से गांवों में रचनात्मक कार्यों में लग हुए हैं और लोगों को संगठित कर भ्रष्टाचार व अनैतिकता को विरुद्ध मतत सघष कर रहे हैं। पर राष्ट्र की राजनीति में भ्रष्टाचार व सामाजिक मूल्यों में गिरावट से बड़े खिन्न हैं। एकसर लोक नायक श्री जयनारायण यास के शब्द—‘वाप्रेस रूपी साधुओं की जमात में कालबलिय पावण्डो साधु घुस आये हैं। वाप्रेस के घर को खोखला करने के लिए इस पार्टी में ठाकुर व पूजीपति आ गये हैं जिससे यह पार्टी पतन के कगार के और बढ़ रही है।’ व दुहराते हैं।

आजकल श्री माधोलालजी अपने बेरे पर एक भोपडी बनाकर रहते हैं। स्वयं छेती व गोपालन कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

त्याग की प्रतिमूर्ति

श्रीमती महिमादेवी किंकर



स्वर्गीया महिमादेवी किंकर पाली जिले के सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज-सुधारक श्री हरिभाई किंकर की धर्मपत्नी थी और युवाकस्या से ही आतंकीकारी विचारों से प्रभुत प्रात थी। स्वर्गीया हरिभाई किंकर मारवाड के उन अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियाँ में से थे जिन्होंने सामाजिक और राजनतिक क्रांति हेतु

महात्मा गांधी के अहिंसक एवं रचनात्मक आंदोलन में सम्मिलित होकर मारवाड में जन जागृति की प्रलय जगाई थी।

यह विधि की विडम्बना ही थी कि श्रीमती महिमादेवी बाल विधवा हो गईं, लेकिन उह आतंकीकारी विचारों के अनुकूल मिल गये श्री हरिभाई किंकर जिन्होंने खोसली सामाजिक मयादाप्रा व प्रतिबन्ध की परवाह नहीं करत हुए महिमादेवी से विधवा विवाह कर विधवा विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया। अब पति पत्नी की इस मत्याग्रही जोड़ी ने गांव गांव जाकर स्कूलों के छात्रों में चरित्र निर्माण की शिक्षाप्रद कक्षाएँ बहकर राष्ट्र प्रेम के गीत गाकर एक नया वातावरण बनाने की मुद्य्छात की। श्रीमती महिमादेवी स्वयं बड़े सुरिले स्वर में गाती थी और श्री हरिभाई ता प्रसिद्ध गायक व कवि थे ही। इनक प्रचार ने सोजत व ब्यावर क्षेत्र क गावा में घूम मचादी।

श्रीमती महिमादेवी न सोजत रोड बगडी माजत पाली आदि अनेक स्थानों पर सभाएं करके मारवाड लोक परिपद् की शाखाएं स्थापित की तथा महिलाओं का संगठित कर उह सत्याग्रह व आंदोलन के लिए तैयार किया। बगडी तथा चण्णवल में आंदोलन के दौरान हुए लाठी चार्ज में लोक परिपद् के अनेक नेताओं के साथ, जिनमें इनके पति श्री हरिभाई किंकर भी थे इह भी मार पडी और इलाज के लिए अस्पताल में रहना पडा।

मारवाड लोक परिपद् द्वारा चलाय गये उत्तरदायी शासन आंदोलन के सितसिल में महिलाओं के एक जल्ये के साथ जोयपुर में महिमादेवी गिरफ्तार की गई और उह जेल की यातनाएं सहनी पडी। पति पत्नी दोनों ही दलने त्यागी, निस्पृह वृत्ति के तथा राष्ट्र क प्रति समर्पित कायकर्ता थे। इहान जिन्दगी में पैस को बन्नी महत्त्व नहीं दिया और बुद्धावस्था के लिए मुद्य्छ भी जोड कर नहीं रखा फलस्वरूप इह युवापे में बडी कठिन आर्थिक परिस्थितिया में स गुजरना पडा। श्रीमती महिमा देवी अमावों से अस्त जीवन-नापन करत हुये स्वयं सिधारी और श्री हरिभाई किंकर को ता स्वतंत्र भारत में आत्मशह करना पडा। मारवाड व विधेपकर पाली जिले के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में स्वर्गीया श्रीमती महिमादेवी का नाम अविस्मरणीय रह्या।

वतन हमेशा रहे शादकाम और आजाद,
हमारा क्या है, हम रहे न रहे।



हर व्यक्ति के मन में प्रवेश करत थात भाई माधोदासजी के
 वयस 17 वष की थातयु म ही जागीरी बुधा म जूभास मुक्त
 कर दिया था। पाती जिन की जतारण तहसील के निमात्र
 ग्राम के एक मुबार परिवार म थायका जेम मन् 1917 म
 हुआ। उन जमान म निष्ठा का काम विंग प्रथम घोषा म रही
 था, धन साधुनी पड़ना विगत मीण कर मन्नाय बनना पदा।
 उन जिना म्यारर राष्ट्रीय जशुति म धामात्तामक गतिविधि
 का काम था। माधोदासजी स्वायत्त के भी धनर मादम्प मी तथा
 पण्डितन के श्री गणोनाथ धामोनाथ के सम्पर्क म अ म धोर
 इनका स्त्री महात्मा गांधी द्वारा तयय जा रर राष्ट्रीय धामात्त
 म हा म। फिर ता 2 मीर म जशुति का काम पका मय।
 मन् 1934 म ही श्री शक्तिशरी बराबर म बांदि म मन्प
 बा मय धोर अन धार निमात्र का काम बनाकर जागीरी बु धा
 य ताभय म धामोण जनता की मुक्त करार के अमिदान म लग मय।

उन निता गांधा म जागीरारा के विरुद्ध प्रचार कर तागा
 का मध्यम के लिए तयार करता धामान नरी था। पढ़े ता लय
 यह मानन की ही तयार नहा हात धरि जागीरी कमी ममान
 हागी धोर स्वाय-स्वाय बठ-स्वाय तथा लाटा-नू ता म मुक्ति विनयी
 धोर दुनारे ठाठुर मीण धनर कारिता म राजनतिक बायबांदा के
 माय मारपी के मयान म गही पूजन म। मीदि म करता ता दूर रहा
 विगत की बांधी ती भाय पहा हत साठिया म पिटाई अरी
 मुक्तामवाजी, घांठा के ताभय म मना, मुना बाबाय घण्टा बिटाये
 रयना मकाय ध नेन म बढयत कर दना धाम वात थी।
 माधोदासजी के जीवन म य पठनाण एष धार नरी धनक बाय हूट
 पर यह सचमुच का शक्तिकारी इन मुगीयता म कहा हिम्मान
 हातर कावा था। अनिहाय ता ही है हर मुगीजन म दुनध होमन
 युव म किम है। मन् 1937 म जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू
 नताजी मुभाषणरुध बीम स्वायत्त भाय ती बांधी तहसा म माधी
 बायबांदाभा का तकर य सहा पढ़ूक। एगी दोरान नामात्र बांदि
 की गतिविधि का प्रमुल-बठ बन गया था धोर मठ गानमर-दजी
 राजा, रिबबामना रावा धमरररररी बाहरा धामि कई बाय
 वता धाय आय। मन् 1940 म मारवाड तीर-परिपद् के प्रमुय
 नया श्री रणछाडदाम गट्टानी (पिटायड जस्टिस राजस्थान हाई
 वाट) न निमात्र म लोक-परिपद् की माता गालवर उन क्षेत्र म
 राजनतिक गतिविधिया का धोर तज कर निम्। लोक-परिपद् की
 भावा की स्वाभना के उपलक्ष म निमात्र म रात्रि का धाम-ममा
 का धामात्रन किया गया। जागीरी मुक्ता न रामा की मय करन के
 लिए पत्ररवाजी की साठी प्रहार किया हुल्लक हागाया कराया पर
 समा रात्रि की 11 बजे तक चलती रही। बांदि म डिबान के

कारि- श्री रणछाडदाम गट्टानी पर हमला करत क निण बरूर
 सकर था मय, गतिन इनर पूर नि बरूर बन, माय परिपद् के
 बायबांदाभा म हमलाकर क हागा म बरूर विरा दी धोर गट्टानी
 वय मय। एम पटाता त मागा म दूता जात मर निम् धोर जमान
 के था गीनमपत्री ककथा युगराजरी पटरा गिबगराजरी
 युगात युगाताजरी मागी, धीमाजरी मय बरूर के भीकमपत्री
 धनामो गीरामाजरी कयात साधुनाराजरी जार होरागपत्री
 कयात रामरगत्री धीमाता बामाताजी स्वाय, शूनीमात्री पाण,
 निम्पाल म श्री युगाररा जन श्री मकरमाय मांवी म श्री जठागम
 पोशाणर बाबु म श्री बायबल श्री मकरमन जन, युगातयुगा
 म श्री का ममत्री शांतिग निरनिवा कया म श्री देवराजरा बाहरा,
 मयागपत्री धोरपी मायवरना जन धुरगमराजा मुगार रानी
 (उपासनात) म श्री मकरमाय कयामो युगातजा भाता विरी
 म धनरररररी मयरा जयगमराजा जन तारापत्री रेणर,
 तागगा म श्री मकराज मकरदिवा विराटिया म श्री मातृतात र्मा
 (कटपची) दुगाराजरी जन दलासाजरा जन परोरगोरमपत्री
 रवेर पूनाराजरी धोरपी राधपुर म श्री मन्तुवलयजा तय
 पूमाताजरी पगाविवा मातृपत्री बाहरा, दासवररपी रंध,
 मयाराबामराजा मय परनिवा म श्री रामाराम धोरपी धामा धाये
 धोर बाय परिपद् के लेख म गांवा म जागीरी बुधा के विरुद्ध
 आंगोलत म जुट गये तथा प्रथम एक धरयन्य महूरोय देन ल।

दमन तार क्षेत्र म जाशुति की एक तड़ महर उठी। 1940
 की 4 धनर की जोधपुर म सात परिपद् के मत्वायह म मानिक
 होने के लिए जात हुए निमात्र म ही माधोदासजी गिरानार कर
 लिए मय। फिर जतारन साभषण तथा जाधपुर मट्टन जन म
 रर रथ गये। जन म श्री मयबर पातला दी जाती थी। जन
 म धूरन ही स्वायत्त की काम बनाकर मणि गुज धामा म प्रचार
 बाय मुक्त कर दिया। धर म गणमनजी बाटेड, मोठानाजरी
 बाठ (मगरी) मन्तुताजरी जोशी (माजत मिठी) ध रतनलाजरी
 रावा (निमात्र) का मररर महाधाय निम्। धय धालत, 1942
 का करी या मरी तथा धरेजा मारत रोडी का महा सयय
 प्रारम्भ हा गया था। माधोदासजी का 18 धालत 1942 की
 गिरानार कर मट्टन जेड जाधपुर म भेज दिया गया, जहा म वे
 जनवरी 1943 म रिहा किए गये। तन्पश्चात् वे मारवाड सात
 परिपद् के बायबांदा म तथा स्वायत्त बांदि के कायाय म काम
 करते रहे।

लोचनायक श्री जयनारायण ब्याल श्री मयुरदास माधुर
 ध श्री रणछाडदाम गट्टानी ने जो उन जिना जोधपुर मट्टन



जेल में थे, बराबर सम्पर्क करते रहे और गुप्त सदेश पहुँचाने में बड़ी कारगर भूमिका निभाई। माधोलालजी की राष्ट्रीय गति विधियाँ स क्षेत्र के सारे जागीरदार परेशान थे और उनका विरुद्ध बड़ पहचान रहे गये। निमाज ठिकाने द्वारा घोड़ों के लिए घास की बीसवा ताग का विरोध करने के फलस्वरूप ठिकाने ने इनको जेल में डाल दिया। इन्होंने जेल में 11 दिन का अनशन किया फिर शिकायतें हाने पर तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री मेहदी हुसैन द्वारा जाच होना के पश्चात् ही इन्हें छोड़ा गया। लीनिया गांव की समा में इन पर तलवार से हमला किया गया। घायलवस्था में साथी गानुलरामजी चौधरी, भवरजी कच्छारा तथा बलू दा व कालू के कायकर्तामान ने इन्हें जाधपुर पहुँचाया जहाँ इनका उपचार हुआ।

आजादी के पश्चात् श्री माधोलालजी निमाज के मरपच चुन गये और क्षत्र के विकास में जुट गये। माधोलालजी वृद्ध हाते हुए आज भी बड़े उत्साह से गावा में रचनात्मक कार्यों में लग हुए हैं और लोगों को संगठित कर भ्रष्टाचार व अनतिक्रता के विरुद्ध मतत सघष कर रहे हैं। पर राष्ट्र की राजनीति में भ्रष्टाचार व सामाजिक मूल्या में गिरावट स य वड़े खिन्न हैं। अक्सर लोक-नायक श्री जयनारायण व्यास के शब्द—'कांग्रेस रूपी साधुओं की जमात के कालवेतिय पाखण्डी साधु घस प्राये हैं। कांग्रेस के पर को खोखला करने के लिए इस पार्टी में ठाकुर व पूजीपति भा गये हैं जिससे यह पार्टी पतन के कगार के और बढ रही है। वे दुहरात है।

आजकल श्री माधोलालजी अपने बरे पर एक भोपडी बनारक रहते हैं। स्वयं खेती व गोपालन कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

त्याग की प्रतिमूर्ति

श्रीमती महिमादेवी किंकर



रवर्गीया महिमादेवी किंकर पाली जिले के सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज-सुधारक श्री हरिमाई किंकर की धमपला थी और युवावस्था स ही क्रांतिकारी विचारा से भ्रोत प्राप्त थी। रवर्गीया हरिमाई किंकर मारवाड के उन अग्रणी स्वतंत्रता सेनानिया में से थे जिन्होंने सामाजिक और राजनतिक क्राति हेतु

महात्मा गांधी के अहिंसक एवं रचनात्मक आन्दोलन में सहमिलित होकर मारवाड में जन जागृति की प्रलय जगाई थी।

यह विधि की विडम्बना ही थी कि श्रीमती महिमादेवी बाल विधवा हा गईं, लेकिन उक्त क्रांतिकारी विचारा के अनुकूल मिल गये श्री हरिमाई किंकर जिन्होंने खोसली सामाजिक मर्यादाओं व प्रतिबन्धों की परवाह नहीं करते हुए महिमादेवी से विधवा विवाह कर विधवा विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया। अन्न पति पत्नी की एम सत्याग्रही जाड़ी ने गांव गांव जाकर शूला के छात्रा में चरित्र निर्माण की, शिक्षाप्रद कहानिया बहकर राष्ट्र प्रेम के गीत गाकर एक नया यातावरण बनाने की शुरुआत की। श्रीमती महिमादेवी स्वयं बड़े सुरीले स्वर में गाती थी और श्री हरिमाई तो प्रसिद्ध गायक व कवि थे ही। इनके प्रचार ने सोजत व ब्यावर क्षेत्र के गावा में धूम मचादी।

श्रीमती महिमादेवी ने साजत रोड, बगडी साजत पाली आदि अनेक स्थानों पर समाए करके मारवाड लोक-परिषद् की शाखाएँ स्थापित की तथा महिलाओं को संगठित कर उच्च सत्याग्रह व आन्दोलन के लिए तैयार किया। बगडी तथा चण्डवल में आन्दोलन के दौरान हुए लाठी चार्ज में लोक परिषद् के अनेक नेताओं के साथ जिनमें इनके पति श्री हरिमाई किंकर भी थे इन्हें भी मार पड़ी और इलाज के लिए अस्पताल में रहना पडा।

मारवाड लोक परिषद् द्वारा चलाये गये उत्तरदायी शासन आन्दोलन के सिलसिले में महिलाओं के एक जल्ये के साथ जोधपुर में महिमादेवी गिरफ्तार की गई और उच्च जेल की यातनाएँ सहनी पड़ी। पति पत्नी दानो ही इतन त्यागी निस्तुह वृत्ति के तथा राष्ट्र के प्रति समर्पित कार्यकर्ता थे। इन्होंने जिदगी में पस की कमी महत्त्व नहीं दिया और वृद्धावस्था के लिए कुछ भी जोड़ कर नहीं रखा फलस्वरूप इन्हें बुढ़ाप में बड़ी कठिन आर्थिक परिस्थितियों में से गुजरना पडा। श्रीमती महिमा देवी अभावों से ग्रस्त जीवन यापन करते हुये स्वयं सिधारी और श्री हरिमाई किंकर को तो स्वतंत्र भारत में अग्रतदाह करना पडा। मारवाड के विशेषकर पाली जिले के, स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में रवर्गीया श्रीमती महिमादेवी का नाम अविस्मरणीय रहेगा।

वतन हमेशा रहे शादकाम और आजाद,
हमारा क्या है, हम रहे न रहे।



जीवित कांग्रेस कार्यालय श्री रामप्रसाद गांधी

श्री रामप्रसाद गांधी उन विरले स्वतंत्रता यादुदाहरो म से हैं जिनका पूरा जीवन सधमयम रहा है। अग्रजो माध्याज्यया के विरुद्ध राजापाहो की निरकुशता के विरुद्ध श्रीर सामती शापय के विरुद्ध जनवरत युद्ध करके पात्री जिने के माय माय म विजयी विरर तरगा ध्यारा फहराने वाजे श्री गांधी म छोटे बड सब परिचित हैं। सांने भौतिक सुय माघना का तिवाजनि दकर मय मादगी गीर गरीको का वरण कर प्राज्ञ भी समाज के गरीब तबका की गरीबी हटान के क्षमियान के पात्री जिने म अग्रणी नेता हैं श्री नवीं सगे शराउरदी घादिवासी बल्यजनवाय सरीय रचनामक हायीं क प्रचाराध रात दिन एक करते हुए ग्रामां म धूमत हुए इह म्मा जा मनता है। कोई भी राष्ट्रीय महत्व का मभाराह समा पेमिनार जिचिर मयायह प्रयवा घाणेन ऐसा नही होता जिसय इनका उपस्थिति नही होती।

श्री रामप्रसाद जो गांधी का जन्म सन् 1913 म 26 नवम्बर का श्री मुन्नीवर विजयवर्गीय (तीबानेर) के घर हुआ और स्थानीय पाठशाला म ही गिना पीसा हुई। तबिन बाल्यकाल सही मनीर पन्त म विशप दचि थी और अथवार और पुस्तक पढत रहत



भारत के उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा से सम्मान पत्र प्राप्त करते हुये।

थ। धाय वाली म गौद प्राये। पात्री म इनका इन का बडा यावार तथा काग्याना था और दूर दूर तक मान जाता था। काप। वाही चल व अचल सम्पति के मालिक थ पर एह हो राष्ट्र प्रम और प्राजादी प्राप्त करने की तो लग गई थी। इका राजनतिक जीवन सिध हैदराबा (अब पाकिस्तान म) म सन् 1930 म ही शुरू हो गया और राष्ट्रीय स्तर के तत्कालीन नेता श्री चौधुराम विडवाली पुनः समाज मलबानी माहम्मद सदीक मदनलाल निपाठी व उन्मयान म प्रेरणा और भाग्यभान प्राप्त कर कायस के मददर बनकर काय शुरू कर दिया और लाहौर कायस अधिषधान म भाग लिया। उका सम्पन मारवाड राज्य म काय कर रहे थी जयनारामण व्यास म अक्षा और सन् 37-38 म मारवाड के तावा म इनका सकिय रूप म प्रवेश हुआ और जनजाति का काय प्रारम्भ कर दिया। सन् 38 म तबि याना (पञ्जाब) म दशो रिषासता व सयठन हेतु धामाजित एक बहुद् सम्पनन म इहाने भाग लिया। मारवाड राज्य म तेक परिपु के पूव राष्ट्रीय चेवना का काय कर रही मारवाड हितकारिणी समा और युव लीग के माध्यम स जनता म काय लिया। मारवाड ताव परिपु के प्रयुष कायकर्ता थी रणछोडदास गट्टाधी श्री मयुराणम सायुध श्री छगनराज चौपामनीबाग श्री अचलश्वर प्रसाद शर्मा सुमनेशजी जोशी श्री मवरलालजी सरणि धादि का सहयोग और भाग दशन इहें मिला और वाली जिल म जनजाति क अग्रणी नेता बनकर इहाने स्वाम व दशनमति का एक उदाहरण पण लिया।

28 माच 1942 का पात्री जिन के ग्राम चण्डावल म मारवाड ताव परिपु के तत्वाधान म उत्तरदायी शासन निवस मयाया गया और अनेक कामकायो के माय धावन मारवाड म उत्तरदायी शासन स्थापिन करने की प्रणिग ली। इत समा मे चण्डावल टिकान के सामन्ती तत्वा न पाठी प्रहार किया जिसम सबी माठालालजी काका भागीपालजी धानीमान माध्यालालजी प्रातिवारी और उनके गम्भीर जोटे धा श्री मन्डा ताव धायन हुए। मारवाड म अथल 1942 म सवन् 144 घारा लागू कर दी गई और समा सम्मेलन पर पावडी समा दी गई लकिन विरोध बढ़ता गया। स्थान स्थान पर वाली शूदाज साजन बडावल नगडी सापडी धामि म समा-सम्मेलन हुए।

मई 1942 तक मारवाड म वन् पमान पर धायेन छिड गया और सभी नेता गिरफ्तार हो गय। मारवाड क्षेत्र-परिपु का मालय का सचालन मयार से तुलसीदासजी राठी के ताव प्रारम्भ हुआ। इधर वाली जिने म श्री पुनवर्दीजी बापना के नेतृत्व म वाली गूदोज मुमरपुर बरवा साइराव वाली गुडासा सादडी रानी तलसद धामि स्थानो का दौरा कर जन जायति का काय धाय



करते रह। इसी दौरान श्री रामप्रसाद जी गांधी को मारवाड की पुलिस ने गिरफ्तार कर 18 दिन तक हवालात में रखा। इसी वाल में बगडो (सोजत राड) निवासी मोठासालजी बाठेड का गिरफ्तार कर काल कोठडी में रखकर मयकर यातनाएँ दी गई, फन्क्चरप जेल से छूटने के कुछ ही समय बाद उनका स्वगवास हो गया। सन् 1944 में मारवाड साक परिषद् के अधिक्तर नेता जेला स रिहा किये गये और पाली में एक बहद् सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें आप ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और योगदान किया। सन् 1945 में नितम्बर माह में एक और सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें आपने उल्लेखनीय योगदान किया। फिर 23 सितम्बर, 1945 को गुवाहटय मस्राट प जवाहरलाल नंहरू, लोकनायक जयनारायण व्यास, शेरे-बन्धमीर शेख अम्बल्ला क पाली आमन पर श्री गांधी को पहल पर रु० 5100/- की धली वाप्रेस के लिये भेंट की गई।

उहान पाली परगना साक परिषद् के अध्पक्ष की हैसियत से मण्डन को सबल बनान हेतु उस समय भारी परिश्रम किया और निमानो की बैठ-बगार, साग-बाग, लाटा-कूता तथा शोषण स मुक्ति न्दान हेतु पाली जिल के सैकडा ग्रामा में ममा-सम्मलन प्रादि प्रायो जित किये। कई स्थाना पर सामन्ती तत्वा द्वारा प्राणघातक हमले किये गये पर आप अपने ध्येय पर अडिग रहे। मारवाड साक परिषद् का एक बहद् अधिवेशन खोड ग्राम में आयोजित हुआ जिसमें मारवाड के दरवार को उत्तराणी शासन देने की चेतावनी ी गयी।

श्री गांधी बुनियादी तौर पर रचानात्मक कार्यकर्ता हैं। आजादी के पश्चात् हुए राष्ट्र के बटवारे के फन्क्चरप बिबाल शरणार्थी समस्या के दौरान आपने सवा काय किया। हरिजन सेवा ममाभुक्ति प्रोड शिला कताई बुनाई प्रशिक्षण काय प्रादिवामी कल्याण काय इनकी प्रिय प्रवर्तित्या रही हैं और आज भी इही कार्यों में गांधीजी का अधिकांश समय जाता है।

श्री गांधी का नाम पाली जिल के स्वतंत्रता मयाम की एति हासिक कहानी में स्वयांशररा में लिखा जायना। इनकी लयन, कतथ्य-परायणता राष्ट्र क प्रति समर्पित भावना और त्याग-तपस्या हमशा के लिए याद की जाती रहेगी।

—मोहनराज जन

अफसोस कयो नहीं है, वह रूह अब बतन में,
जिसने हिला दिया था, दुनिया को एक पल में।

पत्रकार सेनानी

श्री धनराज वर्मा



श्री धनराजजी वर्मा का जन्म 8 अक्टूबर सन 1916 का महाराष्ट्र के बुलढणा तिल के एक छोटे न ग्राम में हुआ। आपका

परिवार आयसमाज का कट्टर समर्थक रहा था इसलिए आप बचपन से ही जाति भेद और छुआछूत के विचारों से रहित थे। एक उदार मानव क मस्तर प्रारम्भ में ही आपको अपने परिवार से प्राप्त हुये रहे। जब आपन अपनी प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर माध्यमिक स्कूल की पाचवी कक्षा में प्रवेश लिया तब एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी। महात्मा गांधी मा शोकेतधली और मो माहमदधली के मापण मुनन क लिए वमाजी अपने दो सहपाठियों के साथ मलकापुर गये। इन नेताओं के मापणो का प्रभाव आप पर इतना अधिक् हुआ कि आपन उसी समय दश की आजादी के लिए काय करन की प्रतिना कर ली।

आगे चलकर आपन अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करक अकाला के टीचर ट्रेनिंग स्कूल में प्रवेश ल लिया। अकाला में तिलक महाविद्यालय के प्राचाय श्री बुद्धेजी के सम्पर्क में आकर वमाजी नासिहारी विचारा के कट्टर समर्थक हा गये और प्रतिनिध रात्रि में ट्रेनिंग स्कून् क तीन साथियों के साथ उनसे मिलन लग। उस समय अकाला विन्म में था तथा उमे भी पी एण् बरार नाम में जाना जाता था। उस समय उसका गवर्नर बटलर नामक एक अग्रज था। अमाजी और उनके साथियों ने अग्रज बटलर की हया करने की एक गुप्त याजना बनायी परंतु उनको यह याजना अचानक रफ करनी पडी। उधर इनकी गतिविधिया भी बनक पुनिम का पड गई, त्रिमके कारण इन पर पुलिस की कभी निगरानी रहन नगी।

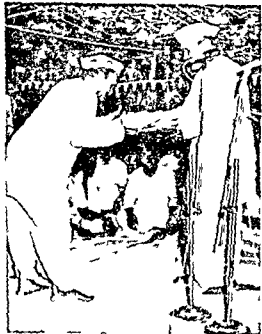
अकाला में आपका सम्पर्क लोकनायक बापूजी अण श्री ब्रजलानजी दियाणी डा मावरकर प्रापडे सेनापति धरारी प्रादि नताम्रा में लगातार बना रहा और उनके विचारा में वे प्रेरणा तत रहे। आप समय समय पर गांधी में जाकर स्वामी-ग्रामोच्चण और शराबबंदी का प्रचार भी किया करत थे।



जीवत कांग्रेस कार्यालय श्री रामप्रसाद गांधी

श्री रामप्रसाद गांधी उन बिरल स्वातंत्र्य यादगात्रों में से हैं जिनका पूरा जीवन सघनपण रहा है। अग्रजों साम्राज्यवाद व ब्रिटिश राजशाही को निरंकुशता के विरुद्ध और सामंती शासन के विरुद्ध अनवरत युद्ध करने पाने जिन के गांव गांव में विजयी विरर तिरंगा धारा पहुराने बाने श्री गांधी में छोटे बड़े सब परिचित हैं। सार भौतिक सुख गांधीों का तिलाजति दबर स्वयं सादगी और गरीबी का वरण कर छात्र भी समाज व गरीब तबना ही गरीबी हटाने के अभियान के पाली जिन में अग्रणी नेता हैं और बर्षा, रात, शराब, खादियासी कल्याणकाय मरीम रचनात्मक कार्यों में प्रचाराप रात दिन एक करत हुए घामा में धूमल हुए इन्हें दखा जा मरता है। कोई भी राष्ट्रीय मूह्व का समारोह समा मभिनार विचिर मत्वायह अथवा छात्रानन ऐसा नहीं होता जिनम दूका उपस्थिति नहीं हाने।

श्री रामप्रसाद जी गांधी का जन्म सन् 1913 में 26 नवंबर का श्री मुरलीधर विजयवर्गीय (श्रीकांत) व घर हनु और म्थानीम पाठशाला में श्री बिना दोधा हुई। जिन वल्यकाल सही इनकी पढन में शिक्षण र्वि श्री और अथवार और पुस्तकें पढते रहते



भारत के उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा से सम्मान पत्र प्राप्त करते हुये।

थ। छात्र पाली में गांधी छात्रों। पाली में इनका इन का बड़ा व्यापार तथा कारखाना था और दूर-दूर तक मान जाता था। काफी बड़ी बल व धन सम्पत्ति के मालिक थे पर इन्हें तो राष्ट्र प्रेम और छात्रादी प्राप्त करने की लो लग गई थी। इनका राजनतिक जीवन मि व हैदराबाद (प्रथम पाकिस्तान में) म सन् 1930 में ही शुरू हुआ गया और राष्ट्रीय स्तर व तत्कालीन नेता श्री चौधराम मिडवागी, कु शासक मलकानी माहम्मद सदीक, मन्मलाल त्रिपाठी, प उदयभान स धेरणा और मागदशन प्राप्त कर कांग्रेस के सदस्य बनकर काय शुरू कर दिया और लाहौर कांग्रेस प्रविवेशन में भाग लिया। उनका सम्भव मारवाड राज्य में काय कर रहे श्री जयनारायण पास म हुषा और सन् 37-38 में मारवाड के गांधी में इनका सक्रिय रूप में प्रवेश हुषा और जनजाति का काय प्रारम्भ कर लिया। सन्-38 में युधि या गा (पंजाब) में दशो रियासती के संगठन हनु धामाजित एकबहुद् सम्मेलन में ह्हाले भाग लिया। मारवाड राज्य में लोक-परिषद् व पूव राष्ट्रीय सतना का काय कर रही मारवाड हितकारिणी समा और युध लीग व माध्यम स जनता में काय किया। मारवाड लोक परिषद् के प्रमुख कायकर्ता श्री रणछोडाशासक गट्टाणी, श्री मधुराणम माधुर श्री छगनराज चौपासनीवाल श्री अचलशंकर प्रसाद शर्मा, सुमनेशजी जोशी, श्री भवरलालजी सराव शांति का सहयोग और माग दान इन्हें मिला और पाली जिल में जनजाति के अग्रणी नेता बनकर इहाने त्याग व देशभक्ति का एक उदाहरण पश किया।

28 मार्च 1942 का पाली जिन के ग्राम चण्डाबल में मारवाड लोक परिषद् व तत्वावधान में उत्तरदायी शासन दिवस मनाया गया और अनेक कायकर्ताओं के साथ छात्रों मारवाड में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की प्रिति ली। इन संस्था में चण्डाबल ठिकाने व सामंती तत्वा ने लाली प्रहार किया जिसमें सवधी मोडावालजी काका भागीलालजी धालोशन' माधोनालजी जातिवारी और इनके गम्भीर चोटें श्रा और सक्ता लीग धायन हुए। मारवाड में अग्रेत 1942 में सवत्र 144 धारा लागू कर दी गई और समा सम्मलना पर पाव दी लगा दी गई लेकिन विराय बदला गया। म्यान-म्यान पर पानी पूरुोज मानन चडावल, मगडी सादडी धादि म समा-सम्मलन हुए।

मई 1942 तक मारवाड में बड़े धमने पर धा-दोलन रिड गया और मन्त्री नेता गिरपतार हो गये। मारवाड लोक परिषद् कार्यालय का संचालन 'दावर स तुलसीनासजी राठी के साथ प्रारम्भ हुआ। इसर पाली जिन में श्री फूलचन्दजी बापना के नगुत्व व पाली, पू-दोज, सुभेरपुर सरवा, साडराव, वाली, खुडाला मादडी रानी सतनग' धादि स्थाना का दौरा कर जन जाति का काय धाय



करते रह। इसी दौरान श्री रामप्रसाद जी गांधी को मारवाड़ की पुलिस ने गिरफ्तार कर 18 दिन तक हवालात में रखा। इसी काल में वगडो (मोजत राड) निवासी मीठालालजी काठेड को गिरफ्तार कर थाल काठेडो में रखकर भयकर यातनाएं दी गईं। फलस्वरूप जेल से छूटने के कुछ ही समय बाद उनका स्वभाव ही हो गया। सन् 1944 में मारवाड़ लोक-परिषद् के अधिकतर नेता जेलांतरिहा किये गए और पाली में एक बहुसंमेलन आयोजित हुआ जिसमें आप ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और योगदान किया। सन् 1945 के सितम्बर माह में एक और सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें आपने उल्लेखनीय योगदान किया। फिर 23 सितम्बर, 1945 को युवाहृत्य-समाट पं. जवाहरलाल नेहरू लोकतायक जननारायण व्यास शेर-नर्मौर शेल अष्टुलना के पाली भागमें पर श्री गांधी की पहल पर रु० 5100/- की धली काग्रेस के लिये मेंट की गई।

उहान पाली परगना लोक-परिषद् के अध्यक्ष की श्रेयवत ससगठन का सबल बनाने हेतु उस समय भारी परिश्रम किया और किसानों की वेठ-बगार, साग-बाग लाटा-बूता तथा धोपण स मुक्ति लिलाने हेतु पाली जिले के मकड़ा ग्रामा में समा-सम्मेलन आदि आयोजित किये। कई स्थाना पर सामन्ती तत्वों द्वारा प्राणघातक हमले किये गये पर आप अपने ध्यय पर अडिग रहे। मारवाड़ लोक परिषद् का एक बहुसंमेलन खोड ग्राम में आयोजित हुआ जिसमें मारवाड़ के दरबार की उत्तरदायी शासन दन की चेतावनी दी गयी।

श्री गांधी बुनियाणी तीर पर रचानात्मक कार्यकर्ता हैं। आज्ञादी के पश्चात् हुए राष्ट्र के बटवारे के फलस्वरूप विचराल शरणार्थी समस्या के दौरान आपने सवा काय किया। हरिजन भेषा, नगामुक्ति प्रोड शिखा कताई बुनाई प्रशिक्षण काय आदिवासी कल्याण काय इनकी प्रिय प्रवृत्तिया रही हैं और आज भी इही कार्यों में गांधीजी का अधिकतम समय जाता है।

श्री गांधी का नाम पाली जिले के स्वतंत्रता-संग्राम की ऐतिहासिक कहानी में स्वयाक्षरा में लिखा जायगा। इनकी नगन, कतब्य-नारायणता राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना और त्याग-नपस्या हमेषा के लिए याद की जाती रहेगी।

—मोहनराज जन

अफसोस क्यों नहीं है, वह रूह अब वतन में,
जिसने हिला दिया था, बुनिया को एक पल में।



पत्रकार सेतानी

श्री धनराज वर्मा

श्री धनराजजी वर्मा का जन्म 8 अक्टूबर सन 1916 को महाराष्ट्र के बुलडाणा जिले के एक छोटे से ग्राम में हुआ। आपका

परिवार आयममाज का कट्टर समर्थक रहा था इसलिए आप बचपन से ही जाति भेद और छुआछूत के विचारों से रहित थे। एक उत्तम मानव क मस्कार प्रारम्भ में ही आपका अपने परिवार में प्राप्त हात रह। जब आपने अपनी प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर माध्यमिक स्कूल की पाठवी कक्षा में प्रवेश लिया तब एक महत्वपूर्ण घटना घटी। महात्मा गांधी मो शोकेतग्रली और मो मोहम्मदगली क भाषण सुनने के लिए वर्माजी अपने दो सहपाठियों के साथ मलकापुर गये। इन नेताओं के भाषणा का प्रभाव आप पर इतना अधिक हुआ कि आपने उसी समय देश की आजादी के लिए काय करने की प्रतिज्ञा कर ली।

आप चलकर आपने अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करके अकोला के टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल में प्रवेश ले लिया। अकाला में तिनक महाविद्यालय के प्राचार्य श्री बुडेजी के सम्पर्क में आकर वर्माजी जातिकारी विचारा के कट्टर समर्थक हा गये और प्रतिनिधि राष्ट्र में ट्रेनिंग स्कूल क तीन साथियों के साथ उनसे मिलने लग। उस समय अकोला विदम में था तथा उसे सी पी एण्ड बरार नाम से जाना जाता था। उस समय उसका गवर्नर बटलर नामक एक अंग्रेज था। वर्माजी और उनके साथियों ने अंग्रेज बटलर की हत्या करने की एक गुप्त योजना बनायी परंतु उनका यह योजना अचानक रद्द करनी पडी। उधर इनकी गतिविधिया की भनक पुत्रिम का पट गई, जिसके कारण इन पर पुलिस की कड़ी निगरानी रहने लगी।

अकाला में आपका सम्पर्क लोकतायक बापूजी अपने श्री ब्रजलालजी वियाणी, डा सावरकर आपड, मनापति धवारी आदि नेताओं में लगातार बना रहा और उनके विचारा में क प्रेरणा लत रहे। आप समय समय पर गांधी का जकार स्वाधीनतासंग्राम और शरावबदी का प्रचार भी किया करते थे।



महात्मा गांधी ने सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। सन् 1942 के सत्र के बाद कांग्रेस ने गांधीजी की अध्यक्षता में एक कार्यकारी समिति का गठन किया। इस समिति के अध्यक्ष बनने का भार गांधीजी पर पड़ा। इस समिति के अध्यक्ष बनने का भार गांधीजी पर पड़ा।



सत्यमेव जयते श्री रामप्रताप शर्मा

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महानायक के रूप में गांधीजी को जानने के लिए श्री रामप्रताप शर्मा जी का योगदान अमूल्य है।

सन् 1942 के पून लक्ष्मी बमबोम्बे की घटना के बाद गांधीजी का स्वास्थ्य खराब हो गया। डॉ. राजकमलजी ने गांधीजी का इलाज किया। डॉ. राजकमलजी ने गांधीजी का इलाज किया। डॉ. राजकमलजी ने गांधीजी का इलाज किया।

श्री रामप्रताप शर्मा जी ने गांधीजी के जीवन के अनेक पहलुओं को उजागर किया है। श्री रामप्रताप शर्मा जी ने गांधीजी के जीवन के अनेक पहलुओं को उजागर किया है। श्री रामप्रताप शर्मा जी ने गांधीजी के जीवन के अनेक पहलुओं को उजागर किया है।

गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था। गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था। गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था।

गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था। गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था। गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था।

गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था। गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था। गांधीजी का जीवन अत्यंत सादर और साफ था।

सन् 1939 में गांधीजी का स्वास्थ्य खराब हो गया। डॉ. राजकमलजी ने गांधीजी का इलाज किया। डॉ. राजकमलजी ने गांधीजी का इलाज किया। डॉ. राजकमलजी ने गांधीजी का इलाज किया।



तप पूत कमवीर

श्री देवीचन्द सागरमल

श्री बलद्वाराम मिर्धा ने श्री शर्मा व सहयोगिया को क्षमा मागने और भविष्य में आन्दोलन नहीं करने के लिए विवश किया तो उन्होंने निर्भीक होकर स्पष्ट शब्दों में क्षमा मागने से इंकार कर दिया। इस मत्याग्रह आन्दोलन के तहत श्री शर्मा का सन् 1943 में 392 आई पी सी का मुकदमा तथा 420 आई पी सी दसके तत्काल बाद दफा 353 आई पी सी, सन् 1945-46 में दफा 145, 420 353 के तहत गिरफ्तार किया गया। मुकदमा चलने के बाद हाकिम श्री र्पामिह राठोड व गारघनसिंह मण्डारी ने इनको उन दफाओं से बरी किया।

श्री शर्मा के व्यक्तित्व की दूसरी भलक है श्री विनाबा मावे के हरिजन आन्दोलन का प्राण प्रण से समर्थन। उन परिस्थितियों में गुदोज की पाठशाला में हरिजन या अनुमूर्च्छित जाति के बच्चा का प्रवेश नहीं मिलता था। इसलिए श्री शर्मा ने सबसे प्रथम एक शिक्षा समिति गठित कर हरिजन पाठशाला की स्थापना की। हूप का विषय यह है कि वही हरिजन पाठशाला आज रा उ मा विद्यालय गुदोज के नाम से जानी जाती है। श्री शर्मा पाली में आयोजित विद्यालय सम्मेलन के दौरान मारपीट के शिकार हुए परन्तु इस संधय में उनका "यत्तित्व निखर उठा। उनका श्री जयनारायण यास के माग निवेशन में जोधपुर जिला कांग्रेस मेवा दल का नायक बनना गया तथा जोधपुर नागौर, पाली, जालौर वाडनर आदि जिला के नायकत्वों का प्रतिष्ठित करने का काम सौंपा गया। श्री शर्मा इसी कड़ी में राजस्थान प्रांतीय कांग्रेस समिति के सदस्य भी रहे और 1954-55 में पाली जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी।

पाली जिले में छुआछूत निवारण हेतु श्री शर्मा ने श्री वर्माजी व श्री मद्र साहू के साथ प्रत्येक गांव तक पदल जाकर अभियान चलवाया। इसका सशक्त उदाहरण तो उनके स्वयं के परिवार में घाबुकी नाम की लड़की है जो भयवाला—माचो जाति की है और उसको ध्यान धरनी पुत्री की तरह घर में पालन पोषण मिलित कर विभ्र घम की पालना करत हुए उसके हाथ पील किये। वह आज भी श्री शर्मा के परिवार की सन्ध्या एव पुत्रीवत हंस पाती है।

सात श्री शर्मा के इस जीवन संधय की प्रसिद्ध कवि निराता के शब्दों में यह कह सकते हैं

डुख ही जीवन की क्या रही।

क्या कहूँ आज जो कहीं न गयी ॥

अपना वायक्षेत्र पाली तक सीमित न रखकर उसका बम्बड़ मद्राम एव सिरौही तक विस्तीर्ण करने वाले श्री देवीचन्द सागरमल जन पाली जिन के उन स्वतंत्रता मानानियों में अग्रगण्य हैं जा पूण स्वतंत्रता के लिए सतत प्रयत्नशील रहे और जा मन कम और वचन स मदव स्वतंत्र रहकर सत्य और निष्ठा पर विना किसी भी प्रकार का मनभौता किये विपरीत परिस्थितियां स जूझने हुए सदैव धड़े रहे। आपका सम्पूर्ण जीवन अपने आप में त्याग तपस्या एव दशन का मूर्तरूप रहा है। बाली नगर को एस सपूत की जन्मभूमि हान पर गव है साथ ही इस बात का येद भी रहूँगा कि एस आन्तिकारी पुरप का तत्कालीन राजाशाही द्वारा बाली स निष्कासन प्रयासपूर्ण होते हुए भी वहां की जनता इनका अपने साथ नहीं रख सकी और इह सिराही राज्य के शिवगज नगर में जाकर स्थाई निवास बनाना पडा।

श्री देवीचन्द जन का जन्म पाली जिले के बाली नगर के चोपडा परिवार में विक्रम संवत् 1959 की भाद्रपद वदी 14 को हुआ था। पिताजी का नाम श्री सागरमल था। छोट वय की उम्र में आपको पिताजी का और नौ वय में ही मातृही का विछोह सहना पडा। अतएव आपका लालन-पालन बुभाजी धीमती पापुचार्द एव उदार हृदय श्री जेठमलजी मुमा द्वारा किया गया।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा बाली जाकोडा तथा गुजरान में हुई। आप दश की विभिन्न अग्रणी पत्रिकाओं के सवागन्ता बन और विद्वानों के लगातार सम्पर्क में रहे। इसी से आपकी व्यावहारिक विद्या बुद्धि और ज्ञान का प्रकाश यत्ता गया जिसमें आप अन्य की प्रतिभा से एक वाय्य तत्वक और पत्रकार बन गये। स्वतंत्रता संग्राम की लम्बी अवधि में त्याग तपस्या समाज-मुधार ङग मत्रा व आन्तिक दुःशता तथा स्वतंत्रता-संग्राम के सवाजन सम्बन्धी अनक मुश्किलें एव प्रमूय नय आपन निय। सायकाल की जिन घटनाओं में आपका जन-म्वात-य्य के प्रति जागरूक किया उनमें में मुख्य हैं—माठमरा के ठापुर विजयसिंह द्वारा दान्तर के जिन घटने महिना का चानी के कट पटनन के कारण जेन में टना जाना, बालाल (मारवाड) के जागोरनर के पुत्र के मामा हाकर टणा आन्तरिक विजनन के कारण आपक माय अन्धवहार शिवगज (निराही) की टावनी के एक घटने अन्तर के वजन के मामन



जयनारायण व्यास, श्री मणोलाल कोठारी व श्री भार जी बंद, जो आग्र चलकर मद्रास काय क्षेत्र में स्वामीजी के नाम से प्रसिद्ध नता हुए ने सम्भव म थाय। श्री चुनौतिलालजी वास्टिया ने ही श्री देवीचंद को जयनारायणजी व्यास के साथ मारवाड म ही काय करने की प्रेरणा दी। य पुण्य वापु के निकटतम साधिया में से थ।

मारवाड म काय शुट किया ही था कि सन् 1935 म पुण्य स्वामी ऋषभदासजी के आग्रह स आपका लौग आयात-बहिष्कार के लिए सत्याग्रह में भाग लेने वापिस मद्रास जाना पडा। वहा आपन जजीबार अमीबा से आयात होने वाले लोग के जहाजों को खाली नहीं होन दिया, जिसस जहाजों को वापिस लौटने को बाध्य होना पडा। फलस्वरूप भारत का लोग-व्यवसाय मृत होन से बच गया। यहा पर आपने 1937 की भयानक बाढ म सहायता और जीवदया समिति में भी काय किया, मद्रास के हरिपुरा अधिवेशन म भाग लिया, मारवाड जैन युवक मण्डल की स्थापना की और स्थानीय तामिलनाडु एव आंध्र की कांग्रेस समितियों म सक्रिय भाग लकर काय किया। यही पर आपने प्रसिद्ध मद्रास चिट्ठीहोम की मुरुदात की, जहा गरीबों को खाना, कपडा और आवास मुफ्त मिलता ह।

अपन कार्यों स मद्रास में आपको चारो ओर स कीर्ति मिली। लाक्षणिक जयनारायण व्यास और गोकुलभाई भट्टन आपको वापिस मारवाड म काय करने के लिए बुला लिया।

उधर सिरोही राज्य म तत्कालीन पुलिस थानदार शालिग्राम कांग्रेस आंदोलन को कुचलने के लिए बेरहमी से जुलम और दमन कर रहा था। स्थानीय कायकर्ताओं को भंजे हुए ठोस नेता की आवश्यकता थी। श्री देवीचंद जी ने आपसे ही उम दमन और जुलम क खिलाफ आंदोलन व सत्याग्रह करवाया, जिससे हारकर सिरोही राज्य म थानदार धीर को बर्खस्त किया।

फिर देवीचंदजी का वापिस बम्बई मा मद्रास जाना नहीं हो सका। यहा पर राजनतिक कार्यों की गतिविधिया इस कदर बढ गई थी कि इह अपनों बम्बई को डुकान बंद करनी पडी और ये आर्थिक सकट से ग्रस्त हो गये। अपन साथ-साथ श्रीमती मगनीबाई को स्वयं राजनीतिक व सामाजिक कार्यों में सक्रिय थी श्री देवीचंद के कार्यों के साथ जुड गई। परिवार का भरण-पोषण एक समस्या बन गया परंतु श्री देवीचंदजी तनिक भी विचलित नहीं हुए और राजनतिक आंदोलन को यथाविधि संचालित करते रहे।

सिरोही राज्य दबीचंदजी को अपने ऊपर एक भारी खतरा समझता था क्यकि इनके द्वारा ही यहाँ की शिकारतें बम्बई

दिल्ली आदि के अलखारा तक पहुँचती थी और राजनतिक गति विधिया तेजी म बढ रही थी अत 3 सितम्बर 1939 का सिरोही राज्य ने इहे 6 वष क लिए राज्य में निष्कासित कर दिया। इस पर सिरोही प्रजा मण्डल का आंदोलन और मडक उठा। लाचार होकर सिरोही राज्य का प्रजा मण्डल से समझौता करना पडा, जिसकी शत के अनुसार यह हदपार निर्वासन-आदेश एक साल बाद 1940 म ही समाप्त कर दिया गया।

ज्योही कुछ शांति हुई सिरोही राज्य सरकार पुन सक्रिय हो गई और दमन चक्र सीधा श्री देवीचंदजी क खिलाफ मुण गया। 1940 म काले मण्डे दिखलान, आवासन करन आदि का लकर आपकी 1942 के अप्रैल माह म गिरफ्तार कर एक वष की व एक सौ रुपये जुर्मान की सजा दी गई। फिर यह सजा तीन माह क लिये और बढा दी गई। उस सजा के दौरान सिरोही जेल में आपको डडा-बेडिया पहनाई गई और आपका समय समय पर दमन के विरुद्ध भूख हड़तालें करनी पडी।

1942 क अप्रैल माह में 'अप्रेजो' भारत छोडा आंदोलन तज होने से सिरोही जेल म अग्र काग्रेसी कायकर्ता भी कद कर लिए गये। इनमें सबकी पुखराजजी सिन्धी धनराजजी तातेड सोभायमलजी सिन्धी व दुवीचंदजी बाबूजी आदि मुख्य थे। इन सभी पर जेल में निदयतापूर्वक जुलम किय गये। उनको डण्डा बेनिया लगाकर कष्ट दिया जाता, राशन पूरा नहीं दिया जाता या खराब दिया जाता था। दबीचंदजी ने लगातार भूख हड़ताल कर जेल के कष्टों से कुछ राहत अपन साधिया का दिलवाइ व भाजन सामग्री म सुधार करवाया। 1943 में एक वष तीन माह की कद पूरी भुगत कर आप रिहा हुए।

जब आप जेल में रहे तो पीछे स श्रीमती मगनीबाई और चार पुत्रो पर सरकार अत्याचार करन लगी। आपके जेल स लौट थान के बाद भी दमन चक्र बंद नहीं हुआ। शीघ्र ही आपका फिर गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही लखमाबा म मगनीबाई व पुत्रा की भी गिरफ्तार कर लिया गया। उनक मकान व कुएँ का जल न कर लिया गया। यद्यपि आपकी जमानत हा गई पर आपका सिरोही राज्य स पुन निर्वासित—हदपार कर दिया गया व राज्य की सीमा के पास दस मील क्षेत्र म आने पर भी पावनी लगा दी गई। 20 जनवरी सन् 1943 को कटाने की सर्दी और बरसत मौसम में आप सभी को बाहर खदेड दिया गया। किन्तु इम निर्वासन प्रज्ञा की अवमानना करत हुए दबीचंदजी अपन सत्याग्रह और आंदोलन पर अडे रहे। फलस्वरूप 21 फरवरी 1943 का आपको फिर डिफेंस आफ इण्डिया एक्ट की धारा 346 ज जे क तहत एक वष की सख्त कद की सजा दी गई।



जन म आपन विर भूय हूइलात की घोर माय ही घासिक उपवास भी बगत रहे जिनम घोषका स्वास्थ्य बिगड़ गया घोर घाठ माह म ही घोषकी घरोल पर रिना कर गिया गया। तबामध्य-मास क मसान पुन मारवाह घोर गिराही क गांवा म घोषवि बितरण का बाय शुरू किया। मुख्य बाय मीला, सोधा घासि तथावपिन जगमय पशा जगिया की पुसिम द्वारा एनिक आउरी व रजा चिठठी की माफी घाटावन था। इय घाटावन म भी घोषका तवमता मिनी घोर घोषक प्रवाम म गिराही राज्य घोर मारवाह राज्य म मरकाओ न यय हाउरी यय कर गी जिनम इन जगिया क मोया का नित्य हाउरी दना घोर एक गाव म दूमरे गाव जा म पुष पुसिम म घोषा पत्र उन की एडिया गम हा गयी घोर उनको सामाजिक स्वतंत्रता घोर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

गिराही की मोया म तवन घात मारवाह के क्षेत्र बायी के जिमान राज्य क जागोरदार मसन स बिगम परेमान थ, घत थ्रा जयनारायण क्याम घादि नेताघा क घनुराय पर घोषन एग धात क गाओ म जाकर बायस का जा इय क्षेत्र म लोका-परिषद् के नाम म जानी जाता थी समाल करनी शुरू कर दी। एक बार घोषन सुदाला व पालना म ममा की व बहा क जागोरदार के घयावायांग का मणामाह किया घोर फिर दूमरे दिन वाली म जारी सभा की। एगम स्थानीय जागोरदार एक राज्य के अधिकाारी बीवला गव व दूमर दिन नाम का पाउना म मुजरत वक्त घोषका पालना पुसिम चौकी म घाय बायकतोषा—थी एनचरजी बायना थी तजराजकी राणावत घादि क माय गिरावरन कर लिया गया। जब पुसिम मकी ननूरा म बायनाकी पर हाय उठान गगा ली थी दबीरजी बीच म घा गय एनचरय मूगी न उन्हें बुरी तरह पीटा जिनम घोष भी मरन घोषन हा गये। उचर पुसिम मूगी ने गमी बायकतोषा का शेड किया पर घोषके उपचार क दिन रात क वक्त एनचर जी बायना का वाली स डाक्टर बुवाना पठा जिसके घोषका जान बब बायी। मवथी माहनराजकी तजराजकी राणावत एनचरजी जगरेका चयामाल राणावत गोमारा म छोषा घादि क माय घोषन दूमरे ही दिन मुदाला म घोष हडलाल करावे ठाउर क रावन क घोष हाउर जुनुम निबाता। इस पर जागोरदार क म म ऊपर म परवर व जत्रवी हुई लकडिया घासि बरगाई गयी जिनम क बायकता घोषन हा गये।

यम प्रकार घोषन कोमलाव गाव म जागोरदार द्वारा मुघरा का बायनाला जिबदार खादे म कला की बाह म शिगर हनु रयन घोर मुघरा द्वारा विमाना की फगल को मट विदे जान पर बिसाला के पक्ष मे घोटावन कर सत्याग्रह किया, जिसमे जोषपुर क थी छननगल चौवामनीबाला मुदाज के थी रामप्रतापसिंह गाधी व

बायी क थी माहनराज जन घासि नेता घमुषा थ। इहान विमाना क म म माय लकर बायनाम धात की बाए उगाह पकी घोर मुघरा का मगा गिया। जब जागोरदार क मुघमभार व गियाही रिरोप म घोष था उनका मण्ट किया। फिर बायकता गव बायनात धात व लगत बात गाव व लगाना जनममासा एक प्रकार क द्वारा तरकार का बायनाला उठान पर बाध्य किया। बाता धात म घोषन घाभउत्री मुराषा माहुरराजकी दबकी, धाउरवतकी वदयवन तजराजकी राणावन, एनचरजी बायना, नीहमउत्री जन घासि क माय मण्टना घोटावन म मद्रिय माग लिया।

1945 म राजाताम का धीरे धीरे जन म मुक्ति मिलन लगी। थी गांधुममाई मट्ट घोर थी जयनारायण क्याम क मुक्त हाड पर घोषन जिबयन नगर क मगा राज्य माय परिषद्, राजकुताना घोर प्रजासमसन गिराही का मिला जुना अधिवसन घायाजिन किया, जिनम ममस्त राजपुतान क स्वतंत्रता-नागानी घोर बायकता एक बाधगी मण्ट के नीम घा गय। इनक कारण घोषे चमकरन राज पुतान की गियामता का भारत म विसय ममव हा मगा।

भारत स्वतंत्र हो गया। गिराही व मारवाह म भी जनता की मरकतें बनी। थी जयनारायण क्यास घोर थी गांधुममाई मट्ट क घाय गमी गाधी बायकता जनता के मुमाय चमकरन मकी एग पर घालीन रह वर स्वतंत्रता का यह नितिय पुजारी हमया समाल और दग की मवा म ही लगा रण घोर उनन बकी थी मसा की कुमरी को स्वीकार मगी किया। इनका समस्त जीवन लगासार मगाम घोर तपोमय व याम व बचिदान स घात प्रान ही रहा। मरन गागी का वय मूषा म तबकी कातत घोर मराय घासि कुरीनिम स निरंतर सोषा लत मराय वरव है का नारा लगात गाधी टारी पहन भारत क इत तप पून कमयीर की दवा जा सकता है।



स्वाधीनता प्रेमो
श्री महाधर शर्मा

पण्डित महाधरजी गवा का जम वाली जिन क घोषराव म 23 नवम्बर 1914 का पण्डित दुनावालजा के घर हुआ था। वदिक बमकाण्ड म दख श्रीमाली



जाति के ब्राह्मण बध में जन्म लेने से प्रारम्भ से ही ध्रापकी र्वि शास्त्रा की उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थी। उन दिना धाणेराव जागीरी गाव था। गाव में श्रीर द्रास पास भी शिक्षा का प्रवच नहीं क बराबर ही था परंतु ध्रापन ध्रापन प्रयत्ना से विभिन्न स्थाना पर रहकर कमकाण्ड ज्योतिष बद्यक एव महाजनी लला ध्रादि का समुचित अध्ययन किया।

स्वतंत्रता-सधाम एव र्वदेशी ध्रादोलन में बडे भाई श्री क हैयालाल वैदिक क विचारा एव कार्यों से ध्रापका प्रेरणा मिली। क हैयालालजी का बगाल के द्रातिकारिया से गहरा सम्बध रटा था। आपके इस ध्रातर भुक्ताव का काफी श्रेय ध्रापके उस पत्रक मकान का भा है जिस जनश्रुति के अनुसार महाराणा प्रताप ने ध्रापके पूवजा का दिया था एव जिसमें 1857 की क्रांति क सनापनि तात्या टाय श्री माणिकलाल चर्मा श्री जवनारायण न्यास, आऊबा के ठाकुर कुणालमिह चापावत, विजयसिंह पथिक, ठाकुर जारावर सिंह बारहठ एव प्रसिद्ध द्रातिकारी श्री चन्द्रशखर ध्राजाद एव प्राय कई स्वतंत्रता सनानी श्रुतिषि रह थ। 1927 से 1933 के बीच चटगाव एव काकारी-नाण्ड से मम्बधित रहने के संदह में पुनिम में ध्रापके घर की कई बार तलाशी ली थी एव ध्रापके भाई का गिरफ्तार कर ल गये थ।

सामती प्रथा के श्रत्याचारा एव समान, बेगार ध्रादि क रिग्द ध्रापन भी ध्रापन ध्राता के साथ ध्रावाज उठायी श्रीर लोग का उनके उचित अधिकाारा के बार में बताने के लिए ध्राप उस नाने क गावा में घूमने लग। इस तरफ का सारा प्रदश उन दिनों माग्वाड एव मवाड के जागीरदारा की सम्पत्ति थी। उनक कारि द नामाय नागरिका का गुलामा से ऊचा नहीं समभत थ। हरिजना एव जनजातिया की दशा सा श्रीर भी खराब थी।

श्री महीधरजी न इन श्रत्याचारों के विरुद्ध ध्रापना काय प्रारम्भ किया। जागीरदारा का उनका यह काय नागवार लगा श्रीर इसकी सजा भी समय-समय पर उह भोगनी पडी। कई बार जागीरदारा क नोकरा न ध्रापका पकडकर कचहरी में पेश किया जहा जूते मारने की सजा दी गई। लकिन बाद में ब्राह्मण जानकर छोड दिया गया। एक बार तो इन लामा ने बय पशुभा से भरे ध्रावाली के बौहड में ध्रापका एव ध्रापके साथी कायकतार्थी को बाधकर पटक दिया। जगल से बडी मुश्किल से ध्राप वापस अरती में पहुचे। पतक सपत्ति में ध्रापकी जो हृषि भूमि, कुदा ध्रादि थ, व सभी ध्राणेराव ठाकुर न ब्रधत कर लिए एव समाज में ऐसा बातावरण पदा कर दिया कि एक बार तो ध्रापके एव ध्रापके परिवार के लिए दा जून रोटी की भी समस्या हो गई। हरिजना के लिए पाठशाला खोलने क कारण जाति एव समाज न एक प्रकार से ध्रापका बहिष्कार ही कर दिया

था। समाज में जापूति पदा करने की ध्रापकी गतिविधिया क कारण ध्राणेराव ठाकुर ने 1940 में ध्रापका बंद कर लिया। ध्राप से क्षमा मागन एव भविष्य में इन कार्यों में न पडने का लिखित इकरार करने का कहा गया, परंतु ध्राप न स्पष्ट मना कर दिया। ध्राविर करीब 6-7 महीने के बाद वहा से बिना शत ध्रापको छोड दिया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार न 1972 में ध्रापको ध्रापकी सजाप्रा क लिए ताडपत्र एव प्रगति पत्र भट किये। ध्रापका जीवन सभी यसना से पूणत मुक्त रहा है एव जीवन यापन का मुख्य स्रोत कमकाण्ड एव वन ध्रादि सांत्तिक कम रहे है। जीवन पयत ध्रापका सम्बध केवल कापस से रहा है। हर्जिन मवक मव एव सर्वोदय ध्रादासन में भी ध्रापन उताहृपूवक माग लिया था।

—जानबद बड, दुर्गादास चारण ध्राणेराव

सुमरपुर के सिल्पी श्री बी०एल० राजगुरु



“भाज सुमरपुर में भी मेरे ध्रापन रहने का मकान नहीं है। सरकारी जमीन पर भोपडा बनाकर रहता हूँ, वह भी सरकारी ध्राधिकारी प्रव छुडाने वाल है। कहत है—कीमत दो जमीन दाया किराया दा बरना छोडकर निकलना होगा। ध्राज हानत यह है कि घर में बरका क खान-पीन पटनेने ध्रापने श्रीर रहने की भी यवस्था नहीं है। घर के बाल बरका के पायण का काय शृष्टिभी पर निभर है। वह एक भस ररती है। दूध बेचकर ध्रापना जागियाना बसर करत है। मरा मारा समय कापसे के कार्यों, ध्राप पचावत व परिपोजना क्षत्र में लग जाता है।

क्या ध्राप विश्वास करे कि उपपुत्र वाक्याम राजस्थान की समुद्र श्रीर विनासशील सुमरपुर ध्राप पचावत का एक दशक में भी ध्राधिक समय तक सरपच पद पर रहने वाला श्रुति विव्य सक्ता है? सन् 1955 में ध्रापन एक साथी का लिख पत्र में स्वर्गीय श्री बाबूसाल राजगुरु ने ब्यथा का वणन उपयुक्त शब्दा में किया है। एत व हमारे स्वतंत्रता-सनानी, धुन क पत्रक मरावा क मनीहा,



बट्टा और धर्मबो से मरी जिंदगी को ह्राते मुक्तराते बिलाने वाते,
 पर दु खवातर और राउट के प्रति समाप्त जीवन के धनी श्री राज
 गुरु । स्वाभिमानी इतन के दिवदान म जूर पर भुलना नहीं। सत्य
 और 'वाय की यातिर मुषुषु का भावितन स्वीकार, पर पीछे हटना
 म जूर नहीं। ऐम ही तिनो चुने 'यकि ता भारत माता की प्राजादी
 की नीय के पत्वर बन है ।

हाय म 'नालटन की रोमनी त्रिये मुनेरुए ऊदरी की बीचड
 मरी ग-ने मनिया म दूर दराज वाय के बाहर प्राणहित राजस्व
 भूमि म बनी भग्नी क्रापडिया मे वम धनुमुपित व जनजाति के वा
 लागी को झाबादी भूमि म प्रावासीय भूलखट्ट प्रावटित करने वा
 निश्चय नकर वगत म प्रसवार म लिपटा वागजा वा पुडिया लिये
 श्री राजगुरु की भूमती हुइ सत्वीर प्राज की श्रेयक बढ लोगी की
 धारिना मे बनी हुई है। वेपर गरीब लोग कहहू— मरख सहहू।
 एष फरजी धाररी नी लिहा। धाररे नी तो मवान कोनी बिराया
 वा मवान म देको हो। श्री राजगुरु जी कहत— 'पहले वाते
 पन्टा दे हू पदे मारी बारी ।"

श्री राजगुरु बडे रोवीले और प्राणयन अकिक्ल वाले थे ।
 उनका जम सन् 1911 मे प्राय पलासिया (जिला जालौर) के
 श्री मातीसिंह पुरोहित के घर हुआ था। साधारण पन्नाई लिखाई के
 बाद इन्होंने पुनःका और स्टेशनरी की एक दुकान खोल ली। इससे
 इनका लोक सम्पर्क ता बढा ही नाय ही विविध विषया वा नान
 नी बनता गया। निगमित ध्रमवार भाषण स राष्ट्रीय प्रादोलन की
 गार धारणित हुए और स्वामीय समसाम्रा-कासकरो पर लटाई,
 राय बाग बड-अगार के रूप म हो रहे भोगण मे इलक क्राप-तास के
 विषयी भी सत्रिय होकर काम करने लगे । फलस्वरूप प्राप-तास के
 जामी रदार नाय नापज ह्य गये और इनकी सोली की जमीन भी
 जस्त कर ली गयी। इहू मुनेरुए से भी मगाने के पडयच होने लगे।
 इसी बीच इनका मय्यक धरनेर कायेम के प्रमुख तथा श्री राम
 नारायण चौधरी ने हुषा और वे साथ जुड जाने मे इनका हीसता बढा
 बनन लग। कायेस समय के साथ वाय करने लगे ।
 और म उभाहू के साथ वाय करने लगे ।

सबप्रथम सन् 1936 म इन्होंने मुनेरुए की एक जिनम
 पत्रकी म रहे मजदूरी के भोगण के विरुद्ध प्रावाज उठाई और
 मजदूरी का सगठन कर एक प्रादासन सडा कर दिया। पर उस
 जमाने म पुलिस और हुकूमत तो मालिबा के दिहा की रसा मे लिए
 ही थी, मजदूरा वा कोई रखा ही नहीं था। फलस्वरूप राजगुरुजी
 पर मूडा मुकदमा बनाया गया और उनमे इहू जेल की सजा भी
 सुनाती पदी। इससे बाद मुनेरुए की सीमा म लगे सिराही राज्य
 के निवचय करने के निवासी श्री देवीचण्ड सागरमत के माज्यम

से राजगुरुजी का मय्यक सिराही प्रजामण्डल के प्रमुख नेता श्री
 गोडुलभाई मट्ट से हुषा और श्री गोडुलभाई के साथ इहान
 सिराही राज्य के गावो म जातीरी जुलमा के विरुद्ध प्रावाज उठाई।
 इनके प्रचार ने सगठन मे प्रभूत शक्ति पदा की। सन् 1939 म
 तत्कालीन सिराही दरबार ने श्री गोडुलभाई तथा प्राय काय
 बर्तामा के साथ साथ राजगुरुजी को भी राज्य मे निगमित कर
 दिया। जब वुन मुनेरुए ही इनका बेटीय वायस्वत बन गया।
 सन् 1940 मे राजगुरुजी लोकनायक जयनारायण पास के मनुल म
 काम कर रही मारवाड लोक-पारिपद के सदस्य बने और मुनेरुए
 शाखा स्वायित कर उसके अध्यक्ष चुने गये। लेकिन इसने तब ही
 वे तो पुरी शक्ति से राष्ट्रीय प्रादोलन मे बूढ चुके थ। सन् 1938
 के नवम्बर म विरह प्रसिद्ध नेता कामरेड एम.एन. राय की
 अध्यक्षता म फिहलु-सीपरी मे 'उत्तरमात देवी राज्य लोक
 प्रतिनिधि सम्मेलन' मे सतिमित हारर इस क्षेत्र की जनता की
 प्रावाज को बुलद किया। जामीरदारो स प्रभावित सामती युधिम
 ने सन् 1943 म इहू लोगा म वायात कलाने का प्रापेय सपाकर
 'सिद्धी गोट्ट' की मूनी मे दज किया और उगातर वाते म बुला
 कर इनके उरारे यमकारे रहे ।

मुनेरुए मे राजगुरुजी को अपने राजनतिक जीवन के
 प्रारम्भिक फाल मे प्रभूत सहयोग मिला सबकी इदाजी माली, मन
 मुषमाई पटेल मणेशजी चौधरी, बजुभुज जी तोमरनीवाल, बलदेव
 मिहजी चौधरी, मद्यलालजी माली भीमचन्दजी माली का,
 और मुनेरुए मे कायेस का सगठन मजबूत हुआ। इससे वाकी
 तहसील के ग्रामो, बिणेपकर—तलतपड, सिवाडी, बाकनी,
 कोनेलाव, चाणोड, दोला, पुराठा, सोमाग, मोलीवाडा पासडी मे
 जाएति पदा हुई। सबकी पुत्रराजजी परिहार—चाणोड, देसाजी
 चौधरी—चाणोड, मराजी दोला, गोट्टमनजी दोला, नवतानी
 तोला, वनेचण्डजी मेहता—तलतपड सिवालजी मट्टुत कामरिहजी
 पानोन्, दसपतसिंहजी चणोडी, नूरायामजी मट्टुत भीमचण्डजी
 कोनेलाव प्रादि कायकरतामा मे राजगुरुजी के सहयोग से गावो मे
 प्रभूतपुत्र जाएति पदा की। वाकी तहसील और वाली जिला उत्तर
 पर सपठन का काय कर रहे सबकी भीडालालजी वकील—वाली बलन
 मगरामजी जौनिड—पुणेओ, मकरवालजी वकील—साडी, धनपतिराजजी
 वाकील धरराड—वाली मणेशजी सुहार—साडी, धनपतिराजजी वमा—
 मणशरी—सोहत, बागुदेवीजी शारणी—जतरण, धनराजजी वमा—
 पानी माणकलालजी मापुए—रायत, पूलचण्डजी बाफना—साडी,
 प्रेमराजजी महला—लीमल बरमातालजी राणावत—पुडाला,
 मणचण्डजी बाणदेवा—पालना गोडुलजी मोदी—कावला डारका
 दामजी गुजा—वाली छोट्टमनजी सुराणा—वाली, निजमलजी
 मुराणा—वाली का हर समय राजगुरुजी को सहयोग मिलता रहा ।

हिंदी भाषा



लेखक का सम्पर्क श्री राजगुरु से सबप्रथम 1946-47 मीठ व देवसी म धायोजित सम्मेलना म हुध्रा धीर तब स उनके स्वगावास तक हर ध्रादालन, सगठन व चुनाव-काय मे अटूट साथ रहा । सन् 1952 म विधानसभा के प्रथम चुनाव म सुमेरपुर क्षेत्र का मेरे सारे चुनाव-काय का सचालन राजगुरुजी न ही किया था ।

सुबह जल्दी नाश्ता करके घर स निकलना धीर देर रात तक घर पहुँचकर भोजन वरना यह उनका दैनिक कायक्रम था । दिन भर काम करत हुए चाय धीर सिगरेट उनके साथी थे । उनकी टोली ता अभावपस्त दु ली, शोपित पीडित लोगो की ही टोली थी । ये लोग ही उनके दरवार के दरबारी थे— चाहे कांग्रेस का दफतर हो चाहे पचायत कार्यालय । सुमेरपुर के लोग उनके सरपंच-कान को वमी नही भूल सक्त । आज जा सुमेरपुर देश की एक प्रमुख मण्डो के रूप मे उभरकर सामने धायी है उमका श्रेय राजगुरु जी को ही जाता है । आज सुमेरपुर की नगरपालिका का वार्षिक बजट करीब एक कराड रुपये का है जबकि आजादी के पूव सुमेरपुर पचायत (सन् 1945) का बजट मात्र 65/- रु का था जिमम चपरासी की तनखाह 48/- ही मुख्य व्यय था धीर भाव की सफाई पर रु 6/ धीर डाक-स्टेशनरी पर रु 6/- धीर अय लघ रु 5/- रखा गया था ।

आजादी के बाद पचायत के नये कानून के अतमत हुए चुनावा म राजगुरुजी सरपंच चुन गय धीर उनके कायकाल मे सुमेरपुर न अग्रभूतपूर्व तरकी की । मवप्रथम पचायत भवन (मीठवा नगरपालिका भवन) बनवाया गया । बाजार की सड़को का निर्माण करवाया । रेडियो सट खरीदकर धाम जनता तक समाचार व सूचनाएँ पहुँचाने का काय किया । वाचनालय का निर्माण करवाया । युवको धीर छात्रो म खेलो के प्रति धारूपण पैना करने के लिए मनोरंजन केन्द्र की स्थापना की । प्रतापनागर नामक पेयजल की सुविधा हतु कुभा तयार करवाया, जहा स्नानागार भी बनवाय गये । धाम जनता के हिताय शौचालय व मूशालय बनवाये गय, विविधालय भवन का निर्माण भी इसी दौरान हुआ । सुमेरपुर म विधुतीकरण की याजना भी उसी काल मे बनी तथा कृषि उपज मण्डो समिति की स्थापना हुई । रूपबाग का निर्माण भी इसी काल म हुआ । सुमेरपुर तथा डन्री म ससी माटुला गलिया म पक्की सडको व नालिया का निर्माण कराया गया । उही क कायकाल मे केन्द्रीय उद्योगमन्त्री श्री मनुसाई शाह न उद्याण-वस्ती का शिला-पाम किया । हाई स्कूल के लिए प्रतिरिक्त भवन बनवाया गया । सुमेरपुर के लिए जपरणय याजना उसी काल म स्वीकृत हुई । कतना ही नही विकास का कोई क्षेत्र एसा नही रहा जहा राजगुरुजी न सुमेरपुर की प्रगति के लिए काय नही किया हा ।

स्वर्गीय राजगुरुजी विविध प्रतिमाभो के धनी थे । व साहित्यकार पत्रकार-नवादाता भी रहे । सन् 1941 म सुमेरपुर म सुमेरपुर साहित्यकुल की स्थापना की । सन् 1955 मे पाली जिला पत्रकार सघ के उपाध्यक्ष पद पर चुने गये । सन् 1948 म राजगुरुजी ने प्रौढ शिक्षा सघ—सुमेरपुर की स्थापना की धीर सघ के प्रथम मनी चुन गये । जन हिंसाय 1949 मे सर्वोच्च वाचनालय की स्थापना की । सन् 1958 म श्री राजगुरु की सुमेरपुर का धाप रेडिव मार्केटिंग सोसायटी लि० के अध्यक्ष पद पर चुने गये । जिला कांग्रेस कमेटी के जीवनपथत कमठ कायकर्ता रह धीर उपाध्यक्ष, मन्त्री आदि कई पना का वर्षों तक सुशासित करत रह ।

राजगुरुजी सबसुलम व्यक्तिये । हर एक के लिए हर समय महयाग करत का, साध चलन का तयार रहत थ । जनहित के साव जनिक कार्यों म रात गिन लगे रहना उनका जीवन का ध्येय धन चुका था । आज का सुमेरपुर उही की देन है धीर महो उनका सच्चा स्मारक है ।

— मोहनराज जन



सोजत के सेनानी श्री यशवन्त 'रुचिर'

□

श्री यशवन्त रुचिर वास्तव म कमशील व्यक्तिये हैं । जीवन म मानगी धीर मयम तथा परिग्रह रहित स्वच्छत्रय मनुष्ट जिन्दा का नमूना रखना हो तो इनमे दामिय । रुचिरजी पैगे म पत्रकार है पर धाप राजनतिक व सामाजिक शक्ति स प्रगतिशील विचार का धनी रन हैं । धन प्रारम्भ न ही इनकी राजनीति म रुचि रही है ।

सन् 1937 म इहान पञ्जाब युनिवर्सिटी म मट्रिक का परी हा पास की धीर तत्काल ही सावजनिक सेवा म नग गय । सन् 38 39 म धाप पञ्जाब धाय युवक परिषद् के मन्त्री पद पर रह धीर युवका को सगठित करन का महत्वपूर्ण काय किया । साहित्य म इनकी रुचि विद्यार्थी जीवन म ही थी । सन 1940 म धपापार म धगिन नारतोय टिणी साहित्य सम्मनन के धवसर पर स्वागत समिति के नायागय मन्त्री रहकर इहान सम्मनन क सफल ध्याजत म साहित्य नाय लिया । इम सम्मनन क पश्चात् उनकी रुचि साहित्य-मन्त्री



कच्चा और अभावों से मरी जि दगी का हृदय मुक्तगति बिताने वाले, पर दुःखकातर और राष्ट्र के प्रति समर्पित जीवन के धनी श्री राज गुप्त । स्वामिमानों इतने कि दूना मजूर पर भुक्ता नहीं । सत्य और पाप को यानिद भ्रूलु का श्रातिनन स्वीकार पर पीछे हटना मजूर नहीं । एम ही गिने चुने जक्ति तो भारत माता की प्राजादो की नींव के पत्थर बन हैं ।

हाथ म तालटेन की रोजनी तिये सुमरपुर ऊदरी की कीचड मरी गणी गलिया म दूर दराज गाव के बाहर अतपिकृत राजस्व नृमि म बनी भग्नी कोपडिया मे वम धनुषचित व जनजाति के लोमा की प्राधानी भूमि म प्रावामीय ध्रुवण्ड प्राविति करने का निश्चय कर बलम म प्रखरार म सिपटा कागजा का पुतिदा तिये श्री राजगुप्त की धूमती हुई तस्वीर प्राज की अनक वड लोपा की प्राया म बनी हुई है । वयर गरीय लोग कहते— 'सरपक साहब । एक प्राजी प्रापरी भां तिया । प्रापरे भी तो मकान कोनी, किराया ग मकान म रखा हो । और राजगुप्त जी कहते— 'पहन धान पटा दे हूँ, पछे भारी भारी ।'

श्री राजगुप्त बडे रोबीले और प्रावपक शक्तिव वान थे । उनका जन्म सन् 1911 म प्राम पलासिया (जिना जालौर) के श्री मोतीमिह पुरोहित के घर हुआ था । साधारण पढाई लिखाई के बाद इहाम पुस्तका और स्लेखनी की एक दुकान खोल ली । इतने न्कन लोन मम्बक तो बडा ही, साथ ही विविध विद्यो का ज्ञान भी बढ़ता गया । नियमित श्रमवार बाचन के राष्ट्रीय प्रादोलन की प्रार प्रावर्षित हुए और स्वानीय समस्वाधा-काश्तकारो पर लडाई लाग प्राग वड-बवार के रूप मे हो रहे शोयण ने इनको प्रादोवित विदा और सक्रिय होकर बाध करने लगे । फलस्वरूप प्राय पाय के जागोवदार लोग नाराज हा भये और इनकी डोली की जमान ली जब्त कर ली गयी । इह मुयेरपुर स नी भगाने के पहयन हो गये । श्री बीच इतना मम्बक अन्धेर प्राग्रेस के प्रमुख नन श्री राम नारायण चौधरी म हुमा और प काग्रेस के सदस्य बनकर काम करने लगे । काग्रेस सगठन के साथ जुड जान मे दनवा होसला बडा और म उभाह क साथ काय करने लग ।

श्वप्रथम सन् 1936 म इहाने मुयेरपुर की एक जिनिम फस्टो म हा रडे मजूर्रा के शोपण के विवड प्रावाज उठाई और मजूर्रा का सगठन कर एक प्राानलन खडा कर दिया । पर उम जमान म पुतिन और हुबूनन ता मासिका के हिवा की रखा के लिए ही भी, मजूर्रा का कोई रखा ही नहीं था । फन्स्वरूप राजगुप्ती पर मूटा मुकदमा बनया गया और उसम इह जेन की सजा भी मुगतनी पडा । इसके बाद मुयेरपुर की सीमा से लगे सिरोही राज्य के सिवगन करने के निवाती श्री देवीचन्द सागरमल के मायम

से राजगुप्ती का सम्पक सिराही प्रजामण्डल के प्रमुख नता श्री गोबुलभाइ मटट म हुमा और श्री गोडुल भाई के साथ इहाने सिरोही राज्य क गावो म जागरीी युल्लो के विवड प्रावाज उठाई । इसके प्रचार ने सगठन मे प्रभूव शक्ति पैदा की । सन् 1939 म तत्कालीन सिरोही दरबार ने श्री गोबुल भाई तथा श्रय काय कर्ताया के साथ साथ राजगुप्ती की भी राज्य के निष्कासित कर दिया । श्रय पुन मुयेरपुर ही इनका कन्द्रीय कायस्थल बन गया । सन् 1940 मे राजगुप्ती लोकनायक जयनागयण ब्यास के नृचव म काम कर रही मारवाड लाक परिपद के सन्धय बने और सुयेरपुर शारया स्वावित कर उसने श्रयवत चुने गये । लेकिन इतने दूब ही वे तो पूरी शक्ति से राष्ट्रीय प्रादोलन म नून चुके थे । सन् 1938 के नवम्बर म विश्व प्रसिद्ध नेता कामरेड एम०एन० राय की श्रयस्थलना म पनेहपुर-सीकरी म 'उत्तरभारत देशी राज्य तक प्रतिनिधि सम्मलन म सम्मिलित होकर इत क्षेत्र की जनता की प्रावाज का बुकद किया । जागोरेदारी से प्रभावित मामती पुतिन ने सन् 1943 म इह लोपी म ब्यावत कलाने का प्रारोध लगाकर 'हिस्ट्री शीटर' की सूची म दज किया और तगातार घान म जुता कर इनके डराल प्रभाते रहे ।

मुयेरपुर मे राजगुप्ती की अपने राजनतिक जीवन के प्रातिमिक काल मे प्रभूव महोप मिना सवधी इडाजी माली, मन मुलभाई पटेल गणेशजी चौधरी, चतुसुज जी लोखनीवाल, बलव सिंहजी चौधरी मद्यानपजी माली, भीकमचन्दजी मारो का, और मुयेरपुर मे काग्रेस का सगठन मजवूत हुआ । इससे वाली तहसील के प्रामा विगयकर-सखतगण सिधादी, बाबली, कामेलाव, चाणोद, दोला, पुराडा, पोमावा, कोलीबाडा, पालडी म जाष्टित पदा हुई । सवधी मुयेरराजकी परिहार-चाणा-केसजी चौधरी-चाणोद मराजी डाला, प्राटरमलजी कीला नरलाजी दोला, बनेचन्दजी मेहला-सखतपड शिवलालजी भाटून, कार्नासिहजी चाणा दलपतसिहजी चाणोद भूरा रामजी भाटून भीकमचन्दजी बोसेलाव प्रादि कायकर्तायों ने राजगुप्ती क सहयोग से गावा म प्रभुपूव जाष्टित पदा की । वाली तहसील और वाली जिला स्वर पर सगठन का काम कर रहे सवधी भीडालालजी बाबा-साजत मगारामजी जाँफिड-गुडीय, शकरलालजी बकील-पाली बलम दामजी मराडा-पाली, गणेशजी सुहार-साण्डी धनपतिराजजी भण्डारी-साजत, वासुदेवजी माल्नी-जतारण, धनराजजी वमा-पारती माणकलालजी मायुर-सोजत फूलचन्दजी बावना-साण्डी, प्रेमराजजी मरुता-लोमल चम्पालासजी राखावत-तुडाला, रचचन्दजी बागरचा-फानना गोडुलजी माली-फालता डारका दामजी गुन्डा-बाली छाटमलजी सुराणा-बाली, विजयमलजी सुराणा-बाली का हर मयम राजगुप्ती को सहयोग मिलता रहा ।



लेखक का सम्पर्क श्री राजगुरु स सवप्रथम 1946-47 खोड व देवली म झायाजित सम्मेलना म हुझा और तव म उनके स्वगवाम तक हर भा दालन, सगठन व चुनाव-काय म झूट साथ रहा । मन् 1952 मे विधानमभा के प्रथम चुनाव म सुमरपुर क्षेत्र का मेरे सारे चुनाव-काय का मचालन राजगुरुजी न ही किया था ।

सुबह जन्दी नाथना करके घर स निकलना और देर रात तक घर पहुँचकर भोजन करना यह उनका दैनिक कार्यक्रम था । दिन भर काम करत हुए चाय और मिगरेट उनके साथी थे । उनकी टोली ता अभावग्रस्त दुखी शोषित-पीडित लोगों की ही टोली थी । ये लोग ही उनसे दरबार से दरबारी थे- चाहे कांग्रेस का दम्तर हा चाहे पचायत कार्यालय । सुमरपुर के लग उनके सरपच-नाल का कमी नही मूल सकते । आज जा सुमरपुर दश की एक प्रमुख मण्डी के रूप मे उभरकर सामने आया है उनका श्रेय राजगुरु जी की ही जाता है । आज सुमरपुर की नगरपालिका का वापिक बजट वरीय एक कराड रुपये का है जबकि आज्ञादी के पूव सुमरपुर पचायत (सन् 1945) का बजट मात्र 65/- रु का था, जिनम चपरासी की तनस्वाह रु 48/- ही मुख्य व्यय था और गाव की मवाई पर रु 6/- और डाक-स्टेशनरी पर रु 6/- और अन्य खच रु 5/ रहता गया था ।

आजादी के बाद पचायत के नय कानून के अतगत हुए चुनाव मे राजगुरुजी सरपच चुने गये और उनके कार्यकाल म सुमरपुर मे अद्भुतपूव तरहकी की । सवप्रथम पचायत मवन (मौजूदा नगरपालिका मवन) बनवाया गया । बाजार की सडका का निर्माण करवाया । रेडियो सेट खरीदकर धाम जनता तक समाचार व सूचना पहुँचाने का कार्य किया । वाचनालय का निर्माण करवाया । युवका और छात्रो मे खेलो क प्रति आकर्षण पैदा करने क लिए मन्तारजन केन्द्र की स्थापना की । प्रतापमागर नामक पबन की सुविधा हनु बुझा तयार करवाया जहा स्थानागार भी बनवाय गये । धाम जनता क हिताय शौचालय व मूनालय बनवाये गये, चिकित्सालय मवन का निर्माण भी इसी दौरान हुआ । सुमरपुर म विद्युत्कारण की योजना भी उसी काल म बनी तथा वृषि उपज मण्डी समिति की स्थापना हुई । रूपबाग का निर्माण भी इसी काल म हुआ । सुमरपुर तथा ऊदरो म समी माहल्ला-मलिया म पक्की मन्का व नागिया का निर्माण कराया की । उहाँ के कार्यकाल म कड़ीय उद्योगमभी श्री मनुमाई शाह न उद्योग-वन्ती का गिलायास किया । हाई स्कूल के लिए अतिरिक्त मवन बनवाया गया । सुमरपुर क लिए जलप्रपाय योजना उनी काल म स्वाहून हुए । वना हा नही, विनास का काई क्षेत्र एसा नही रहा जहा राजगुरुजी न सुमरपुर की प्रगति के लिए काय नही किया हा ।

स्वर्गीय राजगुरुजी विविध प्रतिभाओ के धनी थे । वे सहित्यकार, पत्रकार-संवाददाता भी रहे । सन् 1941 मे सुमरपुर म 'सुमरपुर साहित्यकुल की स्थापना की । सन् 1955 मे पाली जिचा पत्रकार सभ के उपाध्यक्ष प पर चुने गये । सन् 1948 मे राजगुरुजी ने प्रोड जिना सभ-सुमरपुर की स्थापना की और सभ के प्रथम मंत्री चुने गये । जन हिताय 1949 मे सर्वोदय वाचनालय की स्थापना की । सन् 1958 म श्री राजगुरु 'दी सुमरपुर को प्राप-रटिव मार्केटिंग सामायटी लि०' के अध्यक्ष प पर चुन गये । जिना कांग्रेस कमेटी के जीवनपथन कडठ कायकता "हू छोड उपाध्यक्ष मंत्री आदि कई पना का वषो तक मुगानिन करत रह ।

राजगुरुजी सवमुलम व्यक्ति थे । हर एक के लिए हर नमय महयाय करन का, माय चलन को तैयार रहत थे । जनहित के साव जनिक कार्यों म रान दिन समय रहना उनके जीवन का ध्येय बन चुका था । आज का सुमरपुर उहाँ की देन है और यही उनका सच्चा स्मारक है ।

—मोहनराज जन



सोजत के सेनानी श्री यशवन्त 'रचिर'

श्री यशवन्त रचिर वास्तव म कमशील व्यक्ति हैं । जीवन म माग्गा और मयम तथा परिश्रम-रहित स्वच्छ व मनुष्ट जिन्गी का नमूना दसना हा ता वनम दायिय । रचिरनी पत्र म पत्रकार हैं, पर आप राजनतिक व सामाजिक दृष्टि स प्रगतिशाल विचारा क धनी रू हैं । अन् प्रारम्भ म ही इनकी राजनीति म रचि रही है ।

मन् 1937 म दहान पत्राव सुनिवसिगी म मंत्रिक की परी ताय की और तत्काल हा सावजनिक मवा मे तय गये । मन् 38 39 म आप पत्राव आप युवक परिपद् के मंत्री प पर रह और युवका को संगठिन करत का महत्वपूर्ण काय किया । साहित्य म इनका निविद्यार्थी वावन स ही थी । सन 1940 म अवाहर म अतिव भारतीय हिन्सा साहित्य सम्मलन के प्रवसण पर स्वागत ममिति क कार्यालय मन्त्रा रहकर इहोन सम्मलन के सफल आयाजन म मन्त्रि माय किया । इस सम्मलन क पश्चात् उनकी रचि माग्गि-रचना की

वन्दे मातरम्



भाग बन्ती गई। उत्तर प्रदेश से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'उजाल टाइम्स' और 'रणस्यली' के सम्पादकाय विभाग में उ जहां काम किया। इस दौरान इनका सम्पर्क हुआ प्रांतिकारा राजा महेंद्रप्रताप वायू सपुर्णानंद राजपि पुष्पासमदास टंडन बाबू श्रीप्रकाश विजयसिंहजी पथिक भामालालजी गुप्त हरिभाई किंकर, गणबीलाल भ्याम उस्ताद स। यह सम्पर्क बढ़ता स बड़ा निकट का हुआ और साहित्य सेवा के साथ-साथ देश की प्राज्ञान के लिए मध्य बनन का भी मानन बनता गया। सन् 41-42 में हरिचरजी मारवाड लोक परिषद स जुड़ गये और जनजाष्टि का साथ करने लग।

सन् 1943 की रात फरवरी का जायपुर में मत्वायह प्रांगणन में आग लग हुए हरिचरजी का गिरफ्तार किया गया। उस समय मारवाड लोक-परिषद के 16वें दिक्कटर चण्डावल जिसांभी श्री मालीलाल तिवदी प्रालीशान व श्री इ-ही के साथ हरिचरजी भी गिरफ्तार किए गए। जल में इनकी रिहाई प्रांक 30 5 44 का हुई और इस बीच इ ह अनेक यातनाएं दी गs। कुपायण के पत्रव्यवस्था जल में ही इनके पट में मथकर दद हुआ और अंप्रतिबन्ध का आदेशन कराया गया। उस समय जल में दी गई यातनाया के पत्रव्यवस्था इनकी कमर में जा दद पदा हुआ वह प्राज्ञ तक गयी मिट पाया है।

देश के आजाद होने के पश्चात् भी प्रायिक और सामाजिक प्राजादी हेतु हरिचरजी निरंतर सपथगील रहे है। सयुक्त टुड युनियन सथप ममिति के प्राज्ञान पर सन् 1966 के आ-दातन में भाग लन पर के गिरफ्तार किये गए। फिर सरकार न डा पर स मुकदमा उठा लिया। इसी प्रकार के प्रांगणना में य कई बार गिरफ्तार हुए है और अपनी राजनतिक व प्रायिक मायताप्रा पर प्रांति रहत हुए प्राप अन्नूज निर्मीकता का परिचय दल हुए काय करत रह है।

अभी वही वय साजत में हुए साम्प्रनायिक भगडा के मध्य दाना वर्गों के बीच बढन तनाव का राजने की दृष्टि स हरिचरजी मकट के बीच फेंक गए। अथन छाटे व न भुकी हुई कमर और बदावस्था के कारण भगदड के और पुलिस द्वारा किये गए साठी चाज के शिकार हुए। पुलिस लाठी चाज स उनक हावा पावा व कमर में चांटे प्रायी और प्राप बुरी तरह घायल हा गए।

श्री हरिचर साहित्य-सलयन में अभी ना सतत् सत्रिय है और पत्रकारिता के माध्यम से जन समस्ययाओं के निराकरण में रचि लत ह। स्वाभिमान इनमें नूट-नूट कर मरा है। इसी कारण इ होन स्वतंत्रता मनाने के रूप में पेशान के लिए प्राथना-पत्र भी नही

लिया। हरिचरजी पिछले 15 वर्षों में साजत में रहकर साहित्य सेवा में लगे हुए है।



अध्यापक-सेनानी श्री पुण्येन्द्र भाला 'पथिक'

श्री पुण्येन्द्र भाला पथिक स्वतंत्रता सेनानी तो है ही, साथ में उच्छकोटि के कवि और साहित्यकार भी हैं। इनका जन्म देवली

नला (चण्डावल) में हुआ और प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर य प्राय चण्डावल में अध्यापक के पद पर नियुक्त हो गये। साहित्य में रचि होने से राष्ट्रीयता की सहर स वे भला अछूते बस रहत और फिर चण्डावल तो राजनतिक गतिविधियों का केन्द्र था। यहा ना माली लालजी 'प्राचीशान' छत्तारामजी नयमलजी मूधा, राममुलजी पुराहित व डॉ० दयालसिंहजी सरीम प्रबुद्ध व सत्रिय कायकर्ता लोक परिषद का काय कर रहे थ। उधर मारवाड के जागीरदारों में चण्डावल ठाबुर अथने प्रातक व दमन के लिए प्रसिद्ध था। इन हालाता में मध्य प्रावश्यक भी था। प्राप सन् 1938 स ही मारवाड लोक-परिषद से जुड़ गये।

28 मार्च 1942 को प्रायोजित जिम्मदार हुनमत दिवस के प्रायोजन के पूव ही जागीरदार चण्डावल ने इ-हे निर्वासित करा द दिया और इ-ह सपरिवार जोधपुर प्राकर रहना पडा। यह स्मरणीय है कि इस दिन चण्डावन में जागीरदार के दा-डाई सी लठत पुडसारा न नाक परिषद के कायनसभा व निर्दोष विसाना की जा पिटाई की उसकी विसान अथन नही विसगी। ठाबुर चण्डावल के जुलूमों का विराध करने के पत्रव्यवस्था उ-ह न केवल बार-ह वय की अय्यापक की नोकरी स हाथ योजना पडा वरन् अनेक यातनाएं व प्रायिक हानियां भी उठानी पडी। लेकिन इन मुनीबतों ने पुण्येन्द्रजी में जागीरी-जुमों के विरुद्ध निरंतर सथप करने का साहस व जोश पदा किया और अलदारा में सवाद सथ तथा मारवाडी भाषा में गीत कविनाएं प्रांति लिख कर जनता में जाष्टि पदा करन व जोश करने में अपनी प्रापका समर्पित कर लिया। इस सथप काल में पुण्येन्द्रजी सोचनायक श्री जयनारायण ब्यास मथुरादासजी माधुर मीडालासजी काका, हरिभाई किंकर प्रांति



नेताओं के सम्पर्क में आये और उनके माग दशन में लोक-परिषद् की रक्षितविधियों में व्यापक रूप से भाग लेने लगे। ग्राम देवली कला में बेरे के जागीरदार द्वारा मयलगिरी नामक किसान की बेगार निबालने से मना करने पर नूरतापूण डग से हत्या की गई थी और चौधरी रूपाराम की भी ऐसी ही कार्रवाई से घाबरे से हत्या की गई थी जिसके विरुद्ध पुष्पेन्द्रजी ने अपनी आवाज बुलंद की और दोषी-पक्षियों के विरुद्ध निडरतापूर्वक कायबाही की।

आजादी के बाद इनका भूकाल रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर अधिक रहा और इन्होंने सर्वोदयी नेता गोबुलमाई अटके के साथ भूदान पद यात्रा में पाली जिले का दौरा किया। उनके गीता और कविताओं की कई पुस्तकें किताब घर जोधपुर से प्रकाशित हुई हैं। इनकी कविताएँ लोग बड़े चाव से गाते थे जिनमें अत्यन्त लोकप्रिय गीतों की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं —

हे ओ जागो जवानो !
या न राष्ट्र रो निर्माण करने है— जागो जवानो !
ये हाल सूता हो जागो जवानो !

किसानों की दयनीय दशा का चित्र इन्होंने यो खीचा है

कामेतो ललकारे हमे, यने धरती मुझे बोलो ओ
मून राखिया मिनख मरेला,
मन में तोल ओ, देम बोलन रो

कवि आगे कहता है —

यह अ बयारी रातो माये, खेतो में कुएँ बोडे ओ,
चोमासे सिवाले में कुएँ पडिया चोडे ओ,
बोल मुण्डा सू ।

जागीरदारी प्रथा की बठ-बेगार मुनात हुए कवि कहता है —

रोज रोज बेगारो माये, म्हाणे सखा तलता र,
माचो न राखी तो म्हाणे, नीच माखल नाता र,
ठण्ड में ठरलोडा मरता, गोडा बीचे माथा र ।

महीनो पोस रो, हा ओ महीनो पोस रो ।

धीणे थाणे म्हारे घरे, छाड्य रा है बावा र ।
जता दे जावणिया लेता, घोडा मावा र ।

कोटी करेला, हां ओ कोटी करेला ।

जटो ने घोडें दे ताड भारा मोटा लाता र ।

पग उलवाण पदल जाता नाबल खाता र,

म्हारो सारो मो, जुल्मा रे भागे कोडे चारो नी ।

एक दूसरी कविता में पुष्पेन्द्रजी के नातिकारी बाल इस प्रकार है —

मजदूरो की मेहनत माये मोटा मीज उडावा रे,
ए महला बसे, मोटरो घूमे मीठा खाव रे,
कमाई करता रो, हा ओ कमाई करता रो,
आ लूट देखो, लाबा वरसो रो ।।

खून रो पानी कर ने, कडी मेहनत करो रे
ए निकमा बँडा हाटों में, धरारों ध्याज भरो रे—

डोडो मितियों रो, ए डोडो मितियों रो
ए लेखो लेवे रतिया रतिया रो, डोडो मितियों रो ।।

पुष्पेन्द्रजी आज भी समाज सुधार विषयक अष्टाचार के विरुद्ध और आजादी के बाद नेताओं के आराम-तलबी व माद मतीजावा क विरुद्ध गीत लिखत रहते हैं। इन दिना इनका निवास स्थान विलाडा (जोधपुर) है।



एक तपोमूर्ति
श्री मोहनलाल कठास्थले

श्री मोहनलालजी कठास्थल का
जन्म 27 अक्टूबर मन् 1902 का
थी पूनमचञ्जी कठास्थल (जाली)

के घर गाँव बिराटिया खुद परगना जतारण में हुआ था। उनकी शिक्षा उनके गाँव बिराटिया व सदन स्थित पाठशाला में हुई। श्री मनालन धम पाठशाला-ब्यावर में इन्होंने मिडिल पास किया। लगा तार ग्रन्थाम के फनस्वल्प इहू अग्रजी व हिंदी के धनावा उलू मराठी सम्भत तन्म व गुजराती भाषाओं का भी ध्रच्छा नान हो गया था। सन् 1926 में एम० गिरधारीलाल बब मिक्तरावा म जवापी व पत्र पर उनकी नियुक्ति हुई।

उन गिता गण्टु में महात्मा गांधी का स्वराज आन्दोलन आरा पर था और विधानों वपडा का होलिया तनाई जानी था। आन्दोलन के मिचमिन में हैत्रावाट में इन्होंने थोमनी सराजनी नायडू का भाषण मुना और नीचरी से स्वाम-वत्र दवर मारवाट का धार प्रस्थान कर दिया। मारवाट में गांधी व सामन्ता जुमा और



नामिश्वाही कानूना का बाल बाता था। इनकी कहीं सुनवाई नहीं होती थी। मारवाड़ के 83 प्रतिशत से अधिक गांव जागीरी पट्टे में थे और इनमें से अधिकांश का 'याचिक' अधिकार था यानि अदायत का चलान तथा सजा देने के अधिकार थे। अतः जो भी इन ठाण्डारों के श्रेयाचारों के विरुद्ध बालता उस पर मनमाने ढंग से मुकद्दम चलाकर सजा देने की शक्ति प्राप्त कर लेता था। यद्यपि पन्ना कर वे इच्छित करते। ऐसे ही माहूल में कठस्थलजी अपने गांव बिराटिया आया। इनसे गरीब किसानों के बट-बंगार में पिसने वाले गरीब लोगों की हालत देखी गई। तब इन्होंने जन चेतना का काम शुरू कर दिया।

लाकनायक श्री जयनारायण व्यास का मारवाड़ से निष्कासित (अंग निष्कासित) किया जा चुका था और वे अंगार में रहकर प्राचीनशास्त्र नामक ग्रन्थों का प्रकाशित कर शायित व दब हुए लोगों की आवाज बुलंद कर रहे थे। श्री कठस्थल ने अंगार जाकर उनसे सम्पर्क किया। व्यासजी से मिली प्रेरणा और उत्साह ने इनके काम का ईंधन बढ़ा दिया। अंगार में ही इनका सम्पर्क श्री हरिभाद्र किन्नर गांधीजी के विजयवर्गीय भाद्रि से हुआ जो अंगार में व्यासजी के साथ ही चिरजीसालजी का बगीची में रहने थे। अंगार में ही इन्होंने सचप्रथम पठिन जयशंकरालाल नेहरू के एक ग्राम सभा में अंगार चिपे और दिल्ली में अहमदाबाद जात हुए अंगार स्टेशन पर ही महत्समा गांधी के दशन में चिपे। गांधीजी ने रेल स्टेशन की निडरों से हाथ बाहर निकाल कर हरिजन पण्ड के चिपे से दा माया तब कठस्थलजी ने भी एक पया गांधीजी के हाथ पर रखा। इस घटना का इन पर अमिट प्रभाव पड़ा और इन्होंने गांधी की गरीब आनियों के श्रद्धों की सवा करने का प्रत ले लिया।

श्री कठस्थल की पुस्तकी काश्त की मानयता नामक भूमि निमाज ठाण्डार ने जब्त कर ली और उस लक्ष्य मुकद्दमेबाजी व दंग फसाद शुरू हुए। जागीरी गुण्डा ने कठस्थलजी का जिन्ना नदी में गाड़ने का पडयंत्र रचा और पकड़कर ले गया। पर, रात्रि का ही अमकी खबर निमाज के सठ रिजमदासजी राणा व श्री माधानानजी प्रातिकारी का हा गद जो सक्ता लागी के साथ मोके पर पहुंच गया और इन्हें छुड़ा दिया। मानयता की जमीन का पसला इनके पय में होने पर भी इन्हें भूमि का चक्का नहीं लिया गया जिसके लिए जयनारायणजी व्यास की मदद भी गई और फरवस्तप डठ यह भूमि प्रायत हो सकी। जागीरी गुण्डा के कारण इन्हें अपना बिगा दिया गांव छोड़कर अंतरण जाकर बसना पड़ा।

गांधी ने 'आर्य परिषद्' का प्रचार करते वक्त कई बार उन पर प्रताप घातक हमले हुए। बटुदा गांव में आयोजित एक सभा में जागीरी गुण्डा ने अंगार बजाकर सभा का भंग करना चाहा पर हाथ बड़े रहे। फिर हमला करने इन्हें माधानानजी प्रातिकारी व

भीकमचंदजी छगाणी सहित छ बावकतिया का गिरफ्तार किया गया। उस सभा में चुन्दा वाले बाबा श्री हीराचंदजी मौजूद थे। बटुदा में सेठ चादमल ने जमानत देकर उन्हें रिहा कराया। अपने गांव बिराटिया में इन्होंने व श्री माधानानजी निमाज जाता न सभा का प्रायोजन किया। जागीरी गुण्डा ने सभा में ही जलती हुई लाठेन की कठस्थल पर फकी और लाठिया से हमला कर इन्हें जुरी तरह घायल कर लिया। गांव बाबा ने छुप कर श्री 'नेक नायक' व्यासजी का तार किया और व्यासजी डा० पुरपोत्तम दासजा को साथ लेकर तत्काल आये और इलाज की समुचित व्यवस्था की। अंतरण धनक प्रमुख कायनता भी बासुदेवजी शास्त्री इनके परम सहयोगी थे।

श्री कठस्थल का लोकनायक जयनारायणजी यास का निम्न बात बहुत पसंद था जिसे वे हर माटिंग में गमाया करते थे—

- भूत की लूली हड्डा से, वज्र बनया महा भयकर।
- अग्नि दधोधि की इच्छा होगी, नेत्र नया खोलेंगे शकर॥1॥
- अन्न बिहीन उदर की आरत, दावानल ही बनकर भीषण।
- भस्मीभूत कर देंगे उनका, जो बीबी का करते शोषण॥2॥
- बाकी मत रख पूब सताने, पूब बिखा दे अपना पशुबल।
- निबल का बल देल रही है, तेरे सब कुट्टय को प्रतिपल॥3॥
- जो भर आज सता ल मुष्का आज तुम्हें देता आजादी।
- तेरे इन कृत्यों में सोई, छुपकर तेरी ही बर्बादी॥4॥
- अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है, शक्ति नहीं है और न बाणी।
- साहस हिम्मत तनिक नहीं है निबल हू एक पांजर आणी॥5॥
- पर है हृदय धम बुक तन मे और जलना है भीतर भारी।
- वह सुखयोगी वह प्लेगी जत जापगी दुनिया सारी॥6॥
- नव प्रकाश लख जाग उठेगी सामुद्रा पण्डणी छपर।
- देख देख लपने की भावनें, ताण्डव नृत्य करेंगे शकर॥7॥
- तोड़ हड्डिया और बसेरा, बहा रथिर सब जो की करते।
- बीन-बीन हूली-लीहू से रक्तपात कर मन को भर ले॥8॥
- कस हू तुम पर गाज गिरेगा, तेरा सभी समाज गिरेगा।
- सतत गिरेगा तज गिरेगा, महल गिरेगा, राज गिरेगा॥9॥
- नहीं रहेगी सत्ता तेरी, बसती तो आबाद रहेगी।
- जालिम तेरे सब लुफ्तो की उसमें कायम याद रहेगी॥10॥

श्री कठस्थल स्वयं अर्द्ध ग्रामक और लखक हैं। इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी हैं—

1 जनता का राज्य 2 बडा की राय 3 बीरा की पुकार और व तीनों ही प्रकाशित होकर काफी लोकप्रिय हुई हैं। प्राय 85 वर्ष की आयु में भी इनमें गजब का जोश और आत्म-बल है।



राष्ट्र भक्त सेनानी श्री वासुदेव भटनागर



श्री वासुदेव भटनागर का जन्म सोजत शहर में सन् 1922 के अक्टूबर माह में हुआ था। इनका परिवार ग्रामसमाजी विचारा से प्रभावित होने के कारण सुधारवादी तो था ही, साथ ही राष्ट्रीय विचारा से भी प्रभावित था। बचपन से ही इन्हें महात्मा के महाराण प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह छत्रपति शिवाजी व महर्षि दयानन्द आदि के जीवन-चरित्र पढ़ने का मिले थे, अतः राष्ट्र भक्ति का बीजारोपण तो विद्यार्थी बाल में ही हो गया था।

श्री भटनागर ने अपने सस्मरण सुनाते हुए कहा कि सन् 1940 के जून माह में सोजत रोड के श्री मोठालालजी काका तथा श्री नटरालाल जी पण्डित ने इन्हें अपने घर बुलाकर पहले तो ग्राम-समाज द्वारा हैदराबाद के चले गये सत्याग्रह में भाग लेने के लिये उनकी प्रशंसा की फिर देश की आजादी के लिये चलाये जा रहे आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने की प्रेरणा दी। उन दिनों मारवाड लोक-परिषद् पर पाबन्दी लगी हुई थी। सत्याग्रही कायकर्ता निषेधाना भंग कर सत्याग्रह करते थे और जेल जाते थे। श्री भटनागर का भी सत्याग्रह कायक्रम निश्चित हो गया। 22 जून 1940 को मुम्बई साठे घाट बने बिना घरवालों को सूचित किये अपने घर में निकल पड़े। रास्ते में मन्दिर के पास श्री रामपालजी लड्डा ने मन्त्र पर तिलक लगाया और माला पहनाकर विदा दी। उनके साथ इन का छाटा भाई ब्रह्मदेव व मित्र भीसालालजी थे। अपने नारे लगाते हुए घानमण्टी पहुँचे। पुलिस ने अपने गिरफ्तार कर सोजत सबजेल में रख दिया जहाँ पहले से मौजूद श्री मुन्नालाल व श्री हरिशंकर कटालिया बाल तथा श्री विजयशंकरजी देव ने स्वागत कर अपने साथ रखा।

छाटे दिना परचाट ही मारवाड लोक-परिषद् तथा राज्य सरकार के बीच समझौता हुआ गया और 27 जून को सभी कायकर्ता जेल से रिहा कर लिये गये। 27 जून 1940 के दिन का जुलूस सोजत की जनता के लिये एक विशेष यादगार बना रहेगा क्योंकि इस जुलूस में सख्त नर-नारियाँ व बच्चों के साथ-साथ ढाल बाजा के बीच गगनभेदी नारे—मारत माता की जय, बड़े मातरम् महारमा-

गाधी की जय आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है—पूज रहे दे, यह दृश्य सोजत की जनता के लिये नया तथा विस्मयकारी था क्योंकि कुछ दिन पहले तक तो सत्याग्रहिया क झलावा किन्हीं क मुहों से यह नारे निकलते तक नहीं थे। ग्राम लोग यहाँ बसते फिरत थे कि इन नारों के लगान से क्या अंग्रेजी राज चला जायगा? या आगीरदारी चली जायेगी?

फिर मारवाड लोक परिषद् द्वारा जिम्मेवार हकूमत का आन्दोलन छेड़ा गया और अपने दून उत्साह से मोठालालजी काका से प्रेरणा ले कर इस आन्दोलन का तब प्रति दिन में मन्थित हुआ गया। सोजत में एक बानर बना तयार की। यह बानर बना प्रतिदिन प्रभात फेरी जुलूस आदि निकालती और नारें लगाकर जन-जागरूकता पैदा करती। इसी आन्दोलन के सिलसिले में अपने का जाधपुर में 6 जून 1942 को पुन गिरफ्तार किया गया जहाँ में इनकी रिहाई 9 जुलाई 1943 को हुई।

इसके पश्चात् श्री वासुदेवजी भटनागर का जीवन घटना चक्र में पलटा लगाया और सन् 1944 में इन्होंने भारतीय मना में नौकरी प्राप्त की। यत्र ब्रह्मा सितापुर आदि मोर्चों पर भी गये। युद्ध समाप्ति पर पुन भारत लौटे। सैनिक सेवा से निवृत्ति लकर पाठशाला का कार्य का प्रशिक्षण लिया और पितरजन लाकोमाटिव बकम में नौकरी करती। सन् 1982 में बहाल से सेवा निवृत्त हाकर अपने अग्र भ्रजमेर में ही अपना निवासस्थान बना लिया है और योग-साधना में अपना पूरा समय लगा रहे हैं।



सद्यशील जनसेवक सेठ श्री रिखबदास



श्रावण 75 वय पूज जन्मरत तहसील के निम्बाज बन्ध में स्वर्गीय सेठ रिखबदासजी का जन्म बहाल के एक प्रविण्डित राका (भोसवाल) परिवार में हुआ। स्थानीय पोशाल (पाठशाला) में ही पढ़ाई हुई पर कुशाग्रबुद्धि व कारण रिखबदासजी एक विशिष्ट व्यक्तित्व बाल हानहार मध्याधी पुरय का नात शीघ्र ही लोकप्रिय हो गये। उस जमान में आगीर अग्र्याचार्य से सारी प्रजा बड़ी पीड़ित थी। गावा से लाग आत और आतन



नादिरसाहो बान्दो का बान-बाला था। इनकी वही सुनवाई नहीं हानी थी। मारवाड़ के 83 प्रतिशत में अधिकांश गांव जागीरी पट्ट में थे और इनमें से अधिकांश को 'गायिक' अधिकांश धर या निष्ठागत का चलाते तथा सजा दान क अधिकांश २। धर जो भी इन ठाकुरों के अध्याचारों के विरुद्ध बालता उन पर मनमान दण से मुक्त चलाकर सजा दान और परेशान करते हयकर्मियों प्रथिम पण्डा कर बढ़ाते करते। इस ही माहौल में कठोरतलजी धरन गांव विराटिया धरने। इनमें गरीब किसानों व बंठ-वेगार में पिसने बान गरीब लोगो की हालत दखी नही गई। तब इन्होंने जन चतना का काय घुट कर दिया।

सावनायक श्री जयनारायण 'गाय का मारवाड़ में निष्ठागत (देग निष्ठागत) किया जा चुका था और व ब्यावर में रहकर प्राणोबाण' नामक धरसवार प्रकाशित कर शांति व दण हूट लोगो की धारावन बुन्द कर रहे थे। श्री कठोरतल ने ध्यावर जाकर उनमें सम्पर्क किया। 'गायकी से मिली प्रेरणा और उत्साह ने इनके जाश का कई गुणा बढ़ा दिया। ब्यावर में ही इनका सम्पर्क था हरिभाई किंकर गोपीकृष्णजी विजयवर्गीय धरानि स हुमा जा ब्यावर में व्यामजी के साथ ही विरजीसालजी की धयोधो में रहते थे। ब्यावर में ही इन्होंने सख्यधय पंडित जवाहरलाल गृहक के एक धाम सभा में दशन किये और निष्ठागत स धमदावाद जात हूट ब्यावर स्टेसन पर ही माहौल गांधी व दशन की किये। गांधीजी ने देल डि' की विडम्भा से हाथ बाहर निष्ठागत कर हरिजन पण्ड के लिये च'ग माया तब कठोरतलजी ने भी एक पिसा गांधीजी के हाथ पर रखा। इस घटना का इन पर धमिट प्रभाव पडा और इन्होंने गांधी की गरीब जानिमा व प्रदूतो की सवा करन का व्रत ल लिया।

श्री कठोरतल का पुस्तनी काशत की मानयता नामक भूमि निमाज ठाकुर ने जदत कर ली और उन लकर मुकद्दमेबाजी व दण फसा' शुरू हुन। जागीरी गुण्डा ने कठोरतलजी का जि'ग नडा में गाउन का पडयन रका और पकडकर ल गये। पर राति का ही धमकी लवर निमाज क सठ रिखभदागो राका व श्री माधालालजी 'गातिकारी को हूा गई जो सजडा लोगो व साथ मोके पर पहुच गय और इन्हें छुडा दिया। मानयता की धमीन का फसला इनक वध में होने पर भी इन्हें भूमि का ब'ना नही लिया गय। जिनक लिए जयनारायणजी 'गाथ की मदद ली गई और फलस्वरूप इन्हें यह भूमि प्राप्त हो सकी। जागीरी बुन्द का कारण इन्हें अपना बिरा किया गांव छाडकर जतारण जाकर बसना पडा।

गांधी में साक परिपद का प्रचार करते वक्त कई बार उन पर प्राण भातक हमले हुए। बलुदा गांव में प्रायाजित एक सभा में जागीरी गुण्डा ने नगार बजाकर सभा का भंग करना चाहा पर लाय बडे रहे। फिर हमला करने इन्हें व माधालालजी 'गातिकारी व

भीममधना छागाणी सहित छ कायभंतां का गिरफ्तार किया गया। उस सभा में पुन्ना बाल बाग श्री हीराचन्दजी मौजूद थे। बलुदा क सठ चांदयल ने जमानत देकर उह रिहा कराया। धरन गांव विराटिया में इन्होंने श्री माधालालजी निमाज बिराता न सभा का प्रायाजन किया। जागीरी गुण्डा ने सभा में हूा जतली हुई सलासेन श्री कठोरतल पर पकी और सडिया स हमला कर इन्हें बुरी तरह धायन कर लिया। गांव बाला न छुप कर श्री साक नायक ध्यामजी का तार किया और ब्यासजी डी० पुरयोतल गायत्री की गाय लकर तलान धाय और इलाज की समुचित ध्यवस्था की। जतारण धरन में प्रमुन कायबता श्री वासुध्वजी सास्त्री इनन परम सहयोगी थे।

श्री कठोरतल का लोकनायक जयनारायणजी ध्यात का निम्न गाथ बहुत प्यद था जिस व हर मोटिम में गाया करत थ—

भूमि की सुली हड्डे स, पडा बनगा महा मयकर।
 ध्यवि धयोवि को इर्पा होगी, नेत्र नया लोसें शकर ॥१॥
 धरन विहीन उदर की धाहें, दाधानत ली बनकर भीपण।
 भस्मीभूत कर देंगे उनको, जो बोनों का करते शोषण ॥२॥
 बाकी मत रल लूब सताले लूब दिला दे धरना मधुबल।
 निबल का धल देल ररी है, तेरे सख कुहय यो प्रतिबल ॥३॥
 जो भर धाज सता ले मुभको धाज तुभ देता धाजावी।
 तर न हत्यो ले सोहें, दुपकर तेरी ही बडावी ॥४॥
 धरन नहीं है धरन नहीं है शक्ति नहीं है और न धापी।
 साहस हिम्मत तनिक नहीं है निबल हू एक पावर प्रापी ॥५॥
 पर है हूय धप बुभ तन में और जलना है भीतर भारी।
 यह सुलगेगी यह फलेगी जल जागगी बुनिया सारी ॥६॥
 नय प्रकरा लख जाग उठगा, धामुण्डा पकडगी लवर।
 देल देल लपटी की भपटें, ताण्डव नृत्य करेगे शकर ॥७॥
 तोड हड्डिया धीर कलेजा महा कपिर सब जी को करले।
 बोन-बीन हड्डी-साहू से, रक्तपात कर मन की भर ले ॥८॥
 बन हो गुण पर गाज गिरगा, तेरा सभो समाज गिरगा।
 तलत गिरगा साज गिरगा, महल गिरगा, राज गिरगा ॥९॥
 नहीं रहेगी सत्ता तेरी, बरती लो धावाद रहेगा।
 जातिम तेरे सब जुस्यो की, उसमें कायम याद रहेगी ॥१०॥
 श्री कठोरतल स्वय धरुधे गांधी और लेखक हैं। इन्होंने तीन पुस्तकें लिपी है—

1 जनता का राज्य 2 बंधों की राय, 3 धीरों की युवाव
 धीरे ये तीना ही प्रकाशित होकर काफी साकमिय हुई है। धाज 85
 वष की धायु में भी इनमें गजब का जोग और धातम-बल है।



राष्ट्र भक्त सेनानी श्री वासुदेव भटनागर



श्री वासुदेव भटनागर का जन्म साजत शहर में सन् 1922 के अक्टूबर माह में हुआ था। इनका परिवार ग्रामसमाजी विचारों से प्रभावित होने के कारण सुधारवादी तो था ही, साथ ही राष्ट्रीय विचारों से भी प्रभावित था। बचपन से ही इन्हें महात्मा के महाराण प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह, छत्रपति शिवाजी व महर्षि दयानन्द आदि के जीवन चरित्र पढ़ने का मिलने के अति राष्ट्र भक्ति का बीजारोपण ता विद्यार्थी काल में ही हो गया था।

श्री भटनागर ने अपने सम्पूर्ण सुनात हुए कहा कि सन् 1940 के जून माह में सोजत रोड के श्री मीठालालजी काका तथा श्री मटवरलाल जी पण्डित ने इन्हें अपने घर बुलाकर पहले तो ग्राम समाज द्वारा हैदराबाद के चले गये सत्याग्रह में भाग लेने के लिये उनकी प्रशंसा की फिर देश की आजादी के लिये चलाये जा रहे आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने की प्रेरणा दी। उन दिनों भारतवादी लोक-परिपद पर पाबंदी लगी हुई थी। सत्याग्रही कायन्ता निषेधाज्ञा भंग कर सत्याग्रह करते थे और जेल जाते थे। श्री भटनागर का भी सत्याग्रह कार्यक्रम निश्चित हो गया। 22 जून 1940 को सुबह साढ़े आठ बजे बिना घरवालों को सूचित किए अपने घर से निकल पड़े। रास्ते में मंदिर के पास श्री रामपालजी लड्डा ने मस्तक पर तिलक लगाया और माता पहनाकर बिदा दी। उनके साथ इनका छोटा भाई ब्रह्मदेव व मित्र धीसालालजी थे। अपने नारे लगाते हुए घानमण्टी पहुँचे। पुलिस ने अपने गिरफ्तार कर सोजत सबजेज में रख दिया जहाँ पहले से मौजूद श्री मुन्नालाल वैद्य श्री हरिश्चकर व टालिया बाल तथा श्री विजयशंकरजी दव ने स्वागत कर अपने अपने साथ रखा।

धोडे दिना पश्चात् ही भारतवादी लोक परिपद तथा राज्य सरकार के बीच समझौता हुआ गया और 27 जून को सभी कायकर्ता जेल से रिहा कर दिये गये। 27 जून 1940 के दिन का जुलूस सोजत की जनता के लिये एक विशेष यादगार बना रहेगा क्योंकि इस जुलूस में सकड़ाने नर नारियाँ व बच्चा के साथ-साथ डोल बाजा के बीच गणभेदी नारे—भारत माता की जय, वंदे मातरम्, महात्मा

गांधी की जय, आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है—गूज रहे थे। यह दृश्य सोजत की जनता के लिये नया तथा विस्मयकारी था क्योंकि कुछ दिन पहले तक तो सत्याग्रहिया क मलावा किसी के मुह से यह नारे निकलते तक नहीं थे। ग्राम लाग यही कहते फिरते थे कि इन नारों के लगाने से क्या अंग्रेजी राज चला जायगा? या आजीवनी चलो जायेगी?

फिर भारतवादी लोक परिपद द्वारा जिम्मेदार हकूमत का आन्दोलन छाना गया और अपने इन उस्साह से मीठालालजी काका से प्रेरणा ले कर इस आन्दोलन को तेज गति देने में सक्रिय हुए। सोजत में एक बानर सेना तयार की। यह बानर सेना प्रतिदिन प्रभात फेरी जुलूस आदि निकालती और नारे लगाकर जन जागृति पैदा करती। इसी आन्दोलन के सिलसिले में अपने का जाधपुर में 6 जून 1942 को पुन गिरफ्तार किया गया जहाँ से इनकी रिहाई 9 जुलाई, 1943 को हुई।

उसके पश्चात् श्री वासुदेवजी भटनागर ने जीवन घटना चक्र में पलटा लाया और सन् 1944 में इन्होंने भारतीय मना में नौकरी प्राप्त की। य ब्रह्मा सिंगापुर आदि मोर्चों पर भी गये। युद्ध समाप्ति पर पुन भारत लौटे। सैनिक सेवा में निवृत्ति लेकर फाउण्ड्री के कार्य का प्रशिक्षण लिया और चित्तूरजन लोकामोडिब थकम में नौकरी करली। सन् 1982 में वहाँ से सेवा निवृत्त होकर अपने ग्राम अजमेर में ही अपना निवासस्थान बना लिया है और योग साधना में अपना पूरा समय लगा रहे हैं।



सघषशील जनसेवक सेठ श्री रिखबदास



आज में 75 वर्ष पूर्व जनारत तहशील के निम्वाज कम्ब में स्वर्गीय सेठ रिखबदासजी का जन्म वहाँ के एक प्रतिष्ठित राका (भोसवाल) परिवार में हुआ। स्थानाय पोशाल (पाठशाला) में ही पढाई हुई पर कुशाग्रबुद्धि के कारण रिखबदासजी एक विशिष्ट व्यक्तित्व वाले हानहार भवावी पुरुष के नाते प्रसिद्ध हो सके हैं। उस जमान में आजीवनी भ्रष्टाचारा से सारी प्रजा बड़ी पीड़ित थी। गावा से लाग आत और आतक



व धामाचौय व्यवहार की दसदसरी दास्तांनं सुनन की भिन्नती और मठ रिखवप्रदाय का मूल सौल जात। उनक हृदय म जामोरी प्रया क निए तीय घणा बना हो गई। योगी की शिवायतो वा प्राये भजना उह मनाह मशविरा वकर सघय करने की हिम्मत सधाना यह उनका मुख्य काय हा गया। श्रावर जहर निवट हान स वहा पर का नही राष्ट्रीय छांदोलन की प्रतिनिधिमय म परिचित रहने क कारण एने विचार टा हात गये।

स्त्री दोरान समय के परिवर्तन के साथ मारवाड म राजनविक उभल पुनर भनी। जोधपुर क तत्वालोम महाराजा श्री उम्मेदसिंह ने प्रतिनिधि भन्नाहकार समय के गठन का घोषणा की और हर परवन स एक प्रतिनिधि का चुनाव हुआ। जैतारन व सेंडा परगने की और स बावजूद जागोरदारी के बड़ विरोध क सन् 1941-42 म हुए इन चुनाव म मठ रिखवदाल मारी बहुमत स चुने गये। इस एसम्बली (प्रतिनिधि सभा) म एहाने जो सक्रिय भूमिका निभाई वह इनके निर्माक प्रसिमाशाली और जन हितपी अतिरिक्त को स्पष्ट करती है। इहोने एमम्बली म जागोरी जुल्मी का उनके द्वारा ली जा रही बठ-बगार व नाल-बाग का स्पष्ट विषय मपनी जोधवार व प्रभावशाली बजुरत जली म जमी मजोबता के साथ किआ कि सरकारी और मजानीत सन्स्था को भी इनके धनक सुभास मानने का मजबूर हाना पडा। दुसरी मदम म दिनाक 16-3-42 को एसम्बली म निदे गय उनके मायण के कुछ प्रस इस प्रकार हैं

जागोरी गावा म जागोरदारी का सन्तो तथा कातोसरे के पाठे उनाली व उनाली के लागे वातामग के वल लाठने और नागा-बागा व बठ-बगार व दूसरी धनुविधायी म मिलकर मारवाड के विमाना को धनहृद गरीब बना दिया। व रोटी तब के मोहताज हो गये हैं बडी बडी सीला स उनको बाई फायदा नहीं। एनको तो ऐसा काम चाहिये जिनको ये गरीब कर बठ कर सके और जिसम बहुत ही थोडी पूजी सय। प्रायने भाग वहा— सरकाय ने इकातामिक उपलभ्यमट विपणमट खोला है और इसके लिए रु 45000 00 का प्रावधान रखा है पर इसम स 27000-00 रु ता सरकारी धनन की तनबाह म और बाकी सर सपाठे स खच हा जायगा। यह मायण उनक द्वारा एसम्बली म रने गय प्रस्ताव स 16 जिनम उहान मारवाड क किसानो व मजदूरो के याल वकारी सिगल और बकाग की गणना कर एक डामरेक्टरी समान की प्रावश्यकता पर जोर दिया था वे सम्भव म हुई बहुत के वक्त का है। प्राज की स्थिति की वृष्टभूमि म भी यह प्रस्ताव महत्वपूर्ण है। यह उनका दूर दृष्टि का परिचायक है।

सठकी द्वारा मारवाड प्रतिनिधि सभा म एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स 3 दिनाक 11 3 42 का रखा गया था। प्रस्ताव स प्रकार

है — यह सभा सरकार को सलाह देती है कि कम स कम हर ऐसे गाव के जहा धानाली 100 धरो से ज्यादा है, स्कूल कायम किया जाये और बडे-बडे कक्षा म मिडिल स्कूल कायम किए जाए। इन प्रस्ताव पर बोलेते हुए इहोने कहा— मारवाड म 82 प्रतिशत जागोरी है। जागोरदारी लाग घपने ऐसो प्रकार क निए लाली रूपे पाज करते हैं वर अपनी रिधाभा की तारीमी की नयक कर्ते ध्यान नहीं देत। जागोरदार घपनी मनमाना करन के लिए रिधाभा को धनपद गवन है। मारवाड की हुन्नमत का काम करने यान साहवान जोधपुर काय के रहन वान है सा उनको मधा हमशा मही रहती है कि व मारवाड की जनता पर घपनी मनमानी हुन्नमत करें। गवदमट का खजाना हमारी (गावो की जनता की) वजह स मरा जात है। यमान हम देत हैं कए हम दत है और शिदा व दूसरे सारे मुनीत गहर की जनता का मितत है।

सन् 1942 व उनके धास-पास के वर्षो म मारवाड राज्य का शिक्षा का बजट कुल 10 लाख रूपये का था जिसम अधिकांश जोधपुर शहर म ही गच हाता था क्योकि वहा एन कालिज 5 लाक स्कुल व कई मिडिल व प्राइमरी स्कूल थ। मारवाड के जागोरी गावो म तो लक व लकिया क सरकारी सहायता प्राप्त व मामला प्राप्त गर सरकारी कुल 57 स्कूल थे, जिन पर सरकार का कुल खच बवल रु 83 900 00 होता था। एमेम्बली क सन्स रहत हुए इहान जोधपुर के बाहर भी हाईस्कूल व मिडिल स्कूल खोलने पर बार-बार जोर दिया और तब दिया कि विलायत म हर शक्त पना हुआ है इसलिए वहा बातून नहीं जानने का उच नही मास जान समझ म धा सकता है मगर यनि यह उमूल महां लागू किया जाता है तो क्या सरकार का फज नहीं है कि वह हर प्रादमी क पढन का बादोस्त कर ? इहाने सन् 1942 म एसम्बली म ततारन म मिडिल स्कूल व क या पाठशाला व निम्बाने म 5 की कक्षा तक की प्राथमिक स्कूल खोलन क प्रस्ताव भी पास करवाय। दुसरी मदम म देसुरी स निर्वाचित मदम विजोवा निवामी स्वर्गोय श्री निहोलन गूलाजी के प्रस्ताव म 10 जिनम मारवाड म चार हाईस्कूल बरकाना सोजत तारीर और बावमर म प्रागामी वय से हां धवश्य खोली जाये का श्री सठ साहब ने जबरनस्त समयन किया और प्रस्ताव पास हुआ।

इसके अलावा पचायता के सरपच पद पर जागोरदारी को मनोनीत न कर जनता के चुने हुए प्रतिनिधि होने चाहिये यह भाग भी रली और गाव गाव म चारगाह (गोबर) हां तथा शीवयानय रागे जाय यह माग भी जोरदार शक्ती म रली।

स्वर्गोय रिखवदासजी न व नी बिस्ती से अरे न बिस्ती स दन।



स्वामिमान उनमे बूट बूट कर भरा था। व अन्नरत अपन बारे मे बहा करत थ—

“चाह गई चिना मिटो, मनवा बे-परवाह।
त्रिनको कुछ चाहत नहीं, सो शाही के शाह ॥”

मारवाड लोक परिपद् के नेता सबधी जयनारायणजी यास मयुरादासजी मायुर, रणछोडदासजी गटानी व किसान नेता श्री बलदेवराजजी मिर्घा के साथ गावा का दौरा करके जनजागृति म सहयोग देत थ। देव मी दरा मे होन वाली पशुबलि का भी इ होने घोर विरोध किया और अन्नक स्थाना पर पशुबलि बन्द करवाई। द्वितीय विश्व-युद्ध क दौरान और बाद म प्राइस कंट्रोल व राशनिंग के कारण लागा को हुई परेशानिया म भी गाव गाव दौरा कर लोगो को राहत पटुवाई।

सठ रिलंबदासजी जीवन भर अन्न बान मान मर्यादा और जन हित्पाय कार्यों क लिए सधप करत रह और अमर हा गये।



एक जुभाहू व्यक्तित्व श्री लालूराम शर्मा

टटना मजूर पर भुनना नही, खलिहान म पडा सारा अनाज जला दिया गया, गाय मस बल चुरा लिये गय, लाठिया स सिर फाड दिया गया पर धुन के घनी लालूरामजी भ्राजादी के सधप म अग्रणी रहे। इनका राजनतिक जीवन सन् 1933 स प्रारम्भ हुया। सन् 1930 म सबप्रथम इनका सम्पर्क श्री कहेयालालजी यास (कनीरामजी) सिनला निवासी से हुया जा पूना (महाराष्ट्र) मे कांग्रेस के सन्निध्य सदस्य थे और भ्राजादी के सधप म इह यरवदा जेल म 2 माह की सजा हुई थी। कहेया लालजी के सभमान व उत्साह दिलाने के शक्यजुद श्री प्रारम्भ म तो लालूरामजी कांग्रेस के लिए काम करने को तयार नही हुए पर 3 वष बाद इह भी एसा रग चडा कि गाव के काश्तकारो मीणा, बाबरियो व मेधवाल आदि शापित वग के लोगो को संगठित कर इह लाग-बाग, बट-बगर आदि न देने के लिए उकसाया। इनकी इन प्रारम्भिक हरकत के कारण स्थानीय ठाकुर श्रवन्त श्रुद्ध हुए

और इनके विरुद्ध तरह तरह के पडयत्र ठिकाने के कारिदो शुरु कर दिय।

उह दश मक्ति नी ऐसी धुन सवार हुई कि य खाती का कुत्ता खरीदने पाली गये पर इह य चीजे नही तब उ होन अपना (महाराष्ट्र) स यह सामान मगवाया पहनने लगे। ठाकुर के कारिदा ने न केवल इन पर प थर फक्, च द दुष्टा ने तो टोपी पर थुकने की हरकत उह 'बायसी कुत्ता कहकर पुकारने लगे, पर ये अट्टिय 1936 म य मारवाड के प्रमुख नेता श्री जयनारायण मिलन जोधपुर गये। वहा यासजी तो नही मिल पर पत्नी ने उह जोधपुर के अग्र नेताया मानमलजी जन मिलाया। वहा बायकताश्री को एक मीटिंग म भी आपन की तकलीफो का भनव किया। वहा स दूना जोश लकर गाव लाम्बिया (पाली) लोटे और संगठन का बाय शुरु। सबप्रथम इहान ग्राम सिनला म किसानो को संगठित कर ठाकुर राणा साहब के विरुद्ध सधप छेड दिया। मे गाचर भूमि को ठाकुर क बन्जे स मुक्त कराया और फाटक से गाव के सारे मवेशी मुक्त करा दिय। अब तो श्रोध का ज्वालाभुकी फूट पडा और इन को जान म तयारी होने लगी। अपनी जान को जोखिम म देखकर य तक भूमिगत रह, पर अपना काय जारी रखा। इन दिना 'जरायम पेशा समभी जाने वाली जातिया-मीणा थोरी मील जिह रावलो म तथा पुलिस मे तिन रात म तीन-ती-हाजरी देनी पडती थी उह संगठित किया और सामती के विरुद्ध बगावत क लिए तयार किया।

सन् 1939-40 म इनका सम्पर्क श्री रामप्रतापजी (पाली) व श्री रामप्रतापजी शर्मा (गुदोज) स हुया। य तत्रता सनानी लाम्बिया श्री लालूरामजी के पास गये और वहा परिपद् की शाखा स्थापित की। अब ता लालूरामजी मारवाड परिपद् के सन्निध्य नेता बन गये और कई गावा म परिपद् के बनाये। इस श्रुद्ध होकर ठाकुर ने इनके कुए पर 200 मन खलिहान म भ्राग लगादी और साफ गट्ट राख बा डर हो इतना ही नही, इनके सहयोगी साथी काश्तकारो की लडा फम उडा, थोडा और अपने अग्र मवेशी उनमे चरा कर बरबाद किया। जहाँ कही ये बठव करत सामती गुट धाकर करत, मारपीट करत डोल आदि बजाकर समा मग करत। मुकद्दम बनावर परेशान करते और मवेशी आदि की चारिया लालूरामजी की गाय मसे व बलो को वाबरिया व मीणा का कर कई बार चुराया गया। एक बार तो गाव के ठाकुरा न



व भ्रमानवीय "पवहार की दसमरी दास्तानें मुनन को मिलती थीर
 नेठ रित्तवदास का पुन खोल जाता। उनके हृदय में जागीरी प्रधा
 व लिए तोड़ घणा पदा हो गईं। लोगो की जिवायतो को धागे
 भजना उह सताह मवाबिरा दकर सपय वरने की हिम्मत बघाना
 यर उनका मुख्य काम हा गया। ब्यावर गहर निवट होने स वहा
 पर बन रही राष्ट्रीय फ्रांटोलन की गतिविधिया स परिचित रहने
 के कारण एनके विचार दर होते गये।

है - "यह समा सवकार को सताह देती है कि कम स कम
 ऐत गाव में जहा धारायो 100 परतो स ज्यादा हो, स्कूल
 बिया जाये और बडे-बडे कस्बा में मिडिल स्कूल बायम फि
 जायें।" इस प्रस्ताव पर बोलत हुए "होने कहा- "मारवाड में 8
 प्रविगत जागीर है। जागीरदार लोग अपने ऐशो धाराम के फि
 ताली रूपये खच करत हैं पर अपनी रिभाया की तानीम की तर
 वत-र ध्यान नही देते। जागीरदार अपनी मनमाना करन
 लिए रिभाया को प्रनयद रखत हैं। मारवाड की हुनम
 वा काम करने वाल माहवान् जोधपुर छात के रहन बात हैं स
 उनकी मशा हुमग नही रहती है कि व मारवाड की जनता पर
 अपनी मनमानो हुनूमत करे। गवनमत का सजाना हमारी (
 की जनता की) वजह स मरा जाता है। लगान टम दन हैं कर
 दत है और गिशा व दूसरे सारे सुमीत गहर की जनता की
 मिनन हैं।

एनो दौरान समय में परिवतन के साथ मारवाड में राजनितिक
 उचल पुचन मची। जोधपुर के तत्कालीन महाराजा श्री उममदसिंह
 ने प्रतिनिधि मनाहकार समा व गठन की धापणा की और हर परगने
 स एक प्रतिनिधि का चुनाव हुमा। जतारन व मेट्टडा परगने की और
 स बाबजूद जागीरदारो के वड विरोध में सन् 1941-42 में हुए इन
 चुनाव स सठ रित्तवदास भारी बहुमत स चुने गये। इस एमम्बली
 (प्रतिनिधि समा) में "होने को सत्रिय भूमिका निमाई वह इनके
 निर्नीय प्रतिभाशाली और जन हितयो ध्यस्तिय को स्पष्ट करतो
 है। "होने एमम्बली में जागीरी खुलो का उनके द्वारा ली जा
 रही बट-बेगार व लाग-बाग का स्पष्ट विमण अपनी जोरदार व
 प्रभावशाली बकूलव शली में तेसी सजीवता के साथ किया कि
 सरकारी और मननीत सन्स्था को भी इनके प्रनेय सुभाय मानने
 को मजबूर होना पडा। इसी सदस्य में गिनाव 16-3-42 को
 एमम्बली में गिय गय उनका मापण के कुछ प्रम इस प्रकार है

सन् 1942 व उसका प्राम-यास के वर्षों में मारवा" राय
 का गिशा का बजट कुल 10 लाख रुपय का था जिसमें अधिनाम
 जोधपुर गहर में ही खच हाता था क्यकि वहा एन बलिय 5 हाई
 स्कूल व कई मिडिल व प्राइमरी स्कूल है। मारवाड के जागीरी
 गावो में तो लठके व लठकिया के सरकारी सहायता प्राप्त व
 मायता प्राप्त गर सरकारी कुल 57 स्कूल थे जिन पर सरकार का
 कुल खच बवलर 83 900 00 होता था। एमम्बली क सदस्य
 रहत हुए इहाम जोधपुर के बाहर भी हाईस्कूल व मिडिल स्कूल
 खोलने पर बार-बार जोर दिया और तब गिया कि "वितायत व
 हर शान्य पडा हुमा है इसलिए वहा बनान नही जानने का उच्य नही
 माना जाना समक में था सक्ता है मगर यदि यह उजूल पहां सानु
 किया जाता है तो क्या सरकार का पज नही है कि वह हर धामनी
 व पदन का बन्दोस्त कर ? इहाने सन् 1942 में एमम्बली में
 जतारन में मिडिल स्कूल व कया पाठशाला व निम्बाज ने 5 की बशा
 तब की प्राथमिक स्कूल खोलने व प्रस्ताव भी पास करया। इसी
 सदस्य में देहुरी के निर्वाचित सदस्य विजोबा निगामी स्वर्गीय श्री
 निटालबा गुल्लाजी के प्रस्ताव स 10 जिसमें मारवाड व चार
 हाईस्कूल-बकल्या सोजत नागौर और बाधमर में धामानी बय के
 ही प्रथम्य खोली जायें का श्री सठ साहब ने जबरनस्त समपन किया
 और प्रस्ताव पास हुमा।

जागीरी गावा में जागीरदारो की सत्तो तथा बालीसर के
 लाटे उनाली व उनाली के साटे बालीसर के वक्त लाटने और
 स लाग बागा व बड बेगार व दूसरी प्रमुविधाधो ने मिलकर मारवाड
 के विमाना को धजहद गरीब बना दिया। व रोटी तक के मोहताज
 हो गये है। बडी बडी मीलो ने उनको धोई फायदा नही।
 एनको तो ऐसा नाम धारिये जिसको ये गरीब पर बड कर सके और
 जिमन बहुत ही घाडी पुनी लये। धायन धागे कहा- सरकार ने
 इकोनोमिक डवलपमत डिपार्टमट लोला है और इसने लिए व
 45000-00 का प्रायधान रखा है पर एम ने 27000-00 र
 तो सरकारी धयन की तनगवाह म और बाकी सर-सपाटे में खच
 हा जायगा। यह मापण उनक द्वारा एमम्बली में रने गये प्रस्ताव
 स 16 जिमन उहाने मारवाड के विधानो व मजदुरो में "याप्त
 वकारी मिटान और बेकारो की गणना कर एक डायरेक्टरी बनाने
 की प्रायबक्यता पर जोर दिया का सन्नय व स हुई बहुल के वक्त
 का है। प्राज की स्थिति की प्रष्टभूमि में श्री यह प्रस्ताव महत्वपुण
 है। यह उनको दूर सट्टि का परिचायक है।

इसने प्रयाता पचायता के सरपच पर पर जागीरदारो को
 मनोनीत न कर जनता स चुने हुए प्रतिनिधि होने चाहिये यह माग
 की रली और गाव गाव में चारागाह (गोचर) हा तथा प्रोपधानय
 खाले जाय, यह माग भी जोरदार शब्दो में रखी।
 स्वर्गीय रित्तवदासजी न कभी किसी से डरे न किसी स दव।

सदको द्वारा मारवाड प्रतिनिधि समा में एक महत्वपुण प्रस्ताव
 स 3 दिनांक 11 3 42 को रखा गया था। प्रस्ताव इस प्रकार
 वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



बक्स के मिर पर गम्भीर चाटें झाई । य ल-मुहान हा गय पर ममी हमलाकरा का भगाकर हो इहाने दम लिया ।

दुसरे पश्चात् रायपुर के भ्रान्तलन और तज हा गया । फन स्वल्प जनारप के हाकिम की अदालत म रायपुर के प्रमुख कायकना सबधी जमातुहीन मखदुम बक्स मरनार बक्स, जव्वार बक्स गफार बक्स सहीब बक्स हाजी बक्स नातचन्द व भगवतीप्रसाद मिह पर मुकद्दमा चलाया गया । य कायकना न केवल रड रह बल्कि बेट-बगार व नाग-भाग के विरुद्ध अपने प्रादानन का अधिक तेज कर दिया । फलस्वरूप छाती (मुबार) जा दिन भर बगार म राबले मे लखडिया फाडा करत रंगर निन हा या रात, फाडा कटा व मवेशी के लिए चारा लाने म जुट रहत कुम्हार बागी-बारी से दिन भर पानी भरत नाद रसोडे के बतन माजने म नहीं छुट पाता, गाव का नाबी मारे दिन लठठ लिए इन बगारिया के पीछे पचा रहना, इन ममी ने बगार देने स मना किया या जुफ छिपकर रहने लग । रायपुर ठाकुर ही नहीं, भ्रान्त-मडाम क ठाकुर भी उनम परगान रहने लग ।

आगिर, उन ठाकुरा ने जायपुर के महाराजा उम्मेदमिहजी का बहुर इनके विरुद्ध डिफेंस आफ इण्डिया कानून के अन्तगत कायवाही करवा । 22 मई 1944 को मवेशी भगवतीप्रसादजी जमातु हीनजी सातचन्दजी फौजमलजी, पूसानातजी पगारिया गफार बक्सजी और मखदुम बक्सजी के विरुद्ध रायपुर कम्वा तथा रायपुर ठिकाने क ममी मावा स निष्कासन की आना जोरपुर सरकार के प्रादम म जारी हूइ ।

उमी दौरान ठिकाने ने श्री गफार बक्सजी की 200 बीघा बागल की भूमि भी जप्त करनी और दून् अधिक सबट म डान दिया । कई बार श्री गफार बक्सजी व उनके भागिया का भूमिगत हाकर मयानक जगल म स्थित फलहण्ड किन तथा दीपावास क गड म छिपकर रहना पन् । 15 अगस्त 1947 के दिन भारत क आनाद होने के साथ ही इन पर लगी मारा पाबलिया स्वत ही समाप्त हा गः पर गरीबी बरोजगारी अत्याचार क विरुद्ध ता उनका सघप आत्र भी जारी है ।

आजादी के बुलारे श्री नयमल लोटा



भारतीय आजादी क आनालन मे राजस्थान का महत्वपूर्ण याग दान रहा है और राजस्थान म विधायक पानी जिन के स्वतंत्रता

सेनानिया की एक लम्बी फेहरिस्त है जिमम एक ल 4 4 नाम है खाडबानी नयमलजी लाडा । आपन आजादी क जनम म सक्रिय भूमिका बम्बई व मागवाड दा स्थाना पर रहत हुए की है । आजाद भारत की कल्पना करत हुए आपन बम्बई स आगम्य किया, जब 1937 म आपन बम्बई की वस्ती मे ऊच-नीच व छुप्राइत निवारण पर महात्मा गांधी नायण मुना । गांधीजी के नायण म अघार दूरशिता प्रेरणा आजादी का संकल्प व व्यक्तित्व की श्रमिट छाप तथा मावा विचारा की मन्त्रेपगोयता इतनी सशक्त थी कि 13 वर्षीय भी आजादी के प्रादानन की एक कड़ी बन गय ।

गांधीजी के उन सम्पक के ठीक दा वय बाद द्वितीय विर की मुन्नाक हूइ और गण्टीय कायेन के आह्वान पर भारतीय ममुणाय न डम विश्व-युद्ध म अंग्रेजा के साथ अमहयोग के स्वीकारा । उन समय बम्बई राष्ट्रीय राजनीति म तीव्र गति म रण परिवर्तनो का रगमच था । सांगाजी इम सदन म कहत ह कि अंग्रेजा भारत छाना का प्रस्ताव अखिल भारतीय कायेन महाममिति के बम्बई अधिवेशन म 9 अगस्त 1942 पारित हुमा । इम अधिवेशन को 100 00 रुपय का टिकट उकर, राजाना दखन आत थे । उन समय क महान् राष्ट्रीय नेतामा गिरफ्तार कर लिया गया था । उनके विराव म बम्बई क निरुग विरगा भण्ण लेकर टालिया बनाकर हर मोहल्ले स निकलत और अंग्रेजा भारत छाना । हिन्दुस्तान हमारा है करेगे या मरेंगे, य



श्री नयमलजी लाडा श्री शकरदयाल शर्माजी से सम्मान-पत्र प्राप्त करते हुए ।



किया कि गांव का जो ग्रामीणी इस कांग्रेसी युक्ति के साथ रहेगा उस पर जूती की गाठ बांधकर गांव में घुमाया जायेगा और वेदज्जत किया जायेगा। आतंक के मारे लोग खुले में घाने से घबराने थे, पर चुपके चुपके हर प्रकार का सहयोग प्रदान करते थे। बहादुरसिंहजी ने प्रारम्भ में लालू रामजी का खुला समयन किया और उनके सहयोग से सन्नाहोसना बढ़ता गया। फिर ता, श्री बलदेव रामजी मिर्धा द्वारा किसान सम्मनन प्रायोजित हुए और श्री लालू रामजी ने उनकी पूरा पूरा सहयोग दिया।

परिवार के मुल दुल ता क्या मरण पोषण की भी बिना किये बिना पचास वर्षों से भी अधिक समय तक गराब ग्रामीणा की सेवा में अपना आप का प्यवते रहने वाले बिरले स्वतंत्रता सेनानियो में लालू रामजी का प्रमुख नाम है जो सदा आजादी के गीत गाते रहते हैं।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसने रसधारा नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

की लाग बाग, कवर मटकी, कोठारी, घडा, कणवार, गावभाव रेगर आदि आदिवासी लोग का भनाज बसूल किया गया फिर ब्राह्मण, साधु, देव स्थान की लागों की गई। इतने में ही काश्तकार व बाहरा साहूकार (कज देने वाले) धा गये। उहाने बाकी बचे भनाज पर भ्रपना कजा कर लिया। काश्तकार ने पास कुछ भी भनाज नहीं बचा। गणकार बबसजी ने सहज भाव से कोठारी में पुछा-इम काश्तकार व इसने परिवार ने सारे साल सन्नी गर्मी-बरमात में इतनी महनत की और इसने पास तो कुछ भी नहीं बचा, भाय मह और इसक क्या बच्च क्या लायेगे? कोठारी ने भी सहज भाव से उत्तर दिया-इमने कम में ही नहीं लिखा, हम क्या करें?

इस घटना ने श्री गणपार के जीवन की राह ही पलट दी। इहाने तत्काल ठिकाने का हिस्सा काश्तकारों को मौप लिया। सारे इलाके में हलचल मच गई। ये घर से निकाल लिये गये और ये जीवन-यापन का रास्ता ढूढने लगे। ऐसे वक्त में इनका सम्पर्क दुध्या रायपुर निवासी पूसालालजी पगारिया शेर मन्तुमबवमजी, भगवती प्रसादसिंहजी लालचन्दजी धीमूखलजी, जोगेसिंहजी, हीराजी परिहार, जोबाजी दरोगा तथा गगरामजी माली से। ये सभी लाग जामीरी जुल्मा व बठ बेगारा से परेशान थे और आम जनता में सामंती शासन के विरुद्ध प्रचार करते रहते थे। इन सभी ने मगठित होकर अपनी भावाज बुलद करने की ठानी। सवप्रथम इहाने काश्तकारों व भाय लोगों में प्रचार कर जाग्रति पदा की और रायपुर ठाडुर के जुल्मों की शिकायत लेकर रायपुर के सभी लोग श्री पुष्प पत्तल रवाना हाकर सरदारममद हाने हुए जायपुर दरबार के पास पहुंचे और यहां से जांच का आन्ध प्राप्त किया। जोयपुर में भी इन पद यात्री दल का सम्पर्क लाक परिपद के नेताओं से हुआ। उहाने गिरदीकोट में समा कर रायपुर के जागीरदार के जुल्मों का कहानी का सजीव वयन किया और तय हुआ कि लाक परिपद के नेता रायपुर में समा करेंगे।

निर्भोक, सिपाही शेर गणपार बरस



आज 75 वष की उम्र में भी शेर गणपार बरस एक जवान सिपाही का भाव लेकर अष्टाचार, पक्षपात, भ्राजकता और अनुशासनहीनता के विरुद्ध लयन व हिम्मत के साथ लाहा ले रहे हैं। इसमें सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि आजादी की लय में क्य बहादुर स्वतंत्रता सेनानी ने कितना काम किया होगा कितनी मुनोबत उठाई होगी। इनका जम रायपुर (मारवाड) में सन् 1912 में श्री अन्दुल बबस के घर हुआ। इनके दादा व पिता दोनों ही ठिकाना रायपुर में आला मुमाहिद के छोहदा पर नियुक्त थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर पाठशाला में हुई और ब्यावर के मनातल घम स्कूल से मद्रिक पास की।

एक वार इनके पिताजी ने जो ठिकाने में अधिकारी थे उहे ठिकाने के अय कमचारिया, कणवारिया कोठारी व गाव भाभी के साथ एक बड़े पर साटा साटने के लिए भेजा। कोठारी ने ठिकाने का मोग (हिस्सा) घलन कर दिया फिर बचे भनाज से ठिकाने

मारवाड लोक परिपद की रायपुर में प्रथम समा गणश दर बाजे के भागे रात्रि 8 वज प्रारम्भ हुई। जायपुर से श्री जयनारायण यास मयुदामजी सूरजप्रकाशजी पापा द्वारका दासजी पुराहित आदि भा गये थे। समा में जगही लोकनायक यासजी मायण देने लखे हुए कि रायपुर के ठाडुर श्री गोविन्द सिंह के 100 स चषिक पिटठमी न, जा कर्मावास निम्बेडा सबलपुर चावडिया आदि से इकटठे किये गये थे मज पर हमला बोल लिया। उस समय श्री मखदुम बबस व श्री गणपार बबस व उनके भाइयों ने जित बहादुरी से इन गुण्डा तत्वों का मुकाबला किया और नेताभा की रखा की, वह रायपुर के इतिहास की एक शानदार घटना है। इस हमने के फलस्वरूप कई लोगों को गम्भीर चोटें प्रायी। स्वयं श्री गणपार





बक्स के सिर पर गम्भीर चोटें आईं। ये लहू-सुहान हो गए, पर ममी हमलावरों को भगाकर ही इन्होंने दम लिया।

इसके पश्चात् रायपुर में आंदोलन और तेज हो गया। फलस्वरूप जैतारण के हाकिम की अदालत में रायपुर के प्रमुख कायकर्मियों सब्धी जमालुद्दीन मखदुम बख्श मरदार बख्श, जवाहर बक्स, गफफार बक्स, सहोदर बक्स हाजी बक्स सालबख्त व भगवतीप्रसाद सिंह पर मुकद्दमा चलाया गया। ये कायकर्मियों न केवल बड़ रहे बल्कि बड़ बेगार व लाग-बाग के विरुद्ध अपने आन्दोलन को अधिक तेज कर दिया। फलस्वरूप सातों (सुभार) जो दिन भर बेगार में रातले में सकलिया पाना करते रोज़ दिन हो या रात, घोड़ों, ऊटों व भवेशी के लिए चारा लाने में जुट रहे, बुम्हार बारी बारी से दिन भर पानी भरते, नाईं रसोड़े के बतन माजने से नहीं छूट पाता, गांव का माधी सारे दिन लठठ लिए इन बेगारियों के पीछे पड़ा रहता, इन सभी ने बेगार देने से मना किया या लुक छिपकर रहने लगे। रायपुर ठाकुर ही नहीं, अडास-पडोस के ठाकुर भी उनसे परेशान रहने लगे।

आखिर, इन ठाकुरों ने जोधपुर के महाराजा उम्मेदसिंहजी को कहकर इनके विरुद्ध डिपेंडेंस आफ इंडिया बिलून के अन्तर्गत बायवाही करवाई। 22 मई 1944 को सब्धी भगवतीप्रसादजी, जमालुद्दीनजी सालबख्तजी, फौजमलजी, पूसालालजी पगारिया गफफार बक्सजी और मखदुम बक्सजी के विरुद्ध रायपुर नस्बा तथा रायपुर ठिकाने के सभी गांवों से निष्कासन की आग्रा जोधपुर सरकार के आदेश में जारी हुई।

इसी दौरान ठिकाने में श्री गफफार बक्सजी की 200 बीघा वास्त की भूमि भी जब्त करली और इन्हें अधिक सकट में डाल दिया। कई बार श्री गफफार बक्सजी व इनके साथियों को भूमिगत होकर मयानक जंगल में स्थित पतहगाड़ जिले तथा दीपावास के गड में छिपकर रहना पड़ा। 15 अगस्त, 1947 के दिन भारत के आजाद होने के साथ ही इन पर लगी सारी पाबंदिया स्वत ही समाप्त हो गई पर गरीबी, बेरोजगारी अष्टाचार के विरुद्ध तो इनका संघर्ष आज भी जारी है।

आजादी के बुलारे श्री नथमल लोढा



भारतीय आजादी के आंदोलन में राजस्थान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और राजस्थान में विशेषकर पाली जिले के स्वतंत्रता

सेनानियों की एक लम्बी फेहरिस्त है, जिसमें एक लम्बी नाम है खाडवासों नथमलजी लोढा। आपने आजादी के लक्ष्य में मजिद भूमिका बम्बई व भारतवादी वास्तुओं पर रहते हुए की है। आजाद भारत की कल्पना करते हुए आपने प्रारम्भिक बम्बई से प्रारम्भ किया, जब 1937 में आपने बम्बई की हिंसा बस्ती में ऊंच नीच व छुआछूत निवारण पर महात्मा गांधी का मापण सुना। गांधीजी के मापण में अक्षर टूरदशिता प्रेरणा शक्ति आजादी का संकल्प व व्यक्तित्व की अमिट छाप तथा भावा विचारों की सम्प्रेषणीयता इतनी शक्ति थी कि 13 वर्षों में ही श्री आजादी के आंदोलन की एक कड़ी बन गये।

गांधीजी के उन सम्पन्न के ठीक दो वर्ष बाद द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई और राष्ट्रीय कांग्रेस के आह्वान पर भारतीय जनमनुदाय ने इस विश्व-युद्ध में अंग्रेजों के साथ प्रसहयोग के प्रस्ताव को स्वीकारा। उस समय बम्बई राष्ट्रीय राजनीति में तीव्र गति से बढ़ते परिवर्तनों का समय था। लोढाजी इन सदस्य के महत्त्वपूर्ण

‘अंग्रेजों! भारत छोड़ो’ का प्रस्ताव अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महासमिति के बम्बई अधिवेशन में 9 अगस्त 1942 को पारित हुआ। इस अधिवेशन को 10000 रुपय का टिकट लेकर हम योजना दखने जाते थे। उस समय के महान् राष्ट्रीय नेताओं का गिरफ्तार कर लिया गया था। उनके विरोध में बम्बई के नवयुवक तिरंगा कण्ठा लेकर टोलिया बनाकर हर मोहल्ले से निकलते और— अंग्रेजों भारत छोड़ो! हिन्दुस्तान हमारा है करेग या मरेग वगैरे



श्री नथमलजी लोढा श्री शरददयाल शर्माजी से सम्मान-पत्र प्राप्त करते हुए।



भातरम् ध्याति क तादा स जनमानस का उद्वेलित करत धीर भात्रीपता जैस उच्चतम माव का प्रथमतः करात । अग्रणी मन्कार की पुलिन ध्याती इष्ट भारती पकडकर कर न जाती धीर तदनंतर छात्र दती । इन लेलिया म एक भावस्वी धावाज मेरी भी हाता धीर ही स्वय का भीरवान्त समभता ।

बम्बई म माग्वाट प्रागमन पर लाडाजी न राष्ट्रीय प्राडाशन मे जुड रहन व लिए धनन का पत्र-परिचारा मे सम्बद्ध रखा । अन पत्रा म प्रमुख है वीर अजुन (दिल्ली) विश्वामिन (बम्बई) प्रजा मन्क (जाधपुर) । य पत्र राष्ट्रीय भावनामा स धात प्रात हात धीर अजेज क विरुद्ध धावाज का बुलन् करन क महत्वपूर्ण भाव भी । इनक प्रतिरिक्त अन पत्रा म प्रातीय राजा महाराजाधो क जुल्मी तथा ठाणुर जागीरदारा क भ्रष्टाचारा का बन्धुवी विवरण भी मिलत था अत थी लाडा अन पत्रा स प्रेरित हाकर अजेज व ठाकुरा-जागीरदारा क विरुद्ध हा गय ।

धी ताडा की जन्मभूमि भी जागीरदारा क जुमा स अस्त थी । उन समय खोड गाव क चाख्साद टिकाणे का दीवाना, पौजदारी दाव मनन का अधिकार था । यह टिकाणा उस समय जुल्मा क लिए मन्पात था ।

बम्बई म मारवाट धान पर भी लागू न ठाणुरा धीर जागीर दाग से ताहा तत हुए लटाई बठ-बगार क विरुद्ध बगावत का । इन प्रकार जागीरदारा व हवलदारा से उनकी निजी रजिग भी रहा ।

सन् 1943 म, बाली म ध्यायजित मारवाड लोक-परिपद क अधिवेशन म भी लाडाजी इन परिपद क सदस्य बने । सन् 1944 म अथवा क्रमभूमि खाड म मारवाड लोक-परिपद की थी रामप्रभाजि गायी माधामिहजा मागव मुमरराजजी डागा मूत्रचन्द्रा राम प्रभापजी मर्मा खाड ध्याति के सहायग म शाखा की स्थापना की व गन का काम समा का ध्यायोजन भा किया गया ।

अ गाथा की स्थापना क बाद धाप धान सहयोगिया क गाव गावा म समा करत अधकार मयवात जुल्मा क खिला धायज बुन्ग करत राष्ट्रीय भावना का प्रचार करत जागारदारी हवा तारा हनुमन्तशाही जुमा के विरुद्ध गावा म चतना पैदा करत । अन प्रयाग म दिन प्रतिदिन गाव क लागू का मनावत बना । दमा कनी म जाधपुर म सन् 1945-46 म निरम्मी एमम्बली मत बटान धीर जिम्मेवार हुन्नमत कामम करन हुनु मन्पातित ध्याशनल म थी लाडा भागिन हुए धीर जाधपुर म स्थापित मारवाड लोक परिपद क कार्यालय म रहकर सक्रिय काम किया । उस समय माकनायक जयनारायणजी व्यास द्वारकापामजी पुगाहित व मयुवापामजी धाधुर धापक प्रत्यागनात थ ।

धापने बाणोद तथा खुडाना क किमान-सम्मतना म सक्रिय भूमिका धदा की । इनम खुडाना का किमान-सम्मेनन थी बल्लभ रामजी मिथा की धयधतना म पूर्णरूपेण सफल रहा ।

सन् 1947 म मारवाड लोक परिपद क तत्वावधान म वैभुरी परगना राजततिक सम्मलन थी फूलबदजी धापना का अध्यक्षता म खाट गाव म हा सम्पन्न हुआ, जिसक केन्द्र बिन्दु भी आजाग क दुतार थी लोडा ही थ । उनमे धनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये थ ।

इन सम्मलन से जाधपुर राज्य के सामतशाही पडयत्रा का मण्डाफोड व जुमी जागीरदारी की हुन्नमतशाही व जुल्मी नौकर-शाही के विरुद्ध जादरद धावाज बुमद हुई । जागीरदारी गावा म अधिकतर बिगान वग धनुमूचित जाति न धय वगों म शक्ति की लहर फलन लगी धीर लाग जुल्मा का इटकर मुबावला करन लग । इसी के परिणामस्वरूप माल 1948 म जाधपुर दरवार व जयनारायणजी व्यास के बीच समझौता हुआ धीर जाधपुर दरवार की लोकप्रिय सरकार स्थापित करने की धायवा कर्णी पडी ।

इन ध्यागेलन की शुरुता म थी लोला के नवतृव म जाधपुर राज्य द्वारा किसान व जागारदाग से लवी वमूल की जान की माग का ठकरा गिया । जवाला दशन पर म जा धनाज शहरा म मेजा जाता था धीर कटान क भाव स बेबा ताता था उनका धरन द्वारा राक दिया गया धीर लोक-परिपद क माध्यम स पत्र-व्यवहार कर प्रथानमत्री महादय क धादशानुसार सस्त धनान की दुकान खान ली गई ।

लोक प्रिय मन्कार बन जाने पर बठ-बगार लगभग समाप्त हा गई । लटाई बन की जाकर सटनबट द्वारा भूमि का पमादश करवाई जाकर बिमाना का लालेगरी हक प्रदान करवाय गय । दिल्ली म सन् 1947 म वापस क क श्रेय मन्त्रीमण्डल की स्थापना हुई । 15 अगस्त 1947 का देश धाजान हुआ धीर उपर धधजा हुन्नमत समाप्त हुई । ए० जकाहराल नहू क इच्छा रात क टीक 12 बज लान फिर नरगा मणग पत्रराया गया पूरा दता पुषी म भूय उडा ।

दूतने सयप क उपरान भी दश राजनीतिक रूप म धाजान अवयव हा गय, पर जगीरदारी के जोर जुम जा धाजारी के पूव रह थ व धाजारी के बाद मा धरकार रह । अस्तन बहना यह है कि धाजान का दुतारा गाड का प्रतिनिधि बिमाना का हिमायती, अथवा का सम्मन, धत्याचारा एव जाड जुमा का विराधी, महात्मा गाधी का अनुयायी विनाशमावे का ममपक, मारवाड लोक परिपद का प्रेरक धक ही अर्थात्क है - धी नयमत लाडा ।



स्वराज के दीवाने श्री रेवाशकर दवे

□

श्री रेवाशकर दव का जन्म 12 सितम्बर, 1915 को ग्राम नारलाई (तहसील भूरी) में श्री पुरपोतमजी वं धर हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई।

पिताजी के व्यवसाय स्थल बम्बई चले गये और वहाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा भी और मराठी सङ्घ अग्रेजी व गुजराती का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया। सन् 1932 में देशभर में जागृत्वन, नमक सत्याग्रह विदेशी वस्त्रों की होखी शराब की दुकानों की फिफ्टींग आदि चल रहे थे, पर बम्बई शहर इन आन्दोलनों का केंद्र था। देश भर के बड़े-बड़े नेता वहाँ आते-समाए करते और हजारों लोग जेल जाते। राष्ट्रीय चेतना का ऐसा माहौल प्रयत्न नहीं देखने को नहीं मिलता था। इन सारी घटनाओं व 'याप्त वातावरण का प्रभाव युवक रेवाशकर पर पडा। उस जमाने में बम्बई के प्रमुख नेता स्वामी वीर नरीमन, भूलाभाई देसाई, एम वाय त्रयी सा, युवा नेता अशोक महता वालासाहब शेर, मोरारजी दमाई आदि थे पर रेवाशकरजी का सीधा सम्पर्क भूलाभाई देसाई त्रयी सा व बानर सना के मुखिया श्री अशोक महता से हुआ। हर आन्दोलन में चाहे वह शराब की दुकाना पर धरना देने का काम हो समुद्र का पानी लाकर सड़कों पर नमक बताने की बात हो, किलायती बंधन की हारसी जलाने का आन्दोलन हो रेवाशकरजी अपनी डी बाइ की बानर सना की टुकड़ी लेकर आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते। प्रभात पेरी निवालयना, तकली कातना, यहू तो रोजमर्रा का कार्य था ही। 'चरखा चलना चलाने लेंगे स्वराज लेंगे' यह उस जमाने में बडा ही लोकप्रिय गाना था जिसे ये सड़कों पर लड़कों से गायना करते थे।

सन् 1939 में बम्बई की एक सभा में दशौ राज्य लोक परिषद् के महासचिव श्री जयनारायण यामन में मारवाड के बम्बई में रह रहे कायकर्ताओं से यह अनुरोध किया कि वे मारवाड में कार्य करें। आपने अपने पत्रक गाव नारलाई में जन आन्दोलन का कार्य शुरू किया। जागीरदार साटा साटा बँठ बंगार व लाग वाग में मनमानी करते थे। इन जुल्मा व अत्याचारों के विरुद्ध दहाने आवाज उठाई तो जागीरदार नारलाई के कामदार कणवायिक इनने पीछे पड गये और उह हर तरह से परेशान करने लग। इनके दो बेटे व नाश्त

की जमीन जप्त कर ली गई, ताकि गुजारे के लिये पुन वे नारलाई छोड़कर बम्बई चल जायें। पर श्री दवे तो भ्रमावो के बीच भी काम करते रहे तब जोषपुर दरवार के चाचा श्री अजीत सिंह ने इनको नारलाई गाव से निष्कासित कर दिया। ऐसे हालात में ये पुन बम्बई आये और वहाँ कार्य करते रहे।

इसी दौरान मारवाड में लोक परिषद् क तत्वावधान में पूण उत्तरदायी शासन के लिए सत्याग्रह आन्दोलन उठ गया और श्री दवे सत्याग्रह में भाग लेने मारवाड आये पर जोषपुर दरवार तथा लोक परिषद् के नेताओं के बीच समझौता हो गया और लोक परिषद् में आन्दोलन स्थगित कर दिया।

मारवाड लोक परिषद् के पाली जिले के प्रमुख नेता सादवी निवासी श्री फूलचन्दजी बाफना थे। सादवी मालसा बरबा था अत जागीरदार, ठापुरा के जुल्मों से मुक्त था, अत यह कायकर्ताओं का बहुत अच्छा संगठन स्थान था। रेवाशकरजी ने सादवी के स्वामी भूमचन्दजी बाफना धीरजमलजी वञ्जावत अनूपचन्दजी पूनमिया आदि प्रमुख कायकर्ताओं के सहयोग से कार्य प्रारम्भ किया। ब्राजादा के पूव पाली अिल में कड जागीरी गावों में किसानों के आन्दोलन चले। नारलाई के निवट ही देवली गाव में जागीरी जुल्मों के विरुद्ध स्वामी माहनराजजी निहालचन्दजी परमार व रामशरजी मास्टर ने एक बडा सशक्त आन्दोलन खडा किया था इसी सिलसिल में दवजी का उनमें सम्पर्क हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी रेवाशकरजी चन से नहीं बडे। स्वराज्य के बाद कुर्मी की छीना भण्टी और अन्धकार त इह धुन्य कर दिया। कुर्मी की राजनीति से परे रह कर होन रचनात्मक कार्यों की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया और आदिम जाति सेवा मय क माध्यम में गरामिया आदिवासियों में सिराही की पिन वाडा तहसील तथा पाली जिले की वाली तहसील में कार्य प्रारम्भ किया। सन 1959 में पिनवाणा क्षेत्र की वरली पचायत में निबिराय सरपच चुने गये। पर गद्दी राजनीति में वहाँ पर मां इह निराशा हाथ लगी। इसी दौरान विकास कार्यों को करवाने के सिलसिल में मारवाड लोक परिषद् के पुराने नेता और राजस्थान में श्रीमण्डल के सदस्य मयुरादासजी मायुर की माफत उहोंने श्री हरिश्चन्द्रजी मायुर (लोकसभा सदस्य) में सम्पर्क किया जिससे क्षेत्र में अनेक विकास कार्यों की शुरुआत ता हुई ही पर सबसे बडी और महत्वपूर्ण उपलब्धि हुई—साई नदी का पानी अरावली पर्वत में कड मील लम्बा सुरम खादकर जवाई बांध में जाने की।

रेवाशकरजी ने श्री हण्णदासजी जाजू क सान्निध्य में भूतान यात्राओं में भाग लिया। राजस्थान हरिजन सवक सच के माध्यम



म इरिजन उद्धार का काम हाथ में लिया। आज भी रचनात्मक
काया में इनकी विराट् मूर्ति है और भावा में भ्रमण करके तागा म
चोगा जगते का काम 73 वष में अधिका प्रायु हान के बाद भी
युवता-सा उल्हाह और उगत रखकर निरंतर कर रहे हैं।



युवा क्रांतिकारी श्री भीठालाल काठे

मारवाड़ क स्वाधानता प्रादा
तन म बगली निवासी काठेड परि
वार का नाम मदा ही घाडर उ

श्रद्धा म याद किया जाता रहता। सन् 1930 ई गामीजी के भारत
व्यापी प्रादातन क साथ ही माघ मारवाड़ क गाथा म भी जागृति
की तह दी गई थी और श्री गणेशमलजी काठेड न जागरी युवा
उत्तार फवन का निरूपण कर लिया था।

स्वातंत्र्य आन्दोलन का श्री गणेशमलजी काठेड का गतिविधिया
नामम" श्री और इन्डरामा घमकाया गया पर श्री गणेशमलजी
ना डरत वान थे नही—निडरतापूर्वक तक परियुद् का काम
परत रहे। जब बात बड़ बड़ सा बगरी प्राम क आठुन न इनका
बाडी शान म रहता ही घमहनीय बना दिया। पत्रस्वरूप बहु
वाडेड परिवार निकटस्थ साजत रा" पर धाकर वष गया और
नाजत राड स्थित इनका मकान नागम की गतिविधिया का केंद्र
बन गया। श्री गणेशमलजी न मोजत रा" पर मारवाड़ लोक परियुद्
का एक बडा अधिवेशन प्राभिनित किया और जागृति पत्र करने म
नमय-नमय पर प्राधिक सहयोग देकर आदातन का प्राग बढाया।

एम ही महान् राष्ट्र मक्त पिता क मुम श्री भीठालालजी
काठेड युवावस्था स ही राष्ट्रीय विचार म सु" गय और उद्देग अपने
पतृक गाब बगडी क विमानों का समजत तयार कर सामती जुन्मा
म सडने का निरूपण किया।

सन् 1938 म सत्बर 1942 तक श्री भीठालालजी न दिन
गत एक कर काशिम व नाक-परिधि क तत्त्वधान म धनेव
मनामा व सम्मनना का प्रायाजन कर धर्मपूढ प्रादातन सडा
कर दिया और बगडी क्रांतिकारियों की रण-मथला बन गईं। सन्

1941 का एक बहत सम्मेलन म आठुन बगडी न समा भग करते
के उद्देश्य म वडे पमाने पर लाडी पाज किया और वदके छोटी
पत्रस्वरूप कई मायनाही और जोषपुर मे प्राए लाक परिपद् के नेता
घोषित हा गया। यह जागीरदार का हमला बगडी काण्ड क नाम से
मशहूर हुआ और उच्चस्तरीय जांच हुई।

श्री भीठालालजी काठेड सन् 1942 के अग्रजा ' भारत छोडो
प्रादोलन क दौरान निरपतार हुए उनको जोषपुर जेल म रखा
गया। इसी जेल की मातनामा क पत्रस्वरूप रस युवा क्रांतिकारी का
स्वास्थ्य इतना गिर गया कि फिर सभन ही नहीं सना और जन स
रिहाई क बात भी जान लवा बामारी ने इन्हें अन्त्यामु म ही नस
मगार म बिदा कर दिया।

बिठोडा की प्रगुवा जोडी

श्री गौरीशंकर व्यास व श्री लालदास चरणव

बिठोडा क स्वर्गीय गौराशंकरजी व्यास क मलदासजी चरणव
माधुरी पड लिये-रक्ति हान पर भी मारवाड़ जखन (खारची)
थन के प्राग मे राष्ट्रीय चतना जगने सामती जुन्मा क उजागर
कर बैठ-बगड व साग-जाग पिढाने के आन्दोलन म प्रगुवा थे। न
दामो नेताधा की एक विन्धात जोडा थी और ये ही काय म साथ
रहत थे।

बैत भी खारची क्षेत्र बिडा क प्रभाव के कारण बहुत विघ्न
क्षेत्र था और यहा के गावा न सामती नादिरगाही का बोधबाला
था। मनमानी काय-चाय बड-बगार क ताटा-कूता की धुल्ली हानी
थी। आठुन और बाहुप (बिसाभ) का कज देने वान) मिलकर
बिसाना की मूठ क थीर जमीना व घरा स बेदखल करत थे।
एम वक्त म राजासाही और आठुनशाही क विरुद्ध धावाज बुन्द
करना बिसाना की संपठित करना बडा ही दुष्कर व जोषिममरा
काय था पर इन दाना जन लवका ने उस राष्ट्र धम धानकर गाव 2
जाकर जन-जागृति पत्र की। इस काय म इन्हें बंद मुगीवर्त उछानी
पडी। कर् जगह मार पडी जूत छाये और राखत म बंद कर बिडा
गिया गया। पर, इन दोना त्यागी-तपस्वी कायचतर्पाने ने हिम्मल
नही हानी।

सन् 1942-44 क अग्रजा भारत छोडो प्रादोलन क बाद
की घटना है। जगह-जगह मारवाड़ के जागीरदार संपठित हो रहे थे
और पाचना बना रहे थे कि अग्रजा के भारत न चले जान के बाद



भा उनका और मारवाड़ में दरबार का शासन कायम रह। ऐसी ही मीटिंग मारवाड़ जनशन पर स्थित डाक दगल में प्राऊबा के ठाकुर नाहरसिंहजी की अध्यक्षता में आयोजित हुई थी। इस मीटिंग में गांव गांव के जागीरदार आये थे और मारवाड़ लोक परिषद् के उत्तरदायी शासन की भाग में विरोध में यह आयोजन था। गौरी शंकरजी व लालदासजी भी मीटिंग की कायवाही के बारे में जानन के लिए वहां पहुंचे। उह वहां देखत ही जोजावर क ठाकुर श्री कारसिंह न इनका डराया घमकाया, बागाबास ठाकुर बहादुरसिंहजी न गोनो की निदयतापूर्वक पिटाई की। फौजी जूता में ब बतता स मुगी तरह मारा छाती पर पैर रखकर गौरीशंकरजी के सिर के बान उखाड़ लिय। मारवाड़ जनशन क कायकर्ता श्री अब्दुल रहमान खानी ने छुटवाने की कागिश की तो उह भी मार पडी। एस के उन जमाने के हालात, जिनमें रहत हुए कायकर्ताओं का काय करना पडता था।

गौरीशंकरजी व लालदासजी का जीवन बिनकुल सादा व त्यागप था। मारवाड़ लोक परिषद् क नेता श्री जयनारायण व्यास श्री मयुरादास माथुर श्री रणज्योददास गट्टानी आदि के सहयोग स रक्षाने प्रतिम दिना तक जनता की सेवा की।

इनके जीवन में नातिवारी परिवतन का कारण बनी। यह समय दश मर में स्वाधीनता आंदोलन की हलचल का था। सबसे ही महात्मा गांधी के आंदोलन की धूम मची हुई थी।

मन् 1939 में सबसेप्रथम साजत रोड पर मारवाड़ लोक परिषद् की शाखा खाला गइ उस में सबसेथी मीठालाल बाबा अध्यक्ष बध मुधालाल मन्त्री तथा विजयशंकर दने कोपाध्यक्ष चुने गय। परिषद् की प्रचारात्मक गतिविधिया बढ गइ। कुछ ही समय बाद श्री जयनारायण व्यास साजत राड पधार, तब लोक परिषद् क कायबश उनके साथ श्री भीठा लाल काका व दबजी भी जोपुर क निग रवाना हुए। रास्ते में पाली में लोक-परिषद् क कायकर्ताओं—सबथी रामप्रसाद गांधी और मूलचंद मट्ट न इह राककर घान मण्डी में समा का आयोजन किया। इस समा में पाली मिल क मनेजर था माडर का मापण शारदा एक्ट क विरोध में हुमा और ज्या ही श्री जयनारायण व्यास बालन के लिए खडे हुए पुलिस न लाठी चार्ज कर दिया। दबेजी ने यासजी का बचाव किया बरना गम्भीर चाटें आती।

सन् 1940 में मारवाड़ लोक परिषद् ने अकाल की ममय्या को लेकर आंदोलन चलाया। इसी आंदोलन क सिलसिले में दबेजी कटासिया के श्री हरिराम आभा, बध मुनालाल तथा वागु दबजी मटनागर गिरफ्तार किये गये जिहू सोजत की पुरानी जल—मोजुदा गोटावत—भवन में रखा गया था। लोक परिषद् व जाधपुर दरबार क बीच समझौता हान पर आय नतामा क साथ इनकी भी रिहाई हो गई।

28 मार्च 1942 का मारवाड़ लोक परिषद् में चण्डाबल में जिम्मेवार हुकुमत लिवस मनान का ऐलान किया। दबेजी व मीठालाल जी काका आदि कायकर्ता साजत से तागा लेकर चण्डाबल क लिये रवाना हा गय। साजत रोड स एक तागा भरकर तथा बगडा स एक बैलगाडी भरकर कायकर्ता चण्डाबल पहुंचे। आग-पास क अनेक गावा से कायकर्ता पैल बलगाडी आदि स पहुंच पर चण्डाबल में जागीरदार न जा आतक फला रखा था इन कारण सभी का गांव क बाहर ही रोके लिया गया और गांव चण्डाबल में भा एमा आतक पडा किया गया कि किसी का घर स बाहर ही नहीं निकलन दिया। चण्डाबल क प्रमुख कायकर्ता श्री मणिलालजी आनीशान का जब यह सूचना हुई कि बाहर से कई नेतागण व कायकर्ता आय स और बाहर ही राक दिय गये तब श्री आनीशान किमी तरह घर स बाहर लौटा और घाती लेकर निकल और साजत व जाधपुर में आये नेतामा के पास पहुंचे। श्री आनीशान में ता गजब का हिम्मन थी इतने भयकर आतक स सुदुर्घ नाचेवदी क वायजूद भी उहोंने सकडा कायकर्ताओं के साथ बंद भातरम् का नारा लगान हुए गांव



सतत कायशील श्री विजयशंकर दवे



साजत क श्री विजयशंकर दवे मारवाड़ लोक-परिषद् के उन प्रथम पक्ति के कायकर्ताओं में से है—

जिहान लोक परिषद् का सदेश गांव-गांव पहुंचाकर पाली जिले में जन जागृति का सूत्रपात किया। श्री दव का जन्म सोजत शहर में मवद 1971 में चन्न शुक्ला 2 को श्री जयशंकरजी एब श्रीमती शानि दवी के घर हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा बरी हुई तपश्चात् इहान सोजत रोड पर विजयशंकर दवे एण्ड सन्स नामक दुकान खालकर डाबर तथा पटाल की एजेसी ली और धंधा करने लग। इसी धन्धे में सिलसिले में दबजी एक बार सोजत के ही बध मुनालालजी के साथ यावर गये। वहां उसकी मारवाड़ राज्य से निष्कासित श्री जयनारायण व्यास स मुलाकात हुई। यहां मुलाकात



म हरिजन उद्धार का काय हाथ म लिया। आज भी रचनात्मक कार्या म उनकी विशेष रचि ह और गावा म भ्रमण करके लागा म चनना जगाने का काय 73 वष म अधिक धामु हाने के बाद भी युवका-सा उसाह और नगन रखकर निरतर कर रहे हैं।

1941 को एक वहत सम्मेलन म ठावुर बगडी ने सभा भग करने के उद्देश्य म बह पदाव पर लाठी चाज किया और बहूँ छोडी फलस्वरूप कई कायकर्ता और जाधपुर से प्राण लाक परिपद् के नेता घायल हा गये। यह जागीरदार का हमला बगडी बाण्ड क गम से मशहूर हुमा और उच्चस्तरीय जाच हुई।



युवा क्रांतिकारी श्री मीठालाल काठेड



मारवाड क स्वाधीनता प्रांत् लन म बगडी निवासी काठेड परि वार का नाम सदा ही प्रादर व श्रद्धा म धामु किया जाता रहेगा। सन् 1930 क गांधीजी के भारत यापी प्रांत्लन के साथ ही साथ मारवा क गावा म भी जागृति की लहर डोड गई थी और श्री गणेशमलजी काठेड ने जागीरी जुद्धा उतार घनन का निषय कर लिया था।

स्यानीय ठावुर का श्री गणेशमलजी बाण्ड की गतिविधिया नापम म आद और इह डराया घमकाया गया पर श्री गणेशमलजी ता डरन वान थे नही—निडरतापूर्वक लाक परिपद् का काय करते रहे। जब बात बढ गई ता बगडी प्राण क ठावुर ने इनका बगडी प्राण म रहना ही असहनीय बना दिया। फलस्वरूप बह बाण्ड परिवार निक्टरेष साजत रीड पर आकर बस गया और साजत रीड स्थित इनका मकान नादम की गतिविधिया का कट बन गया। श्री गणेशमलजी ने साजत राड पर मारवाड लोक परिपद् का एक बडा अधिवेशन प्रापत्रित किया और जागृति पदा करने म समय-नामय पर प्रायिक महधाय दकर आदालन का प्राण बडाया।

ऐम ही महान् राष्ट्र मक्त विता क पुत्र श्री मीठालालजी काठेड युवावस्था म ही राष्ट्रीय विचारा स जुट गय और उहाने अपन पतुत्र गाव बगडी मे किसाना का सगठन तयार कर सामता जुल्मा म उडने का निषय किया।

सन् 1938 म लेकर 1942 तक श्री मीठालालजी न तिन रात एक कर कायेत व लोक-परिपद् क तत्वावधान म अनेक नमाया व सम्मेलना का आयोजन कर धमूलतः प्रांत्लन खडा कर दिया और बगडी प्रातिवारिया की रण-स्थला बन गई। सन्

श्री मीठालालजी काठेड सन् 1942 मे 'अप्रेजा' भारत छोडो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार हुए उनको जोधपुर जेल म रखा गया। इसी जेल की यातनाया के फलस्वरूप इस युवा प्रातिकारी का स्वास्थ्य इतना गिर गया कि फिर समल ही नहीं सका और जेल स रिहाई के बाद भी जान लवा बीमारी ने इह अरपायु म ही इस ससार स विदा कर दिया।

विठोडा की प्रगुवा जोडी

श्री गौरीशंकर व्यास व श्री लालदास वैष्णव



विठोडा के स्वर्गीय गौरीशंकरजी व्यास व लालदासजी वैष्णव मामुली पदे लिख यति हाने पर भी मारवाड जनशन (खारबो) क्षेत्र क प्राण म राष्ट्रीय चेतना जगाने सामती जुल्मा को उजागर कर बठ-बगार व लाण-जाण मिटाने के आ लोसना क धनुषा थे। इन दोनो नेतायो की एक विस्थात जोनी थी और वे हर काय म साथ रहत थ।

बस भी खारबो क्षेत्र शिक्षा के प्रभाव के कारण बहुत पिछा गेन था और यहा क गावा म साम ती नादिरशाही का बोलबाला था। मनमानी लाग वाग बठ-बगार व लाटा कूता की बसुली हाली थ। ठावुर और बाहरा (विसानी को बज देने वाले) मिलकर विसाना का लूटत थ और जयोनी व घरों स वेदखल करत थ। एस वक्त म राजाशाही और ठावुरशाही व विरुड आवाज बुलंद बनना विसाना का संगठित करना बडा ही दुष्क व जायिमसरा काय था पर इन ताना जन सक्ता ने उस राष्ट्रु धम मानकर गाव 2 जाकर जन जागृति पदा की। इस काय म इह कई युनीबर्ते उठानी पडी। कई जगह मार पडा जूते साये और राबल म कद कर विडा दिया गया। पर इन दोना त्यागी-तपस्वा कायकर्ताया ने हिम्मत नडा हारी।

सन् 1942-44 क अप्रेजा भारत छोडा आंदोलन के वा क घटना है। जगह-जगह मारवाड के जागीरदार सगठन हो रहे थ और याजना बना रहे थे कि अप्रेजा के भारत से बने जाने के बाद



भी उनका और मारवाड म दरबार का शासन कायम रहे। ऐसी ही मीटिंग मारवाड जनश्रम पर स्थित डाक बगल म झाड़वा के ठाकुर नाहरसिंहजी की अध्यक्षता मे आयोजित हुई थी। इस मीटिंग म गांव गांव के जागीरदार आये व और मारवाड लोक-परिपद् के उत्तरदायी शासन की मांग के विरुध म यह आयोजन था। गौरी शंकरजी व लालदासजी भी मीटिंग की बायवाही के बारे म जानन के लिए वहा पहुंचे। उन्हें वहा दसत ही जोबावर के ठाकुर श्री कंगरसिंह न इनका डराया घमकाया बागावास ठाकुर ब्रह्मदुरसिंहजी ने लोभो की निदयतापूर्वक पिटाई की। फौजी जूते से व बतो स बुगी तरह मारा छाती पर पर रखकर गौरीशंकरजी के सिर के बान उखाड़ लिम। मारवाड जनश्रम के नायकता श्री ब्रम्बल रहमान खाजो ने छुड़वाने की काशिश की, तो उह भी मार पडो। एस थे उन जमाने क हालात, जिनम रहत हुए कायकर्ताओं का नाय करना पडना था।

गौरीशंकरजी व लालदासजी का जीवन बिलकुल सादा व त्यागमय था। मारवाड लोक परिपद् के नेता श्री जयनारायण 'याम' श्री मयुरादास माथुर श्री रणछोडदास गृहानी आदि के सहयोग स इन्ताने अंतिम दिना तक जनता की सेवा की।



सतत कायशील श्री विजयशंकर दवे



साजत के श्री विजयशंकर दवे मारवाड लोक परिपद् के उन प्रथम पक्ति के कायकर्ता म से हैं—

जिहाने लोक परिपद् का संदेश गांव-गांव पहुंचाकर पाली जिले म जन जागृति का मूत्रपात किया। श्री दव का जन्म सोजत शहर मे मवद् 1971 म चत्र शुक्ला 2 को श्री जयशंकरजी एव श्रीमती शानि देवी के घर हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा वही हुई, तत्पश्चात् इहाने सोजत रोड पर विजयशंकर दवे एण्ड सत्स नामक डुकान खोलकर डारकर तथा पट्टोल की एजेसी ली और घ घा करे लगे। इसी घ-घ के सिलसिले मे दवेजी एक बार सोजत के ही यध भुआसारजी के साथ व्यापकर गये। वहा उसकी मारवाड राज्य स निष्कासित श्री जयनारायण 'याम' स मुलाकात हुई। यही मुलाकात

इनके जीवन म नातिकारी परिवर्तन का कारण बनी। समय देश भर मे स्वाधीनता आंदोलन की हलचल का था। ही महत्मा गांधी के आंदोलन की धूम मची हुई थी।

सन् 1939 मे सवप्रथम मोजत रोड पर मारवाड लोक परिपद् की शाखा खोला गइ उस म सवथी मीठालाल काका अध्यक्ष मुनालाल मंत्री तथा विजयशंकर दवे कोपाध्यक्ष चुन गये। पं की प्रचारात्मक गतिविधिया बढ गइ। कुछ ही समय बाद जयनारायण ब्यास साजत रोड पधारे तब लोक परिपद् क व। उनके साथ श्री मीठा लाल काका व दवेजी भी जोरपात्र क रवाना हुए। रास्ते मे पाली मे लोक परिपद् क कायकर्ता प्रथमसाद गांधी और मूलचंद मट्टे ने इन्हें रोककर धान मण्ड सना का आयोजन किया। इस सभा मे पाली मिल क मनेजर माडर का मायण शारदा एकट के विरोध म हुआ और ज्या ही जयनारायण ब्यास बालने के लिए खडे हुए पुलिस ने लाठी चार्ज दिया। दवेजी ने 'याम'जी का बचाव किया वरना गम्भीर आती।

सन् 1940 म मारवाड लोक-परिपद् न अकाल की को लेकर आंदोलन चलाया। इसी आंदोलन क सिलसिले दवेजी कटालिया क श्री हरिराम ओभा वध मुनालाल तथा व दवेजी मटनागर गिरफ्तार किये गये, जिन्हें साजत की पुरानी जेल मौजूदा गोटावत-मवन म रखा गया था। लोक परिपद् जाधपुर दरबार क बीच समझौता होन पर अय नताम्रा क इनकी भी रिहाई हो गई।

28 मार्च 1942 का मारवाड लोक परिपद् न चण्डावन जिम्मेवार हुकुमत दिवस मनाने का ऐलान किया। दवेजी व मीठ जी काका आदि कायकर्ता साजत से तागा लेकर चण्डावन लिये रवाना हो गये। साजत रोड स एक तागा भरकर तथा वा स एक बलगाडी भरकर कायकर्ता चण्डावन पहुंचे। प्राप्त पास अनेक गांवा स कायकर्ता पदल बलगाडी आदि स पहुंचे पर चण्डा मे जागीरदार न जो आतक फला रखा था इस कारण सभी का के बाहर ही रोक दिया गया और गांव चण्डावल म भी आतक पदा किया गया कि किसी का घर स बाहर ही नही निक दिया। चण्डावल क प्रमुख कायकर्ता श्री मांगीलालजी आताशान जब यह सूचना हुइ कि बाहर स कई नेतागण व कायकर्ता आये और बाहर ही रोक दिय गये तब श्री प्रालीशान निमा तरह स बाहर लाटा और धोती लेकर निकल और साजत व जाधपुर आये नताम्रो के पास पहुंचे। श्री प्रालीशान म ता गुजब का हिम थी, इतन भयकर आतक व सुदुइ नावे-दी क बाबजू भी उर् संकटा कायकर्ताओं के साथ व मातरम् का नारा लगान हुए म



म प्रथम कर दिया। तत्काल ही ठिकाने की पुलिस व घडमबारा न नाठी बाज करके बरहमी स पिटाई शुरू कर दी। 30-40 काय नताप्रा को गम्भीर चोटें प्राप्त। दबेजी की पतलिया टूट ग। तीन जगह म बचर हुए। श्री प्रावीशान व मीठापालजी बाका तुरी तरह पायन हुए। फिर पुलिस न घेरा म घुसकर रामसुबजी पुरोहित, छपारामजी व मठजी, जो सभा की प्रायभता करने बान थे। उह, बरहमी म पीटा। घायला म किसी तरह पीपलिया न सठ श्री मिमराजजी बाहारा की कार द्वारा जोगपुर भेजा गया और प्रजाज बरवाया गया।

चण्डावल म हुए इन लाठीचाल बाण्ड की दश मर म तीव्र प्रतिक्रिया हुई। मारवाड लोक परिषद ने इनी बाल पर भाषान लेन और गिरफ्तारिया हुई। लोक परिषद न चाटी न नना ता जेल म बंद व पर एक के बाद एक डिप्टेटर मुभर करक मत्याग्रह चलाया जा रहा बा। श्री दवे 17अं डिप्टेटर नियुक्त हुए और प्रा-दोनन का मचासन किया। फिर 31 मई, 1944 का सखर और मारवाड नोक परिषद के बीच समझौता हुआ और सभा नताप्रा व नामबर्लीपा का जेन म रिहा कर दिया गया। जेल म रिहा हान बाला म मात्र के स्वतंत्रता सेनानी व पत्रकार ययावतजी रुचिर भी एक व। जियमभरजी दवे इन दिना गाधीयाम न रहत है।

धुन के धनी
श्री ऋषभराज जैन

Stand firm like a rock in your own faith and success is under your feet
Stand with iron nerves and well intelligent brain and the whole world is under your feet
Suffering is living death but suffering for the higher cause is life itself

व तीन सुधन न बिये प्रसिद्ध बानिबारी और महान् त्यागी स्वामी कुमाराज द 'यावर' ने प्रथम ग्रिय ग्रिय श्री ऋषभराज जैन को, और इ नी जीवन म 'श्री की बुनियात' पर ऋषभराजजी ने प्रथमी मारी जिन्गी का निर्माण किया।

ऋषभराज का जन 19 अगस्त 1920 को जतारन मे प्रसिद्ध बकीर श्री भागकराजजी मोहनोत के घर हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा नी बही हुई। बचपन मे ही यावर स भाने बाल गास स तथा ममाचार्यपना म व जाना बरते थ कि यावर म विलापती

बपडा की होली जलाई गई, गांधीजी ग्वादी पहनन बा उपवग दन है और जग्गीराज व बिरुद्ध मत्याग्रह करत है। इमने इन चीज की और उनका स्थान हुआ। फिर 1935 म मारवाडमिडिल बाड की परीक्षा देन जग जायपुर गये तो बटला बाजार म खादी मण्डल ते खादी खरीदी और गांधीजी का ध्या हुआ सदेना— 'मीलें देग बा पावा लेते है' खादी ही देगमक की पोशाक है।' पहले को भिना। इस प्रकर उनम राष्ट्रीय नावना के बीज पडे जो समय पावर अकुरित हुए।

सन् 1937 म प्रागे को पढाई ने लिए 'यावर म श्री गान्धि जन मिडिल स्कूज की भाठवी बसा म मतीं हुए। वहा श्री मिथ्री लालजी धरोडा जन घम की शिक्षा के प्रापायक थ पर व राष्ट्रीय बिचारो के समक्ष होने म प्रातिकारियो का इतिहास और जलिया बिचारो के नमहार की बहानी चलाया बरत व। उही दिने वे स्वामी कुमाराज द की एक मीटिंग म बारीक हुए। उहीन बडे जासीले माएए ने कहा— Tell me who lives if India dies and who dies if India lives? इस एए वाक्य म विनगारी न नाम किया और ऋषभराजजी 1937 म ही कांसरे ने सदस्य बन गये और पूर जाण खरोग के साथ स्वामी कुमाराज द सनातन घम म राष्ट्रीय प्रादोलन की गतिविधिया म लग गये। सनातन घम बागज यावर म प्रबल लेते ही स्टूडेंटस युनियन की स्थापना कर सचिव चुने गये और यावर म राजपूताना एव सटल इमिया स्टूडेंटस कांफेस का सफन प्रायोजन किया, जियकी अध्यक्षता भग्मद के श्री के एक नरीमन ने की।

22 मितम्बर 1940 के दिन यावर के बागम बपालय दामादर बाबनालय पर अझा प्रनिवादन के कायधम म ऋषभराज न जाण जोर मे 'Up-Up The National flag, down-down the Union Jack' के नार लगाये। स्वामीय पुलिस तो गिरफार करने का मोका खोज ही रही थी। पुलिस ने प्रमुख विधार्थी नता श्री ऋषभराज व श्री मोहनराज जन (बासी), को जो उर वक्त मनातन घम बागैज यावर म पकने थे और जन होस्टल म कुछ प्राय सहयोगियो के साथ गिरफतार कर लिया। जन हास्टल म इनके बमरा नी हसारी 'श्री गई व बई कागज व किताबें जल्य कर श्री ऋषभराजजी पर विधिंन प्राफ इडिया एक्ट के तहत क्लस 38 (1) तथा क्लस 34 (6) के तहत मुनदमा चलाया गया, जिसम एक वष के बडोर बारावास की मजा व बीस रुपये कुमाना किया गया। प्राील बरते पर सजा एक वष म पटावर 3 माह की बर द दी। जेन व स्वामी कुमाराज द म पटावर 3 माह की बर द दी व बट्टा ऋषभराज नी एक दिन उन दिने का प्रसिद्ध गाना— नही सरनयु, नही



रखनी, सरकार जालिम नहीं रखनी जोर-जोर म गाया। जेज्ज जेन मुर्फारिस्टेंट नाराज हो गया और सबको बाल काठरी में बंद कर दिया। लेकिन 1 जुलाई, 1942 को इनकी जेल स रिहाई हो गई। स्वामी कुमाराचार्य न जापान में रह रहे नान्तिवारी श्री रामबिहारी बाम के पास ऋषभराजजी का भेजने की योजना बनाई थी, पर युद्ध को विवक परिस्थितिया के कारण यह सम्भव नहो हुमा। अब ऋषभजी पुन जतारण आ गये और मारवाड में उन दिना एटवा इजरा एमम्बली के होन वाले चुनावा के सिलसिले में चला गय चुनाव विभाग में बलक की नौकरी करन लग, पर 2 अक्टूबर, 1941 का जतारण में गांधी जयंती के उपलक्ष में समा आयोजित करन व मापण देने के जुम में उहू जतारण के तत्कालीन हाकिम श्री अब्दुल जलील काजी न बलास्तगी का आदेश द दिया। नौकरी स छुट्टी पाकर जतारण में ही दवाइया की दुकान की, पर 1947 में इनके पिनाजी क स्वगवास क पश्चात् य जाधपुर में ही रहने लग।



निडर जनसेवी श्री पुखराज परिहार

स्वर्गीय श्री पुखराजजी परिहार का जन्म ग्राम चाणाद में 2 मार्च 1915 क दिन बालाजा छोपा क घर हुमा था। प्रारम्भिक शिक्षा गांव की पाठशाला में हुई, फिर व्यवसाय के लिए बम्बई गय। वही महात्मा गांधी के नतृत्व में कांग्रेस द्वारा चलाय जा रहे स्वतंत्रता आन्दोलन की हलचल का दक्कर इहू भी प्रेरणा मिला और वहां विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेन लग गय। एक बार गान्धे रेन्व स्टेशन पर ताड़पाड़ के आरोप में पुलिस न आपका गिरफ्तार किया और बम्बई स निष्कासित कर दिया। फनस्वरूप आप अपने गांव चाणोद में आकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की गतिविधिया में जुट गय।

महात्मा गांधी क निवाण के 12वें दिन जोधपुर में गुलाब नगर पर 12 फरवरी का आयोजित समा में गांधी सेवा दल नामक मन्था का गठन किया गया और सशुभी मशारामजी शास्त्री तुलसी रामजी राठी रणछोडदासजी गट्टानी घनपतजी मेहता, सिद्धेश्वरजी मोदा बमतराजजी महता, सावतराजजी मण्डारी तथा ऋषभराजजी उम सस्था क प्रमुख कार्यकर्ता बने। फिर एक दिन हरिजन दिवस मनाने के उपलक्ष में गिरदीकाट में समा हुई। हरिजना न अपने हाथ से जलपान कराया। ऋषभराजजी, रणछोडदासजी गट्टानी व तुलसीदासजी राठी को बुद्ध भौड न घर लिया और मपी है—दूर हटा के नारे लगाती हुई भौड पीछे पड़ गई। पुलिस न आकर भौड को तितर बितर किया पर माहेश्वरी समाज न श्री गट्टानी व श्री राठी का और मुणा ता (आसवाल) व भाईया न ऋषभराजजी को जान बाहर कर दिया।

चाणाद ठिकाना मारवाड क अधिनारमन्त्र ठिकाना में ही एक नही था, जागोरी जुलूम क कठोर प्रशासन क मामला में भी अ बल था और यहां आजादी की बात करन की कोई हिम्मत भी नही करता था। किमाना पर मनमानी लागू-बाग व बठ-बगार लगी हुइ थी। फसल का चौथा हिस्सा और ठिकान क कई गांवा में तीसरा हिस्सा लटाई में बमूल किया जाता था। ममय पर लाटा न हान स किसानों की फसल लाटा (खलिहाना) में पट्टी-पट्टी बर्बाद होनी थी चारी हा जाती थी और बमी-बमी ता खराफ व रबी की फसल अगल वप बारिज हान पर भी लाटा में पनी हुई भोग कर सड जाती थी, पर लटाई नही हाती थी। लाटा क लकर प्रतिवय गांव व ठिकाने के कारिदा व किसानों में लडाईं हाता और गराव किमाना को मार ता पट्टी ही पर राय में लाया गया की फसल का नुकसान भी हाता। पुखराजजी न इन हालाता का दक्कर नियमानुसार लटाई बन्द पर हा इन इतु किसानों का संगठित कर आन्दोलन खडा किया। सयाग न उहू दिना दबला निवासी श्री माहनराजजी जिहान बाली में बकालात शुरू की हा था न चाणाद ठिकाने क 24 गांवा क किसानों का चाणाद में एकत्रिन कर छठे हिस्से में ही लटाई करान का निश्चय किया और बाला में कानूनी बायबाही भी शुरू की। बारी में उन ममय श्री बनीधर पुरोहित बडे इमान्दार व किमाना क खिणा स तहमान्दार बनकर आय थ। उहान बावजूद ठिकाने क भारी दबाव क रिमोवर

इहा दिना उनका सम्पक सिद्धराजजी डडडा स हुमा जिहाने मोमल क पास सर्वोदय केन्द्र की स्थापना की थी। उही को सलाह पर ऋषभराजजी न सर्वोदय व छादी सस्थाओं में काम करना स्वाकार किया और तब स धुन के घनी मादा जीवन उच्च विचार की मूर्ति श्री ऋषभराजजी ने अपना जीवन गांधीजी के रचनात्मक कार्यों—छादी धरूताद्वार भ्रमण ग्रामागन व सर्वोदय की समर्पित कर रखा है।

अलग अलग है धम सभी के, देश धम है एक,
एक डोर में गुथे हुए हैं जैसे सुमन अनेक।



म प्रवचन कर दिया । तबानु ही ठिकाने की पुनिस व घणमवारा न राठी चाज करके ब्रेरहमी स पिटाइ मुक्त कर दी । 30-40 काय मतासा वा गम्भीर चाणें घाणें । दवेजो की पमलिया टट गइ । तीन जगह फ बकर हुए । श्री धालीमान व मीठालालजी काका बुरी तरह पायन हुए । फिर पुनिस न घेरा म भूतकर रामसुयजी पुरोहित एगामजी न मठजी, जो सभा की आयसता बरन बान दे । उ ह, बरन्मी न पीटा । घायला को किसी तरह पीपलिया क सठ श्री प्रेमराजजी बाहरा की बार द्वारा जायपुर भेजा गया और इतान बरवाया गया ।

चण्टाघम म हुए म लाठीचाज बाण्ड को दश भर म तीब्र प्रनिसिया हुई । मारवाड लोक-परिपद् न इमी गत पर आदावन छण और गिरफ्तारिया हु । लोक परिपद् क मोटी न नता तो जल म वन् थ, पर एक के बाद एक डिक्टेटर मुकरर करके सत्याग्रह चनाया जा रहा था । श्री दवे 17वें डिक्टेटर निकुल हुए और घानालन का मचालन किया । फिर 31 मई 1944 को सरकार और मारवाड साक-परिपद् के बीच समझौता हुआ और सभी मठासा व कायवर्तिया को जेन म रिहा कर दिया गया । जल म रिहा होने बला म मात्र के स्वतन्त्रता-मनानी व पत्रवार यज्ञतजजी हचिर भी एक थ । विजयचक्रजी दवे दन गिना माथीघाम न रहत है ।

घुन के घनो श्री कृष्णभराज जैन



Stand firm like a rock in your own faith and success is under your feet

Stand with iron nerves and well intelligent brain and the whole world is under your feet

Suffering is living death but suffering for the higher cause is life itself

घ तीन मुकमन्न दिव प्रमिद्ध शानिकारी और महानु त्यामी स्वामी कुमारानन् "भावर ने घपन प्रिय शिष्य श्री कृष्णभराज जैन को, मोर इ नी जीवन मन्ना की बुनिया" पर कृष्णभराजजी ने घपनी सारी जिनगी का निर्माण किया ।

कृष्णभराज का जन्म 19 अगस्त 1920 को जतारन म प्रसिद्ध बनेन श्री मानकराजजी मोहलात क घर हुआ था । उनको प्रारम्भिक शिक्षा श्री बहाई हुई । बचपन म ही ब्यावर स घाने बान लागी म मया ममाचारपत्रा म व जाना बरल थ कि ब्यावर म विलायती

कपडो की होली जलाई गई, गांधीजी खादी पहनन का उपदेश देते हैं और अंग्रेजोंका ये विरुद्ध सत्याग्रह करते हैं । इस सन बीजा की घोर उनका क्लान हुआ । फिर 1935 म मारवाड मिडिल बाड की परीक्षा देने जे जोयपुर गये तो बटला बाजार म मयादी मन्ार म त्यादी खदीवी और गांधीजी का छपा हुआ सदथ— "मीलें दज ना पाया दतो है मयादी ही देशमक्त की पोशाक है । पढने को मिला । इस प्रकार उनम राष्ट्रीय भावना के बीज पडे जो समय पावर अकुरित हुए ।

सन् 1937 म आय को पढाइ के लिए ब्यावर म श्री शांति जैन मिडिल स्कूल की प्राठवी क्या म मर्ती हुए । वहा श्री मिथी लालजी झरोडा जैन घम की शिधा के कृपापक थे पर व राष्ट्रीय विचारा क समयक हाने स प्रातिवारिया का इतिहास और जविया बाता बाग थे तरसहार की कहानी पढाया बरत व । उही गिना थे स्वामी कुमारानन्द की एक मीटिंग म शरीक हुए । उ हाने बड ज्ञानोके भाषण मे कहा— "Tell me, who lives if India dies and who dies if India lives ?" इस एज वाक्य न चित्तगरो का काम किया और कृष्णभराजजी 1937 म ही काँग्रेस मे सदस्य बन गय और पूरे जाश खरोंश के साथ स्वामी कुमारानन्द के माल गहन म राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधिया म लग गये । सततन घम वानज ब्यावर म प्रवच लेते ही स्टूडेंटस मूनिशन की स्थापना कर मचिव चुने गये और ब्यावर म राजपूताना एव सटल इडिया स्टूडेंटस काँफेस का सफन आयोजन किया जिनकी अध्यक्षता बम्बई के श्री क एक नरोमन ने की ।

22 मित्तघर 1940 के गिन ब्यावर के काप्रेम वापसप नामादर वाचनलय पर भण्ण घनिवाण के बाधम म कृष्णभराज ने जार जोर न "Up Up The National flag, down-down the Union Jack" के नारे लगाये । स्वामीय पुनिस ता गिरफ्तार बरने का भीरा खोज ही रही थी । पुनिस म प्रमुख विचार्यों नना श्री कृष्णभराज व श्री माहनराज जैन (बाली), को जो उस बक्त मनातन घम कविल ब्यावर म पकडे थे और जैन प्रोटेशन म रहत थ, कुछ घाप सहयोगिया के साथ गिरफ्तार कर दिया । जेन हाफन म इनक कमरो की तलाशी ली गई व कई कायज व बितावें जल बर ती गइ । श्री मोहनराजजी (बाली) को लो भीर रिहा कर दिया पर श्री कृष्णभराजजी पर हिंसेन घाप इडिया एज के तण क्लम 38 (1) तथा क्लम 34 (6) के तहत मुकमना चलाया गया, जिनम एक बष व कठोर बागवाम की सजा व बीस रपये जुमाना किया गया । घपान बरत वर सजा एक बष म घटावर 3 माह की बर दी गई । जेन न जन्मी कुमारानन्द व घाप कई रात्रनिक बनेन व कहां कृष्णभराज न एक गिन उन गिना का प्रमिद्ध गाना— नहा ररनी, नगी



रखनी सरकार जालिम नह्रा रखनी जोर-जोर स गाया । अग्रज जन मुपरिहेंडेंट नाराज हो गया और सबको काल कोठरी म बाद कर दिया । तबिन 1 जुलाई 1942 का इनकी जेल से रिहाई हा ग । स्वामी बुभारान द ने जापान म रह रह त्रास्तिकारी श्री रासबिहारी बाम के पास ऋषभराजजी को भेजने की योजना बनाइ थी, पर युद्ध की बिकट परिस्थितिया के कारण यह सम्भव नही हुआ । ऋषभराजजी पुन जनारण घा गये और मारवाड म उन दिना एन्वा रजनी एमम्बली के हान बाल चुनाव के सिलसिल म खान गये खनाब विभाग म क्लक की नौकरी करने लग पर 2 अक्टूबर 1941 को जनारण म गांधी जयती के उपलक्ष मे समा आयोजित करने व भादपु दन के जुम म उह जतारण के तत्कालीन हाकिम श्री अरुल जनीन बाजी न बलास्तमी का आदेश द दिया । नौकरी स छुट्टी पाकर जनारण म ही द्वाइयो की दुकान की पर 1947 म इनके पिनाजी के स्वगवास क पश्चात् व जायपुर मे ही रहने लग ।

महात्मा गांधी के निवाण के 12वें दिन जायपुर म गुलाब मानर पर 12 फरवरी को धाराजिन समा म गांधी सेवा दल नामक संस्था का गठन किया गया और सबकी मशारामजी शास्त्रा तुनसी रामजी राठी रणछोडदासजी गट्टानी धनपतजी मेहता सिद्धेश्वरजी माथी बमताराजजी मेहता सावतराजजी मण्डारी तथा ऋषभराजजी उम सस्था क प्रमुख कायकर्ता बने । फिर एक दिन हरिजन दिवस मनान के उपलक्ष म गिरनीकोट म समा हुई । हरिजना ने अग्रज हाथ स जलपान कराया । ऋषभराजजी रणछोडदासजी गट्टानी व दुनयादासजी राठी का नुद्ध मोड न घेर लिया और 'भगी है—डूर हू के नार लयाती हुई मोड पीछ पड गई । पुलिस न आकर मोड का नितर बितर किया पर माहेश्वरी समाज ने श्री गट्टानी व श्री राठी का और मुणो ता (धामवाल) क भाईया ने ऋषभराजजी का जन-बाहर कर दिया ।

इही दिना उनका सम्पक सिद्धराजजी डडग स हुआ जिहाने मानल व पाल सर्वोय्य केन्द्र की स्थापना की थी । उही की मलाह पर ऋषभराजजी न सर्वोदय व खादी सस्थाया मे काय करना स्वीकार किया और तब स धुन के धनी सादा-जीवन उच्च विचार की मूर्ति श्री ऋषभराजजी न धपना जीवन गांधीजी के रचनामक कापी—भादी प्रज्ञादादर भूतन धामदान व सर्वोय्य को समर्पित कर रखा है ।

अलग अलग हैं धम सभी के, देश धर्म हैं एक,
एक डोर मे गुथे हुए हैं जैसे सुमन अनेक ।



निडर जनसेवी श्री पुखराज परिहार

स्वर्गीय श्री पुखराजजी परिहार का जन्म धाम चण्णाद म 2 मार्च 1915 क दिन बालाजा छीया क घर हुआ था । प्रारम्भिक

शिक्षा गाव की पाठशाला म हुँ फिर व्यवसाय क लिय बम्बई गये । वहा महात्मा गांधी के नेतृत्व म काग्रम द्वारा भ्रमण जा रह स्वतंत्रता आन्दोलन की हलचला का दायकर इह भी प्ररणा मिला और वहा विभिन्न कायक्रमा म भाग लेन लग गये । एक बार दान्दरेल्व स्थान पर ताडपाड के आरोप म पुलिस न अग्रको गिरफ्तार किया और बम्बई स निकालित कर दिया । फलम्बत्प अग्र अग्रन गाव चाण्णाद म आकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की गतिविधिया म जुट गये ।

चाण्णाद ठिकाणा मारवाड क अधिकांशस्मृत ठिकाणा म म ही एक नही था, जागोरी जुलमा क कोठर प्रशासन क मामला म ना भ्रवल या और यहा आजादी की बात करन की काई हिम्मत भी नही करता था । किमाना पर मनमानी लाग-बाग व बठ-बगार लगी हुई थी । फसल का चौथा हिस्सा और ठिकान क बढ गावा म तीसरा हिस्सा लटाइ म बसूव किया जाता था । ममय पर लाटा न हान म किसानो की फसल लाटा (खलिहाना) म पडी-पडी बबाण होनी थी चारी हा जाती थी और कभी-कभी ता मरीच व रबा की फसल अग्रल वप बारिश हान पर भी लाटा म पडी हुँ मोग कर सड जाती थी पर लटाइ नही हाती था । लटाए का तकर प्रतिवप गावा म ठिकान के कारिदा व किसाना म लडाई हाना और गरब किसाना का भार ता पडती ही पर साथ म लाणा स्पय की फसल का मुश्मान भी हाता । पुखराजजी न इन हालाता का दायकर नियमानुसार लटाई बल पर हा इम हुन किसाना का मुगटिन कर आन्दोलन खडा किया । सयाग स उहा निना दबला निबामा थी माहनराजजी जिहान बाती म वकालत मुण की हा था न चाण्णाद ठिकान क 24 गावा क किसाना का चाण्णाद म एकत्रिन कर छड हिस्म म ही लटाइ करान का निश्चय किया धोग बाता म कानूनी कायबाही भी मुण की । बाती म उन मसय था वगार पुरानिन बड इमानदार व किसाना क दिनपा दानानाग बनकर आय थ । उन्हान बाबजूद ठिकान क भारी दबाव क रिवाज



मुकर कर एक छठ हिम्मे में लट्ठाई करवा ली। किमाना में अग्रार उल्हान की नन्व दौड़ गई।

चाणान् क कास्तकाग को चाणान् के तालाब क पानी का उपनाग ग्राम जनता के हित में हो स्त हेतु मी आंगोलन करना पटा बराकि चाणान् के ठाकुर मुकनसिंहजी व कुं विमनसिंहजी न्य तात्राव ग। अग्रनी व्यक्तित्व सम्पति प्रताकर स्वय क उपयाग म ही नना चाहन ।। पुखराजजी ने इस आंगोलन का नतुव किया और माण्टी निवासी स्वतन्त्रता यनानी फूलचन्दजी चाणना ने इस आंगोलन में मन्त्रिय सहायग दिया। श्री बाणना अब श्री होरालालजी शम्भुजी क नतुव क गठिन प्रथम मन्त्रिमण्य न स्वययत् शासन मधी ये ता स्वय चाणान्द पवारो और जनता के हित म आदश दिय। नटाण व तालाब की नकर हृद्य आंगोलना म स्थानीय किसान बायकना मधवी केमाजी चौधरी गणेशजी चौधरी पीरारामजी चौधरी नवलजी चौधरी माधकचन्दजी जन सोहनलालजी जन भूलाणजी वण्य माहनलालजी नाडा कुन्दमलजी सानार बागारामजी बाबवान तिलाकजी मुखार, हीरमिहजी हिंदूजी गीवल, भापारामजी मधवान, शिवनारासिंहजी, नेवारामजी घाघी तथा श्रीसिंहजा चिटुडा हेमजी भाटी—प्रनापणुग भीकमचन्दजी जन—बागलाव श्री पुराणमजी वण्यव—डाला हाजीबाजी—बिरामी दाजप्रचनच परिहार—बालरार्द नवारामजी कुम्हार—बालरार्द प्रान्त न प्रमुल रूप म सहायग देकर महस्वपूण भूमिका निभार्द। पुखराज जा परिहार के स्वययाम के बाद तालाब क मामले क अग्र बायीं म था म नूनमनजी समलानी ने ग्रामवासिया का नतुव दिया।

चाणान् ठिकाने के अत्याचारो के बावजूद मी आदालत वन्त र्ण। फन्मवचन चाणान् में एक बहुद किमान सम्मेलन मारवाड नाक परिपन् क त्वावधान म आयाजित किया गया। स्त मम्मलन का मधन न हाव न्ण क लिपु जागीरदारो म पूरा आर लगा दिया और गावा म ग्राम बाल लाग का गक लिया। फिर मी बाहर स आद नाकन्परिपन् क नताया न जागा का सम्बन्धित किया। फिर वाता जिन के कायकता सबधी रामप्रसादजी माधी रामप्रनापजी शर्मा माहनराजनी भूलच दजी मट्ट मुखराजजी डगा आदि न एक जुनस निवाना त्रिय पर जागीरदारी गुण्णे ने परस्वराजो की निमस श्री रामप्रनाप शर्मा गुण्णे के तिर पर गमीर चोटो श्रावी और अय कर्ष कायकता घायल हुये। इन घटनाया म जागीरदार और मी शानिन श्रा। लाग की डराना घमकाना मानपाट करना ग्राम वात हा ग।

इंो निना चाणोण क निवामी हिंदूजी मीन का जागीरदार क कारिणान न पट्टाल डालकर जिण्य जना दिया। इसस भारे क्षेत्र म भारी उत्तेजन और आश्रीय फन गया। इस नयम हत्याकाण्ड म

ठिकाने की प्रतिष्ठा को बड़ा आघात पहुँचा और ठाकुर मुकनसिंह चाणपुर म ही रहने लग। पुखराजजी पर जागीरदार ने कइ मुकट्टे बायर किये और नाना प्रकार स हेरान किया पर वे अन्तिम समय तक निडरतापूर्वक जन सेवा का काय करत रहे। इहू मधवी नाधुरामजी मिषा मधुराणमजी माधुर, पूमचन्नाजी विगनोई, परनरामजी मंदरणा, शकरलालजी श्रादि बायकताया का सहायम मिलता रहा।

श्री नयमान लोडा, लोड निवासी द्वाग लोड ग्राम म आयाजित राजनतिक-सम्मेलन म मारवाड लाक परिपद द्वारा मारवाड म उत्तराणी शासन की माग की गई थी। श्री पुखराज ने सन्त्रिय रूप म काय किया। वे चाणाद के 12 वर्षो से मी अन्धिक समय तक मरपच रहे और गाव मे पचायत मवन कया पाठशाला मवन, ग्राममवक मवन तथा चिटुणा व भाषू ण के विद्यालय मवन निर्माण क कई हितकारी विकास काय करवाये। अग्रने परिवार के जीवन यापन व बच्चा की शिक्षा की परवाह न करत हुए अपने आपको गावा के लागो क हिताय समर्पित करने बाडे पुखराजजी परिहार का लोग पीणिया तक याण करते रहने।



गतिशील सेनानी श्री शकरलाल कालानी

शकरलालजी कालानी कीति शेष हो गये। उनका दहिक शरीर जाला रहा, पर देवकी कला का एक एक चप्पा एक एक इमारत, एक एक व्यक्त म व जीवित है। वे एक से अन्व हो गये। आपका ज म ग्राम धवत्रा-बला जिला पानी म श्री हरिदव कालाना क पर हुषा या। शुरू म श्री सुखदेवजी वण्यव की पाठशाला म अजर नाग सीला बाण मे पठित धयनाय की पाठशाणा म पडे। कालानी जी प्रखर बुद्धि थ। महाजनी हियाण किताय म व बडे पट्टे थे। जिन क विभिन्न गावा की तरह देवकी कला म भी आजाणी क पूव जाधोरो प्रया थी और शिक्षा चिन्त्रिणा आमीण विकास की कल्पना तक असमव थी। दवा णरु मान भाड पूव अचविश्रवाम तव ही सामित थी। जीवन मरण भाय क म्रोम थे। एम वम पीटू वातावरण म मी हुदु दस तरह के लोग क जिण्टान अग्रन निज क



संस्कारों में सामाजिक बुद्धिमानों और सामंतों व राजाशाही व्यवस्था के विरुद्ध टकराकर प्रकाशपुत्र बनने का बीड़ा उठाया। एक छांटे से ठिकाने के छांटे से गांव देवली उदावतान में प्रकाश की बिरह के रूप में स्वर्गीय शंकरलालजी थे। उनका काय क्षेत्र धरणी जन्म भूमि देवली ही बनी और उनकी इहलौला भी इसी जगह पूरी हुई।

सन् 1940 में ही देवली कला में मारवाड लोक परिषद् की थापा मुली। शंकरलालजी लोकनायक जयनारायण व्यास व मयक में धारण। 'यासजी साजत, देवली, चण्डावल थाया-आया करते थे। मारवाड लोक परिषद् की प्रेरणा से ही शंकरलालजी ने जागीरी लाग-बागा के विरुद्ध एक तरह से बगावत का भण्डा ही उठा लिया और सामंतों प्रथा के विरुद्ध जीवन भर मयक किया। धारण ठिकाने में बीसा इक्कीसा लाग खत करते की भ्राजण उठायी, जिसने लिये बाट में धारण मुकदमा जीता। परिणामतः ठिकाने की धारण इसने लिए राजीनामा करना पडा और इस प्रथा का अंत हुआ। इसी तरह धारण ठिकाने के गावा में किसी के घर विवाह के मयक ली जान वाली कासा लाग' का भी डटकर मुकाबला किया और उस बंद करवाया।

धारणसमाजी सुधारक के रूप में साथ धारण राजनीति में प्रवेश किया। श्री व्यासजी भीठालालजी काक। मांगीलालजी धारणशान बलदेवराजजी नाट्यरामजी मिथा धारण के धारण निवृत्त सहयोगी थे। सन् 1942 में चण्डावल ठिकाने में दृष्ट लाग परिषद् के कायकताओं पर निमग्न अत्याचार के विरुद्ध छेड़े गये धारणदालन में धारण मन्त्रिय माग लिया था।

धारण ठिकाने के विरोध के वाकजुद भेज में पहला विद्यालय धारण गांव के 'गावा' के बाड़े में स्थापित किया। मारवाड नरेश उम्मासिंहजी के शासन के दौरान जब अवाल पडा ता धारण गऊजाला समिति का गठन किया।

मारवाड लोक परिषद् के धारणदालनकारी दिना में धारण कायकर्ताओं की खुलकर धारणिक सहायता का। सन् 1947 के आते ही धारण और भी धारणिक सन्त्रिय हो उठे। धारण के लिए धारण शिक्षा, मन्क डाकघर पचायत, चिकित्सालय धारणधुनिक जीवन की सभी सुविधाएँ जुटान में लग गये। उनक सपना में देवली कला को एक धारण स्वावलम्बी धारण धराने की कल्पना रही। के देवली कला धारण पचायत के सदा सत्परक धुन जात रहे तथा सग ही धारण के धारण काय में लगे रहे।

रचनात्मक सहयोगी

श्री मुञ्जोलाल विजयवर्गीय



श्री विजयवर्गीय का जन्म

11 दिसम्बर 1920 को जाधपुर में श्री सीतारामजी विजयवर्गीय क

घर हुआ था। धारणको सन् 1935 में श्री भवरलालजी सराफ (जाधपुर) में सवप्रथम स्वतन्त्रता सभामें भाग लन की प्ररणा मिली। धारणने सन् 1935 से 1940 तक पाली तथा जाधपुर लना में दश क स्वतन्त्रता धारणदालन और राजस्थान की स्थापना में सन्त्रिय योगदान दिया। इस दौरान धारण मारवाड लोक परिषद्, जाधपुर व पाली प्रजामण्डल बीकानर के सन्त्रिय सदस्य के रूप में देशी रियासतों में लाग बाग बड बेगार, जागीरी प्रथा धारण के विरुद्ध धारणदालन में भाग लेत रहे। उत्तरदायी शासन की प्राप्ति तथा धारणजादी के बाद राजस्थान के नव निर्माण में कायेस क सदस्य के नाते महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जाधपुर में धारणने सवश्री भवरलालजी सराफ मानमनजी जैन धारणमयलजी जन जय नारायणजी व्यास धारणधुनिकजी विष्मा, रणछोडदासजी गृहानी रामप्रसादजी गांधी, रामप्रतापजी शर्मा, धारणचलेश्वरजी शर्मा, धारणगनलालजी चौपामनीबाला व धारणपुरातमदासजी नयर धारण के मागदशन में काय किया। पाली चण्डावन गूदाज चाणोद, खरवा धारण जागीरा में बड बेगार लाग बागा को खत करवाने में धारण भरपूर योगदान किया।

28 मार्च, 1942 क दिन चण्डावन में उत्तरदायी शासन दिवस के अवसर पर एक सम्मनन परिषद ने धारणसाजित किया। जागीरी गुण्डों में कायकताओं पर हमला किया लाठिया व बत्ता में। उमम धारणको भी चांटे धारणी। सम्मलन के प्रमुख नताधारा का गिरपतार कर लिया गया। इससे धारणालन और भी जार पकड गया। तोपी ने मारवाड में तोड फोड बम्ब काण्ड धारणजनी जमी घटनाग करके नताधारा का जन-समथन द्वारा सम्बन् प्रदान किया। इन सभी घटनाधारा में धारण प्रत्यक्ष और गुप्त रूप से धारणान दिया। सन् 1944 में मारवाड में जगह जगह समाए कर धारण काय कर्ताओं का सन्त्रिय करके धारण दालन चलाते रहे।

धारणन कूलच-दजी बापना रामप्रसाजनी व गांधी महाधरजी धारणराव के मा न मिलकर पाली लोक-परिषद् व कायेस की धारणधारा



जागरूक संगठक
श्री काशीराम गुजराती

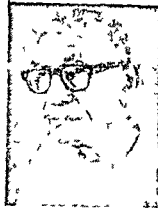
पाली के श्री काशीरामजी गुजराती का जन्म 26 अक्टूबर 1920 का श्री मागीसाल महानर

क घर हुआ। प्रारम्भिक पढ़ाई क सुरत बाद ही जागपुर दरबार क हाउसहाउड विभाग म उनका सन् 1938 म नौकरी मिल गई और दो वर्ष बाद ही सन् 1940 म धरपृथ्वता विरोध क कारण नौकरी म हटा दिय गय। महात्मा गांधी द्वारा चलाय गय दुःखाद्युत विरोधी ध्यादानन स इहू प्रेरणा मिली और य भी हरिजनताद्वार के रचनात्मक कार्यों स जुड गये। मारवाड म लोक-परिषद् क नेताओं म इनका सम्पर्क हुआ। वगार प्रथा तथा हरिजनता धरुमुचिन जाति क नाम म जागृति पदा करन क सिलसिल म जागीरदार विसलपुर द्वारा इनक विच्छेद मुकदमा चलाबर इहू सन् 40 व 43 म दो बार मजरा दी गइ और इहू जल जामा पडा। इम ध्यागतन क दौरान इनका काय धन मुच्यत विसलपुर भालामण्ड निमाज रोह्ट गुणज नरवा धादि जागीरी गाव रह जहा इ हान सभा मम्मलन करक लाग म जागृति पदा की।

सन् 1944 म पाली म प्रथम राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुआ। उमय काशीरामजी न सक्रिय रूप स भाग लिया। 23 नितम्बर 1945 का पाला म पण्डित जवाहरलाल नेहरू जन शक्त क दुला एव भीमती नदिरा गाजी क साथ पवार तब भी स्वयं मक्का व सभा की पूरी व्यवस्था इहान ही का।

मारवाड लोक-परिषद् द्वारा मारवाड एमम्बजी (सत्ताहकार बाट) के चुनाव का जब विरोध किया गया तब काशीरामजी न ध्यापक दौरा कर विरोध म समन्वय आयोजित का।

छात्राग्ने क पश्चात् काशीरामजी पूणन धरुमुचिन जाति व जन जाति, विशेषकर हरिजन महानर समाज क मुखार हेतु रचनात्मक काम म लग गय और शराबवन्धने सामाद्वार कर्णे, मोमर, किन्नल-नर्ची पर राक तथा मिथा प्रचार क कार्यों म लग गय। छात्र मा इनका अधिकांश समय एम हा कार्यों म व्यनता हाता है।



तत्सवी शिक्षक
डॉ० दयालसिंह महलोत

डा दयालसिंहजी महलोत एक शात पर मजग व प्रादय पतिव्व क धनी है। ये पेशे स ता शिक्षक

हैं ही पर इनका स्वयं का जीवन भी एक श्रेण्यादायी शिक्षक का है जिसन अनेकानर लोगों म सादा जीवन उच्च विचार का बीजारोपण किया। सन् 1932 म इहाने गाम चण्डवल म एक अध्यापक क रूप म जावन प्रारम्भ किया और मयोग की बात है कि उसी क माय व प्रभावित हुए महात्मा गांधी द्वारा चलाय जा रह राष्ट्रीय ध्यादोलन स। विशेषकर उनके रचनात्मक कायक्रम स। इहान मुस्य रूप स छावी, प्रह्लाताद्वार शिक्षा प्रचार धादि म रुचि लेकर गावा म काय शुरू किया।

उ ही दिना चण्डवल ठिकाना धपन जोर जुल्मा के लिए प्रसिद्ध का। बिमला क साथ लाटा कूला व लाग बाग बनूल करन म बड़ी ज्वालिया की जाती थी और वगार के कारण ता सभा परधान थ। दयालसिंहजी गावा म राष्ट्रीय विचारधारा का प्रचार करन जात तब लाग इहू धपनी मुसोबतें सुनात। एस वक्त लाग का सामती जुल्मा स मुक्ति दिसान क लिए व लोभा को वगार न निकालने तथा लाग-बाग न देने का निर्देश देते और उहू सगठित हाकर जागीरी जुल्मा का मुकाबला करन हेतु प्राग्माहित करत। चण्डवल के ही प्रसिद्ध स्वतंत्रता सनानी मागीसालजी ध्यालोशन क सक्रिय हाकर धा गलन म नूद पडन के कारण इस काय म डा० महलोत का बडा बल मिला। मागीसालजी गांधीजी द्वारा चलाय गय धा दानन म मध्यप्रस्था की जस स सजा बाटकर लौटन ही मारवाड लोक परिषद् क साथ जुडकर जन जागृति के काय म जुट गय व।

दयालसिंहजी साना ता पहनत ही थ, हर वक्त गांधा-टापी भी मगात थ। उन दिना जागीरी गावा म ता नया रालसा क गावा म भी गांधा टापी पहनता एव हिम्मत का काम धा और लाग धूर धूर कर दवत थ। चण्डवल ठाडुर न गांधी टापी पहनन पर पानेगी लगत था धा। जागीरी मुडा न जान म मारन तब का पमशिवल की पर डा महानन धपनी धान पर छड रह धोर गांधी टापी पहन कर हा मनन यहा तब कि रावन म भी जान थ।



4507

इनके कार्यों में श्री मागीलालजी 'श्रीलीशान' के भलावा सब-
थी छलारामजी हीरागर, नयमलजी मूथा, पूरखमलजी माहटर,
राममुखजी पुरोहित आदि कई सज्जिय कायकर्ता थे, जो सहयोग
करते थे। अतः चण्डावल जन-जाग्रति की दृष्टि से मारवाड में एक
केन्द्र बन गया था। दिनांक 28-3-42 को उत्तरदायी शासन की
मांग के समथन में विशाल सभा हेतु मारवाड लोक परिषद् द्वारा
चण्डावल को चुना गया था। 27 मार्च को ही जागीरदारों ने 250
300 घुडसवारों व लाठी, बन्दूक व तलवारधारियों को इकट्ठा करके
पूरे गांव में आतंक फैला दिया था। बाहर के गावा देवलीकला,
करपावास, कण्डालिया, बगडी, सोडिया सोजत आदि से आ रहे
सकड़ा लोगो को गांव में आने ही नहीं दिया गया था। ऐसे माहोल में
भी दयालसिंहजी अकेले ही समास्थल पर आकर बैठ गये। ठिकाने
के धानेदार ने इन्हें वहां से हटाने का प्रयत्न किया, पर ये हटे नहीं।

पर, जागीरी गुण्डा को तो आतंक जमाना ही था उहान सभा
के सयोजक भागीलालजी श्रीलीशान व राममुखजी पुरोहित, जो
मारवाड में जाय हो, जयहिंद आदि नारे लगाकर सभास्थल
की ओर बढ़ रहे थे, पर लाठीचार्ज कर दिया। राममुखजी
को तो उनके घर में घुसकर भी पीटा गया। उनकी पसलिया व
कई हड्डिया टूट गईं। मीठालालजी 'बाका' व मागीलालजी
'श्रीलीशान' सहित 20-25 कायकर्ता बुरी तरह घायल हुए, जिन्हें
पीपलिया के सेठ श्री प्रेमराजजी बोहरा ने अपनी मोटर से
इलाज के लिए जायपुर भेजा।

डा. दयालसिंहजी जोयपुर से प्रकाशित होने वाले 'प्रजासेवक'
अखबार में नियमित रूप से लेख लिख कर लोगों में जाग्रति पैदा
करने में लगे रहे। उन्होंने राणावास की प्रसिद्ध जन शिक्षण संस्था,
मरुपर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी एव शांति विद्या मंदिर, बिठौडी
आदि कई संस्थाओं में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य करके इन
संस्थाओं का बुन्यासपावक संचालन किया है और अपनी भी जैन
शिक्षण संस्था, गुनारामसिंह में सवारत है।

केवल 32 वर्ष की आयु में ही डॉ. गहलोत की घम-पत्नी का
स्वगवास हो गया। तभी से इन्होंने शीलव्रत धारण कर अपना जीवन
को सेवा-न्यायों से जोड़ रखा है। महात्मा गांधी के प्रति इनमें
अनन्य श्रद्धा है। पिछले 50 वर्षों से इन्होंने मित्र का स्वभाव त्याग
कर रखा है। 35 वर्षों से नमक व 32 वर्षों से शक्कर का उपयोग
नहीं कर रहे हैं। इस बढ़ावस्था में भी इनके जीवन में अद्भुत
स्फूर्ति है। प्राकृतिक चिकित्सा में ही विश्वास करते हैं और भ्रया
को यही सलाह देने हैं। डा. गहलोत के व्यक्तित्व एवं दृष्टित्व में
'साधु जीवन, उच्च विचार' का अद्भुत मेल है।



सद्यशील व्यक्तित्व श्री प्रेमराज मेहता

□

सर्वगाम्य प्रेमराजजी
मेहता निवामी लीमल, एक
बड़े ही प्रभावशाली 'य
क्तित्व के धनी थे। उनका
जन्म खीमेल के प्रसिद्ध मेहता

खानदान में हुआ था। वस तो ग्राम खीमेल चाणाद का जागीरी
ग्राम रहा है पर यहाँ के मेहता परिवार ने जागीरदारों की
अधीनता कभी स्वीकार नहीं की और वर्षों तक सद्य करत रहे।
प्रेमराजजी मेहता का राजनीतिक जीवन सामंत विरोधी गति
विधियों से ही प्रारम्भ हुआ।

महताजी का बहुत बड़ा काराबार-व्यापार रानी स्टेशन पर
था, जो उस जमाने की एक बहुत बड़ी मण्डी थी। महताजी अग्रि
काश समय वहीं रहते थे और दूर दराज गावा से ग्राम वान
व्यापारिया एव किसानों से जीवत सम्पर्क बनाय रखते थे। गावों
में इन लोगों पर होते जागीरी जुल्मा की शिकायतों का व ध्यान
पूवक सुनत और अधिकारियों को लिखत और अखबारों में समाचार
भेजते। इनकी लेखनी में बड़ी शक्ति थी और शरीर में बल भी था।
इनसे गरीबों पर होते अत्याचार देखे नहीं जाते थे। व स्वयं बड़ी सं
बड़ी जोखिम उठाकर भी उनकी मदद को चल पड़ते थे। इनका
जीवन में अन्नक ऐसे सामट्यक प्रसंग प्राये हैं जब उहान अपनी बुद्धि
और शरीर-बल से गरीब और असहाय लोगों की रक्षा की है।

मेहताजी पूरे गाडवाड क्षेत्र में प्रयत्न ही लाकप्रिय थे।
वे वर्षों तक रानी स्टेशन के सत्य रह और वान में लीमल 'याय
पचायत के अध्यक्ष भी चुने गये। उनकी 'यायप्रियता और फमला की
गूज प्राज भी गावा में सुनायी पडती है। महताजी लाक-परिषद् के
वक्त से ही राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े रहे और बाली कायम कमिटी
के वर्षों तक अध्यक्ष रहे। जिला कांग्रेस का प्रतिनिधि और पदाधि
कारी भी जीवन-प्रयत्न रहे। लीमल और विद्यावाडी के मध्य ही
इनका 'प्रिय दृष्टि पाप नामक बरस है यही इनका वर्षों तक निराम
स्थान रहा है और यहाँ दिन रात लोग इनमें सनाह नन मांग
दशन प्राप्त करन और भ्रयाय में विरुद्ध सहायकों की प्रायना करन
आते थे। उनका यह निराम-स्थान वास्तव में एन गुनी लाक
प्रदानत का म्प विरा रहता था। प्रतिनिधि-अन्तर का सत्कार ता
इह परम्परा से मिल हुए थे।



प्राजादी के पश्चात् भी जागीरी जुम्मे व शापण व गेजटाव चल रहे थे। कांग्रेस व कांग्रेसतांत्रिका का प्रामांभ हर तरह से इन सामंती तत्वा द्वारा परधान किया जाता था। भूडे मुकद्दमे बनाकर उच्च जलील करने को कोशिश की जा रही थी। ऐसे ही एक काय कर्ता फालना गाव के चिमनारामजी माली थे। एक रात बेरे से घर प्रात समय रास्ते में जागीरी गुण्डा ने इन्हें बुरी पीटत-पीटते मूच्छिन कर दिया। एक धपत्ति में चुपचाप साईंनिल घर जाकर महताजी को उनके फाम पर इतला दी। तत्काल रात में बड़े ही धरमनी बलगाडी लकर महताजी फालना गाव के लिए रवाना हो गये और मूच्छित बड़े चिमनारामजी को उठाकर रात का ही निग्रय हाकर मोहनराजजी के पास वाली पहुच गये ताकि इलाज की और ग्रप राधिया को पकड़ने की शीघ्र व्यवस्था हा सक्। एस निर्मात्र और हिम्मती थ श्री प्रेमराजजी महता जिहाने जीवन-पयत जुम्मा व शापण के विरुद्ध प्रातताईयो स सपथ किया।

देश सेवा को समर्पित श्रीमती सुशीलादेवी गोयल



श्रीमती सुशीलादेवी गोयल का जन्म 7-6-25 को लिल्ली में हुआ था। इनका विवाह बाल्य में ही श्री वजरगलालजी गोयल के साथ हुआ गया। श्री गोयल गांधीजी के स्वराज्य प्रान्तेलन से प्रभावित थे और सक्रिय रूप से काय करते थे। उन्हीं की प्रेरणा से सुशीलाजी भी प्रान्तेलन से जुड़े गी। फिर तत्कालीन दशो राज्य व प्रथम नेता श्री जयनारायण यास श्री हरिभारत उपाध्यय एवं श्री कनैयालालजी लादीवाला के सम्भव से मनम काफी उत्साह जगा। श्री गायन पू गांधीजी की रचनात्मक सस्था राजस्थान चर्चा सप से जुडे गये और जयपुर में काय करन लग। जयपुर प्रजा मण्डल द्वारा सन् 1939 में चलाय गये प्रान्तेलन में सुशीलाजी को प्रथम बार तीन माह की सजा हुई। जैन की यातनाप्राप्त व कठोर जीवन व काररवा व बीमार हा गये और जल में ही उन्हे गमपयत का कष्ट सहना पडा।

मुशालाजी के पति लादी काय स ही माजतरुड प्रा गय और काय करन लग। यहाँ इनका सम्पक स्थानीय कायकर्ताओं-सबश्री हरिस ईन्दा बिबर मीटालालजी काका जबरबन्दजी मीटालालजी काठेठ कुमचन्दजी बाचना प्राप्ति से ता हुआ ही पर क्षय के प्रतिबद्ध गांधीवादी कायकर्ता श्री हरिभाई बिबर की धमनाली थीमती महिमाभा बिबर स भी उनका निरुद्ध सम्पक हुआ और पाना न मिलकर मारवाड लाक-परिपद् के तत्वावधान में गाव-गाव जाकर

समाप्त करके महिमाभा में जागृति पण करन का काय प्रारम्भ किया। साजत बगडो, चण्डावल पाली प्रादि स्थाना पर इनका सगठनात्मक काय इतना प्रभावी रहा कि सरकार परेशान हो गई।

2 नवम्बर 1941 का सोजत में इनके प्रयत्ना में एक विराट समा का प्रायोजन हुआ जिसमें मारवाड लाक-परिपद् के नेता जयनारायणजी व्यास मयुरागतमो माधुर द्वारकानामजी पुराप्ति व धनपतिराजजी भण्डारी (बकील माजत) के प्रभावशाली मापण हुए और मारवाड एमम्बली एडवाइजर बोड के चुनाव का विरोध किया। श्री माणकलालजा बकील जा स्वय एम्बेन्दी चुनाव में एक उम्मीदवार थ ने समा में ही खडे होकर घोषणा की कि व पक्षी अधिकांशहीन साम ती तत्वा में बरी एमम्बली के मन्थ्य नहीं हाना चाहते और उन्होंने धरपनी उम्मीदवारी वापिस न ली। सठ बस्ती मलजी गानछा न लोकनायक ध्यास का प्रपन गन स निवातकर डेड तोले सोने की चन मेंट की जिसे श्री व्यासजी नसमा में ही नीलाम कर दी और श्री रामप्रसाजी गावी (पाली) ने उन तीन सौ एक रुपया में खरीद लिया।

इसी प्रकार बगडी व पाली की समाभा में भी महिमादेवीजी व सुशीलाजी के प्राजस्वी मापण हुए और मारवाड लाक परिपद् द्वारा चलाये जा रहे सत्याग्रह के लिए महिलाभा को तयार किया। बगडी की समा में मीटालालजी काठेठ, माधोलालजी क्रांतिकारी (निमाज) व मदनराजजी जाशी व सुशीलाजी के प्रभावशाली मापण हुए। सुशीलाजी ने पुरुषपय को संभावित करते हुए कहा कि यदि व मारवाड को स्वतन्त्रता के लिए सत्याग्रह करने से डरत है तो उन्हे बुडिया पहनकर घर में बठ जाना चाहिये महिलाए जेल जाने को तयार है।

28 मार्च 1942 को हुए चण्डावल लाठी प्रहार में भी सुशीलाजी माधोलालजी प्रालीशान का बचाने में बुरी तरह धायल हा गय। उस समय सरकारी अधिकांशियों का सब लाक-परिपद् के कायकर्ताओं के विरुद्ध रूठा ही था पर सरकारी प्रसप्ताल के डाक्टर भी नितने हृदयहीन बन जाते थे, इसका उदाहरण चण्डावल काण्ड के घायला की मरहमपट्टी करन में व देवने में धायला का लाने के बाण्डे घट की देरी करना और फिर यह कहकर टाल ग्ना कि इनका इनाज घटां नहीं हागा, इन्हें जोधपुर ले जाया, स ता मिला ही पर इसमें भी मिला जब मुशालाजी का एक बच्चा खलत खेलत घर की छन पर स गिर पडा और उनके सिर में चाट प्राई। सुशीलाजी उन तत्काल साजत प्रसप्ताल में ले गयी। वहा डाक्टर न यह कहकर दलाज करने से सप मना कर दिया कि लाक परिपद् के कायकर्ताभा का सरकारी प्रसप्ताल में इलाज नहीं हो



सकना, जाया और पहल का तरह शिकायत करो। चण्डावल लाठी काण्ड के धायरा की मरहमपट्टी न करने के कारण इसी डाक्टर की शिकायत की गयी थी। सुशीलाजी का सारा जीवन विपम आर्थिक कठिनाइयां से भरा गुजरा हूँ और पति के स्वगवास के बाद तो य धनना व धनने परिवार का भरण पोषण बड़ी कठिनाई से कर पा रही हूँ। लेकिन, आज भी उनम धनार उस्ताह व लगन है देश के लिए काम करने की प्रसूयता निवारण व खादी प्रचार के कार्यों में भी व गहरो रचि लेती रहती है।

जैन मानमलजी जैन आदि का साथ क यहा भाना जाना लगा रहता था। पूरे पाली में साथक द्वारा ही मीटिंग आयाम एव साथ व्यवस्था की जाती थी। ब्यावर म हुए मत्याग्रह प्रादोलन म साथन भाग लिया था। सन् 1930-40 व 1942 क आोलन म साथ नून रूप स सक्रिय रहे।

सापन काग्रेस के 1931 के कराची प्रविशेशन म जनारायण जो ब्यास व उनको पार्टी के साथ भाग लिया। उसी दिन तीन चार बजे ट्रेन से उतरन पर जब साथको समाचार मिला कि शहीद भगत सिंह को फांसी दे दी गई तो साथ भी साथो लोग क साथ मोक जुलूस म शामिल हुए। उस जुलूस का दश्य बहुत ही हृदय द्रावक था।

अगस्त 1942 के भारतीय राष्ट्रीय कांश्रेम के बम्बई अविशेशन में भी साथने भाग लिया था। 15 अगस्त 1947 को जब साथने बम्बई म देश की आजागी की घोषणा सुनी तो साथकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उस समय का महान् विजयोत्सव लोपो की अति प्रसन्नता की ही अभिव्यक्ति था।

देश की आजादी के आदोलन म भाग लेना एवं ईमानदारी से व्यवसाय करना साथने आयसमाज के सम्पक और महापुरुषा की जीवनिया पढकर सीखा। स्वतंत्रता आदोलन क साथके साथ मूल चढकी मट्ट रामप्रसादजी गांधी वल्लभदासजी अराडा नोतन मलजी ब्यास फूलचढकी बाफना आदि लागो के साथ किया।

साथको दश की आजादी के समय कई उम्मीदें थीं मगर बाद में साथने जो कुछ देश एव काग्रेस पार्टी क होते दना उसम साथको काफी निरासा हुई इसलिए साथने 1950 के बाद भारी मन से साथने साथका सक्रिय राजनीति स प्रलग कर लिया।

साथने राजनीतिक क्षेत्र के साथ साथ ममाज सुधार एवं साथ रचनात्मक कार्यों का सचालन भी किया। साथने पाली म आनन्द आश्रम का सचालन किया व साथसमाज क सक्रिय कार्यकर्ता रहे। सामाजिक सुधारो म साथ प्रवणी रह। प्रयां प्रया साथने प्रया ही स्वर म बलम की। इसके अलावा चूडा प्रया का विरोध निरक्षरता निवारण, जातिवाद का विराध आदि समाज सुधारो म साथने प्रगसनीय साथ किया।

दश की सवा करन क लिए 'साधार म क'टाल रट म माल बेचन और बातावाजादी नहीं करने का साथन न्ड निश्चद किया था, ताकि लोग का उचित मूल्य पर वस्तुएं मिन मयें। साथन इसी उद्देश्य से ब्यापार शुन किया और साथने परिवारन न भी उसी परिपाटी का बनाए रमा है। आज पाठी के बाजार म साथ परिवार की प्रतिष्ठा का मूल आधार यही है।

कमनिष्ठ व्यवसायी श्री जेठमल राठी



पाली जिले की माटी ने न कवल क्त यनिष्ठ साहसी, देशभक्त और स्वतंत्रता-सेनानी उत्पन्न किये हैं बल्कि स्वाधीनता-संग्राम म सक्रिय भाग लेने क साथ-साथ व्यवसाय में ईमानदार रहने वाले कायकर्ता भी उत्पन्न किये। इस दृष्टिकोण से श्री जेठमलजी राठी पाली जिले क स्वतंत्रता सेनानिया म अग्रिम पक्ति क जन-नायक हैं।



जेठमलजी का जन्म श्री चतुभुजजी राठी ने घर मगरसर सुदी 1 सवन 1965 को पाली म हुआ था। साथने हिन्दी उपाश्रम में महाजना का प्रारम्भिक अध्ययन किया। पाच वष की उम्र में ही साथने पिता का देहात हो जान से साथ आग अध्ययन नहीं कर पाय। सन् 1921-22 म अस्तहयोग आदोलन एव स्वदेशी आदोलन के दौरान बम्बई में विदेशी माल खरीदन एव बेचने वाले व्यापारिया क यहा घरणा दिया जा रहा था बम्बई के गैरु बाहु द्वारा विदेशी मान से भरे टुक को जाने नहीं देन और उन के द्वारा टुक के सामने राड पर लो जाने से माल से भरा टुक उनके ऊपर से निकाल लिया गया। गैरु बाहु को निमम हत्या का समाचार सुनकर जेठमलजी का बडा आघात लगा। उनके पश्चात् साथ सक्रिय राजनीति म आ गय और स्वतंत्रता आदोलन म बूद पडे।

मालवाड लोक-परिपद म साथ प्रारम्भ स ही सम्पत्त रह। जोधपुर क मता जनारायणजी ब्यास अचलखरजी, गणगीलानजी ध्यास, भवरलालजी मरांक, दगनलालजी चौपासनीवाल अमयमलजी



प्रापने अपने साथियों के सहयोग व जनता के प्राथिक सहयोग स पाली म गांधीजी की प्रतिमा स्थापित करवायी और प्रापने ही पाली के युव बटला का नाम बदलकर गांधी बटला करवाये। प्राप ईमानदारी से श्वयंसाय करते थे किन्तु क्रमज प्रापके घर की प्राथिक स्थिति बहुत ही कमजोर हो गई थी। उस समय (सन् 1950 के लगभग) पाली के तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री मनोहरलाल न उम्मा मिल को भुझा दिया कि मिलस जनता को बटोल दर पर नपडा उपनय करवाये। उसने बाद पाली मिल के सेस मनजर वालमुकदजी तिप्ची ने निश्चय किया कि मिल को रिटेल शाय खोली जाये। उस रिटेल शाय का काम जेठमलजी को सौंपा जाय, क्योंकि प्राप ईमानदार हैं एव बाला बाजारी करने वाले नहीं हैं। रिटेल शाय का बाय प्रापने दुबलता स समाल। परिणामत प्रति दिन पाली एव दूरदराज न प्रामोए क्षेत्रों के लगभग आठ सौ से एक हजार तांगा को सठठा खादी एव प्राय किस्म के कपड का बितरण होने लगा। इन जन संवा स प्रापको व सामाजित उप मानाया का प्रति प्रसन्नता होती थी। रिटेल शाय के सफल संचालन से प्रमद होकर मिल वाला ने प्रापको प्राय व्यापारिया के साथ मिल का प्रभिकृत व्यापारी बना दिया।

1951-52 के लगभग पाली जिले के तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री मीनन ने भारत सेवाक समाज की पाली म शाखा खोलने के लिए मीटिंग बुलाई। उस मीटिंग म सोचा गया कि पाली म भारत सेवाक समाज के बाय को जेठमलजी ही प्रभुई तरह से संचालित कर सकते थे। सब प्रापने इस बाय हेतु अपनी स्वीकृति दी। सन् 1952 सादडी म पूसबाजी बापना एव सोजत म डाक्टर अभिन मनमलजी मेहता ने नतुल्य मे इसकी शाखा खोली गइ।

1984 म पाली मे सच्चे भारत के सम्पादक 1 पत्र के विमोचन के समय देश के तत्कालीन पयतन उपमन्त्री श्री जगज गहलोत ने हाथा प्रापको पाली के सर्वथेक नागरिक का पुस्कार प्रदान किया गया।

जागरूक मागदुष्टा श्री सुमेरराज डागा



मारवाड लोक-परिषद् के विधिवत् गठन के साथ ही सन् 1939 मे पाली परगना लोक-परिषद् का गठन हुआ। श्री सुमेर राज डागा एम ए एल एल बी इस नमटी के प्रथम अध्यक्ष चुने गये। हरीकृत तो यह थी कि अपनी बकालत की पढाई के दौरान

ही राष्ट्र की आजादी हेतु लडे जा रहे आंदोलन म इनकी सक्रिय भागीदारी थी। पाली मे प्राति ही इह सक्रिय रूप स बाय करन का मोका मिल गया। पाली परगन मे लोक-परिषद् के डागाजी प्रथम सदस्य बने और लोक-परिषद् का कार्यालय खोसकर उन्होंने बाय शुरू कर दिया। इनके प्रारम्भिक सहयोगी थे रामप्रसादजी गांधी और स्वर्गीय मुलच दजी मट्ट।



कांग्रेस कार्यकर्ताओं की मीटिंग मे श्री सुमेरराज डागा।

सबप्रथम इन्होंने गांवो म लोक परिषद् के सदस्य बनाने और उसकी शाखाएं खोलने का बाय हाथ मे लिया। प्राय परगना गुन्ोज, डेण्डा लाम्बिया म प्रथम वप ही शाखाएं बाय करन लग गइ। इन प्राय म उत्साही कार्यकर्ता मोतीलालजी सोनी (खरवा) राम प्रतापजी शर्मा व मगारामजी जागिड (शुदीज) बालूरामजी (सांविया) आदि ने जो पहले से ही राष्ट्रीय आंदोलन स किसी न किसी रूप से जुडे हुए थे। लोक-परिषद् के तत्वाधान मे बाय शुरू कर दिया। इसी दौरान मारवाड लोक-परिषद् के नेता सबधी जय तारापणजी व्यास मयुरादासजी माधुर रणछोडदासजी गट्टानी, भवरलालजी सरफि प्रादि का आना-जाना बापनी हो गया। पाली म मारवाड लोक परिषद् की कार्यकारिणी की बढक हुई। इनमे श्री डागाजी कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये। इस समय द्वितीय विश्व युद्ध प्रापनी चरम सोमा पर था और आवश्यक वस्तुओं की कमी तथा महंगाई के कारण लोग बहुत परेशान थे। डागाजी ने गांव गांव म दौरा करने लोगा की सगठित किया और उनसे दुख दद दूर करने का प्रयास किया।

उस जमाने मे पाली मे नगरपालिका के सदस्य जाति के प्राधार पर चुने जाते थे। शास्त्रव म एक प्रकार से नामजदगी ही होती थी। सबप्रथम उन्होंने इस प्रणाली के विरुद्ध प्रावाल बुलद की प्रततो गत्वा वयसक मताधिकार के प्राधार पर चुनाव प्रणाली स्वीकृत हुई।



सन् 1940-41 में पाली में महाराजा श्री उम्मेद मिल्स की स्थापना हुई और जनता में के अनुसार सेठ श्री बागडजी को 20 वष के लिए मोनोपोली (एकाधिकार) प्रदान की गई। इस के विरुद्ध भी प्रचार कर आंदोलन सजा किया गया, ताकि पाली का प्रीयो गिक विकास शीघ्र हो सके। इन दिना गांधी में किसानो पर सामन्ती जुल्मो की कोई सीमा नहीं थी। किसानो के साथ गरीब बग, विशेष कर अनुसूचित जाति व जन जाति के लोगो पर बैठ-बेगार इतनी थी कि पेट भरना भी मुश्किल था। जरामपेशा लोग भील, मीणा, मोरी, बावरी भादि की रोज हाजरिया होती थी। डागाजी ने लोक परिषद् की नीति के अनुसार इनको संगठित किया और इहे राहत दिलाने के प्रयत्न किये गये।

28 मार्च सन् 1942 को मारवाड़ में पूण उत्तरवायी शासन दिवस मनाया गया। पाली परगना के सभी बड़े बड़े गावो में सम्मेलन किये गये। इनी सिलसिले में गाव चाणोद, रोहट, भाद्राजून के ठिकाना की गरीब जनता पर सामन्ती जुल्म डाये गये और भूठे मुकद्दमे बनाकर लोगो को फासा गया। तब डागाजी ने इन ठिकानो की प्रजा को काज्नी मदद देकर राहत दिलवायी।

सन् 1942 का आंदोलन भारत में आजादी के दीवानो के लिए आति का पव था। सभी ने अणार उसाह से इस आंदोलन में भाग लिया। श्री डागा लोक-परिषद् के अध्यक्ष के नाते इस आन्दोलन में भी अग्रणी रहे। इनके घर की तलाशी ली गई। लेकिन न तो आंदोलनकारिया का कोई सामान उनके हाथ लगा और न आंदोलनकारी ही हाथ भाये।

भारत के स्वतंत्र होने के परचाद् भी डागाजी पूववद् सन्धिय रहे हैं और मपर्याप्तिका पाली तथा काग्रेस सभन में सन्धिय होकर ए होने विभिन्न पवो पर काय किया है। बढावस्था के कारण आज कल शारीरिक दृष्टि से अप्राम अस्वस्थ रहते हैं, पर बौद्धिक दृष्टि से पूणतया जागरूक हैं।



समर्पित जनसेवक
श्री विजयमल सुराणा

गुप्त-सकल्प लेकर अज्ञावा की जिन्दगी बसर करता पीडिता और शोषिता के दुःख स द्रवित हो उनकी आवाज को सुनद करना

और उन्न भर राष्ट्र सेवा की भावना से साधनामय जीवन यतीत करना—यही विजयमलजी सुराणा की जीवनी का सार संक्षेप है। सारे देश में कांग्रेस द्वारा छेड़े गये स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित होकर मारवाड़ में लोक परिषद द्वारा निरकुश राजाशाही और अमानवीय जागीरी जुल्मो के विरुद्ध आयोजित सत्याग्रहो से प्रेरणा लेकर सुराणाजी सन 1939 में तत्कालीन जोधपुर राज्य के रसद विभाग (महकमा प्राइस कंट्रोल व राशनिंग) की अपनी नौकरी स स्वीका देकर लोक-परिषद को सदस्यता ग्रहण करते हुए आंदोलन में बूढ़ पड़े और जीवन निवाह हेतु समान राष्ट्रीय विचारों वाले वकील सवथी बरिस्टर शिवलालजी पोरवाल, गरूपमलजी मेहता बाल कृष्णजी आचाय के यहा मुषी का काय किया। इसी दौरान जोधपुर में सवथी जयनारायणजी यास, भवराजजी सरांफ, रणछोडनासजी गट्टानी गणेशीलालजी व्यास, मयुरादासजजी माथुर, अमयमलजी जैन, मानमलजी जन, किशोरामनजा मेहता सुमनशजी जोशी, बाल कृष्णजी आदि ने इनका सपक अग्रिण गहरा होता गया और उन्होंने संगठन को सुदृढ करने का काय हाथ में लिया।

श्री सुराणाजी का जन्म 13 मार्च, सन 1913 को बाली में हुआ। इनके पिता श्री सोभागमलजी सुराणा बाली में बकालात करते थे। सोभागमलजी गरीबो के बड़े हित्पयी व समाज सुधारक थे। उन्ही के विचारों से प्रेरणा लेकर विजयमलजी न भी गरीबो व दलितो की सेवा करने का सकल्प लिया। उन के बड़े भाई प्रमिद्ध समाज सेवी व स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय छोटमलजी सुराणा थे जिन्होंने अणपना समस्त जीवन राष्ट्र-सेवा को समर्पित कर दिया था।

जीवन में प्रारम्भ में उन्हीने हवासागरी की ट्रेनिंग ली। फिर ये गाव लापोद में करीब दस वष तक अध्यापक रहें। पर, इनका मन तो राष्ट्र सेवा के कार्यों में लगा हुआ था अतः शादी हान पर ये जोधपुर में बाली में आकर अणपने पिताजी के साथ ही रहन लग गया कि सन 1932 में ही इनकी माताजी का देहावसान हो चुका था। इसी मूरत में पिताजी की सेवा को उन्हीने प्राथमिकता दी। इन्हें शुरू स ही अणबवार पढन का बहुत शौक रहा और उस समय राष्ट्रीय विचारों का प्रचार करने वाले पत्र, मुख्यतः हिन्दुस्तान, वीर अजुन नवज्योति तरुण राजस्थान, प्रजा सबक व रिवाजता आदि थे जिन्हें सुराणाजी नियमित रूप से पन्ते थे। इसत इनके विचार रढ होते गये और ये सगठन के कार्यों में अग्रिण समय दन लग।

सन 1939 में इन्हीने बाली व देसूरी परगना में लोक-परिषद् की शाखाए स्थापित करने का काय अणपन बड़े भाई के साथ हाथ में लिया। बाली बाट, मुधारा, मादडी, पाणराव नारलाई, मुमरपुर नाडोन रानी, नवाडी तपतगड, गुंज, चाणाद मुहाला साण्डराव भीमल आदि बड़े-बड़े गावा में लोक-परिषद् की स्थापना की। इस



बनो जैतारण से तो बची पानी से। उस तरह इनका राजनैतिक जीवन प्रत्यक्ष मन्त्रिय रह कर राजनीति तथा सगठन दाना क्षेत्रों में दृढ़ होने कई पन्ना बा सुभाषित किया। जिला काग्रस सगठन में प्रत्यक्ष पद पर रहने के प्रस्ताव महामंत्री को चुन गये। प्रदेश काय समिति के अध्यक्ष रह। विधानमन्त्रा काग्रस पार्टी में कोषाध्यक्ष पद पर चुने गये। विधानसभा की राजनीय उपग्रम समिति और मायिका मन्त्रित न समापत रह। विधान सभा काग्रस पार्टी न सचेतक पद पर भी प्रापन काय किया। विधान सभा को जनरला मन्त्रित, राजस्थान पब्लिक ट्रस्ट बोर्ड, राजस्थान विधि विभाग की हिंदी समिति व राजस्थान भूमि सुधार कमीटी के सदस्य तथा राजस्थान विधानसभा काग्रस पार्टी के स्टडी-नकल के सयाजक के पद पर रहकर इन्होंने अनेक महत्वपूर्ण काय किया।

सह्यारिता के क्षेत्र में भी इनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। शबरसलाजी पाली जिला के-टीय सहकारी बच निमित्ठ पाली के चयरमैन और जिला सहकारी सच के अध्यक्ष भी रहे। पाली के मजदूरों की समस्याओं को धार भी प्रापने ध्यान दिया। इटक से मन्त्रय अलग अलग मजदूर सुविधा की मन्त्रय समिति के प्राप मन्त्रय चुन गये। राजस्थान नूतन बोर्ड द्वारा प्रापका पाली जिल का नेजेंटरी मनोनीत किया गया। उस वक पाली जिन के गावा के पीन के पानी को कई योजनाया की प्रियाचित हुई और लोगो को बहुत राहत मिली। पाली जिला सम्योषी बागों व लिए प्रापको समय पार्टी के सगठन तथा चुनावो सम्बन्धी बागों व लिए प्रापको समय मन्त्रय पर राजस्थान व प्रय प्रस्ताम न कई बार कठिन काय सोच गये हैं जिह प्रापने प्रापनी पूणकुशलता से सम्पन्न किया है। 22 जून 1972 के दिन इनके प्रयत्नो के फलस्वरूप जनारण म भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के वजन के बराबर राष्ट्रीय मुद्राया कोप के चाटी में की गई।

इनकी सबसे बड़ी विभापना यह है कि प्राज को उत्तनी ही सगन व उलाह स काय करत हैं और युवका व मागदगन करत हैं। धर्मो प्राप जिना इश्राम नमेटा पाली न चयरमैन हैं और रेडक्रास संस्था व माध्यम न दबायका धनान, कपडे दूध प्रादि का पिछे प्राणीय क्षेत्रा में वितरण करवा कर नवा करत हैं। राजस्थान प्रदेश काग्रस व विचार माण्डिया बा धाराजत करत रहत हैं। जगतत सम्प्रदाया पर विचार माण्डिया बा धाराजत करत रहत हैं। शबरसलाजी राजस्थान प्रदेश काग्रस के वधि प्रकाश्टी क उपाध्यक्ष हैं और पीठिता को मुण बनूनी सहायना हेतु प्रयलगाह रहत हैं। शबरसलाजी राजस्थान विधानमन्त्र मण्डन (हाउसिंग बोर्ड) क सदस्य भी हैं। राजस्थान धाराजत मण्डन (हाउसिंग बोर्ड) क सदस्य भी हैं। इनके प्रयत्नो ने पाली म हाउसिंग बोर्ड ने बनवा नेटव नगर नामक कौतानी बा निर्माण कराया है। इनम पाली नगर निवास्या को बरी भाषाणीय मुविषा उपलव्य हुई है।

कितो भी सायजनिक क्षेत्र में काय करने वाले मता व काय कर्ता की सही उपलव्यता बा मापदण्ड तो यह है कि उसके कार्यों, विचारा व प्राकरण बा धाम लोगो पर कना प्रभाव पडा है और वे गतय पय की और जाने के लिए किम हद तक मानसिक तोर से तयार हुए हैं। इस बसोटी पर श्री सन्तोषमणजी खरे उत्तरे हैं। इन्होंने पाली जिल को जनता व वित्तेपकर गरीब पिछे बग व भूमिहीन लोगो मे, एक नई चेतना पदा की है। उनमे प्राप्त विवासा जाणुत किया है जागीरी समाहित के पूव, जागीरी क्षेत्रा मे रहने वाले लोगो के मन्त्रय प्रापण के विषय इन्होंने धाराजत चुन व की थी बरकर हजारा ही परिवारा को स्वायो तोर पर प्रावाद किया है। भूमि-मुधार सम्बन्धी कानूनी मामला म इन्होंने विधानसभा में भी विषेय वचि दिवलाई उधर सगठन के माध्यम से भी पाली जिल के रूप म काय पाली जिले मर म प्रविष्ट है।

शबरसलाजी समाज सुधारक व मिताप्रेमी हैं। इनका जीवन सादीपूण और भाव्यरन रहित है। इनके ध्यापक सम्बन्ध मे इहु भायत ही सायजनिक बना रहा है, पर भाजकत की पसा प्रमान राजनीति व ये भी लिखें हैं और राजनीति म नतिब मूल्यो की स्थापनाया शातिकारी बचम उठान पर इन लिना इनका वित्तन चल रहा है।



बचि हृदय श्री धनपतिराज भड्डारी

श्री धनपतिराजजी भड्डारी साजत के निवासी हैं और प्रदेश के एक जाने माने बकील हैं। सोजत विद्यार्थी-जीवन से ही भड्डारीजी म स्वापीनता की सतक होना स्वाभाविक था, जय वे स्वावर के सनाशन पय नैजिन के विद्यार्थी वे उस जमाने म स्वावर स्वापीनता प्रा दोलन के शातिकारी

सिद्ध मालरपुरी

हरि मिश्र



मानियो का प्रमुख के द्र था और तत्कालीन जोधपुर राज्य के वामित नेता भी वही शरण पाते थे। मारवाड लोक परिषद् के वा लोबनायक जयनारायणजी व्यास ने भी अपना कार्यालय वही ल रहता था और वही अखबार भी प्रकाशित करते थे। मण्डारी ने इसी नेताओं के सम्पर्क में आते और विचारियो का समठन बना र आन्दोलन वा तेज करने की योजनाएँ बनात।

इसी दौरान व्यावर के त्रातिकारी नेता स्वर्गीय स्वामी कुमारा-दजी के सम्पर्क में मण्डारीजी आये। स्वामीजी के निर्देशन में विचार्यों समठन का काय कर रहे रिपमराजजी मुणाठ (जैतारण) व भी मोहनराजजी जन (बाली), जो उन दिनों वहा कलेज में पढते और वहा के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता चिमनसिंहजी लोढा द्वारा चालित जन हास्टल में रहते थे। उन लागा से इनका सीधा सम्पर्क हो गया। श्री मण्डारी राजकीय हास्टल में रहत थे। अब गिपच'द स्टल भी राष्ट्रीय आजादी के आन्दोलन की गतिविधिया का केन्द्र न गया। तत्कालीन कालज प्रिंसिपल श्री चक्रवर्ती स्वय राष्ट्रीय वचारा के व, अत श्री मण्डारीजी व इनके अय साधिया को काय करने को काफी छूट थी। कई बार पुलिस ने श्री मण्डारी को गिर नगर किया, हिरासत में रखा, पर श्री मण्डारी अडिग रह और काय करते रह।

श्री पनपतराजजी स्वय एक प्रच्छे कवि है। इनकी अनेक कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। इन दिनों समाज सेवा के कार्यों में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। क्योंकि मोजूदा राजनीति में 'याप्त बुराइया स ये प्रत्यत खिन हैं। नगर विकास के अनेक कार्यों में इनका महत्व पूण योगदान रहा है।

मट्ट की प्रेरणा से विद्यार्थी जीवन से ही इनका झुकाव राष्ट्रीय आ दोलन की ओर हो गया। कालेज की पढाई इनकी कर्नाटक के लिंगराज कालेज में हुई और वही पर सन् 1942 के प्रसिद्ध 'अग्नेजो, भारत छोडो,' आन्दोलन में सक्रिय होकर काय किया। विद्यार्थियों को संगठित कर जुलूस, रवी प्रमात फेरी आदि आयोजन किये।

उसी आन्दोलन के दौरान जसवन्तराजजी सोजत आये और यहा श्री मीठालालजी काका के नेतृत्व में काय शुरु किया। सोजत शहर की डाक का डिब्बा एक नुए में गिराने के आरोप में जबर च'दजी मण्डारी, सामच'दजी मण्डारी, श्री भटनागरजी व जसवन्त राजजी सिचवी को पुलिस थानेदार राधाकिशन ने गिरफ्तार किया और इन चारा युवका की बेरहमी से पिटाई की। आखिर, जबर-च'दजी के यह स्वीकार करने पर कि डाक का डिब्बा कवल उहोने नुएँ में डाला था अय लागी की रिहायी हो पाई। जबरच'दजी पर स्पेशल मजिस्ट्रेट की अदालत में मुकद्दमा चला और व सात प्राठ माह बाद जेल से छुटे।

सन् 1946 में सिचवीजी ने सोजत में वकालत शुरु की पर उस समय भी इनकी प्रमुख भूमिका एक आन्दोलनकारी कायकर्ता की हो रही। इहान जरायम-वेशा कोमा की हाजरी माफी वा आन्दोलन चलाया, जिसमें साथी कायकर्ता मोहनलालजी मट्ट, डा० अमिनदनमलजी मेहता वकील श्री कृष्णजी टाव, दयाशकरजी व्यास आदि ने (सभी मारवाड लोक परिषद् के सक्रिय कायकर्ता थे) पूरा पूरा साथ दिया और इस आन्दोलन में सफलता प्राप्त की।

इसी समय मारवाड में बिसान नेता बलदेवरामजी मिर्धा के नेतृत्व में किसान सभा में भी जागीरी जुल्मा व शोषण से किसानों को मुक्ति दिलाने वा आन्दोलन छेड़ा था। सिचवीजी इस आन्दोलन में भी जुड़े और श्री मिर्धा के नेतृत्व में काम करके किसानों वा राहत दिलवाई।

जसवन्तराजजी सिचवी हमशा ही सक्रिय कायकर्ता और जागरूक बुद्धिजीवी रह है। आजादी के पश्चात् इहान किसानों और मजदूरों वा शापण से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से सहाकारी सम्पाधा वा पनपाने में अपना अग्रिकाश समय दिया सध ही कायस समठन में भी ये उत्तन ही सक्रिय रह हैं।

सन् 1950 स 53 तक आप राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस समिती के सदस्य रह और इसके पूव भी लोक-परिषद् के प्रतिनिधि के रूप में अनेक राजनितिक सम्मेलन में भाग लिया। सन् 1958 में वाली मंडल कायरेटिव बन्ड लिमिटेड के डायरेक्टर चुन गये और 1966 तक इस पद पर रहते हुए सहाकारिता व शोध में उत्पन्नसोय काय



सहाकारिता के पोषक श्री जसवन्तराज सिचवी



पाली गिले में सहाकारिता-आन्दोलन के जनक और पोषक के रूप में श्री जसवन्तराजजी प्रत्यत

ही लाजप्रिय हैं। इनका जन्म सोजत शहर में 28 मार्च सन् 1924 का हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा साजत में ही हुई। हाईस्कूल की पढाई भी सिरौही में हुयी और इसी दौरान श्री गोमुखसाई मट्ट जैसे त्यागी व तपस्वी नेता के व सम्पर्क में आये। श्री गोमुख साई



किया। सन् 1963 मे मिश्रबीजी इसी वर के चेयरमैन चुन गये और पुन सन् 76 तक डायरेक्टर पद पर भी रहे। इसके साथ सन् 1958 स 66 तक राजस्थान गज्य सहकारी बैंक लिमिटेड, जयपुर व डायरेक्टर रह। सन् 1960-66 तक य राजस्थान राज्य के त्रीय भूमि विकास वर निमि के डायरेक्टर तथा सत्य ब्यापकारिणी भी रहे। राजस्थान राज्य सरकार की सभी सहकारी संस्थाया के निदेशक तो व सम्ये प्रसं तक रह है। सरकार न इह राज राज्य कृषि सहकारी बोड वा सदस्य मनोनीत किया। अरुने गहन अध्ययन व अनुभव के प्राधार पर इहान राजस्थान सहकारी एक्ट-1954 पर एक सारगमित पुस्तक लिखी जो काफी लोक प्रिय हुई। सन् 1964 के अगस्त माह म बुटापस्ट (हृगरी) म भाषीजित अन्तर्राष्ट्रीय सह कारिवा ममिनार म भारतीय दल वा नेतत्व सिधबीजी ने किया और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

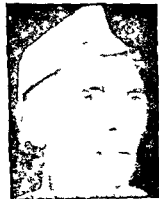
सिधबीजी सोजत वार एसोसियेशन (बकील मण्डल) के सन् 1974-84 तक अध्यक्ष रहे। सन् 1953-54 के गठित प्रथम नगरपालिका वाड सोजत के सदस्य चुने गये और उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष पद पर भी काय किया। उनकी कृषि सामाजिक तथा जन कल्याण कार्यों म भी गुरु ने रही है। एडियन रेडसाल सोसाइटी सोजत व ये समोजक है और सुमेरपुर स्थित राजस्थान भंडिकल सोम इटी एक रिलीफ सेक्टर के पदाधिकारी भी रहे है।

आज भी ये बडी निष्ठा व लगन स राष्ट्रीय व जनकल्याण कार्यों म सलगन रहते हैं और समिहार व गाठिया वा प्रायोजन कर जन जागृति के हाथों म लिखकस्वी सत है।

निमाज मे स्थानीय पाठशाळा पुखी स्कूल म श्री कण्णारा पढने थे और मारवाड राज्य मे तत्कालीन भिदा निदेशक मि एपी बनस स्कूल वा निरीक्षण करने प्राये थे। एक अध्यापक जो मन से अध्रजा के विरोधी थे, ने श्री कण्णारा को 'इकलाव जिंदावाद' वा नारा जार-जोर स लगाने के लिए उकसा कर तयार कर लिया। ज्वाही कावस स्कूल म प्राये श्री कण्णारा ने तीन चार वार 'इकलाव जिंदावाद' के नारे लगाये। दूसरे बच्चे सुनत रहे। न तो कण्णाराजी ही और न थाय छात्र ही इस नारे वा अर्थ जानते थे पर मि कावस तो अत्यंत शोषित हो गये। तबाल श्री कण्णारा वा स्कूल से निष्कासन हो गया और उनका ठिकान के रावन म लेजाकर बिठा दिया गया। खर, बिभी तरह इनके पिताजी व माफी माग्ने पर इहें छोड तो दिया गया पर इनकी काफी पिटाई हुड। इसके पश्चात् पढने के लिए कण्णारा अपनी बुध्रा के पास गाव बलुदा चले गये और वहाँ सठ छगनलालजी मूया द्वारा मचालित विद्यालय म प्रवेश दे लिया। पर छुटी कक्षा म पढन-पढते ही प्राजीविका हेतु निमाज आकर य मवन निर्माण वा काय सील कर उसम लग गये।

सन् 1940-41 म श्री रणदादासजी गट्टानी जब निमाज प्राये और सभा करके कांग्रेस और लोक-परिषद् के कार्यक्रम व वारे म बताया तो इह 'इकलाव जिंदावाद' का सही अर्थ समझ म आया। य अरुने गाव के प्रमुख कार्यकर्ता माधोलाजजी सुधार के साथ लोक परिषद् के सदस्य बन गये। श्री माधोलाजजी तो पुराने कांग्रेसी थे और अरु श्री कण्णारा वा साथ मिलने स उर भी लोक-परिषद् वा काय बढ़ाने म काफी मदद मिलने लगी। सन् 1942 म 1945 तक श्री कण्णारा ने अतारण तहसाल के कई गावा-बलूना अतारण, निम्बोल कुशालपुरा पिपलवाकसा, विराटिया गिरी प्रादि गावा का दौरा करके लोगा म जन जागृति पदा की और मामती जुमा व बैठ बगर स मुक्त हाने का प्रचार किया। इस प्रचार म इह स्वावर के मौलाना अतारमाहम्मद वा वा काफी सहयोग मिला।

सन् 1946 क बाद इहोने लवी विरोधी व बेगार विराधी आन्दोलन म सक्रिय भाग लिया और सफलता प्राप्त की। आजागी के पश्चात् इहोने सामाजिक बुराया और बुरीनिया का दर करने का आन्दोलन गाव आमवा के श्री पीसारायजी रेयर और श्री अजरजी चौदादार से सहयोग से चलाया और अनुसूचित जाति व जनजाति म शराव मसुमाज वाल विवाह प्रादि बन कराने म आतानीत सफलता प्राप्त की। महात्मा गांधी और विनावा गांधे के रचनात्मक कार्यों भूदान प्रादि म भी आपका बहुत सहयोग रहा है। सहकारी आन्दोलन स तो आप शुरू से ही जुड रह हैं और गरीब और शोषित वग व लागी की प्राथिक हासत सुधारन म आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अब भी निमा रह हैं।



निर्भोक्त सिपाही
श्री भवरलाल कण्णारा

श्री भवरलाल कण्णारा वा ज म सन् 1927 म अतारण तहसील के आम निमाज म श्री अजरलाल जी

दमाधी व घर हुआ था। अजरलालजी ठिकाना निमाज व राज नमाधी व और इनको ठिकाने की ओर स एक बेरा व कृषि भूमि जागरीर म दो हुई थी। भवरलालजी का देश की आजादी के सपप की धार अभाव होने वा सम्बन्ध भी एक विचित्र घटना से है



रचनात्मक जन-सेवी श्री अब्दुलरहमान खा

□

श्री अब्दुल रहमान खा एक निष्ठावान राजनतिक कायकर्ता है और इन्होंने युवावस्था से ही लोक-

परिपद् व कांग्रेस द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया है। गुडा दुर्गा के ठाकुर श्री पदमसिंह व बिठुडा के लालदासजी तथा गौरीशंकरजी के मतत्व में इन्होंने जन सेवा का काय प्रारम्भ किया जिसे आज भी लगनपूर्वक कर रहे हैं।

सन् 1944 में बगडी गांव में एक विशाल राजनतिक सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें मारवाड लोक परिपद् के नेता लोकनायक जयनारायणजी यास, मीठालालजी काका आदि नेता आये थे। उसम बगडी के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री मातीलालजी राका प्रमुख कायकता थे। श्री अ दुन रहमान खा तथा अन्य कायकता सबकी गौरी शंकरजी, लालदासजी साजत के बाबूलालजी, गुडा दुर्गा के पदम सिंहजी आदि उस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। यह सम्मेलन बगडी ठाकुर के महल के सामने के मदान में हुआ था। ज्योही लोकनायक श्री जयनारायणजी व्याम ने मापण देते हुए जयजी साम्राज्य व राजाशाही व सामन्ती जुल्मों की बाल बही कि रात्रले से पुलिस व जागीरी गुण्डा तत्वों ने सभा मच पर हमला कर साठिया बरसाना शुरू कर दिया। ठाकुर बगडी ने बंदूक चलाकर हमले की शुरुआत की। कई लोगों के गम्भीर चोटें आई और घायल हुए। उस घटना से श्री अब्दुलरहमान खा व अन्य स्थानीय कायकर्ताओं में सामन्ती तत्वा के विरुद्ध रोष तो बड़ा ही पर अपार उत्साह भी पदा हुआ। इन्होंने प्रतिज्ञा की कि जागीरदारी प्रथा खत्म करने ही हम लेंगे।

जयनारायणजी व्यास को गिरफ्तार करने पुलिस मारवाड जवशन पहुँची, पर श्री अब्दुल रहमान खा व इनके साथिया-सबकी शंकरलालजी खण्डेलवाल, प्यारेलालजी, हाजी गणकूरलाजी मो० हमनजी, बशीलामजी आदि ने जोर-जोर से 'मारतमाता की जय इतलाव दि जावाड के नारे लगाये और व्यासजी को खारजी गाँव में सठ बालचन्द्री के घर पहुँचा दिया। व्यासजी ने स्थानीय लोग में जाश भरा। दूसरे दिन सुबह मारवाड जवशन के बाजार में तिरगा भण्डा लेकर जुलूस के रूप में व्यासजी और सभी कायकर्ता आये

और सभा की। वही पर व्यासजी को गिरफ्तार कर पुलिस जाधपुर ल गई।

उन्होंने मारवाड जवशन पर 1946 में कांग्रेस कमेटी की स्थापना की और श्री अब्दुल रहमान खा की अध्यक्ष व श्री बंदू लालजी मरसेचा, मंत्री चुने गये तथा सबकी मोविंदरामजी मीणा, गौरीशंकरजी, लालदासजी, गंगारामजी मीणा मोकारामजी कुम्हार, नगरामजी चौधरी, ठाकुर पदमसिंहजी नत्थीलालजी शर्मा आदि सदस्य चुने गये थे। एक भण्डो में तिरगा लगाकर कार्यालय खोला गया था।

आजादी मिलने के पश्चात् जागीरी जुटम और भी बढ गये थे। काशतकारा का बेरो व सनो से बुरी तरह बेदखल किया जाने लगा था। श्री अब्दुल रहमानजी अब गरीब काशतकारों की मदद में जुट गये। जागीरदारों ने अपने प्रभाव में पुलिस में इनके विरुद्ध कई आरोप लगाकर कायवाहिया प्रारम्भ की, पर वे तनिक भी नहीं धवरामे। धामनी ठाकुर श्री हुनवतसिंह से 750 बीघा भूमि काशत कारा को पुन दिलाई। जागडावास ठाकुर की 7500 बीघा भूमि काशतकारा का आवटित करवाई। ग्राम हुदाडे में सन् 1952 में इनके प्रयत्ना से एक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें श्री सुमेर राजजी डागा, मोहनराजजी (बाली) श्री धनपतराजजी मण्डारी-साजत, श्री जसवतराजजी सिधवी व जिल मर के कई कायकर्ता सम्मिलित हुये थे। सिनला का जागीरदार राईका जाति के लोगों से अकरा-लाग तथा ऊन की बिक्री पर दस प्रतिशत लाग वसूली करता था, वह भी इनके प्रयत्ना के फलस्वरूप बंद हुई।

आजकल रचनात्मक कार्यों में विशेषकर 20 सुत्री कायक्रम के दिवा वयन में रचि लेकर आप जन-सवा का काय कर रहे हैं।



रूपि पण्डित व क्रांतिकारी

श्री गणेशराम चौधरी

□

गणेशरामजी चौधरा का जन्म बसाप सुनी 14 मध्वन 1974 को पाली जिन व सुमरपुर बस्व में

श्री बदाजी मारी के यहां हुआ। सुमरपुर गांव तत्कालीन माणवाड



राज्य के रिजेंट सर प्रताप द्वारा सन् 1967 में बसाया गया था और श्री बाबाजी माली प्रधान साथ वास्तुकारों ने एक बहुत बड़े शैले को लाकर यहाँ बसे थे। इसलिये उक्त गांव का चौधरी नियुक्त किया और चौधरी नाम से प्रसिद्ध हुए लेकिन प्रारम्भ से ही इस परिवार का भ्रुमीबंदी का सामना करना पड़ा। पंडीसे के गांव शिवगज म अजेज फौजा की छावनी थी। प्रथम विद्रोह युद्ध के समय मुमैरपुर बन्धे का भी खाली करने का आग्रह हुआ था और वहाँ पर फौजी सैनिक व युद्ध कदी रहने लगे थे। तब इस परिवार को भी प्रायः लोगों का साथ ऊन्नी गांव में रहना पड़ा लेकिन युद्ध समाप्त होने पर पुनः मुमैरपुर आजाद हो गया और विकास करता किया।

श्री गणेशरामजी चौधरी आठवीं कक्षा पास कर पेशी के काम में लग गये। यह समय देश में कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे फरवाग्रह धा-दोलन का युग था। जोधरा ही चौधरीजी मुमैरपुर के जागरूक नेता श्री बाबूलालजी राजगुरु के सम्पर्क में आ गये और दोनों ही मिलकर गिरोहों प्रजापदल के नेता श्री गोकुलमाई मट्ट तथा श्री देवीचंद सागरमलजी (शिवगज) से प्रेरणा लेकर मुमैरपुर तथा पंडीसे के ग्रामों में जन जागृति का काम करने लगे।

ग्रामों में उन जमाने में बड़ी खराब हालत थी। बठ बगार ताटा-बूँटा, जंगलबाग के रूप में प्रजा का मजबूर घोषण होता था। जमींदारों गाँवों में बाईं बाजून-ब्यवस्था नहीं थी। जमींदारों के कर्मचारियों, कामदार-बागिनें मनमानो करते थे और इनके विरुद्ध बाईं शिकायत सुनने वाला नहीं था। ऐसी परिस्थिति में हर प्रकार से दबे हुए और दुःखी प्रजापदों के बीच जन जागृति का काम करना उदा जाविममरा और दुष्कर काय था। ऐसी विषय परिस्थितियाँ में चौधरीजी ने गाँवों में झलक जगाई और कांग्रेस का झण्डा नीचे लोभा का मण्डित करने का प्रयास किया। परन्तु रूप, उह गिरोहों राज्य में तो प्रवेश न करने का आदेश मिला ही साथ ही मारवाड का अधिनारी व स्थानीय जमींदार भी इह हूँ तरह से परेगान करते लगे। ग्राम गाँवों मारवाड, साण्डेराव बाबा, राजा विमलपुर बाईं बईं गाँवों में सामन्ती तत्वों ने इनके साथ मारवाड की इनके विरुद्ध अनवर भूँटे मुकदम लजाये पर ये ता निरंतर जनजागृति का काम में लग ही रहें। मारवाड में नोब-परिषद् मन् 1940 में अधिन मन्त्रिय हूँ गई थी और चौधरीजी मारवाड नोब-परिषद् का नेता मन् श्री जयनारायणजी व्यास रणछाडदामजी मट्टानी, मयुरादामजी मायुर घचलखर प्रमाणजी शर्मा गणनीतालजी ध्याम का मन्त्र में धाय और अधिन उल्ला व साथ काम करने लगे।

मन् 1940 में मारवाड में जनगणना के समय मद्रमशमारी टकन लगाया गया था, जिसके विरुद्ध चौधरीजी ने श्री राजगुरु

के साथ होकर निराव किया और एक धा-दोलन खडा कर लिया। उस धा-दोलन में चौधरीजी विजयी रहे और सरकार को टैक्स माफ करना पडा।

सन् 1947 के बाद रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात जमीनी जुल्म बढ़ गये और उनका प्रतिकार करने के धा-दोलन भी उग्र हुए। एमे ही धा-दोलन में चौधरीजी को साथ मिल गया। उस जमाने में युवा छात्र नेता श्री मोहनराजजी एडवोकेट-बाली बा, जिमने परस्वरूप बाया चामुण्डी, साण्डेराव, कोस्टा, चणगा कोसेलाव, सेणा आदि ग्रामों में हुए धा-दोलन में भारी सफलता प्राप्त हुई। मनगानी लडाईं यन् हुई, लाग-बाग, वेठ बेगार समाप्त हुई कायलात (शिकायतगाह) समाप्त हुए। बाया टिकाने की जवती के आदेश हुए। ऐस ही धा-दोलनों के निरसन में चौधरीजी का आठ दिवसीय मन्त्र तजताल पर भी बठना पडा।

चौधरीजी एक निष्ठावान, परिश्रमी, रचनात्मक प्रवृत्ति के किसान कार्यकर्ता हैं। मुमैरपुर का विकास म इनका बहुमूल्य साग पान रहा है। कृषि क्षेत्र में इनका विशेष अनुभव है। इनके पान व अनुभव को देखकर राज्य सरकार ने इह कृषि प्रचार अधिकारी का सम्मान प्रदान किया, जिस पर इन्होंने, कई वर्षों तक प्रवृत्तिक अधिकारी के रूप में कुशलतापूर्वक काय किया और वास्तुकारों तथा कृषि विभाग के प्रमुख अधिकारियों का प्रशिक्षण दिया। इहान पपीता तथा आमों की प्रत्येक नई किस्म विरसित की। चौधरीजी बढावस्था के बावजूद बडे उत्साह से सभी काय करते हैं और वास्तुकारों का मागदशन देते रहते हैं।



आजादी के मुक सेवक
श्री पुलराज कोठारी

श्री पुलराजजी कोठारी का जन्म मारवाडी (मारवाड) में हुआ था। इनके पिताजी का नाम

श्री घनराजजी कोठारी था। व घायत ही मरल स्वभाव के शत-पुरुष थे और ईमानदारीपुत्रक ध्यापार करते अपना जीवन-यापन करते थे। घयन माता पिता के साथ व परोपकारी जीवन में प्रेरणा सकर



पुत्रराजजी ने उदार नविक मूल्या के आधार पर प्रादश जीवन का निर्माण किया है।

स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में मारवाड़ राज्य में लोक परिषद का प्रायेण की गतिविधियों का सादरों भी एक के ड्र था। यहा विधित भौर उल्साही युवकों का एक दल सन् 1932 से ही सक्रिय मे इहोने सामाजिक दुरीतियों मे निवारण हेतु कायम बनार पर। पुत्रराजजी ने नवयुवक सप सादरी की स्थापना की। प्रारम्भ मे इहोने सामाजिक दुरीतियों मे निवारण हेतु कायम बनार पर। पुत्रराजजी ने नवयुवक सप सादरी की स्थापना की। प्रारम्भ मे इहोने सामाजिक दुरीतियों मे निवारण हेतु कायम बनार पर। पुत्रराजजी ने नवयुवक सप सादरी की स्थापना की। प्रारम्भ मे इहोने सामाजिक दुरीतियों मे निवारण हेतु कायम बनार पर।



भारत में सन् 1942 के 'बरो या मरो' आन्दोलन के दौरान अग्रणी साभ्राज्यवाद के विरुद्ध स्व प्रेरणा से सभी का विस्मय म डालन वाला काय किया था।

समर्पित राष्ट्रसेवी श्री जवरचन्द भण्डारी

सोजत निवासी श्री जवरचन्दजी भण्डारी मारवाड के उन निने चुन युवकों मे से एक रह हैं जिन्होने आन्दोलन के दौरान अग्रणी

सारे राष्ट्र मे उस आन्दोलन का धृष थी। स्वान स्थान पर गिरफ्तारिया हो रही थी। सारे नेता गिरफ्तार हो चुके थे और ग्राम जनता ने मनचाह ढंग से अग्रणी राज से लड़ने का संकल्प कर लिया था। कहीं देल की पटरिया उखाड़ी जा रही थी तो कहीं तार देलीकान के खम्भे तोड़े जा रहे थे। प्राये दिन श्रागजनी की घटनाए और पुलिस द्वारा गोली-बारी हो रही थी। सड़कों की ताराद म लोग मारे जा रहे थे। स्थि प्रान्त (जो अब पाकिस्तान मे है) से होई स्कूल के विद्यार्थी हेतु कानतो की जो अपने हाथ म तिरगा भण्डा लिये छोटे विद्यार्थियों के जुलूस का नेतृत्व कर रहा था अग्रेण सारजेंट द्वारा गोली से मृत डालने की खबर ने सारे देश मे एक तहलका मचा दिया था। विद्यार्थियों मे अग्रण जोश सोजत बाहर मे था। उसी जोश के प्रवाह मे जवरचन्दजी भण्डारी न सोजत बाहर मे थी विमलमय जन मन्दिर के पास लगे हुए पोस्ट ग्रामिस मे डब के डि-बे को उपाड कर निरटवती एक कुए मे डाल दिया। वस, फिर था था, पुलिस ने छात्रवीन कर सबधी जवरचन्दजी भण्डारी वसुदेवजी भटनगर व जनवतराजजी सिचवी भी पकडकर घाने मे बड किया और बेरहमी से पिटाई की। जबरचन्दजी भण्डारी न पुलिस घानेदार को स्पष्ट कहा कि सबको भी पोट रहे हो पोस्ट का डि-बा तो मैं कुए मे डाला है तब कहीं श्री भटनगरजी तथा सिचवीजी की रिहाई हुई। पर जनवतराजजी भण्डारी पर मुहदमा चला और कई महीनों बाद वे जेल से डूट पाये।

भण्डारीजी इन दिनों अपने ध्यवसाय म लगे हुए हैं पर राष्ट्र सवा की नयन प्राप म अनी भी बरकरार है।

साहिल पे खडे हैं तमाशाची, एक डूबते वाले पर अफसोस तो करते हैं, इमदाद नहीं करते।

महात्मा गांधी के रचनात्मक कायम मे श्री कोठारी अत्यंत प्रभावित हुए और इहोने इसी कायम मे माध्यम से देशसेवा करने का व्रत ले लिया। मारवाड लोक परिषद् की सादरी मे प्राळा स्थापित करने थी रणछोडदासजी गट्टानी काये तब भी कोठारीजी एक अग्रणी कायकर्ता थे। कुछ समय पश्चात् व्यापार के लिए वे रानी स्टेशन प्रा गये और सादरी मे प्रमुख कायकर्ता श्री फूलचन्दजी बाकना मे साथ मिस ए ही कोठारी एण्ड कम्पनी नाम मे व्यापार मुक्त किया। इनका व्यापारिक प्रतिष्ठान भी व्यापार मे ईमानदारी के लिए उस समय सारे क्षेत्र मे प्रयात था।

श्री कोठारी जहाँ जागीरी कास म लाग बाग, बठ बागर वाटा बूता के जुलाम से लखते रहे हैं यहा श्राजदी मे पश्चात् अपने अट्टाघार के विरुद्ध भी निरंतर सपमगील है। श्री कियोवा नाके मे नयन सर्वोदय आन्दोलन मे भी प्रापने दक्षि दिखार्ई और समाज उद्वान के कार्यों मे सक्रिय हो गये। कोठारीजी अपनी नियमता तथा चाय मण्टि के कारण जन-जन के प्रिय बन गये और प्राज भी सारे क्षेत्र मे अत्यंत ही मगमान की दृष्टि से दखे जात हैं।

श्री कोठारी की आयु अब 75 वर्ष हो गई है और युद्ध कम्पा के कारण अपने पुत्रों के साथ प्राप सनोतर (पर्णाटक राज्य) म अग्रिक समय व्यतीत करते हैं। कहां इनके पद चिह्नो पर चरन वाले पुत्रों का व्यवसाय है।

रुन्दि मातंगु

रुन्दि मातंगु



प्रेरक व्यक्तित्व के धनी श्री जवरचंद मेहता



‘वन सहारा बसहारा के लिए
वन किनारा भ्रमित नावा के लिए ।
जो जिया अपने लिए तो क्या जिया,
जो सने तो जो हजारी के लिए ॥

श्री जवरचंदजी मेहता ऐसा ही व्रत लिए जी रहे थे और रणवास्था व वद्वान्ध्या के वादजूद हर सवा-नाय के लिए अपने प्राणको प्रस्तुत कर देत थे। मेहताजी युवावस्था स ही गांधी विचारधारा के पक्के अनुयायी बन गये थे और तदनुसृत इन्होंने अपने जीवन का ढाल रखा था। इन्होंने द्वारा स्थापित ‘साजत राड जन राहत सवा समिति नामक’ संस्था का माध्यम स भूखों का घन बन्धन प्रादि जहरतमाद विधवाभा तथा छात्रों का वार्षिक सहायता बोमारा का मुफ्त दवाइया प्रादि पहुंचाकर उस क्षेत्र म अनुकरणीय श्रादेश सवा-नाय किया था।

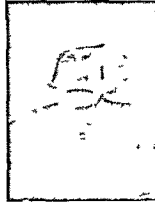
मेहताजी न सन् 1965 स 1968 तक साजत राड के सरपंच पद पर रहते हुए जा विकास के काम सम्पन्न कराये उनस ता साजत रोड की नाया पलट ही हो गई। उच्च माध्यमिक विद्यालय उच्च माध्यमिक कया शाळा समाजियत प्रायुर्वेत्तिक औपचालय प्रादि के शान्तर भवन बनेवा कर जनता का भेंट करवाये। सोजत रोड पर गांधी स्मारक प्रतिमा का निर्माण करवाया। पञ्जल की पक्स्था हनु गांधी सागर जलाशय बनवाया तथा नहर वालाघान का मुन्तर निर्माण करवाकर एक बडी कमी की पूरित का। ग्राम मुमालिया म इन्ही का प्रेरणा से श्री शोधमल विद्याल उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन का निर्माण हुआ। साजत गहर म प्राचाय श्री रघुनाथ स्मृति जन राजकीय चिकित्सालय क विशाल भवन क निर्माण म मा मेहताजी का पूरा सहयोग रहा।

श्री मेहताजी महान् अध्ययनशील ‘रक्ति और सद्बिचारक क प्रचारक’ थे। प्रथम प्रथम मित्रा सहयोगिया व गुमचितता का पत्रा के माध्यम म सद्बिचारक को प्रेरणा देने रहते थे। उनक पत्रा म कुछ प्रसन्नात विचार यहाँ उठाने किये जा रहे हैं —

यावद् भियन् जठर तावद् स्ववद् हि दहिताम ।
अपिवा या जिनमयेत स स्तना दण्ड महति ॥

यानि—जितन घन से प्राणी की उदरपूर्ति हो, उतने पर ही उनका अधिकार है। उससे अधिक पर अपना हक मानता है तो वह चोर है, उसे दण्ड मिलना चाहिए।

मेहताजी के आकस्मिक निधन स एक गच्चा समाज सबक और सद्बिचारक चला गया।



गोपनीय सेवायों श्री लक्ष्मणपुरी



श्री लक्ष्मणपुरीजी न दिनांक
25 7 1916 स 13 5 1945
तक जाधपुर गवनमट के मुखलताक
महत्तम जात म 30 वर्षों तक सवा

की परतु राजनीति म भाग लेने स प्राय अफसरो की नजर म खटवते रहे। आखिर म हुद्रमत जालीर स एक मामूली गर हाजरी का बहाना लकर प्राणका सेवा स मुक्त कर दिया गया। इस पर उहाने बहुत विराय किया परतु कोई सुनवाई नहीं हुई।

सवाकाल म प्राय चीक काट म ‘ग्लिबन टाईमिस्ट पत्र पर रहते हुए राजनीतिक कामों म भाग लेने थे जैसे—लोक परिषद् के अध्यक्ष श्री जयनारायण व्यास तथा उनके साथियों पर सफेद शीर्षी प्रादि के मुकद्दमान स मुफ्त रूप स नकलें तयार करना। प्रिसली ग्लिया म प्रकाशनाय योजनाए तयार करवाने जिली भेजना तथा बाहर हुद्रमना म जहा इनका स्थानान्तरण होता था, प्रचार करना प्रादि। य गमा राजब्राह्मी श्रेणी म प्रांत थे।

राजकीय सेवा स मुक्त शंकर खोड म लोक परिषद् के अध्यक्ष की हैसियत स उहान राजनीतिक कार्ग स बुतवाई तथा 8 माच 1947 का व्यामत्री द्वारा जिम्नवार हुद्रमत के एलायन म सत्रिय भाग किया।

मारवाड म जन मस्यदा निवारणाय प्रापने प्रथम प्रयत्न किया और बण्ट उठाग। य वातनाए थी—दसूरी म सत्री का माल बाघ दानीया बाघ तथा क्षत्र की गवन बडी जन योजना—जवाई बाघ योजना जो क सना म प्रपुण थी—का पूरा करवाने म भी प्राणका बडा योगदान रहा।



निर्भोक्त व सधषशील श्री रामनिवास परिहार



श्री रामनिवासजी का जीवन एक सधष वी व्हानी है । इनका जम ग्राम वूसी म 25 सितम्बर, 1931 को हुमा था । इनके पिता

श्री उदारामजी व दादा श्री दौलारामजी धाची समज के मुखिया व प्रमुख व्यक्ति थे । स्वानीय जागीरदार के जुल्मा के विरुद्ध आवाज उठान और काश्तकारों को सलाह व सहायग प्रदान करते रहने के कारण श्री दालारामजी के वक्त से ही इस परिवार का ठाकुर-वूसी से सधष चलता रहा है । एक तरह से रामनिवासजी को व्ह सधष विरासत म ही मिला है ।

रामनिवासजी को किसी भी स्कूल मे पढ़ने का अवसर नहीं मिला । जागीरी गावा मे तो सरकारी स्कूल थे ही नहीं । व्हो व्हो बटे गावो मे प्राइवेट पोसाल पाठशाळाए चलती थी जहा महाजनों ब्राह्मणो के लडके पढते थे । फिर भी इहान सम्पक साधकर अक्षर ज्ञान माव प्राप्त कर लिया और घर पर वृषि काय करते रहे । इनके पिता का, किसानो के मुखिया होने के कारण, जोधपुर स्टेट के रिटायड डो ब्राई जी श्री बलदेवराम मिर्धा से सम्पक था जो मारवाड के प्रमुख किमान नेता थे । अत, रामनिवासजी इमी सम्पक स बलदेवरामजी से मिलते रहे ।

सन् 1946 म मिर्धाजी न मारवाड किसान समा का गठन किया और श्री रामनिवास परिहार का किसाना का सगठित करने के काय म लगा दिया । ये कार्यालय न बाम करने लगे । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 30 माघ 1949 का राजपूतान की सभी दशो रिशासता का विलीनीकरण कर राजस्थान का निर्माण हुमा तब मारवाड किसान समा राजस्थान किमान समा' म परिवर्तित हो गई । बलदेवरामजी मिर्धा उसके प्रथम अध्यक्ष और श्री रामनिवासजी परिहार कायकारिणी के सदस्य चुन गय । इसी दौरान गवना व सुवाना म किसाना के धानोलना का मुचलने व लिए जो मयकर गाबोकाण्ड हुए उन सम्भेसना म किसान नेताभा के साथ रामनिवासजी परिहार भी मोबूद थे । धाजादी के पश्चात् व पाली जिला किमान समा के अध्यक्ष चुन गये । सन् 1952 म भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के जोधपुर प्रायमन

के अवसर पर किसान नेताओं स बातचीत कर राजस्थान किसान समा का राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी म विलीनीकरण कर दिया । इम विलीनीकरण का एकमात्र उद्देश्य राजस्थान म जागीरी समाप्ति हेतु धानोलन म तजी लाना था और वसस सफलता भी मिली ।

अब श्री परिहार कांग्रेस के कमठ कायकर्ता बन गय और इहाने सहकारिता के क्षेत्र म किसाना को सगठित करने का बीडा उठाया । पाली जिले म गाव गाव म सहकारी समितिया का गठन करना और इनके द्वारा किसानो की धाव्यक्षताभा की पूति करना इनका प्रमुख काय हो गय । ये ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष स लेकर सरकारी क्षेत्र म उंचे स उंचे पद पर चुन गये । रानी त्रय विक्रय सहकारी समिति, पाली जिला सहकारी समिति तथा जिला बुनकर मध के अध्यक्ष पाली जिला भारत संवक समाज व सयोजक, पाली जिला सहकारी भूमि विकास बक के अध्यक्ष पाली जिला केन्द्रीय सहकारी बक लिमिटेड के सचालक, रानी कपि उपज मण्टी समिति के अध्यक्ष राजस्थान राज्य सटकारी भूमि विकास बैंक व राजस्थान सहकारी त्रय विनय सध के सचालक तथा राजस्थान राज्य सहकारी परामशदानी समिति के सदस्य रह हैं और आज भी जिला कांग्रेस कमेटी व राज्य तथा जिला स्तरीय अनेक सहकारी सम्याओं मे पदाधिकारी हैं ।

भूमि सुधार कायक्रम के साथ-साथ इहाने बिनोबा नाव के भूदान कायक्रमा म भी प्रत्यन्त रचि दिलाई और काय किया । लेकिन मगठन तथा सहकारिता के क्षत्र मे इतना रचनात्मक काय करन के उपरात भी मामती तत्वा ने इह ग्राप्ति स नहीं बटन दिया । इनके विरुद्ध तरह-तरह के भूडे मुन्दम बनाना, धवशा तथा श्रय सामग्री को चोरी करवाना, खलियान व पसला म धाग लगवा दना, कातिलाना हुगले करवाना ध्रादि इनके जीवन की ध्राम घटनाए रहो हैं । खनिन यह निर्भोक्त व दहन व्यक्तित्ता क्षत्र मे लिए भा उरा नहीं दवा नहीं, पथ से विचलित हुमा नहीं निराशा पास नहा पटकन दी, हिम्मत नहीं हारी । इहाने अपनी सत्ताना का उच्च शिला णिलाई । इस काय म श्री परिहार की धमपली शीमता दावुवाई का पूरा सहयोग इह मिला जिनकी वनीत ही एम सधषमय जीवन मे भी पूर परिवार को सिहित किया जा सका ।

आज भी रामनिवासजी परिहार राजनीति तथा सहकारिता के क्षत्र म वनूत ही सधिय हैं और प्रायोग जनता की सवा म लगत हुए हैं ।



कमाल के लोकसेवक श्री जमालुद्दीन घोसी

श्री जमातुद्दीनजी घोसी
सोजत रोड क बड़ कापेसी बाप
कर्ता है। सन् 1942 के आन्दोलन
म प्रधान विषय भाग लिया था।

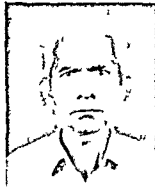
28 मार्च 1942 म मारवाड लाह-परिषद् की धोर स
काङ्ग्रेसल म एक मावजमिक सभा बुलाई गई थी। वहा क ठाकुर
द्वारा सभा मंग करन क लिए सकना लठन ठाकुर क गड म जमा
प। जन ही नगाडे की भावाज हुई, चारा तरफ से साठिया चलने
लगी जिसम सबथी मीठालालजी बाबा विजयशंकरजी देव,
मागीलालजी भालीशान, छत्रारामजी चौहान के बुरी तरह धायल
कर दिया गया। सोत्रन रोड क श्री गणेशमलजी काठक क ड्रान्बर
श्री बजरगलाल शर्मा की भी हड्डी टूट गई।

श्री जमातुद्दीन 30 लागा के जीप म डालकर साठिया हान
हुए बगड़ी लये। बगडा म ठाकुर मरुसिंह द्वारा इन लोग के
पकडन की कागिस की गई। घुडसवार बाबूमिह धोर मूलसिह
घाडे लकर दोडे। जीप की राशनी स चमक चमक कर घोड पीछे
रह गय धोर जमातुद्दीन धायला का लकर सोजत भाग गये वहा
डॉक्टर द्वारा मना करने पर शहर म साधारण उपचार करामा
गया।

सबथी शरकात्मजा पुराहिन मधुरात्मजी माधुर नरसिंहजी
मदुवाहा धोर जयनारायणजी क्याम का गिरफ्तारी क बारन्त जायपुर
सरकार द्वारा निवारन जान पर 'यामजी' का बगडा म सात्रन लागया
गया धोर जमातुद्दीनका उह जीप द्वारा वाली ल गय जहा स
धामजी जायपुर चन गये। ध्यामजी न एक आ बार एन घटना क
बाग लागा स कहा कि सात्रन स पाला जीप द्वारा ल जान म
नमातुद्दीन न तत्र गाडी चलानर मुभ समय पर रनगामी न
विगया घन म एन जमान नही कमान बना कर गा। उहा
निता रात्रस्थान का रिघायना क नेता नमनमजा धोर माण्डिम
मानजी बमर्त का लाह-परिषद् कायकर्तमा द्वारा रत्र स्थान क
परन दने क मुगाफिरमान म दिवारन गगन पर रव स्थान
मास्टर थी कासीगम बाबा का मरवण्ड किया गया था।

जमातुद्दीनका न सन् 1965 म राउप कषट क समय
मात्रन धामन-बादन क माधयन म लाह-मया के काय किय।

स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी के जेल मरुो म्हादालन मे जमातुद्दीनजी
घांगी न सोजत उपवण्ड कायालय के सामन गिरफ्तारी दी और उह
सात दिन सात्रन मिटी जेन मे रखा गया।



दबंग सत्याग्रही श्री अचलचन्द परिहार

श्री अचलचन्दजी परिहार
का जन्म 60 वय पूव ग्राम बाल
राई म श्री वेमारामजी धोपा के
पर हुआ था। इस गाव के
जागीरदार चाणोड क ठाकुर थे।

प्राणीको का बडा-वेगार व लाग-बाग के लिए बहुत परेशान किया
जाता था। श्री परिहार के पिता वेमारामजी को भी कपडे सीने
की वेगार म कई निना व महीना तक काम करना पड़ता था
धोर ना कहन पर घोडे की पायगा म बिठा लिया जाता था।
अचलचन्दजी की शिक्षा ग्राम दोला मे हुई क्योंकि बालराई म कोई
स्कुल नही था। दोला म ताराचन्दजी एक आस्था शिक्षक थे, उनक
कारण इनके जीवन म अचल मस्करा का निर्माण हुआ।

पतक सिलाई क घप क साथ-साथ श्री परिहार टिकाण द्वारा
बहिमाल साटा कृता साम-बाग पन्ला-यून प्राणि का विरोध
करन रहे। गाव बाला म के जागति लाल, पर लोग डरते थ।
तकिन जब जुम यहू बड जाना है तो लोग बलवा करन की
तयार हा जात है। बालराई म भी श्री नवारामजी श्री वेगारामजी
व श्री गौरीलालजी जन न प्राग धारन थी परिहार को सहयोग
निया। नवारामजी क गाथ बहुत बुरी तरह मारपीट की गई।
उनक हाथ-पाव लाड निय धोर टिकाण म कई मूठ मुषदम भा
लगाय गये। पर नवारामजी धामिर तत्र लठन रहे हिम्मत नही
हारी। टिकाण म उनकी जमीन को छीन ली गई। एग तरह क
जुम म तय धारन कई परिवार बालराई गाव धारकर जागीर
त्रिन क पाचाटा गांव म जाकर बस गये। अचलचन्दका व उनका
परिवार भा बुद्ध समय क लिए गांव पुनाहिया जाकर बस गया था,
पर एहने हिम्मत नही छोटी धोर पाणा देवला, पाती, जहां
की लाह-परिषद् व काँग्रेस क सम्मयन हान य पदुचन धोर मरीश
का धावाज का मुण्ड करत। इट मवडी कृतचन्दजी बागना
महन्तराजको जन छाटमयजा मुगला रामप्रसादजी गांधा राम
प्रगानका कया म्हातानका रात्रगुड नममयजी सागा पुगामजी



परिहार का भरपुर सहयोग मिला। ये गावा म मुख्यतया कीरवा, नवा चाणवा, छुणी का गुडा, बालराई आदि मे निरंतर काय करत रह।

सन 1955 म बालराई म सवप्रथम पचायत स्थापित हुई और अचलचदजी सरपच चुने गये। कुल मिलाकर ये 18 वर्षों तक सरपच रह और बालराई तथा क्षेत्र के अ्य गावों म पयजल यवस्था, हाई स्कूल व प्राइमरी स्कूल, औपधातय सहकारी समितिया पोस्ट आफिस खुलवाने के अन्नक विकास काय सम्प न कराय। आज भी रचनात्मक प्रवृत्तिया म पूरी रुचि लेकर ये जन हित के कार्यों म अग्रना पूरा समय द रहे हैं।



समाज सुधारक श्री विनयचन्द मेहता



श्री विनयचदजी महता पाली जिले के उन गिने चुने पुराने कायकर्ताओं मे है जिन्होंने जन सवा म खोया ही खोया है पाया

नये। महताजी का सावजनिक जीवन 1941 मे शुरू हुआ जब उन्होंने मारवाड लोक-परिषद् के नेता सवथी रणछोडदासजी गट्टानी मपुरादासजी मायुर किशोरमलजी मेहता और नसिहदासजी लूकड का एक बलगाड़ी मे बैठकर अपने गाव तखतगढ की ओर जाते दया। ये नेता लोग जालौर जिले म सन् 1940-41 मे अग्रणी गण के कारण हुए सवकर तवाही को देखने तथा बाड से प्रभावित लोग का राहत पहुंचाने जालौर के ग्रामा म जा रह थे। युवक विनयचन्द मेहता ने इनको घर ले जाकर भोजन कराया और हो गय इनके साथ गावा म बाड की तवाही दखन दिखाने के लिये। पावटा, सदेरिया भूगालिया, हरियासी उम्मेदपुर आदि कई गावा म हुई बर्बाती का देखकर ये सवस अघिक प्रभावित हुए और लोक परिषद् के माध्यम से करीब 60-70 हजार की राहत सामग्री इन गावों के लोगो को पहुंचायी।

हिन तो मेहताजी न तखतगढ व आस पास के गावों मे लोक परिषद् की शाखाओं की स्थापना करके जन जागृती का काय शुरू कर दिया। उसी क्षेत्र के अग्र साधियों मे श्री बीएल राजगुड गणेशजी चौधरी मनसुखभाई (सुमरपुर), दबसकरजी

(डुजाणा), पुखराजजी छोपा (चाणद), भीकमचदजी जन (कोसेलाव) आदि के साथ गावा मे लोक परिषद् क सदस्य बनाना व मीटिंगें करना आदि काय प्रारम् हो गया।

सन् 1951-52 मे श्री जयनारायणजी 'यास न आहोर (जिला जालौर) स चुनाव लडा था तब जागीरदारों का बडा आतक फला हुआ था। यहा तक कि 'यासजी पर मा मालिया चलायी गई थी और वाली तहसील के गाव बाकली व अग्र कई स्थानों पर डाकुआ द्वारा लूटपाट करवाई गई थी। सुमरपुर क्षेत्र म चुनाव लड रहे श्री मोहनराजजी (बाली) तथा पाली म लोकसभा चुनाव लड रहे श्री गोकुलमाई भट्ट पर माण्डेरवा म प्राणघातक हमला भी सामती तत्वा द्वारा किया गया था। इन सभी वारदातों के दरम्यान कांग्रेस के एक सिपाही क नाते महताजी न पूगे निष्ठा व साथ सहयोग दिया और वे अ्यासजी के हर वक्त साथ रहे।

सन् 1956 म गठित तहसील पचायत वाली क चुनावो म मेहताजी सदस्य चुन गये और सन 1964 से 1972 तक तखतगढ 'याय पचायत के अग्रथ रहे। कांग्रेस सगठन म ता अग्रन प्रारम् स ही अनेक पदों पर काय किया। अनुसूचित जनजाति (अजा) का सगठित करने शरामबदी कराने, मृत्युभोग बढ करवाने आदि समाज सुधार के महत्वपूर्ण काय भी आपके द्वारा किये गय। मणा की हाजरी बढ करवाने म भी मेहताजी न सफलता प्राप्त की थी। हरिजन सेवक सघ के सस्य क नाते भी आपने समाज-सुधारक के अनेक काय किये है।



सत्याग्रही एवं पत्रकार श्री मोहनकुमार पुनमिया



श्री माहनकुमारजी का ज म सादडी मे 28 मितम्बर 1928 को श्री जुहारमलजी क घर हुआ। जब व चौथी कक्षा के विद्यार्थी थे तभी खीचन (मारवाड) निवासी श्री अमरचदजी जैन स प्रेरणा पाकर खादी आंदोलन की ओर आकर्षित हुए। उनक मन म महात्मा गांधी क प्रति श्रद्धा व भाव जाग्रत हुए। सन् 1942-43 म जब मारवाड शिक्षा विभाग क



डायरेक्टर श्री ए पी वास सादही स्कूल का निरीक्षण करते प्रायि तव उ होने कुछ विद्यायिया सहित मफेद टोपी पहन कर स्कूल जाने का दुस्साहस किया था ।

सादही म मारवाड लोक परिपद की शाखा स्थापित हो चुकी थी । यहां के कायकर्ता सबकी धनोपचदकी पुनमिया धीरजमलजी बच्छावन फूलचदकी बाफना, केमरीमलजी तलेसरा, नगराजकी पुनमिया नदकिशोरजी बोहरा, अमृतलालजी सोनी बस्तीमलजी बच्छावत मोहनलालजी रातडिया दानमलजी पुनमिया चादमलजी पनमिया जुगराजकी पुनमिया कपूरचदकी बाफना, पुस्तराजकी कोठारी सधिय थे । य लाग सादही व घ्रासपाम के गावो म जाकर राष्ट्रीय ध्रादोलन के समथन म काय करत थे । मोहनकुमारजी इन्ही नताभा म प्रेरणा लेकर विद्यायिया की टोली का नेतत्व करते हुए काय करत थे ।

मारवाड लोक परिपद के ध्रादोलन क विससिले म सत्याग्रहियों की मतीं के जब फाम भरे गये थे श्री पुनमिया जी ने भी श्री मण्डलदत्तजी बोहरा श्री केसरीमलजी तलेसरा व श्री नगराजकी पुनमिया के साथ अपने धन स हस्ताक्षर करके दिये थे ।

श्री पुनमिया ध्राजादी के बाद रचनात्मक कायों—विशेषकर खादी व नतिक शिक्षा के प्रचार प्रसार ने अधिक समय देते रहे हैं । सामाजिक सुधार एवं हरिजनोद्वार म इनकी विशेष रुचि रही है । ध्राप साहित्य लेखन म भी समय देते हैं और 'मुनिघोष' नामक साप्ताहिक पत्र का कई वर्षों से सम्पादन प्रकाशन कर रहे हैं ।



लोक सेवी सगठक

श्री नगराज पुनमिया



श्री नगराजकी पुनमिया का जन्म मारवाडी म श्री सरनरमलजी के घर हुमा और इनकी शिक्षा भी वहीं हुई । सादही गोडवाड

क्षत्र का मुन्ध शहर होने से वहां सामाजिक चेतना व समाज सुधार की भावना शिशित युवक वय म जोर पकट रही थी । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये सादही म एक नवयुवक मण्डल की स्थापना की गई थी । प्रथक युवक इस संस्था के सुधारवादी कार्यक्रम की धारा प्राकषित हुए और गांधियों व समाजों द्वारा प्रचार करने लगे ।

यह समय सन् 1938-39 का था । देशभर मे तथा विश्व ध्रादोलन तेजी पर था । मारवाड लोकपरिपद ने प्रथमा काय क्षेत्र जोधपुर शहर के बाहर दूर दराज के गावा तक फैलाने एवं लोक परिपद की शाखाएँ रोतने का काय बडे पैमाने पर प्रारम्भ कर िया था । सादही के युवक वय ने मारवाड लोक परिपद के नता श्री जयनारायण ध्यास को निमन्त्रण दिया और ध्यासजी रणछोड दासजी गट्टानी सुमनेशजी जागी, रामप्रसादजी गावो (पायी) प्रादि क साथ सादही पयारे । लोक परिपद की शाखा स्थापित कर लोक जाग्रति का काय प्रारम्भ हुआ । फूलचदकी बाफना क नेतृत्व म सादही तथा घ्रास-पास के ग्रामो म समाए करने बठ-नगर व लाग-बाग के विच्छ किमान व ग्रय लोगो को ध्रादोलन करन हेतु तयार कल का काय प्रारम्भ किया गया । नगराजकी ने मुण्डारा मुडाला बाणो प्रादि कई ग्रामो मे समाओ का ध्रायोजन करने का काय किया । श्री बाफना के भलावा इनके प्रमुख सहयोगी सबकी धीरजमलजी बच्छावत पुस्तराजकी कोठारी, केसरीमलजी तलेसरा मोहनराजकी रातडिया, हस्तीमलजी पुनमिया प्रादि इनके साथ थे । बाणोद ग्राम म रावले के बाहर हुई समा पर भारी परवारा हुआ था, उस जुलूस व समा मे भी पुनमियाजी मौजूद थे ।

सन् 1941 मे स्वातियर म सम्पन्न हुई भाल इण्डिया स्टेटम पीपुल्स कार्कस मे पुनमियाजी ने लोक परिपद व प्रतिनिधि की हैसियत से भाग लिया था । उस सम्मेलन के अध्यक्ष प जवाहरलाल नेहरू थे । सम्मेलन-स्यत्र पर बम विस्फाट का घघावा हुआ, जिनमे भारी भगदड मच गई । नेहरूजी ने लोगो के बीच पहुंचकर उनको शात किया ।

सन् 1942 मे स्वातियर के टन मैदान म बापेस-सम्मलन म जब महात्मा गांधी ने अंग्रेजो भारत छोडो का नारा दिया तब पुनमियाजी धवन कई साधियों सहित वहां मौजूद थे । उहां अंग्रेजो द्वारा सत्याग्रहियों पर किये गये जुल्मा को नजदोक स दला है । पुनमियाजी व उनके साथी सत्याग्रहियों को गुप्त रूप म महायता पहुंचाने का काय करते थे ।

पुनमियाजी ने उस समय से ध्यादी व गांधी टोपी धारण की जब यह पहनाव विस्मय की दृष्टि से देखा जाता था और गावा म गांधी टोपी पहन कर लोगो को ध्राने जाने नही दत थ । ध्राजाने के पश्चात् पुनमियाजी अपने पतुक् व्यवसाय म जो बार्गी (महाराष्ट्र) म चलता था व्यस्त हा गये और वहां रचनात्मक कार्यों मे रुचि नन लय । बार्गी के क्षेत्र म भी पुनमियाजी अपने सेवा कार्यों के कारण काफी लोकप्रिय हैं ।



सद्यशील पत्रकार श्री झारमल लोढा

गुदाज के श्री झारमलजी लोढा पाली जिले के उन अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों में हैं जिन्होंने लोक परिषद की स्थापना स ही यानी सन् 1939 में सदस्यता ग्रहण कर आजादी के आन्दोलन में भाग लेना शुरू किया था। ये उस जमाने में अच्छे पढ़ लिखे युवकों में गिन जाते थे और कई अखबारों यथा—प्रजासैनिक नवज्योति रियासती हिंस्टान आदि में समाचार व लेख आदि लिखते रहते थे। इन समाचारों व लेखों में पाली जिले के जागीरदारों के जुल्मा व शोषणपूर्ण घोषण का सजीव वर्णन होता था। इसलिये जागीरदार इनसे बड़ नाराज रहते थे और हर प्रकार के निम्न कौटिक क हथकण्ड अपनाकर इनकी प्रतिष्ठा गिराने की कोशिश करते थे। गुदाज ठाकुर ने इनके विरुद्ध पुलिस से साठ गाठकर कई मुकदमे बनाये और इनका चालान करा दिया। लेकिन उस समय जूडिशियल सुपरिटेण्डेंट की अदालत जो पाली जिले के परगनों के हाकिमों के पमला की अपीलें सुनती थी सोजत में थी और इनके मुकदमे तबानी जज श्री सूरजकरणी महिहार के सामने गये तब ये निर्णय साबित हुए और बरी कर दिये गये।

लाडाजी बहुत लम्बे अरसे तक सामंती जुल्मों के विरुद्ध सघप करते रहे तथा अनेक कष्ट सहे। उन्होंने व्यापार की झार भी ध्यान दिया। ये गांव के सरपंच भी चुने गये और विकास के कई काम बरबाये। पर आजादी के परचाव प्रशासन में व्याप्त अत्याचार ने इन्हें अत्यधिक निरास कर दिया। अत्याचार के विरुद्ध य प्रतिम समय तक सघप करते रहे क्योंकि इन्होंने आजादी की लड़ाई में समझ भारत के जो सपने सजोये थे वे आजादी प्राप्ति के तुरंत बाद ही मग हान शुरू हो गये। महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित राम राज्य की स्थापना का सक्ल्प मात्र स्वल्प बनकर ही रह गया। सन् 1986 में इनका स्वगवास हो गया।



न टूटे न भुंके
श्री मधाराम जागिड

श्री मधाराम जा जागिड का जन्म विन्म मन्वत् 1979 में वैशाख सुनी 2 को ग्राम गुणोज में हुआ था। शुभ में धायन प्राइ

वेत पाठशाला में अध्ययन किया। आपने अपने पतुक धाय (बारी गरी) में अच्छे मिस्त्री के रूप में काम प्राम किया। जब धाय 15-16 वय क थ तब आपके गांव का जागीरदार कारीगरी तथा अनुसुचित जाति-जनजाति के लोमा स वेगार कराता था। जागीरदार का सभी काम इनको मुपन में करना पडता था। नही करने वाले से वे जबरदस्ती डरा धमका कर वेगार लेते थे व रावल में बुलाकर घाड़ो के पायमा में बाध दत थ लगडी के बन खोडा। म पाव बाधकर घूप में बैठा देते थे। ये सारी अमानवीय और असहनीय यातनाए दी जाती थी।

श्री मधारामजी का हृदय तब ऐसी प्रयाप्रा के विलाप विद्राह स मर उठा और इहान प्रतिज्ञा कर 'री कि मैं स्वय बगार नही निकालूंगा और अय लोगो को भी इसम मुक्त कराऊंगा। मला गांव का जागीरदार यह कस दशत करता? उसने मधारामजी क परिवारजना को गमी तरह की यातनाए दना शुरू किया। इनकी पमला को तो बरबाद किया ही साथ ही इनके सुधारी क बाध को भी बढ करवा दिया। सारा परिवार मयकर प्राथिक कठिनाइया व अमावास स प्रस्त हा गया पर इहान हिम्मत नही हारी और सघपशील बने रहे। इस सघप में इन्हें सभिय सहयोग मिला इही के गांव गुदोज के श्री रामप्रताप जी शर्मा का जा आजादी की लडाई के एक निडर और निष्ठावान सिपाही थ। शर्मा जी का सम्पक जोधपुर क बाणसी व लोक परिषद क नेताओ स था।

सन् 1936 में जाधपुर स्टेट में मारवाड लोक-परिषद की स्थापना के बाद पाली परगना में व्यासजी की प्रणया स लोक परिषद को गठित किया गया जिसके सब श्री सुमरराजजी डागा रामप्रसादजी गांधी, मूलच दजी नटू रामप्रतापजी शर्मा व मधा राम जागिड सदस्य बने। जहा भी जागीरदार क जुल्म होत वहा ये सदस्य जावर समाए करते और जनता का जलाह बनाते थे।

सन् 1942 में 1947 तक मारवाड में लोक-परिषद की नागा कुषामन प्राड धायि की समाप्रो में धायन भाग लिया। 1948-49 में काग्रम सगठन कायम हान पर चाणोड पानता देवली सम्मेलना में भाग लिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस क जयपुर अधिवेशन में भी आपने भाग लिया। धाय क धायन 20 मूनी प्राथिक कायग्रम क श्रियावयन स जनता का प्राथिक साम पहुँचाया। धाय सबम पहून धाय पचापत गुदाज में बाड पच बन जा बरीब तीन चुनावा तक बनन रहे। सन् 1962 में धाय धाम पचापन क उप-नररुप चुन गये। हृदावस्था व रण्णावस्था के बावजुड धाय भी धाय राष्ट्रीय एकता और मगठन हनु निरन्तर मुबरा का प्रगना दत रहत हैं।



गरीबों के साथी श्री चम्पालाल परिहार

श्री चम्पालाल जी परिहार का जन्म सन 1977 की श्रावण सुदी 1 को मवाड़ा ग्राम में हुआ। प्रारम्भिक पढ़ाई के बाद ग्राम अपने पठक पाथ सिलाई का काम करने लगे। बाली के प्रतिष्ठित स्वतन्त्रता समानी श्री छोटमलजी सुराणा के काय व भाषणों से प्रभावित होकर सन् 42-43 में ही कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय धादोलन में जुड़ गये। मेवाड़ी व घास-पास के जागीरी गांधे गुडा, पादरसा, मिरगखर, बीजापुर आदि की गरीब व शोषित जनता में चेतना भरने का काम करके इन्हें राहत दिववाने का काम इहोतन वर्षों तक किया। ग्रामी भी ग्राम जन सेवा के कार्यों में लगे हुए हैं।

श्री चम्पालाल जी परिहार का जन्म सन 1977 की श्रावण सुदी 1 को मवाड़ा ग्राम में हुआ। प्रारम्भिक पढ़ाई के बाद ग्राम अपने पठक पाथ सिलाई का काम करने लगे। बाली के प्रतिष्ठित स्वतन्त्रता समानी श्री छोटमलजी सुराणा के काय व भाषणों से प्रभावित होकर सन् 42-43 में ही कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय धादोलन में जुड़ गये। मेवाड़ी व घास-पास के जागीरी गांधे गुडा, पादरसा, मिरगखर, बीजापुर आदि की गरीब व शोषित जनता में चेतना भरने का काम करके इन्हें राहत दिववाने का काम इहोतन वर्षों तक किया। ग्रामी भी ग्राम जन सेवा के कार्यों में लगे हुए हैं।

भ्राजादी स पूब जोधपुर दरबार द्वारा सवाडी ग्राम जोधपुर व सठ माहनलालजी साथी को जागीर में दिय जान का इहोने व इनके साथी श्री लालचन्दजी सोनी ने श्री छोटमलजी सुराणा व नरुत्व व धानोलन चलाकर विराय किया। सोजत व मीठा नालजी काना व जोधपुर के छगनलालजी चौधामनी बाला के साथ काय करत हुए इहोने जागीरी गावा की जनता की बढ-बेगार बढ करवायी। ग्राम ग्रामीण मुन्यत अदिवासी गरीब जनता व हिताय हर काय में रुचि रखते हैं।

परवाह किये बिना लोगो को गाभीजी का मदेश मुनाकर उनम जाधुति पत्र करने का काय करते रहे। गावो व, विशेषकर—पादरसा, मिरगखर, पाताय, बीजापुर पीपता, गुडा, लुणावा, करणवा आदि गावा में सभा सम्मेलन आयोजित करके लग बाप तथा बढ बैगार न देने हेतु लोगो को जागृक् करना इनका मुख्य काय था। इन कार्यों में इनके सहयागी श्री चम्पालाल जी परिहार इह पूरा सन्याय दन थे।

सातचरजी मानी शुरू में ही धार्मिक वृत्ति के प्रति हैं। स्वयं भजन व कविता करते हैं और गाकर लोगो का मन मुग्य कर दन हैं। उहोने कई राष्ट्रीय व सामाजिक मुयार—विगयकर शराखन्दी के समयन में तथा बुरे यसनो के विरोध में धनक भीत बनाए हैं।

क्रांतशील सामंत श्री अमरसिंह

श्री अमरसिंहजी ने स्वयं जागीरदार-परिवार के हाते हुए भी जागीरी जुलूमो के विरुद्ध लम्बे समय तक संघष किया। यही उनके जीवन की प्रमुख विशेषता रही है। अमरसिंहजी मारवाड लोक परिपद् की पाली में स्थापना व साथ ही राष्ट्रीय धादोलन में जुड़ गये और जीवन के प्रतिम क्षणा यानी—सन् 1955 तक ये किसानों के हित में सामंती शोषण के विरुद्ध सक्रिय होकर संघष करते रहे।

ये मूदाज ठाकुर के चाचा थे और उही के साथ रावल में रहते थे पर इनके विचारा व कायशली में उनसे भिन्नता थी। फन स्वरूप जब सन् 1940 में इहोने जब पानी परपना लोक परिपद् की सन्स्थता ग्रहण की तो रावल में तथा सारे क्षेत्र में सहलका मच गया। पर ये निडर होकर अपनी बात पर धडे रह। लोक-परिपद् की सन्स्थता ग्रहण करते ही ये मूदोज के ही मन्थिय कायकना श्री रामप्रतापजी शर्मा व श्री मधारामजी जागिड के साथ गाव गाव में सामंती जुमा के विरुद्ध ग्राम जनता को जाधुत और संगठित करन में लग गये। मूदाज ठाकुर मजा यह बस बर्षित कर सकते थे। उहोने पदमयत्र रचकर सन् 1941 में अमरसिंहजी की तार में पिटाड करवाई। इनके सिर में गम्भीर चोटें घा और इहे जाधपुर अस्पताल में 34 माह तक चिकित्सा करानी पडी। उम समय मारवाड लोक-परिपद् के महामंत्री श्री किशोरमलजी महता न हर प्रकार की सहायता देकर उनका इलाज करवाया।



गीतकार चैता श्री लालचन्द सोनी

श्री लालचन्दजी सोनी भ्राजादी पूब के बाली लहमोल के प्रमुख काय कर्ता हैं। उनका जन्म सन् 1978 के मिंगसर सुद-1 को सवाडी में हुआ। बाली के श्री छोटमलजी सुराणा व शान्डी के श्री पूलचन्दजी बापना की प्रेरणा से ये राष्ट्रीय धादोलन में मम्मिलित हुए और अपने घर व कागेवार की

श्री लालचन्दजी सोनी भ्राजादी पूब के बाली लहमोल के प्रमुख काय कर्ता हैं। उनका जन्म सन् 1978 के मिंगसर सुद-1 को सवाडी में हुआ। बाली के श्री छोटमलजी सुराणा व शान्डी के श्री पूलचन्दजी बापना की प्रेरणा से ये राष्ट्रीय धादोलन में मम्मिलित हुए और अपने घर व कागेवार की



फिर, सन् 1942 के कांग्रेस द्वारा चलाये गये 'करो या मरो' आन्दोलन में इन्होंने जाधपुर लोक परिषद के तत्वावधान में सक्रिय रूप से कार्य किया। पुलिस ने घात लगाकर इन्हें गिरफ्तार कर लिया और करीब तीन माह तक जेल में रखा। जागीरदार भूदोज ने तो इन्हें पहले ही राबसे से बाहर निकाल दिया था और इनके परिवार को भी गांव में रहने नहीं दिया, अतः दूसरे गांवों में जाकर इन्हें परिवार सहित रहना पड़ा। भूदोज में इनकी कृपि भूमि भी ठाकुर ने छीन ली और इन्हें दर दर भटकने को मजबूर कर दिया, लेकिन बाबजूद इन सारे अत्याचारों के वे अपनी धान पर अड़े रहे और अतिम सात तक वेगार प्रथा लागू-बाग व गरीबों के शोषण के विरुद्ध सघन करते रहे।

चेतना के कणधार श्री चन्दूलाल एस० मरलेचा



श्री चन्दूलालजी का जन्म मारवाड़ जवगन के निकट खारची ग्राम में हुआ। इनके पिताजी का नाम श्री हिम्मतमलजी था। श्री हिम्मतमलजी स्वयं गांवों में चल रहे सामंती अत्याचारों से परिचित ही नहीं, मुक्तमोमी भी थे और किसानों में जागीरी प्रथा के विरुद्ध जाग्रति पदा करने का कार्य करते थे। इसी कारण स्वामीय ठाकुर योग हिम्मतमलजी से बहुत नाराज रहते और इन्हें कई बार अपना गांव छोड़कर जंगल में बेरो पर रहना पड़ता था। ऐसे घर में जन्मे और सत्कारों में पले थे श्री चन्दूलालजी। इनकी प्रारम्भिक पढ़ाई धान-दोलाल पोद्दार हाईस्कूल, सातारुज बम्बई में हुई। तभी द्वितीय विश्व-युद्ध छिड़ गया था। राष्ट्रीय आन्दोलन भी तेज गति पर था। उसी लहर में श्री चन्दूलालजी पढाई छोड़कर मारवाड़ में अपने गांव आ गये और गांवों की जनता को सामंतीशाही से मुक्ति दिलाने के लिये मार्चें छेड़ने में लग गये।

श्री गोविन्दरामजी मीणा (भारत सरकार के आयकर विभाग के कमिश्नर) तथा श्री अट्टल रहमान इनके प्रमुख सहयोगी थे। इन सभी ने मिलकर मारवाड़ जवगन पर कांग्रेस की शाखा की स्थापना की थी। जागीरी गांवों में प्रजा की साटा-जूता बट-वेगार व लागू बाग स चुरी तरह में लूटा जाता था। वे अत्याचार भी मनमाने ढंग में होती थीं। पीड़ियों के पुराने बन्नाशुदा मन व चरे जबरन छुड़ाना और मनमाने रूप में लूटा करना आम बात ही गई थी। सरका, भूमि व सीराना-लागू वगैरह वसूलकारों के पलायन भी सभी को परेशान किया जाता था। गांधी व किसानों व पशुपालकों के घरों में से दूध के पड़े भर भर कर राख व घांटा

को लिलाने के लिये कीटी खोधा बनाया जाता। घर के बच्चे दूध तो बचा, छाछ को भी तरसते। जागीरदारों के कारिदा को कोई मना करने की हिम्मत नहीं करता था। क्या-किसी मना करने पर मीणा गवने के खोडा में बिठा दिया जाता और मिर्चों की धूनी तक दी जाती।

उन दिना जाधपुर से श्री अचलेश्वरप्रसादजी शर्मा 'मामा' 'प्रजासेवक' नामक अखबार निकालते थे। उसमें राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित तथा जागीरी जुल्मों का वर्णन छपा करता था। वे उसका प्रचार प्रसार करते। खारची-सोजत क्षेत्र तक बगड़ी ठिकानों ने वहाँ के प्रसिद्ध सैठ गणमलजी काठेड को वही यातनाएं दी थी। उनका पुत्र स्वर्गीय भोठालालजी काठेड को तो राष्ट्रीय आन्दोलन के निलसिने में जेल हुई और जेल की असहनीय यातनाओं व फलस्वरूप उनकी युवावस्था में ही मृत्यु हो गई। उधर पण्डितल ठिकानों में भी भयंकर जुल्म व दमन हो रहे थे। इन सब घटनाओं के कारण लोगो में काफी चेतना जाग्रत हुई थी और स्थान-स्थान पर सभाओं का आयोजन होने लग गया था।

सन् 1947 के 15 अगस्त के दिन आजादी की घोषणा के साथ ही मारवाड़ जवगन पर चन्दूलालजी व अन्य महयोगिया न मिलकर बहुत बड़ा जलसा आयोजित किया। तैनि माथ ही पाकिस्तान के निर्माण के कारण आ रहे लाखों शरणार्थियों का खान-पान व रहने की सुविधा में उह लगना पड़ा। राहत कार्यों के लिये धन जुटाने के लिये इन्होंने रानी स्मरण पर 'बलिदान' नामक नाटक दिनांक 26 3 50 को खेलने की व्यवस्था की।

इन दिना आप गरीबों व शोषितों का अत्याचार आपण आदि से मुक्ति दिलाने के उचनारमक कार्यों में रचि लेते हैं और भवा कार्यों में जुटे रहते हैं।



लोकप्रिय जन सेवी
श्री द्वारिकादास गुप्ता



मानी वस्था में निर्यात पतना-दुखना शरीर तप गुणाना का बानी व बोध बाजार में स्थित प्रसिद्ध निरान का दुकान

मम मवाराड द्वारिकादास ने यहा मुबह म काम तप दगा जा मरना



श्री पुनराजजी परिवार क माथ जुड़कर य एक छो़र सामती तत्वा के बिहूठ मयय म जुट गये और दूसरी धार धाम के विक्राम मे स्तून, धर्मपान वृषि-विक्राम तासाव निमाध ध्रादि कापीं को सम्पन्न करवान म धाय ध्राये । अनेक वर्षों तक सरयध पद पर रह । ध्रपण पिछडे ग्रामा को अपनी काय बुणवता, मूक बूक, लमन ईमानगरी और मधुर मवा मावी स्वभाव के कारण विक्राम कील धायी की प्रथम पक्ति म न ध्राये ।



बाणा धाम म पानी के एकमात्र स्रोत गावार्ड तासाव के वारे म ध्राजानी के लकाज याग ही एक बडा विवाद उठ लण नुप्रा था । जमीरगरी म उस तासाव को अपनी व्यक्तित सपति बहकर उमरी सुनाई एव विराम का धरवान की कोशिश की तो तागा म धसनाप की ज्वाना ममक उठी वयापि बाणोद का तासाव ता उनक जीवन का आधार था । उस वक्त राजस्थान बना ही था और प्रथम मन्त्रिमण्डल म थी पुनराजजी बापना स्वयत्त धामल मत्री थ । बापनाजी स्वय बाणाद ध्राय और धामवासियों की यायावित माय का स्वीकार किया । एम मारी सफलता के पन स्वल्प इन क्षेत्र म मामनी प्रमाव शोध ही मया । स्वयंय श्री मूचका डागा (गामद) का पूरा-पूरा सहयोग श्री मबूलमलजी को विनता रण । एमन न बल बाणाद म वरन धारे पिछडे भेष म विराम कावी का गति मिची ।

मननानीजी बड हा महुअ एव धार्मिक प्रवृत्ति के ध्यक्ति थ । दयाभास इनम नूट-नूट कर मरा था । जाणित और दवे हुए पिछडे वय क लाग रान लिन धपनी समस्याग नकर इहें परे रहन थे और य महु व सहज स्वभाव क कारणे मत्री का महामा दने के लिए तत्पर रहन थ । मृजनाहनाय इनका जीवन समर्पित था इनीलिंग मधनानीजी म धरन पतर ध्यापीर व धप को नहीं सम्भाता । धीर न बसा धपन स्वास्थ्य की परवाह की । मात्र 50 वय की धायु म ही वे धम निधार गय ।

श्री अनोपचन्द पुनमिया

स्व अनोपचन्द जी पुनमिया सादडी म ज म और वही एनका प्राग्मिक शिक्षा हुई । सादडी मे पोशाल-पाठाला म प्रायमिक स्तर तक शिक्षा की ही यास्था थी । पुनमियाजी कलय के धनी थ । इहाने स्वय धर्म्यास कर कानूनी विधाधा ना अरुधा जान हुमिल कर लिया था । इसलिए इनम ध्रायाय के प्रति विद्राह करन की भावना बलवती हुई । मारवाड लोक परिपद की स्थापना क माथ वे ही थे । इस सस्था के सदस्य बन गय । वे मादडी लोक-परिपद के वर्षों तक ध्राधय रहे और जन सेवा का काय करते रहे । ध्यालती काय से इनका जोयपुर धाना जाना रहता और वहाँ इनका सम्पक सन्धी जयारागयणजी याम, मयुखादासजी माधुर मवरलालजी सरफ और रणछोडदासजी गट्टानी सरीसे नेताप्रा म बराबर बना रहता था ।

पुनमियाजी ने गाडवाड क्षेत्र के ग्रामा म समाधा का ध्रायोजन कर जा-जाणति क ध्राणीसना म महत्त्वपूर्ण योगदान लिया । इनका व्यक्तित्व बडा प्रभावशाली था । य स्वभाव म बडे ही निडर और स्वामिानी थे । एनके एक पुत्र श्री मोहनजी पुनमिया भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमिड नेता हैं । उहोने ध्रपना काय-क्षेत्र जयपुर बना रखा है और मजदूर मगठना व जुडे हुये हैं । पुनमिया वाली जिले म लोक-परिपद क स्थापक-सदस्य माने जाते हैं ।

श्री रामेश्वर पाराशर

श्री रामेश्वरजी पाराशर माजत म जम और इहान साजत को ही धपना कायक्षेत्र बनाया । ध्राजानी स पूव इहान तान परिपद के प्रमुल नेता श्री मीठाडाला काका क महशोभी कायकर्ता क रूप म काय प्रारम्भ किया तथा गावा म जन जाणुति हेतु ध्राणा ननी का सहासन किया । रामेश्वरजी एक शात प्रवृत्ति के रचनात्मक कायों म रधि नन बात कायकर्ता रण हैं । ध्राज की उगाड पछोड की राजनीति म उहें ध्राधय है । न वर्षों तक नगर मण्डल व राज कान्ग्रेस कमठिया के ध्रध्या रह और मगठन को बलशानी बनान म महत्त्वपूर्ण योगदान लिया ।

स्वच्छ राजनीति म विश्वास करने वालन ए श्री रामेश्वरजी पाराशर इन लिन बुध निराग हैं । यडावया और बीमारी के बावजूद भी धायू क धपना का भारत बनान का काई योजना बनती है या बात हाती है ता एनम वही धुराना उमड पडता है ।



गुंमों आपके साथ घबका मुक्की एव मारपीट करत । कई बार तो व बडू एव तलवार स मारन के प्रयास करत मगर भगवान ही इनकी रक्षा करता । इनकी भेती की जमीन जत कर ली गई थी ।

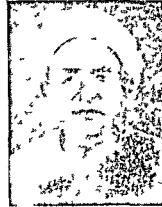
आज भी जहा कही भी सामंती श्रत्याचार होत है तो उसका ये रूढता से विरोध करत है व समाज सवा म अग्रणी रहत है ।



श्री लखमाराम- खीमाजी चौधरी



श्री लखमारामजी चौधरी का जन्म नाडोल ग्राम मे हुआ । बचपन स नाडोल ग्राम म जागीर दार द्वारा किसानों को बदखल करना उनस बठ-वेगार लना प्रादि बनेवा करत व । उस अत्याय एव शापण व विरुद्ध आरम्भ स ही व आवाज उठात व विरोध करत थ जिसके कारण ठिकाने द्वारा उन पर कई प्रकार क भूठे मुक्दमे बनाकर परेशान किया जाता था । सन् 1942 म इह नाडोल म एक माह तक नजरबंद रखा गया । आज वदबास्था हाते हुए भी आप जनता की भलाई मे लग हुए हैं । जहा भी शापण एव अत्याय होता है आप अपनी प्रावाज उठाये बिना नही रहते ।



श्री श्रोदाराम सिरवी



श्री श्रोदारामजी का जन्म 79 वष पूर्व श्री गलाजी सिरवी के घर ग्राम वाली म हुआ था । आपन स 1992 विरुद्ध मे जब पुनागिया म बरा हरनाथवाला की खुदाथी शुरू की तो जागीरी कारिदा ने उनका परेशान करना शुरू कर लिया । जागीरी कारिदा व हुजददार द्वारा गाव वाला म बठ बेगार ली जा रही थी । उनके विरुद्ध आपन श्री छाटमलजी सुरखा बाली की सहायता से विरोध करना शुरू किया व स्वतंत्रता आंदोलन स जुड़ गए । श्रोदारामजी बाजार म हान वाली स्वतंत्रता-आंदोलन की समाम्रा मे भाग लत थ ।

सन् 1949 म किसानों की एक विशाल समा जा वाली (बडर) म हुई थी म बाली के माभिया स ली जान वाली गर-वानुमी लाग बाग का बंद करवाया । यह मीटिंग श्री मोहनराजजी ने आयोजित की थी । उसी वष माहनराजजी की अग्रक्षता म राख्ना स ली जाने वाली बक्का आदि की लाग बाग का विरोध कर उस बन्द कराया गया था ।

पुनाडिया के जागीरदार ने नाराज हाकर इनक घर व खलि हान म आग लगवादी और इनक विरुद्ध कई मुक्त्तम किए । इनकी याम कई बार जलवायी मवशी भी चारी करवाय, पर श्री श्रोदारामजी ने सधप नहीं छोडा । स्वतंत्रता-सतानी श्री छगनलाल चापासनीवाल व गृहानी जी जब बाली के किल मे कद कर, (1944 मे) लाए गय तब श्रोदारामजी ने किल के बाहर हडताल एव घरना दिया था । आपने बल्लभरामजी मिर्धा का कई बार बानी बुलाकर किसानों की मीटिंग करवाई मबरलालजी सराफ आदि कायकर्ता बाली क्षेत्र के जागीरी जुम्मा के विलाक समायें करत ता आप भी उनके साथ रहत थ ।



श्री चुन्नीलाल जाट

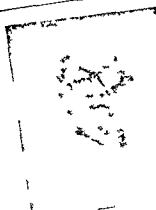


श्री चुन्नीलालजी जाट का जन्म ग्राम बागोल म श्री गोमारामजी जाट के घर पर हुआ । आपकी शिक्षा ग्राम बागोल म प्राइवेट स्कूल मे ही हुयी । बचपन से ही जागीरी जुम्मा एव प्रायादा का मुक्कर विरोध किया । बागाल के पास ही डायलाना, दबडा का गुटा कालर काट लापी, श्रवीमाडा प्रादि जागीरी गाव थ वहाँ पर भी लाग-बाग, बठ वेगार तथा जागीरी जुल्म होत थ । उन सबके विरोध हेतु मारवाड लोक-परिपद् की समायें जहा भी होता आप सम्मिलित होत । बलदेवराजजी मिर्धा द्वारा सन् 1943 स चलायी गयी मारवाड सष सभा के सक्रिय कायक्ता के रूप म आपने बाग मुक् किया था ।

आप जब भी जागीरी जुल्मा बठ-वेगार लाग-बाग के विलाप प्रावाज उठाते ता स्टेट के हुजददार एव प्राय जागीरी



भाजबल साथ घर पर हो प्रथम गांव पुनर्गठना में खेती का पत्र सामालत हुए जनता की मलाई में लपे हुए हैं।



श्री वरकतप्रलो अन्सारी

श्री वरकतप्रलो अन्सारी बयोवृद्ध जनसेवक हैं। युवावस्था में ही वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की गतिविधियां स जुड़ रहे हैं। इनका पानदान पूवजो भागालन की गतिविधियां स जुड़ रहे हैं। इन्होंने स्वतंत्रता के समय स ही राष्ट्रीय विचारों का रखा है। इन्होंने स्वतंत्रता के मातृभवन स सक्रिय भाग लिया। बम्बई प्रांत में बने कामगो मंत्री मण्डल क मध्यम भी रहे। श्री अन्सारी मगर परिषद् वाली के वर्षों तक सन्स्य रहे हैं और अपनी भी हैं। इनकी लाप्रियता और जनमन्त्रक क कारण हिन्दू मुस्लिम एकता को भी बड़ा बल मिला है।



श्री वासुदेव शास्त्री

एक भाजस्वी और निर्भीक व्यक्तित्व के पनी थे श्री वासुदेवजी शास्त्री। वे पाली जिले की एक प्रयत्न ही लोकप्रिय हस्तो रह हैं। जतारण में वे बकालात करते थे।

जागोरी भाषाचारो के विषय इन्होंने अनेक सपनों में नेत्रुच प्रदान किया था। इनका जीवन इनका मास्त्रीपुण और त्यागप्रय था कि हर भ दमी रनक सम्पुल अपने दिल की बात कह देता था और जी शास्त्रीजी उसे हर प्रकार में सहयोग प्रदान करते थे।

शास्त्रीजी पाली जिला काग्रत के अत्यंत पद पर भी रहे। य जतरण पचासत नमिनि के प्रदान पद पर भी रहे पर यह सत्ता और पत्र का नाम तनिक भी नहीं था। वे ही राजनीति में शकत और मार्ग बकता क प्रबल हिमायती थे और इही जीवन मूल्या की रक्षाप संतिम समय तक लड़ते रहे।

वन्दे मातरम्



श्री माधोसिंह भागव एवं श्रीमती रानीदेवी भागव

प्रभुल राजनीतिक कायकता श्री माधोसिंहजी मायव एम ए एवं एल बी ने जब पाली में अपनी बकालत प्रारम्भ की तो

उनका साथ ही इनकी पत्नी श्रीमती रानीदेवी भागव में प्रवेश किया म अपने पति के साथ ही सावजनिक जीवन में प्रवेश किया था। इनका परिवार प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय विचारों स आत प्राप्त था। उ होंने पानी नोक परिषद् क सक्रिय सदस्य बनकर गांव में जन जागति का प्रतिपादन छड़ दिया था। श्री सुमरराजकी डागा श्री रामप्रसादजी माधो और श्री रामप्रतापजी शर्मा के साथ श्री माधोसिंहजी पाली परसना के गावो में जाते और जनसमाए करते। ये सब लोक परिषद् की शालाए स्वाचित करते थे। कई बार श्री भागव पर जागोरी तख्त में पडयान कर हमला करने की कोशिश की लेकिन ये अपनी लोकप्रियता और सगठन शक्ति के कारण हर बार बाल-बाल बच गये। श्री भागव मारवाड लोक परिषद् के प्रतिनिधि चुन गये। उहां जिला पात्रम में विभिन्न पदो पर रहकर निष्ठापूर्वक काय किया।

श्रीमती रानीदेवी न पाली जिले में महिला काग्रस के समठन की मजबूत बनन में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। भाज्जादी के पश्चात् यही एकमात्र महिला कायकर्मी थी जिहान गांव-गांव का दौरा करते पाली जिले की महिलाघाम में जाशुति पदा की और नामाजिक सुधार की प्ररणा दी।

एक बुभाह व्यक्तित्व श्री इयामेश श्याम

श्री इयामेशी श्याम का जन्म सोजत में हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा लोकनायक श्री जय नारायणजी श्याम के त्याग व बलिदान स प्रभावित होकर भाज तब शोचित व पीडित समुदाय की रद मरी छावाजा को अपनी मनाक सेवनी स बुनद बनन में लग गे।

वन्दे मातरम्



श्री चम्पालाल राणावत

□

ग्रामाव धर्मियोग मे पले श्री प्रथामेशजी एक सधपशील स्वभाव के यक्ति है। गरीबों की समस्याओं को उजागर करने और समाज तथा प्रशासन मे व्याप्त झण्डाचार को नग्न रूप मे प्रकट करने का इन्होंने लगातार प्रयत्न और साहस किया है। इस काम मे इहे अनेक शारीरिक व धार्मिक कठिनाइयों का सामना भी करना पडा, पर इहोने हिम्मत नही हारी और अपनी ध्यान पर अडे रह। कई बार ता इनका उच्च अधिकारियों व नेताओं का बोधभाजक भी बनना पडा, पर सभी तरह की यातनाओं का इहाने हिम्मत स भेला पर भुके नही।

श्री प्रथामेशजी ने वर्षों तक 'करवट' नामक पत्र का सम्पादन किया। इसके माध्यम स व जन जागृति का विगुल बनाते रहे। इनकी रचना की ये प्रसिद्ध पत्त्रिया अनेक नौजवान आज भी मुनमुनाते रहते है— 'शहीदा का खून धन्य नही जायेगा

वह किसी न किसी दिन रग लायेगा।।

श्री मोतीलाल मोदी

□

श्री मोतीलालजी सानी खरवा के निवासी थे जो जागीरी जुल्मों के विरुद्ध आजादी के पूर्व-काल स ही सघन मे अग्रणी रहे है। खरवा व पाली तहसील के अग्र्य छाटे छोटे गावा मे लाग बाग व बट बेगार को लेकर विद्याना एव मजदूरी का जा भयकर शोषण होता था उसने विरुद्ध इहाने सधप्रथम आवाज उठाई और लोक परिषद् के अगुडे ने नीचे लोगों को सगठित किया।

विचलगतता तथा बढावस्था के कारण चलने फिरने मे अशक्त होत हुए भी श्री सोमोजी अतिम समय तक सक्रिय रूप स जन हितार्थ काम करत रहे। इनम सदा ही युवका-सा उल्लाह रहा।

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित

□

श्री गुलाबसिंहजी राजपुरोहित ग्राम देवली प्राऊवा के रहने वाले हैं। इनका बगनोर मे काफी अरुद्धा कारोबार था। य जब व भी देवली प्रात तो यहाँ पर राजनतिक गतिविधियां तज हो जाती थीर ये राष्ट्रीय आन्दोलन के विचारों मे वहाँ की जनता को अग्रगत करत रहते थे। इहोने सवप्रथम भारवाड के विमान-नेता श्री बन-दरामजी मिर्षा को आमन्त्रित कर एक विमान-सम्मेलन का आयोजन किया था और तभी स यह गाव राजनतिक चेतना और आन्दोलन का केन्द्र बन गया। श्री गुलाबसिंहजी इग क्षेत्र मे अत्यन्त ही सार्वप्रिय रहे और कई वर्षों तक मरणपर्यन्त पर धामीन रहे।

श्री चम्पालाल राणावत प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री तेजराजजी राणावत के लघु भ्राता हैं। इहाने अपनी साव जनिक जीवन आजादी के पूर्व चलाये गये आन्दोलन मे गुरू किया था। ग्राम खुडाला मे जब जागीरी जुल्मों और भयकर शोषण क विरुद्ध जन आन्दोलन मडका तो चम्पालालजी इस आन्दोलन मे उमरकर अग्र प्राय। इहोने गाव वाला का सबल व निर्भीक नतृत्व प्रदान किया। फनस्वरूप, अततागत्वा जागीरदारों का गाव छोडकर बाहर रहने का ही मजबूर होना पडा।

जागीरी दमन के विरुद्ध खुडाला मे एक विशाल जुलूस का आयोजन किया गया था जिसम जाधपुर, पाली शिवगज मुमरपुर, सान्डी, रामी, दवलु, गुडोज व सोजत तक के कार्यकर्ता शामिल हुए व। इस जुलूम पर मामती गुण्डा ने भारी परहार किया जिसके फलस्वरूप इनके भी चोटें आई। चम्पालालजी व प्रमुख साथी श्री गामाराजजी छोपा अत समय तक पूरी निडरता और निष्ठा के साथ जनसेवा मे लगे रहे। इसी जुलूम की समाप्ति पर स्वतंत्रता-मनानी श्री फूलबन्दजी वाफता एव श्री दुलीबन्दजी मावरमलजी बोरवा की भी पुलिस चौकी फालना में पिटाई की गई थी।

श्री राणावत वर्षों तक खुडाला ग्राम पंचायत के सरपच रहे हैं और इनके कार्यकाल मे अनेक विकास-कार्य सम्पन्न हुए हैं।

मूक सेनानी

श्री पद्मालाल व्यास

□

श्री पद्मालालजी 'गाम पाली जित मे आजादी के आन्दोलन का प्रथम चरण के निपारी रहे हैं। छोटी ब्रह्मपुरी, पाली मे इनका निवास था। लोक परिषद् व कांग्रेस के कार्यकर्ता मे य निरन्तर हाकर भाग लेते थे। श्री व्यासजी मडुनापी और शांत प्रहृति के व अम निए उग्र बायबाहिया मे दूर रहकर लागा वा सवा भाग व रचनात्मक प्रवृत्तिया के माध्यम मे मानुभूमि की सेवा करने का प्रयत्न कर रहत थे। स्थानीय कार्यकर्तागण इनका बडा सम्मान करत थे और अनेक आन्दोलन मे चलत थे।



श्री कासम भाई

स्वर्गीय कासमभाई बाली तहमील क लुणावा ग्राम के निवासी थे। य गांधी विचारधारा क उपासक होने के साथ-साथ जीवन पथ पर वाप्रेस क मरिय सदस्य रह। वर्षों तक काँग्रेस एव जिना काँग्रेस के प्रतिनिधि चुन जात रह। इनका स्थानीय क्षेत्र की कृषक जनता म गहरा सम्पर्क बन गया था और वे इ ही स मांग दर्शन कर काम करत थे। य शराबखंदा क मजक ममथक थे। एक बार ग्राम लुणावा म प्रायोजित कामममा म तत्कालीन वित्त मंत्री श्री मधुसदास माधुर स आने ग्राम लुणावा स शराब का ठका हटाने की मांग की ता था माधुर न घोषणा की कि यदि श्री काममभाई इस ग्राम म गांधी मूर्ति स्थापित कर लग ता वे इस ग्राम म स शराब का ठका बंद कर देग। इस चल ज को स्वीकार कर काममभाई न तीन माह क अंदर बस स्टैण्ड क पास एक पाक म गांधीजी की मूर्ति स्थापित कर ली। इस प्रकार शराब का ठका बंद करवान म सफलता प्राप्त की। तना ही नहा, कुछ वर्षों बाद शराब क ठकेदारा की साजिश स कुछ समाज विराधी तत्वा न गांधीजी की मूर्ति का गायब कर दिया ता ये घनघन कर बठ गय और गांव वाला न नई मूर्ति स्थापित का। सार क्षेत्र म काममभाई का अर्चना एव पापक प्रभाव था।

श्री सोहनराजजी उन दिनों गांव क चंद पठे लिखे जागरूक युवक म स थे। इ होने लागे को संगठित रहकर जागीरदार का हुकम न मानने तथा सघप म किसानों का पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलवाया। इनक छांटे भाई श्री माहनराजजी जो उन दिना होकर कांज इ दोर म अध्ययन कर रहे थे, को किसानों के इस सघप म सहयोग करने हेतु उ हान बुलाया। श्री जन तवाल ही पढाई से छुट्टी कर किसानों के सघप का मारवाड लाक परिषद् जिमकी शाखा श्वली म पहल ही स्थापित हा चुकी थी क माध्यम से संगठित किया।

एक तरह स श्री साहनराजजी व श्री माहनराजजी ही इस आंदोलन मे नही बूढ़ वरन् उनका सारा परिवार ही जागीरदार क विरुद्ध छड गय सघप म मुर्गिया बन गया और तन मन धन स सहयोग करने लग। इस सेठ परिवार की सारे क्षेत्र म बड़ी इज्जत थी अत लागे म एक नया विश्वास जाग्रत हुआ और गांव ता हर व्यक्ति आंदोलन म शरीक हा गया। जागीरदार का पूरा बहिष्कार पावित हुआ। जागीरदार ने पुलिस एव दधिकारिया की मदद से श्री सोहनराजजी व इनक परिवारजनों व ग्रामवासियों पर अनेक मनगबत भूठ, फौजदारी मुकद्दम चलाय पर श्री सोहनराज की भूक बंध के कारण ग्राम का संगठन कायम रहा और हर मामल म ग्रामवासियों को विजय हासिल हुई।

श्री साहनराजजी गांव पंचायत दबली पावुजी के वर्षों तक सरपंच रह और मुख्यत शिक्षा के विकास म उनका मराहनाय योगदान रहा। उहान व उनके परिवारजना न जन हिताय प्रयत्नात नवन बान का काय प्रारम्भ किया ही था कि उनका स्वगवास हा गया। वे बडे बुजुर्गबुद्धि और हाजिर जवाब थे। निर्भीकता और साहस ता उनक पारिवारिक गुण है इसलिए वे मार क्षेत्र म लाक प्रिय ता थे ही दूरदराज स इनका सलाह प्राप्त करत भी लाग प्राप्त रहत थ।



श्री सोहनराज पुनमिया

श्री सोहनराजजी पुनमिया ग्राम दबली पावुजी क प्रसिद्ध सेठ श्री मानमलजी क पुत्र थे और प्रपन छोट भाई स्वतंत्रता-सेनानी श्री माहनराजजी की प्रेरणा म

आहन सचिय राजनीति म प्रवेश किया था।

ग्राम दबली पावुजी का इतिहास प्रारम्भ स ही सघप का रहा है। पूरा ठाकुर जगतसिंहजी की जागीर जवन हान क वाग यह गांव खालसा रहा और उन समय किसानों की भूलगत वसूली साटा जिन म न हाकर नकनी म हान लगा। प्रपक प्रकार की जागीरी लागे भी समाप्त हा गई थी पर कुछ ही वर्षों बाद सन् 1945-46 म दबला ग्राम पुन जागीर म द दिया गया और जागीरदार ने पुन लटा करने और लाग-बाग वसूली का हुकम जारी कर दिया। इस प्रकार आन्दोलन की गुन्धान हा ग।



श्री निहालचंद परमार

श्री निहालचंदजी परमार गांव दबली-पावुजी के निवासी हैं और इन दिना प्रसव्य होने क कारण अलवार म अपने पुत्र के पास रहत हैं।



श्री निहालचन्दजी का राजनीति में प्रवेश सन् 1942 के 'अग्नेजा, भारत छोड़ो' आन्दोलन के पूर्व ही हो चुका था। सन 1941-42 में ही ग्राम देवली-पादुजी में श्री मोहनराजजी जन (पूर्व विधायक वाली) के आमन्त्रण पर श्री जयनारायणजी व्यास ने लोक-परिषद् की एक शाखा स्थापित की थी, और श्री निहालचन्दजी मारवाड लोक परिषद् के प्रतिनिधि चुने गये थे।

श्री निहालचन्दजी का उन दिनों मोमेसर स्टेशन पर बड़ा व्यापार था। अन्न प्राप्त करने के गावों में छांट व्यापारिया व किसानों से उनका अच्छा सम्पर्क था इसी सम्पर्क के कारण इस क्षेत्र के अनेक युवक कायकर्ता लोक परिषद् और कांग्रेस के स्वतन्त्रता आन्दोलन में जुड़ गये। देवली में इनके प्रमुख विद्यार्थी थे—मन्थरी साहनराजजी पुनमिया रामेश्वरजी माण्डर विद्याधरजी श्रीमाली, पुस्तोत्तमजी श्रीमाली चपालाल जी माली बु नोलाजजी वण्णव, बुद्धारामजी चौधरी अमरसिंहजी, मुलारामजी चौधरी आदि। इनके अलावा तारडा के श्री हीरालालजी व सादूरामजी घाची सावळता के श्री जयशंकर श्रीमाल भी इनके प्रमुख सहयोगी थे।

देवली के गाचरमूमि आन्दोलन में श्री निहालचन्दजी परमार ने तत्कालीन ठाकुर से कड़ा सघन किया और वर्षों तक गावों को संगठित रखकर गोबर कायम कराई। श्री मोहनराजजी इनके परममित्र और सहपाठी रहे हैं। इन्हीं की प्रेरणा से निहालचन्दजी का राजनीति में प्रवेश हुआ और मोहनराजजी द्वारा चलाये गये हर आन्दोलन में इनका पूरा-पूरा साथ रहा। निहालचन्दजी वर्षों तक देवली ग्राम पंचायत के सरपंच रहे और इनके कायकाल में अनेक विकास-कार्य हुए।

श्री हीरसिंहजी व इनके अग्र वामरेड साथी जागीरी जुल्मा एवं शोषण के विरुद्ध लड़े जा रहे इन आन्दोलनों के सक्रिय भागीदार



ही बन न कि विरोधी। फलस्वरूप जागीरी प्रथा क खिलाफ संगठित मोर्चा बना और बड़े से बड़े ठाकुरों का भी इस जन शक्ति के सामने घुटने टकन पड़े।

आजादी के पश्चात विकास व नव निर्माण के युग में हीरसिंहजी राजपुराहित कांग्रेस संगठन से जुड़ गये और अपनी प्रगतिशील विचारधारा के आधारे पर कार्य करने लगे। ये जिला कांग्रेस पाली के अध्यक्ष रहे और अब भी जनसभा के लग हुए हैं।

श्री हीरसिंह राजपुरोहित

□

श्री हीरसिंहजी राजपुराहित सोजत के निवृत्त रूपावास ग्राम क निवासी हैं और विद्यार्थी जीवन से ही प्रगतिशील विचारों के जागरूक कायकर्ता रहे हैं। गावों में व्याप्त गरीबी मुलमरी, शोषण जनित अरिद्रता ने इनके जीवन के प्रारम्भिक काल में ही विद्रोह की भावना भर दी थी। साम्यवादी साहित्य पढ़कर ये साम्यवादी आन्दोलनों की ओर झुक गये। इन्होंने अपना काय क्षेत्र मान्यत एवं प्राप्त करने के स्थान—चण्ढावल बगडी सोजतराड बनाया और जन जागृति पदा कर लोभा का संगठित किया।

आजानी के पूर्व उस जमाने में इस क्षेत्र में लोक-परिषद् के कायकर्ता कानी सक्रिय थे और गांव गांव में आन्दोलन कर रहे थे।

श्री नन्दकिशोर अग्रवाल

□

श्री नन्दकिशोरजी अग्रवाल वाली तहसील के ग्राम चाणुण्टरी के निवासी हैं और आजादी पूर्व के बमठ स्वतन्त्रता सनानी रहे हैं। सिरौही जिले की सीमा पर इनका गांव होना से इन्हें तो चाणुण्डरी नामा क्षेत्र के जागीरदारों ने और पूर्व सिरौही राज्य क ठाकुरा न भी अनेक यत्नणाए दी और कई कई दिना तक जल में बंद रखा पर न दक्षिणराज्य अपनी आन पर अग्रिग रह। जागीरदारा क शोषण व अत्याचारा व ग्रामीणों को मुक्ति लिवाने क मध्यम म टट रहे। श्री अग्रवाल न बताया कि आजादी मिलन के बाद ता जागीरी शोषण बेहद बढ गया था क्योंकि जागीरदारा का यह आमास हा गया था कि जब अग्नेजा का ही जाना पण ता अब राजा और ठाकुर नही रह सके। इसलिए स्थानीय जागीरदार न गावाई गुजारे क सुरक्षित जगला को टकेदारा का बेच दिना और



मकड़ा वर्षों से ग्रामवासियों के पशु धन के लिए गुजरा। साधन बन म मगण्ट डेकदारों द्वारा बाटकर जलाम जान लगे तो लागाम म मयकर श्रम ताय व्याप्त हो गया। उस वक्त श्री गागुलमार्ई क निदेश पर श्री माहमराज जन न इन ठकेणरा व जापीरदारों के विरुद्ध एक जबरनस्त सपय छेडा।

घानन घनक घामा के किलाना व मजहूरों को सगठित किया। घानन बताया कि एक हाप म लाठी और दूसरे हाप म लालटेन लेकर रात रात भर भीमडों के चक्कर लगाते और लकड़ी बाटन की मजददरी पर न जाने की प्रतिज्ञाए लोगों स करात य। रम नाम म नदविशारजी क मय भाया द ममूतसिहजी व माननलातजी शर्मा।

नदविशारजी का जीवन एक त्यागी तपस्वी का जीवन रहा है। घाज भी महान मजददरी करने जीवन, घानन करन का व्रत द्वाएन धारण कर रखा है।



श्री च्छन्नीलाल मेहता

श्री मेहता का जन्म सोजान म 31 जुलाई, 1926 को हुआ था। 18 वष की आयु मे आय सन 1942 के अग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन म भाग लते हुए महमदाबाद म गिरफ्तार हुए। हालांकि इनका काय गेज मुम्य तीर स बन्दई हो रहा है, जहा पर इन्हाने सत्रिय राजनीति मे माय नत हुए और सामाजिक क्षेत्र म घपनी मेवायें देने हुए यापार एव उद्योग क क्षेत्र म भी ग्याति प्राप्त की।

बई वर्षों स श्री महताजी हिंदुस्तान चम्बर घाफ कामस, भारत मर्चेण्टस चम्बर पाउरलूम खरुपर वरन सप, महाराष्ट्र यावर-लूम मर्चेण्टस एग्रीमिशन आदि अनेक यापार एव उद्योग स मम्बई त सस्थाओं के पदाधिकारी रहे है। शिक्षा के क्षेत्र म इनका मम्बई म बम्बई स्थित भारवाडी कामगियन हाई स्कूल माहलाल सागरमल हास्टल अधरी शिवाजी शिक्षण ध्यातव मण्डल श्री जवाहर विद्यापीठ बाख्साद, श्री जन विद्या प्रचारक मण्डल पूना, अमलान विद्या प्रचारक मण्डल काण्डा (महाराष्ट्र) राजस्थान विद्या पीठ उदमपुर हरिमार्ई देवकरण पाठशाला सोलहपुर भारवाडी विद्यालय हाईस्कूल बम्बई बाम्बे प्रदेश घाय विद्यासमा से रहा है। इनके सघालन म न केवल इनकी प्रमुल भूमिका रही है वरन इहान इन सस्थाओं क विकास म आर्थिक महुवाय भी दिया है।

घाप जनता की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए गठित 'रोज फाउण्डेशन नामक सरवा के लिए चणदगीन चुन गये। इनकी सत्रिय धार्मिक कार्यो म बगाबर रही है। श्री मारवाणी जन सघ श्री घनन भारतवर्षीय साधु मार्गीय जन भोगशाल समाज-बम्बई और प्रदा जन समाज कघटी के अध्यक्ष है।

घानादी क पश्चात भी घाप राजनीति म सत्रिय भाग लत रहे हैं। बम्बई स्थित जिला काग्रज क मटिया ने मेरीटेट के रूप म काय करक इहाने बम्बई स्थित ध्यापारी-मामाज म काग्रेम का कोष त्रिय बनाने म महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

घाप वाली जिन की विराल की तनिविधिया म भी बराबर माय लन रह है। मागज स्थित इंग्रजन मुयाफ सभिन नामक

त्याग और सेवा की मूर्ति श्री छोगालाल गादिया

श्री छोगालाल जी गादिया पाली क साधुजनिक जीवन म एक महत्वपूर्ण स्थान रखत है। आजागी क पूर्व स ही इनका सम्बन्ध नाक परिषद् एव काग्रेम स रहा है। घाप श्री मूलचन्त्री घामा न अन्वय साथी रहे है। इनका जीवन त्याग की एक अजूबी कहानी है। घाजादी पूर्व ही महीं घाजादी क पश्चात् भी इहाने घन और मम्पनि की दृष्टि से त्याग ही लीया है। जनमवा और मगठन म ही घपनी पूरी शक्ति और समय दन वाल श्री गादिया का पना फूला थापार ता अवयग कौण्ड हो गया पर उड्ड इम पर जरा भी क्षाम नहीं है। व कहत हैं कि सवा का रास्ता तो त्याग ही है। इसलिए उहाने घपनी साखा की मम्पनि की परवाह न करन हुए स्वच्छा म ही यह रास्ता चुना है।

श्री गादिया जी वर्षों तक पाली जिला काग्रेम म पदाधिकारी रहे और नगर व ब्लॉक काग्रेम क वर्षों तक अध्यक्ष रह है। के गाधीवादी विचारधारा क पायन हान क बरण रखनामक काय वम म आर्थिक दृष्टि रखत है। इन तिया एम ही कामों म घपना समय देते हैं।



सस्या को समय-समय पर अपनी बहुमूल्य सेवायें देते रहे हैं। साजत म अपनी माताजी के नाम पर गुलाबबाई मेहता हाई स्कूल' सस्या द्वारा शिक्षा के क्षेत्र म भी अपनी अमूल्य सेवायें दे रहे हैं।

श्री मोटाराम चौधरी

श्री पदमसिंहजी

स्वर्गीय श्री पदमसिंहजी खारची क्षेत्र के गुडा दुगसिंह के निवामी थे। व फौजी कायकर्ता थे और राष्ट्रीय विचारों और गांधी विचारधारा के कट्टर समर्थक थे। गांधी म ठापुरा सामंतों की मनमानी और किसानों मजदूरों पर बंध बेगार और लाग-बाग वसूली के लिए जो अत्याचार और ज्यादतिया होती थी उनमें वे बहुत दुखी थे। इसीलिए वे जागीरी समार्षित आंदोलन में अग्रुवा बन। उन्होंने गांधी म लोगा को मगठित किया और उनका साथ देकर उन्हें निमयतापूर्वक अपने अधिकारों पर डटे रहने को तयार किया।

श्री पदमसिंहजी जिला कांग्रेस कमटी पाली के सक्रिय कायकर्ता व पदाधिकारी रहे। जीवन के आखिरी दिना म व प्रवासन म अत्यंत श्रद्धाचार और पक्षपात स बड़े ही व्यथित थे। वे कायकर्ताओं का मोटिंगा म सभी स बंधक कहते थे कि ऐसी आजादी व ऐसे स्वराज के लिए शहीदा ने अपना बलिदान नहीं किया था।

श्री अमृतराज मेहता

श्री अमृतराजजी मेहता, निवासी मुडारा अपने क्षेत्र म लोक परिषद् के सस्थापकों म मे रहे हैं और अपने सामंत विरोधी प्रदर्शन व कारण इन्हें बड़ी यातनाएं भोगनी पड़ी हैं। स्थानीय जागीरदार व उनका वारिदा की मार ता सहनी ही पड़ी पर साथ ही जागीरदारों म मिश्रीमगत रखन वाली पुलिस ने भी इन्हें बेरहमी से पीटा।

इन सारी यातनाओं के बावजूद भी श्री मेहता निडर होकर लोक परिषद् के माध्यम स सगठन का काय करते रहे और लाग-बाग व बंध-बेगार बंद करवाने में सफल हुए।

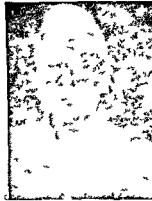
श्री अमृतराजजी मेहता ने गांव गाव धूमकर लोक परिषद् की शाखाएं स्थापित की और श्री फूलचंदजी बापना के सहयोग से इस क्षेत्र म किसानों का सगठन मजबूत किया।

आज भी व ही काय इनके छोटे भाई श्री करणराजजी मेहता कर रहे हैं। श्री करणराजजी की सगठन शक्ति के कारण इस क्षेत्र के सारे गांधी ने सामंती शोषण म भारी कमी आई है।

श्री मोटारामजी चौधरा ग्राम मुडारा व निवासी थे और गुडवाड क्षेत्र की पंचायत चौधरीयान के मुखिया थे। श्री मोटारामजी ने चौधरी बलदेवराजजी के नेतृत्व म काय प्रारम्भ किया था और सब प्रथम खुडाला कालना पर आयोजित वृद्ध किसान सम्मेलन की अध्यक्षता की थी।

श्री मोटारामजी न सिरिबी समाज को सगठित हाकर जागीरी शोषण से मुक्त होने का आह्वान किया और इस दिशा म ग्राम ग्राम धूम कर काय प्रारम्भ कर दिया।

श्री मोटारामजी के स्वगवास के बाद उनके सड़के श्री इन्द्रा रामजी चौधरी ने इस समाज का नेतृत्व सम्भाल लिया और उ होने सगठन का काय शुरू किया। इस प्रभावशाली परिवार के कारण किसानों म जागृति पदा हुई और सामंत विरोधी आंदोलन को बल दिया।



सोजत के मूक सेवक
श्री केवलचन्द पगारिया

श्री केवलचंदजी पगारिया विद्यार्थी जीवन स ही राष्ट्रीय आंदोलन स जुड़ गये। लोक नायक श्री जयनारायणजी यास के सम्पर्क में आने के बाद श्री पगारिया न सोजत क्षेत्र म अपनी गति विधिया तज कर दी और स्वर्गीय श्री मोटारामजी काका माहन लालजी मट्ट जवरचंदजी मेहता आदि के साथ राष्ट्रीय चेतना का काय करते रहे। लोक परिषद् और कांग्रेस क हर आंदोलन म इन्होंने सक्रिय सहयोग दिया।

पर इतनी रचि प्रारम्भ स ही रचनात्मक कार्यों की और अधिक थी और आजागी मिलन के बाद श्री पगारियाजी ने रचनात्मक सस्थाओं स अपने सम्बन्ध स्थापित कर जन सवा क कार्यों म अपने आपको लगा दिया।

आज भी गी शाता के काय के साथ-साथ गरीब व पिछड़ी जाति के लोगों के कल्याणकार्य कार्यों म लग रहते हैं।



पंडित पूरणमल शर्मा

□

मास्टर पूरणमलजी शर्मा स्वयं नेता नहीं थे लेकिन एक राष्ट्रीय विचारों के महान् साधक और पोषक होने के नाते अपने अग्र्यापकीय जीवन काल में इन्होंने कई नेता तयार किये और उनमें राष्ट्रीय भावनाओं को सुदृढ़ किया। इस बढावस्था में भी इन्होंने जिस जोश और भावना के साथ चण्डावल ग्राम में हुयी जनजागृति की कहानी का वर्णन किया और बहा के कायकताप्रा—सवथी मामीलालजी आलीशान छलारामजी चौहान, दयालसिंहजी गहलोत, देदारामजी जाट, नयमलजी मूथा रामसुखजी मुह्लोतियार प्रहमदजी, आदि के निरंतर-पुष्क भेले गये जागीरी जुल्मा का सजीव वर्णन प्रस्तुत किया—वह अल्प इस ग्राम में विस्तार से आ गया है।

मास्टरजी की, भूक-साधक की सेवाएँ पाली के इतिहास में सदा याद की जाती रहगी।

जुल्मी से परेशान होकर अपना गांव छोड़ कर पाली आकर बसना पड़ा। पाली आते ही इन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेना आरम्भ कर दिया और गुजारे के लिए अपनी एक कपड़े की दुकान खोली। पाली जिला कांग्रेस के वे वर्षों तक जिला एवं ब्लाक स्तर के प्रभावशाली पदा पर रहे और आरम्भिक अवस्था में जिला कांग्रेस कमेटी के कार्य को सुचारु रूप से जमाया। समय-समय पर, आवश्यकता पड़ने पर श्री कुमावत कांग्रेस कमेटी को आर्थिक सहयोग भी देते रहते थे और पाली तथा बाहर भी जन आन्दोलन में सक्रिय रहते थे।

इस प्रकार श्री चिमनीरामजी कुमावत को तन, मन और धन से आजादी के संग्राम में सक्रिय भाग लेने और पाली जिले में कांग्रेस को जमाकर शक्तिशाली बनाने का श्रेय प्राप्त है। इनके सम्पर्क से ही विशेष कर जिल का किसान समाज कांग्रेस के कार्यक्रम में रुचि लेने लगा था।

श्री जसरराज घाची

□

पाली जिले में कांग्रेस संगठन के आरम्भिक समय श्री जसरराज घाची का कांग्रेस को सक्रिय सहयोग रहा। श्री जसरराजजी केवल आन्दोलन में ही भाग नहीं लेते थे बल्कि अपने घर में भी सावधान रहें और जन सभा के साथ-साथ पाली में अपना व्यवसाय भी सुचारु रूप से जमाते रहे जिससे वे समय-समय पर कांग्रेस की आर्थिक सहायता भी कर सकते थे। उस वक्त कांग्रेस को आर्थिक सहायता की अत्यधिक आवश्यकता थी क्योंकि कांग्रेस की वित्तीय आय का कोई स्रोत नहीं था और आन्दोलन के कारण धन की सदा कमी रहती थी।

श्री जसरराजजी न जिला स्तर पर और ब्लाक स्तर पर प्रथम महत्वपूर्ण पदा पर रहे कर कांग्रेस की सेवा की। श्री जसरराजजी के मुधुपु श्री भीमराजजी भी कांग्रेस के योग्य जन नेताओं में हैं और जिला कांग्रेस के महत्वपूर्ण पदा पर कार्यरत हैं।

श्री चिमनीराम कुमावत

□

अपने स्वामित्वाने स्वभाव के कारण स्वतंत्रता आन्दोलन के पूर्व वर्षों में ही चिमनीरामजी कुमावत का स्थानीय जागीरदार के

श्री चिमनाराम माली

□

श्री चिमनारामजी माली का जन्म पाली जिले की बाली तहसील के फालना गांव में हुआ था। इनको शिक्षा की मुविधा उपलब्ध नहीं थी फिर भी स्वयं के प्रयास से ही उन्होंने साक्षरता हासिल की।

फालना गांव एक जागीर का गांव होने से श्री चिमनारामजी को अपने जीवन में लगातार सघन करना पड़ा। आरम्भ से ही वे कांग्रेस के सदस्य रहे और जागीरी जुल्मी के विरुद्ध आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते रहे। फालना गांव के जागीरदार द्वारा घाघ पर बहुत अत्याचार किये गये। कई बार भारपीट की गई। भूठे मामलों में उलझाया गया और सारे गांव को आतंकित कर घाघ व्यवहार नहीं करने पर बाध्य किया गया पर घाघ अपनी धुन के पकड़े रहे एवं घाघने सघन नहीं छोड़ा। मारी विरोध का बावजूद बट बेगार लागू-बाग और जागीरी जुल्मा के विरुद्ध सदा जुमत रहे।

जब भी मौका मिलता और गांव में किसी गरीब किसान पर जागीरी अत्याचार होता श्री चिमनारामजी तो उनमें पक्षधर बन कर आन्दोलन खड़ा करते और जुल्मी की शिकायतों मुकदमा व आन्दोलनों के सहारे अत्याचार को दबाते। पसस्वहप जागीरदार के जुल्म चल नहीं पाते थे और इनके ऊपर जुल्म बढ़ते जाते थे। एक बार ता भूठा अपनी का केम अष्ट कर्मचारियों की मिली भगत से उन



विलाफ बना दिया गया और इन्हे बहुत परेशान किया गया परन्तु वाली पालना व वे काप्रसी कायकर्ताभा की मदद म ये बच गय ।

इसो प्रकार एक बार जागीरी गुण्डा ने रात के वक्त इन पर हमला करके इनका बहुत मारा व इनके हाथ पाँव तोड़ डाले । गाव म जागीरी भातक से कोई इन्हें छस्पताल लाने को भी तयार नही हुआ तब पडोसी गाव खीमेल से काप्रसी कायकर्ता श्री प्रमराजजी महता इन्हे रात के वक्त मोटर म डाल कर वाली लाये । उस वक्त ये मरणासन्न अवस्था म ये धीर सहन धायल थे । श्री माहनराजजी जन ने रात को इन्हें हास्पिटल पहुँचाकर इनकी जान बचाई ।

श्री चिमनारामजी कमठ काप्रमी कायकर्ता और स्वतंत्रता सगनी होा के साथ साथ निम्नोँक और सच्चे वक्ता और माली समाज के महत्त्वपूण पंचो म से है । क्षेत्र मे प्राप बहुत लोकप्रिय है । अपनी निष्ठा और सत्यता क लिए सभी पाटिया क कायकर्ता प्रापका आदर करते है ।

श्री नगराम चौधरी

श्री नगराम पाली जिने क खारची तहसील के लाबिया ग्राम के निवासी हैं । झाजादी के बाद लाग बाग बड बेगार और जागीरी जुमो के विरुद्ध काप्रसी जन प्रादोलन म सक्रिय भाग लेन प्राप मारची प्राय और वही अजीनबीस का काय करते और रहने लग ।

इनकी सेवामो से जागीरी जुमोस त्रस्त जनता को बहुत सहायता मिली । इसी त्रम म य श्री नाथूरामजी मिर्धा के सम्बन्ध मे प्राये और किसाना की सेवा व सुधार को इन्हाने अपना ध्यय बना लिया ।

खारची क्षेत्र एक किसान बहुन क्षेत्र होने के बावजूद भी जागीरदारी शक्ति का गड समझा जाता था जिसका कमजोर कर किसाना को राजनसिब शक्ति प्रदान करने का श्रेय श्री नगराम चौधरो का ही है । श्री नगराम सामाजिक भ्रामय के विरुद्ध सघष करन के लिए भी प्रसिद्ध हैं और भ्रपायी चाहे काप्रसी हो या प्राय ये धीरन उसने विलाफ सक्रिय हो जात हैं । श्री नगराम मारची बनाक काप्रम के अघ्यता रहे और इमी क्षेत्र मे कई प्राय महत्त्वपूण पदा पर रहकर इन्होने समाज की सेवा की और पब भी के सवारत हैं ।

श्री नाथूलालजी शर्मा स्वभाव स ही समाज प्रभा हैं । भारत पाकिस्तान बटवारे क वक्त इ हान मारवाड जवशन पर पाकिस्तान जान वाल और वहा स आने वाल यात्रिया की खूब सेवा की इसी स व जनता म प्रिय हो गय । श्री शर्मा का श्री मारवाड जवशन पर बने रह कर जनसेवा करन के लिए अरजीनबीस का पेगा ही अपनाना पडा जिसस वे गरीबो को याय दिलात म समथ हात रहे ।

अष्ट नोकरशाही और सामंती प्रयाचार क विरुद्ध प्रभाव शाली ढग से जुमने क कारण श्री शर्मा जनता म विशय लोकप्रिय हुए । क्षेत्र की जनता को इनका विशय योगदान था प्राऊवा म स्वतंत्रता सप्राय का विजय स्तम्भ बनवाना और प्रति वष प्राऊवा के स्वतंत्रता प्रादोलन की स्मति म मला प्रारम्भ कर जन जागरण के दीप को सदा के लिए सजोरकर उसकी स्मति का चिर स्थाई बनाना । जनसवा म इनका उत्साह प्राज भी वसा ही बना हुआ है ।



श्री मोतीलाल एच० राका

श्री मोतीलालजी राका पाली जिल के बगडा ग्राम क निवासी हैं और कायबटार म व्यापार करत हैं । लोक-नरियण क समय म ही श्री राका जन प्रादोलन स जुठ हुए हैं । स्वतंत्रता प्रादोलन म प्रापने सक्रिय रूप से भाग लिया था । बगडी का स्वतंत्रता प्रादा सन का केन्द्र बनाने का थय विशय रूप म श्री मोतीलालजी का ही है । इनके सहयोग और मागदशन म बगडी न पाली जिल क अग्रणी काप्रसी कार्यकर्ता दिये हैं । स्वतंत्रता सप्राय म बगडी का प्राणाला जिल क प्रादोलन का मुख्य प्रायपण-स्थल बना रहा जहाँ स्वय श्री जयनारायणजी व्यास और भीठीलालजी बाबा प्रादि नतापाने 1934 म प्राकर जागीरी जुमो क विरुद्ध मगए की और लोक-नरियण की प्राया की स्थापना की ।



श्री मोतीलालजी व श्रातिकारी कार्यों का उत्तम उत दिनो के रिपामन के आई जी पी और तत्कालीन चीफ मिनिस्टर 'फ्लिड ने मो प्रपन पत्रा म किया है। उनके कारण वगडी ने जागीरदार के जागीरी अधिकार छीन कर उसने कुचर को दे दिये गय थ।

श्री मोनीलालजी लगातार लोक परिषद् के वाचनताओं को प्राथिक सहायता भी करत रहे, जिसने कारण बड़ा कांग्रेस पनपी और बहुत बड़ी मात्रा में लोक परिषद् व कांग्रेस के कार्यकर्ता बने।

श्री मोतीलालजी एक कुशल 'यापारी होने के साथ-साथ ममाज सबक भी है। वे लगातार गांव व क्षेत्र के विकास के लिए प्राथिक सहायता करत रहत हैं। स्त्रूल अस्पताल बालिका विद्यालय छात्रावास, सडक तालाब, जलप्रदाय योजना, गोचर भूमि सुधार आदि से लेकर प्राथिक उत्सवा मेला व त्योहारो तक ने दिल खोल कर सहयोग करना उनका स्वभाव बन गया है। प्राजकल श्री राबा जी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति प्रहिंसा तथा अग्रजत का प्रचार प्रसार करने वाले रचनात्मक संगठन 'अग्रजत विश्व भारती [अग्रुविमा] के अध्यक्ष हैं।



श्री गणेश लुहार



श्री गणेशजी लुहार का जन्म पाली जिले के सादडी वस्त्रे में हुआ और प्रारम्भिक शिक्षा के अलावा उच्च शिक्षा हेतु वे जोधपुर गये। जोधपुर के जसवत

बानज में अध्ययन करते हुए ही सन् 1945-46 में इनका सम्पन्न उत्साही छात्र नेता सब श्री हुशमरामजी मेहता देवनारायणजी व्यास के एम तिपथी आश्रित हुआ और ये राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की गतिविधियां में भाग लेने लगे। इसी दौरान इनका सम्पन्न लोक परिषद् के तत्कालीन नेता सब श्री जयनारायणजी ध्याम मधुरादासजी माधुर व द्वारकादासजी पुरोहित स भी हुआ और ये लोक-परिषद् द्वारा चलाये जा रहे जिम्मेवार हकूमत के प्रा-दोलन में जुड गय।

बवालान पाम बनने के बाद उन्होंने बाली व देगुरी में पेश के माय-साथ पाली जिले की राजनतिक गतिविधियां में सक्रिय गधि

लेना जारी रखा और विशेषकर सामंती जुल्मों के विरुद्ध लगातार आवाज बुलन्द करते रहे। जिन्हा कांग्रेस बमेटी, पाली म ये प्रनक उच्च पनो पर काय करते रहे और प्रदेश कांग्रेस के सदस्य चुन गये। राज्य सरकार द्वारा गठित नर्जी मुक्ति समिति के चबरमेन भी बनाये गये और किसानों के हितार्थ अनेक महत्त्वपूर्ण निषय तकर द हाने किमानो को राहत पहुँचाई।

श्री लुहार प्रगतिशील समाजवादी विचारा के पोषक है और सावजनिक कार्यों में रुचि ले रह हैं। आप राजनीति व अलावा सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी रुचि लेते हैं। दूसरी पचायत समिति के प्रधान के रूप में इनके द्वारा किये गय विचार कार्यों की प्राज भी प्रशंसा की जाती है।

हर वष 28 माच को मनाये जाने वाले जिम्मेवार हुकूमत दिवस की प्रतिज्ञा

'आज हम भूमि मरुधरा के एक मात्र उपाय उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिये सच्चे हृदय से प्रतिज्ञा करते हैं। मारवाड के प्राथिक, राजनतिक, सामूहिक और आध्यात्मिक ह्रास का कारण यही है कि यहाँ का शासन जनता के प्रति जिम्मेवार नहीं है, क्योंकि यह जनता की राय से जनता के हित में जनता द्वारा संचालित नहीं होता।

हमारा विश्वास है कि जनता की चुनो हुई पचायतों द्वारा चलने वाली जिम्मेवार हुकूमत ही राज, प्रजा और दस का कल्याण कर सकती है तथा यही नागरिक अधिकारों की रक्षा के अभाव, सत्रास व अत्याय के नाश तथा सभी सदगुणों के फलाने का सच्चा व सही साधन है। हमें इस साधन को पाने का ज म सिद्ध अधिकार है। हम जानते हैं कि उसकी प्राप्ति के लिये अलग अलग जातियों में मेल, जनता में ज्ञान का प्रचार व लोगों को निधनता से मुक्ति करने वाले रचनात्मक काम करने आवश्यक हैं। हम इन कार्यों की क्रिया बलि में शक्तिभर सहयोग देने।

मारवाड लोक परिषद् का ध्येय मारवाड का महाराज साहब की छत्र छाया में सत्य, शांति और याय व उपायों द्वारा चुनाव प्रणाली के आधार पर उत्तरदायी शासन कायम करना है। हम इस ध्येय को एक बार फिर वकालते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि इस ध्येय को पूर्ति के लिये हम तन मन और धन से कोशिश करेंगे।'

—अप्रैल 1941, मारवाड लोक परिषद् बुलेटिन



श्री मन्धारामजी महाराज



पाली जिले के खीमाडा (देमूरी) ग्राम के बाहर जगल म निवास करने वाले श्री मन्धारामजी महाराज के हृदय मे गरीबों की मलाइ और उह राहत पहुँचाने के

लिए एक गजब की तडफ है और यही तडफ उहे राष्टीय आन्दोलन के निकट ले आई है। दलितों को और गरीबों को ग्रामो म शोषण से कसे मुक्त किया जाए—इस पर अनेकों गोष्ठियाँ श्री मन्धारामजी महाराज की इस बुटिया म हुई हैं, जिसम स्वतन्त्रता मेतानी श्री मोहनराजजी (देवली) व देमूरी के विकास अधिकारी श्री बाल-कृष्णजी—भायाजी के अलावा स्थानीय कार्यकर्ता—सब श्री रामदासजी परिहार (मास्टरजी) लक्ष्मीरामजी पुराहित, येमाराजजी चौधरी, चुनीलालजी वण्णय (चक्कीवाले) आदि न कई कार्यकर्ताओं के साथ माग लिया और विविध कार्यक्रम भी बनाये।

श्री मन्धारामजी मे राष्ट्रप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है पर इन दिनों के अधिकारण समय प्रमुमक्ति म ही दे रहे हैं।



श्री अनन्तराम व्यास



बड़ा ग्राम के निवासी श्री अनन्तरामजी व्यास पाली जिले के जाने माने आदिवासी क्षेत्र के नेता हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बेडा व बम्बई

म हुई, पर य युवावस्था से ही राजनीति म सक्रिय हो गये और जागीरी गाँव म लाटा कृता, धठ बेगार व लाग बाग से पीड़ित और शोषित जनता के हितार्थ जुट गये। इ होने अनेकों अधिकारण समय आदिवासियों म 'पाप' गरीबों व मुसमरी के निवारण के उपाय योजना म लगाया और आर्थिक शोषण करने वाले ठेकेदारों और

बन विभाग के अष्ट अधिकारियों से आदिवासियों को मुक्त कराने हेतु आदिवासियों म शिक्षा प्रचार क माध्यम से जागृत लाने के कार्य मे लग गये।

श्री व्यास का सारा ही जीवन एक समर्पित कार्यकर्ता का जीवन रहा है। वे बेडा ग्राम पंचायत के लगातार अनेक वर्षों तक सरपंच रहे हैं, और वाली पंचायत समिति के उप प्रधान भी रहे हैं। उनके कार्यकाल म अनेक महत्वपूर्ण विकास-कार्य अस्पताल स्कूल नया शासालों, महिला मण्डल आदिवासी छात्रावास बाघ आदि सम्पन्न हुए हैं।

आदिवासियों, गणसिपा व भीला म 'यासजी अत्यंत लोकप्रिय हैं। प्रतिदिन इनकी भीड़ बेडा स्थित इनके निवास-स्थान पर देखी जा सकती है। लोग अपनी हर प्रकार की समस्याओं के समाधान हेतु इनके पास आते हैं। व्यासजी स्वयं एक प्रगतिशील कार्यकर्ता हैं और कृषि कार्यों मे स्वयं रुचि लेते हैं।

जीवन म अनेक उतार चढ़ावों के बीच भी 'यासजी अपने धर्म और जनहित के कार्यों हेतु समर्पित रहे हैं।



श्री मोहनराज रातडिया



श्री मोहनराजजी रातडिया सादरी निवासी हैं और प्रारम्भिक शिक्षण के बाद ही स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ गये थे। श्री रातडिया मोडवाड म चलाये गये स्वाधानता

आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं और जालीरी प्रयास म पीड़ित गरीबों का जागत करने म उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

मारवाड लोक परिषद के प्रमुख नेता श्री कृष्णजी वाघना के नेतृत्व म कार्यकर्ताओं का एक संगठित दल तयार हुआ था, जिसने खतरे उठाकर भी राष्ट्रीय आन्दोलन को अपना प्रथम कर्तव्य माना था उस दल के अनुयायी श्री रातडियाजी।

श्री मोहनराजजी बड़ावस्था के कारण अब अपने पुत्रों के पास बम्बई म ही निवास करते हैं।



श्री माणकचन्द डोलिया

श्री माणकचन्दजी डोलिया (जन) का जन्म पाला जिले के निम्बाज बरवे में सन् 1920 में हुआ। इनका पिता श्री फूलचन्दजी डोलिया और दादा श्री तख्त मलजी डोलिया भी महात्मा गांधी के आन्दोलनों से प्रभावित होकर राष्ट्र भक्त बन गये थे। मारवाड़ लोक-परिषद् के तत्त्व में गठित बानर सेना के स्थानीय अग्रगण्य चुन जान के बाद ठाकुर निम्बाज त इन पर कड़ी निगरानी रखना शुरू कर दिया। बैठ बेगार व लागवाग व लिये किसानों पर हाँ रहे जुल्मा के विरोध में धावाज उठाने पर इन्हें और इनके पिताजी का ठिकाने में बिठाया रचना और हूट लख म तम व परेशान करना आम बात हा गई थी।

सन् 40-41 में लोक-परिषद् के तत्वावधान में सत्रिय रूप में काम करने के अपराध पर निम्बाज जामोरदार त श्री माणकचन्दजी का छ माह की कद और पाच भी स्पय जुर्माने की सजा दी थी पर चौध कोट जोधपुर से वरी हाँ मय। इनका प्रारम्भिक व म-क्षेत्र निम्बाज चण्डावन, पाली व भूनाज श्रान्ति क्षेत्र रहे पर बाद में मावर विजयनगर प्रादि शहरा में भी व्यापार के साथ साथ दस सवा का काय करने रहे।

राष्ट्र की आजादी में सत्रिय काय करते हुए इन्होंने ममाज मुघार के कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। पशु बलि के विरोध में निम्बाज में इ होने सत्वाग्रह किया और प्रति वष हान वाली भ्रंशे की बनी का रुकवाया। प्राप स्वभाव से बड ही निरर और स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति है।

श्री तेजराज राणावत

स्वर्गीय श्री तेजराजजी राणावत का जन्म पालना के निकट लुडावा ग्राम में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा बम्बई में हुई पर महात्मा गांधी द्वारा चलाय

यय आजादी के सघन और मत्वाग्रहो से ये प्रभावित हुये। मारवाड लोक-परिषद् के सदस्य बनकर उन्होंने लुडावा व प्राप्त प्राप्त के ग्रामों में जन जाग्रति का नाय शुरू किया। स्थानीय जामोरदार के विरुद्ध ग्राम वागिया द्वारा चलाये गय आन्दोलना में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई।

श्री राणावतजी मूल रूप से रचनात्मक कायकर्ता थे। आजादी के बाद इन्होंने अपना सारा समय समाज सुधार और शिक्षा सत्वाप्राप्तों से समर्पित कर दिया। मारवाड जन युवा सघ में सन 1940 के दशक में समाज सुधार, कया विप्रय, वर विप्रय, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा विषयों विवाह किन्तुल खर्चा एवम् आडम्बर प्रादि के विभिन्न मुद्दों पर मारवाड प्रदक्ष में एक सशक्त आन्दोलन खडा किया था। श्री राणावतजी वरों तक इस सत्वा के मन्त्री रहे, साथ ही साथ उन्होंने श्री शिक्षा की आवश्यकता महसूस करते हुए श्री मरुधर महिला शिक्षण सघ के माध्यम से खीमल में बालिकाओं के लिये विद्यावादी नामक सत्वा की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री पाणवनाथ जन वनिज, पालना के भी वरों तक मन्त्री रहकर इन्होंने सेवा की।

अपने साम्यपूर्ण जीवन एवं मदुमावो व्यवहार के कारण वे बहुत ही लोकप्रिय हुये।

श्री मोडूराम शर्मा

श्री मोडूरामजी ग्राम कोट तहसील वाली के विवासो व और वाली तहसील में लोक परिषद् के सत्वापका में स एन रहे हैं। य बडे ही निरर और स्पष्ट वक्ता थे। जामोरी जुल्मा के विरुद्ध इन्होंने न केवल कोट-बालिया में वरन् लुडावा साडराव, मुण्डारा प्रादि ग्रामक ग्रामों में सन् 1940-44 तक जनसभायें आयोजित कर सामाज्ता जुल्मा से ब्रत्त जनता का समर्थन किया था।

ग्राम काट में भी पाचरूमि का लकर एक बडा आन्दोलन चला था उसका नेतृत्व कर उस उ हाने हो मपन बनाया था।

बडी ही कठिन और विकट परिस्थितियों में श्री मोडूरामजी ने समठन का काम किया था।

हमारा राष्ट्र हमारी सबसे मूल्यवान् सम्पत्ति है।



श्री केसरीमल तलसेरा



श्री केसरीमलजी तलसेरा का जन्म पाली जिले के सादडी कस्बे के एक सम्पन्न परिवार में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सादनी में ही हुई, लेकिन विद्यार्थी जीवन से ही ये श्री फूलचन्दजी बाफना और श्री घोरजमलजी बच्छावत सरोखे स्वतन्त्रता सेनानिया के सम्पर्क में आये और लोक-परिपद के संस्थापकों में से एक रहे। इन्होंने सादडी और आस पास की जनता में जन जागृति पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका भ्रदा की तथा स्थानीय सरकारी अधिकारियों और पुलिस वालों के जुल्मों और ज्यादतियों से लोगों को बचाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी।

श्री तलसेराजी लोक परिपद के अनेक महत्वपूर्ण पदा पर रह चुके हैं और उच्चतामक कामों में सदा रुचि लेते रहे हैं।

श्री नथमलजी मूथा



श्री नथमलजी मूथा पाली जिले के चण्डावल ग्राम के निवासी हैं और अत्यधिक बढ़ावस्था के बावजूद मारवाड लोक परिपद द्वारा



घणेशो हवेली के बरामदे में बड़े स्वतन्त्रता सेनानी धीमूथाजी।

चलाये गये आन्दोलन की यादें आज भी वे लोगों को बड़े चाव से सुनाते हैं। आज में 60 वर्ष पूर्व इन्होंने मारवाड लोक परिपद के भूमिगत और जेल में रहने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों को आर्थिक सहयोग देकर उनके उल्हाह को बनाये रखा, उनकी यादें आज भी ग्राम चण्डावल के निवासी बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं।

श्री मूथाजी की हवेली का काफी सारा भाग लोक परिपद की गतिविधियाँ का केंद्र रहा है। लोक नायक श्री जयनारायणजी पास अक्सर बहू आकर ठहरा करते थे। चण्डावल के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी श्री मांगीलालजी त्रिवेदी को श्री मूथाजी का घर पूरे सहयोग मिला था।

क्रान्तिकारियों की शरणास्थली ग्राम पाचेटिया

ग्राम पाचेटिया (मारवाड जवशन) के यद्ध तथा विद्वान निवासियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार बगल के क्रान्तिकारी, जो यहाँ 'बिहारी बाबू' के नाम से जाने जाते थे, को राजस्थान के विस्थापित फ्रांतिकारी ठा केशरीसिंहजी व प्रतापसिंहजी पाचेटिया ग्राम में लामे थे और वे स्वयं अपने रिश्तेदार श्री चडोदान जी के नौहरे में घास चारे के ढेर के पीछे छिपकर रहे थे। यहाँ से इन्होंने कुछ शस्त्र व बम बनाने का सामान एकत्रित कर दिल्ली व कलकत्ता भेजा था। एक रेल पासल का मेद खुल जाने पर इन्हें यहाँ से कुछ समय के लिए भागना पडा था, पर श्री प्रतापसिंहजी गिरफ्तार कर लिये गये थे।

इन फ्रांतिकारियों की सम्पूर्ण सुरक्षा व खान पान की व्यवस्था श्री चण्डोदानजी ने ही की थी। इनके अलावा इनक भाई श्री आसकरणजी व वीर स्वाधीनता प्रेमी श्री गणेशदानजी तो इन फ्रांतिकारियों के सम्पर्क से स्वयं आजादी के योद्धा बन गये थे और कहते हैं इनके विरुद्ध भी वारंट था।

ठा केशरीसिंहजी वारंट से अपनी पुत्री चन्द्रमणि को एक पत्र में लिखा था— 'पाचेटिया आतुव द का उपकार भेरे हृदय पटल पर सदा अंकित रहेगा।'



पुरानी यादों से भरा एक महत्वपूर्ण पत्र जो पाली जिले के स्वाधीनता आन्दोलन की प्रारम्भिक घटनाओं पर प्रकाश डालता है।

आर डी गट्टानी

पीठम फाइटर,

रिटायड हाईकोर्ट जज

एचएम-एम पी (लाकनम)

फोन 21 668

जालीरी रोड, जोधपुर

प्रिय माई माहनराजजी

बारहम शताब्दी समाराह की पाली परिचालन एव कायां वयन समिति की आर स प्रापका पत्र दिनांक 6 8 85 का मिला। पत्र व बाप पुरानी याद फिर स उमर आर, देशी राज्य एव मामतगाही युग की। यह सही है कि राष्ट्रीय आन्दोलन में पाली जिन का पाली अछेरी भूमिका रही है। यथा शक्ति मति भरा भी कुछ हिस्सा उमर रहा। सन 37-38 में श्री पतहराजजी पुराहित (जब महामा हरीहरनाथजा दिल्ली बन्द) न पाली में ऊनी गलीच बनान व निय उद्योग मन्दिर स्थापित किया—य प्रातिकारी व श्री ममरत अग्रजी भारत स निष्कासित थे। सन् 1938 में मारबाड लाक परिषद् की स्थापना व बाद जाधपुर के भलावा महिला शाखा पाली में ही खुली। बाद में बाली सादडी घाणराव नाडान और दमरी में बाली गई। बाली में श्री छोटमसजी मुराया (अब स्वगवासी) और डारकाप्रसाजजी अग्रवाव (गुप्ता) का सहयोग रहा। सादडी में पूनबदनी बाफणा और कूलबदजी राठीन न महाभता की। पहल ता ये लाग डर हूय थ—हम प्राग प्रात का भी मना किया फिर जब पहूच गय ता पूरा पूरा सहयोग निया और खूब काम हुआ। घाणेराव में स्व व हैयालालजा श्रीमाली (वदिक) और नाडाल में श्री पुलराजजी का सहयोग रहा। उन निना जागीरी इलाका में रहन बासा की हालत बहुत अगमयक थी। फिर भी माई लाग न हिम्मत की और प्राग बड।

सन् 1936 में श्री छुननराजजी चौपाननीवाला (अब स्वर्गीय) बाली जिल में नम्रवरण रखे गये और सन् 1940 तक मुझे बहा रया गया।

दुधर साजन में श्री मीठालालजा बाका (अब स्वर्गीय) और चण्डाबल में श्री मागीलालजी तिवनी में जोरा स काम किया।

नीमाज में माई माधोलाल सुधार न मोर्चा समाला। वस सठ रिबबदासजी बगरह भी अग्रप्रथम सहायता दत थे। जतारण में बनील श्री वामुदेव जी शास्त्री (स्वगस्थ) न अपन दग स काम किया। रानी, रवाली, सुडाला किन किन गावा के नाम मिनारु—धीर-धीर सभी आर जागति फली।

सन् 1942 व पाच में चण्डाबल में जिम्नवार हुकूमत का निन मनात समय मागीलालजी बगरह पर जागीरदार के लाग न हमला किया—बहुता के चाटें लगी। जाधपुर सरकार की जब इत बारे न बहा, लिया गया तो उसने और जलत पर मक छिडक कर बहा दफा 144 जाता फीरदारी के तहत हुकम निवाला और पाच स अधिक कठठा हान पर पाबदी लगा दी। उस पाबनी का ताउन का जिम्मा सीमागय स भुक्त पर ही रहा। और, जना कि बाद में चण्डाबल में तत्कालीन पीठे मास्टर स मालूम पडा कि उस दिन उट्टान जागीरदार व हाथ स बबूक नहीं छोनी होती ता मालूम नहीं बवा हाता।

लाग-बाग बठ बगर व मामलो में वस ता सभी जागीरदार शापण करने पर पूरे माहिर व परतु रायपुर व रास ठिकान कल्पित और भी अग्रणी थ। नीमाज भी पीछ नहीं था परतु बहू जो माधोलाल न डट कर उनका मुकाबला करव बिस्वा लाग के बार में जागीरदार को न केवल शिबस्त दी, वरन् सशस वस के जागीरदार क कुछ लागो को सजा भी डकती के जुम में मुगतनी पडी। बिराटिया के श्री मोहनलालजी शर्मा एव पाली के स्व श्री शिवकरणजी एव बिसूकररणजी जोशी ता जाधपुर में रहत ही आगतन में भाग लेने वाला में वहेने थे।

आपन यह पत्र लिखकर मादें ताजा करादी तन्व घयवाद।

आप सब स्वस्थ एव प्रसन्न हाग।

बिनीत,
रणछोड़बात गट्टानी



पाली जिला निवासी रतनव्रता सेनानी, जिनका कार्यक्षेत्र जिले के बाहर रहा



श्री मानमल जैन

□

श्री मानमलजी जन मूल रूप से ग्राम चाचाडी (रानी) के निवासी हैं। सन् 1930 में ही वे धाजादी के आंदोलन में कूद गये थे। लोक परिषद् के सत्यापकी में से श्री मानमलजी एक हैं।

सन् 1931 में श्री मानमलजी जयनारायणजी 'याम द्वारा गठित 'मारवाड ग्रूप लीग' के मंत्री चुने गये। सन् 1932 में इनको एक वर्ष की जेल हुई और प्रजमेर जेल में रहे गये।

सन् 1934 में पाली में धाजादी के आंदोलन को आगे बढ़ाने में उद्देश्य से 'मारवाड उद्योग मंडल' की स्थापना हुई और श्री जन उसके समापति चुने गये। सन् 1936 में राजपूताना दधी राज्य लोक परिषद् के मंत्री चुने गये और उसी वर्ष जीधपुर राज्य सरकार ने इनको एक वर्ष की नजरबंदी की सजा दी। इसके पश्चात् तो श्री जन प्रात व देश की राजनीति में सतिय रूप से भाग लेते रहें।

पर, आज 82 वर्ष की आयु में श्री मानमलजी वे ये उद्गार कितने ममस्पर्शी और प्रेरणादायी हैं—

"सन् 1958 से ही राष्ट्र का राजनतिक स्वरूप बदलने लगा तथा राजनतिक जीवन में सत्ता, स्वाध व ऐश्वर्य की प्राप्ति का सघष शुरू हो गया था तब से मने और मरे कई स्वतंत्रता सेनानी साधिया ने, जो तब और त्याग को ही राजनीति का ध्येय मानते थे, राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना बंद कर दिया तथा रज नात्मक कार्यों—खादी काय आदि में जुट गये। लेकिन आज जीवन की सया बेला में भी मेरे मन में राष्ट्र के लिए मर मिटने की तमसा जिंदा है।

जनाब मोहम्मद यासीन नूरी

□

मोहम्मद यासीन नूरी साहब का खानदान मूल रूप से पाली का है और इनके परिवार के सभ्य आज भी पाली व ब्यावर में निवास करते हैं। जनाब नूरी साहब का राजनतिक जीवन ब्यावर

से ही शुरू हुआ और महाराष्ट्र की बम्बई नगरी इनका प्रमुख कायक्षेत्र बना। स्वयं उनके तथा परिवारजनों के राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण इहे अनेक प्रकार की यातनाएँ भेलेनी पड़ी पर य घडिग रहें और राष्ट्रीय मूल धारा से जुडे रहे। बम्बई प्रांत के प्रथम कांग्रेसी मंत्री मण्डल में आप केविनेट स्तर के मंत्री चुने गये और अपनी कायकुशलता से सबको प्रभावित किया। राजस्थान व राजस्थानियों से भी आपने अपना सम्बन्ध जीवन भर निभाया। आप सदब राष्ट्रीय एकता व साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक बने रहे।

मौलाना अत्तार मोहम्मद

□

वैसे तो मौलाना अत्तार मोहम्मद साहब का कायक्षेत्र और निवास क्षेत्र ब्यावर वन गया था, पर इनका मूल निवास पाली जिला ही था और राष्ट्रीय स्वाधीनता आ गोलन की गतिविधियों का केन्द्र होने से इहोने भी अपना कायक्षेत्र ब्यावर नगर को बना लिया था। बचपन से ही इनम राष्ट्रीयता कूट-कूटकर मरी थी। ये हिंदू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। मौलाना सा बडे ही जोशील और प्रभावी वक्ता थे विकट से विकट परिस्थितिया में भी चबराते नहीं थे।

श्री रामचंद्र नदवाना

□

श्री रामचंद्रजी नदवाना का जन्म सादडी निवासी श्री मोतीलालजी नदवाना जो मेवाड राज्य में एक अधिकारी थे के घर सन् 1919 में हुआ था। सुबसिद्ध सामाजिक कायकर्ता श्री मवरलालजी से प्रभावित होकर श्री रामचंद्रजी राष्ट्रीय स्वाधीनता की ओर झुके और सन् 1938 में स्वतंत्रता आंदोलन के नेता श्री गणिकलालजी वर्मा के सम्पर्क में आये। सन् 1942 के आंदोलन में इहे जेल की सजा हुई और जेल में कुष्यवस्था के विरुद्ध मूल हडताल की की।

समाज सुधार में अग्रणी होने के नाते इह जाति बहिष्कार का दण्ड भी भुगतना पडा। इन दिना वे अपने निवास स्थान ब्यावर (जिला चित्तौड) में विन्साय सबा सस्थान का काय देव रहे हैं।



पाली जिले के राजनैतिक कार्यकर्ता



श्री धर्मोचन्द जैन



श्री धर्मोचन्दजी जैन का जन्म पाली जिले के भूझा ग्राम के एक व्यावसायिक परिवार में हुआ। आपको पढाई का कोई विशेष अवसर नहीं मिला, परन्तु अपनी योग्यता और परिश्रम से आपने बड़े-बड़े राष्ट्रीय स्तर का उद्योग है। राजस्थान में ही नहीं बल्कि हिमाचल प्रदेश, पंजाब व हरियाणा व देश के अन्य भागों में भी आपने सफल उद्योग स्थापित किये हैं।

सन् 1961 में आप ग्राम भूझा के सरपंच बने और अनेक वर्षों तक इस पद पर चुने जाते रहे और आपने इस छोटे से ग्राम को एक बड़े औद्योगिक क्षेत्र में परिणत कर लिया।

जिने के सभी राजनैतिक कामकाजों में आप बहुत लोकप्रिय हैं। हर वक्त जल्दतरतम लोगों को व सस्थाओं को धार्मिक सहायता देते रहते हैं। सन् 1981 में आपकी सबसेअग्रिम में पाली जिला परिषद् का प्रमुख चुना गया। सन् 1988 में आप द्वारा पाली जिले में प्रमुख चुने गये।

सन् 1982 में बाढ़ के समय और बाद में अनाज के वर्षों में आपने उनके उल्लेखनीय कार्य किये हैं। जिला प्रमुख के रूप में जिले का दौरा करते वक्त अपनी ओर से भी लगातार बाढ़ पीड़िता और अनाज पीड़िता की सहायता करते रहते हैं।

पाली जिला कांग्रेस कमेटी का हर नाम में आप प्राण प्राण धार्मिक सहायता व सेवा करते हैं। आपके कांग्रेस दल का एक सचिव होने का गौरव प्राप्त है।

श्री विजयसिंह सिरियारी



श्री विजयसिंह सिरियारी का जन्म पाली जिले की ... की तहसील के सिरियारी नामक ग्राम में हुआ। परिवार की वजह से धार्मिक स्थिति के बावजूद आपने उच्च शिक्षा प्राप्त की।

राजस्थान में जागीरी मरामति के बाद जागीरदारों को उचित मुआवजा दिलाने के संधर्ष से आपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की तथा बड़ी राजनीतिक सूझबूझ के साथ भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के समक्ष छोटे जागीरदारों की ओर से एक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर उनका पक्ष प्रस्तुत किया जिससे नेहरूजी बड़े प्रभावित हुए। उसी समय से श्री विजयसिंहजी ने नेहरूजी और कांग्रेस से निकट के सम्बन्ध स्थापित हो गये। फिर तो, सांसद के रूप में आपने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की और कई मामलों में राजस्थान का मजबूती के साथ पक्ष प्रस्तुत करते हुए राजस्थान के विकास में सहयोग प्रदान किया।

ये तो समूचे राजस्थान में ही पर विशेष कर पाली जिले और मारवाड़ के शक्ति समाज को कांग्रेस के निवृत्त होने में श्री विजयसिंहजी ने महत्वपूर्ण भूमिका भरा की जो विरहमरणीय घटना के रूप में याद की जाती है।



श्री माणकलाल माथुर



श्री माणकलाल माथुर सोजत शहर के प्रसिद्ध वकील श्री मीठालालजी माथुर के सुपुत्र हैं। वकालत इन्हे विरासत में मिली है। आपके परिवार का प्रभाव प्रतपूर जोगपुर राज्य का समय

में ही चला आ रहा है।

वकील होने के नाते श्री माथुर की दृष्टि में जनता पर जागीरदारों के जुम और बेगार के मामले बराबर घात रहे जिससे क्षेत्र की दुखित जनता के प्रति आपके मन में सहज सहानुभूति जागत हुई और आप जन आन्दोलन में जुड़ पड़े। अपनी विनिष्ट सामाजिक स्थिति और योग्यता के कारण इनको बिलाना और दलित वर्गों को मजबूत करने की जिम्मा में सफलता मिली। सभी वर्गों में अपनी सेवा व व्यवहारकुशलता से श्री माथुर बहुत लोकप्रिय



हैं। एक सन्धे अर्धे तक ये जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहें एवं सोजत प्लाक कांग्रेस अध्यक्ष व अग्र्य महत्वपूर्ण पदा पर रहे।

पाली जिले के महत्वपूर्ण साम तो नेताओं को कांग्रेस के भण्डे के नीचे लाने का श्रेय आपको ही है। आपने श्री मोठालाल काका श्री हरीमाई किंकर, श्री यशवतजी रुचिर श्री मथुरादासजी माथुर जन तपोनिष्ठ देश प्रेमी श्रीर स्वतंत्रता सेनानिया के साथ व मागदशन म महत्वपूर्ण काय किया है। पाली जिले के विकास व समृद्धि म भी आपकी बड़ी भूमिका रही है।

जागीरदारों के गठबन्धन से चले भूस्वामी आन्दोलन को अग्रफल कर जागीरदारी तत्त्वा का छिन्न मिन्न करने का श्रेय भी श्री माणक माथुर को ही जाता है।



श्री माणोलाल अग्र्य



श्री माणोलालजी अग्र्य पाली जिले के भाडोल ग्राम क मूल निवासी है। इन दिना ज्यादातर जयपुर व पाली शहर मे रहत हैं।

श्री अग्र्य ने एक हरिजन परिवार मे पदा होकर भी अच्छी

शिक्षा प्राप्त की। विशेष कर हिंदी और संस्कृत भाषा का आपको अच्छा ज्ञान है। संस्कृत का ज्ञान हाने से ही वेदशास्त्र सहित अनेक ग्रंथों का अध्ययन करने में ये सफल हो सके हैं। जिन लोगों ने धर्मशास्त्रों के तुलनात्मक ज्ञान पर आपके भाषण सुने हैं वे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके हैं।

जीवन के प्रारम्भ स ही श्री अग्र्य ने समाज सुधार का पीडा उठाया और हरिजन समाज तथा समस्त धन्युचित जातिया म शिक्षा और न्यायमुक्ति का अभियान चलाया। दलितों की दयनीय हालत को सुधारण की प्रणया ही आपको राजनीति म सार्ग। वपों तक बरिध संगठन क माध्यम मे आप काय करत रहे और आज भी सवा के प्रति समर्पित है। सन् 1977-80 तक अल्पावधि क लिए श्री अग्र्य जनता पार्टी के सदस्य भी बन पर अधिक समय तक वहाँ नहीं रह सके। वपों तक कांग्रेस प्रत्याशी के रूप म विषया यक रहे और मंत्री परीषद् के सदस्य रहे। अपने सादगी पूण और अर्धे सत्कारमय जीवन के कारण श्री अग्र्य जन-साधारण म काफी लोकप्रिय है।



श्री खुशराज कालानी



स्वतंत्रता आन्दोलन की रणभूमि चण्डावल के निवृत्त स्थित देवली (रायपुर) के एक सम्पन्न परिवार म जनमे श्री खुशराजजी कालानी मारवाड लोक परिषद् के बालानी मारवाड लोक परिषद् के प्रसिद्ध कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय श्री शंकरलालजी कालानी के पुत्र हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आपने पाठ्य एकाउटेंट के रूप मे करियर प्रारम्भ किया। शीघ्र ही उस क्षेत्र मे ख्याति प्राप्त की। अपने मित्रों के आग्रह से आप राजनीति म बूद पडे और सन 1967 मे विधान सभा का चुनाव सोजत क्षेत्र से जीतकर सक्रिय राजनीति म आए। तब से लगातार आप अपने व्यवसाय के साथ-साथ राजनीति म भी सक्रिय हैं। अपने ग्राम को आदर्श ग्राम बनाने की तीव्र इच्छा के कारण कालानी जी अपने गाव के सरपंच भी बने और अपने ग्राम का राजस्थान का आदर्श ग्राम घोषित करवाया।

व्यवहार कुशलता दूरदृष्टि और राजनतिक सूक्ष्म-बूझ ने आज लोगों मे श्री कालानीजी को लोकप्रिय बना रखा है।



श्री केवलचन्द गुलेच्छा



जाग्रत युवा शक्ति के प्रतीक और राजनीति के सजग प्रवर्ती श्री केवलचन्द्रजी गुलेच्छा पाली जिले की राजनीति म अपनी विशिष्ट स्थान रखत हैं। इनका जन्म पाली तहसील के गडवाडा

ग्राम के एक सम्पन्न परिवार म जा आजादी के आन्दोलन क वक्त से ही राजनीति म सक्रिय रहा है म हुषा धत राष्ट्र प्रेम और राजनीति मे रुचि इहे विरासत मे मिली।

आजादी के पश्चात भी सामती जुनोस मे पीडित धर्मोद्य जनता को जाग्रत कर उडे शोषण स मुक्त कराने के धनक अभियान



इन्होंने चलाये धीरे मकलता प्राप्त की। पिछले वर्षों इन्होंने पाली शहर क विकास की धीरे विश्व ध्यान दिया धीरे धरणी लोका-प्रियता के कारण पाली नगर परिषद के अध्यक्ष चुने गये। इनके कायकाल म पाली म जो विकास काय सम्पन्न हुए व स्मरणीय रहग। वतमान म काय पाली धरवन को कापरेटिव बक के अध्यक्ष हैं धीरे पूरे धवन के सर्वांगीण विकास की धीरे सजग रहते हुए विकास योजनाका को विचारित करवाते हैं।

श्री गुनछा एउ उच्च शिक्षा प्राप्त इजीनियर हैं धीरे पाली म कपड का एक विशाल रगार्द छपाई का उद्योग चलाते हैं, पर अधिवास समय राजनीति धीरे जन सेवा के कार्यो म ही समात हैं।

कर रहे हैं। प वाली नगर एउ क्षेत्र की धनेक सामाजिक, साहित्यिक, सावजनिक संस्थाका से जुडे हुए हैं।

वाली क्षेत्र म स्पाई महत्व के विवात कायों के निर्माण म इहाने विशेष रधि ली है।



श्री रघुनाथ परिहार



श्री रघुनाथजी परिहार एउ वाबेट, बानी बीसे लो धरमी गनु 1984 स वाली स विधायक हैं पर विद्यार्थी जीवन स ही ये राष्ट्र प्रेम की भावनाधो से जुडे रहे हैं। विभिन्न विधान धादोलनो म इहोने सक्रिय रूप से भाग लिया है।

इनका पारिवारिक धधा बेठी है। ये धाम मुण्डारा के निवासी हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने क पश्चात इहोम भारतीय वायु सेना म नौकरों करन धरना जीवन प्रारम्भ किया लेकिन कुछ वर्षों बाद वाली म इहोने ककालन शुरू कर दी धीरे राजनीति म सक्रिय रूप स भाग लेने लगे। श्री परिहार वाली पचायत समिति के प्रथम धीरे चुन गये। धरमी राजस्थान प्रवेश काप्रेस कमेटी की कायकारणी समिति के सदस्य हैं धीरे विधान सभा मे भी प्रगति शील नीतिका का समर्थन करते हुए धीरे महत्वपूर्ण मसलो पर धरना योगदान करत रहते हैं।

राजनीति के धलाका सामाजिक सुधार को दिना मे भी इनकी सेवा महत्वपूर्ण रही है। माली जाति शिक्षा प्रचारक सभ के ये वर्षों तक ध यक्ष एव मभी रह। फालना स्टेशन पर माली जाति शिक्षा प्रचारक सभ की स्थापना कर एक छात्रावास का भी संचालन



श्री चन्दनसिंह



श्री चन्दनसिंहजी न एम ए एल एल बी तक शिक्षा प्राप्त कर वाली मे ककालन शुरू की धीरे साय हो साय राजनीति म भी प्रवेश किया। उजो दिना तहमील पचायत का गठन हा रहा था धीरे चन्दनसिंहजी वाली सहसील पचायत के अध्यक्ष चुने गये। इसके पश्चात लो ये राजनीति म कापी सक्रिय हो गय धीरे पचायत समिति वाली के प्रथम चुन गये। इनका जनमम्पक इतना ध्यायन था कि मभी वर्षों के लोय इतका सम्मान करते थे। गरीब एव कमजोर बग के हितो की रक्षा करते हुए उहे हर प्रकार की राहत एव सुविधायें प्रदान कराना इनका लक्ष्य रहला था। धरने इहो प्रगतिशील विचारो के कारण ये काप्रेस संस्था से जुड गये धीरे लोक काप्रेस एव जिना काप्रेस के पदा पर महामभी का काय किया।

समाज सुधार के क्षेत्र मे भी इहोने लोको को प्रेरणा दी धीरे क्षेत्रीय समाज म धनेक सुधार लाने का श्रेय इनको है। श्री चन्दन सिंह स्वयं बड विद्वान अछड लेखक धीरे अध्ययनशील व्यक्ति है। इह धम और साहित्य का गहन ज्ञान है धीरे विद्वान साधु सन्तो से सम्पर्क करके हर प्रकार के गान म वद्धि करने का इह शौक है। इहोने सोनीगरो ना इतिहास नामक ऐतिहासिक पुस्तक की भी रचना की है।

यात्यकान धीरे युवावस्था म शिकार सेवने का धर्यधिक शौक हाने पर भी इहोने स्वत हा प्रसिद्ध जन मुनि श्री मद्रकर विज्ञप्ती के समझ कभी शिवार न करने की प्रतिज्ञा धारण की, धाराव पीने का शौक को इह रहा ही नहीं। स्वय शिक्षित होन के कारण धरने बच्चा को भी उच्च शिक्षा दिनायी है। इनके परिवार का जागीरी से निवड का सम्बन्ध होते हुए भी इहोने ह्मेका भूमि-सुधारो का पक्ष लिया है धीरे उस दिना म काय भी किया है।



पचायत समिति के प्रधान रहत इहोने आदिवासी क्षेत्र म अनेक प्रकार के विकास-काय प्रारम्भ किये। गावो की घोर इहोने विशेष ध्यान दिया। आज भी ये वाली क्षेत्र म ही नही बरन पूरे पाली मे जिले अघनी लगन और कतव्यपरायणता के लिए प्रसिद्ध है और अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

राजपूत घोर जागीरदार होने के कारण इनका अघने समाज म भी बडी प्रतिष्ठा और महत्व प्राप्त है।



श्री माधोसिंह दीवान



दीवान श्री माधोसिंहजी का जन्म जोधपुर जिले के बिलाडा नगर म सिरवी समाज के प्रसिद्ध घमगुह बिलाडा दीवान के घर म हुआ, जो पूर्व जोधपुर राज्य का

प्रभावशाली जागीरदार परिवार रहा है। 'श्री आर्द्र' दाता की बटेर' बिलाडा, जिसकी जागीर की जमीनें पाली जिले मे ही नही, दूसरे जिलो के भी अनेक गावो मे है, उतकी आमदनी महत् व माताजी के दीवान होने के नाते इन्ही की हैं। साथ ही राजस्थान के बाहर भी मध्यप्रदेश, कर्नाटक यू पी व अजय राज्यों म जहा नही भी सिरवी समाज है वही पर 'बडर' है और उनके ये ही दीवान और घमगुह हैं इससे इनका प्रभाव क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है।

इनकी शिक्षा बिलाडा व कलकत्ता म हुई और ये विज्ञान मे उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। भारत के बाहर रह कर भी इहोने वाणिज्य एव विज्ञान विषय मे दक्षता प्राप्त की है।

इहोने सन् 1972 मे निदलीय की हैसियत से लोकसभा का चुनाव लडा परन्तु हार गये। तत्पश्चात् 1981 मे इहोने कांग्रेस उम्मादवार के रूप मे राजस्थान विधान सभा का चुनाव लडा और विजयी रहे। 1985 मे ये दुबारा विधायक बने और अनेक महत्व पूर्ण विभागो के कैबिनेट स्तर के मंत्री बने। अकाल राहत मंत्री के रूप मे इहोने राज्य म अकाल राहत का समुचित प्रव घ किया व अनाज और चारे की घर घर पहुंचा कर मुलभ करवाया। वन मंत्री के अघने काय काल म श्री दीवान वन-मरक्षण और अजय पशु संरक्षण म मूलभूत मुधार करने के लिए प्रसिद्ध हैं। ये एक वाय्य ईमानदार और निष्ठावान कांग्रेसी कायकर्ता हैं साथ ही बडे सरल स्वभाव व मिलनसार एव सज्जन यक्ति हैं एव सीरवी किसान समाज के बहुत प्रभावशाली और वरिष्ठतम नेता हैं जाति स



श्री असलम भाई



श्री असलम खा जी वाली के निवासी है और वाली क्षेत्र स ही विधायक भी रह चुके है। एक धनी परिवार म जन्म असलम भाई अघने सादगीपूर्ण जीवन और मधुर ध्यवहार के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

बचपन स ही साबजनिक सेवा की धार उनकी रुचि रही है। विकास खण्ड वाली के ग्रामो मे इहोने राष्ट्रीय विवास व शिक्षाप्रद फिल्म का प्रदर्शन कर ग्राम ग्राम म जागृति का विमुल बजावा। वर्षो तक इहोने गावा म काय किया और तभी से गावा की गरीबी, मुखमरी तथा बेरोजगारी के इहू दशन हुए और कांग्रेस क एक सिपाही के नात इहोने अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया।

इहान गोडवाड खेल सघ की स्थापना की और खिलाडियो की प्रोत्साहित करने के कई कायक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न किये। असलम भाई अनेक स्थायीय मामाजिक सस्थाओ से जुडे हुए है और मवारत हैं।



श्री केशरीसिंह जोजावर



श्री केशरीसिंहजी का जन्म पाली जिले के खारकी तहसील क जोजावर ग्राम म हुआ। एक बडे जागीरदार हान के बावजूद उनका दृष्टिकोण समयानुक्रम और जनता के साथ जुडे रहन का रहा। इन पर विशेष राजनैतिक प्रभाव श्री जयनारायण व्यास और श्री विजयसिंह सरियारी का पडा था। प्रथम बार इहू सन 1957 म



विधान सभा के लिए कांग्रेसी उम्मीदवार बनाया गया, पर सचन नहीं हुए। इससे पूर्व 1952 में प्रायः निदलीय विधायक रह चुके थे। फिर 1982 के विधान सभाओं के चुनाव में कांग्रेसी प्रत्याशी के रूप में विजयी हुए। इनके कार्यकाल में विकास के अनेक नये सम्पन्न हुए। इनका व्यक्तिगत जीवन अत्यंत ही सादगी पूर्ण और धर्ममय रहा है।

श्री नेशरीसिंहजी के राजनितिक प्रभाव से इनके सुपुत्र श्री चक्रवर्ती सिंह को भी राजनीति में नया करन की प्रेरणा मिली। वर्तमान में श्री चक्रवर्ती सिंह सारथी पंचायत समिति के प्रधान हैं।

जूमते रहे। इसी जन विरोधी सहर में ये राजनीति में भाये और प्रायः जागीरदारों के साथ स्वतंत्र पार्टी के सदस्य बन। देवली ग्राम पंचायत के सपरच और रानी पंचायत समिति के सभ्य समय तक प्रधान भी रहे। बाद में प्रायः पाली जिला परिषद् में प्रमुख भी रहे। नेतृत्व की योग्यता और प्रभावशाली बक्ता होने के कारण प्रायः जागीरदारों की समठित कर जागीरी उन्मूलन के विरुद्ध भूस्वामी भ्रान्डीवन चलाया व जेल में रहे। इसके पश्चात् मुम्बैपुर विधान सभा क्षेत्र के निदलीय विधायक भी प्रायः चुने गए।

श्री माणकमल मेहता



श्री माणकमलजी मेहता एडवोकेट दूसरी का जन्म पाली जिन की बाली तहसील के चाणोद ग्राम के एक सम्पन्न जैन परिवार में हुआ। व्यवसाय के साथ साथ पारिवारिक प्रतिष्ठा के प्रभाव में इनका सहज ही प्राप्त हुए। इन्होंने जोधपुर में उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा दूसरी में अध्यापक बनकर धारम्भ की। जागीरदारों में सम्पन्न हान से ये पहले स्वतंत्र पार्टी में रहे और दूसरी पंचायत समिति के प्रधान चुने गये। प्रधान चुन जाने के पश्चात् इन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की व दूसरी बार फिर प्रधान चुने गये। प्रायः पाली के कांग्रेसी उम्मीदवार के रूप में विधानसभा में सदस्य चुने गये।

श्री मेहता पाली जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और अन्तक अध्यक्ष, दूसरी व प्रायः कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। अपनी विधान सभा सदस्यता के दौरान वे राजस्थान वेधसभा के सदस्य कापोरेशन के महत्वपूर्ण पद पर रहे तथा कापोरेशन का घाट से निकाल कर ताम की श्रेणी पर उन्नत किया।



श्री चम्पालाल सुराणा



वसंता श्री चम्पालाल जी सुराणा पाली में बघडे के जाने माने ध्यवसायी हैं पर इनका सारा जीवन ही जन कल्याणकारी कार्यों को समर्पित रहा है। राजाजी के पूर्व से ही ये कांग्रेस के प्रति आकर्षित हुए और इसके सदस्य बन जनहित के कार्यों में लग गये। कांग्रेस संगठन के विभिन्न पदा पर रहते हुए भी इन्होंने कभी सत्ता की ओर ध्यान भ्रान्धन नहीं जताया। प्रायः की प्रवृत्ति पाली जिले में विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से उपमोचताओं और किसानों की सेवा करने की रही है।

प्रायः गांधी वादी विचारधारा के पोषक हैं। खादी, नशाबन्दी आदि कार्यों जैसे रचनात्मक कार्यों में विशाल रुचि लते रहे हैं और इस दिशा में योगदान करते रहे हैं।

श्री सज्जनसिंह



श्री सज्जनसिंहजी देवली का जन्म पाली के सिंढरली ग्राम के जागीरदार घराने में हुआ था। प्रायः जयपुर में रहते थे तब शिक्षा प्राप्त कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम ए तथा एल एल बी किया। इनके पिता पूर्व महाराजा जाधपुर के सारथी थे। जागर सिंढरली के जन आन्दोलन के कारण जाधपुर महाराजा ने इनकी जागीर सिंढरली से ग्राम स्वली बन्द दी। पर देवली की जनता ने भी श्री मोहनराज जन के नेतृत्व में जन आन्दोलन धारम्भ कर दिया जिससे श्री सज्जनसिंह जीवन भर



श्री सम्पतराज शाह



स्व. श्री सम्पतराज जी शाह का जन्म पाली जिले की रायपुर तहसील के पिपलिया ग्राम के एक प्रतिष्ठित ध्यवसायी परिवार में हुआ। प्रायः मन् 65

से 76 तक पंचायत समिति रायपुर के प्रधान रहे। इस क्षेत्र और



पाली जिले में धाप धरने मृदु व्यवहार और सेवामावी स्वभाव के कारण लोकप्रिय रहे हैं ।

धरने धरने ग्राम पिपलिया धोर क्षेत्र के आसपास नय नये उद्योग लगाकर उन्हें विकसित कर के राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया । औद्योगिकरण की धापकी नीति सारे जिले में फैली और पाली, फालना, रानी, सोजत, सुमेरपुर, आदि स्थानों में सरकार के सहयोग से उद्योग वस्तिया बसी और जिले भर में उद्योग लगाने की प्रवृत्ति को बल मिला ।

श्री शाह को क्षेत्र के विकास ना बहुत शोक था । इनके प्रयास से क्षेत्र में हाई स्कूलें, धोपघालय सड़कें, बाघ, तालाव आदि बने जिनमे स्वयं ने अधिक सहायता व सहयोग दिया । रामपुर क्षेत्र को प्राथमिकता श्री शाह के प्रयत्नों से ही मिली ।

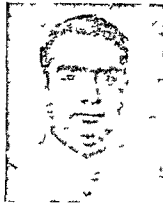
जिले के प्रशासनिक अधिकारी, कृषि अधिकारी और शिक्षा अधिकारी और सभी राज्य कमचारी श्री शाह से बहुत प्रेम रखते थे और रामपुर क्षेत्र में अधिक से अधिक कार्य करने को तैयार रहते थे । इंधि, सिंचाई शिक्षा व चिकित्सा क्षेत्रों में भी श्री शाह के प्रयासों से क्षेत्र ने बहुत उन्नति की ।

दुर्भाग्य से श्री शाह का स्वगवास कम अवस्था में ही एक कार घटना में हो गया । श्री शाह का प्रेम सद्व्यवहार और उनकी सेवाएँ रामपुर क्षेत्र ही नहीं बल्कि पूरा पाली जिला सदब याद रखेगा ।

श्री मोती बाबा

श्री मोती बाबाजी चौधरी वसे तो सीरवी समाज के धमगुरु हैं और जिलाशा दीवान जी की गादी क एक बाबा (पुजारी) हैं लेकिन रानी स्टेशन पर निवास कर इन्होंने राजनीति में प्रवेश कर लिया और तब से ही जागीरी शोषण के विरुद्ध किसानों के संगठन को सुदृढ करने में लगे हैं ।

बाबाजी रानी के ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे एव जिला पाली कांग्रेस कमेटी में सदस्य रहे । और भी अनेक सामाजिक एव सावजनिक सस्थाओं में इनका सम्भव रहा है । इन्होंने रानी में किसान छात्रावास की भी स्थापना की । ध्राज नी वे धरना अधिकांश समय जिले के गावों में घूम घूम कर किसानों को समझित करने में व्यतीत करते हैं । सन् 1957 में श्री मोती बाबा वाली क्षेत्र से निदलीय सदस्य के रूप में विधायक चुने गये । किसानों और मजदूरों की समस्याओं का उजागर करने में अग्रणी होकर भाग लेते हैं । सीरवी समाज के धमगुरु के नाते सामाजिक मसला को भी निपटाते हैं ।



श्री मुखलाल सैणचा

श्री मुखलालजी सणचा ना ज म पाली जिले के पिपलिया गाव म एक साधारण सीरवी किसान परिवार मे हुआ । आपने हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की और

इसने बाद पिपलिया म पचायत मन्चि के रूप म काय प्रारम्भ किया । इस पद पर रहते हुए आप जन सवा के क्षेत्र म आये व स्वामाविक नेतृत्व के गुण होने के कारण सीरवी समाज के नेता बन गये । इस क्षेत्र में सीरवी समाज की बहुलता और प्रभाव है अत आप को आपरेटिव व अन्य सस्थाओं म विभिन्न पदों पर चुन गये व पाली सेंट्रल को आपरेटिव बैंक के डायरेक्टर और मैनेजिंग डायरेक्टर भी रहे हैं । इसी तरह क्षेत्र व कृषि उपज मंडी सोजतरोड व सुमेरपुर के भी निदेशक रहे । साजत को आपरेटिव मार्केटिंग सोसायटी के डायरेक्टर रह कर इन्होंने इसका बहुत विकास किया । सीरवी समाज में शिक्षा, रोजगार व खेती के क्षेत्र में समाज का मागवशन किया । समाज में से धार्मिक कुरीतियों को मिटाने और उसे सगठित करने म आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

सन् 1968 म आप जिला कांग्रेस कमेटी, पाली के महामंत्री रहे । सन् 1972 में आपने कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा का चुनाव जीता । सन् 1977 की जनता लहर म भी श्री सणचा कांग्रेस के टिकट पर ही दुबारा विधायक बने । यह उनकी जन प्रियता का ही प्रमाण है । अष्टाचार के विरुद्ध जन आंदोलन क लिए श्री सणचा जिले भर में प्रसिद्ध रहे हैं ।

श्री बल्लभदास श्रोडा

श्री बल्लभदासजी श्रोडा पाली शहर के निवासी हैं । पाली म ही आपका धरना व्यवसाय है राजनीति और समाज सवा में भी आप सक्रिय हैं ।

श्री श्रोडा स्वाधीनता आन्दोलन के वक्त से ही लोक परिषद से जुड़े हुए रहे हैं । श्री मूलचन्दजी डागा के धनय साधियों म स



एक है। इनका राजनीतिक चिंतन मूढ़ और हृदयपात्री है पर अपने हुए अष्ट धराजक माहौल में चुप रहकर जीना ही इन्होंने श्रेयस्कर समझा है। यथासम्भव रचनात्मक कार्यों में रचि भ्रमशय लेते हैं।

श्री गोकुलचंद शर्मा

प बद्रीनारायण शर्मा

बद्रीराज श्री बद्रीनारायणजी शर्मा बाली व निवासी हैं और यथा विभिन्न प्रतिविधियां के प्राण हैं। पेशे से शर्माजी वृद्ध हैं पर जीवन के प्रारम्भिक काल में ही जन सेवा को समर्पित हैं। विद्यार्थी जीवन से ही वे बलवत्ता व बाली में राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित हुए और मावात्मक रूप से राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्रादालन से जुड़ रहे हैं।



बाली व प्राप्त पास व सभी गांवों के किसानों से इनका निकट का सम्पर्क बना हुआ है। किसानों की समस्याओं के प्रति विशेष जागरूक रहकर ता मान घन से उठू निपटाने में लग जाते हैं। शुरु में ही इनका रुझान रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर प्रवृत्त रहा है। अब भी मानवजनिक हित व कार्यों में अपना प्रधिकारा समय देते हैं। बाली में पूर्व जाधपुर दरवार और यहाँ की जनता के बीच जोहड़ गोचर का लकर जो सधय चला उसमें शर्माजी ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रादालन के लिए लोगों को मजदित किया। जोहड़ में पाप मवेशी की चराई के काय में नेतृत्व प्रदान किया। भूख हड़ताल व घरेले पर भी बठ।

पण्डितजी वर्षों तक नगर काग्रस के अध्यक्ष पद पर रहे और नगरपालिका में सदस्य रहकर अनेक वर्षों तक नगर में विकास के काय करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अटा का। अब तो प्राप्त अपना पूरा समय जनसेवा के कार्यों में ही लगा रहे हैं।

अपनी धुन के पवने और निष्ठावान श्री गोकुलचंदजी शर्मा का जिन की राजनीति में विगिष्ट स्थान है। इनके सामत विरोधी हल के कारण राजनीति में उनका पक्षधर और विरोधी दोनों ही काफी रहे हैं। श्री शर्मा सुमेरपुर क्षेत्र में केवल एक बार ही कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनाव जीत सके हैं पर सामंती व्यवस्था के प्रबल विरोधी होने के कारण इन्होंने कांग्रेस का विरोध करने भी दो बार चुनाव लड़ा है।

यों प्राप्त मूलतः पाली जिले के निवासी नहीं हैं पर काम की खोज में जवाई बाघ (एरनपुरा) में आकर बस गए और निर्माण काय में ठके लग लगे। विधायक के रूप में सुमेरपुर क्षेत्र में इन्होंने जा विनास के काय करवाये और लोगों को रासत जितवाई इससे ये काफी लोकप्रिय हो गये और प्राप्त भी स्थानीय जनता में प्राप्त का काफी प्रभाव है।



श्री मानवेन्द्रसिंह

श्री मानवेन्द्र सिंहजी रोहट का जन्म पाली तहसील के रोहट ग्राम में हुआ। प्राप्त सुशिक्षित और शालीन व्यक्तित्व के धनी हैं। प्राप्त रोहट पंचायत समिति के प्रधान रहने व साथ साथ राजनीति में भी सक्रिय रहे हैं।

पाली तहसील का विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सहकारिता के क्षेत्र में भी श्री मानवेन्द्र सिंह सक्रिय रहे हैं और कई वर्षों तक पाली सट्टल की आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष रहे हैं। प्राप्तने कायकाल में इस बैंक में बहुत उन्नति की। प्राप्त लम्बी अवधि तक पाली जिला परिषद् के उप जिला प्रमुख भी रहे हैं।

श्री सिंह स्वयं शिक्षाविद् हैं और मारवाड़ की प्रसिद्ध पुरातन शिक्षण संस्था राजपूत हार्ड स्कूल चौपासनी के सचिव पद पर बीस वर्षों में कार्यरत हैं।



श्री दिनेशराय डांगी

□

श्री दिनेशरायजी डांगी का जन्म वाली कस्बे में श्री बुद्धारायजी मेघवाल के सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनकी पढ़ाई की व्यवस्था वास्तविक

स ही अच्छी रहा और उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये राजकीय सेवा में चले गये। सन् 1962 में इन्होंने कांग्रेस पार्टी का टिकट पर दूसरी क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ा और विजयी हुए और मंत्री भी बने। अनेक वर्षों तक विधायक और महत्त्वपूर्ण विभागों के मंत्री पद पर रहे।

सामाजिक क्षेत्र में अनुसूचित जाति के लोगों में शिक्षा के प्रसार में सक्रिय रहे। छात्रों के लिए स्वयं भी छात्रावास खाले और समाज कल्याण विभाग के द्वारा अनेक छात्रावास खुलवाये व छात्र-छात्रियाँ दिलवाई। ये जिला एवं प्रदेश कांग्रेस में अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे हैं।



श्री मीठालाल जैन

□

श्री मीठालालजी की जन्मस्थली वाली तहसील का कासलाव गाँव है। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सुमरपुर में हुई बाद में उच्च शिक्षा के लिए बम्बई चले आये। आपने सदा गाँव में जीवित सम्पन्न बनाये रखा। इनका राजनैतिक जीवन तो बम्बई से ही जुड़ा हुआ है जहाँ याणा जिला और ग्राम भायदर मुज्य कायनेत्र है। भायदर पंचायत के सरपंच और बाद में आप याणा जिला परिषद् के अध्यक्ष चुने गये। उस मराठी बहुल क्षेत्र में एक मारवाड़ निवासी का इतने ऊँचे पद पर पहुँचना ही अपने आप में आपकी सफलता का प्रमाण है।

श्री जन प्रभावशाली वक्ता, सुदुभाषी और व्यवहारकुशल है। जन समस्याओं को लेकर इन्होंने बम्बई में कई आन्दोलनों का सफल संचालन किया है और लोकप्रियता अर्जित की है। जिला परिषद् में भारी भीड़ भङ्गने के बावजूद आप हर एक की बात सुनते हैं और समाधान करते हैं। स्पष्टवादिता और निडरता आपके स्वभाव में कूट कूट भरि है।



श्री पृथ्वीसिंह देवडा

□

श्री पृथ्वीसिंह जी देवडा वाली जिले की वाली तहसील के बीसलपुर ग्राम के पूर्व जमींदार हैं। आपकी प्रारम्भ से ही जन-

सेवा व राजनीति का शौक रहा है। आप ग्राम पंचायत, बीसलपुर के सरपंच रहे और फिर सन् 1967 में स्वतंत्र पार्टी के टिकट से वाली से विधायक चुने गये। कृषि उपज मण्डी सुमेरपुर के आप प्रथम अध्यक्ष रहे। इस दौरान मडी याड बनवाया व मडी का बहुत विकास कर इसे राजस्थान की बड़ी कृषि उपज मण्डिया में स्थान दिलाया। सन् 1977 में आप राजस्थान कृषि मण्डी नियम के अध्यक्ष बने और अपनी योग्यता व अनुभव से राज्य की कृषि उपज मण्डिया के संचालन में कई उपयोगी सुधार किये। स्वतंत्र पार्टी समाप्त होने पर आप लोकदल और अब जनता दल के सदस्य हैं। अपने क्षेत्र में आप बहुत लोकप्रिय हैं। अपने सद् व्यवहार के कारण सभी राजनैतिक दलों के कार्यकर्ता आपका आदर करते हैं।



श्री फूटरमल वी जैन

□

श्री फूटरमल वी जैन का जन्म वाली कस्बे में हुआ। आपकी आरम्भिक शिक्षा वाली में तथा उच्च शिक्षा व्यावर, अहमदाबाद एवं बम्बई में



हुई। चानीम वर्गों से बानी में आप वकालत करने रहे हैं। आरम्भ से ही राजनीति में आपका रुचि रही है। वाली नगर कांग्रेस कमेटी और 'नाक' कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने धृष्ट्याचार के खिलाफ आवाज उठाई और जन समस्याओं के निराकरण में विशेष रुचि ली।

बुढ़ समय परवाना जानने अपना काय तब बानी तहसील के आदिवासी गणसिंधा क्षेत्र को बनाया और उनमें जागृति पैदा करने के उद्देश्य से उन क्षेत्र में काफी काम किया। आदिवासियों में राजनितिक जनता जागृत करने में आपका योगदान रहा है। इन दिनों आप राजनितिक में अतिरिक्त सचिव पदा पर हैं। बम आपकी निरंतरता जनता दल से है। बानी बगीचे में मण्डल के वर्गों तक जायदा रह रहे और सामाजिक काम में रुचि नत रहे ।



श्री चक्रवर्तीसिंह



श्री चक्रवर्तीसिंह जोजा घर एक बड़ी जागीर के उत्तराधिकारी हान के बावजूद साधारण जन की सेवा करते रहते हैं। आपके पिता ठाकुर बगरीसिंह जी सन् 1952 से

57 तक चारवी क्षेत्र में का भी विधायक रह चुके हैं। इस प्रकार राजनिति आपका विरासत में मिली है।

आप जजावर ग्राम पंचायत के अध्यक्ष और बाद में चारवी पंचायत समिति के प्रधान रहे। आप जनता में बहुत लोकप्रिय हैं और उच्चकटि के वक्ता हैं। आप राजस्वान चौहान महासभा मारवाड़ राजपूत महा गीर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के कार्यकारी मण्डल के सदस्य हैं। इसने जलावा कई शिक्षण और धार्मिक टस्टो के ग शालक हैं।

अपने घरपर प प्रदान के कायनाल में आपने जोजावर ग्राम और चारवी तहसील में बहुत विकास काय करवाया। जब क्षेत्र में अनाल पना तो आपने क्षेत्र में जनजा चारे व मजदूरी का भरपूर प्रवर्ष किया।



श्री अलदाराम मेणा



श्री अलदाराम मेणा बानी तहसील के मालगु गाव के निवासी हैं। इनके पिताजी फौज में नौकरी करने के कारण मेणा समाज में प्रसिद्ध थे। आजू के निकट रहने के कारण

आपने प्रारम्भिक शिक्षा वहा प्राप्त कर टान विभाग में नौकरी करनी।

सन् 1962 में नाणा सुमरपुर विधान सभा क्षेत्र जब जनजाति के लिए सुरक्षित घोषित हुआ तो इी जातिया में से शिक्षित उम्मीदवार की तलाश शुरू हुई। नाणा के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता श्री इस्माइल भाई ने वाली पंचायत समिति के उल्कारीन प्रजाप श्री मोहनराजजी से आपका परिचय कराया और आप इस चुनाव में कांग्रेस की आर से खड़े हुए और विजयी हुए। आजू सुरक्षित क्षेत्र से भी आप विधायक रहे हैं। आपके विधायक बनने से जन जाति के लोगो की समस्याओं को दूर करने में भारी मदद मिली। इन दवे हुए घोषित लोगों में हिम्मत पैदा हुई। भूमिहीनों को भूमि निदान में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आम जनता की समस्याओं का निगटान में अपने सहज सहयोग के कारण ये बहुत लोकप्रिय हुए।



श्री रामलाल जैन



श्री रामलालजी का जन्म पाली जिले के जतारण कस्बे में हुआ था पर इनकी कमभूमि और सेवा क्षेत्र सादही (गोडवाड) ही रहा। इनके

पिता श्री कथनचन्द्रा ने सादही में यातायात क्षेत्र में अपना कारोबार पनाया और अपनी व्यवहार-शुश्रूषा और ध्यायक जन सम्पर्क के कारण अत्यंत ही लोकप्रिय हो गये।



श्री रामलालजी विद्यार्थी जीवन स ही राष्ट्रीयता व देश प्रेम की भावनाओं से आत प्रीत रहे है फलस्वरूप दमक जीवन का प्रारम्भ ही सावजनिक सेवा से हुआ है। अपनी वन पपरायणता के कारण ही ये लगातार कई वर्षों तक नगर पालिका माडची के सदस्य रहे। पाय पचायत सादही के अध्म इ चुने गये। जिला कंग्रेस कमटी के प्रतिनिधि एव नगर कांग्रेस क अध्मल अनेक वर्षों से है। इ होने से सदैव विकास कार्यो म रुचि भी दिखलाद और समाज के पिछडे एव गरीब वग क हिताय हर काय म अग्रणी रहे। यही कारण है कि इनकी लोकप्रियता व्यापक रही है।

इन दिनों श्री लोकाशाह जैन गुफ्टुल, सागरी के मन्त्री और लोक अगलात, देसूरी के मानद सदस्य ह। श्री रामलालजी न सन् 1977 म जब कांग्रेस की करारी हार हुई थी जापन क्षेत्र के नायकताओ पर अपना नतूद बनाम रखा और इतिरा गावी क नेतृत्व मे जो आन्दोलन हुआ उसमे जेल गये। देसूरी जाली म आन्दोलन का संचालन जापने स्वय किया व जिघरे हुए कायमता जापने भरोसे पर वापिस एकन हुए। गत 40 वर्षों से आप लगातार स्थानीय कांग्रेस की ही नही बल्कि वाली क्षेत्रीय कांग्रेस की भी समय समय पर सहायता करते रहे हैं। आप निष्ठावान कांग्रेसी नायकता एव लोकप्रिय नेता हैं।



श्री नाथूसिंह

श्री नाथूसिंहजी देसूरी तहसील के सिदरली ग्राम के निव सी ह। हाइ स्कूज की शिक्षा प्राप्त कर ये हृषिम म ध्यस्त हो गये, पर सामती

अत्याचारों के प्रति बाल्यकाल से ही इनका मन म घुणा बढ गई थी। सिदरली के पूव जागोरेदार हासाकि इनके परिवार के काफी निवट से पर उनके द्वारा गाव के गरीबों के सतान के दृश्य इ होने आछा से दख से। इही भावनाका के माध इ हान राजनीति म प्रवेश किया। कई वर्षों से लगातार ये पचायत समिति के प्रधान चुन जा रहे हैं। आप जिलास्तरनीय कांग्रेस कमटी म महत्वपूर्ण पदा पर पदाधिकारी भी हैं। आप अपना अधिकांश समय ग्रामों के विकास का देन हैं। अपन सेवा भावों म श्री नाथूसिंह जी क्षेत्र म काफी लोकप्रिय हैं।

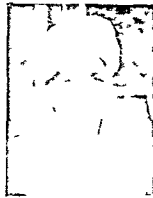
श्री नारायणसिंह राजपुरोहित

श्री नारायणसिंहजी का ज म देसूरी तहसील मे सादही के निवट मादा ग्राम के एक सम्पन्न राजपुरोहित परिवार मे हुआ। यह गाव सामन्ती तत्त्वा का गड रहा है, किन्तु नारायणसिंहजी प्रगतिशील विचारा वाल श्री मयुरादास जी माथुर और श्री नाथूराम जी मिर्धा असे वरिष्ठ नेताओं के निवट सम्पर्क म आने से सामन्त विरोधी जन जा दानन से जुड गय।

आपने देसूरी क्षेत्र मे जन जाग्रति म उत्तरेखनीय योगदान किया। अनक वर्षों तक अपन गाव म सरपच पद पर रहे और अपन गाव के साथ साथ अनक छोटे दूध गावों मे सामन्त चतना जगान और विकास क कई महत्वपूर्ण काय किए। वतमान म अपन गाव म ही खती बाँटी करन के साथ साथ राजनीति और समाज सेवा म भी मन्वि ह।

श्री केशरीमल चौधरी

श्री केशरीमलजी चौधरी का जम पाली जिल की देसूरी तहसील के बिजोवा ग्राम म एक साधारण सौरवी किसान परिवार म हुआ। जिजावा और राना म जापन शिक्षा प्राप्त की। गामरीगरी प्रवा के विरुद्ध निमान आ दालन के समय राजनीति म प्रवेश किया और बिजोवा ग्राम क सरपच बन। श्री केशरीमलजी एक प्रगतिशील किसान हैं। दनका व्यवहार बहत सुदु और सरल है। आर य जनता के हृत्प म बसन वाल नर है। पर की लालसा इ ह कभी नही रही। सरय, अहिता और प्रेम क हामी था। केशरीमलजी अग्रणी कांग्रेसी नेता क रूप म पहचान जात ह जिनकी कथनी और करणी म, कभी फक नरुा जाया और विपणी भी जिनकी प्रगसा और आदर करत हैं।



श्री जैठासिंह राजपुरोहित

श्री जैठासिंह जी राजपुरोहित का जम पाली जिले की वाली तहसील के बारवा गाव म हुआ। आप जनत तरीकों से काम करने वा. क्षेत्र क प्रथम कामकार



हुई। चानीय यवों से बाकी में आप राजनीति करने रहें हैं। आरम्भ से ही राजनीति में आप ही रुचि रखी है। बाकी नगर कायदा समिती और तारा राजेन समिती ने अघात पर रहत हुए आपने प्रवृत्ताचार व विनाश आवाज उठाई और जन समस्याओं व निराकरण में विभाग रुचि ली।

बुद्ध समग्र परभाव आपने अपना कायदा में चानी सहनीय के आदि बाकी समिति का एक वनाया और नम तारा नगर के व उद्देश्य से एक धर्म में बाकी नाम दिया। आदिवासीय में राजनीति का भाग था। नम में प्रभु का भाग रहा है। जन विनाश आप राजनीति में आदि मंत्रिय नीति। वन आपकी निरन्तरता जनता वन से है। बाकी चानीय भाग व वनाश का जयश र है। और सामाजिक बाकी में रुचि नत र है।



श्री चक्रवर्तीसिंह



श्री चक्रवर्तीसिंह जोश-वरण वडी जगरी व उत्तरा-जिगरी हान के वाकदूद साधारण जन की सेवा करते रहे हैं। आपने विनाश गुर वगरीही की मत् 1952 से

57 तक वरना नत नी विधायक रह चुके हैं। इस प्रकार राजनीति अपना विभाग में मिली है।

आप कायदा वनाश व संपन्न और वाद में खारची पचाया समिति में प्रजात रहे। आप जनता में बहुत लोकप्रिय हैं और उच्चराजि वना। आप राजस्थान चौदैन महासभा मारवाण राजपूत ममा जी व विधि भारतीय धर्मिय महासभा के वाचनारी मण्डल व सदस्य हैं। इनके जलवा कई शिक्षण और धार्मिक दृष्टा व गवाचर है।

धर्म संपन्न व प्रजन के तयकाय में आपने जोशवर धाम और खारची गृहान में बहुत विनाश काय करवाये। जब धर्म में अकाश पण तो आपन धर्म में जनाज चारै व मजदूरी का मत्पूर प्रवच किया।



श्री अलदासग मणा



श्री अलदासग मणा बाकी सहनीय के मालगू गाव के निवासी है। इनके विनाजी पीन में नीकरी करने के कारण मणा समाज में प्रसिद्ध है। आजू व निरट रदों के कारण

आपन प्रारम्भिक शिक्षा यहा प्राप्त कर डान विभाग में नीकरी करनी है।

सन् 1962 में माणा सुरपुर विधान सभा धर्म जब अनजाति के लिए सुरक्षित घोषित हुआ तो नी जनिता में सशिक्षित उम्मीदवार की तयकाय शुरू हुई। नाणा के प्रसिद्ध कायेंस कायकर्ता श्री इस्माइल भाई ने बाकी पचायत समिति के तत्कालीन प्रजात श्री मोहनराजजी से आपका परिचय कराया और आज इस चुनाव में बाप्रस की ओर से खड़े हुए और विजयी हुए। आजू सुरक्षित धर्म से भी आप विधायक रहे हैं। आपने विधायक बनने से जन जाति के लोगों की समस्याओं की दूर करने में भारी मत्द मिली। इन दवे हुए घोषित लोगों में हिम्मत वदा हुई। भूमि देता को भूमि दिनाम में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। आज जनता की समस्याओं की निरटाने में आपने सहज सहयोग के कारण में बहुत लोकप्रिय हुए।



श्री रामलाल जन



श्री रामलालजी का जन्म वाली जिले के जतारण करके में हुआ था पर इनकी वनभूमि और सेवा शीत सादबी (गोडवाड) ही रहा। इनके पिता श्री कवननजी ने सादबी में यातायात क्षेत्र में अपना कारोबार फाया और अपनी व्यवहार-बुचलता और यायक जन संपन्न के कारण अत्यंत ही लोकप्रिय हो गये।



श्री रामलालजी विद्यार्थी जीवन में ही राष्ट्रीयता व दश प्रेम की भावनाओं से आत प्रीत रहे हैं। फलस्वरूप इनके जीवन का प्रारम्भ ही सावजनिक सेवा से हुआ है। अपनी बत पपरायणता के कारण ही ये लगातार बर्से वर्षों तक नगर पालिका माडकी के सदस्य रहे। वाय पचायत सादडी के जध्य 1 चुने गय। जिला व ग्राम कमटी के प्रतिनिधि एव नगर काग्रेस के अध्यक्ष अनेक वर्षों स हैं। इ होंने सदब विकास कार्यो में रचि नी दिखनाद जीर समाज के पिछडे एव गरीब वग के हितार्थ हर वाय म अग्रणी रहे। यही कारण है कि इनकी लोकप्रियता व्यापक रही है।

इन दिनों श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल सादडी के सञ्चाली जीर लोक अदालत देसूरी के मानद सदस्य ह। श्री रामलालजी न सन् 1977 म, जब कांग्रेस की करारी हार हुइ थी, जापन क्षत्र के कार्यकर्ताओं पर अपना नेतृत्व बनाय रया जीर गिंग गावी के नेतृत्व में जो जादोलन हुआ उसम जल गय। देसूरी पाली म धाम्नेलन वा सचालन जापने स्वय किया व विघर हुण वायकता आपके भरोसे पर वापिस एकत्र हुए। गत 40 वर्षों स जाप लगातार स्थानीय कांग्रेस की ही गही बल्कि वाली क्षेत्रीय कांग्रेस की भी समय समय पर सहायता करते रहे हैं। आप निष्ठावान कांग्रेसी वायकता एव लोकप्रिय नेता हैं।



श्री नाथूसिंह



श्री नाथूसिंहजी देसूरी तहसील के सिदरली ग्राम के निव गी ह। हाई स्कूज की शिक्षा प्राप्त कर य दृष्टि म अमस्त हो गये पर सामती

अ गाचारो के प्रति बाल्यकाल से ही इनके मन म दृष्टा बैठ गई थी। सिदरली के पूव जागीरदार हासकि इनर परिवार के काफी निकट थे पर इनने द्वारा गाव के गरीबो के सताने व दृश्य द्वाहने आधा स देखे थ। इही भावनाआ के माथ इहान राजनीति म प्रवेश किया। बर्से वर्षों से लगातार ये पचायत समिति के प्रधान चुन जा रहे हैं। आप जिलास्तरीय कांग्रेस कमटी म महत्वपूर्ण पदा पर पदाधिकारी भी हैं। आप अपना अधिगान समय ग्रामा के विकास को देने ह। अपने मेवा वापों में श्री नाथूसिंह जी गेज म काफी लोकप्रिय हैं।

श्री नारायणसिंह राजपुरोहित



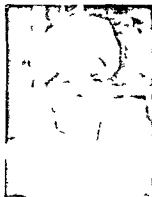
श्री नारायणसिंहजी का ज म देसूरी तहसील म सादडी के निकट मादा ग्राम के एक सम्पन्न राजपुरोहित परिवार म हुआ। यह गाव सामती तत्वा का गड रहा है, कि तु नारायणसिंहजी प्रगतिशील विचारा वाल श्री मथुरादास जी माधुर जीर श्री माधूराम जी मिर्धा जग वरिष्ठ नताआ के निकट सम्पन्न व आन स सामत विराधी जन जा दोलन स जुग गय।

जापन देसूरी क्षेत्र म जन प्रावृति म उत्लेखनीय योगदान किया। अनेक वर्षों तक जापन गाव म सरपच पद पर रहे और अपने गाव के साथ साथ जनक छा उ ट गावा म राानतिक चेतना जगान जीर विराम के बर्से महत्वपूर्ण वाय किए। वनमान म अपन गाव म ही छती गी करन के साथ साथ राजनीति जीर समाज सेवा म भी सत्रिय हैं।

श्री केशरीमल चौधरी



श्री केशरीमलजी चौधरी का जम पाली जिले की देसूरी तहसील के विजोवा ग्राम म एक सम्पन्न सोरवी किसान परिवार म हुआ। विजोवा और राना म आपन शिक्षा प्राप्त की। गामोरगरी प्रया के विरुद्ध किसान आ दानन के समय राजनीति म प्रवेश किया और विजोवा ग्राम म सरपच बने। श्री केशरीमलजी एक प्रगतिशील किसान है। इनका यन्हार बहुत मृदु आर सरल है और य जनता के हृदय म वतन बाल नना हैं। पद की लातसा इह व भी नहीं रही। सत्य, अहिंसा और प्रेम के हामी श्री केशरीमलजी अग्रणी कांग्रेसी नेता के रूप म पहचान पात ह। इनकी कयनी और करणो म, व भी पक नहा जाया और विपक्षी भी जिनकी प्रगसा और आदर करत हैं।



श्री जैरूसिंह राजपुरोहित



श्री जैरूसिंह जी राजपुरोहित का जम पाली जिले की बाली तहसील के बागवा गाव म हुआ। आप उनना तरीकों के वागन बनने व लोन के प्रथम वागनकार



हुई। चानीम वर्षों से वाली में आप वकालत करन रह ह। आरम्भ से ही राजनीति में अ पकी रुचि रहती है। वाली नगर काग्रस कमेटी और एनाफ काग्रस कमेटी के अ यश पर रहत हुए आपन छप्टाचार के खिलाफ आवाज उठ इ और जन समस्याओं के निर करण में विशय रुचि ली।

कुछ समय पश्चात् आपन अपना कायनन वाली तहसील के आरि वाशी गणसिया क्षेत्र को बनाया और उनमें आपन पण करने के उद्देश्य से उन क्षेत्र में काफी काम किया। आदिवासियों में राजनसतिक चेतना जन में बनना में यूनण योगदान रण है। इन निना आप राजनानि में अरिक्त सदस्यन है। कम आपकी निवृत्ता जनता दन से है। वाता नेशन मण्ण क वना तन अयक्ष रह ह और सामासिक काम में रुचि नत रह ह।



श्री

श्री चमवता।
वर एक बड़ी जागी
विकारी हान
साधारण जन का
रहत है। अपने
केमरीमिह जी से।

57 तक खारना क्षेत्र में कामी विधायक रह चुके है। राजनानि आपका विर मत में मिली है।

आप जानावर गान पंचायत के संपन्न और बाद पंचायत समिति के प्रधान रह। आप जनता में बहुत और उच्चराटिक व बना ह। आप राजस्थान चौहान मारवाड रात्रपूत मभा और अखिल भारतीय क्षत्रिय कायकारी मण्ण के सदस्य ह। इसके जलावा कई धार्मिक टस्टो के संचालक ह।

अपन संपन्न व प्रदान के कायकाल में आपन आ और खारची तहसील में बहुत विकास काय करवाये। अकाल पण तो आपन क्षेत्र में जनाज चारे व मजदूरी प्रवध किया।



श्री अलदागम मणा



श्री अलदाराम मणा वातो तहसील के मालगु गाव के निवासी है। इनके पिताजी फौज में नौकरी करने के कारण मणा समाज में प्रसिद्ध थे। आजू के निकट रहन के कारण

आपन प्रारम्भिक शिक्षा यहा प्राप्त कर डान विभाग में नौकरी करली।

सन् 1962 में नाणा सुमरपुर विधान सभा क्षेत्र जब जनजाति के लिए सुरक्षित घोषित हुआ तो इती जातियों में संक्षिप्त उम्मीदवार की तलाश शुरू हुई। नाणा के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता श्री इस्माइल भाई ने वाली पंचायत समिति के तत्कालीन प्रधान श्री मोहनराजजी से आपका परिचय कराया और आप इस चुनाव में कायस की आर से छड हुए और विजयी हुए। आजू सुरक्षित क्षेत्र से भी आप विधायक रहे हैं। आपने विधायक बनने से जनजाति के लोगों की समस्याओं को दूर करने में भारी मदद मिली। इन दवे हुए शोषित लोगों में हिम्मत पैदा हुई। भूमि लेना की भूमि निदान में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आप जनता की समस्याओं को निरानन में अपने सहज सहयोग के कारण ये बहुत लोकप्रिय हुए।



श्री २।

श्री २।
जन्म पाली जिले के
बस्वे में हुआ था
कमभूमि और २
(गोडवाड) ही रहा

पिता श्री कचनवर्मा ने सादरी में मातायात क्षेत्र कारोबार चलाया और अपनी व्यवहार-गुणलता और जन संपन्न के कारण अत्यंत ही लोकप्रिय हो गये।



श्री रामलालजी विद्यार्थी जीवन में ही राष्ट्रीयता व देश प्रेम की भावनाओं से भक्त प्रोत् रहे हैं। फलस्वरूप इनके जीवन का प्रारम्भ ही सावजनिक सेवा से हुआ है। अपनी वन परपरायणता के कारण ही य लगतातर कई वर्षों तक नगर पालिका मादडी के सदस्य रहे। यय पचायत सादडी के अध्यक्ष चुने गये। जिला कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि एव नगर कांग्रेस के अध्यक्ष अनेक वर्षों से हैं। इन्होंने सदैव विकास कार्यों में रुचि भी दिखलाई और समाज के पिछड़े एव गरीब वर्ग के हितार् हर काम में अग्रणी रहे। यही कारण है कि इनकी लोकप्रियता व्यापक रही है।

इन दिना श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी के सङ्गी और लोक अदालत, देसूरी के मान्य सदस्य हैं। श्री रामलालजी भ 1977 म, जब कांग्रेस की क्वरारी टार हुइ थी, आपन क्षत्र के कायकताओं पर अरना नतुत्व बनाय रखा और इतिरा गांधी क नेतृत्व में जो आंदोलन हुआ उसमें जल गये। देसूरी वाली म अा दालन का सचालन आपने स्वयं किया व बिछर हुए कायकता आपके भरोंसे पर वापिस एका हुए। गत 40 वर्षा में आप लगातार स्थानीय कांग्रेस की ही नहीं बल्कि वाली क्षेत्रीय कांग्रेस की भी समय समय पर सहायता करत रहे हैं। आप निष्ठावान कांग्रेसी कायकर्ता एव लोकप्रिय नेता हैं।



श्री नाथूसिंह



श्री नाथूसिंहजी देसूरी तहसील के सिंदरली ग्राम के निवासी हैं। हाइ स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर ये कृषि में व्यस्त हो गये, पर सामंती

अत्याचारों के प्रति बाल्यकाल से ही इनके मन में छुपा बठ गई थी। सिंदरली के पुव जागीरदार हासकि इनके परिवार के काफी निक्ट ये पर उनके द्वारा गाव के गरीबों के सताने के दम्य इहाम आवा से दब थे। इही भावनाओं के साथ इन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। कई वर्षों से लगातार ये पचायत समिति के प्रधान चुन जा रहे हैं। आप जिलास्तरीय कांग्रेस कमेटी में महत्त्वपूर्ण पदों पर पदाधिकारी भी हैं। आप अपना अधिकांश समय ग्रामा क विकास को देने हैं। अपने सवा कार्यों में श्री नाथूसिंह जी क्षेत्र में काफी लोकप्रिय हैं।

श्री नारायणसिंह राजपुरोहित



श्री नारायणसिंहजी का जम देसूरी तहसील में सादडी के निक्ट मादा ग्राम के एक सम्पन्न राजपुरोहित परिवार में हुआ। यह गाव सामंती तत्वा का गन् रहा है, कि नु नारायणसिंहजी प्रगतिशील विचारों वाले श्री मयुरास जी भाथुर और श्री नाथूराम जी मिर्धा जैसे विरिष्ठ मंताओं के निक्ट सम्पक व आन से सामंत विराधी जन जा गेलन से जुड गये।

आपने देसूरी क्षेत्र में जन जागृति में उल्लेखनीय योगदान किया। अनेक वर्षों तक आपन गाव में सरपक पद पर रहे और अपने गाव व साथ साथ जनक छाट छट गावों में राजनतिक चलना जगाने और विकास के बई महत्त्वपूर्ण काय किए। वनमान में आपन गाव में ही खतो बाजी करने व साथ साथ राजनीति और समाज सवा में भी सक्रिय हैं।

श्री केशरीमल चौधरी



श्री केशरीमलजी चौधरी का जम पाली जिले की देसूरी तहसील के विजोबा ग्राम में एक सम्पन्न सोरवी किसान परिवार में हुआ। विनाया और राना में आपन शिक्षा प्राप्त की। जागीरदारी प्रथा के विरिष्ठ किसान आ दालन के समय राजनीति में प्रवेश किया और विजोबा ग्राम के सरपक बन। श्री केशरीमलजी एक प्रगतिशील किसान हैं। इनका व्यवहार बहुत मृदु आर सरल है और व जनता के हृदय में बसन वाल मना है। पद की लालसा इह कभी नहीं रही। सत्य अहिंसा और प्रेम के हामी श्री केशरीमलजी अग्रणी कांग्रेसी नेता के रूप में पट्टचान जात हैं। इनकी कथनी और करणी में कभी फक नहीं आया और विपक्षी भी इनकी प्रामा और आदर करत हैं।



श्री जैतूसिंह राजपुरोहित



श्री जैतूसिंह जी राजपुरोहित का जम पाली जिले की वाली तहसील के बारवा गाव में हुआ। आप उन्नत तरीकों से वास्तु बनने वाल क्षेत्र के प्रथम वास्तुकार



हैं और उन विरले किसानों में से हैं जो कम जमीन पर विरलित साधानों और बगानिक पद्धति से खेती कर घण्टे आमदनी प्राप्त करते हैं। जटूसिंह जी सन् 1954 में प्रथम बार प्रायोगिक तौर पर सामूहिक ग्राम पंचायत लूनावा के सरपंच चुने गये और 1959 तक लूनावा के सरपंच रहे। इसके बाद ग्राम पंचायत छोटी हुई तो 1959 में वारवा ग्राम पंचायत के सरपंच चुने गये और तब से अब तक वहाँ सरपंच हैं। इस प्रकार लगातार 6 वर्षों तक चुनिदा सरपंच रहने का आपको श्रेय प्राप्त है।

जागीरगरी ग्राम और सामन्तशाही वातावरण में भी कांग्रेस का भण्डा पहराने वाले जटूसिंह जी ने दलितों और गरीबों की हर प्रकार से सहायता की तथा जागीरी जुल्मी से संरक्षण कर ग्राम में समय विकास का महत्त्वपूर्ण काम किया। आप सच्चे कमलिप्त कार्यकर्ता हैं। बाली पंचायत समिति के सभी सरपंचों ने आपकी निष्ठा और योग्यता का आदर करते हुए आपको सन् 1988 में प्रधान चुना। आप क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हैं। अनुसूचित जाति व जनजाति के विकास का बहुत बड़ा काम आपने किया है।

विश्वास है। आप सच निलिप्त सत्यवादी किसानों के नेता रहे हैं। राजनीति में छत्र प्रपंच एक दाब पंच से रहे हैं। आपके विपक्षी भी आपका आदर करते हैं आपका स्थान सम्मानजनक व जिले के अग्रगण्य में है।



श्री जटूसिंह

पाली जिले पंचायत समिति तटनगढ़ के 1954 साल की बालदीया प्रमुख

साथ राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाले

तटनगढ़ पंचायत के सरपंच चुने जाने पर साधन जुटा कर विकास की अनेक योजनाओं से पलट किया जिससे तटनगढ़ एक आधुनिक सुविधाओं से बन गया। श्री बशीरलाल जी अपनी कार्यशीली और कारण सुमेरपुर पंचायत समिति के प्रधान चुने गये। उद्योग वस्ती के विकास में भी इनका योगदान रहा अत्यंत लोकप्रिय बालीगंजा जिला कांग्रेस कमिटी के सरपंच रहे चुके हैं।



श्री छोगालाल चौधरी

श्री छोगालाल चौधरी पाली जिले की खारची तहसील के देवली आस्वा ग्राम के उत्तमिशील किसानों में से हैं। आरम्भ से ही कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ता रहे हैं। आपने देवली के सरपंच के पद पर और पंचायत समिति खारची के उपप्रधान के पद पर कार्य किया एवं पाली जिला कांग्रेस के अध्यक्ष जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर भी रहे। आप सहकारिता एवं किसान आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। क्षेत्र का सामन्ती बग सब आपके विपक्ष में रहा है पर किसान बग के साथ सच में रहे हैं। आप उत्तमिशील विचारों के हैं और गरीबों में मान्यता है जो धार्मिक अविश्वास और कृषिदिना एवं दलितों के हैं उनका सच विचार करते हुए निष्ठावान बनकर पवित्र जनमना का आधार पर राजनीति करते रहे हैं जिसके कारण अद्य विश्वामी व कृषिप्रिय किसानों में भी आपका साथ नहीं लिया। पर, खास तौर पर पाली जिले की पूर्ण जनता का आपमें अटूट प्रेम व



श्री हारसिंह

श्री का जन्म ग्राम देवली जिला पाली में हुआ। पंचायत समिति के अध्यक्ष एवं जीवन और शिक्षण के कारण तथा देवली ग्राम व खारची



सिखी समाज के प्रभावशाली तत्वों से सम्बन्धित होने के कारण ये खारजी विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहे। तभी से सश्रिय राज नीति में श्राये और लगातार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर विधायक चुने जाते रहे हैं। पार्टी में खगारसिंहजी की बहुत मायता है जोर जनता में आप बहुत लोकप्रिय हैं। अपने सरल व्यवहार और निष्पट नीति के कारण एक शक्तिशाली किसान नेता के रूप में पक्ष और विपक्ष के सभी लोगों का समान रूप से इ ह विश्वास प्राप्त है। खारजी में जागीरदारा का प्रभुत्व समाप्त करने का श्रेय श्री खगारसिंह जी को ही जाता है।

आप सेवाभावों, मुदुमायी, व्यवहारकुशल युवा राजनीतिप हैं। इसने अतिरिक्त अच्छी नस्ल के घोड़ों के विशेषज्ञ हैं तथा स्वयं इनके पास भी अच्छी नस्ल के अनेक घोड़े हैं। आपकी मुदुसाल के घोड़ों ने कई बार पुरस्कार प्राप्त किये हैं। पंचायत समिति रानी के चहुँमुखी विकास, कृषि और शिक्षा आदि कार्यों में आप पूरा रुचि लेते हैं। अपने क्षेत्र में इसी कारण ये लोकप्रिय हैं।

श्री धनराज जैन



श्री धनराज जैन का जन्म पाली जिले के जतारण नगर में एक सम्पन्न जन व्यावसायिक परिवार में हुआ। अपनी शिक्षा पूराकर आप बनालात करने लगे और जनता के सम्पर्क में श्राये। प्रारम्भ से ही जनहित और समाज सेवा में इनकी रुचि रही है। जतारण क्षेत्र में जागीरदारी जुल्मों के विरुद्ध जन आंदोलन में आप सक्रिय रहे हैं। कांग्रेस के जिला महासत्री, जतारण ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष एवं महत्वपूर्ण पदों पर आप रहे हैं। मारवाड रिलीफ सोसायटी के माध्यम से आपने अकाल के समय क्षेत्र की अविश्वसनीय सेवा की है। क्षेत्र में अपने सरल और शालीन व्यवहार एवं प्रेम के कारण आप बहुत लोकप्रिय हैं। ईमानदार निर्भीक एवं सक्रिय जनसेवक होने के कारण पूरे जिले के जन समाज और जनता में आपको काफी आदर की दृष्टि से देखा जाता है।



श्री डूगरमल खाण्डप



श्री डूगरमलजी खाण्डप ने पाली जिले के ग्राम निसाज में लोकपरिषद् के पुराने कार्यकर्ता श्री जालूरामजी के घर जन्म लिया था। अपने माता-पिता की अदृष्ट देखभाल और जागीरी जुल्मों के विरुद्ध उनके जीवन सचप से प्रेरणा लेकर ये भी सावजनिक सेवा में बूट पड़े। अनुसूचित जाति के होने के कारण इ होने छुआछूत के विरुद्ध एक अभियान छेडा। श्री खाण्डप जिला दलित वग के वर्गों से मान्नी हैं। सावजनिक क्षेत्र में आपके द्वारा की गई सेवाएँ उल्लेखनीय हैं।



श्री सुस्तानसिंह



श्री सुस्तानसिंहजी का जन्म 18 जून 1954 को हुआ तथा उदयपुर विश्वविद्यालय से आपने कृषि स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा समाप्ति के बाद गाँव में ही कृषि एवं युवागलन कार्यों में सकलन हो गये। 1981 में बरकाना ग्राम पंचायत के सरपंच चुने गये गये। उसी वर्ष पंचायत समिति रानी के प्रधान पद पर भी नियुक्त हुए। वर्तमान में भी आप प्रधान के पद को सुगोभित कर रहे हैं।



श्री हस्तीमल गुलेच्छा



श्री हस्तीमलजी गुलेच्छा का जन्म पाली तहसील के ग्राम गडवाडा में हुआ और तत्कालीन सामंती व्यवस्था के विरुद्ध मारवाड लोकपरिषद् द्वारा बलाये जा रहे आन्दोलन में आप जुड़। ग्राम गडवाडा और उस क्षेत्र के छोटे छोटे जागीरी ग्रामों के निवासियों को हानत साटा-कूता, बठ बगार लाग वाग के कारण बड़ी दयनीय थी। गुलेच्छाजी ने मारवाड लोकपरिषद् के जयनारायणजी याग, मानमलजी जैन मधुरादासजी माधुर जैसे नेताओं को क्षेत्र में आमनिन कर तथा सम्मेलन आयोजित करवाय और यहाँ जागृति पैदा की। पीड़ित लोगों व अगुवा बनकर उह मुक्त कराने हेतु काय किया इससे आपकी लोकप्रियता बढ़ी।



हैं और उन विरले किसानों में हैं जो कम जमीन पर किसान साधारणों और वनानिक पद्धति से खेती कर यथेष्ट आमदनी प्राप्त करते हैं। जेट्टसिंह जी सन् 1954 में प्रथम बार प्रायोगिक तौर पर सामूहिक ग्राम पंचायत लूनावा के सरपच चुने गये और 1959 तक लूनावा के सरपच रहे। इसके बाद ग्राम पंचायत छोटी हुई तो 1959 में बारवा ग्राम पंचायत के सरपच चुने गये और तब से अब तक वहाँ सरपच हैं। इस प्रकार लगातार 6 वर्षों तक चुनिन्दा सरपच रहने का आपको श्रेय प्राप्त है।

जमींदारी ग्राम और सामंतशाही वातावरण में भी कांग्रेस का भ्रष्टा पहचान वान जेट्टसिंह जी ने दलितों और गरीबों की हूर प्रकार से सहायता की तथा जमींदारी जुल्मों से संरक्षण कर ग्राम में समग्र विकास का महत्त्वपूर्ण काम किया। आप सच्चे कमनिष्ठ कांग्रेसी हैं। बाली पंचायत समिति के सभी सरपचों ने आपकी निष्ठा और ग्राम्यता का आदर करते हुए आपको सन् 1988 में प्रधान चुना। आप क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हैं। अनुसूचित जाति व जनजाति के विकास का बहुत बड़ा काम आपने किया है।

विश्वास है। आप सदैव निराल्प, सत्यवादी व ईमानदार रहे हैं। राजनीति में छल प्रपच एवं दाव पच से सदैव रहे हैं। आपके विपक्षी भी आपका आदर करते हैं। वारेसे आपका स्थान सम्मानजनक व जिले के अग्रगण्य समाज में है।



श्री बशीलाल बाले

पानी जिले की सुमेरपुर पंचायत समिति क्षेत्र तख्तगढ के निवासी श्री बशीलालजी बालीया इस क्षेत्र के प्रमुख व्यवसायी होने के साथ साथ राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाले युवक हैं।

तख्तगढ पंचायत के सरपच चुने जाने पर इन्होंने स्थानीय साधन जुटा कर विकास की अनेक योजनाओं से तख्तगढ का कामा पलट किया जिससे तख्तगढ एक आधुनिक सुविधाओं से युक्त तटपर बन गया। श्री बशीलाल जी अपनी कार्यशीली और लोकप्रियता के कारण सुमेरपुर पंचायत समिति के प्रधान चुने गये। सुमेरपुर में उद्योग बस्ती व विकास में भी इनका योगदान रहा है। क्षय में अत्यंत लोकप्रिय बालीयाजी जिला कांग्रेस कमेटीयों में कई पदों पर रह चुके हैं।



श्री छोगालाल चौधरी

श्री छोगालाल चौधरी पानी जिले की खारची तहसील के देवली आहवा ग्राम के उत्पत्तिमूल किसानों में हैं। आरम्भ से ही कांग्रेस के निष्ठा-

वान कार्यकर्ता रहे हैं। आपने देवली के सरपच के पद पर और पंचायत समिति-खारची के उपप्रधान के पद पर काम किया एवं पानी जिला कांग्रेस के अध्यक्ष जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर भी रहे। आप सन्धारिता एवं किसान आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। क्षेत्र का मामली वग मन्ब आपके विपक्ष में रहा है पर किसान वर्ग के आम में व नारा रहे हैं। आप उत्पत्तिमूल विचार के हैं और गीरवी मन्बत्र में जो धार्मिक अज्ञानविश्वास और रुढ़िवादिता एवं दबक ने के उमगा मन्ब विरोध करते हुए निष्ठावान बनकर पत्रिज जनमता व जाधार पर राजनीति करते रहे हैं जिससे कारण अग्र विग्रही व रुढ़िग्रन्त विमान न भा आहवा साथ नएँ किया। पर यहाँ तक व पानी जिले की पूरी जनता का आम अटूट प्रेम व



श्री छगारसिंह चौधरी

श्री छगारसिंहजी चौधरी का जन्म ग्राम देवली (भाऊवा) जिला पानी में हुआ। पं साधारण रिमान परिवार में हैं। व्यवहार एवं जीवन में गरमता और निष्ठा व कारण तथा देवली ग्राम व खारची क्षेत्र के



सौरवी समाज के प्रभावशाली तबड़े से सम्भावित होने के कारण ये खारची विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहे। तभी से सक्रिय राज नीति में भाग और लगातार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर विधायक चुने जाते रहे हैं। पार्टी में खगारसिंहजी की बहुत मायता है और जनता में आप बहुत लोकप्रिय हैं। अपने सरल व्यवहार और निष्पट नीति के कारण एक शक्तिशाली किसान नेता के रूप में पक्ष और विपक्ष के सभी लोगों का समान रूप से इन्हें विश्वास प्राप्त है। खारची में जागीरदारों का प्रभुत्व समाप्त करने का श्रेय श्री खगारसिंहजी को ही जाता है।

श्री धनराज जैन



श्री धनराज जैन का जन्म पाली जिले के जतारण नगर में एक सम्पन्न जन व्यावसायिक परिवार में हुआ। अपनी शिक्षा पूरा कर आप बचालात करने लगे और जनता के सम्पर्क में आये। प्रारम्भ से ही जनहित और समाज सेवा में इनकी रुचि रही है। जतारण क्षेत्र में जागीरदारी जुल्मों के विरुद्ध जन आन्दोलन में आप सक्रिय रहे हैं। कांग्रेस के जिला महासचिव, जतारण स्नातक कांग्रेस के अध्यक्ष एवं महत्वपूर्ण पदों पर आप रहे हैं। मारवाड़ रिलीफ सोसायटी के माध्यम से आपने अनास के समय क्षेत्र की अविस्मरणीय सेवा की है। क्षेत्र में अपने सरल और शालीन व्यवहार एवं प्रेम के कारण आप बहुत लोकप्रिय हैं। ईमानदार, निर्भय एवं सक्रिय जनसेवक होने के कारण पूरे जिले के जन समाज और जनता में आपको काफी आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

आप सेवामावी, मृदुभाषी, व्यवहारकुशल युवा राजनीतिज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त अच्छी नस्ल के घोड़ों के विशेषज्ञ हैं तथा स्वयं इनके पास भी अच्छी नस्ल के अनेक घोड़े हैं। आपको छुटसाल के घोड़ों ने कई बार पुरस्कार प्राप्त किये हैं। पंचायत समिति रानी के चहुँमुखी विकास, कृषि और शिक्षा आदि कार्यों में आप पूरा रुचि लेते हैं। अपने क्षेत्र में इसी कारण वे लोकप्रिय हैं।



श्री डूगरमल खाण्डप



श्री डूगरमलजी खाण्डप ने पाली जिले के ग्राम निमाज में लोकपरिपद के पुराने कार्यकर्ता श्री जालूरामजी के घर जन्म लिया था। अपने माता-पिता की अद्भूत देशभक्ति और जागीरी जुल्मों के विरुद्ध उनके जीवन सचप से प्रेरणा लेकर वे भी सावजनिक सेवा में बूढ़ पड़े। अनुसूचित जाति के होने के कारण इन्होंने छुआछूत के विरुद्ध एक अभियान छेड़ा। श्री खाण्डप जिला दलित वगैरे बर्षों से मन्त्री हैं। सावजनिक क्षेत्र में आपके द्वारा की गई सेवायें उल्लेखनीय हैं।



श्री सुक्तानसिंह



श्री सुक्तानसिंहजी का जन्म 18 जून 1954 को हुआ तथा उदयपुर विश्वविद्यालय से आपने कृषि स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा समाप्ति के बाद गाँव में ही कृषि एवं पशुसंरक्षण कार्यों में संलग्न हो गये। 1981 में बरवाणा ग्राम पंचायत के सरपंच चुने गये। ग्राम ही उसका वय पंचायत समिति रानी के प्रधान पद पर भी विश्ववी हुए। वर्तमान में भी आप प्रधान के पद की सुशोचित कर रहे हैं।



श्री हस्तीमल गुलेच्छा



श्री हस्तीमलजी गुलेच्छा का जन्म पाली तहसील के ग्राम गडवाडा में हुआ और तत्कालीन सामंती व्यवस्था के विरुद्ध मारवाड़ लोकपरिपद द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन में आप जुड़ें। ग्राम गडवाडा और उस क्षेत्र में छोटे छोटे जागीरी ग्रामों के निवासियों की हालत लाटा-कूता, बूढ़ बगार लाग बाग के कारण बड़ी दयनीय थी। गुलेच्छाजी ने मारवाड़ लोकपरिपद के जयनारायणजी ग्राम मानमलजी जन, मधुरादासजी माधुर जसे नंताभा का क्षेत्र में आमि भूत कर सभा सम्मेलन आयोजित करवाय और यहाँ जागृति पैदा की। पीछित लोगों का अनुभव बनकर उन्हें मुक्त कराने हेतु कार्य किया, इससे आपको लोकप्रियता बनी।



आजादी के पश्चात् अपनी सेवाओं व कारण ये अपने ग्राम गववाडा की ग्राम पंचायत के बीस वर्षों तक सरपंच चुने जाते रहे । इन दौरान आपने क्षेत्र में अनेक विकास कार्य सम्पन्न कराये और आज भी सावजनिक विकास कार्यों में आप बराबर रुचि लेते हैं ।

ऐसे ही राष्ट्र प्रेम के सत्कारों के कारण मोहनराजजी राजकी विद्यालय के मुख्य अम्पायक का पद छोड़कर जनता की सेवाएँ करने लग गये ।

वर्षों तक सरपंच रहकर इन्होंने सुमरपुर के विकास को प्रदान की और आज भी सवारत हैं । इन दिनों अपने कृषि फार्म पर अधिक ध्यान देते हैं और जन-व्यथाएँ की दृष्टि से जल्दी रचनात्मक कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं ।



श्री अमरसिंह मीणा



स्व श्री अमरसिंहजी मीणा का जन्म नाणा स्टेशन के निवासी श्री भँवरराजजी के घर 5 अगस्त 1944 को हुआ । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई । इसके बाद फासला कॉलेज में उच्च शिक्षा प्राप्त की । खेती के काम में आपकी रुचि रही । उच्च तकनीक से कृषि कर आपने साबित किया कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी कृषि कार्य में सम्पन्नता अर्जित की जा सकती है ।

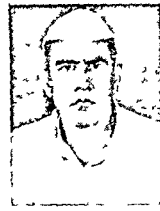
ग्राम चामुडरी के वे लगातार सरपंच चुने गये और आदिवासी क्षेत्र के ग्रामों के निवासियों के सामाजिक विकास हेतु एव सामंती तन्त्रों व शोषण से उनकी मुक्ति कराने के लिए कटिबद्ध अव्यक्त परिश्रम किया । एतद्व्यतिरिक्त उस क्षेत्र के आसामाजिक तत्त्वों ने पदच्युतपुत्रक मुखावस्था में ही इनकी हत्या कर दी ।

अपनी निर्भीकता और मूर्खवृत्त के कारण श्री मीणा सारे क्षेत्र में बड़े ही लोकप्रिय थे । इनको वे गुरु स्वाभाविक रूप से मानते थे ही अपनी माँ से विरासत में मिले थे । आदिवासी क्षेत्र के बलाघाणवर्द्ध विकास योजनाओं का मूर्तपात आपने प्रयत्नों से हुआ और नासतकारों की रुचि उत्पन्न कृषि की ओर अग्रसर हुई । आपके असामयिक निधन से गरीब और शोषित जनता की बड़ा घबराहट लगा है ।

श्री मोहनराज सुराणा



श्री मोहनराजजी सुराणा का जन्म सुमेरपुर बस्वा की आबाद घराने के परिवार में हुआ था । इन्होंने वास्तविकता से ही अच्छी शिक्षा प्राप्त की । उनके परिवार का भी स्वाधीनता आन्दोलन में अग्रत सनानी श्री बी एल राजगुरु की अग्रणी श्रेणी शिक्षा और



श्री मांगीलाल भसाली



श्री मांगीलालजी भसाली का जन्म पाली जिले की मारवाड़ जयधाम सहसील के जोजावर ग्राम में श्री श्रीरामचन्द्रजी भसाली के घर हुआ ।

आपने ग्राम में ही साधारण शिक्षा ग्रहण की और शिक्षा के बाद आप राजनीति में भाग लेने लगे ।

उस समय के डाकुर नेशरीसिंह जोजावर इस युवा परिषदी कार्यकर्ता से काफी घबराये थे इसलिए इनको हर तरह से परेशान किया गया । श्री भसालीजी पर नाना प्रकार के भूठे मुकदमे किए गये पर सच्चाई छिप नहीं सकी और आप हर मुकदमे में विजयी हुए । ग्राम के प्रत्येक सामाजिक कार्य विकास व कार्य एव दसियों की सहायता में पूरा सहयोग देते रहे । आज भी आप उसी उत्साह एव निडरता से कार्य कर रहे हैं । सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी आपकी रुचि है ।

डाकुर भेरूसिंहजी



स्व श्री भेरूसिंहजी का जन्म 1920 में हुआ था । आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जोजावर के चौधमनी स्कूल में और उच्च शिक्षा गवरी कॉलेज, अजमेर में हुई । पाला योग व अच्छे विद्यार्थी होने से कॉलेज में हास्यकार छात्रों में से थे । शिक्षा समाप्ति के बाद घर पर ही बरकाना में कृषि कार्य व पशुपालन कार्य शुरू किया । सन् 1952 में आप वाली क्षेत्र के विधायक रहे । फिर गाँव के सरपंच



रह। अच्छे पशुपालन के साथ-साथ घोड़े पालन में विशेष रुचि थी व घोड़ों की नस्ल के बारे में अच्छी जानकारी थी, जिसके कारण राजस्थान में अच्छे घोड़ों के लिए बरकाना का नाम रहा। 1978 में आपका स्वगवास हो गया।

प नन्दलाल शर्मा

प नन्दलालजी शर्मा की जन्म भूमि उत्तर प्रदेश है और वही पर इन्होंने आजादी के समय में भाग लिया था। अपने मसमरप मुनाते हुए यह प्रबुद्ध स्वतंत्रता सेनानी जब, उन दिनों में जर्मनी राज के सिपाहियों द्वारा जिन प्रकार अत्याचार और दमन किया जाता था तथा जेल में जो यातनाएँ दी जाती थी, उनका सजीव वान करन हैं तो मुनकर रोगटे खडे हा जाते हैं।

श्री शर्मा को भी जन में अत्यधिक यातनाएँ दी गईं थी। वार में पंडित जी जाजीविका के लिए रन्वे स्थान संस्था आ गय और यहाँ एक हीटल खीन कर अपना व्यवसाय गुप्त किया पर साथ में राष्ट्रीय प्रेम और जाष्टि का भाव भी बराबर करत रह। इनमें योग इनके अनुगामी बन और इनके नृत्य न वह जन आदानन हुए।

स्थानीय लोगों में इनके प्रति इतनी प्रशंसा है कि वृद्धानस्था में भी इन्हें स्थानीय ग्राम पंचायत का सरपंच चुना गया और इन्होंने विगत के अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए।

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित ग्राम देवली आड़वा के रहने वाले हैं। इनका बगलौर में काफी अच्छा कारोबार था।

देवली से आपका बहुत सम्बन्ध सदा बना रहा है। ये राष्ट्रीय आन्दोलन व विचारों से यहाँ की जनता को अवगत कराते रहते थे। इन्होंने सब प्रथम मारवाड़ के किसान नेता बलदेवराजजी मिर्घा को आमंत्रित कर एक किसान सम्मेलन का आयोजन किया था और तभी से गाँव राजनीतिक चेतना और आन्दोलन का केन्द्र बन गया। श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित का भाव में अत्यंत ही लोभ प्रिय है और कई वर्षों तक सरपंच का पद पर आसीन रहे हैं।

श्री दिलदार या 'मुगल'

श्री लितार या पानी निवासी हैं। अजिा पडे तिघे न होने पर भी राजनीति में आरंभो गहरी लिखवण्यो है। श्री मूलचन्द्रजी बागा क विचारमयान साथी क रूप में इन्होंने राजनीति में प्रवेश किया था। वर्षों तक उनको साथ रहकर पानी धान की जनता की सेवा करत रहे हैं। स्वर्गीय श्री मूलचन्द्रजी की भाति य भी गावा में सामग्री जुटाना व बरबाबर लक्षण रह है और आज भी उसी जोग सरीय क साथ मसप करत व सेवा करत रह है। श्री 'मुगल' एमे भाषणकारों हैं आ कभी यकने का नाम नहीं लेते। आज इनका और किया स्तरीय कांतिन केटिया के वर्षों तक पत्राधिकारी रहे हैं और आज भी हैं।

पंडित मांगीलालजी



वर रायपुर निवासी श्री मांगीलालजी रिप्रा मन् 1955 में ग्राम परासन वर क सरपंच बना तथा मन् 1959 में पंचायत समिति रायपुर क आर प्रथम प्रयात पुन रूप व मन् 1962 में रायपुर विधान सभा भंग क विचारक बन गये।

आरम्भ में ही राजनीति में आरंभ की शक्ति रखते थे। पंचायत का पद पर रहकर पंच पंचायत क्षेत्र में भागन करत विभाग कार्य करत। रायपुर की स्थानीय के सरपंच पद रायपुर पंचायत समिति क प्रयात पर पर रहकर धारन पुर पंचायत समिति के प रिभा स्वस्थ कुंठि निबाई आदि क मापनों क विभाग कार्य करत। मन् 1962 में रायपुर क विधानक पद पर निर्वाचित होने पर आरंभ क्षेत्र गृह बडे तथा और आरंभ अनन क्षेत्र में गहरों का



निर्माण, सिंचाई का विकास शिक्षा, विज्ञानी विनिरासा तथा डाक तार विभाग सम्बन्धी अनेक विकास कार्यों का सम्पन्न कराया। आज मा आप अपने क्षेत्र को जनता की भलाई में लगे हुए हैं।

श्री देवराज सुराणा



कामरेड हमीद बेग



स्व श्री हमीद बेग दमुरी के निवासी थे और उच्च शिक्षा प्राप्त कर राजकीय विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यशील थे। इसी दौरान उनका तयादला ग्राम देवती-याजूजी स्थित पाठशाला में हुआ और वहाँ आप मोहनराजजी जैन के सम्पर्क में आये। उनमें सखि होकर राजनीति में काम करने की इच्छा जागी। राजनीति में सम्बन्धित साहित्य भी आपने पढ़ा और दृढ़ निश्चय किया कि समाज का शोषण मुक्त बनाने के लिए प्रगतिशाल आर्थिक नीतियों को अपनाया आवश्यक है। नौकरी में इस्तीफा देकर आपने समाज परिवर्तन के सपने में अपने आपको समर्पित कर दिया।

श्री बेग का चिंतन अत्यंत ही स्पष्ट था अत ईमानदारी पूर्वक पूर्ण मनोयोग से जनसेवा में जुट गये। परिवार की कमजोरी आर्थिक स्थिति की ओर भी उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया। काल बढ़ा क्रूर होता है, पर श्री बेग ने तो सबसे भी सघन ही माल लिया। दलितों और गरीबों की शिक्षामत्तो की सुनवाई न होने की सूरत में अपनी रुग्णवस्था में ही इन्होंने अदालत के बाहर अवशान व्रत लेकर धरना दिया और अपने प्राणा की आहुति द दी।

श्री गोमाराम जटिया



श्री गोमारामजी जटिया ग्राम बिसलपुर के निवासी हैं। आप आजादी के पहले से ही लोक परिषद् के आंदोलन से जुड़े रहे हैं। श्री गोमारामजी उच्च शिक्षा प्राप्त न होने पर भी बड़े हिम्मती और सघनशील व्यक्ति हैं। सारी जिन्दगी इन्होंने सामग्री तत्वों से सघन किया है पर कभी हिम्मत नहीं हारी।

श्री छोगाराम मंगा



बिसलपुर के ही गोमाराम जी के अन्त में साथी श्री छोगाराम जी मंगा हैं जो अपनी जान की जीविम में झलकर भी गरीबों के हितार्थ सघन करते रहें हैं। इन दोनों में अच्छी सगठन शक्ति होने से इन्होंने अनुसूचित जाति एवं जनजातियों को सगठित किया है।

श्री देवराजजी सुराणा का जन्म मुमैरपुर में श्री धनराजजी के प्रतिष्ठित घराने में हुआ। श्री देवराजजी की प्रारम्भिक शिक्षा मुमैरपुर में हुई और शिक्षा के दौरान ही स्वाधीनता आंदोलन के समय इनका भुवाव राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र सेवा की ओर हो गया। पत्र-सम्बन्ध में अपना अधिवाग समय जन समस्यारा का निराकरण में देते लगे। इनका पूरा परिवार ही राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित रहा है ऐसा कह तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। नगरपालिका के सम्पर्क रहे हैं या नहीं इनका निवास स्थान कायकताशा से भरा रहता है और स्थानीय तथा क्षेत्रीय समस्यारा को निपटाने में य कायकताओं के साथ सक्रिय बन रहते हैं। श्री सुराणा पूरे मुमैरपुर क्षेत्र में अत्यंत ही लोकप्रिय हैं।

श्री मुखराज गुप्ता



श्री मुखराजजी गुप्ता रामपुर के निवासी हैं। रामपुर के स्वतंत्रता सेनानियों के प्रेरणा लेकर आज भी जन समस्यारा के समाधान हेतु सघन के लिये सदा तैयार रहते हैं। श्री गुप्ताजी पुराने और अनुभवही कायकता हैं और सामग्री शोषण के विरुद्ध कई मोर्चों पर लड़ चुके हैं।

श्री गुप्ता रामपुर नगर पालिका के अध्यक्ष भी रहें हैं। नगर स्लाब व जिला कांसेस के महत्त्वपूर्ण पदों पर रह कर आपन कुशल मत्त्व प्रदान किया है। रामपुर क्षेत्र में आप बड़े ही लोकप्रिय हैं और इन दिनों विकास और रचनात्मक कार्यों में विशेष शक्ति से रहें हैं।



डॉ पोपट पटेल

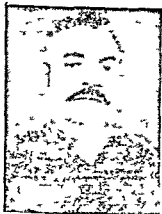


डा पोपट पटेल का परिवार व्यापार की दृष्टि से गुजरात से मारवाड़ जनशान आया। पर, डॉ पापट की राष्ट्र भक्ति, कृतस्यविध्या और जन सेवा की उत्कृष्ट भावना के कारण ये यहाँ के लोकप्रिय नेता बन गये। आपने यहाँ विद्यालय



की शिक्षा प्राप्त कर आयुर्वेद विधान में डाक्टरी की पूर्ण शिक्षा भी ली। अब मारवाड़ जवशान में अपना कारोबार सफरता पूर्वक कर रहे हैं।

डा पटल का कायक्षेत्र युवा कांग्रेस और सेवा दल से सम्बन्धित होने के कारण वसे ता सारा जिला ही है, पर मुख्यतः य घारवी आर देमुरी क्षेत्र में अधिक समय देते हैं। पाली जिल के युवा वग में इनका अच्छा प्रभाव है। ग्रामीण क्षेत्र से समस्याए लेकर लोग प्रतिनिधि इनके यहाँ जाते हैं। इनका अधिकांश समय जनसभा में ही व्यतीत होता है।

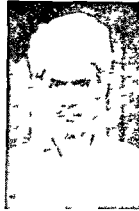


श्री मूलशंकर ओभा

श्री मूलशंकरजी ओभा का जन्म 25-1-1949 को वाली तहसील क दुजाना ग्राम में पंडित लक्ष्मीरामजी के घर हुआ था। कठिन परिस्थितियों में शिक्षा ग्रहण कर ये बम्बई चले गये तथा आपने 1972 में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करली। निष्ठा से काय करते रहने के कारण 1982 में वाड नं० 159 से बम्बई युवा कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर चुने गये। फिर कुछ समय बाद ये विज्ञानी-बम्बई में स्नातक कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर चुन लिये गये। सन् 1982 में इनकी ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर महाराष्ट्र सरकार ने स्पेशियल एक्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट के पद से सम्मानित किया। ये बम्बई में कई सामाजिक कमेटियों के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं तथा एक सफल पत्रकार भी रहे हैं।

गाव दुजाना में भी इन्होंने शिक्षा स्वास्थ्य पेयजल आदि विकास कार्यों में अपना योगदान दिया है। साथ ही अपने समाज में फली नुरीतियों के विच्छेद भी लड़ाई लड़ी जैसे-नशाधारी, दहज, मृ युमोज खादि। ये श्रीमाली समाज में पुनर्निर्वाह के पक्ष में हैं।

आप आज भी उसी उत्साह से काय कर रहे हैं।



श्री सबलसिंह राजपुरोहित

श्री सबलसिंह जी का जन्म वाली तहसील के शिवतलाय गाव में हुआ और प्रारम्भिक शिक्षा के बाद कृषि काय में आप परत हो गये। गावों में सामंती अत्याचारों ने इनके दिमाग में विद्रोह की भावना को बलवती बनाया और सन् 1960-61 में आपने कांग्रेस पार्टी का समर्थन करत हुए राजनीति में प्रवेश किया। उ ही दिना मुझारा सकिल याय पचायत के अध्यक्ष चुन गये। अपनी वामपंथी विचारधारा को पुष्ट करत हुए आप साम्यवादी पार्टी के सदस्य बन गये। अपना पूरा समय पार्टी को दत्त हुए अपने कामरेड साथी मोहनपुरी (वाली) के साथ आदिवासी क्षेत्र में राजनीतिक जाग्रति का काय सफलता पूर्वक संचालित किया।

सन् 1984-85 में श्री सबलसिंहजी वाली पचायत समिति के उप प्रधान चुने गये और प्रधान श्री रघुनाथजी परिवार के विवायक बनते ही इन्हें प्रधान पद प्राप्त हो गया। आप आज भी राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।



डॉ मदन जी जोशी

डॉ जोशीजी का जन्म सेवावाडी ग्राम के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में हुआ। स्वभाव से आप राजनीतिक कम और समाजसेवी अधिष्ठान हैं, पर राजनीति में आजाधी के पूर से ही सक्रिय रहे हैं। आजाधी मिलने के पश्चात् आप साम्यवादी पार्टी से जुड गये और उसी के चिन्ह पर विधानसभा का चुनाव भी लडा।

अत्यंत सरल और सेवाभावी डॉ जोशी न अपना जीवन गरीबी और बीमारों की सेवा में समर्पित कर रखा है। इनके घर पर सुबह से ही गरीब बीमारों की भीड लग जाती है और डॉ जोशी गरीबी की सेवा में लग जाते हैं। जीवन भर निःशुल्क सवा प्रदान करने वाले डॉ जोशी अत्यंत लोकप्रिय हैं।

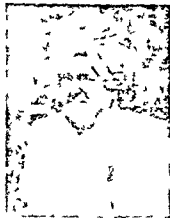


श्री पोकरराम साखला



श्री सायलाजी का जन्म नेहडा बेरा (सोजत) में त्रिभूत सवत् 1982 में एक साधारण परिवार में हुआ। वही आपने साधारण शिक्षा ग्रहण की। सन 1948 में बूटा का काम सोजत तहसील में अटपडा ग्राम में आपका आरम्भ किया जो आज भी सफलता पूर्वक चल रहा है।

आज सन 1902 में कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बने तथा सन् 1983 से 1986 तक सोजत नगरपालिका के अध्यक्ष पद पर रहे। उस समय आपने स.जी मण्डली का निर्माण कराया व नगर में शौचालय नालियो व सड़ना का निर्माण कराया। सोजत में सेवा मण्डल की आपने स्थापना की जिसके तत्वावधान में 8 वर्षों से नेत्र चिकित्सा शिविर साखला भवन, नयापुरा सोजत में लगवा रहे हैं। आप सेवामावी लोकप्रिय, सरल हृदयी, मृदुभायी एवं 'यवहारकुशल' व्यक्ति हैं।



श्री देवराज चौहान



श्री देवराजजी चौहान का जन्म पाली जिले की रायपुर तहसील के मेमदरा गाम में हुआ था। क्षत्र में शिक्षा सुविधा उपलब्ध न होने के कारण अपने स्वयं के प्रयत्नों से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। अनवरत वर्षों तक वे क्षत्र की छात्रा के एक मान्यक से संबन्धित रहे। फिर आपका ध्यान दृष्टि की बीर मुडा तो विराटिया बला में जमीन सरीर कर अपना निजी काम स्थापित किया और बिजली सुविधा दूरकर और जीव इत्यादि से आयुनिवीकरण कर उसे उन्नतियों ल बनाया।

आपने सन् 1956 में समाज सेवा के प्रवेश किया व लगभग 15 वर्षों तक ग्राम सेवा सहकारी समिति चर के मंत्री पद पर रहे। 12 वर्षों तक ग्राम पंचायत के अध्यक्ष रहे। साथ ही को ऑर्गेटिव मार्गेंटिंग सोसाइटी, रायपुर व को ऑर्गेटिव भूमि विकास बैंकपाली के डायरेक्टर भी रहे। आप 1971 तक ग्राम पंचायत, चर के अध्यक्ष के पद पर रहे। आपके कार्यकाल में ग्राम पंचायत चर में बहुमुखी विकास और उन्नति हुई। सन 1981 में ही आप कांग्रेसी प्रत्यागी के रूप में पंचायत समिति रायपुर के प्रधान चुने गए। आपके कार्यकाल में पंचायत समिति रायपुर में विकास के बहुत काम हुए।

विगत अज्ञात के वर्षों में भी आपने अपने क्षेत्र में सरकारी सहायता और जन सहयोग से अज्ञात राहत के अनेक कार्य करवाये और जनता की सेवा की। आप विद्यालय वगैरे की माली जाति से हैं और लगभग 10 वर्षों से समस्त पाली जिले के माली समाज का अध्यक्ष हैं। आपने समाज को संगठित कर कांग्रेस के भण्ड के तन साकर छडा किया। श्री चौहान निर्भीक कुशल बबता ईमानदार और परिश्रमी राजनेता के रूप में जिले में विख्यात हैं।



श्री रूपचन्द दाफना



श्री रूपचन्द जी दाफना का जन्म पाली जिले की बानी तहसील के मेवाडी ग्राम में हुआ। आरम्भ में आप बम्बई में व्यापार करते थे और वही से राजनतिक जीवन प्रारम्भ किया। सन 1967 में सुमरपुर से विधायक का चुनाव लडा। मवाली में 1949 में सरपंच और कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बने। इस प्रकार तीन बार सरपंच का चुनाव जीत कर पद पर बने रहे। मरीची को फाडा बम्बल और अज्ञात हर साल मुक्त विनयण करते हैं इसी प्रकार मरीच विद्याभिया को मुक्त वपडे पुनर्क व कोय देवर सहयोगिता करते हैं। सेवाही गाम में हाईस्कूल, अलगाव म.के कोआरगटिड मादाम आदि बनाने में आपने सक्रिय योगदान दिया है। आप बाली न्याक कांग्रेस के 10 वर्षों तक अध्यक्ष रहे थे तथा अनुभवित जाति और अनुभवित जनजाति वगैरे राजनतिक और सामाजिक सेवा के कार्य करते हैं।

श्री दीपचन्द चौहान



श्री दीपचन्द चौहान का जन्म पाली जिले की देवुरी तहसील के खलोप ग्राम के एक मध्यम जन परिवार में हुआ। रानी में इनके परिवार का जन्म हुआ व्यापार है अतः इनका वायव्य रानी ही रहा। साधारण शिक्षा प्राप्त कर आपने पत्र व्यापार सम्हाल लिया। ये प्रारम्भ से ही कांग्रेस से जुड़े गये और घामों में बैठ बेगार और



जागीरदारी जुल्मा के विरुद्ध आंदोलन म सत्रिय रहे। कांग्रेस संगठन म इ हान जिला व ब्लाक स्तर पर महत्वपूर्ण पदों पर काय किया और रानी ब्लाक मे कांग्रेस को संगठित कर प्रभावशाली बनाया।

श्री दीपचन्दजी की गिनती जिले के निर्माक और ईमानदार सामाजिक कार्यकर्ताओं मे होती है। समाज के सभी वर्गों मे इ ह प्रतिष्ठा प्राप्त है। अपने राजनतिक जीवन के साथ ही श्री चौहान कई शिक्षण एव समाजसेवी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। रानी बस्वे के विकास मे इनका प्रमुख योगदान रहा है। गत वर्षों मे अकाल के वक्त भी श्री चौहान ने क्षेत्र म अकाल सहायता मे काफी काम किया है।



श्री जेठमल सुराणा

श्री जेठमल सुराणा वाली ने प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटमलजी सुराणा के सुपुत्र हैं। सेवा द्याग, सादगी इह जन्म स ही स्कारो के रूप म सहज प्राप्त है। आपने शिक्षा पूरी कर फालना स्टेशन को ही अपना नायक्षेत्र बनाया और वही प्रिंटिंग प्रेस और छाता उद्योग लगाया।

श्री सुराणा स्थानीय व जिला स्तरीय कांग्रेस कमेटिया म पदाधिकारी रह चुके हैं और अच्छे जनपयोगी सावजनिक काय मे स्वेच्छा से समय पूर्वक समर्पित भाव से लग जात हैं। अनेक विद्याण संस्थाया व समाजसेवी संस्थाओं से आप जुड़े हुए हैं और क्षेत्र म काफी लोकप्रिय हैं।

श्री मनरूपराम मेघवाल

देसूरी सहस्रौले के गजनीपुरा नामक एक छोटे से गाव मे श्री मनरूपरामजी का जन्म हुआ। आपने निरन्त के ग्राम खीमाडा म प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। प्रारम्भ से ही इहाने दलितों और अनुसूचित जाति के हितों के लिए सघन करन का व्रत लिया था। इसी माबना के बलवती होने पर ये राजनीति मे सत्रिय हुए और अपनी पत्नी सहित जिला परिषद् पाली व सहजुत सदस्य चुने गये।

श्री मनरूपरामजी देसूरी सुरक्षित क्षेत्र स विधायक चुन गये और इ ह गरीबा की भावना जुलुद करने का मौका मिला। सत्ता ही निभय होकर इ हाने सामती जुल्मों से टक्कर ली है। जब ये स्वयं दूल्हा बनकर घोड़ी पर सवार हो, शादी करने निकले तो सामती तत्त्वा के उक्साने से उच्च बग के लोगो न इह घोड़ी स उतार दिया था पर श्री मनरूपरामजी अडे रहे और घोड़ी पर बठकर ही बारात का जुलूस निकला। इससे अनुसूचित जाति के लोगो का उत्साह बढ़ा। आप आज भी राजनीति म सत्रिय हैं और अधिकतर समय पाली मे ही रहते है।

श्री छगनलाल पुनमिया

श्री छगनलालजी पुनमिया खण्डाला गाव के निवासी हैं। आजादी के पूर्व से ही स्वतंत्रता आंदोलन मे साथ आप जुड़े हैं। सामत विरोधी आंदोलन मे इहोने सत्रिय भूमिका निभाई है। वर्षों तक आपने कांदिंस व स्थानीय स्तर के पदाधिकारी रहते हुए जनता की सेवा की है। उनका स्वयं का धंधा कृषि है। किसानों को समस्याएं निपटाने और उसके लिए आंदोलन करने मे ये हमेशा आगे रहे हैं। इसीलिए किसान बग म बहुत लोकप्रिय हैं।

सावजनिक सेवा के क्षेत्र मे सत्रिय होने से कुछ वर्षों के लिए ये खीमल माय पचायत के सदस्य भी रह। अपना अज्ञानाथ समय जन समस्याओं को सुलभाने मे लगाते हैं इसीलिये पालना-खुडाना नगरपालिका के कई वर्षों से लगातार सदस्य चुने जात रहे हैं।



श्री इस्माइल भाई

श्री इस्माइल भाई पाली जिले के नाणा ग्राम के एक प्रतिष्ठित व्यापारी परान म जन्मे। इस परिवार का व्यापार सुदूर आदिवासी क्षेत्र म फैला हुआ था

अन इस्माइल भाई न पहाड़ी क्षेत्र के दूर दरान के ग्रामों मे निवास करन वाले आदिवासिया और ग्रामीणों के अभाव अभियोगों को निरन्त से देखा था। आपने अपने व्यापार के साथ साथ आदिवासियों के कल्याण के अनेक विकास कार्यों को कराने में रुचि ली है।



अपनी लोकप्रियता के कारण ही ये यहाँ तक बाली तहसील
पंचायत और पंचायत समिति बाली के सदस्य रहे। अपनी 'मधुवार'
कुशलता और दूरदृष्टि के कारण यहाँ में शिक्षा, विज्ञान, पेशवा
सङ्क माग आदि की सुविधाएँ जन साधारण को उपलब्ध करायी।
स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से ही इनका समर्थन कांग्रेस व मारवाड़ लोक
परिषद् से हो गया था। क्षेत्र में समा-सम्मेलनों द्वारा जन जागृति
का महत्त्वपूर्ण काम आपने किया था।

श्री लूणकरण जैन

श्री लूणकरण जी की जीवन महानी सारे मारवाड़ के आजादी
के आंदोलन में अपने त्याग और बलिदान की परिमामय कहानी है।
श्री लूणकरणजी अत्याच तहसील के निम्नोत्तम प्राम के निवासी हैं।
मारवाड़ लोक परिषद् द्वारा जागीरी प्रया के विरुद्ध चले आन्दोलन से
प्रभावित होकर वे भी सक्रिय कार्यकर्ता बन गये। फलस्वरूप
जागीरदार और उनके कारिदे उनसे सख्त नाराज रहते लग और
उनको जान से मारने का मौका दूतने लगे।

श्री लूणकरणजी अतारण क्षेत्र में श्री माधोलालजी प्रातिका
सेठ रिखबदासजी आदि के नेतृत्व में हो रही समार्यों में भाग लेते
थे। इसी क्रम में निम्नोत्तम प्राम की एक सभा में जागीरी मुर्गों ने
भीषा पाकर लूणकरणजी को घेर लिया था और उनके नाव जान
काट दिये थे। इन नगस काट की सारे मारवाड़ में तीव्र निंदा की
गयी थी। जागीरदार की इस विनायी का रवाही पर कोई रोक
लगाने वाला ही नहीं था। उन दिना प्रामा में दिन रात ऐसे अत्या
चार और हत्याएं आम बात थे।

श्री देवाराम गरासिया

श्री देवारामजी गरासिया बाली तहसील के आदिवासी क्षेत्र
भीमना गाय के निवासी हैं। सन् 1957 में बाली निर्वाचन क्षेत्र
की सुरक्षित सीट से चुनाव उभर कर कांग्रेस उम्मीदवार की हैसियत से
वे विजयी हुए। इसमें पूरा पुनिष्ठा विभाग में सेवारत थे।

गरासिया जाति में शिक्षा का प्रचार करने का द्वा होने महत्व
प्राप्त किया। सामाजिक बुद्धि और गरीबी के विरुद्ध द्वा होने
जादिवासियों को जागृत किया और विकास के अनेक कार्यो को
सम्पन्न कराया। श्री देवारामजी आज भी वृद्धावस्था के बावजूद
सक्रिय हैं और जोभीके प्राणो से जागृति पदा करते हैं।



श्री प्रेमराजजी बोहरा

श्री प्रेमराज जी बोहरा
रायपुर तहसील के पीपलिया ग्राम
के निवासी थे। सवत प्रेमराज
गणपतराज नामक प्रसिद्ध व
प्रतिष्ठित पेशो के आप मुधिमा में,
बाप

जिसका राजस्वान के बाहर भी बड़ा कारोबार था।

सन् 1940 41 के चम्बाल बाड से ही उनका नाम
स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ और मारवाड़ में जिम्मेदार हुक्मत के
लिए लड़ गये सपन से जुड़ गये। उस समय श्री प्रेमराजजी बोहरा
मारवाड़ लोक परिषद् की स्थानीय शाखा के अध्यक्ष थे। चम्बाल
हो या सोजत या बगही, जहाँ भी आंदोलनकारियों पर लाठी
प्रहार होता था यातनाएँ दी जातीं उनकी सहामताय अपनी कर
लेकर आप पहुंच जाते। चम्बाल में हुए भीषण लाठीचार्ज में भी
जमनारायणजी व्यास तथा मीलालाजी बाबा समेत अनेक नेता
दुरी तरह पायल हो गये थे तब उन्हें सोजत और जोधपुर अस्पताल
तक पहुँचाने और उनकी हर प्रकार से सहामता करने का श्रेय श्री
बोहराजी को ही है।

इस परिवार से स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सेनापिता को
बड़ा सहयोग मिला है। आजादी के बाद क्षेत्र में औद्योगिक विकास
में इनके पुत्र गणपतराजजी व स्वर्गीय श्री सम्तराजजी माहू और
स्वर्गीय श्री वारसजी माहू का बड़ा योगदान रहा है।



श्री जेठमल लोढा

श्री जेठमलजी लोढा देवुरी
तहसील के नारलाई ग्राम में जन्मे
थे और यहीं इनकी प्रारम्भिक शिक्षा
हुई। पूर्व के नारलाई ग्राम
वालसा (जोधपुर दरवार का)
में दे दिया गया
अतः नारलाई ग्राम
और देवलसियों अत

था पर बाद में महाराजा अजीतसिंहजी की जागीर में दे दिया गया
और जागीरी सोपण लागू था तब बड़ वेगार और देवलसियों अत
करायाचर हुए थे।

क्रेडिट मिले

अनेक बाली



इही दिना ग्रामो मे मारवाड लोक परिषद् को शाखा खुली और जेठमलजी लोडा ने जनश्रुति का बीड़ा उठा लिया। ग्राम नारलाई म एक प्रतिष्ठित और सम्पन्न घराम के कारण इहे जन समथन प्राप्त हुआ और लोग समगठित हुए।

श्री लोडा का व्यवसाय वस्त्रई मे है। वे वही निवास करते है, पर अभी भी गांव तथा क्षेत्र की सेवा मे आपकी रचि है। शिक्षा के क्षेत्र मे आपकी विशेष रचि है और अपनी ओर से अपने कया विद्यालय का भवन बना कर भेंट किया है। इसने साथ ही मधुकर बालिका विद्यापीठ, वरकाणा विद्यालय आदि अनेक संस्थाओ की आपका सहयोग मिलता रहता है।

श्री भीकमचन्द्र जैन



श्री भीकमचन्द्रजी जन का जन्म स्थान यो तो कोसेलाव है, पर अब ये काफी वर्षों से पाली मे ही निवास करते है। श्री जैन आजादी के आन्दोलन मे अपनी युवावस्था से ही जुट गये थे।

सन् 1950 से पूर्व ग्रामो मे ठाकुरो व उनके वारिदो का बडा जुलम व आतंक था ऐसे समय मे लोक परिषद् व कांग्रेस की मोटियों बनना तो दूर, कोई बात तक नहीं कर सकता था। पर, कोसेलाव मे ही जागीरदार के शिकार का जगल कायनाना हटाने का जो आन्दोलन मोहनराजजी के नेतृत्व मे चला उसम भीकमचन्द्र जी का विशेष योगदान रहा और गांव मे बडी जाग्रति आई। इस जाग्रति के कारण कोसेलाव मे निकट के ग्राम खीमाडा मे भी सभा करने हेतु मोहनराजजी को आमन्त्रित किया तो भीकमचन्द्रजी स्वय कोसेलाव से एक हाथ मे लासटन सिर पर पानी की मटकी और बिछाने की आजम लेकर खीमाडा पहुचे यकीन खीमाडा मे जागीरदार का आतंक ऐसा था कि मोटिंग म आना ता दूर रहा कोई पानी पिलान को भी हीयार नहीं था। ऐसी विपरीत और कठिन परिस्थिति मे लोक परिषद् के समर्थित कार्यकर्ता भीकमचन्द्र जी ने क्षेप के ग्रामों की जो सेवा की है वह मुलाई नहीं जा सकती।

कर उह राहत दिलाने की तमना आप म थी। इसलिये श्री निहाल चन्द जी जन (देवली पाडूजी) के आग्रह पर मारवाड लोक परिषद् के अध्यक्ष बने और सेवा कार्यों मे जुट गये।

सन् 1945 46 के दिना मे मारवाड मे जागीरदारो द्वारा बडे पमाने पर काश्तकारो को उनकी बाकी खातेदारी की भूमि स जबरन धेदखल कर दिए जाने पर अभियान चला था। उही दिना आप इ दरवाडा ग्राम मे काश्तकार थे। जवाली निवासी श्री मूलारामजी चौधरी की मददली करने के लिए कुछ सामती तत्त्व वहा पहुचे तो आप मास्टर रामेश्वरजी शर्मा के नेतृत्व म श्री मूलारामजी की मदद करने मोके पर जा पहुचे। सामती तत्त्वा न व हुका स आप पर हमला कर दिया जिससे मूलारामजी तो वही गहाद हा गये और आप अपने अन्य साथियो सहित बुरी तरह से घायल हुए। इस घटना के बाद श्री रामलालजी का उत्साह और बडा और ये जीवपयत लोकसेवा मे लगे रहे।



श्री रामगोपाल माली



श्री रामगोपालजी माली बसे तो जोधपुर मे मूल निवासी है, पर सोमसर के निकट अपना वृषि पाम स्थापित कर कोई 50 वर्ष पूर्व यही बस गये। रामगोपालजी एक प्रगतिशील विचारो के काश्तकार थे और तत्कालीन जागीरी प्रथा के कारण छोटे-छोटे किसानो पर हा रहे जुल्मा से दु छो रहेते थे। गरीबो की हालत सुधारन के लिए आप मारवाड लोक परिषद् की दबली-पाडूजी की शाय्या के सदस्य बने और अपन माथो रामलालजी आय मास्टर रामेश्वरजी शर्मा श्री रामनिवासी परिहार, निहालचन्द्रजी जन व चम्पासालजी शण्डारी के साथ जन जाग्रति का कार्य करने लग।


श्री मूलारामजी चौधरी का उनके वर से बेदखल बनन के लिए साम ती वग द्वारा बिय गय मालीकाण्ड मे रामगोपालजी अपने अन्य साथी मास्टर रामेश्वर जी तथा रामलालजी आय के साथ बुरी तरह घायन हुए और जोधपुर अस्पताल मे कई दिनों तक रह। श्री रामगोपालजी बडे निर्भीक भ्यतिकर व धनी थ।



श्री रामलाल आय



श्री रामलाल जी आय एक साधारण किसान थे और सोमसर स्टेशन पर निवास करते थे। मुलामो के जमान म जागीरी प्रथा से पीडित रूपक समाज को जाग्रत



झण्डा न नीचे झुकाना

[राजस्थान केसरी श्री विजयसिंह पत्रिक]

प्राण मिथो भले ही गवाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना ।

तोन रगा है झण्डा हमारा, बीच चर्खा चमकता सितारा,
शान है यही इज्जत हमारी, सर नुकाती जिसे हिन्द सारी ।
तुम भी सब कुछ मुसीबत उठाना, पर यह झडा न नीचे झुकाना ॥

है यह आजादपन की निशानी, इसने पीछे है लिखा कहानी,
जिंदा दिल ही है हमका उठाने, मद ही पोथ इस पर चढाने ।
तुम भी सब कुछ इसी पर चढाना, पर यह झडा न नीचे झुकाना ॥

रे क्या भूले हो जलियानवाला, या वो डायर का इतिहास काला,
गोलिया को लगी जब झडी थी, गीब आजादो को तब पडी थी ।
याद ही गर वो पू मे नहाना, तो न झण्डा ये नीचे झुकाना ॥

उसने तो क्या क्या न जुल्म ढाया, पेट के बल भी हमको चलाया,
मा व बहिनी को घर-घर हलामा, फोसो बच्चे को पैदल चलाया ।
और अब भी न क्या हो रहा है कीन सुघ नीद मे सो रहा है,
साखो पाते न भर पेट खाना, सब बोलो तो है जेलखाना ।
है इसी मे पिछडा यह तराना, हाना आजाद या मिट हो जाना ॥

बस करलो अहद मर मिटेंगे, पर व्रत से न तिल भी हटें,
कुछ भी हो ये मुल्क आजाद होगा, उजडा गुलशन भी आबाद होगा ।
गायेंगे आज से सब ये गाना, हिंद होगा न अब ये जेलखाना ॥

झण्डा यह हू एक किले पर चढेगा, इसका बल रोज दूना बढेगा,
तोप तलवार बेजार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे ।
सब बहने बि सर ही कटाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना ॥

शात हथियार होंगे हमारे, पर ये तोडमें और के दुघारे,
बस भला ही जो अग्रज भागें, लोभ हिंदी हकूमत का त्याग ।
वरना तदना है यह क्या टिकाना, उससे बदनेगा सारा जमाना ॥

हे प्रभो ! मति धीर हों हम, टेक सत्यत्व पर ही रखें हम,
हम क्या, कह उठा सब जमाना, दूध देखो न मा का लजाना ।
प्राण मिथा भने ही गवाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना ॥

कामेती ललकारे थनै, धरती मूड बोल ओ ।

मून राखिया मिनघ भरैला, मन मे तोल ओ, टेम बोलणरी

वैर । टेम बोलण री, मून री मुरजाद तूटी ओ टेम०

कुण धरती रो आदु धणी, कुण धरती रो भार ओ ।

किण रे हाथा पाकै खेती, कुण वेकार ओ कह दे बोल नै

वैर । कह दे बोल नै जीव तो मुकान्तर जाऊँ ओ—कह दे बोल नै

— श्री पुष्पेद्र शाला

शत शत नमन् ।



मैसर्स गुंदेचा ब्रदर्स मैसर्स गुंदेचा बिल्डर्स

एस वी रोड, गौरगांव (प), बम्बई-400062

फोन 691436

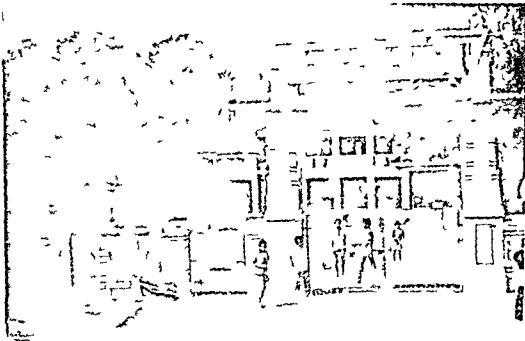
निवेदक पारस गुंदेचा, अशोक गुंदेचा, घाणेराम



स्वर्गीय श्री देवराजजा गुन्देचा की पावन स्मृति का प्रतीक
नव-नाकोडा भैरव पाषवताथ तीर्थ का स्तम्भ

गान जरा म अछा हि दास्ता हमारा
 हम बुजुर्ग ८ उमरी यो गुल्मिमा हमारा ।
 धनाया मितरा रामा यत्र पिट वर जरा य
 यत्र वर मकर १ यत्रा रामो विगा हमारा ।
 बुद्ध वात १ ना हस्वी मित्तो यरी हमारी
 मदिगा रगा १ दृग्ध दार जमा हमारा ।
 वातिल ने दरी वाते ए जायमी नरी हम
 सी यत्र १ यत्रा १ उम्बिता हमारा ।

- मो० इन्ड्याल



श्री कनकराजका मातृशालाका बादा राजवाय उ-१ मा अभिन विद्यालय धामराय (बाबा)

कनकराज लोढा (धाणेराव)

राष्ट्र सेवा मे समर्पित स्वतंत्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं ।

सीजय से

मैसर्स सावतराज तेजराज एण्ड सन्स

20 22 गाममठ स्ट्रीट (छोपी चान) मम्ब-400 002

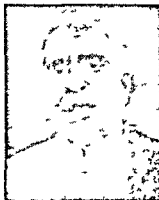
फोन नम्बर 330752, 325792 घर 359059

पाली जिले के जन-प्रतिनिधि

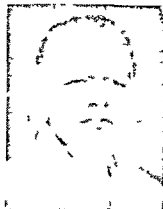
(वय, नाम व उपलब्ध चित्र)

सासद लोकसभा

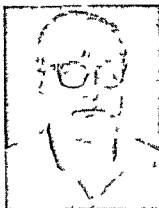
- 1952 श्री धनोजसिंह
1957 श्री हरिश्चंद्र माथुर
1962 श्री जसवंत राज मेहता
1967 श्री एस के तापडिया
1971 श्री मूलचंद डागा
1977 श्री भ्रमत नाहटा
1980 श्री मूलचंद डागा
1984 श्री मूलचंद डागा
श्री शंकरलाल
1984 श्री गुमानमल लोढा
1991 श्री गुमानमल लोढा



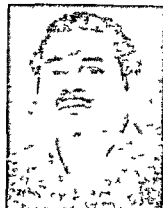
श्री हरिश्चंद्र माथुर



श्री मूलचंद डागा



श्री शंकरलाल



श्री गुमानमल लोढा

राज्यसभा :

श्री विजयसिंह सिरियारी (1954-64)

तत्कालीन मारवाड़ राज्य ऐम्बेली*

विधानसभा सदस्य

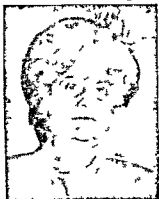
- 1952 रायपुर श्री मोहनसिंह
जतारण श्री उम्मेदसिंह
पाली श्री विशनसिंह
वाली श्री भरू सिंह
सोजत श्री केशरीसिंह
सुमरपुर श्री लक्ष्मणसिंह
- 1957 रायपुर श्री शंकरलाल
खारचो श्री मानरूप
पाली श्री मूलचंद डागा
वाली श्री मोती (बाबा)
श्री देवाराम गरसिया
सोजत श्री तेजाराम
देसूरी श्री मनरूपराम
- 1962 रायपुर श्री मांगीलाल रिणवा
खारचो श्री केशरीसिंह जोरावर
पाली श्री केशरीसिंह
वाली श्री मोहनराज जन
सोजत श्री तेजाराम
देसूरी श्री दिनेशराय बागी
सुमेरपुर श्री धलदाराज



श्री निहालचंद जगावत*



श्री उम्मेदसिंह



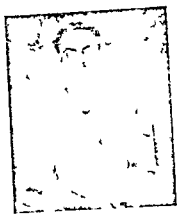
श्री भरू सिंह



श्री केशरीसिंह जोरावर

1967
 रायपुर
 खारची
 पाली
 बाली
 सोजत
 देसूरी
 सुमेरपुर

श्री शबरलाल
 श्री सुरेद्रसिंह
 श्री मूनचंद डागा
 श्री पृथ्वीसिंह
 श्री पुलराज बालानी
 श्री दीलतराम
 श्री फूलचंद बाफना



1972
 रायपुर
 खारची
 पाली
 बाली
 सोजत
 देसूरी
 सुमेरपुर

श्री सुयनाज सणचा
 श्री दत्तवर्मा
 श्री शबरलाल
 श्री मोहनराज जन
 श्री पुलराज बालानी
 श्री दिनकराय डागी
 श्री सचचरामिह



श्री लक्ष्मण सिंह



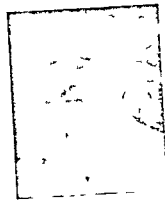
श्री बिसरोसिंह

1977
 रायपुर
 जतारण
 खारची
 पाली
 बाली
 सोजत
 देसूरी
 सुमेरपुर

श्री सुयनाज सणचा
 श्री शतरनाल
 श्री खगारसिंह
 श्री मूनचंद डागा
 श्री हननसिंह
 श्री माधवसिंह शीवान
 श्री प्रचलाराम
 श्री विपान मोदी



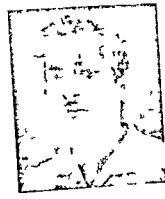
श्री तेजाराम



श्री दिनेशराय डागी

1980
 रायपुर
 जतारण
 खारची
 पाली
 बाली
 सोजत
 देसूरी
 सुमेरपुर

श्री सुयनाज सणचा
 श्री शयोगानसिंह
 श्री भस्मिन् गजर
 श्री मानवमत महता
 श्री प्रसलम खान
 श्री भावसिंह शीवान
 श्री दिनेशराय डागी
 श्री गोकुलचंद शर्मा



श्री प्रसलाराम मीणा



श्री सुरेद्रसिंह

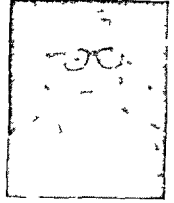
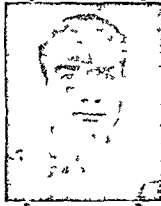
1985
 रायपुर
 जतारण
 खारची
 पाली
 बाली
 सोजत
 देसूरी
 सुमेरपुर

श्री हीरा सिंह चौहान
 कनक प्रतापसिंह
 श्री भगारसिंह चौधरी
 सुथी पुष्पा जन
 श्री रघुनाथ परिहार
 श्री माधवसिंह शीवान
 श्री शबरलाल परिहार
 श्रीमती बीना बाक

श्री पृथ्वीसिंह

श्री पुलराज बालानी

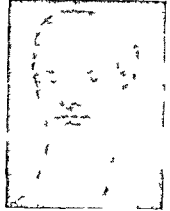
1990 रायपुर श्री हीरासिंह चौहान
 जंतरण श्री सुरेंद्र मोयल
 खारची श्री खगारसिंह
 पानी सुधीं गुणा जन
 बानी श्री भमूलाल
 सोजत श्री लक्ष्मीनारायण दवे
 देसूरी श्री घचलाराम
 सुमरपुर श्री गुनावसिंह



श्री सुलाल सणचा

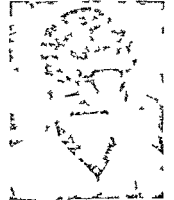
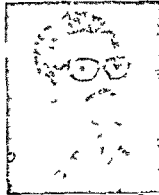
श्री दलपतसिंह

1993 रायपुर श्री सुलाल सणचा
 जंतरण श्री सुरेंद्र मोयल
 खारची श्री खगारसिंह चौधरी
 पानी श्री भीमराज भाटी
 बानी श्री भरोसिंह शेखावत
 सोजत श्री माधोसिंह दीवान
 देसूरी श्री घचलाराम
 सुमरपुर श्रीमती वीना काफ



श्री खगारसिंह चौधरी

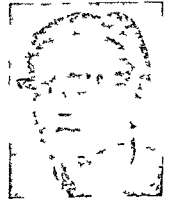
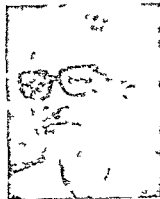
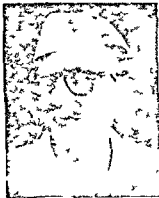
श्री हनपतसिंह



श्री मांगीलाल चवधर

श्री माधवसिंह दीवान

श्री विज्ञान मोदी



डा. पोहुमल

श्री ग्योदानसिंह

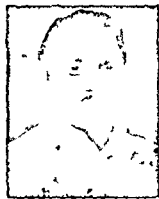
श्री माधवयम महता



श्री भस्कर सिंह खान



श्री गोकुलचन्द शर्मा



श्री हीरासिंह बोहान



कनन प्रतापसिंह



शुशी गुप्ता जन



श्री रघुनाथ परिहार



श्री पीकृष्ण परिहार



श्रीमती मीना कान



श्री गुलाबसिंह

'अण्डा ऊ चा रहे हमारा, बिजयी बिस्व तिरना प्यारा'
घाणेराव के स्वातंत्र्य धोरो की पावन स्मृति को नमन ।

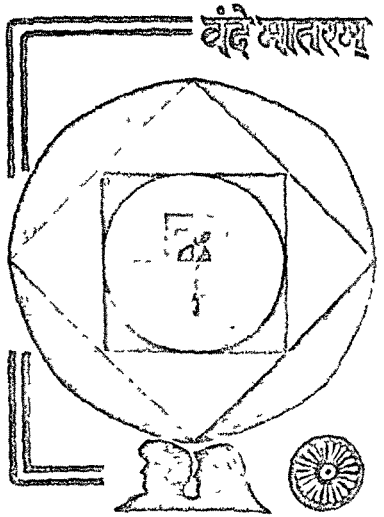
रायचन्द पारेख (घाणेराव)

*** मेसर्स सिन्थेटिक सप्लायर्स ***

107, तावा काटर, बम्बई 2

फोन 326132/337121

4507



तीन:

सेवा चरु

- प्रमुख समाजसेवी मस्थाएँ
- प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता
- युवा प्रतिभाएँ

सेवा-चरण

समाजसेवी सहयोग

1	भगवान महावीर प्रस्फुटान मुम्बैपुर	1
2	श्री पाश्चिमात्य जन विद्यालय बरकाण	2
3	श्री पाश्चिमात्य उन्मोद जन शिक्षण सभ फातना	3
4	श्री मरुधर बेसरी उच्च माध्यमिक विद्यालय राणाबास	7
5	श्री बंधमान स्थानकवासी जन शिक्षण सभ राणाबास	8
6	मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यापीठ	9
7	श्री शैल्य नेत्र-यंत्र मर्मिनि विज्ञानपुर	11
8	सर्वोदय केंद्र लीमल	12
9	श्री जन तेरापदी मन्त्रविद्यालय राणाबास	13
10	सधन क्षेत्र योजना समिति लीमल	13
11	सेठ बालूराज कंगराबाई चरीटबन टस्ट निमाज	14
12	श्री त्रिमलनाथ जन उपचार महायत्ना समिति बाली	15
13	श्री बंधमान जन धारापना गृह (बद्धाश्रम), सुमरपुर	15
14	विकलांग सेवा समिति फालना	15
15	मानव कल्याण सेवा मध बाला	16
16	सोजतराड जनराजन सेवा समिति पाली	16
17	राजस्थान सेवा परिषद् बम्बई	17
18	पाली सेवा मण्डल पानी	17
19	श्री मरुधर बेसरी स्थानकवासी जन धारापान समिति जलारण	18

सामाजिक कार्यकर्ता

1	श्री वेगरीमल मुराणा	19
2	श्री रूपवती जी भनासा	19
3	श्री मोहनलालजी मोनी	19
4	श्री राममलजी जन	20
5	श्री रामचन्द्र गनमान शाह	20
6	श्री जाकराजजी महता	21
7	श्री समीरमलजी लोणा	21
8	श्री जवानमलजी शमा	22
9	श्री हारासातजी जैन	22
10	श्री भूतचन्द्रजी शाह	22
11	श्री लक्ष्मीचन्द्रजी भारतीय	23
12	श्री मूलचन्द्रजी चण्डालिया	23
13	श्री तुम्रीलालजी महता	23
14	श्री मानमलजी फतेहचन्द्रजी	24
15	श्री निहालचन्द्रजी जगावल	24
16	श्री पुष्कराजजी जन	24
17	श्री मूलचन्द्रजी कपूरचन्द्रजी राणावत	25
18	श्री वैष्णवजी पातरधा	25
19	श्री तुम्रीलालजी राजा	25
20	श्री बनबाराजजी लाडा	26
21	श्री वृद्धमलजी परमार	26
22	श्री देवराजजी गदेचा	26
23	श्री जीवराजजी चौहान	27
24	श्री सरदारमलजी जैन	27
25	श्री मातोनासजी घनराजजी	27
26	श्री मागातामजी बलामिया	28
27	श्री माहनलालजी सधवी	28
28	श्री भूतचन्द्रजी ताराचन्द्रजी पुनमिया	29
29	श्री देवराजजी रावा	29
30	श्री निरखराजजी चोप्रा	29
31	श्री हस्तामलजी मरुता	29
32	श्री सागरमलजी चौपडा	30
33	श्रीमती पानीबाई मेहता	30
34	श्री जैनमलजी जैन	30
35	श्री बातीदासजी राठोर	31
36	सधवी श्री बुद्धमलजी	31
37	श्री सधतराजजी भसाती	31
38	श्री प्रेमराजजी बापना	31
39	श्रीमती रतन क सोलवा	32
40	श्रीमती सुभद्रा जन	32
41	श्रीमती गुणवती भसाती	33
42	श्री रामकुमारजी बागड	33



4507

भगवान् महावीर अस्पताल, सुमेरपुर

महावीर भगवान् के 2500 के निवाण महोत्सव की स्मृति में राजस्थान मेडिकल सोसाइटी एव रिक्त चंटर, सुमेरपुर नामक संस्था की स्थापना की गई। प्रारंभ में इस संस्था के संस्थापक कायकता श्री मेरनाथजी अतिरिक्त जिलाधीन पाली श्री एस एम वाफना (मीनमाल) श्री पुंडराज जी (सचिवी एडवाकेट (मिरोही) श्री मोहनलालजी जैन (पूर्व विधायक-पाली) प्रमुख रूप से आगे आए। इस संस्था के अंतर्गत एच से टर द्वारा संचालित भगवान् महावीर अस्पताल के लिए 250 बीघा जमीन प्राप्त की गई और दो करोड़ रुपये एकत्र करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

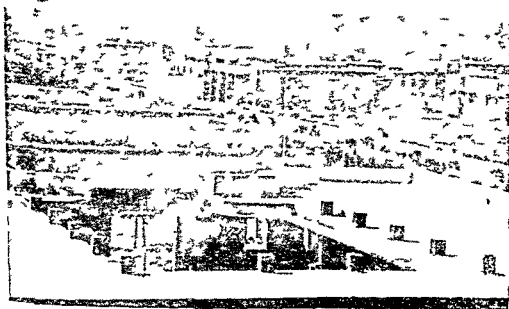
संयोग से श्री रतनचंदजी राणा ग्राम रावों (बाडमर) को इस योजना का परिचय दिया गया तो उन्होंने केवल बटुत बड़ी धन राशि इस योजना हेतु देना स्वीकार किया, चरन् इस सभिति का मुख्य प्रवचक बनना भी स्वीकार कर लिया। राणाजी के साथ साथ इस कार्य में बीसलपुर निवासी श्री राजमल जी जैन और जैतारण-निवासी श्री जोहरीलाल जी जैन भी जुड़ गये और उन्होंने इस कार्य को आगे बढ़ाने और पूरा करवाने का प्रयत्न किया। इन सब महानुभावों के प्रयत्न से अनेक दानवीरों ने आगे आकर आर्थिक सहयोग प्रदान किया किन्तु श्री रतनचंद जी राणा के अतिरिक्त, सर्वथी तेजराजजी हीराचंदजी सिधवी सिवमज हीराचंदजी

मेहता-सुमेरपुर, मूलचंदजी कोठारी बाबली बटावरमल जी राणा-दानई राजमनजी मस जैन बीसलपुर आदि प्रमुख हैं।



राष्ट्रपति ज्ञानो जलसिंहजी की संस्था का परिचय दे रहे हैं श्री मोहनलालजी सिधवी श्री धर्मोच द जी जन आदि

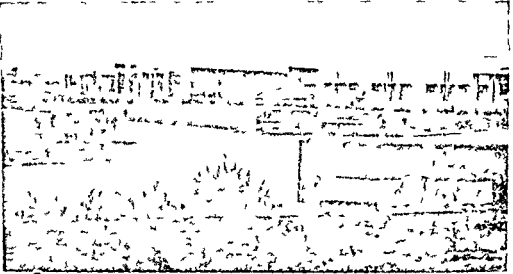
अस्तित्वान क विशाल भवन का शिलादास भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी के कर-कमलों द्वारा 17 फरवरी 78 को और उद्घाटन भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री पानो जलसिंह जी के कर कमलों से 5 जुलाई 1987 को सम्पन्न हुआ। अब इस अस्पताल के संचालन का कार्यभार बानी-निवासी श्री माहनलाल जी श्री सिधवी के पास संस्था के मनी की हस्तियत से है।



← भगवान् महावीर अस्पताल के विशाल भवन एक परिसर का विहंगम दृश्य



भगवान महावीर अस्पताल के भवन का प्रारम्भिक नक्शा बनाने एवं निमाण काय में राजस्थान सरकार के संवर्धित मृदय निचाई अभियन्ता श्री भीमराज जी शाह-वीणापुर का सराहनीय योगदान रहा है। तत्पश्चात् इसके निर्माण का कामभार सुमेरपुर-निवासी श्री गणेशजी विश्ववमा ने मभाला और अभी भी सजान म्बारेने म ने ही तन मन धन से यस्त है।



अस्पताल का यह भवनदार भवन पश्चिमी राजस्थान की एक महान् उपलब्धि है। इसके संचालन का दावा है कि यहाँ पर सभी प्रकार की चिकित्सा की सस्ती और आम जनता के लिए सुलभ सुविधायें उपलब्ध करवाई जाती हैं।

रोगियों एवं सेवा सुधूषण में लगे लोगों के ठहरने हेतु प्रमथालाश की सुविधा भी उपलब्ध करायी गयी है।



आजादी और ग्राम विकास के लिए समर्पित

स्वर्गीय श्री मूलचन्दजी शाह, जवाली की पावन स्मृति में उनके परिजन पाली जिले के स्वतन्त्रता सेनानियों का जय-जयकार करते हैं।

मे० मूलचन्दजी शाह

वितरक

हिन्दुरतान लीवर लि०, शार्पेज लिमिटेड

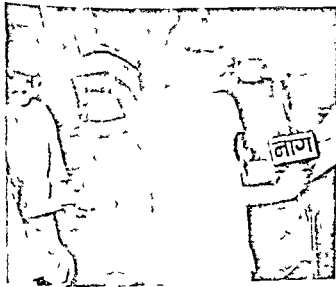
17/18, बडाला उद्योग भवन, नामग्राम क्रास लेन, बडाला-बम्बई-400031



श्री पाश्र्वनाथ जैन विद्यालय, वरकाणा

श्रीपाश्र्वनाथ जैन विद्यालय, वरकाणा पाली जिले की पुरानी सस्थाओं में एक विशिष्ट सस्था है। जब गोडवाड प्रांत में सामाजिक जागृति का पूरा अभाव था अशिक्षा एक अज्ञान का वातावरण था, उस समय जनान्धाय परमपूज्यनीय श्री बल्लभ मूरीश्वर जी म०सा० ने समाज को शिक्षित करने, अज्ञान के अंधकार से निवासकर समाज में जेतना पदा करने का बड़ा उठाया और उहाँ की प्रेरणा से माधुशुक्ला पंचमी से 1983 (सन् 1927) को मात्र 9 छात्रों से वरकाणा में इस विद्यालय की स्थापना की। तभी से यह सस्था समाज के सभी वर्गों को जाति, धर्म, वर्ग आदि का दिना मोद भाव के शिक्षित करती जा रही है। इसने राष्ट्र व समाज को बड़ी मात्रा में सुल्लसृष्ट सेवा भावी डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासक प्राध्यापक, समाजसेवी, उद्योगपति, चाटड बकाउटेरस, अधिवक्ता आदि दिये हैं तथा आज भी दे रही है जो देश विदेश में राष्ट्र व समाज की सेवा में निष्ठा से रत है।

बालकों में सच्चरित्रता नतिकता, धर्मनुराग व सहयोग की भावना, अनुशासन राष्ट्र प्रेम, सामाजिक सद्भाव, कृतव्य निष्ठा, आत्मनिभरता, गुरुजनो एव अपने से बड़ा के प्रति सम्मानादि सतगुण उत्पन्न करना व विकसित करना सस्था का प्रमुख ध्येय है। बालकों के सवागीण विकास हेतु ध्यात्मिक ध्यान दिये जाने के परिणामस्वरूप मामा य परिवारा के बालक भी प्रसिद्ध डाक्टर रोजीनियर प्रशासक आदि बन सके हैं।



सम्मेलन में भाग लेने वाली छात्राओं (बेनुरी) एवं समारोह में विद्यालय की रिपोर्ट पढ़ते हुए

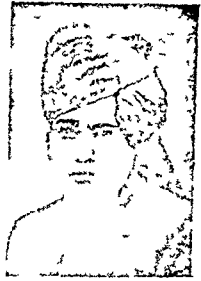


सार-समाल के दौर में सस्था के उपाध्यक्ष श्री फूटरमलजी तथा श्री जितमलजी जैन, श्री बटनाबरजी राव व अंय कायकर्ता।

धर्म एव नैतिकता के पान के बिना जीवन अपूण है। राष्ट्र समाज व मानव सेवा के अकुर विद्यालय से फूटते हैं तथा अहिंसा की भावना यही से स्थायी रूप धारण करना प्रारम्भ करती है, इस हेतु सुयोग्य धर्म अध्यापकों की व्यवस्था विद्यालय में सदैव से रही है जो सत्य अहिंसा एव नतिकता की शिक्षा देकर आज के इस भौतिक युग में छात्रों को सच्चा व सुखी मानवीय जीवन पापन करने के लिये तैयार करते हैं।

विद्यालय समाजसेवी श्रीमान् स्व जसराज जी सिंघवी घणेशराव, स्व श्रीमान् मूलचंदजी छत्रमलजी निवासी सादवी, स्व श्रीमान् निहालचंदजी गुल्लानी निवासी बिजोवा स्व० श्रीमान् मूलचंदजी फौजमलजी निवासी-नारलाई, शुहपति स्व० श्रीमान् संपतराज जी भत्ताली आदि की विशेष सवाजा स प्रगति के पथ पर पूरी गति के साथ अग्रसर हुआ। यह विद्यालय सन् 1930 में हिंदी मिडिल स्कूल बना सन् 1932 में अंग्रेजी मिडिल स्कूल बना सन् 1949 में हाई स्कूल बना सन् 1973 में यह हायर सेकण्डरी स्कूल बना तथा सन् 1989 में यह सीनियर हायर सेकण्डरी स्कूल बना। विद्यालय में विज्ञान वर्ग एव वाणिज्य वर्ग की शिक्षा प्रदान की जाती है।

समाज व उत्तर दानपानाशा एव कायकर्ताओं की सेवाओं में यह सस्था नि प्रतिनिधित्व विभाग की ओर उन्मुख है। विद्यालय का कायकर्ताओं द्वारा सन् 1988 में इसी विद्यालय परिसर में एक पूरा अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय संचालित किया जा रहा है जो हमारी ससृष्टि एव सभ्यता के विकास व पापण सहित अंग्रेजी माध्यम में छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है।



विद्यालय के एक समारोह में सच सच मण्डल के सदस्यगण एवं अध्यक्ष श्री बालीवातजी राठोड़ ।

श्री सम्पतराजजी भसाती
सस्था के आधार स्तम्भ

विद्यालय का जन छापावाम आधुनिक सुविधाओं से युक्त है ।
बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय में विद्यालय कीटा
गण पाठ्यक्रम विभिन्न खेलकूद की व्यवस्था के साथ ही
सांस्कृतिक साहित्यिक व सामाजिक ज्ञान के पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं ।
सस्था में फिल्म प्रोजेक्टर टेलिविजन रेडियो आदि वातकों को
स्वस्थ मनोरंजन व आधुनिक ज्ञान प्रदान करने हैं ।

पुरतकें एवं पत्रिकाएँ हैं । विद्यालय में उपयोगिता मण्डल बालकों
को समस्त आवश्यक उपयोग की वस्तुएँ उपलब्ध कराता है । छात्रा
को भविष्य में उनकी रुचि व क्षमतानुसार विषय व यवसाय चयन
हेतु प्राथमिक व व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किया जाता है ।

विद्यालय में विज्ञान प्रयोगशालाएँ पुष्पाय साधनायुक्त हैं ।
पुस्तकालय में अतिरिक्त अध्ययन हेतु विभिन्न विषयों पर पर्याप्त

सस्था में व्यावसायिक उपयोगिता की दृष्टि से कम्प्यूटर
प्रशिक्षण, स्टैगो टाईपिस्ट प्रशिक्षण व्यापारिक पत्रव्यवहार
प्रशिक्षण, थ्रपजी बोलने का विषय शिक्षण आदि भी दिये
जाते हैं ।

शुभ कामनाओं सहित



मे० शान्तिलाल मीठालाल एण्ड कम्पनी

गव्वनपोटम एण्ड इम्पाटस

165, बाबू पोटे स्ट्रीट, बम्बई-400003

टेली 8513278 360484

वतन हमारा रहे शांति साध और आजाद,
हमारा क्या है, अगर हम रहे रहे न रहे ।



पोकरराम साखला

मे पोकरराम भवरलाल एण्ड कम्पनी
सोजत सिटी (पाली राजस्थान)



श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन शिक्षण-संघ, फालना

मध्य प्रदेश की अनान रूपी जड़ों से प्रस्त भूमि की तरफ सब प्रथम ध्यान आवृषित हुआ परम पूज्य प्रात स्मरणीय आचार्य देव श्री विजयवत्सल सूर्यशर्मा जी म सा का और उन्होंने इस प्रदेश के नर नारियों को शिक्षा के प्रकाश से जागृत करने का दृढ निश्चय किया। वि स 1986 में जालोर जिले के उम्मेदपुर गाव म मुरभ्य तथा प्राकृतिक स्थल देखकर एक विद्यालय की स्थापना हुई और उसका नाम श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन बालाश्रम, रखा। कालांतर में यही 'बालाश्रम' श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन शिक्षण संघ के सपन छायादार वट वृक्ष के रूप म विवक्षित हुआ।

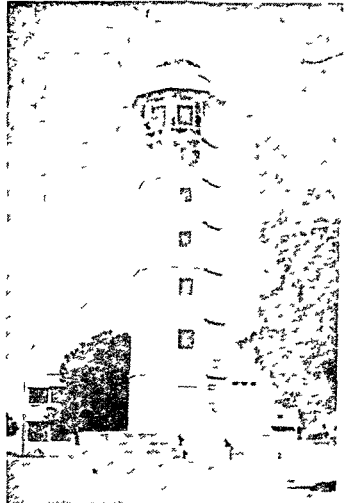
फालना स्थानांतरण—वि स 1997 में जवाई नदी में प्रलयकारी बाढ आयी। बाढ का पानी विद्यालय में घुस गया। बाढ के समाचार छात्रों के सरक्षकों के पास भी पहुंचा। वे अपने-अपने छात्रों को घर ले गये और किसी भी कीमत पर पुन विद्यालय म भेजन को राजी नहीं हुए। नतीजा यह हुआ कि विद्यालय बाढ हो गया। लेकिन अग्रजों म एक कहावत है *Sometimes good comes out of evil*। आचार्य देव और विद्या प्रेमी सज्जनों को विद्यालय के बाढ पड जाने से घोर चिन्ता हुई। उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि आचार्य देव द्वारा लगामा हुआ यह विद्या वृक्ष सूख जायगा। पर, इस गहन जघकार में एक प्रकाश की किरण चमकी एक नया विचार मन म उदय हुआ—'बालाश्रम' को अग्रज सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरित करो का।

बालाश्रम का उम समय उत्तरदायित्व या लोभ्याय श्री गुलाबच दजी डड्डा के कंधों पर जो जैन श्वेताम्बर बार्षिक के जनक कहे जात थे। उन्होंने बरकाणा में एकत्रित श्री संघ मोडबाड से प्रायना की और इकी मीटिंग म बालाश्रम का उम्मेदपुर से फालना स्थानांतरण करने का निणय लिया गया। वि स 1998 माघ शुक्ला 6 के शुभ दिन पर बालाश्रम को पुन फालना म प्रारम्भ किया गया। संस्था के लिए एक प्रबंध समिति बनी जिसके अध्यक्ष स्वनाम धय श्रीमान् मूलचन्दजी छत्रमलजी राठीड, सादबी निवासी बने। संस्था के विकास तथा उम्मेदपुर से फालना लाने में लोकमा य स्वनाम धय श्री गुलाबचन्दजी सा डड्डा का जो सहयोग एवं प्रयत्न रहा वह भी चिरस्मरणीय बन गया। फालना का चयन केन्द्रीय स्थान स्वास्थ्यवधक जलवायु तथा विस्तृत वृष्ट प्रणय होने के कारण किया गया जो सभी दृष्टियों से उपयुक्त रहा।

श्ववस्थापक समिति के सदस्यों एवं श्री डड्डा सा के सदस्यत्वों से मन 1943 में 15 मई के दिन जोधपुर राज्य के मुख्य मंत्री सर

डोनाल्ड फील्ड के द्वारा विद्यालय भवन का शिला यास हुआ तथा सन् 1948 में विद्यालय भवन का उदघाटन श्रीमान का नीलाल ईश्वरलालजी के द्वारा सम्पन्न हुआ। ज्ञान ज्ञान संस्था उत्तरोत्तर विकास पथ पर अग्रसर होती गई। 1962 ईस्वी म संस्था का नवीन विधान पारित किया गया। विधान के अनुसार 'श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन शिक्षण संघ' नया नाम रखा गया। शिक्षण-संघ द्वारा इस समय निम्न संस्थाओं का संचालन किया जा रहा है —

- 1 श्री पार्श्वनाथ उम्मेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय
- 2 श्री पार्श्वनाथ उम्मेद वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय
- 3 श्री सरदार जन छायाशाला
- 4 श्री वल्लभविहार उपाश्रम तथा नान भण्डार



श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन बालेज व उच्च माध्यमिक विद्यालय के विशाल परिसर में संस्था के स्थापक श्री विजयवत्सल सूर्यशर्मा जी स्मृति में निर्मित 'श्री वल्लभ कौतिल्य स्तम्भ'।



श्री पाणवनाथ उम्मेद वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय—
 मर्यादा जब उम्मेदपुर से फालना स्थानांतरण होकर आई तो उस समय विद्यालय में निश्चित स्तर तक अध्ययन कराया जाता था। स्थानांतरण के तुरंत पश्चात् छात्रों की संख्या में घटन वृद्धि होती गई और साथ ही शिक्षा के गुणात्मक स्तर में भी अप्रभूत वृद्धि होने लगी। सन् 1946 और 1948 में संस्था में विद्यालयियों के माध्यम इंग्लिश मिडिल की सायजनिश परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर संस्था में गौरव में अभिरूढ़ि की। कई वर्षों तक परीक्षाएं भी श्रेष्ठ प्रतिगत रहा। 1950 में हार्डस्कूल का प्रथम देव मट्टि परीक्षा में सम्मिलित हुआ। 1958 से 1983 तक हार्डस्कूल स्तर रहा।

मर्यादा में पढ़ाई के साथ पत्र पत्र मासिक वाचपत्र, एगार्डिमेंट आदि प्रतियां में भी कई कीर्तमान स्थापित किये। शिक्षा विभाग द्वारा दत्त संस्था को एन वरिष्ठ उच्च माध्यमिक अनुदान का प्रतिगत 70 तक बढ़ा कर 80 कर दिया। 1988 की जुलाई में 10+2 योजना के अंतगत विद्यालय को वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रमोन्नत कर दिया गया है। वर्तमान में विद्यालय में पाठ्य से भी अग्रिम छात्र अध्ययन रहे हैं।

श्री पाणवनाथ उम्मेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय— 13 जुलाई, 1951 के शुभ दिन यह संस्था इंटर कालेज बनो। उदघाटनकार्या के राज्य के शिक्षा मंत्री श्री मयुरदास माधुर। उ होने योग्यता की कि इस संस्था का नाम श्री पाणवनाथ उम्मेद इंटर कालेज' न रख कर 'श्री पाणवनाथ महाविद्यालय हो रखा जा'। क्योंकि उहें संस्था के भविष्य का रूप त आभास था। परिषद में जोधपुर को छोड़ कर यह प्रथम महाविद्यालय था। प्रारम्भ में रक्त तथा कालिज एक ही भवन में अलग पाठियां में चलने के पर सन 1972 में कालिज अल्पे नय भवन में चला गया। जानेज में भी विगत वर्षों में सहायिका क्षेत्र में कई कीर्तमान स्थापित किये हैं। इस समय महाविद्यालय में त्रिचरणीय पाठ्यक्रम चला एवं वाणिज्य में चलना है। एक वर्ष पूर्व महाविद्यालय में बालराई निवासी श्री वेदरय दजी पुराणा का सहयोग से कम्प्यूटर ट्रेनिंग का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। कालिज में शिक्षा अध्ययन के साथ साथ कई पाठ्योत्तर प्रतियोगियों का भी सफलता सुयोग तथा अनुभवी ध्येयताओं के निर्देशन में किया जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक सहयोग से मध्य एवं मानदार पुस्तकालय तथा वाचनालय भवन का भी निर्माण हुआ है, जिसमें विभिन्न विषयों की पुस्तकों की संख्या लगभग बीस हजार के ऊपर है।

छात्रावास भवन— पहले संस्था का अपना छात्रावास भवन नहीं था पर वान में छात्रावास भवन की आवश्यकता अनुभव की गई और

कम स्वरूप एक मध्य दो मंजिले भवन का निर्माण कराया गया। यह छात्रावास भवन 250 विद्यालयियों के आवास में लिए हुए उपयुक्त है। छात्रावास में पुस्तकालय, वाचनालय एवं खेल सम्बंधी समस्त सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

विद्यालय परिसर—शिक्षण सभ का अपना परिसर बहूत ही विस्तृत है। परिसर में भारत विख्यात 'बल्लभ कीर्ति स्तम्भ' एक महान मुकेश विजयमस्तक की कीर्ति का गुणगात करता हुआ पड़ा है।

शिक्षण सभ का अपना एक अतिवि गृह है जहां समस्त मुद्रियाओं में युक्त है। सन् मुद्रिपुषण बल्लभदेव विजयजी में सा के अथक प्रयत्नों से निर्मित पाणवत जिन मन्दिर' बल्लभ विहार उपाध्य तथा बल्लभ जिहार पान कण्ठार तथा लीकित कीर्ति स्तम्भ' शिक्षण सभ की गान में अभिरूढ़ि कर रहे हैं।

पुनर्पुषण पत्राधिकारियों में श्री वृष्ठीराजजी हजारीमलजी, श्री जसराजजी धनरूपजी, श्री पुनर्पुषणजी अनोपचरजी, श्री सागरमलजी सा बीपदा आदि के नाम सदैव आदर से लिये जाते रहेंगे। संस्था में 1974 में अपना रजत जयंती महोत्सव सम्बन्ध में बहुत ही शानदार एवं मध्य तरीके से मनाया। सन् 1992 में संस्था की स्वयं जयंती मनाते की मनारिया अभी स प्रारम्भ हो गयी है।

मुकेश विजयमस्तक द्वारा आयोजित एवं मुकेश विजय मस्तकी द्वारा संचित यह विद्या उद्यान निरंतर विकास की ओर अग्रसर होता हुआ अपनी व्युत्पन्न दिग्दिगत में प्रसारित कर रहा है।

—मधराज मेहता, पूर्व प्रधानवाच्य,
 श्री पा उ व उ वि कानना

शत-शत नमन् !

❖

पंचायत समिति, जेंतारण

के

प्रधान, सदस्य एवं सरपंच गण



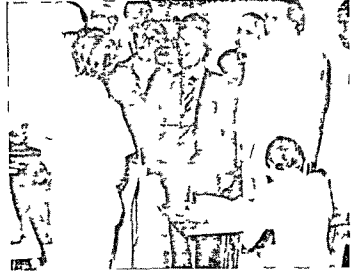
श्री मरुधर केसरी उच्च माध्यमिक विद्यालय, राणावास

आज से 17 वष पूव श्री बद्ध मान स्थानकवासी जन समाज के कुछ उत्साही सेवाभावी महानुभावो ने इस धेन मे एक ऐसे विद्यालय की स्थापना करने का निगय लिया जिसे छात्रो म चारिन्द्रिक बल एव धार्मिक भावना का विकास हो और वे देश के शोभ्य एव उत्तरदायी नागरिक बन सकें ।

पूज्य गुरुदेव ध्रमण-सूय स्वर्गीय मरुधर केसरी मिथीमलजी म०सा० की प्ररणा से एव सध के प्रमुल कायकर्ताशो - स्वर्गीय फूलचंदजी कटारिया स्वर्गीय इन्द्रसिंहजी मुणोत एव श्री लालच दजी पुगलिया के प्रयत्नो से छात्रावास के साथ साथ विद्यालय के भवन का निमाण काय सम्पन्न हुआ ।

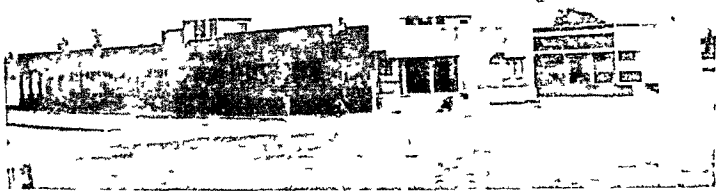
ज्येजी अक्षर 'H' की आकृति मे बना विशाल एव सुन्दर विद्यालय भवन है जिसमे 10 कक्षा कक्ष एव 6 अतिरिक्त कक्ष हैं । सभी कक्षा-कक्षो के सामने विशाल बरामदा बना हुआ है । विद्युत तथा जल की पूण सुविधाएँ उपलब्ध है । भवन के सामने ही लगभग 6 बीघा भूमि मे सुन्दर हरी भरी बाटिका है । भवन के पीछे के भाग म खेल मैदान उपलब्ध है । विद्यालय का अपना एक ड्रपि फाम भी है । यहाँ पक्का कुआ बना हुआ है जिस पर विद्युत-सुविधा उपलब्ध है ।

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रेखच दजी राफा बगडीनगर, प्रसिद्ध एडवोकेट श्री सम्भतमलजी जन-पाली तथा सेवाभावी श्री इन्द्रचंदजी



श्री धानचंद मेहता कला एव उद्योग संस्थान मे शिक्षा मंत्री श्री चंदनमलजी बंद एव श्री चंदनमलजी गुडलिया आदि ।

सचेती-पाली इस विद्यालय के विकास म पूण रुचि ले रहे है साथ ही शिक्षाविद्, कुशल प्रशासक एव सुविज्ञ श्री चंदनमलजी गुडलिया की सतत देखरेख मे विद्यालय का संचालन मुचारुरूप से हो रहा है । बाप संस्था मे मानद-निदेशक के पद पर काय करते हुए विद्यालय के चतुदिक विकास के लिये प्रयत्नशील है ।



संस्था का विशाल भवन



श्री यानचंद मेहता कला एव उद्योग संस्थान

राजस्थान के प्रतिष्ठित उदारचित्त विधिवेत्ता यानचंदजी मेहता, एडवोकेट द्वारा प्राप्त आर्थिक महयोग से संस्थापित यह संस्थान इस विद्यालय भवन का विशिष्ट अंग है। इस संस्थान द्वारा संगीत कला चित्रकला, वाष्प कला तथा सीवन कला आदि का छात्रों को प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाना तथा उनमें धर्म के प्रति आदर का भावना को उत्पन्न करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किया जा रहा है।

नवीन मूल्यांकन योजना

यह योजना इस विद्यालय की अतिविशिष्ट योजना है, जिसकी शिवायिदो एव देग की सर्वोच्च संस्था राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एव प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली ने भी सराहना की है। इससे अतगत कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों को पारम्परिक परीक्षा प्रणाली से मुक्त रखा गया है। इकाई योजना के आधार पर शिक्षण व्यवस्था कर इकाई समाप्ति पर मूल्यांकन व्यवस्था की जाती है।

मूल्यांकन के आधार पर निदानात्मक शिक्षण कराया जाकर पुनर्जांच की जाती है। सम्पूर्ण द्वादशवी का सम्बन्धित मूल्यांकन कर कक्षा-निर्देश का स्तर प्रदान किया जाता है। इस योजना को शिक्षा विभाग ने भी मान्यता प्रदान की है।

इस विद्यालय ने हिंदू ईसाई, सिख मुसलमान सभी धर्मों के छात्र एव छात्रांग है। एक ओर अत्यंत सम्पन्न घराने के छात्र हैं तो दूसरी ओर अल्प-व्यय विद्यार्थी, हरिजन तथा पिछड़ी जातियों के छात्र भी हैं। आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्रों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

श्री बाल सहाकारी समिति

विद्यालय के छात्रों को रिमायती दर पर पाठ्यसामग्री तथा अन्य दैनिक उपयोग की आवश्यक सामग्री मुक्त कराने के उद्देश्य से बाल सहाकारी समिति द्वारा विद्यालय भवन में ही छात्र उपभोक्ता मण्डल का संचालन किया जा रहा है।



श्री बद्धमान स्थानकवासी जैन शिक्षण संघ, राणावास

इस संस्था की नींव के पर्यर हैं श्री चम्पालालजी पुगलिया। त्यागभूति चम्पालालजी ने आचार्य सम्राट् आनन्द ऋषिजी म०सा० के शुभाशीर्षित से स० 2011 में बद्धमान स्थानकवासी जन छात्रालय के विशाल प्रतिष्ठान की नींव डाली। आपका श्वस्तित्व अत्यंत प्रभावशाली था। विद्या की इस वाटिका को सरस व हराभरा बनाया राणावास निवासी श्री कूलचंद दजी नटारिया ने। आप मुजल

व शिक्षा प्रेमी व्यक्ति थे। उनके कर्मठ साथी थे जोधपुर निवासी श्री इन्द्रसिंहजी मुणोत जो स्वयं छुन के पक्के थे। उन्होंने जो कुछ करना विचार लिया, उसे करने दिखाया। निःसंदेह, रास्ते में अनेक बाधाएँ आयीं, किंतु व उन पर विजय पात रही। सभी असफल नहीं रहे। विलीय सफट भी धाय पर तु आराम विश्वास व लोपो के आसीया" से अद्विग बने रहे।



हादिक अभिनन्दन ।

दी अरबन कोपरेटिव बैंक लि, पाली

प्रधान कार्यालय

ए-41, वीर बुर्गादास नगर, पाली

देली 23088 22708 22601

मदनगोपाल अरोडा
महाप्रबंधन

केवलचंद मुलेच्छा
अध्यक्ष



मरुधर बालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी

सन् 1945 मे गोडवाड क्षत्र के जैन युवका ने समाज सुधार की दृष्टि से बाली म मारवाड जन युवक सभ की स्थापना की थी। इस संस्था ने चार पाच वर्षों तक निरंतर पश्चिमी राजस्थान मे जन जागृति का सराहनीय कार्य किया। इ ही त्रोगा ने यह सोचना शारम किया कि अब इस क्षत्र मे छात्राओं के लिए भी एक आवासीय माध्यमिक विद्यालय खोलना आवश्यक हो गया है। जब खीमेल निवासी श्री केसरीमलजी मेहता न सन् 1954 55 म सर्वोदय क द्र खीमल क निष्कट संस्था के योग्य नूति बढूत कम कीमत म उपलब्ध होन की सूचना अपन मन उरसाहो मिना को दी तो उन्होंने इस पर गम्भीरता से विचार किया और सन् 1956 म बम्बई मे मरुधर महिला शिष्य सभ की स्थापना कर भूमि खरीदी। 14 अक्टूबर 1956 को विजयादशमी के दिन सर्वोपयोगी मता श्री सिद्धराज डड्डा के कर कमला से विद्यापीठ भवन का शिलान्यास कराया गया तथा 15 अगस्त, 1957 से इस भवन मे तीन छात्राओं से शिक्षण कार्य प्रारम्भ हुआ।

संस्था का नाम श्री मरुधर बालिका विद्यापीठ रखा गया। अधिकांश कर्तव्यों का व्यवसाय राजस्थान से बाहर होने के कारण गोडवाड क्षत्र के जाने मान राजनीतिक कार्यकर्ता व स्वतंत्रता सेनानी श्री फूलचंद बाफना को संस्था की देख रेख एवं विकास का दायित्व सौंपा गया।

संस्था के संस्थापका मे निम्नांकित नाम उल्लेखनीय हैं—

- 1 श्री केसरीमलजी मेहता खीमेल (बम्बई)
- 2 श्री हीरालालजी गुहारमलजी जन बिजोबा (बम्बई)
- 3 स्व श्री तजराजजी राणावत खुडाला
- 4 श्री फूलचंदजी बाफना साधुजी
- 5 श्री मोहनराजजी जन बाली
- 6 श्री जीवराजजी मेहता बाली (बम्बई)
- 7 श्री शेषमलजी पण्ड्या सादर (मद्रास)
- 8 स्व श्री फूलचंदजी के सिधवी तखतगड (पूना)
- 9 श्री छगनलालजी केरिंग साडराव (पूना)
- 10 स्व श्री शोमचंदजी बनारजी, जोबाण (पूरणा (बम्बई)
- 11 श्री शेषमणीजी भण्डारी सारडो (बम्बई)
- 12 श्री पुखराजजी बोहान बिजोबा (बम्बई)



श्रीमती सुभद्राजी जैन महात्मि राष्ट्रपति श्री वकटरमण से शिक्षक विवस 1990 पर पुरस्कार प्राप्त करती हुयीं।

करने क लिए श्री गणपतिचंद्रजी भण्डारी, जोधपुर की सवार्थ प्राप्त की गयी। वे आज भी संस्था को अपनी सेवार्थ दे रहे है।



श्री गणपतिचंद्रजी भण्डारी

श्री हीरालालजी जन बिजोबा जब से संस्था के अध्यक्ष बने हैं उनके और अय कार्यकर्ताओं के सतिय सट्पोग स संस्था सभी दिशाओं मे तजी से प्रगति करने लगे है और सन् 1980 क बाद तो उसकी बहुमुखी विकास की गति और अधिक तीव्र हो गई है। यह संस्था आज राजस्थान की अग्रणी शिक्षण संस्थाओं म मानी जाने लगी है। सन 1978 मे श्रीमती सुभद्रा जन पूव प्रधानाध्यापिका को उनकी अप्रूप निष्ठा असाधारण योग्यता के कारण व्यवस्थापिका के सद पर नियुक्त किया गया तथा श्रीमती पुन्या सीनी को मुख्याध्यापिका बनाया गया। इस नई व्यवस्था के बाद

संस्था के शासकिक विकास तथा सह्यासिक प्रवृत्तिया के प्रचार तथा अध्यापिकाओं के प्रशिक्षण एवं उनके कार्य का निरीक्षण आदि



आश्चर्यजनक प्रमति युक्त परिवर्तन आया। छात्राभा की संख्या 600 से भी ऊपर निकल गई। सस्था की बोर्ड से श्रेष्ठ परीक्षापरण पर नई बार ट्राफी तथा हजारों रुपये नकद पुरस्कार स्वहृप मिले। छल कूद में यहाँ की छात्राभा का चयन अधिल भारतीय स्तर पर होने लगा और ग्राइडिंग में भी विद्यालय की कम्पनी ने राष्ट्रीय स्तर तक भी अपनी पहचान बनाई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अपूर्व सकलताभा ने सस्था के अनेक मित्र और सहयोगी पैदा किये तथा उसकी कीर्ति में चार पाद लगाए।

श्रीमती गुप्ताजी सोनी

आज सस्था को 90 प्रतिशत सरकारी अनुदान मिलता है। राज्य सरकार की ओर से इसकी अति प्रतिष्ठित शिक्षण सस्था के रूप में मान्य किया गया है। सस्था वन से दो बार विद्यावाढी सादेरा के नाम से अपनी प्रशस्तियों का विवरण छपवाकर सभी अभिभावकों सदैम्यो और सहयोगियों को भेजती है।

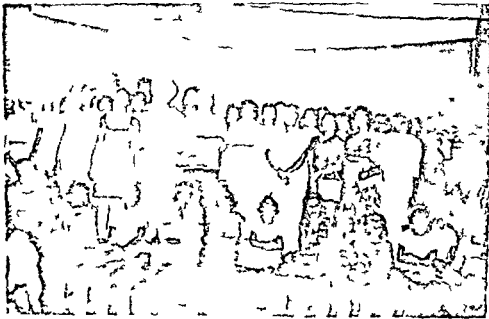
शैक्षणिक विषयों के साथ-साथ सपीत नरय अभिनय, भावण व निता पाठ आदि का शिक्षण दिया जाता है। नैतिक शिक्षा आदि

का शिक्षण भी दिया जाता है। नैतिक शिक्षा के बालाग में जैन धर्म के साथ-साथ रामायण और गीता की बधाए लगता है। नैतिक शिक्षा सर्वोदय सामाय ज्ञान एव जैन धर्म की परीक्षाए की ली जाती है। सस्था में हाकी बास्केट बाल, बालीबाल आदि खेलों की व्यवस्था है। जिमनास्टिक लेजिमम टब्लेस व योगासन भी सिखाए जाते हैं।

सस्था में सभी छात्राभा को अपने अपने धर्म में पालन की स्वतंत्रता है कि नु कर्मकांड की श्रेण्या भावना की शुद्धता व नैतिक आचरण पर विशेष बल दिया जाता है।

शिष्ट व्यवहार सिखाने के लिए छात्राभा को उनके नाम के आगे जी लगा कर सम्बोधित करने का नियम है। कारीरिब दण्ड बजित है। गतरी करन पर अपनी बुद्धि स्वीकार करके क्षमा माचना करने को प्ररणा दी जाती है। विभिन्न धर्मों एव जातियों की छात्राए परस्पर प्रेम से रहती हैं।

विद्यावाढी राजस्थान की प्रथम सस्था है जहाँ के तीन शिक्षकों को राष्ट्रीय एव राज्य स्तर पर आदेश शिक्षक के रूप में पुरस्कृत किया गया है। विद्यावाढी की व्यवस्थापिका श्रीमती सुमन्रा बहिन को राष्ट्रीय स्तर पर सस्था के शिक्षा व्यवस्थापक श्री गणपतिचन्द्रजी ऋषारी की राष्ट्रीय स्तर पर स्नाउट आंदोलन में उद्कृष्ट सेवाभा के लिए तथा प्रधानाध्यापिका सुखी गुप्ता सोनी को राजस्थान सरकार द्वारा आदेश शिक्षिका के रूप में सम्मानित किया जा चुका है।



मह सस्था संस्कारवान् महिला शक्ति का निर्माण कर देश में ध्याएव अनेक समस्याओं मुक्तियों एव धुरादर्थों को मिटान का निरंतर प्रयास कर रही है।

सस्था की सचालन व्यवस्था मरुधर महिला शिक्षण सघ द्वारा की जाती है जिसका उन्धोग है

सख्य हमारा सस्था का हित नारी का कल्याण, सख्य ध्यान कर द्वेष-जनिता विष वर्णन से परित्राण।

भारत रास्ट हेतु आघोजित शिक्षण कार्यक्रम के पंचाल विद्यावाढी की छात्राओं के समूह चित्र में पुनः प्रतिमि भी घोरीबापती (सामोड) जिला बलेश्टर भी विजयतिरजी शिक्षाए आदि।

[]

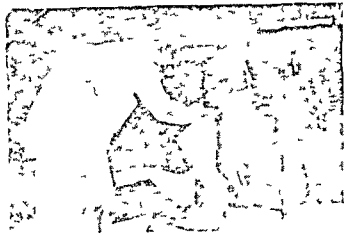


श्री भैरव नेत्र-यज्ञ समिति, बिसलपुर

श्री भैरव नेत्र यज्ञ समिति' श्री राजमलजी एस० जन बिसलपुर निवासी की इस क्षेत्र को अनुपम देन है जा आलो की ज्योति से निराश लोगों के लिये सचमुच ही वरदान साबित हुई है। सन् 1968 में इस सस्था को स्थापना इस उद्देश्य से की गई थी कि दूर दराज के गाँवों में शिविर आयोजित कर मोतियाबिंद एवं अ्य नेत्र रोगों से पीडित लोगों को शल्य क्रिया द्वारा चिकित्सा यवस्था की जाए। प्रारम्भ से ही श्री राजमलजी जैन की सगठन शक्ति एवं सूक्ष्म-वृक्ष के कारण प्रति वष बीस से अधिक शिविर आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरो से हजारों लोगों को दण्टिदान प्राप्त होता है।

वर्तमान में इस सस्था का न केवल कायक्षेत्र ही बढा है अपितु विभिन्न जन कल्याण एव राहत काय भी हाथ में लिए गये हैं। यह समिति पशु चिकित्सा शिविर एवं दन्त रोग चिकित्सा-शिविरो का भी आयोजन करती है। क्षय चिकित्सा शिविर, विकलांग सेवा शिविर आदि का आयोजन भी समिति द्वारा समय-समय पर किया जाता है। इस समिति द्वारा अब तक दो सौ से अधिक नेत्र चिकित्सा शिविरो का आयोजन किया जा चुका है। इनमें दवाई साख से अधिक नेत्र रोगियों की चिकित्सा की गई है।

बिसलपुर गाँव में अति आधुनिक साधनों से सम्पन्न 62 शय्याओं का एक नेत्र चिकित्सालय भी समिति द्वारा चलाया जा रहा है। इस समिति ने वाली तहसील (जिला पाली) के आदिवासी भागों को अपना मुख्य सेवा-क्षेत्र बनाया है जहाँ पर समय-समय पर



समिति के सञ्चालक श्री राजमल एस जैन द्वारा चिकित्सा शिविर मरीज से सुल-सुविधा सम्बन्धी पूछ ताछ

शिविरो का आयोजन कर लोगों का निशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। साथ ही हर अकाल वष में पोषक आहार एवं वस्त्र-वितरण करके लोगों को राहत पहुँचाने का काय भी यह सस्था सतत रूप से कर रही है।

श्री राजमलजी एस० जैन इस सस्था के प्राण हैं। समिति के विभिन्न कार्यों को सफल बनाने में श्री जोहरीलालजी जैन (पाली) की प्रेरणा से लायस क्लब व रोडरी क्लब, सुमेरपुर व पाली भी हर बार तत्परतापूर्वक सहयोग करते हैं।



प्रकृति की गोद में स्थित चिकित्सालय परिसर का भव्य दृश्य

सर्वोदय केन्द्र, खीमेल

आजादी की प्राप्ति के बाद भारत के आर्थिक विकास ने नई बरबट ली। आजादी के लिए लड़ने वाले नेताओं के सामन गांधीजी द्वारा प्रस्तुत स्वावलम्बी ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के आधार पर भारत का विकास करने अथवा पश्चिमी जगत की औद्योगिक प्रगति के आधार पर बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाकर स्वरित गति से विकास करने के दो विकल्प मौजूद थे। गांधी विचारधारा के पीपल चिन्तकों ने ग्राम-स्वावलम्बन की दिशा में परीक्षण के दौर पर अनेक स्थानों पर केन्द्र स्थापित किये। उसी कड़ी में प्रथम क्रम में उछाया सर्वोदय जगत के प्रसिद्ध चिन्तक श्री मिट्ठराजजी डड्डा ने जिन्होंने राजस्थान निर्माण के पश्चात् प्रथम लोकप्रिय मनोमण्डल में उछायामन्त्री का कामभार मथाला था। डड्डाजी को श्री तुलसीदास जी राठी (जोधपुर) श्री धनपतिसाह जी मेहता (बीमेम) सरौखे त्यागी-तपस्वी गांधी मिले और डड्डा जी खीमेल ग्राम और रानी स्टेसन के बीच सर्वोदय केन्द्र, घीमेल नामक इस सभ्यता की नींव डाली।

केन्द्र की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य आसपास के ग्रामों का सर्वोदय विचारदशन के आधार पर पुनर्जीवन, पुनसंरचना और पुनर्निर्माण के लिए ग्राम शिक्षण प्रामाण्य, ग्राम-बला विज्ञान तथा संस्कृति का विकास रखा गया। इन तीनों साधियों के स्वयं धर्म प्रधान जीवन जीने की प्रतिज्ञा की और काम में जुट गये। स्वयं हल चलाते स सत्कर स्वयं के लिए आवश्यक अनाज पीसकर आटा तैयार करते, गूत हाठ कर अथन कपड़े स्वयं बुनने अथवा बुनकर से बुनवाने और बेचल ग्रामोद्योग की वस्तुओं का उपयोग करके जीवन निवाह करने का परीक्षण प्रारम्भ किया। आसपास के ग्रामों के लोग व प्रबुद्ध कायकर्ता उत्सुकता से इस जीवन रीति को देखते और मन ही मन सचहना करते। केन्द्र पर वैचारिक गोष्ठियाँ आयोजित हातीं और अनेक लोगों ने गांधी पहनना और बेबल ग्रामोद्योगी वस्तुओं की काम में लेना स्वीकार किया। इतने में ही विनोबाजी का भूदान-ग्रामदान आन्दोलन शुरू हो गया और सर्वोदय के पास की जिनमें इस आन्दोलन का केन्द्र बन गया। श्री गोडुलमाई मट्ट की प्रसन्नदत्ती कायना और श्री मोहनराजजी जैन व कई साधियों ने अनेक ग्रामों की पदयात्राएँ कीं। हजारा बीया भूमि प्राप्त की और भूमिहीनों में वितरित कीं।

विनाबा जाने के इन आन्दोलन में जब लोकनायक श्री जय प्रधान मातायण जुड़े तो उन्होंने श्री मिट्ठराजजी डड्डा को अपने पास बुला लिया और डड्डा जी राष्ट्र स्तरीय अनेक सर्वोदयी संस्थाओं में जुक्त गये। उनका केन्द्र पर रहना संभव नहीं रहा। आई धनपतिसाह मेहता ने केन्द्र की गतिविधियों को पुनर्गठित किया

और उन्हें अनुभव की कायकर्ताओं के रूप में मिले श्री प्रमरजी सोनी और पण्डित भागवतजी मुकुन जो जीवनपयत्त यही रहे।

केन्द्र पर कृषि व गोपालन के साथ साथ अद्याय लेखों से निर्मित नीम साबुन भी बनाया जाता है तथा इच्छुक प्राप्तसाधियों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है। केन्द्र का मूल उद्देश्य ग्रामों को स्वावलम्बी बनाना और शापण विहीन समाज का निर्माण करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु समय-समय पर प्रबुद्ध कायकर्ताओं, पर्वों सरपंचों, प्रधानों व अध्यापकों की विचार-गोष्ठियाँ आयोजित की जाती रही हैं। शराबबंदी आन्दोलन के लिए केन्द्र विशेष रूप से प्रयत्नशील रहा है। सम्मेलनों व विचार-गोष्ठियों के अलावा आदि वासियों व गरीब काय व शराबबंदी के लिए इस संस्थान ने काफी काय किया है।

इस संस्था को गोडुलमाई मट्ट का भागदान मिलता रहा है और अमी भी सबकी मिट्ठराजजी डड्डा, धनपतिसाह जी माहेरवरी, पूषक दत्ती जैन, मोहनराज जी जैन अमीती सुभगा बहिन (विद्या-बाही), बदनारायण जी शर्मा आदि का निरंतर सहयोग व मार्ग दर्शन मिलता रहता है। आसपास के ग्रामों के साधियों के अनुरोध पर केन्द्र ने पूषक म प्रौढ शिक्षा की शालाएँ भी प्रारम्भ की थी। इन वर्षों में सगातार अनाथ पढ़ने के कारण केन्द्र पर अतहाय पशुआ के शिबिर भी लगाये गये और पशुपालकों को सस्ती दर पर घास चाप उपलब्ध कराया गया। पाली जिल्ल में रचनात्मक प्रवृत्तियों का सथा सन, पीपण और माग दशन करनेवाली आज यह एक मात्र संस्था है।



केंद्र के सहायक श्री मिट्ठराजजी डड्डा



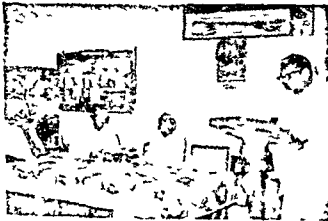
श्री जैन तेरापथी महाविद्यालय, राणावास

जैसे तो यह जैन महाविद्यालय सन् 1971 से ही प्रारम्भ हुआ है, लेकिन राणावास में स्थापित श्री जन श्वेताम्बर तेरापथी मानव हितकारी सभ द्वारा संचालित शिक्षण संस्था तो काफी पुरानी है। इस सभ द्वारा लगातार किये गये प्रयासों का ही परिणाम है कि आज राणावास जैसे छोटे-से गांव में स्थापित इस महाविद्यालय



द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सेवाएँ दी जा रही हैं। इस महाविद्यालय के प्रेरणाक्षीत अणुवत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी हैं और कर्मयोगी श्री केसरीपलजी सुराणा इस संस्था के प्राण हैं, जिन्होंने अपना सारा जीवन ही इस संस्था हेतु समर्पित कर दिया है।

महाविद्यालय का अपना एक छात्रावास है, जो वैश्वाणिक प्रतिविधियों के साथ-साथ छात्र कल्याण सम्बंधी विभिन्न गति



विधियों का संचालन करता है और विद्यार्थियों में आध्यात्मिकता, नैतिकता, सद्चारित्र्य एवम् मानवीय गुणों का विकास हो, इस हेतु अनेक कार्यक्रम आयोजित करता रहता है।

इस महाविद्यालय का प्रबंध सक्षम व सुयोग्य हाथों में होने से इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी इसकी विभिन्न प्रवृत्तियों को सदैव प्रेरणा एवं सहयोग देता रहा है।

सघन क्षेत्र योजना समिति, खीमेल

सर्वोदय विचारवर्धन को मूर्त रूप देने तथा ग्रामीणों द्वारा गावों की स्वावलंबी बनाने की दृष्टि से सर्वोदय क्षेत्र की भूमि पर ही खादी कमीशन के सहयोग से इस क्षेत्र के सर्वोदयी नेता और स्वतन्त्रता सेनानी श्री फूलचन्दजी बाफना ने सन् 1956 में सघन क्षेत्र योजना समिति का गठन कर खादी तथा कृषि-उपकरण निर्माण का कार्य हाथ में लिया। इसका मुख्य उद्देश्य है ग्रामों में कार्य कर रहे सुनकरों व लोहारों को नई तकनीक सिखाकर ग्रामों में उद्योगों को बढ़ावा देना और इन उत्पादों को लोकप्रिय बनाना।

इस समिति के संस्थापक सदस्य श्री बाफनाजी ने अलावा सघन श्री गमनारामजी चौधरी (ईट-दरा) बेजरीमल जी चौधरी (बिजोवा) रामसिंहजी (गुडा), घुच्छीराजजी, बट्टेयालालजी सम्पायनी, पुलराजजी तिघवी व भ्रमरजी सोनी हैं। इस समिति के कार्य को गति प्रदान की खादी कमीशन से प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ता श्री सावतमल जी भण्डारी ने। इन्होंने छापी, कपडा, रेजा, क्ली बम्बल की कटाई-बुनाई के कार्य को तो नई ग्रामों तक बढ़ाया ही, पर साथ ही कृषि उपकरण और सोहे के बक्से तथा असमारियों के निर्माण का धामा के कारीगरों को प्रशिक्षण देकर काफी बढ़ाया। सावरी, रानी, बासी, कालना एवं सुमेरपुर में विन्नी-नेत्र सोभे गय।

कुछ समय बाद ग्रामों में गिनियलता अथवा आयी, पर कठिनाइयों को पार करते हुए यह संस्था अब प्रगति पर है। उत्पादों की युवा कार्यकर्ता श्री जुगलजी व्यास ने नई योजनाएँ बनाकर उत्पादन को गति प्रदान की है। इस संस्था ने संघर्षों बुनकरों एवं कारीगरों को प्रशिक्षण देकर उन्हें अपना व्यवसाय स्वयं चलाते योग्य बनाया है। □



सेठ कालूराम केशरीबाई चैरीटेबल ट्रस्ट, निमाज



सेठ श्री कालूरामजी

इस ट्रस्ट की स्थापना विद्या विहित्वा व अन्य जनकल्याणकारी कार्यों की सम्पन्न करने के उद्देश्य से श्री देवराजजी रांका (निमाज) ने अपने पूज्य पिताजी श्री कालूरामजी व माताजी श्रीमती केशरीबाई के स्मरणार्थ 30 वय पूव की थी। ट्रस्ट का रजिस्टर्ड कार्यालय बंगलोर में है, पर इसका कार्यालय निमाज में है। इस ट्रस्ट के सहयोगी स अनेक जनोपयोगी कार्य भारत-व्यप के विभिन्न भागों में सम्पन्न हुए हैं।

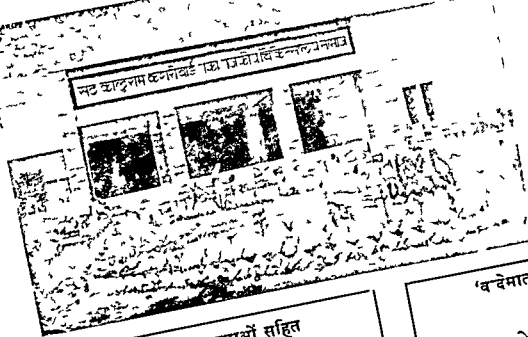
श्री देवराजजी रांका की ज मस्यती म ट्रस्ट ने एन मानदार विशाल चिकित्सालय भवन बनाकर जनता को भेंट किया है साथ ही वहाँ पर भगवान महावीर सोनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन के निर्माण म इनका पूरा सहयोग रहा है।



बंगलोर में राजस्थानी समाज द्वारा संचालित विद्यालयों व चिकित्सालयों में

श्रीमती केशरीबाई द्वारा लाखों रुपये का दान दिया गया है। मुंबईपुर म स्थापित महावीर अस्पताल म भी श्री रांका उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं।

इस ट्रस्ट के माध्यम से जरूरतमंदों को मुफ्त औषधि वितरण विद्यालयों को छात्र-वृत्तियाँ देने आदि के रूप में निवमित आर्थिक सहयोग दिया जाता है।



श्री कालूराम केशरीबाई राजकीय चिकित्सालय, निमाज का चित्र

हादिक शुभकामनाओं सहित
मै. राजस्थान इण्डरट्रीज
(प्रिण्टेड टेक्स्टाइल्स)

ई 90 II, औद्योगिक क्षेत्र, पाली (राजस्थान)
फोन 22757, 20705, 22245

'व देमातरम्' का अभिनन्दन ।
अमरत्व व जन
मै वीरड डाइग कम्पनी
पावरलूम रगीन व सफेद कपड़े के व्यापारी
रो 57 II, औद्योगिक बल्नी, पाली (राज)
फोन 21689 21797, 20148



श्री बिमलनाथ जैन उपचार सहायता समिति, बाली

यह उपचार समिति पाली जिले के बादिवासी बाली क्षेत्र में एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण और उपयोगी योजना त्रियान्वित कर रही है। समिति ने इस क्षेत्र में ऐसे पचास ग्रामों का चयन किया है जहाँ के निवासी अत्यन्त गरीब हैं और जहाँ बीमारी की रोक पाम जयका चिकित्सा की कोई व्यवस्था नहीं है।

समिति ने इन गावों में सप्ताह में दो बार जाकर मरीजों की निःशुल्क परीक्षा व इलाज नियमित रूप से करने का अपना सर्वस्व-बद्ध कार्यक्रम बना रखा है। इस प्रकार की चल चिकित्सा इकाई में चिकित्सावाहन के साथ कुशल व अनुभवी डाक्टर कम्पाउण्डर नर्स आदि स्टाफ तो रहता ही है, पर सभी प्रकार की दवाइयाँ आदि भी प्रचुर मात्रा में रहती हैं। यदि इन चयनित गावों में कोई ऐसा बीमार मिला जाता है, जिसे बड़े अस्पताल में चिकित्सा हेतु भेजा जाना आवश्यक हो तो उस मरीज को बड़े अस्पताल में भर्ती कराकर उसकी समुचित चिकित्सा कराने की व्यवस्था भी यह समिति करती है। सत्या अपने कार्य क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय है। □

श्री वर्द्धमान जैन आराधना गृह (वृद्धाश्रम), सुमेरपुर

यह सत्या पाली जिले में अपने ढंग का एक ब्रह्मठा प्रयोग है। यह पहली सत्या है जहाँ वृद्ध पुरुष और महिलाएँ अपनी वृद्धावस्था के दिन प्रसन्नतापूर्वक चिन्ता मुक्त होकर व्यतीत करते हैं। पाली जिले के दानी सज्जनों द्वारा गठित एक जन ट्रस्ट इसकी व्यवस्था करता है और पिछले 10 वर्षों से यह वृद्धाश्रम कायम रह रहा है। ट्रस्ट ने मुख्य राष्ट्रीय मार्ग पर जवाईँ नदी के किनारे एक विशाल भवन बनवाया है जिसमें एक जन मन्दिर के अलावा करीब 30 कमरे हैं।

भवन के आधे भाग में जैन छात्रावास चलता है और शेष हिस्से में वृद्धाश्रम या आराधना गृह चलता है। दोनों सत्याओं की व्यवस्था सुचारुरूप से कुशल व्यवस्थापकों द्वारा की जा रही है। वृद्धाश्रम में दैनिक कार्यक्रम इस तरह बनाया गया है कि निवासी दिन भर व्यस्त रहते हैं। धार्मिक क्रिया व अध्ययन के साथ साथ आराम करने व भ्रमने टहलने की भी समुचित व्यवस्था है। चिकित्सा का पूरा इंतजाम है। भोजन, नाश्ता आदि की पूरा व्यवस्था है। सारी व्यवस्था निःशुल्क है, पर आश्रमवासी स्वेच्छापूर्वक सत्या को भेंट देना चाहे वह स्वीकार भी नहीं जाती है। □

विकलाग सेवा समिति, फालना

विश्व विकलाग वप के दौरान फालना क्षेत्र के विकलागों की दयनीय दशा की ओर भी क्षेत्र के समाजसेवियों का ध्यान आकृष्ट हुआ। राज्य स्तर पर अनेक योजनाएँ बनीं और पाली जिले में भी भगवान महावीर विकलाग सहायता समिति का गठन हुआ, जिसके माध्यम से विकलागों को ट्राई-साइकिलें सिलाई की मशीनें आदि प्रदान की गईं। चिकित्सा के लिए भी कतिपय साधन उपलब्ध कराए गए। उसी समय बाली के पूर्व विधायक मोहनराजजी ने विकलागों

के स्वाई पुनर्वास हेतु विकलागों का कतिपय उपयोगी गृह उद्योग में प्रशिक्षित करने की एक योजना बनाकर तैयार की। इसी के आधार पर फालना की उद्योग बस्ती के निकट एक 'विकलाग प्रशिक्षण केंद्र' नामक आवासीय सत्या की स्थापना का निश्चय किया गया। दानदाताओं द्वारा प्रदत्त धनराशि से भवन बनना शुरू हो गया है। इस केंद्र में 100 विकलागों के आवास व प्रशिक्षण देने की योजना भी है। □

'वन्देमातरम्' का हादिक अभिनन्दन ।



पाली जिला सहकारी भूमि-विकास बैंक लि, पाली (राजस्थान)



मानव कल्याण सेवा संघ, बाली

पाली जिले के बाली उपखण्ड में बार बार बढ़ने वाले भयंकर बुमिंधो के वर्षों में तथा कभी-कभार बाढ़ आ जाने के उपरांत भी व्यक्तिगत रूप से राहत कार्य प्रारम्भ किये जाते थे, पर सामूहिक एवं संपठित रूप से प्रयास नहीं हो पाते थे। ऐसी स्थिति में आज से 15 वर्ष पूर्व बाली के कुछ उत्साही युवकों और समाज सेवियों ने मानव-कल्याण सेवा संघ, बाली की स्थापना की और इस संस्था

पशुपन की रक्षा करना और सस्ती दर पर पशुपासकों की धास चारा उपलब्ध करवाना।

इस संस्था का प्रमुख कार्य-क्षेत्र बाली का आदिवासी इलाका है। यहाँ भौल, गरसिया एवं मीणा लोग रहते हैं। इन्हीं आदिवासी गावों में हर प्रकार की राहत सामग्री पहुंचायी जाती है। बाली नगर में विभिन्न प्रकार के विकास कार्य करवाने का श्रेय भी इस



का पंजीकरण भी कराया गया। इस संस्था के अध्यक्ष भद्रास में व्यवसाय में लगे हुए श्री पुल्लराजजी जेटमल जी हैं और सचिव का कार्य देख रहे हैं श्री मोहनराजजी एडवोकेट।

इस संस्था में सूखे और बाढ़ के समय हजारों लोगों को अन्न वस्त्र की सहायता देकर सामाजिक किया है। लविन इसकी सबसे महत्वपूर्ण सेवा रही है—असहाय पशुपन के लिए शिविर खालना

संस्था को है। शिक्षा के क्षेत्र में इस संस्था ने कई स्कूल भवनों का निर्माण दानदाताओं की प्रेरित करके करवाया है और इसी तरह एक विशाल अस्पताल भवन बनवाने हेतु भी दानदाताओं को प्रोत्साहित किया है। कई गरीब एवं जरूरतमंद विचलाने छात्रों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया है तथा छात्र छात्राओं को छात्रवृत्तियां देकर जरूरतमंद प्रतिभावालों को उत्साह बढ़ाया है।

सोजतरौड जनराहत सेवा समिति, पाली

'सहायता नहीं सहयोग' का मूल उद्देश्य लेकर यह संस्था सोजतरौड के प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता श्री जम्बरजी मेहता की पाली जिले की एक महान् देन है।

इस संस्था का मुख्य उद्देश्य अभावग्रस्त साधारण स्थिति में परिवारों को राहत-कार्यों के माध्यम से अनाज वपदा ओट्टन बिछाने की चादरें व अन्य जीवनोपयोगी सामग्री प्रदान करना तथा

होनहार छात्रों को प्रतिक्रम पाठ्यपुस्तकें आदि दिलाने का हर सम्भव प्रयास करना है।

इस संस्था के माध्यम से अनेक विकास कार्य सम्पन्न कराये गये हैं। इन कार्य में श्री जम्बरजी मेहता के अनन्य साथी श्री मंगल चन्दजी गांधी का प्रमुख साथ रहा है।



राजस्थान सेवा परिषद्, बम्बई

राजस्थान सेवा-परिषद् हालांकि बम्बई में रजिस्टर्ड संस्था है, पर इसके सारे कार्यक्रमों पाली जिले के गोडवाड क्षेत्र के निवासी हैं और इस संस्था का उद्देश्य है-पाली जिले में विपत्तिग्रस्त और जरूरतमंद लोगों को राहत पहुंचाना तथा उनके विकास और तरक्की में सहयोग प्रदान करना। संस्था में सभी युवक और उत्साही कार्यकर्ता हैं और विभिन्न समारोहों का आयोजन कर लाखों रुपये का ढकड़ा करते हैं और अकाल, बाढ़ बीमारी तथा अन्य विपदाओं के समय स्वयंसेवक बनकर काम में जुट जाते हैं। गत दो वर्षों से इस संस्था ने अशहाय पशु चिकित्सा का जिले भर में गठन करके अकाल पीड़ित पशुधन को बचाने का भरसक प्रयत्न किया है।

इस संस्था के उत्साही महामंत्री श्री हीरालालजी मालवीया,



सेवा परिषद् द्वारा जन सेवाय प्रवृत्त की गयी
'रोगी वाहिनी'

वाली ने अपनी साकप्रियता एवं जनसम्पर्क के कारण क्षेत्र के पीड़ित मानव को राहत पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

श्री विमलजी पुनमिया अध्यक्ष शांतिमालाजी - उपाध्यक्ष, विमलेशजी मेहता मंत्री शांतिमालाजी जैन (सी०ए०) - उपमंत्री डा० दिनेश जन कोपाध्यक्ष चैवरचंदजी जैन चिकित्सा समिति - सयोजक, रमेशजी चौपडा शिक्षा समिति सयोजक, श्री युगराज जैन - देवले सुविधा समिति के सयोजक तथा श्री कान्तिमालाजी सचवी प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

इस संस्था के 200 आजीवन सदस्य और 100 साधारण सदस्य हैं। ये सभी सदस्य धन राशि प्रदान करने के साथ-साथ जनसेवा करने के काम में भी अग्रसर रहते हैं।



'रोगी वाहिनी' के साथ खड़े कार्यकर्ताएँ एवं महामंत्री
श्री हीरालाल मालवीया

पाली सेवा मण्डल, पाली

'पाली सेवा मण्डल,' पाली जिले की प्रमुख स्वयंसेवी संस्थाओं में एक है जो गत 40 वर्षों से सेवाकार्यों में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है। स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी मोदी की प्रेरणा से यह संस्था स्थापित की गयी थी जो जीवनपर्यन्त इस संस्था के माध्यम से सेवा-कार्यों में लगे रहे। वैसे तो संस्था ने दुग्धित बाढ़ भूकम्प आगजन्ती से पीड़ित लोगों को लाखों रूपयों की राहत सामग्री पहुंचाकर उनका पुनर्वास करने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई। अन्य संस्थानों पर इस संस्था द्वारा सावजनिक हितार्थ प्लांट विध्याम स्थल एवं इमरान घाटा का निर्माण भी करवाया गया पर इस संस्था का मुख्य सेवा कार्य चिकित्सात्मय क्षेत्र में रहा है और

वह भी आर्यों के आपरेशन करवाने लोगों को ज्योति प्रदान करवाने में इसने विशेष उपसम्पिर्षा अर्जित की है। संस्था ने दो स्थानों पर आर्यों के अनेक सर्जिकल सिविल लगाकर अब तक 15 000 से अधिक सफल आपरेशन नि शुल्क सम्पन्न करवाये हैं।

महाराजा श्री उम्मेद मिल्स, पाली के पूर्व मुख्य अधिकारी श्री मोहनलालजी गुप्ता वर्षों तक इस संस्था के अध्यक्ष रहे और उनके कार्यकाल में इस संस्था का काफी विकास हुआ। गुप्ताजी द्वारा की गई सेवाओं में फलस्वरूप इस संस्था ने अनेक जनहितकारों का सम्पन्न किए। वर्तमान में डाक्टर डी०डी० मोलकी पाली सेवा मण्डल के अध्यक्ष हैं। □

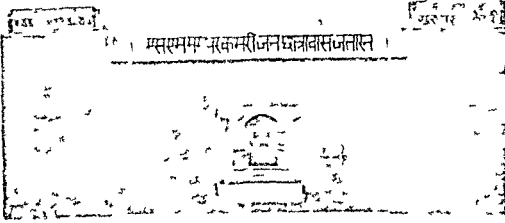


श्री मरुधर केसरी स्थानकवासी जैन यादगार समिति, जैतारण

संस्था की मुख्य प्रवृत्तियाँ निम्नांकित हैं —

- 1 दीन-दुलियों की निष्ठापूर्वक सेवा
- 2 छात्रावास का संचालन,
- 3 गरीब व जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्तियाँ
- 4 आध्यात्मिक साधना केन्द्र का संचालन
- 5 श्री मरुधर केसरी ज्ञान स्वप्न (निर्माणाधीन)

- 9 मजिल का 64 पीट ऊंचा
- नींव से कुल ऊँचाई 125 फुट
- जमीन से ऊँचाई 103 फुट
- जमीन से 9 फुट ऊपर
बस
- मुहूर्त 16 8 89
- लागत 40 लाख रुपये



समिति द्वारा संचालित
छात्रावास का भव्य भवन



पाली जिले के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता



श्री केशरीमलजी सुराणा



राणावाम महाविद्यालय के संचालक श्री केशरीमलजी सुराणा साधारण दीखन वाले असाधारण व्यक्तित्व के धनी हैं। कोई सोच भी नहीं सकता

या कि एक धनी एवम् सम्पन्न परिवार में जन्मे श्री केशरीमलजी सुराणा शरीर पर वस्त्र के नाम पर केवल एक छोटी धारण किये अपना सारा जीवन इस संस्था को समर्पित कर देंगे। श्री सुराणाजी का त्यागमय जीवन स्वयं में एक उच्चतम आदर्श की अभिव्यक्ति है। इनके त्याग से प्रभावित होकर लोणा ने इस संस्था के लिए लाखों रुपये का दान दिया है और यही कारण है, राणावास जैसे बहुत ही छोटे और पिछड़े गांव में शिक्षा का यह अभिनव केंद्र प्रगति दर प्रगति कर रहा है।

श्री केशरीमल जी सुराणा बड़ा ही समर्पित एवं मर्यादित जीवन व्यतीत कर रहे हैं और केवल सी रुपये माहवार स अपना तथा अपनी पत्नी का निर्वाह (घर खर्च) कर लेते हैं। अधिकांश समय मीन धारण किये रहते हैं। इन्होंने अपने जीवन में सामाजिक कुरीतियों के सबंध में भी कड़ा सपप किया है। इनकी देखरेख में कनिज और हार्डस्कूल तो चल ही रहे हैं पर दो बड़े छात्रावास भी हैं जिनमें 500 के करीब छात्र अध्ययन कर रहे हैं। नारी शिक्षा के लिये भी इन्होंने अखिल भारतीय महिला शिक्षण संस्था की स्थापना कर एक विद्यालय स्थापित किया है।

श्री सुराणाजी सारे क्षेत्र में काको सा के नाम से प्रसिद्ध हैं। ऐसे अनुशासन प्रिय त्यागमूर्ति शिक्षासत् के सादरीपूण जीवन का प्रभाव छात्रों के जीवन पर भी अमिट छाप छोड़े तो क्या आश्चर्य !

भाई रूपचन्द्रजी भसाली



श्री रूपचन्द्रजी भसाली की जन्म भूमि पाली है जहां इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा के साथ साथ समाज सुधार एवम् कुरीति निवारण

के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। पर, फिर उनका कायक्षेत्र व्यापार की दृष्टि से बम्बई बन गया। 40 वर्षों से अधिक हो गये बम्बई में एक मूक समाज सेवक के रूप में भगवान महावीर की वाणी के ज्ञान परिचरई तेमपनाण कुजभई को सायक कर रहे हैं।

श्री भसालीजी जिनको उनके परिचित लोग 'भाई साहब' के नाम से संबोधित करते हैं एक कुशल व्यापारी होते हुए भी बड़ी ही सादगी से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने अपनी आवश्यकताओं का अत्यन्त ही सीमित कर रखा है तथा अपना अधिकांश समय सुबह शाम दीन-दुखियों बीमारों, असहायों व अनाया की सेवा में उनकी जरूरतों को पूरा करने में लगा रहे हैं। अस्पताल तथा दीन दुखी बीमारों की भुगी फोपडियों की इन्होंने अपना आराधना स्थल बना रखा है। 'सादा जीवन उच्च विचार' इस सत् वाणी को इन्होंने अत्यन्त सत् कर लिया है।

श्री मोहनलालजी मोदी



प्रेरणा के प्रकाशपुञ्ज स्वर्गीय श्री मोहनलालजी मोदी युवावस्था की दहलीज पर पाँव रखते ही जोधपुर से पाली आ गये और पाली की मिट्टी के साथ ऐसे घुलमिल गये कि मानो पाली ही उनकी जन्म-स्थली हो।

व्यापार के निमित्त पाली आये मोदीजी को समाज सेवा का ऐसा चस्का लगा कि उनके लिए व्यापार तो गौण हो गया और दीन दुखियों की सेवा ही उनका व्यापार हो गया। मोदीजी ने करीब 40 वर्ष पूर्व ओसवाला के 'याति नौहरे' में लगे आर्थों के आपरेशन केम्प से अपनी सेवायें शुरू की थी। उस समय मोगीजी घर घर जाकर रोगियों के लिए भोजन सामग्री इकट्ठी करते थे उनी सत्परता से वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक सेवा और सहायता कायों के लिए घर-घर जाकर भोली पलाकर सहयोग लेते रहे। सेवा के प्रति समर्पित उनके जीवन का ही प्रभाव था कि उनकी धर्मपत्नी, पुत्र और पुत्रवधू भी ऐसे ही समाज सेवा के बाणों से जुड़ गये।



'पाली सेवा मण्डल और 'हिंदू सेवा मण्डल' नामक विधवाय सस्थाओं के श्री मोदीजी सस्थापक रहे हैं और सुन्दर रामो और शहरो म चिकित्सा शिबिर आयोजित कर रोगियों को राहत पहुंचाने में इ होने कीतिमान स्थापित किये हैं। श्री मोदीजी ने पाली में कुष्ठ रोगियों की चिकित्सा व सेवा मुख्यतः के लिए एक आश्रम की भी स्थापना की, यही उन्हें चिकित्सा द्वारा ठीक करने के साथ साथ आत्म निभर बनाने के उद्देश्य से अनेक प्रकार के शुद्ध उद्योगों का प्रशिक्षण भी दिया।

पाली का सोजतरौड पर स्थित भग्नाश्रम घाट तो इनकी शास्वत मादगार है, जिसमें सारी सुविधाओं के साथ साथ इन्होंने एक मन्दिर का निर्माण भी करवा दिया है।

कहीं भी बाढ़ हो या दुष्काल, पहामारी हो या अभाव, मोदीजी सेवाभावी कायकतियों की टोली के साथ हमेशा तैयार रहते थे। पाली जिले में बार-बार पड़ने वाले दुष्काल के दिनों में श्री मोदीजी ने जो सेवाएं दी हैं व हमेशा प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी। श्री मोदीजी के लिए निम्न पंक्तिया सही भाव प्रकट करती हैं —

दीपक की लौ ने खुद जल कर
आत्मा ही पाली तगरी की।
लौ से जुड़ कर मोहत मोदी ने
रोगान कर दिया अनेकों को ॥

से यह जानकारी मिलने पर कि भारत में एक बरौड अघे व्यक्ति हैं और प्रतिवप 18 लाख व्यक्ति मोतियाबिन्द से पीडित होकर अघे हो जाते हैं, और यदि ऐसे पीडित व्यक्तियों को समय पर उपचार मिल जाय तो वे पुन दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं—इहोंने गरीब और पीडित वग के हिताय गावा म कुशल चिकित्सकों की सेवाए प्राप्त कर लाखों के इलाज के लिए 'नेत्र मश शिबिर' लगाने शुभ किये। हजारों लोगो को लाभान्वित होते देखकर इहोंने 'श्री शंभव नेत्र यज्ञ समिति' का गठन किया और कुशल मजनी सहित एक चलता फिरता अस्पताल चड़ा कर दिया। दूर दराज के गावों में, आदिवासी व पिछड़े वग के लोगों के गावों म नेत्र शिबिर लगाने शुभ किये। फिर तो यह 'नेत्र शिबिर' का कार्यक्रम वष में 6 माह से अधिक का हो गया।

इन शिबिरों में लाखों लोगों का उपचार किया गया पर साथ ही एक अनुभव हुआ कि कुछ पीडित व्यक्ति ऐसे आते हैं जिन्हें बापरेशन के बाद भी काफी दिन अस्पताल में रहना आवश्यक हो जाता है फिर क्या था—पुन के छनी और कमठ श्री राजमलजी ने एक विशाल व सुसज्जित नेत्रचिकित्सालय खडा कर दिया।

श्री राजमलजी ने भयकर दुष्काल के दिनों में आदिवासियों की असहाय अनाथों की अनुकरणीय सेवा की है। पिछले कुछ वर्षों से पाली क्षेत्र के आदिवासी गांव भीमाना में इहोंने तपेदिक निवारण शिबिर भी सफलतापूर्वक लगाये हैं। भगवान् महावीर अस्पताल, सुमेरपुर और विन्सलाय प्रशिक्षण केन्द्र पालना के भी ये सस्थापक सदस्य रहे हैं।

नेत्रहीना की सहायताय इहोंने कुछ विदेशी सस्थाओं से सम्पर्क कर उनका माग दशन और सहयोग की प्राप्त किया है।

श्री राजमलजी जैन



श्री राजमलजी के जीवन का एक विशिष्ट पहलू यह है कि युवावस्था से ही इहोंने दीन-दुखियों और पीडितों की सेवा मुख्यतः का षत से किया



था। सम्भव है इनकी पुत्रनीया भाताजी ने इन्हें जन्म भृष्टी में ही ऐसा कुछ मिश्रण कर पिलाया हो जिससे इनके रोम-रोम में सेवा भाव स्थापित हो गया है।

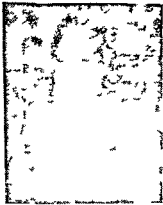
श्री राजमलजी का जन्म राम बिसलपुर में सन् 1933 में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा राम म ही होने के परचाट् व्यवसाय और सेवा के क्षेत्र म इहोंने एक साथ प्रवेश किया। गांव में ही सवप्रथम एक नि शुल्क दवालागना प्रारम्भ किया। अक्षरार्ता और पत्रिकाओं



श्री रायचन्द जैनमल शाह



लोकसेवा म सलन श्री रायचन्द जैनमलजी शाह जसाली गाव के विकास कार्यों म अग्रणी रहे हैं। श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय बरकागा के उपाध्यक्ष, विद्यावाची के प्रमुख कायकर्ता समाज सुधारक दिन दुधियों के सहयोगी तथा रचनात्मक गिटिकीय के कारण ये क्षेत्र म अत्य त लोकप्रिय हैं।



श्री जीवराजजी मेहता



श्री जीवराजजी मेहता, वाली निवासी एक समर्पित एवं सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जन विद्यालय, बरकाणा में हुई। इनमें मुद्र स्वभाव सूक्ष्म और स्पष्ट विचारों के कारण वे व्यापार में तो आगे बढ़े ही, पर इससे से भी अधिक सावजनिक क्षेत्र में कार्य कर रही सस्थाओं में विकास की ओर बढ़े हैं। यही कारण है कि वर्षों से देश के प्रसिद्ध अस्पताल बम्बई अस्पताल के आप ट्रस्टी और मैनेजमेंट बोर्ड के सदस्य हैं। प्रतिदिन दो से चार घंटे का समय अस्पताल में भर्ती मरीजों की सार सभाल में ये नियमित रूप से देते हैं। इसके अलावा रात ही या दिन, पर ही या आफिस, टेलीफोन पर या स्वयं उपस्थित होकर देश भर के मरीज उनसे चिकित्सा सहायता हेतु निवेदन करते हैं। आज तक इनके दरवाजे से किसी को निराश लौटते नहीं देखा गया। राजस्थान निवासियों, विशेषकर पाली जिले से आने वाले रोगियों के लिए तो बम्बई में श्री मेहता एक 'सूर्य बाम' की तरह उपयोगी हैं। खासकर गरीब मरीजों की निःशुल्क चिकित्सा व्यवस्था में अपने व्यक्तिगत संपत्ति एवं प्रभाव का उपयोग कर कराते रहते हैं। इतना ही नहीं, अनेक डॉक्टरों को विशेष प्रशिक्षण दिलाने में भी इनका बड़ा सहयोग रहा है।

इसी प्रकार, बम्बई की प्रसिद्ध शिक्षण सस्था, मारवाडी विद्यालय एवं अन्य कई शिक्षण सस्थाओं के मैनेजमेंट बोर्ड के श्री मेहता सक्रिय सदस्य हैं। मारवाड जन युवक सघ के सक्रिय सदस्य रहते हुए इन्होंने अनेक सामाजिक सुधारों को अपनाया है। ये मध्यर बालिका विद्यापीठ, विद्यावादी के सस्थापक सदस्यों में से भी हैं और इस सस्था के तथा जैन कालेज, फालना के अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। गोडवाड की अनेक सामाजिक व शासक सस्थाओं को इनका मागदान एवं सहयोग मिलता रहता है।

श्री जीवराजजी मेहता के सेवा मय जीवन के कारण ही बम्बई के व्यापारिक जगत में इनका बड़ा नाम है। व्यापारी समुदाय की प्रसिद्ध सस्था—मारत मर्चेंट्स चैम्बरस के वर्षों तक मैनेजिंग कमिटी के विभिन्न पदों पर आसीन रहे हैं और अध्यक्ष भी चुने गये हैं।

इन दिनों श्री मेहताजी का पूरा समय समाज सेवा में ही व्यतीत होता है। उनका मानना है कि वे अपनी सहायिणी श्रीमती पानीबाई के सहयोग से ही इतना समय सेवा काय में दे पाते हैं।



श्री समीरमलजी लोटा



पाली की गत वर्षों में जो आर्थिक प्रगति हुई है, उसका श्रेय कपड़े के प्रसाधन उद्योग को जाता है। पाली राजस्थान का निविवाद रूप से कपड़े का प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र बन चुका है तथा निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है। पाली की इस प्रगति का श्रेय श्री समीरमलजी लोटा को दिया जाना उपयुक्त है क्योंकि इस व्यवसाय को प्रथमतया इन्होंने ही पाली में स्थापित किया था। दुबले-पतले शरीर, पनी आँखें, हाथ और पैर निरंतर कुछ कार्य करते रहने की क्रियाशीलता दर्शाते हुए मद्भाग्यी सादगी पसंद सेवाभावी। एक कमनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी हैं श्री लोटाजी।

इन्होंने कपड़े के व्यवसाय में जब पदार्पण किया, उस समय मलमल इन्डोस से आयात की जाती थी। इस मलमल को प्रसाधन द्वारा तयार कर विक्रय किया जाता था। पाली की आज की प्रगति को देखते हुए पुराने समय में जब साधन नहीं थे, तब साधन उत्पन्न कर कार्य को सम्पन्न करना कितना विकट कार्य था—यह सिर्फ कोई भ्रुकभोगी ही समझ सकता है। विन्म स 2017 में पाली में प्रथम बार रपाई करने के लिए हाथ से चलने वाले जिगर का निर्माण करवाया गया तथा विक्रम स 2029 में प्रथम बार हाथ से चलने वाली स्टेटर मशीन लोटाजी ने स्थापित की। विन्म स 2025 में रोलर प्रिंटिंग मशीन लगाकर इन्होंने पाली में प्रथम छपाई का प्रसाधन भी शुरू किया।

अपने व्यवसाय की प्रगति को बराबर आगे बढ़ाते हुए लोटाजी ने सेवा कार्यों में भी अपनी अभिरुचि बनाये रखी। इनके द्वारा एक 'हायर सेकेण्डरी स्कूल भवन' निर्मित कराया गया, जो लोटा बाल निकेतन' के नाम से प्रख्यात है। रोटीरी-क्लब के 'रोटीरी सभा-भवन' का निर्माण कलेक्टर आफिस के प्रांगण में एक सभा भवन का निर्माण, हिंदू सेवा मण्डल द्वारा संचालित स्वर्गाश्रम में एक बड़े हाल का निर्माण तथा पाली सेवा मण्डल' द्वारा संचालित नव चिकित्सालय में वाढ रोगियों के लिये एक हाल का निर्माण इनके द्वारा सम्पन्न करवाये जा चुके हैं। आज 79 वर्ष की आयु में भी वे अपनी दैनिक कार्यसमता को यथावत् बनाये हुए हैं।



श्री जवानमलजी शर्मा (कोलरगाव)

□

‘यदि आप जोधपुर स उदयपुर की सड़क पर जाए तो नया गाव स पट्टने वाली एक सड़क आपकी मिलेगी। इस सड़क की अपनी एक कहानी

है। वास्तव म यह सड़क की कहानी नहीं, एक व्यक्ति जवानमल के दुः निश्चय साहस, आत्म विश्वास और लगन की कहानी है जो आज भी छादी की बमौत्र और पगडो पहले 44 वर्षीय जवानमल क नाम स आपका टोकाटीक दोपहरी स लेकर रात के अंधेरे और मुनुमान मे सालटेन लिये इस सड़क की मरम्मत करता दिखाई देगा। क्या न हो! आखिर यह सड़क उसी के खून पसीने का परिणाम है।

साठे तीन मील लंबी यह सड़क राजस्थान के जोधपुर डिवीजन के पाली जिले की देसुरी पनायत समिति म पढने वाले मगरतलाब से लेकर नयागाव तक सात गावो को जोडती है।’ ये वाक्य सन 1960 म ‘ग्राम सेवक नामक अखबार मे छपे एक लेख से उभूत किये गये हैं। आज भी 75 वर्षीय जवानमलजी में साव जनिक सेवा के प्रति बसा ही उत्साह बना हुआ है।

श्री जवानमलजी का जन्म देसुरी पनायत समिति के ग्राम कोलर मे हुआ और गावों के रास्तो की दुइसा देखकर ही इनके मन म सड़क निर्माण का स्वरूप पदा हुआ। दिन हों या रात सर्वाँ वर्षा, गर्मी, कोई श्दु हो श्री जवानमलजी अकेले ही कुचाली और टोकरो लिये सड़क पर काय करते नजर आयेंगे। इन्होंने अपनी कुल जमा पूजी दस हजार यहाँ तक कि पत्नी के आभूषणों को गिरवी रखकर प्राप्त की गई रकम भी सड़क निर्माण मे खच करदी थी। उस समय के लोग श्दें पागल कहते परिवार के लोगों ने बहिष्कार कर दिया यहाँ तक कि इनकी पिटाई भी हुई पर चुन के धनी और दूड संकल्पी श्री जवानमलजी ने हिम्मत नहीं हारी और वर्षों परिश्रम करके सड़क बना डाली। इनके लगनपूर्वक किये गय इस काय का निरीक्षण तत्कालीन भारत सरकार के मंत्री श्री एस के डे ने किया और इन्हें सम्मानित किया साह ही इस सड़क का नामकरण भी श्री जवानमल रोड किया गया।

अब तो यह सड़क पक्की बामर की बन गई है।



श्री हीरालालजी जैन

□

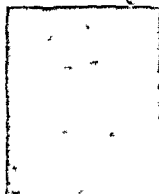
श्री हीरालालजी जैन का जन्म ग्राम बीजोवा म श्री जुहारमलजी के घर हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम बीजोवा म हुई और तत्पश्चात उच्च शिक्षा के लिए ये बम्बई चले

गये जहाँ इनके परिवार का मुख्य व्यवसाय था।

बम्बई म शिक्षा प्राप्त करते समय जिन लोगों के सपन म ये आये, इन्होंने इनका सामाजिक और व्यापारिक दृष्टिकोण व्यापक बना। मारवाड जन युवक सघ के साथ जुडकर इन्होंने समाज सुधार के कार्यक्रमो म रुचि लेना शुरू किया और उसी दिशा मे आगे बढ़ते हुए मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावासी की स्थापना म अन्य साथियो के साथ मिलकर सहयोग प्रदान किया। फिर तो ऐसे कार्यों म इनकी रुचि और लगन बढ़ती ही गई।

गोडवाड के जन समाज के सगठनो मे श्री हीरालालजी प्रमुख चुने गये पर इनकी रुचि शिक्षण सस्थाओ को सुदृढ करने की ओर अधिक रही है। फालना कानेज, बरकाणा विद्यालय विद्यावासी आदि शिक्षण सस्थातो के संचालन मे पूरी रुचि से भाग लेते हैं और आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं। अपनी गाँव बीजोवा मे एक मानदार विद्यालय भवन का निर्माण कराकर इन्होंने जनता का भेंट किया है।

अनेक सामाजिक, धार्मिक और मानव सेवा के सगठनो व दुर्दोस्तो से ये जुडे हुए हैं और अपना पूरा समय समाज सेवा म दे रहे हैं।



श्री मूलचन्दजी शाह

□

जवाली गाव क निवासी श्री मूलचन्दजी शाह अपनी युव के धनी थे। अपनी दूर दृष्टि व वायकुशलता के फलस्वरूप बम्बई नागपुर आदि शहरो मे



अपना व्यवसाय बड़ा दिया, लेकिन व्यवसाय से भी अधिक रुचि उन्हें थी समाज सेवा में और अपने गांव व क्षेत्र के विकास में। जवाली के बरसों तक वे सरपंच रहे और गांव की अस्पताल, पंचायत घर, स्कूल, सड़कें पेयजल आदि की सुविधायें प्रदान कराने में अपना तन मन धन लगा दिया। जवाली ने निकट डारिया बाघ (तासाब) का निर्माण करवाने की उन्हें जबरदस्त लगन लगी हुयी थी, इसी धुन में अपने साथ पांच पंचायती के सरपंचों की लेकर बाघ के निर्माण की स्वीकृति हेतु जवाली से अपनी कार द्वारा जयपुर जा रहे थे कि दूध के निकट दुपटना में उनका देहावसान हो गया।

श्री मूलचन्दजी स्वभाव से समाजसेवी थे और समाजसुधार के लिए उन्होंने बड़ा परिश्रम किया था। वे जानते थे कि शिक्षा के द्वारा ही गांव के गरीब वगैरे और समाज का भला हो सकता है। इसलिये उन्होंने अपने गांव में ही नहीं पाली जिले की अनेक शिक्षण संस्थाओं को उदार हृदय से आर्थिक सहयोग प्रदान किया था। विकलांग आश्रम, फालना कालेज, विद्यावादी, बरवाणा विद्यालय आदि अनेक संस्थाओं को सत्तासन समितियों के व वर्षों तक सदस्य रहे हैं। अपनी सेवामावी वृत्ति के कारण श्री शाह सभी वर्गों के लोगो में जीवनपथ तत्पत् लोकप्रिय बने रहे।

इनके पिताजी श्री खीमराजजी की उदार भावना की करत हुए इ होने अपने पुरतैनी ग्राम बाता में ग्राम जनता के विद्यालय का एक शानदार भवन बनवा कर भेंट किया है। भ्रमण के परचात् इहोने अपने व्यवसाय को भी एक नया रुचि दिया है।



श्री मूलचन्दजी

स्व० श्री मूलचन्दजी चण्डालिया (नारलाई) मोडवाड क्षेत्र के एक जान माने प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता रहे हैं। वे अनेक वर्षों तक मोडवाड

आसवाल महासभा और पाचवनाय जन विद्यालय बरकाणा के महामंत्री रहे हैं। श्री चण्डालिया का सारा जीवन समाज की ओर समर्पित हो गया था। मोडवाड क्षेत्र में शिक्षा प्रचार में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके स्वयं के परिवार में भी उच्च शिक्षा प्राप्त अनेक प्रोफेसर, इंजीनीयर एव डाक्टर हैं।



श्री लक्ष्मीचन्दजी भारतीय

श्री लक्ष्मीचन्दजी भारतीय की ज मधुमि पाली जिले की खारची तहसील का ग्राम बांता है पर इनकी कम-स्थली बगलोर (कर्नाटक) रही है।

इन का पशुक वस्त्र व्यवसाय बगलोर में हान से इनका अधिकांश समय वही जनसेवा में जाता है पर ये अपने जन्म-स्थान बाता और भारवाड को भूले नहीं हैं। वक्त जरूरत मुप्यत प्राकृतिक प्रकोप के अवसरों पर वहा अवश्य आते हैं और लागो का राहत पहुँचाने का काय करते हैं।

श्री लक्ष्मीचन्दजी भारतीय में गजब की सुभद्रूष और सगठन शक्ति है। कर्नाटक के राजस्थानी समाज में इन्होंने बड़ा मान सम्मान है और अपने 'यापक सम्पक के कारण ये हरएक को सहयोग प्रदान करने को तत्पर रहते हैं।



श्री चुन्नीलालजी मेहता

अस्ती वर्षीय श्री चुन्नीलालजी मेहता (खीमल) आज भी युवकों का उत्साह व जोश लिए हुए अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के विनास कार्यो में सेवारत हैं। श्री मेहताजी खीमल ग्राम के उस प्रतिष्ठित मेहता परिवार से हैं जिसका पुराने जमाने में मोडवाड में दबदबा रहा है। वे वर्षों तक गाडवाड क्षेत्र के ओसवाली की एक मात्र सामाजिक संस्था 'गाडवाड महासभा' के प्रमुख कार्यकर्ता एव मंत्री रहे हैं। फालना जन कालिज एव बरवाणा जन विद्यालय के सचालन में भी इनका प्रमुख योगदान रहा है। ये कानून विन भी हैं और रानी व्यापार मण्डल के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं।



श्री

उप
नय
स
स

है। वास्तव में यह सड़क की कहानी नए
के नए निश्चय साहस आत्म विश्वास का
आज भी खादी की कमीज और पगड़ी पर
नाम से आपका टोकाटोक दोपहरी से
सुनसान में सामने लिये इस सड़क
देगा। क्या। न हो आखिर यह सड़क
परिणाम है।

साढ़े तीन मील लंबी यह सड़क
बिबीजन के पाली जिले की देसूरी पंचायत
मगरतलाब से लेकर नयागांव तक साढ़े ५
वाक्य सन 1960 में ग्राम सेवक' नामक
से उपलब्ध किये गये हैं। आज भी 75 वर्षीय
जनिक सेवा के प्रति वसा ही उत्साह बना है

श्री जवानमलजी का जन्म देसूरी पंच
कोलर में हुआ और गावों के रास्तों की सुवर्ण
में सड़क निर्माण का सर्वप्रथम पदा हुआ। दिन
मर्णा, गर्मी कोई शत्रु ही, श्री जवानमलजी ३
टोकरों लिये सड़क पर काम करते मगर
कुल जमा पूंजी दस हजार यहाँ तक कि प
गिरवी रखकर प्राप्त की गई रकम भी सड़क।
थी। उस समय के लोग दूध पागल कहते
बहिष्कार कर दिया यहाँ तक कि इनकी पिटा
धनी और दुध मंजली श्री जवानमलजी ने हिम्म
मर्णों परिश्रम करके सड़क बना डाली। इनके
इन काम का निरीक्षण तत्कालीन भारत सरकार
के ड ने किया और इन्हें सम्मानित किया साथ
नामकरण भी श्री जवानमल रोड किया गया।

अब तो यह सड़क पक्की शायर की बन गई।

उत्तम मालरमु

। उन्होंने ही सब प्रथम दिनांक 14-3-42 को
रने दिया था कि—“यह समा सरकार से
के जोधपुर में बाहुर के परगनी में कम से कम
मोडत, नागौर और बाहुर में तो आगामी
उपे तपा छीरे छीरे उनकी सख्या बढ़ाई जावे।”
। मत्र सम्मति से पास हुआ। इससे स्पष्ट है
की क्या स्थिति थी। इस प्रस्ताव के बावजूद
गोला गया। आजादी के पश्चात् लोकप्रिय
पश्चात् ही इस प्रस्ताव पर अमल हुआ।

जैन



पाली के
के हैं।
मालर



श्री मूलचन्दजी कपूरचन्दजी राणावत

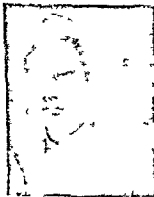


भगवान अपने प्यारे और चुनिन्दा लोगों को अत्यायु में ही अपने पास बुला लेता है। ऐसा ही हुआ श्री मूलचन्दजी के साथ।

उन्होंने सामाजिक और धार्मिक कार्यों में अपने आपको समर्पित किया, अपने गांव और सारे गोडवाड क्षेत्र के लोगों के हिताय कतिपय योजनाएं बनाए और वे इस सत्सार से विदा हो गये।

बसे तो श्री मूलचन्दजी (बुढाला) का परिवार गोडवाड में एक प्रतिष्ठित घराना रहा है। इनके बड़े पिता सधवी श्री जसराजजी फालना जैन कॉलेज के महासचिव वर्षों तक रहे और सस्था की तन मन धन से सेवा की है, पर श्री मूलचन्दजी ने अपने जीवन के कुछ ही वर्षों में समाज सुधार हेतु अथक परिश्रम किया था। गोडवाड की अनेक शिक्षण सस्थाओं को भरपूर सहयोग प्रदान किया था।

श्री मूलचन्दजी के मन के जीवन की अन्तिम घड़ियों में एक सारी सुविधाओं से युक्त विंगल अस्पताल भवन बनवाने की इच्छा बलवती हुई थी जिसे इनके सुपुत्र श्री इन्दरचन्दजी और बिसलजी राणावत अब पूरा करने में लगे हुए हैं। इस हेतु श्रीमती जतूबाई चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना कर अपने स्वर्गीय पिताश्री की यादगार में खुडाता-पालना मुख्य मांग पर 'राणावत अस्पताल का संचालन कर रहे हैं। इस अस्पताल के साथ ही एक आयुर्विज्ञान उपकरणों से युक्त निदान केन्द्र एवं एक्सरे की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।



श्री भैरुमलजी पालरेचा



श्री भैरुमलजी का जन्म पाली जिले के बिजोवा ग्राम में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा पूरी हान के पश्चात् वे उच्च शिक्षा

हेतु बम्बई चले गये जहाँ इनका पत्रुल व्यवसाय था।

श्री भैरुमलजी गोडवाड क्षेत्र के समाज सुधारकों में गिन जाते हैं। युवावस्था से ही वे लगनपूर्वक समाज सेवा में गये और अपने ग्राम बीजोवा में नवयुवकों की एक टीम ग्राम विकास के कार्यों की पूरा करने में जुट गये थे। इनकी शक्ति गजब की थी और मुँहों में भी जान फूकने की शक्ति चरिताय करने की कला इनमें थी। ग्रामवासियों के आग्रह पर भैरुमलजी ग्राम पंचायत के सरपंच बने और इनके कायकाल अनेक विकास काय हुए।

मारवाड में बार बार पढ़ने वाले दुष्कालों के दिनों में गरीबों की सहायता और पशुधन की रक्षा के लिए वे अपना सहयोग और समय देते थे। इन्हीं के आर्थिक सहयोग से जनहितकारी विकास काय सम्पन्न हुए हैं। ऐसे निर्माक और वक्ता की असामयिक मृत्यु ने एक समर्पित समाज सेवक को भी ही क्षेत्र से छीन लिया था।



श्री चुन्नोलालजी

स्वर्गीय श्री

राका ने पाली जिले के एक से ग्राम दादई में जन्म लेकर मे अपनी लगन एवं परिश्रम से व्यवसाय शुरू किया जो आज शाह

खेताजी धमाजी नामक बम्बई की प्रमुख व्यावसायिक सम्पत्तियों में से एक है। इनके जीवन की प्रमुख विशेषता यह रही है कि इन्होंने जित लगन और व्यापारिक कौशल से धन अर्जित किया उतनी ही उदार भावना में दान देकर अनेक सामाजिक और धार्मिक सस्थाओं को सुन्दर भी बनाया। श्री चुन्नोलालजी ने जीवन से प्रेरणा लेकर इनके जेष्ठ पुत्र श्री बल्लावरजी राका ने न केवल व्यापार में नये कीर्तिमान बनाए हैं बल्कि विभिन्न सस्थाओं को आर्थिक सहयोग देन में भी कई कीर्तिमान कायम किये हैं। इन्होंने आर्थिक सहायता से न केवल बम्बई में बरन पाली जिले में भी अनेक सावजनिक कार्यों में महान् योगदान दिया है। अपने गांव में तो इन्होंने विद्यालय भवन चिकित्सा भवन आदि का निर्माण करवाया ही है, परन्तु मुम्बई स्थित महावीर अस्पताल भवन के लिए बहुत बड़ी धनराशि देकर जन सेवा का महान् काय किया है।

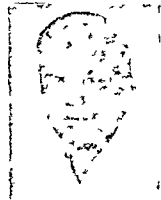


पाली जिले की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थायें—मध्यर बालिका विद्यापीठ बरवाणा विद्यालय पालना मनित्र आदि को आपका सहयोग समय-समय पर प्राप्त होता रहा है। बम्बई स्थित जनक संस्थाका को भी इस परिवार का सहयोग मिलता रहा है।

गणशिव एव सामाजिक संस्था में, बाहे वह 'गोडवाड महासभा' ही या बरवाणा विद्यालय या पालना जैन क्विज या मध्यर बालिका विद्यावाहा इन्होंने सभी संस्थाओं को अपनी अनुसूच सेवायें लागे होकर प्रदान की हैं। लाइव क्लब, रानी के अध्यक्ष पद पर रहते हुए कई विकास कार्य करवाये हैं। अकाल सहायता या बाड सहायता ही या गरीबा के लिए चिकित्सा निबिर हो, अर्था होकर अपनी सेवा प्रदान करते रहे हैं।

सेवा को यह लगन इन्हें अपने पूज्य पिताजी श्री पुष्पराजजी से विरासत म मिली। स्वर्गीय श्री पुष्पराजजी ने भी समाज और सन को बर्षों तक अपनी अनुसूच सेवायें दी थी। श्री फुटरमलजी ने अपने जन सम्पर्क व सेवा भावना से क्षेत्र में एक ठसा मित्र मण्डल बनाया है जो जन सेवा में रुचि लेता है और श्री फुटरमलजी सामाजिक हित की जो भी योजनायें अपने साधियों ने सामन रखते हैं वे सभी पूरी होती हैं।

श्री फुटरमलजी न अपना पूरा समय जन सेवा में व्यर्पित कर दिया है।



श्री कनकरामजी लोढा



श्री बनकरामजी लोढा का जन्म घाणेराम ने एव प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। इन्होंने अल्पायु में ही अपने बुद्धिजीवी और व्यापारिक नियुगता से बम्बई नगर में अपने कारोबार को बनाया और इनके उद्योग प्रतिष्ठान ने प्रामाणिकता के कारण देश विदेश में अपनी सास जमाती।

यह दुलम सयोग ही कहा जायगा कि मानव वस्त्राम व सेवा वृत्ति के कारण श्री लोढा न बहता जल सदा निमल' वाली सीछ का हृदयमग्न कर विद्यालय भवन, अस्पताल भवन आदि बनाने में और दुर्मिष के दिन में अरुत मन्दो को राहत पहुँचाने में अपनी पहियों सदैव तन्वी रम्बी है। स्वभाव से लोढाजी प्रतिष्ठा व प्रसिद्धि के विरुद्ध हैं पर इनके गरस स्वभाव व व्यवहार ने इन्हें अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया है।



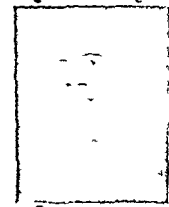
श्री देवराजजी गुन्देचा



श्री देवराजजी गुन्देचा का जन्म पाली जिले के प्राय घाणे राव में हुआ। उच्च शिक्षा के अभाव में साधारण पाठशाला की पढाई से ही मातोपकर ये व्यवसाय से जुड गय। छोरे छोरे बम्बई नगर में आवासीय भूमि मरीद कर भवन निर्माण के व्यवसाय में लग गये और विपुल धनानि अजित की।

यह एक मुग्ध समाज ही कहा जायगा कि समृद्धि के साथ साथ उनकी उदारता और मन्कायों में धन व्यय करने की वृत्ति बढ़ती गई। पत्रस्वरूप घाणेराम में 'नव नाकोडा भरव एव भगवान् पाम्बनाय के मन्िरो के निर्माण में स्वका मराहतीय योगदान रहा है या या कहा जाए यह इ ही का स्वल्प या जो पूरा हुआ।

मावाय हियाचस मुरीगवरजी की प्रेरणा से इन्हान अरप कीति रत्नम का निर्माण करवाया और देवराज गुन्देचा परिश्रवण ट्रस्ट'



श्री फुटरमलजी परमार



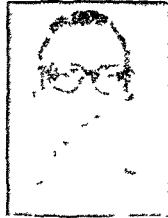
श्री फुटरमलजी परमार (गनी) का जन्म नांदोल में हुआ। इन्होंने अपना उद्योग व व्यापार रानी में स्थापित किया सक्ति जीवन के प्रारम्भिक काल से ही

गारत्रनि मवा-नाली में इनकी विरप्य रचि रही है। रानी स्थान व शिक्षण में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मोरनाड की हर



स्थापित कर क्षेत्र के लोगों को भलाई के लिए वृहद् अस्पताल भवन तयार करवाया। टस्ट द्वारा संचालित यह अस्पताल प्रति वर्ष हजारों रोगियों को निरंतर लाभान्वित कर रहा है।

श्री गुदेचा से समाज को बहुत आशाएँ थी पर इनका असाधारण निधन हो गया। अंतिम समय तक व धार्मिक सस्थाओं टस्टा व सामाजिक मगठनों से जुड़े रहे और तन मन धन स सहयोग प्रदान करत रहे।



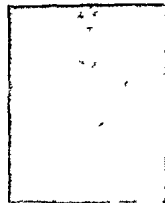
श्री सरदारमल जी

अपन परिश्रम लगन व त यष पर दन रहत हुए यवसाय व साथ साथ जीवन मे कितनी ऊचाईयो को सक्ता है इसका एक अनुपम उ-

हरण श्री सरदारमलजी भी जन हैं।

इनका जन्म पाली जिल के रानी गांव म हुआ। उच्च से महस्म रह पर निरंतर प्रगति की चाह से इह तरबकी सुअवसर मिलत रह और हर सषप म इहें सफलता प्राप्त हुइ इनका 'यवसाय बम्बई के उपनगर मुनुड म है जहा इनका टाकीज नामक थियटर चलता है पर जब इनका यवसाय भवन निर्माण ना है।

शिक्षा स ही विकास सम्भव है—इनकी एसी दद वार हान स मुनुण म अनक शिक्षण-सस्थाओ स य सनिय रूप हुइ हैं और उनका सफल संचालन कर रह हैं। इसी शिक्षा प्रेम इनको मारवाड की शिगण सस्थाओ फालना जन कलिज विद्यालय विद्यावाडी आदि सस्थाओ स भी जोड दिया है। सस्थाओ के विकास म इनका सहयोग बराबर मिलता रहा है।



श्री मोतीलालजी

स्वर्गीय श्री मोतीलालजी पाली जिन के सापाद ग्राम निर्मातो हैं। कठी महन्त कर इहोनि कायम्बनूर और बगलोर म अपना व्यवसाय जमाया और सफलता प्राप्त की।

सापो जत टान गाव की सारी आधुनिक सुविधाया-स्कूल अस्पताल, मठें पचापन कर जन प्रणय शांता आदि म मुक्त बनान म श्री मातालालजी का आदिग महयाग कभी समाया नहीं



श्री जीवराजजी चौहान

श्री जीवराजजी प्रेमच दजी वाली निवासी एक उत्साही सामाजिक एव शिक्षाप्रैमी व्यक्ति हैं। आप गोडवाड एव गोडवाड क बाहर अय प्राता मे भी कई सामाजिक, असाणिक एव धार्मिक सस्थाओ से जुडे हुए है। आप बगलोर मे राजस्थान समाज सस्था के 1990 मे अध्यक्ष पद पर रहे और तभी स लगातार समाज सेवा के काय से जुड गये। बगलोर म स्थापित महावीर विद्यालय महावीर अस्पताल आदि कई सयजनिक हित की सस्थाओ मे इनका भारी योगदान रहा है। आप इनके मुचाकरूप से चलाने मे पूरी शक्ति लिते हैं।

श्री हस्तिनापुर जन तीथ, बल्लभ स्मारक-देहली, मठ योगीलाल लेहरखण्ड रिसय इस्टीट्यूट आफ इण्डोलोजी, नई दिल्ली के मानद ट्रस्टी हैं। गोडवाड मे वरबाणा विद्यालय विद्यावाडी, फालना कलिज आदि अनक सस्थाओ म इनका प्रमुख योगदान रहा है।

वाली म एव सुंदर विद्यालय भवन का निर्माण बरवाबर इहोनि महत्त्वपूर्ण जन सेवा का काय किया है। इहें भारत सरकार की सस्था इन्स्टीट्यूट आफ सेल्फ डिफेंस एव कलेक्टर द्वारा सन् 1985 म स्वयंपदक देकर सम्मानित किया गया था। पाली जिल म अकाल हा या बाड य आधिग सहयोग देते रह हैं। बगलोर म इनका दवाइयो का बडा कारोबार है। ये कई दवाया मे निर्माता भी है पर अपना अधिकांश समय जन सेवा के कार्यों म लगान हैं। विगण-कर शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र म सेवा करत की इनकी विशेष रति है।



जायगा। इतना ही नहीं इन्होंने फायदा जन कायम विद्यावाची वरुणाया विद्यालय सरीखी अनेक शिक्षण संस्थाओं का भी समय समय पर सहयोग प्रदान किया है। आपके ही सहयोग से कोयम्बटोर में एक विद्यालय भवन से युक्त विद्यालय चला रहा है। जो पढ़ते हैं कि इनके मह से कभी ना शक नहीं निकला। य जन हित व हुर काम में सहयोग प्रदान करते हैं। जीवन के अंतिम वर्षों में उनकी हचि धार्मिक कार्यों में बर्न गई थी। पालीताणा में जन मन्दिर का निर्माण तथा सच यात्राओं क आयोजन उनकी इहो भावनाओं क फलस्वरूप हुए हैं।

तथा औपच निर्माण के उद्योग में जगनपूवक लगा दिया जार अल्प समय में ही स्याति प्राप्त करली। इस विद्यालय हृदय की यह विभ्रपता ही कही जायेगी कि इन्होंने न केवल गुरुकुल हजारो नामो को अपने कारखाना में काम पर लगाया, बरन कल्या को मागीदारी प्रदान कर उह स्वय सदाग लगात व धंधा करत धाय भी बना दिया।

स्वर्गीय श्री मागीदालजी बगमिया की विलक्षणता यह थी कि धनाजन के साथ साथ वे अनेक कल्याणकारी कार्यों जम, उच्च माध्यमिक कया विद्यालय, सादही राजस्थान हाल-गारेपाव, डॉ अम्बेडकर उद्यान माण्डो, विजलाम प्रशिक्षण केंद्र पालना आदि क निर्माण उद्धान करवाये। सादही स्कूल कीतिस्तम्भ काच का मन्दिर (सादही) माण्डो धायुर्वेदिक चिकित्सालय भवन आदि सबडा ही धनोपयोगी कार्यों में धापका योगदान रहा है। पर, इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध काम तो सादही राणकपुर मडक पर स्थित सच धम मन्दिर (मोक्ष धाम) है जा युगा युगा तन इनकी याद दिलाता रहेगा। जहा सभी धर्मों क तीर्थकर श्रवतार देधी-देवता श्रीर उनक धर्मोपदेश मानव मान को मदिता तक साम्प्रदायिक सभ भाव कल्या प्रहिता श्रीर स य का पाठ पणन रहा।

श्री मागीदालजी बगमिया

एक सदा सुख शाल जग श्री मागीदालजी बगमिया अपने दो धार मित्रा के साथ अपने सादही स्थित निवास स्थान के कमरे में बैठे हैं तभी कुछ लाम पालना में विक्रमाय प्रशिक्षण के द के निर्माण की योजना लेकर पहुंच गय। योजना का प्रारंभ पकर उनका हृदय सुखी से भर उठा और लगे-लगे आठ पाव पा में भीष माग रहे सको तूल पाव अथ बहरे लगे आर अवाहिना को उनक योग्य काम सिधा कर स्वावलम्बी और उपस्थायी तागतिक बनान की यह योजना तन बहुत ही मुन्दर काय है। उ हान क लना आकर उक्त भवन का शिशा यास करने की स्वीकृति दी और तत्पश्चा ही एक ताव रूपये देने की घोषणा कर दी। ऐस य सहृदय श्री मागीदालजी बगमिया।

इनका अंतिम सावजनिक समारोह था श्री परसराम महादेव तीय पर नव निमित्त पीरप द्वार का उद्घाटन। इस भाय समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री फोगालासजी ने तीर्थ की इस पावन भूमि और उपस्थायी तागतिक बनान की यह योजना तन बहुत ही मुन्दर काय है। उ हान क लना आकर उक्त भवन का शिशा यास करने की स्वीकृति दी और तत्पश्चा ही एक ताव रूपये देने की घोषणा कर दी। ऐस य सहृदय श्री मागीदालजी बगमिया।

इनका अंतिम सावजनिक समारोह था श्री परसराम महादेव तीय पर नव निमित्त पीरप द्वार का उद्घाटन। इस भाय समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री फोगालासजी ने तीर्थ की इस पावन भूमि और उपस्थायी तागतिक बनान की यह योजना तन बहुत ही मुन्दर काय है। उ हान क लना आकर उक्त भवन का शिशा यास करने की स्वीकृति दी और तत्पश्चा ही एक ताव रूपये देने की घोषणा कर दी। ऐस य सहृदय श्री मागीदालजी बगमिया।

श्री मोहनलालजी सघवी

श्री मोहनलालजी जेबेद जी सघवी बानी में जन्मे और यही पर इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। धार्मिक मस्कारा में पते पाते हान के कारण प्रारम्भ से ही इनकी हचि सामाजिक उद्यान के कार्यों में रही। अम्बेड के पथिक व्यवसाय में काम करते ही इन्हें जापान की यात्रा का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ इन्होंने दिन रात धम करते जापानिया को देखा तथा जीवन के हर क्षण क विस्तार में धम के महत्व को अनुभव किया। मुद में सत्पण रूप में ध्वस्त जापान निरामा और स्तानि से मुक्त होकर किस प्रकार अपने राष्ट्र क विकास में उठा है उसका दर्शन उर्ोंने बहा किया। उस यात्रा के अनुभवों का लाभ हमारे देश का कम मिले इस जोर भी यहा क लोभा का ध्यान इन्होंने बाक्यति किया और स्वय ने भी औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी प्रवृत्ति की।

श्री सघवी की हचि शिक्षा क प्रचार प्रसार में अधिक रही है। श्री पावनाग उम्बद जैन कालेज पालना की प्रब धनारिणी समिति के ये अध्यक्ष चुने गये और उनके बाधकाल में कालेज का नया भवन बना साथ ही शिक्षा का स्तर भी उचा उठा। इनकी प्रबन्ध कुशलता क कारण भगवान महावीर जयन्ताल मुमुरपुर के टस्टो मण्डल क मन्त्री का जार भी इन्हें सापा गया। आजकल ये उनकी धवस्था का सुण करत एव सुचारन में लगे हुए हैं।



श्री मूलचन्दजी ताराचन्दजी पुनमिया

□

श्री मूलचन्दजी जो बालूजी के नाम से जाने जाते हैं तथा एक विशिष्ट चित्रकर्म कर्मी हैं, के परिवार ने सन् 1936 म सेठ रूपचंद ताराचंद अस्पताल,

सादशों का निमाण करवाकर जनहिताय कार्यों की शुरुआत की थी। श्री कामूजी ग्राम पंचायत के वर्षों तक सरपंच भी रहे और इनके कायबाल में मादड़ी में पशु चिकित्सालय भवन स्कूल भवन, माहल्ला की सड़कें आदि अनेक विकास कार्य सम्पन्न हुए। आज भी इन सस्वाओं से इनका पदाधिकारी के रूप में धनिक सम्बन्ध है।

इनके परिवार तथा में नवलजी दीपाजी एण्ड कम्पनी के भागीदार न परशुराम महादेव की सड़क बनवा कर लोगों को राहत पहुंचाया है।



श्री देवराजजी राका

□

श्री देवराजजी राका जैतान तहसील के ग्राम निमाज के निवासी हैं और बैंगलोर में कपड़े का व्यवसाय करते हैं। निमाज के सेठ श्री बालूरामजी

राका के प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे श्री देवराजजी स्वतंत्रता सेनानी सेठ रिखवदासजी के भतीजे हैं।

श्री देवराजजी ने स्वयं अध्यक्ष परिश्रम कर बैंगलोर में अपना व्यवसाय जमाया और घनाजन के साथ साथ मुक्त हाथों से जनहिताय कार्यों में अपने अर्थ का सदुपयोग किया और कर रहे हैं।

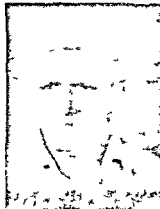
श्री राकाजी मृदुस्वभाव एवं सेवाभावी वृत्ति के हैं और सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि रखते हैं। बैंगलोर में राजस्थानी समाज द्वारा स्थापित हर सस्था में इनकी सधिय भागीदारी रही है। अपनी मातृभूमि निमाज में भी उन्होंने चिकित्सालय, स्कूल आदि भवनों के निमाण में भरपूर सहयोग दिया है।



श्री किरनराजजी लो

श्री किरनराजजी लोटा प तहसील के ग्राम खरवा के निवासी हैं। इनका जन्म सेठ श्री लाल के प्रतिष्ठित परिवार में हुआ।

श्री लोटा में युवावस्था से ही सामाजिक सेवा की लगन ल गई और आज बम्बई स्थित मारवाड क समाज में इनका बड़ा है। इनकी सामाजिक सेवाओं में प्रमुख हैं—वरिष्ठनारायण सेवा। ये नियमित रूप से बम्बई स्थित सर हृदकिशनदास जात है और मरीजों की देखभाल व उनकी चिकित्सा करत है। इनकी इही सेवाओं के कारण अस्पताल के टस्टीगण श्री ताडा की बहा की मैनजिंग नमदी का सदस्य चुना है महाराष्ट्र सरकार ने इन्हें आनररी एंजोब्यूटिव मजिस्ट्रेट की म उपाधि देकर सम्मानित किया है।



श्री हस्तीमलजी मेहता

श्री हस्तीमलजी मेहता का सादडी नगर में एक प्रतिष्ठित प में श्री सरदारमलजी मेहता के हुआ। प्राथमिक शिक्षा सादडी तथा आगे विद्याभ्ययन हुनु गये। इनके पिताजी का बडिया

बडिया नरल के पाडे पालने व उह प्रशिक्षण दन का शोक था श्री हस्तीमलजी मेहता अपना प्राय्य व्यापार में आजमाना चाहत थे, अत कम उम्र में ही य महाराष्ट्र में बतक व्यवसाय में जुट गये।

पर बचपन से ही इनमें जन-सेवा के सन्कारी का हो गया था, फलस्वरूप के शीघ्र ही पुन सादडी लौट आये। स्थानीय विद्यालया व अस्पतालों के विकास में लग गये। इनकी प्रेरणा व सहयोग से राजस्थान चल चिकित्सा द्काइ व अनेक शिविर आयोजित हुए हैं और हजारों लखा पीडित मानवा की चिकित्सा सम्पन्न हुई है। सामाजिक सेवा का कार्य ही अथवा धार्मिक व सामाजिक, श्री हस्तीमलजी की अगुवाई में वह कार्य अचछे ढंग से सम्पन्न होता है।



श्री सागरमलजी चौपडा



श्री सागरमलजी चौपडा का नाम उत ही एक एकी मुम्बईवाले हुए चहर की सम्बन्धी मामला आ जाती है जा गन्ना हा जनमया व निष् समर्पित था। २। सागरमलजी चौपडा

का जन्म वाली कम्बे व एक एग परिवार म हुआ जा आर्थिक स्थिति म सम्पन्न न होने हुए भी धर्मनिष्ठ और धर्मनिष्ठ था और इही पारिवारिक सम्बन्धी न श्री चौपडा का उद्योगपतिया की अन्तिम पक्ति म छडा कर दिया। आत्मानो स पूरा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान श्री सागरमलजी न अपनी जन्म भूमि फालना वाली म छाया उद्योग उभारना का निश्चय किया ता साग उभरना मजाब उठाने लगे पर पुन व पत्र और आत्म-विश्वासी चौपडाजी न अनेक विचरित परिस्थितिया के होते हुए भी उद्योग स्थापित कर ही दिया। अनन्तर उतार चणव के बावजूद इन्होंने हिम्मत नहा हारी और आज तो फालना एक उद्योग नगरी के रूप म भारत भर म प्रसिद्ध है।

श्री चौपडाजी की मित्रमार्गिता और दरियाइजी के कारण ही इस क्षेत्र के विकास म अग्रगण्य और जनप्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त हुआ। अनन्तर नये-नये उद्योगों आग आये और उन्हां नये नये उद्योग स्थापित किये। उभरना निवाम स्थान और फक्टरी में लगा अतिशयैयुक्तता इमेका ही महत्त्वपूर्ण म शरार रहता था और क्षेत्र के विकास की नयी नयी योजनायें यहाँ बनती रहती थी।

राजस्वामन व तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री माहनसासजी मुन्गा-मुन्गाडिया, पूर वरिष्ठ मन्त्री श्री मधुसूदासजी माधुर और सातद स्वर्गीय श्री हरिदास द्रवी माधुर से इनके बने हा मधुर सम्बन्ध था। इसी कारण केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीपण भी फालना आते रहते थे। श्री चौपडाजी का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन भी बम्ब महत्वपूर्ण नहीं रहा। फालना व वाली म अल्पताल मवन इ हाँ की देन हैं और फालना कालेज वरुणा विद्यालय आदि अनेक जिनमसथायाओं को उनका आर्थिक सहयोग मिलता रहा है।

श्री चौपडाजी के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता भी अल्प भाव का अभाव। साधारण के साधारण लोगों से भी इ होने अपने मधुर और पारिवारिक सम्बन्ध आखिर तक बनाये रखे। गोडवाड क्षेत्र के निवासी श्री सागरमलजी का आधुनिक युग के विकास का मसीहा मानते हैं और कहते हैं कि यदि परमात्मा ने इन्हें भरी जवानी म उठाया होता तो दस सार क्षेत्र का विकास और अधिक द्रुत गति स सम्भव होता



श्रीमती पानीबाई मेहता



श्रीमती पानीबाई मेहता का जन्म वाली कम्बे म हुआ और विवाह भी वाली म ही श्री जीवराजजी मेहता के साथ हुआ। इस मुख्य मयाग ही इच्छित दिशानो ही पति गनी मजाब गन्ना के कामों म बर्षों से जुडे हुए हैं। श्रीमती मेहता सामाजिक गुणों म विख्यात रहने वाली अन्तिम पक्ति की महिलाया म म एव है। आज व काई 50 वष पूर पदा प्रवा का स्वाग कर व जाने आई और परिवार के पुत्र-पुत्रिया को उच्च शिक्षा निता कर एक आत्म-वर्धन किया।

श्रीमती मेहता एक निरक्षर स्त्री बन्ना, स्वाभिमानो और अतिथि महार म एक वजाइ महिला है। माधुर वाकिवा विभागीय व प्रारम्भिक शिक्षा म श्रीमती मेहता न सत्रिय हार सहयोग दिया और अने प्रकार का आर्थिक सामया क्षेत्रवर्धन प्राप्त कर विद्यावादी की आवश्यकताओं की पूर्ति की।

श्रीमती मेहता कुछ समय से अल्पवृद्ध हैं पर आज भी जल्दतर मन्त्री को सहयोग पत्राने म पीठ नहीं रहती। इनके पति प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जीवराजजी मेहता भी अपना पूरा समय बम्बई अल्पताल म सरोजी को सम्भालने म लगाते हैं। उनका पीछे भी अक्षय रूप म श्रीमती मेहता की प्रेरणा ही है।



श्री नैनमलजी जैन



श्री नैनमलजी जैन मुम्बईवा एक उस्ताही व्यक्ति थे। आप प्रारम्भ से ही सामाजिक धार्मिक एवम् शैक्षणिक सन्ध्याओं के विकास काय म सधिय योगदान प्रदान करने रहे हैं। आपने मुम्बईवा स्कुल मवन का निर्माण करवाकर सांस्कृतिक काय का सभी के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। आप गोडवाड जन समाज के अपनी सदस्य एक सेवाप्राप्ती व्यक्ति रहें हैं।



आय के अल्प साधना के साथ इहोने बम्बई मे अपना कारो-
वार प्रारम्भ किया था पर मेहनत, लगन और सेवावृत्ति के फलस्वरूप
इहान सफलता अर्जित की और युवावस्था म ही अनर्हित के विकास
कार्यों मे धन लगाने की भावना जाग्रत हुई ।

समाज को इनसे बहुत आशाओं की पर अल्पायु म ही इनका
दहावसान हो गया । इहाने अपनी सेवा भावना के बल पर क्षेत्र मे
अपना प्रतिष्ठित स्थान बना लिया था ।



श्री कालीदासजी राठौर



श्री कालीदासजी का जन्म
सादडी कस्बे के एक सम्पन्न और
प्रतिष्ठित परिवार मे हुआ । इनके
परिवार की परम्परा समाजसेवा
की रही है और अनेक सांजनािक
हित के कार्यों के अलावा इम परिवार के पूज्य स्वर्गीय श्री
मूलचन्दजी स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी स्वर्गीय श्री निहालचन्दजी
जीवनपथम् समाजसेवा विशेषकर शिक्षण सस्थाओं की सेवा करते
रहे हैं । श्री पाशवनाथ जन विद्यालय वरकाणा के स्थापनाकाल से ही
इस सस्था के विकास मे इनका बहुत बडा योगदान रहा है ।

श्री कालीदासजी वरकाणा विद्यालय समिति के गत 20 वर्षों
से अध्यक्ष हैं । बम्बई अस्पताल बम्बई मे भी इहोने एक बड़ी
दानराशि भेंट की है । इनका मुख्य कारोबार बम्बई मे है । य गोड-
वाड क्षेत्र के विकास व उन्नति म विशेष दिलचस्वी रखते हैं ।



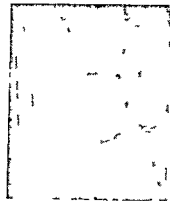
सधवी श्री कुन्दनमलजी



श्री कुन्दनमलजी धनराजजी
पारख मूल निवासी लापोड के हैं ।
इनकी शिक्षा श्री पाशवनाथ जन
विद्यालय वरकाणा म हुई है ।
धन कमाकर अनर्हित क कार्यों म
लक्ष्य करने की प्रवृत्ति इनम प्रारम्भ म ही रही है । इनका मुख्य

“यवसाय बंगलोर और मुरत मे है । श्री कुन्दनमलजी अपना अधिकांश
समय समाज सेवा म “यतीत करते हैं । शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र
मे सेवा करने की इनकी विशेष रुचि है । बंगलोर, रानी वरकाणा
आदि स्थानों पर समाज सेवा के कार्यों मे और आम जनता के
कल्याण के लिए विवासा कार्यों मे इहोने प्रचुर अनुदान देकर प्रतिष्ठा
अर्जित की है ।

वरकाणा को आदर्श गाव के रूप मे विनियमित करने की इहोने
घोषणा की है और प्रथम चरण के रूप मे बहा पेयजल और पक्की
सड़क व नालियों का निर्माण सम्पन्न करवा दिया है ।



श्री सम्पतराजजी भसाली



श्री पाशवनाथ जन विद्यालय
वरकाणा को अपना तन मन धन
सर्वस्व अर्पण करने वाले इस
महापुरुष न हजारो लाख विद्या-
थियों की सादा जीवन उच्च

विचार' की शिक्षा देकर जीवन को नया आलोक प्रदान किया है ।
अपनी जन्मभूमि जोधपुर म शिक्षा प्राप्त कर युवावस्था मे ही
वरकाणा गाव को अपनी जन्मभूमि बना कर इहाने अपना सारा जीवन
ही वहाँ मस्था की सेवा म लगा दिया । इतना ही नहीं अपनी जीवन
मर की सचित धनराशि भी वरकाणा ग्रामवासियों और छात्र
छात्राओं के हिताथ तथा चिकित्सासय भवन क निर्माण मे लगा कर
इहोने इस ससार से विदा ली ।

श्री भसाली का त्यागमय जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी
रहा है । विद्यार्थियों के लिए ही नहीं सभी के लिए इनके दिल म
सदैव ही प्रेम का दरिया बहता था और मुसीबत म हर किसी के
काम धाना इनका स्वभाव बन गया था । सारे क्षेत्र में श्री भसाली
अत्यंत ही लोकप्रिय थे । इनकी लोकप्रियता व सेवा भावना के
कारण ही लोगों ने समाज सुधार व शिक्षा प्रचार मे लाखों करोडा
का योगदान देकर होनहार युवावग का उत्साह बढ़ाया है । पानी
जिला विशेषकर गोडवाड की धनी इनकी सेवा से उन्नत हुई है
इमलिय इस क्षेत्र के निवासियों के हृदय म इनकी पावन स्मृति
चिरकाल तक बनी रहेगी ।



श्री सागरमलजी चौपडा



श्री सागरमलजी चौपडा का नाम तब ही एक तेजी मुम्बराय हुए चहुर की तस्वीर सामन आ जागी है जे मन्ना हा जनगवा क लिए समर्पित था। श्री सागरमलजी चौपडा

का जन्म वाली बन्धन व एक एम परिवार म हुआ जा। आर्थिक दृष्टि स सम्पन्न न होने हुए भी अमनियुक्त और धमनियुक्त था और इन्हीं पारिवारिक सम्बन्धों में श्री चौपडा का उद्योगप्रतिभा की अग्रिम पंक्ति म छडा कर दिया। आजादी म पुन शिथीय विश्वयुद्ध के दौरानश्री सागरमलजी म अपनी जन्म भूमि पालना वाली म पदाता उद्योग उभरान का निश्चय किया ता। योग एनका मन्ना क उद्घाटन समय पर युन क दरत और आत्म-विश्वासी चापडाजी न अनेक विचरोत परिस्थितिया मे होते हुए भा उद्योग स्थापित कर ही दिया। अनेक उदार चडाइय व बावजूद इन्होंने रिमन नहा हारा और आज ता पालना एक उद्योग मगरी म रूप म भारत भर म प्रतिष्ठ है।

श्री चौपडाजी की मित्रमण्डलिका और दरियागिरी के कारण ही एम क्षम व विकास म अग्रगण्य और जनप्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त हुआ। अनेक नये नये उद्योगों आग आय और उद्योग नये नये उद्योग स्थापित किए। इनका निदान म्यान और पश्चिमी मे सया अक्षिचौपडा ता हमसा हा महामाना म भरा रहता था और धन के विकास की नयी नयी योजनायें यहाँ बनती रहती थी।

राजस्थान मे तत्कालीन मुख्यमंत्री था महात्मसातजी मुन्गा-मुखादिया, पूव वरिष्ठ मन्त्री था मधुरादासजी मधुर और साधव स्वर्गीय श्री हरिणभद्रजी मधुर मे एनके बडे ही मधुर सम्बन्ध थे। इसी कारण के डीम सरकार मे मन्त्रीमण भी फालना आते रहते थे।

श्री चौपडाजी का सामाजिक और सावजनिक जीवन भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। फालना व वाली म अल्पताल मवन द ही की देन है और फालना कालेज चरकाणा विद्यालय आदि अनेक शिक्षणमन्दाळा का एनका आर्थिक सहयोग मिलता रहा है।

श्री चौपडाजी मे जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी अल्प मात्र का अभाव। साधारण स साधारण 'नामो स भी इ'होने अपने मधुर और पारिवारिक सम्बन्ध आखिर तक बनाये रखे। मोहवाड क्षेत्र के निवासी श्री सागरमलजी का आधुनिक युग मे विकास का मसीहा मानने हैं और कहते हैं कि यदि परमात्मा ने दृष्ट करी जवानी म उठाया हाता ता एस सार भ्रष्ट का विकास और अधिक द्रुत गति स सम्पन्न होता।



श्रीमती पानीबाई मेहता



श्रीमती पानीबाई मेहता का जन्म वाली बन्धन व हुआ और विवाह भी वाली म ही श्री जीबराजजी मेहता के साथ हुआ। एम मुख्यद मयाग ही कटिये कि दानो ही पति गली समाज मना के कार्यो म सगो मे जुडे हुए हैं। श्रीमता मेहता सामाजिक मुद्यारा म विश्र्वाग रगन वाली अग्रिम पंक्ति की महिताम्मा म ग एक है। आज म बाई 50 वष पूर्व पदों प्रभा को त्याग कर व जल्ये बाई और परिवार क पुन-पुनिया को उच्च निशा गिता कर एक आदर उपाधि म किया।

श्रीमती मेहता एर निहद, स्पष्ट वक्ता, स्वाभियानी और अतिपि सहायक म एन बेजोड महिना है। सगुर वालिका विद्यापीठ व प्रारम्भिक गिना म श्रीमती मेहता न सचिव हार महयोग दिया और अनेक प्रकार की आनसक सामग्री से स्वस्वयं प्राप्त कर विद्याशाली की आवश्यकताओं को पूर्ण की।

श्रीमती मेहता कुछ समय मे अल्पमर्ष हैं पर आज भी जहरत मन्दा की सहयोग पञ्चान म पीठे मही रहती। इनके पति प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जीबराजजी मेहता भी अपना पूरा समय मम्बई जन्मताल म मरीचो को सम्भालन म लगाते हैं। उनक पीठे भी अल्पम रूप म श्रीमती मेहता की प्रेरणा ही है।



श्री नेनमलजी जैन



श्री नेनमलजी जैन मुम्बारा एक उन्माही यति थे। आप प्रारम्भ से ही सामाजिक धार्मिक उच्च महार्थिक मर्यादो के विकास काय म सचिव योगदान श्रदान करते रहे हैं। आपने मुम्बारा स्व्द मवन का निर्माण करवाकर सावजनिक काम का सभो मे सामन एक आदर प्रस्तुत किया। आप मोहवाड जन मन्ना के अग्रणी सदस्य एक मेवाभागी यति रहे हैं।



बाप के अल्प साधना के साथ इन्होंने बम्बई में अपना कारोबार प्रारम्भ किया था पर महुनत लगान और सेवावृत्ति के फलस्वरूप इन्होंने सफलता अर्जित की और युवावस्था में ही जनहित के विकास कार्यों में धन लगान की भावना जाग्रत हुई।

समाज को इनसे बहुत आशाओं की धर अल्पायु में ही इनका देहावसान हो गया। इन्होंने अपनी सेवा भावना के बल पर क्षेत्र में अपना प्रतिष्ठित स्थान बना लिया था।

यद्यपय बगलोर और सुरत में है। श्री कुन्दनमलजी अपना अधिकांश समय समाज सेवा में व्यतीत करते हैं। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा करने की इनकी विशेष रुचि है। बगलोर, रानी, वरवाणा आदि स्थानों पर समाज सेवा के कार्यों में और आम जनता के कल्याण के लिए विकास कार्यों में इन्होंने प्रचुर अनुदान देकर प्रतिष्ठा अर्जित की है।

वरवाणा का आदेश गांव के रूप में विकसित करने की इन्होंने याचना की है और प्रथम चरण के रूप में वहाँ पेयजल और पक्की रास्ता बनाया जा निर्माण सम्पन्न करवा दिया है।

श्री कालोदासजी राठौर



श्री कालोदासजी का जन्म साल्डी कस्बे के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। इनके परिवार की परम्परा समाजसेवा की रही है और जन-सावजनिक हित के कार्यों का अलावा इस परिवार के पू्वज स्वर्गीय श्री मूलचन्दजी स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी, स्वर्गीय श्री निहालचन्दजी जीवनपयत्त समाजसेवा विद्यार्थी गणना सस्थाओं की सेवा करते रहे हैं। श्री पाशवनाथ जन विद्यालय वरकाणा के स्थापनाकार स ही इस सस्था के विनाम में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

श्री कालोदासजी वरकाणा विद्यालय समिति में गत 20 वर्षों में अध्यक्ष हैं। बम्बई अस्पताल बम्बई में भी इन्होंने एक बड़ी धनराशि भेंट की है। इनका मुख्य कारोबार बम्बई में है। य गोद-वाट क्षेत्र का विकास व उन्नति में विशेष लक्ष्मि रखते हैं।

सधवी श्री कुन्दनमलजी



श्री कुन्दनमलजी धनराजजी पारेव मूल निवासी सापाद के हैं। इनकी शिक्षा श्री पाशवनाथ जन विद्यालय वरकाणा में हुई है। धन कमाकर जनहित के कार्यों में लक्ष्य करने की प्रवृत्ति इनमें प्रारम्भ में ही रही है। इनका मुख्य

श्री सम्पतराजजी भसाली



श्री पाशवनाथ जन विद्यालय वरकाणा का अपना तन मन धन सबकुछ अर्पण करने वाले इस महापुरुष न हजारी लाधा विद्यापिया का सादा जीवन उच्च

विचारों की शिक्षा देकर जीवन को नया आलाव प्रदान किया है। अपनी जन्मभूमि जोधपुर में शिक्षा प्राप्त कर युवावस्था में ही वरकाणा गांव को अपनी जन्मभूमि बना कर दृष्टि अपना सारा जीवन ही वहाँ सस्था की सेवा में लगा दिया। इतना ही नहीं अपनी जीवन भर की संचित धनराशि भी वरकाणा ग्रामवासियों और छात्र छात्राओं के हितार्थ तथा चिकित्सालय भवन का निर्माण में लगा कर इन्होंने इस मगर स निदा ली।

श्री भसाली का त्यागमय जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी रहा है। विद्यापिया के लिए ही नहीं, सभी के लिए इनके दिल में एक ही प्रेम का दरिया बहता था और मुसीबत में हर किसी के काम आना इनका स्वभाव बन गया था। सार क्षेत्र में श्री भसाली अत्यंत ही लोकप्रिय थे। इनकी लोकप्रियता व सेवा भावना के कारण ही लोगों ने समाज गुद्यार व शिक्षा प्रचार में साध्यों-करोडा का योगदान देकर होनहार युवावग का उत्साह बढ़ाया है। पानी जिन विद्यार्थियों को माहवाट की छात्रों दत्तों सेवा से उपभूत हुई है, इग्नियन्स क्षेत्र के निवासीयों के हृदय में इनकी पावन स्मृति चिरकास तक बनी रहेगी।



श्री सागरमलजी चौपडा



श्री सागरमलजी चौपडा का नाम मूल ही एक ठमी मुम्बईवासी हुए चहूर की तम्बीर सामन था जानी है जा मदा हा जनगया व लिए समर्पित था। श्री सागरमलजी चौपडा

का जन्म वाली कस्बे व एक एत परिवार म हुआ जा आर्थिक दृष्टि स सम्पन्न न हान हुए भी धर्मनिष्ठ और धमनिष्ठ था और इना पारिवारिक सम्भारों न श्री चौपडा को उद्योगपतितया की अग्रिम पक्ति म छोडा कर दिया। आजादी म पून द्वितीय विश्वयुद्ध के दोरानश्री सागरमलजी म अपनी जन्म भूमि पालना-वाली म छाता उद्योग नगवान का निश्चय किया तो साग 'नवा मजा' उठान लग पर चुन व पक्क और आत्म विश्वासी चापडाको न अनेक विपरीत परिस्थितिया के शत हुए भी उद्योग स्थापित कर ही लिया। अनेक उठार चक्रव के बावजूद इहो हिमन नहा हारी और आज सा पालना एक उद्योग नगरी क रूप म भारत भर म प्रतिष्ठ है।

श्री चौपडाजी की मिननगारिता और दरियादिली के कारण ही इन क्षत्र के विकास म जगमगर और जनप्रतिनिधिया का सहयोग प्राप्त हुआ। अनक नये नये उद्योगी आगे आये और उठान नये नये उद्योग स्थापित किये। इनका निवास स्थान और पकटरी मे लगा अग्निप्रोहूता हा हमसा हा महमाना म भरा रहता या और क्षेत्र के विकास की नयी नयी योजनाय यहाँ बनती रहती थी।

राजस्थान व तत्कालीन मुम्बय श्री माहनसासजी मुया मुयाडिया, वर वृद्ध मन्त्री श्री मयुरदासजी मापूर और सासद स्वर्गीय श्री हरिसचन्द्रजी मापूर से 'नके बडे ही मयुर सम्बन्ध थे। इसी कारण केन्द्रीय सरकार के सन्नीगण भी फालना आते रहते थे।

श्री चौपडाजी का सामाजिक और सावजनिक जीवन भी वम महत्वपूर्ण नहीं रहा। फालना व वाली म अस्पताल भवन द ही की देन है और फालना कालेज वरकण्णा विद्यालय आदि अनेक शिक्षणसंस्थाओं को इनका आर्थिक सहयोग मिशाल रहा है।

श्री चौपडाजी के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी अहम भाव का अभाव। साधारण स साधारण लागो से भी इहोने अपने मयुर और पारिवारिक सम्बन्ध जाहिर तब बनाये रखे। गौडवाड क्षेत्र के निवासी श्री सागरमलजी का आधुनिक युग के विकास का मसीहा मानत है और कहते हैं कि 'यदि परमात्मा के इहो भरी जवानो म उठायो होना ता इस सार क्षेत्र का विकास और अधिक द्रुत गति स सम्भव होता।



श्रीमती पानीबाई मेहता



श्रीमती पानीबाई मेहता का जन्म वाली कस्बे म हुआ और विवाह भी वाली म ही श्री जीवराजजी मेहता के साथ हुआ। इनें मुख्यतः गद्योग ही रचिते निराने हा। पति पत्नी समाज सेवा के बायो म वर्षों ते जुडे हुए हैं। श्रीमती मेहता सामाजिक मुद्योग म विद्यमान रचन वासा अग्रिम पक्ति की महिलामा म म एक है। आज व काई 50 वर्ष पूर्व पदा प्रया को स्वाग कर व जाये आई और परिवार व पुत्र-पुत्रिया को उच्च शिक्षा दिला कर एक आदग उपस्थित किया।

श्रीमती मेहता एग निष्ठर स्पष्ट यत्ना, स्वाभिमानी और अतिथि सतरार म एक वेजाड महिला है। मध्यर बालिका विद्यापीठ व प्रारम्भिक शिक्षा म श्रीमती मेहता न सक्रिय हारकर सहयोग दिया और अक प्रकार का आशयक मामयी भेदस्वरूप प्राप्त कर विद्यावादी की आवश्यकताओं की पूर्ति की।

श्रीमती मेहता कुछ समय स अन्वेषण हैं पर आज भी चहूरत मदा की सहयोग पहुचाने म पीठ नहीं रहता। 'नने पति प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जीवराजजी मेहता भी अपना पूरा समय बम्बई अस्पताल म मरीजों को सम्भालने म लगाते हैं। उनके पीठ भी अरथ रूप म श्रीमती मेहता की प्रेरणा ही है।



श्री नेममलजी जैन



श्री नेममलजी जैन मुम्बई एक उत्साही व्यक्ति थे। आप प्रारम्भ से ही सामाजिक धार्मिक एवम् शैक्षणिक सम्भावों के विकास वाय म सक्रिय योगदान प्रदान करते रहे हैं। आपने मुम्बई स्कूल भवन का निमाण करवाकर सावजनिक वाय का तामी के सामन एक आदग प्रस्तुत किया। आप गौडवाड जन समाज व अपनी सदस्य एक नेवामाजी व्यक्ति रहे हैं।



आय के अल्प मात्रा के साथ इहोने बम्बई में अपना कारो-
बार प्रारंभ किया था पर मेहनत, लगन और सेवावृत्ति के फलस्वरूप
इहोने सफलता अर्जित की और युवावस्था में ही जनहित के विकास
कार्यों में घन लगान की भावना जाग्रत हुई।

ममाज का इनसे बहुत आशाओं की पर अस्पामु में ही इनका
दहावगान हो गया। इहोने अपनी सेवा भावना के वन पर क्षेत्र में
अपना प्रतिष्ठित स्थान बना लिया था।

व्यवसाय बगलोर और सुरत में है। श्री कुन्दनमलजी अपना अधिकांश
समय समाज सेवा में व्यतीत करते हैं। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र
में सेवा करने की इनकी विशेष रुचि है। बैंगलोर, रानी, बरकाणा
आदि स्थानों पर समाज सेवा के कार्यों में और आम जनता के
कल्याण के लिए विकास कार्यों में इहोने प्रचुर अनुदान देकर प्रतिष्ठा
अर्जित की है।

बरकाणा का आदर्श गाव के रूप में विकसित करने की इहोने
चापणा की है और प्रथम चरण के रूप में वहाँ पेयजल और पक्की
सड़क वा नालियों का निमाण सम्पन्न करवा दिया है।



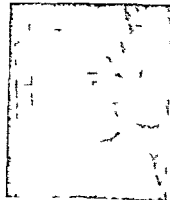
श्री कालोदासजी राठौर



श्री कालोदासजी का जन्म
सादरी कस्बे के एक सम्पन्न और
प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। इनके
परिवार की परम्परा समाजसेवा
की रही है और जनक मावज्जनिक

हित के कार्यों का अलावा इन परिवार का पूवक स्वर्गीय श्री
मूलचण्डी स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी स्वर्गीय श्री निहालचन्दजी
जीवनपयन्त समाजसेवा विशेषकर शिक्षण संस्थाओं की सेवा करते
रहें हैं। श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय बरकाणा में स्थापनावाला से ही
इन संस्था का विकास में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

श्री कालोदासजी बरकाणा विद्यालय समिति के गत 20 वर्षों
से अध्यक्ष हैं। बम्बई अस्पताल, बम्बई में भी इहोने एक बड़ी
दानराशि भेंट की है। इनका मुख्य कारोबार बम्बई में है। य गौड-
बाद क्षेत्र का विकास में उनका विशेष दिलचस्पी रखते हैं।



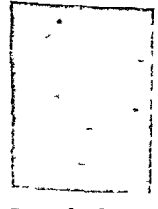
श्री सम्पतराजजी भसाली



श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय
बरकाणा को अपना तन-मान-धन
सबस्व अर्पण करने वाले इस
महापुरुष ने हजारों लाखों विद्या-
धियों को सादा जीवन-उच्च

विचार की शिक्षा देकर जीवन का नया आलाक प्रदान किया है।
अपनी जन्मभूमि जोपुर में शिक्षा प्राप्त कर युवावस्था में ही
बरकाणा गाव का अपनी कमभूमि बनाकर इहोने अपना सारा जीवन
ही वहाँ संस्था की सेवा में लगा दिया। इतना ही नहीं अपनी जीवन
भर की सवित धनराशि भी बरकाणा ग्रामवासियों और छात्र
छात्राओं के हितार्थ तथा चिकित्सालय भवन के निमाण में लगा कर
इहोने इस संसार से विदा ली।

श्री भसाली का त्यागमय जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी
रहा है। विद्याधियों के लिए ही नहीं, सभी के लिए इनके दिल में
सर्व ही प्रेम का दरिया बहता था और मुसीबत में हर किसी के
काम धाना इनका स्वभाव बन गया था। सारे क्षेत्र में श्री भसाली
अत्यन्त ही लोकप्रिय थे। इनकी लोकप्रियता व सेवा भावना के
कारण ही लागू न समाज सुधार व शिक्षा प्रचार में लाखों-करोड़ों
का योगदान देकर इहोने युवावग का उत्साह बढ़ाया है। पानी
बिना विनोयकर गाडवाड की घाटी इनकी सेवा से लुप्त हुई है
इनलिय इस क्षेत्र के निवासियों के हृदय में इनकी पावन स्मृति
चिरकाल तक बनी रहनी।



सधवी श्री कुन्दनमलजी



श्री कुन्दनमलजी धनराजजी
पारेख भूत निवामी लापाद के हैं।
इनकी शिक्षा श्री पार्श्वनाथ जैन
विद्यालय बरकाणा में हुई है।
धन कमाकर जनहित के कार्यों में

सब करने की प्रवृत्ति इनमें प्रारम्भ में ही रही है। इनका मुख्य

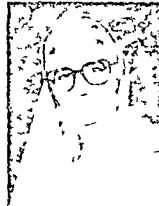


श्री प्रेमराजजी बाफना



श्री प्रेमराजजी बाफना पाली जिले के सादडी बन्ध में जन्मे एक उद्योगपति उद्योगपति और समाज-सेवक हैं। युवा अवस्था में ही इन्होंने समाज-सेवा का प्रेरणा स सादडी में एक भव्य विद्यालय भवन का निर्माण कराया, जिसमें हजारों छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। बम्बई नगरी में प्लानिटर उद्योग में त्थापित प्रांत की बाफना दुनिया के अनेक विविध देशों की यात्रा कर चुके हैं।

बम्बई अस्पताल में इन्होंने बहुत बड़ी धनराशि दान कर समाज का नाम रोशन किया है। श्री बाफना राजस्थान की अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और उनको सदैव हर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं।



श्रीमती सुमद्रा जैन



हजारों हजारों छात्रों को व युवतियों के जीवन में शिक्षा की उद्योग प्रज्ज्वलित करने वाली समाज सुधार कर्मपत्नी म ददता पुषक आगे बढ़ने वाली और युवसतना में लिपत सन्धता परिवारों को शरारत अक्षीम व नवीनी चीजा से मुक्ति दिलाने वाली इस समर्पित विदुषी महिला स क्षेत्र का बच्चा-बच्चा भली भाँति परिचित है। शालीन श्रेत परिधान और मुदुता की धनी इस महिला ने अपना पूरा जीवन ही समाज व राष्ट्र का समर्पित कर दिया है।

एक आदम शिक्षिका होने के नाते इनका सम्मान राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तो हुआ ही है कि पु इनकी मा यता है कि उन जन के हृदय में जो प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ है वही इनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। कई विषयों में निष्णात होने के साथ साथ सुमद्राजी अच्छी बहनु और सचिवा भी हैं। इनका परिवार मूल रूप स पजाबी है और जनापाय श्री वल्लभमुरीजी महाराज का भक्त रहा है पर इन्होंने विद्याबादी की स्थापना के माध ही अपना जीवत विद्याबादी महिला विद्यालय का पुणत समर्पित कर दिया। तब स ही लगभग एक सहस्र छात्राओं वाली इस संस्था की समूची 'यवस्था य ही सम्भालनी है।

इनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खूबी तो यह है कि पिछले 30-35 वर्षों में हजारों छात्राएँ इस संस्था से शिक्षा लेकर निकली हैं पर आज भी उन छात्राया तथा उनके परिवारों से भी उनका व्यक्तिगत सम्पर्क बना हुआ है और सभी को ये नाम सहित जानती हैं। इनके महान आशों और सेवामय जीवन स प्रभावित होकर दानपता स्वय आगे आता है और विद्याबादी के विकास में सहयोगी बनता है।

सुमद्रा बहिन विचारों से गांधीबादी हैं तथा रचनात्मक प्रवृत्तियों में रचि लेती हैं। सर्वोप्य केन्द्र-क्षीमेत के संचालन मडल को वर्षों से सन्स्था हैं। क्षत्र क पटोसी ग्रामी में श्री अध्यापिकाओं और छात्राया की टोनी बनाकर ग्राम वासिया के बीच प्राय जाती रहती हैं और उहू शिक्षा समाज सुधार और यमन मुक्ति की प्रेरणा देती हैं। इनकी इ रायना है कि महिला शिक्षा से ही परिवार समाज और राष्ट्र क जीवन का समुप्रेत किया जा सकता है और भारतीय सन्कृति के अदृष्टप जावत मूल्यों को पुनर्स्थापना की जा सकती है।



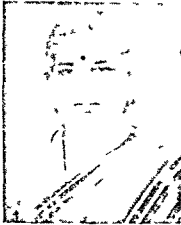
श्रीमती रतन के सोलकी



श्रीमती रतन के सोलकी पाली जिले के रानी बन्ध की निवासी हैं। कम आयु में ही इन्होंने बम्बई में मापार कर रहे अगन पति के सहयोग से सामा जिक और राजनतिक क्षेत्र में प्रवेश कर अच्छा नाम कमाया है।

श्रीमती रतन सोलकी बम्बई (उत्तर पुष) डिस्ट्रिक्ट महिला कांग्रेस कमेटी की महामन्त्री हैं और जन सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों में रुचि के कारण जनहिताय अनेक अभियानों का मृत्व कर चुकी हैं। इनका विशय योगदान निघन और अल्प आय बग के लोग की समस्याया को उजागर कर उन्हें निपटान में रहा है। इन्होंने कई नि शुल्क चिकित्सा शिवरो व परिमार कृतयान शिवरो का आयोजन किया है। जनक सरकारी अन्न मरकारी एव मर सरकारी संस्थाया से इनका जीवत सम्पर्क बना हुआ है। वर्तमान में प घाटकीपर (बम्बई) मारवाडी महिला मडल तथा र्हावासी सगहन की अध्यक्ष हैं। इनके अनावा घाटकीपर भीपघण्टी मडल एव प्रुत उद्योग महिला सघ की महामन्त्री हैं।

श्रीमती सारकी न प्रौढ शिक्षा तथा जहरतमद छात्र छात्राओं को नि शुल्क पाठय सामग्री उपलब्ध कराने में भी ल्वनय नाय राय किया है। सामाजिक और राजनतिक क्षत्र में ममान रूप से सावप्रिय हान में रहू सभी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है।



श्रीमती गुणवती भसाली



श्रीमती गुणवतीजी का जन्म ग्राम खीमेल के प्रतिष्ठित खजाची परिवार में हुआ। इनकी शिक्षा मरुधर बालिका विद्यापीठ, विद्यावाही में सम्पन्न हुई। पारिवारिक वातावरण और विद्यावाही की शिक्षा दीक्षा ने इन्हें समाज सुधार के कार्यक्रम की ओर आकर्षित किया और विद्यावाही पर ही ये ऐसे ही कार्यों में रुचि लेती रही। पाली जिले में विशयकर गोडवाड के अधिकांश व्यापारी लोग बम्बई में रहते हैं अतः श्रीमती गुणवती बहिन ने बम्बई में एक सस्था "ओसवाल मित्र मण्डल" नामक गठित की है।

श्रीमती भसाली इस सस्था की अध्यक्ष हैं और समाज सुधार के कार्यक्रमों में बड़ी रुचि लेती हैं। इस सस्था के माध्यम से सम्पन्न कार्य समाज के युवक युवतियों में भी समाज सुधार के विभिन्न कार्यक्रमों में रुचि जागृत की जाती है। वैसे क्लिहाल इस सस्था के द्वारा विभिन्न वर्गों और वर्तियों के युवक युवतियों को विना दहेज व टीका-दस्तूरी के विवाह मूल में बचने हेतु प्रोत्साहित करना और सम्पन्न जुटान का कार्य किया जा रहा है। इसके लिए यह सस्था निरन्तर शिक्षण प्रकाशित करती है और सम्पन्न साधनों में सहयोग करती है। यह सस्था विधवाओं एवं विधुरों के विवाह को भी प्रोत्साहन देती है। इस तरह श्रीमती भसाली ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी अभियान छेड़ कर प्रगतिशील पहल की है।



सेठ रामकुमारजी बागड



यू तो पाली प्राचीन काल से ही व्यापार की प्रसिद्ध मण्डी रही है और अनेक प्रकार के छोटे गृह उद्योगों के लिए प्रसिद्ध रही है, पर उद्योगों में क्रांतिकारी

विकास की नींव डाली—डोडवाना के स्वर्गीय सेठ श्री मगनीरामजी बागड ने और चहुमुखी विकास किया—सेठ रामकुमारजी ने। बागड परिवार ने उन जमान में बड़े साहस का कार्य किया और पाली में एक बड़ा कपड़ा मिल खड़ी कर दी। इसी उद्योग के फलस्वरूप अंग्रेजी राज ने नष्ट प्राय हुए उद्योग और व्यापार को पुन जीवन्तमान किया और पाली शहर ही नहीं, पाली जिले के अनेक कई कस्बे कपड़ा व्यापार की मण्डी बन गये। लाखों लोगों को रोजगार प्रदान मिलने लगा।

बागड परिवार जनहिताय कार्यों के लिए देश भर में प्रसिद्ध है। पाली नगर के आधुनिक विकास में इन सेठों का बहुत बड़ा योगदान है, जो इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। जनकल्याण और पाली नगर के विकास के लिये उनके सहयोग से निम्नांकित उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न हुए हैं—

- 1 बाण्ड बालेज भवन
- 2 बागड उच्चस्तर माध्यमिक विद्यालय भवन
- 3 बागड अस्पताल भवन
- 4 बागड धर्मशाला
- 5 श्री ब्रह्मेश भगवान का मन्दिर
- 6 बागड स्टेडियम
- 7 बागड म्यूजियम

इन बड़े व महत्त्वपूर्ण कार्यों के अलावा इनके आर्थिक सहयोग से और भी अनेक कार्य सम्पन्न हुए हैं और चल रहे हैं। पाली जिले में बार बार होने वाले प्राकृतिक प्रकोपों अकाल बाढ़ आदिक समय में भी इनके द्वारा पक्का राहत सामग्री व आर्थिक सहयोग मिलता रहा है। वस्तुतः पाली शहर को आधुनिक विकसित स्वरूप प्राप्त करने में बागड परिवार का सर्वाधिक योगदान रहा है।

ओसवाल मित्र मंडल

सामाजिक कुरीतियां

दहेज, टीका पर्दा प्रथा, आडम्बर व निजूल खर्ची

के विरुद्ध हमारा अभियान

आप सभी से सहयोग हेतु निवेदन है

सम्पर्क सूत्र

श्रीमती गुणवती भसाली

31, विभव नगर दाह

पोस्ट-बम्बई-28

कार्यालय

59 जाली मंजर चेम्बड

नरीमन पाट्ट बम्बई-20



श्री प्रेमराजजी वाफना



श्री प्रेमराजजी वाफना पासी जिले के सादडी नक्व म जमे एक उदीयमान उद्योगपति और समाज-सेवक हैं। युवा भ्रवस्था म ही इन्होंने समाज-सेवा की प्रेरणा से सादडी मे एक भव्य विद्यालय भवन का निर्माण कराया जिसम हजारो छात्र सामाभित हो रहे हैं। बम्बई नगरी मे प्लास्टिक उद्योग म ख्याति प्राप्त श्री वाफना दुनिया के अनेक विवसित देशा की यात्रा कर चुक हैं।

बम्बई अस्पताल मे इन्होंने बहुत बडा धनराशि दान कर समाज का नाम रोशन किया है। श्री वाफना राजस्थान की अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओ से जुडे हुए हैं और उनको सर्वे वर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं।



श्रीमती सुमद्रा जैन



हजारो हजारो छात्राओ व युवतियो के जीवन मे शिक्षा की खोति प्रज्वलित करन वाली समाज सुधार क्ययमी म दण्ठा पूवन आगे बढने वाला और कुनसना मे लिण्ठ रीकडा परिवारो की शराव अफीम व नगोली धोजा से मुक्ति दिलाने वाली इस समर्पित विदुयी महिला म शोध का कच्चा-कच्चा पत्तो भाति परिचित है। शालीन खेते परिधान और मृदुता की धनी इस महिला ने अपना पूरा जीवन ही समाज व राष्ट्र का समर्पित कर दिया है।

एक आदम शिक्षिका होन व नाते इनका सम्मान राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तो हुआ ही है कि तु इनकी मा यता है कि उन जन के हृदय म जो प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ है वही इनके लिए सबसे बडा पुरस्कार है। कई विषयो म निष्णात होने व साथ साथ सुभद्राजी अच्छी बनतु और लेखिका भी हैं। इनका परिवार मूल रूप स पजाबी है और जनताचाय थी वल्लभसूरीजी महाराज का भक्त रहा है पर इन्होंने विद्यावादी की स्थापना के माध ही अपना जीवन विद्यावादी महिला विद्यालय की पूणत समर्पित कर दिया। तब से ही सगण एक सहस्र छात्राओ वाली इस संस्था की समुची व्यवस्था मे ही सम्भालती हैं।

इनके व्यक्तित्व की सबसे बडी खूबी तो यह है कि पिछले 30 35 वर्षों मे हजारो छात्राएँ इस संस्था से शिक्षा लेकर निकली हैं पर आज भी उन छात्राओ तथा उनके परिवारों से भी उनका 'यकित्त सम्पक बना हुआ है और सभी को ये नाम सहित जानती हैं। इनके महान जादुओं और सेवामय जीवन से प्रभावित होकर दानदाता स्वय आगे आता हैं और विद्यावादी के विकास मे सहयोगी बनता हैं।

सुभद्रा यहिन विचारो स माधीवादी हैं तथा रचनात्मक प्रवृत्तियो म रचि लेती हैं। सर्वोच्च केन्द्र धीमल के संचालक मडल की वर्षों से सम्भ्या हैं। शोध क पढोती ग्रामो मे भी अध्यापिकाओं और छात्राओ की टोलो बनाकर ग्राम साक्षिा के बीच प्राय जाती रहती हैं और उहू विद्या समाज सुधार और 'यतन मुक्ति की प्रेरणा देती है। इनकी रू धारणा है कि महिला शिक्षा से ही परिवार समाज और राष्ट्र के जीवन को समुन्नत किया जा सकता है और भारतीय संस्कृति के अग्ररूप जीवन प्रवृथी की पुनरस्थापना की जा सकती है।



श्रीमती रतन के सोलंकी

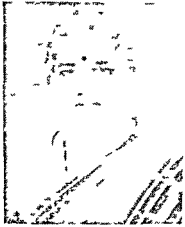


श्रीमती रतन के सोलंकी पासी जिले के रानी कव्हे की निवासी हैं। कम आयु म ही इन्होंने बम्बई मे क्यापार कर रहे अपने पति के सहयोग से सामा

जिक और राजनतिक क्षेत्र म प्रवेश कर अचन्द्रा नाम कमाया है।

श्रीमती रतन सोलंकी बम्बई (उत्तर पूव) डिस्ट्रिक्ट महिला कांग्रेस कमेटी की महामंत्री हैं और जन सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों मे क्वि के कारण जनहिताय अनेक अभियानो का नेतृत्व कर चुकी हैं। इनका विश्व यागदान निघन और अल्प आय वय के लोगो की समस्याओ को उजागर कर उहूँ निपटान मे रहा है। इहान कई नि शुल्क चिकित्सा शिकरो व परिवार कल्याण शिकरो का आयोजन किया है। अनेक सरकारी अड सरकारी एव धर सरकारी संस्थाओ स इनका जीवत सम्पक बना हुआ है। वतमान म य घाटकीपर (बम्बई) मारकाठी महिला मडल तथा रहवासी संगठन की अध्यक्ष हैं। इनक अलावा घाटकीपर भोपडपट्टी मडन एव उहू उद्योग महिला सघ की महामंत्री हैं।

श्रीमती मालकी न प्रौठ शिक्षा तथा जरूरतमद छात्र छात्राओ का नि मुह्य पाठय सामग्री उपलब्ध कराने म भी 'त्यन्त्र कीय काम किया ह। सामाजिक और राजनतिक क्षेत्र मे समान रूप स सक्रिय हान मे इहू मभी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है।



श्रीमती गुणवती भसाली

□

श्रीमती गुणवतीजी का जन्म ग्राम खीमेल के प्रतिष्ठित खजाची परिवार में हुआ। इनकी शिक्षा मध्यक वालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी में सम्पन्न हुई। पारिवारिक वातावरण और विद्यावाडी की शिक्षा वीक्षा ने इन्हें समाज सुधार के कार्यक्रम की ओर आकृष्ट किया और विवाहोपरांत भी वे ऐसे ही कार्या में रूचि लेती रही। पाली जिले में, विशेषकर गोडवाड के अधिकांश व्यापारी लोग बम्बई में रहते हैं अतः श्रीमती गुणवती बहिन ने बम्बई में एक संस्था 'श्रीसवाल मित्र मण्डल' नामक गठित की है।

श्रीमती भसाली इस संस्था की अध्यक्ष हैं और समाज सुधार के कार्यक्रमों में बड़ी रूचि लेती हैं। इस संस्था के माध्यम से सम्पन्न कार्य समाज के युवक युवतियों में भी समाज सुधार के विभिन्न कार्यक्रमों में रूचि जागृत की जाती है। जैसे फिलहाल इस संस्था के द्वारा विभिन्न वर्गों और रूचियों के युवक युवतियों को बिना दहेज व टीका दस्तूरी के विवाह मूल में बाधन हेतु प्रोत्साहित करना और सम्पन्न जुटाने का कार्य किया जा रहा है। इसके लिये यह संस्था निःशुल्क विनापन प्रकाशित करती है और सम्पन्न साधनों में सहयोग करती है। यह संस्था विधवाओं तथा विधुरों के विवाह को भी प्रोत्साहन देती है। इस तरह श्रीमती भसाली ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में एक प्राथमिकी अभियान छेड़ कर प्रगतिशील पहल की है।



सेठ रामकुमारजी बागड

□

यू.ता. पाली प्राचीन काल से ही व्यापार की प्रसिद्ध मण्डो रही है और अनेक प्रकार के छोटे-छोटे उद्योगों के लिए प्रसिद्ध रही है, पर उद्योगों में प्राथमिकी विकास की नींव डाली—डीडवाना के स्वर्गीय सेठ श्री मगनीरामजी बागड ने और बहुमुखी विकास किया—सेठ रामकुमारजी ने। बागड परिवार ने उम्र जमान में बड़े साहस का कार्य किया और पाली में एक बड़ा कपड़ा मिल खड़ी कर दी। इसी उद्योग के फलस्वरूप अनेक श्रमिकों ने नष्ट प्रायः हुए उद्योग और व्यापार को पुनः जीवनदान मिला और पाली शहर ही नहीं, पाली जिले के अथवा कई कस्बे नष्ट व्यापार की मण्डो बन गये। लाखों लोगों का रोजगार धारा मिलने लगा।

बागड परिवार जनहिताय कार्यों के लिए दश भर में प्रसिद्ध है। पाली नगर के आधुनिक विकास में इन सेठों का बहुत बड़ा योगदान है, जो इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। जनकल्याण और पाली नगर के विकास के लिये इनके सहयोग से निम्नांकित उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न हुए हैं—

- 1 बागड कॉलेज भवन
- 2 बागड उच्चस्तर माध्यमिक विद्यालय भवन
- 3 बागड अस्पताल भवन
- 4 बागड धर्मशाला
- 5 श्री बन्देश मन्दिर नाम मन्दिर
- 6 बागड स्टैडियम
- 7 बागड म्यूजियम

इन बड़े व महत्त्वपूर्ण कार्यों के अलावा इनके आर्थिक सहयोग में और भी अनेक कार्य सम्पन्न हुए हैं और चल रहे हैं। पाली जिले में बार-बार होने वाले प्राकृतिक प्रकोपी अथवा दान आदि के समय में भी इनके द्वारा पर्याप्त राहत सामग्री व आर्थिक सहयोग मिलता रहा है। वस्तुतः पाली शहर को आधुनिक विरासित स्वरूप प्राप्त करने में बागड परिवार का सर्वाधिक योगदान रहा है।

ओसवाल मित्र मंडल

सामाजिक कुरीतियां

दहेज, टीका पर्दा प्रथा, आडम्बर व निजूल लर्ची

के विरुद्ध हमारा अभियान

आप सभी से सहयोग हेतु निवेदन है

सम्पर्क सूत्र

श्रीमती गुणवती भसाली

कार्यालय

31 विमान नगर दाध

59 जाला मेजर चम्बर

पोस्ट-बम्बई-28

नरीमन पॉस्ट बम्बई-20

श्री प्रेमराजजी बाफना

श्री प्रेमराजजी बाफना पाली जिले के सादडी बस्त्र मे जन्मे एक उदीयमान उद्योगपति और समाज-सेवक हैं। युवा अवस्था मे ही इन्होंने समाज-सेवा की प्रेरणा से सादडी मे एक भव्य विद्यालय भवन का निर्माण कराया, जिसमे हजारों छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। बम्बई नगरी मे प्लास्टिक उद्योग मे ख्याति प्राप्त श्री बाफना दुनिया के अनेक विनवसित देशों की यात्रा कर चुके हैं।

बम्बई अस्पताल मे इन्होंने बहुत बड़ा धनराशि दान कर समाज का नाम रोशन किया है। श्री बाफना राजस्थान की अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और उनको सदैव हर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं।



श्रीमती रतन के सोलकी

श्रीमती रतन के सोलकी पानी जिले के रानो बस्त्रे की निवासी हैं। कम आयु मे ही इन्होंने बम्बई मे यापार कर रहे अपन पति क सहयोग से सामा

जिक और राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश कर अच्छा नाम कमाया है। श्रीमती रतन सोलकी बम्बई (उत्तर पूर्व) डिस्ट्रिक्ट महिला काग्रस कमेटी की महामंत्री हैं और जन सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों मे रुचि के कारण जनहिताथ अनेक अभियानों का नतुल्य कर चुकी हैं। इनका शिक्षण योगदान निघन और अल्प आय वय के लोगों की समस्याओं को उजागर कर उन्हें निपटान मे रहा है। इन्होंने कई नि शुल्क चिकित्सा शिवरो व परिवार कल्याण शिवरो का आयोजन किया है। अनेक सरकारी अड सरकारी एव गर सरकारी संस्थाओं से इनका जीवत सम्पक बना हुआ है। वर्तमान मे य घाटकोपर (बम्बई) मारवाडी महिला मडल तथा रहवासी संगठन की अध्यक्ष हैं। इनक अनावा घाटकोपर भोपलमट्टी मडल एव यह उद्योग महिला सघ की महामंत्री हैं।

श्रीमती सालकी ने प्रौढ शिक्षा तथा जरूरतमन्द छात्र छात्राओं का नि मुक्त पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने मे भी उत्सव नाय भय किया है। सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र मे समान रूप से साक्षरिण हान मे इन्हें मभी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है।



श्रीमती सुभद्रा जैन

हजारों हजारों छात्राओं व युवतियों के जीवन मे शिक्षा की ज्योति प्रज्वलित करने वाली समाज सुधार कथमो मे दण्टा पूर्वक आगे बन्ने वाली और

दुःखसमो मे लिप्त सैकड़ा परिवारों को शराब अफीम व नशीली चीज से मुक्ति दिलाने वाली इन समर्पित बिद्युपी महिला से क्षत्र का बच्चा-बच्चा भली भांति परिचित है। प्रालीन श्वेत परिधान और मूडुता की धनी इस महिला ने अपना पूरा जीवन ही समाज व राष्ट्र का समर्पित कर दिया है।

एक आदस शिक्षिका होने के नात इनका सम्मान राय और राष्ट्रीय स्तर पर तो हुआ ही है कि तु इनकी मा वता है कि जन जन के हृदय मे जो प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ है वही इनके लिए सबन बड़ा पुरस्कार है। कई विषयों मे निष्णात होने के साथ साथ सुभद्राजी अच्छी बबट्ट और लेखिका भी हैं। इनका परिवार मूल रूप से पञ्जाबी है और जनाचार्य श्री बल्लभसूरीजी महाराज का मत रहा है पर इन्होंने विद्यावाढी की स्थापना के माय ही अपना जीवन विद्यावाढी महिला विद्यालय को पूर्ण समर्पित कर दिया। तब से ही लगभग एक सहस्र छात्राओं वाली इस संस्था की समूची व्यवस्था ये ही सम्भालती हैं।

इनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खूबी तो यह है कि पिछले 30 35 वर्षों मे हजारों छात्राएं इस संस्था से शिक्षा लेकर निकली हैं पर आज भी उन छात्राओं तथा उनके परिजनो से भी उनका यत्किणत सम्पक बना हुआ है और सभी को ये नाम सहित जानती है। इनके महान आदर्शों और सेवामय जीवन से प्रभावित होकर दानदाता स्वयं आगे आता है और विद्यावाढी के विकास मे सहयोगी बनता है।

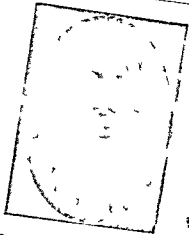
सुभद्रा बहिन विचारो से गांधीवादी है तथा रचनात्मक प्रवृत्तियो मे रुचि लेती हैं। सर्वोदय के द्र छोमिल के संचालक मडल की वर्षों से सम्भ्या हैं। क्षत्र के पढोती छात्रों मे भी अध्यापिकाओं और छात्राओं की टोली बनाकर राम रासिया के बीच प्राप्त जाती रहती है और उन्हीं जिन्सा समाज सुधार और समन मुक्ति को प्ररण देती है। इनकी द्ध वारणा है कि महिला शिक्षा से ही परिवार समाज और राष्ट्र के जीवन को समुन्नत किया जा सकता है और भारतीय सङ्घति क अक्षरप जीवन मूल््यों की पुनर्स्थापना की जा सकती है।



श्रीमती गुणवती भसाली

श्रीमती गुणवतीजी का जन्म ग्राम खीमेल के प्रतिष्ठित खजांची परिवार में हुआ। इनकी शिक्षा मध्यम कालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी में सम्पन्न हुई। पारिवारिक वातावरण और विद्यावाडी की शिक्षा वीक्षा ने इन्हें समाज सुधार के कार्यक्रम की ओर आकृष्ट किया और विद्यावाडी परात भी ये ऐसे ही कार्यों में रुचि लेती रही। पाली जिल में, विशेषकर गोडवाड के अधिकांश व्यापारी लोग बम्बई में रहते हैं अतः श्रीमती गुणवती बहिन ने बम्बई में एक सस्था बोसवाल मित्र मण्डल नामक गठित की है।

श्रीमती भसाली इस सस्था की अध्यक्ष हैं और समाज सुधार के कार्यक्रमों में बड़ी रुचि लेती हैं। इस सस्था के माध्यम से सम्पन्न कार्य समाज के युवक युवतियों में भी समाज सुधार के विभिन्न द्वारा विभिन्न वर्गों और रुचियों के युवक युवतियों को विना देहेज व टीका-दस्तूरी के विवाह मूल्य में बाधन हेतु प्रोत्साहित करना और सम्पन्न जुटाने का काम किया जा रहा है। इसके लिये यह सस्था निःशुल्क विद्यापन प्रकाशित करती है और सम्पन्न साधनों में सहयोग करती है। यह सस्था विद्यवाडी एवं विद्युरी के विवाह को भी प्रोत्साहन देती है। इस तरह श्रीमती भसाली ने सामाजिक सुधार में एक नए ज्ञातिवारी अभियान छत्र चर प्रवर्तनीय पहल की है।



सेठ रामकुमारजी बागड

यू.ता. पाली प्राचीन काल से ही व्यापार की प्रसिद्ध मण्डी रही है और अनेक प्रकार के छोटे-छोटे उद्योगों के लिए प्रसिद्ध रही है पर उद्योगों में नातिवारी के स्वर्गीय सेठ श्री मणजीरामजी बागड ने और चहुमुखी विकास किया—सेठ रामकुमारजी ने। बागड परिवार ने उस जमान में बड़े साहस का कार्य किया और पाली में एक बड़ा कपडा मिल खरीद कर दी। इसी उद्योग के फलस्वरूप पाली और पाली शहर ही नहीं पाली जिल के अन्य कई कस्बे कपडा व्यापार की मण्डी बन गये। लाखों लोगों की रोजगार प्रदाय मिलने लगी।

बागड परिवार जनहिताय कार्यों के लिए देश भर में प्रसिद्ध है। पाली नगर के आधुनिक विकास में इन सेठों का बहुत बड़ा योगदान है, जो इतिहास में स्मरणीय रहेगा। जनकल्याण और पाली नगर के विकास के लिये उनके सहयोग से निम्नांकित उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न हुए हैं—

- 1 बागड कलेज भवन
- 2 बागड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भवन
- 3 बागड अस्पताल भवन
- 4 बागड धर्मशाला
- 5 श्री वैजंठेग मन्वान का मन्दिर
- 6 बागड स्टेडियम
- 7 बागड म्यूजियम

उन बड़े महत्त्वपूर्ण कार्यों का अलावा 'नव आर्थिक सहयोग' में और भी अनेक कार्य सम्पन्न हुए हैं और चल रहे हैं। पाली जिले में बार बार हुए जाने प्राथमिक प्रयोग अनेक बागड मन्वा में भी 'नव' द्वारा पर्याप्त राहत सामग्री व आर्थिक सहयोग मिलना रहा है। यद्यपि पाली नगर की आधुनिक निर्माण स्वरूप प्राप्त करने में बागड परिवार का सर्वाधिक योगदान रहा है।

ओसवाल मित्र मडल

सामाजिक कुरीतियाँ दहेज, टीका पर्दा प्रथा, आडम्बर व िजूल खर्ची के विशुद्ध हमारा अभियान आप सभा से सहयोग हेतु निवेदन है

सम्पर्क मूल श्रीमती गुणवती भसाली 31 मित्र नगर दाया पोस्ट-बम्बई-28 कार्यालय 59 जाली नगर धर्मवत नरीमन पॉस्ट बम्बई-20

पेन्सिल मित्र

चार सेवा चरण 33

वेन मन्वर

एक समर गीत .

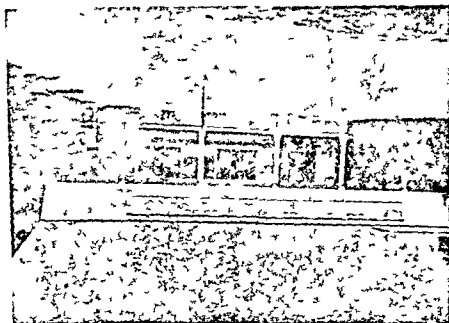
शुरू हुआ है जग हमारा, शुरू हुआ है जग ।
युद्ध करेंगे, युद्ध मरेगे, नर-नारी एक सग ॥
चलाव गोली, चलाव डडा, उढायेंगे अपना झण्डा,
रक्त हमारा नही है ठडा, बना है शावित रग ।
भारत को हम बचाने वाले, शोर जगत मे मचाने वाले,
अपनी शक्ति से मचाने वाले, अपनी शक्ति से नचाने वाले,
तोड दिये है सारे बन्धन, हमारे रक्त से रजित क्रन्दन, बाजे डोल मृदग ।
आज गगन मे जय की लाली, देश पुकार बडो मतवाली,
गर्जत गूजत है जय ताली ।
आखिर लाया रग, हमारा शुरू हुआ है जग ॥

भारत मा के चौर शहिदो के प्रति श्रद्धा सुमन !

शा. खेताजी धन्नाजी एण्ड कम्पनी

111/19, ठाकुरद्वारा रोड, बम्बई-400002

फोन 311106, 297955



श्री खेताजी धन्नाजी राजकीय मा-बालिक विद्यालय दादर



चार:

विकास रूप

- विकास-क्रान्ति के अग्रदूत
- प्राचीन वैभव, सांस्कृतिक सम्पदा, साहित्य-सृजन परम्परा
- विकास के सोपान



विकास चरण

- | | | |
|---|-------------------------------------|----|
| 1 | पाली जिले का प्राचीन बैंगन | 1 |
| 2 | पाली जिले का सांस्कृतिक सम्पदा | 5 |
| 3 | पाली जिले का साहित्य-संज्ञन परम्परा | 15 |
| 4 | पाली जिला विकास क सोपान | 18 |
| | • कृषि निबन्ध एव विद्युत्करण | |
| | • शिक्षा और साक्षरता | |
| | • चिकित्सा एव स्वास्थ्य | |
| | • उद्योग | |
| | महिलाएँ | |



पाली जिले का प्राचीन वैभव

इतिहास

पाली जिले की भरती प्रागैतिहासिक काल में उच्च सभ्यता एवं तप-साधना की भरती रही है। सोजत के समीप धनेरी गांव के पास खुदाई में उस काल के अनेक ऐसे अवशेष प्राप्त हुए हैं जो हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के समकालीन हैं, जिससे यहाँ बसी सभ्य बर्तिया का पता चलता है। इसी तरह की खुदाई व दौरान अनेक दुर्लभ वस्तुएं भी प्राप्त हुई हैं। बाली तहसील के ग्राम भाटूद, नाणा एवं बिजापुर क्षेत्र तथा नाडोल के निकट की गयी खुदाई स मध्ययुगीय काल के विद्यालय भवनों एवं मन्दिरों के खण्डहर प्राप्त होत हैं। इतिहासकारों का कहना है कि यह नगर कई बार बड़े राजाओं की राजधानी रहा और युद्धों में ध्वस्त होता रहा था।

पाली जिले के जैन-मन्दिर में प्राप्त विभिन्न शिलालेखों से इस क्षेत्र का इतिहास २००० वर्षों से भी प्राचीन होने के प्रमाण मिलते हैं। भूमभवेत्ताओं के अनुसार पश्चिमी राजस्थान का गोडवाड तक का भू भाग पश्चिमी समुद्र का ही एक हिस्सा था। बदनाल में महर्षि जाबाली और परशुराम ने इसी भूमि पर स्थापना की थी। कहते हैं, पाडवा ने बनवास के दौरान बाली और कूरणा (पाली) के निकट विश्राम किया था। कूरणा के निकट 'गरण' नामक पारव-मुटिया घाट भी विद्यमान बताई जाती है।

सन 669 में ह्वेनसांग नामक चीनी यात्री ने पाली के पचासवीं राज का वरण करते हुए अपने यात्रा तस्मरणों में लिखा है कि यहाँ नगर प्रमुख और मन्त्री दोनों मिलकर शासन चलाते थे। सातवीं सदी के परचात ही राजपूता की अनेक जातियां पाली जिले में आया और उन्होंने अपने राज्य स्थापित किये। महाराणा कुम्भा के शासनकाल में गोडवाड क्षेत्र मेवाड के अन्तर्गत आ गया था।

पाली के शासनकर्ता ब्राह्मणों के निमर्ण पर कन्नौज के राजा रावसिंह ने पाली क्षेत्र का राज्य सम्भाला परसन् 1330 के लगभग बादशाह नसीरुद्दीन के विरुद्ध घमासान युद्ध में बह वीरगति को प्राप्त हुए। सन 1681 में पाली क्षेत्र मारवाड राज्य का हिस्सा बन गया और यहाँ राठौड़ राजपूता का शासन स्थापित हो गया। कुम्भा स युद्ध करने के लिए तलाशान मारवाड के राजा ने पाली जिले का अधिकांश भाग जानीखरा को सौंप दिया।

पाला क्षेत्र में राठौड़ों के तरहवीं जातादी में घागमन का इतिहास पाली के निकट ग्राम बिड़ू में प्राप्त शिलालेखों से होता है। इन राजाओं में मालवेय बहुत प्रसिद्धानी हुए। उन्होंने मोतप

रायपुर, नाडोल आदि स्थानों पर मजबूत दुर्ग बना कर युद्धों से रक्षा के उपाय किये। फिर इस क्षेत्र पर औरंगजेब के पुत्र शहजादा अवदर ने पाली जिले के सोजत एवं नाडोल आदि स्थानों पर आक्रमण कर काफी बड़े भू भाग पर आधिपत्य कर लिया और नाडोल में ही अपने पिता के विरुद्ध अपने आपकी भारत का महाराज घोषित किया। फिर पेशवाओं के हमले हुए। उन्होंने राठौड़ों से कर-बसूली के लिये सोजत, जैतारण व रायपुर पर हमला कर टूट-खसोट की। तत्पश्चात 18५7 में स्वतन्त्रता आन्दोलन में आऊना की लड़ाई हुई जो जय प्रसिद्ध है। इस लड़ाई में आऊना आसोप अलनियावास, बन्नावास, लामिया बान्ता भीमालिया ह्यनगर मलूमर, लालानिया आदि गावा के ठाकुरा एवं वहाँ की जनता ने भी भाग लिया और अमृत वीरता का परिचय दिया। अंग्रेजों द्वारा इस विद्रोह को दबा देने के पश्चात् ठिक्काशा आऊना लामिया वाता भीमालिया बान्ता राजोडा सोनाई बुपाचता राणावास, सापानी सोनिया, सला, ननियास ठिकाना म आद्य स अधिक की जागीरें जत करती गईं।

प्रमुख नगर

पाली

प्राचीन ग्रंथों में पाली का नाम 'पालिका' पाया जाता है। प्राचीनकाल से ही यहाँ पर पालीवाल ब्राह्मणों का वचन रहा और एकदो वर्षों तक उनका शासन भी रहा। उस समय यह नगर एशिया की प्रसिद्ध व्यापारिक मण्डली की और की सभा मध्य एशिया के देशों से इनके व्यापारिक सम्बन्ध थे। पालीवाल ब्राह्मणों की प्रायना पर रावसिंहाजी ने इसे राठौड़ों की राजधानी बनवाया और सोते-धीर राठौड़ों के राज्य का विस्तार कर मारवाड राज्य का विस्तार किया। कुछ काल के लिए गुजरात के बुभारपाल नामक राजा का शासन भी पाली नगर पर रहा। नगर के तालाब की खुदाई के दौरान कई प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो नगर की प्राचीनता का उद्घोष कर रहे हैं। यहाँ के प्रसिद्ध मन्दिर जिनम मुय हैं—नवतला मन्दिर सोमनाथ मन्दिर, पातालेश्वर महादेव मन्दिर सोनगिरा चौहान की धनेरी आदि।

राष्ट्र का स्वतन्त्रता मिलन के पश्चात् ही इस नगर का पुनरोद्धार शुरू हुआ। नगर में जिला मुख्यालय स्थापित किया गया और आज यह प्रमुख उद्योग नगरी बन गई है जहाँ पाडव और मुपर पान्ठ बपटा का निर्माण, पान्ठ का काय हाथीदान का काय तथा धतन बनाने के कारखानों भी अस्मार है।



सोजत

पाली जिले का अति प्राचीन ऐतिहासिक नगर होने के साथ साथ सोजत व्यापार की अछ्छी मंडी भी है। प्राचीन प्रथा में सूकड़ी नदी के किनारे बसे इस शहर को ताम्रवती नाम से भी सम्बोधित किया गया है। वतमान सोजत नगर को राजा रिटमल ने बसाया था और यहाँ के जिले का निमाण राजा शूला ने करवाया था। प्रचलित विद्वन्ती के आधार पर राजा की बुलवती सजल व नाम पर इस नगर का नाम सोजत रखा गया। इस नगर म खेजल माता का मन्दिर, अन्ननगर महादेव का मन्दिर चतुपु जजा का मन्दिर लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर महालक्ष्मीजी का मन्दिर पाण्डनाथ भगवान का मन्दिर, चामुण्डा माता का मन्दिर एवं पीर मस्तान की दरगाह आदि अन्नन लोकतीय एवं दशनीय स्थल हैं।

मारवाड राज्य मे भी सोजत नगर का प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रहा था। यहा सन् १६०१ म हुनुमत की स्थापना के साथ-साथ रबपू और जुडिमिलत विभाग व कार्यालय भी रहे हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान मारवाड म क्रान्ति पंढा करने वाला यह प्रमुख स्थल रहा है जहा अन्नन स्वतंत्रता सनानिया न एक लम्बे अरसे तक राजाजी के जिन्ने सयप किया और जेल यातनाए सही।

आज भी सोजत औद्योगिक व 'यापारिक' दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण नगर माना जाता है। विश्व प्रसिद्ध चूने का निमर्ण यहाँ होता है। यहा की सेहदी भी अन्नक देशो म निर्यात की जाती है तथा प्रजवायन भी बहुत प्रसिद्ध है।

जैतारण

जैतारण नगर प्राचीन और ऐतिहासिक नगर है। यहा के जिले का निमर्ण मध्ययुगीन राठौर राजाआ द्वारा करवाया गया था। उसने पश्चात् राजा उदयसिंह ने निम्बाडा नामक नगर बसाया। इतना ही नहीं उसने अरसे नाम पर 'राजपूत' को उदात्त नामक शाखा भी स्थापित कर दी। निम्बाडा म चामुण्डा देवी का अति प्राचीन मन्दिर है जिसे राजा भोज न निमित्त करवाया था, ऐसा लोगो का विश्वास है। जैतारण म प्रसिद्ध जन भ्रानाय स्वर्गिय मिर्चीमलजी महाराज का समाधि-स्थल है जहा पर श्रद्धालु लोगो ने अन्नन रचनात्मक प्रवृत्तिया चला रती हैं।

पाली

भरवना श्रृंखला से निकरित छोटी-बड़ी अस्सभ्य जल पारसो बालिया से सुशोभित गोडवाड क्षेत्र का एक प्रमुख नगर बाली है। यह नगर पश्चिम रेलवे व अन्नन रिविजन के फालता

स्थान से आठ किमी० की दूरी पर और विश्व विख्यात् रागनपुर जल तीथ-स्थल से लगभग 25 किमी० की दूरा पर स्थित है। स० 1240 मे चौहान राजा सववती बालदेव ने युद्ध म विजयो पराजत इस नगर को राजधानी बनाकर स्वयं के नाम पर बाली नामकरण किया था। एक अन्न विद्वन्ती के अनुसार ठाकुर धनसिंहजी के हृदय महल की स्वामिनी देवामो (रेवारी) जाति की बाली नामक मुवासा ने योग्य ग्राम के महलो के पत्न्यभो से ठाकुर की रक्षा कर इस पुण्य भूमि को अरण्य स्थली बनाया था, अत उमके प्रेम और उदात्त योगदान को अक्षुण्ण बनाय रखने के उद्देश्य से स्थापित इस नगर का नाम बाली रखा गया।

एक कथा यह भी प्रचलित है कि पाण्डव जिन गिल्ली उषडा म लेला करते थे व आज भी यहाँ मौजूद हैं तथा भीम ने महाबल का अमर्यादी प्रमाण—धरती पर जोर से ताल मारने से बने गड्डे की बनी बावड़ी भी यहाँ मौजूद है। प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री, अनेक धरोरो की छतरियाँ मन्दिरों के सज्जदर समय पर सही मूल्यांकन और सुरक्षा के अभाव म काल कत्रवित हो गये। प्राचीन जन मन्दिर म उपलब्ध जि०स० 1200 के शिलालेख म भगवान की रथ-आना महोत्सव के निमित्त द्रुम (तत्कालीन सिमका) देने की राजाना अश्वित है। यह राजाना प्रति वर ४ द्रुम प्रति वष देने की अश्वित है। इसी प्रकार बाली नगर म नई शिवालय ह् ठाकुरजी एवं हनुमानजी के प्राचीन मन्दिर हैं याव के मध्य म बाराह माता के मन्दिर के समीप ही मस्जिद स्थित है। कृी तट पर स्थापित प्राचीन अकलजी के मन्दिर म भित्तिचित्र ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं।

बाली नगर और विस्तृत बालिया अन्न की सुरसाय नाडोल के राजा बालसिंह जी न विन्नम सवत 1608 म बाला नगर के समीप बहने बाली नदी के तट पर एज दुग (बिजा) की स्थापना की जिसे बाद म राजाआ ने समन-समय पर विस्तृत और सुदृढ किया। जिले म बाहुगए माता का प्राचीन मन्दिर है जिसकी उपासना नगर निवासी प्रतिषण चष वृष्णा सप्तमी को करत हैं। मले के साथ-साथ नगर-नत्य होता है।

बाली का बिला मामरिख दृष्टि से मबाड और मारवाड दोनों प्रदेशों के राजाआ के लिय बड़े महत्व का रहा है। मागवाड नोन परिसर के नेतृत्व म स्वराज्य इवु लिय गये सत्याग्रह के दौरान बाली के लोकप्रिय स्वतंत्रता-सैनानी स्वर्गिय छोटमलजी सुराणा और जोधपुर निवासी श्री रणछोडदासजी सट्टाना और दुगनराजजी चौपासनीवाल्ले इनी जिले म नजरबद रवे गये थ। प्राचीनबाल म सुरक्षा की दृष्टि से नगर व बारा और एक सुदृढ चार फाट कीनी दोबार बनी हुई है अन्नम पर, सता, सगली और



सेवाडी नामक चार द्वार बने हुए हैं। इसी दीवार के सहारे एक चौड़ी झोर गहरी खायी खुदी हुई थी। वाली नगर का निर्माण झोर झावासीय व्यवस्था प्राचीन होते हुए भी गणित ज्योतिष झोर स्वाध्यायकला के नियमों पर आधारित है। नगर में विमलपुरा झोर गांधी चौक स्थित दो जिनालय स्वाध्यायकला के उच्छ्रष्ट गमूने हैं, जो अपनी भव्यता एवं विशालता के लिए प्रसिद्ध हैं।

वाली के आधुनिक विकास में जैन-समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजकीय माध्यमिक शाला राजकीय उच्च प्राथमिक शाला, तीन राजकीय प्राथमिक शालाएँ, सात राजकीय वया प्राथमिक शालाएँ, एक चौपडा चिकित्सालय, श्रीमती हजाबाई भूरमलजी मधवी मातृ एवं शिशु-व्यायाम केंद्र (जाना अस्पताल), धा कातिलाल सावलच दजी पशु चिकित्सालय, श्री गौशाला एवम् अमरत्व तथा वैराग्य का भावना जगाने वाला भ्रमशान घाट आदि अनेक संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन में जन-सघ का योगदान रहा है। वाली में अनेक सरकारी कार्यालय भी हैं—पचायत समिति पुलिस उप अधीक्षक, तहसीलदार उप जिला मजिस्ट्रेट एवं दण्णायक, अमर जिला एवम् सत्र न्यायालय पुलिस थाना कनिष्ठ अभियन्ता जलप्रदाय योजना, कनिष्ठ अभियन्ता (विद्युत्), वन विभाग अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, वल विवास परि योजना, राजकाय आयुर्वेदिक औषधालय आदि।

फालना के औद्योगिकरण में वाली निवासियों का बहुमूल्य योगदान रहा है। वाली में चार कपास जिर्जिंग की मिलें हैं। यह नगर मुख्यतः तोह झोर चमड़े के सामान का उत्पादन व बिक्री केन्द्र है। वृषि उपज मण्डी का थाड बन गया है। गत पचास वर्षों से यहाँ नगरपालिका स्थापित है।

फालना

यदि कोई व्यक्ति 40 वर्षों के बाद फालना में प्रवेश करे तो उसक लिए यह विरकुल नहीं बुनियाद में प्रवेश होगा, जहा चाय की एक-दो छोटी दुकानें झोर एक आध किराने की दुकानों को छोड़कर रत्न स्तम्भ क भलावा सारा का सारा क्षेत्र बियावान जगल था, रोशनी का एक आध दिया टिमटिमाता नजर आता था, वहाँ आज का नजारा सचमुच ही आश्चर्य में डालने वाला है।

व्यापार की प्रमुख मण्डी के साथ-साथ ही कारखानों वाली एवं बड़ी उद्योग बस्ती विद्युत् केन्द्र कई सरकारी कार्यालय, एवं पॉलिथ एण्ड उच्च माध्यमिक विद्यालय कई निजी संस्थाएँ सख्तारी क्षेत्र व निजी क्षेत्र के कई अस्पताल, बीसियों छात्रावास, रोडवेज बस स्थान, जहाँ से राजस्थान के हर कोने में पहुँचने का सुविधा है नगर की साफ-सफाई झोर व्यवस्था के लिए नगर

पालिका का कार्यालय, अनेक बैंकों की शाखाएँ, दूरभाष-केंद्र सार एव पोस्ट आफिस, रेलवे डाक बगला तथा दूसरी अनेक सुविधाएँ। यह है आज का फालना।

साण्डेराव माग पर एक पुरानी हवाई पट्टी भी बनी हुयी है जहा पूज जोधपुर राज्य के प्रति शनिवार जोधपुर से डाक लेकर वायुयान उतरते थे। स्वर्गीय सागरमलजी चौपडा ने इन हवाई पट्टी की पुन निर्मित कर फालना को वायु-सेवा स जोडने की भरसक कोशिश की, पर अभी यह काय अधूरा ही है।

फालना के आधुनिक विकास की कहानी स्व० श्री सागरमल जी चौपडा के कमठ जीवन की कहानी है। करीब 40 साल पहले अपनी मातृभूमि के भ्रम स अभिसृत होकर चौपडाजी न बम्बई में चल रहे अपने उद्योग की फालना नामक इस सुनसान बस्ती में लगाने का प्रबंध किया। लोग उनसे निगाय पर हसते थ, पर धुन के धनी चौपडा जी बावजूद अनेक उतार-चढाव के अपने निश्चय पर अटल रहे। फालना आज देश की प्रमुख उद्योग-नगरी के रूप में पहचाना जाता है। यहा के कारखाना न छाटी कील से लेकर टी० बी० व डिस्क एटना तक के आधुनिक उपकरण तयार हो रहे हैं। यहा क उद्योग न ज्ञाता-उद्योग वृषि श्रोतार, दवाईयाँ इन्जेषन, टाइल्स मारवल टाइल्स फर्नीचर अनेक प्रकार क केमिकल्स, सीमंट पाल्पस आदि उद्योग प्रमुख हैं। यह विजली के साधान झोर भवन निर्माण सामग्री की बहुत बड़ी मण्डी है।

फालना क विकास की कहानी प्रारम्भ करते हैं तो स्वर्गीय साता हरिशचन्द्रजी मायुर का पुण्य-स्मरण बिय बिना नहीं रहा जाता। श्री हरिशचन्द्रजी मायुर इस क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य रहे हो या अन्य क्षेत्र से, उहूँने पूरे पाली जिले झोर विशेषकर फालना के विकास की झोर विशेष ध्यान दिया।

सधन वृषि योजना, जल प्रदाय योजना, उद्योग बस्ती, विजली घर, बका की स्थापना आदि सभी एक विकासशील नगर के लिए बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति उहूँने की देन है।

सादडी नगर

सादडी पाला जिले के प्राचीन नगर में से है। अरावली की तलहटी में, चारा झोर मदिवा से घिरा यह नगर प्राचीनकाल से ही धनी-मानी लोग की बस्ती क रूप में प्रसिद्ध रहा है।

इस नगर क आल-यास का क्षेत्र अत्यन्त ही उपजाऊ झोर सजल है। इसी कारण यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार क वृषि-उत्पाद के लिए प्रसिद्ध है। धान, कपास मेहूँ झोर पन्-मन्जी यहाँ की मुख्य पदावार हैं। सिंचाई का मुख्य साधन नुमा के धलावा सादडी बांध



है, जिन घात्र में करीब 200 वय पूव तत्कालीन जोधपुर महाराजा ने बनवाया था। इनके पास ही जोधपुर के पूव महाराजा का बगीचा भा है जो किसी जमाने में अरुन्धे में अरुन्धे घात्रों की विस्मा के निचे प्रसिद्ध था।

आसपास के छोटे गाँवा के लिए यह एक अरुन्धे व्यापारिक मण्डी है। यहाँ से राज्य पथ परिवहन निगम की बसों द्वारा हर स्थान पर आसानी से पहुँचा जा सकता है। पुराने जमाने में यहाँ एक हवाई पट्टी भी थी, जिसका उपयोग पूव महाराजा जोधपुर द्वारा 'म' लेंड का जिकार के लिए वायुयान में आन पर किया जाता था।

मादवी में अनेक प्राचीन दशनीय स्थान हैं जिनमें मुख्यतः जन व वण्य सचिदर है। एव देवी का मन्दिर ता अति प्राचीन बताया जाता है। ताराचदजी की बावडी नामक स्थान भी अत्यन्त प्राचीन एव दशनीय है। नगर की व्यवस्था हेतु नगरपालिका सेवारत है।

यह नगर धनपलिया और दानदाताओं की निवासस्थली के रूप में प्रसिद्ध रहा है। अभी भी सार विकास कार्य जन सहयोग से सम्पन्न हुए हैं। सन् 1996 में भयकर अकाल के समय यहाँ के सेंट थी स्पचन्त्री नागचदजी ने 16 मील दूरी पर मराम महादब लेंड का निर्माण करारर सन्डो नोगा को गहव पहुँचाई। सी परिवार दून एव अस्पताल भवन का निर्माण कराया

जो अब 'रेकरव अस्पताल बन चुका है। इन्हा के द्वारा एक पुम्बवालय भवन भी बनाया गया है। एसे ही जनकल्याणकारी बावों के फन्डरूप श्री रूपवद ताराचद को तत्कालीन मारवाड राज्य में 'सेठ' की पदवी के साथ-साथ 'मिरोपाव' में दे दिया था।

मादवी में शिक्षा के लिए राजकीय उच्च माध्यमिक एव ब्या माध्यमिक विद्यालय हैं। छात्र विद्यालय भवन श्री ज० सी० बोहरा (बोरसाई वाला) द्वारा तथा छात्रागों के लिए विद्यालय भवन का निर्माण श्री मागीलानजी धामुलालजी धनराजजी वदामिया व द्वारा कराया गया था। इसा प्रकार एक सुन्दर मिडिन स्कूल का निर्माण श्री प्रेमराजजी बापना एव उनके परिवार वाला ने करवाया है। इसा प्रकार महिला चिकित्सालय तथा लम्बीचदजी दीपचदजी राठीड ने बनवाकर जनता का भेंट किया। अभी-अभी एव सुन्दर आयुर्वेदिक शोधालय भवन का निर्माण भी श्री मागी लालजी वदामिया के सहयोग से सम्पन्न हुआ है। साथ ही म क्षेत्रीय बनपाल अधिकाारी का कार्यालय भी है जो अरावली पहाडी में वण्य जीव अभयारण्य तथा सुरक्षित बन क्षेत्र की देखभाल करना है। यहाँ एव पुनि स स्त्रेशन भा है। छात्र मी परन्तु उद्योग अरु है, परन्तु बडा उद्योग नहीं है। एक सरकारी इण्डिय फाम है। नगर की जनप्रमाण योजना के लिए धन से बाध बनवाया गया है। नगर-सार व टेलीफोन की समुचित व्यवस्था है। यहाँ से रेलवे स्टेशन फालता 26 मिन्टोमीटर दूर है।



यह सच है मीत हमको मिटा देगी एन दिन, लेकिन हमारा नाम मिटाया न जाएगा। जो आग इकलाव की लगाई है, उस आग को किमी से बुझाया नहीं जाएगा।।

पाली जिले के स्वतंत्रता सेनानियों को पुष्प-स्मृति में हमारे श्रद्धा-सुमन
मैसर्स संचेती अलंकार ज्वैलर्स

13, कावाराना बिल्डिंग, परेल, टो०टी०, बम्बई-12

मीठालाल, पारम, रमेश, प्रवीण एव मञ्जेता परिवार, निवामी खोड (पाली)



पाली जिले की सांस्कृतिक सम्पदा

(तीर्थ व पर्यटन स्थल आदि)

संस्कृति आत्मा की वस्तु है तो आर्यिय उत्कृष्ट की सीढ़ी और आत्मदर्शन का माग भी है। सम्यता है अपरा विद्या और संस्कृति है पराविद्या। सम्यता शरीर के मनोविकारों की चोतक है, जबकि संस्कृति आत्मा के अन्मुदय की प्रदर्शिका है। सम्यता का उत्थान मानव को भौतिकवाद की श्रार से जाता है जबकि संस्कृति मानव को अन्तमुखी करके उसके साहित्यिक गुणों को प्रवृत्त करती है। जिस सम्यता का आधार संस्कृति में नहीं वह सम्यता सम्यता नहीं। संस्कृति की आत्मा के बिना सम्यता का शरीर शव की भाँति निष्प्राण है। मुनिश्री विद्यानन्दजी ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'मिच्छी कमण्डलु' के पृष्ठ 166 पर बताया है कि संस्कृति समाज तथा 'यक्ति को सुधारती है और उज्ज्वलता प्रदान करती है। आत्म धर्म का जागरण संस्कृति के मंगल प्रभाव में होता है।

प्राचीनकाल से ही भारत देश सम्यता और संस्कृति का समग्र खड़ा है। यहाँ मानव संस्कृति के विविध प्रतीक विभिन्न कलाकृतियों के रूप में बलावारा की तुलिकाओं और लखनियों से सजित हुए हैं जो अनित्य भौतिक-समृद्धि पर चिरन्तन सौंदर्य का जयघोष करते हैं। भारत का गौरवशाली राजस्थान प्रदेश भी सांस्कृतिक सम्पदा समृद्ध खड़ा है। जैसलमेर राणकपुर आदि विचोड आदि कलात्मक मंदिर हुए तथा विभिन्न कलाकृतियाँ इसमें ज्वलन्त प्रमाण हैं। सुप्रसिद्ध अग्नेय कला विद् फगू सन ने इनको देखकर आश्चर्य व्यक्त होकर कहा था— ऐसी कलाकृतियों को 'मलादीन का चिराग भी निर्मित नहीं कर सकता।

राजस्थान का पाली जिला अनुपम सांस्कृतिक धर्म के लिए सुविख्यात है। यहाँ के मंदिर मठ, गुफाएँ भित्तिचित्र आदि इस प्रदेश के निवासियों की सांस्कृतिक मुहूर्ति को उद्भाषित करते हैं। प्रागे प्रस्तुत है सांस्कृतिक धर्म के कतिपय नेट्रो की सविस्तार भस्म

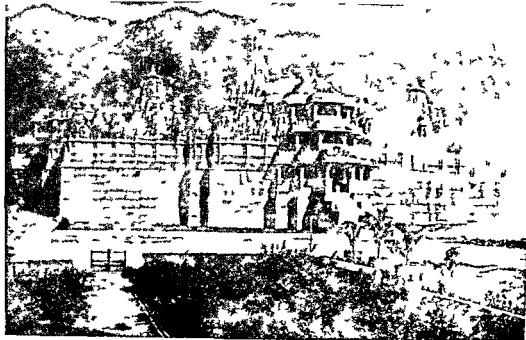
राणकपुर का आदिनाथ जिनालय →

प्रमुख तीर्थ व पर्यटन-स्थल

राणकपुर

पालना स्टेशन से 20 कि मी दूर तथा सादबी बस्के से 15 कि मी दूर दक्षिण-पूर्व दिशा की श्रावली पर्वत की उपत्यका स्थित त्रैलोक्य दीपक, नलिनगुल्म विमान के विहद से राणकपुर का चतुर्भुज श्री आदिनाथ जिनालय विश्वविख्यात है यह मंदिर भारतीय वास्तुकला का अनुपम नमूना है। इसके निराणा कुम्भा के मन्थीश्वर धरणाशाह ने नलिनो गुल्म विमान समान मंदिर बनवाने का स्वप्न सजोया था, जिसको भूत रूप मुण्डारा के सोमपुरा देया ने। इसका शिलान्यास वि० स० 143 म हुआ तथा विक्रम सं 1496 म इसकी प्रतिष्ठा आचार्य श्री सुंदर मुरीजी के वरकमलो द्वारा सम्पन्न हुई। इसमें 1444 100 नलात्मक तोरण और 24 सण्डप शोभायमान है। वरुणपत्र, नागपाश की अद्भुत कलाकृति, विविध वाद्ययंत्रा जजाती हुई अस्त्रराश्या की नृत्यमुद्राएँ दशकों को मनमुग्ध करती हैं। प्रसिद्ध शिल्प ममज्ञ फगू सन के अनुसार ऐसी सुंदर कलाकृति विश्व में अन्य नहीं है।

राणकपुर प्रकोण्ड से ही लगा एक विशाल सूर्यमंदिर कुम्भा ने बनवाया था। सूर्य के रथ के समान बना यह मंदिर





अत्यन्त आश्चर्य है। इस रथ को मूल में सहस्रों अश्व मीच रहते हैं। अथवा अत्यन्त मूल रथ का सयनाभिराम भी दृश्य मनमुग्ध कर देता है।

पूछाला महावीर

देवरी पंचायत समिति के अत्यन्त प्रायोगिक ग्राम में 5 वि.मी. दूर दक्षिण-पश्चिम अक्षर्य में कवतमाला में श्री पूछाला महावीर तीर्थस्थल है। इस मन्दिर का निर्माण वि.सं. 1010 में हुआ था। मन्दिर का शिल्प अत्यन्त सुन्दर है। यह महा ही गंगापीथ स्थल है।

नारलाई तीर्थ

गनी स्थान से 20 वि.मी. पूर्व में और देवरी से 6 वि.मी. उत्तर-पश्चिम में नारलाई ग्राम जल धीरे-धीरे बहने का समन्वय स्थल रहा है। यहाँ श्री आदिनाथ भगवान का प्राचीन मन्दिर वि.सं. 664 का है जिस श्री यजोभद्र मूर्तीजी धारण में मंत्र शक्ति से बल्लभी नगर (गुजरात) में जाये थे। तल्लभीपुर की आसियां शेषभदेव प्रामाद भवर गुफा आदि देखनीय हैं। यहूत है सगण अशोक के बीच राजा सम्प्रति में आदिनाथ का मन्दिर बनवाया था। यहाँ स्थित योगेश्वरी अथवा सता का साधना स्थल रहा है।

इसी मंत्र शक्ति द्वारा श्री तपस्वर शक्ति भी एक अन्य शिव मन्दिर नाम धार बहो स्थपित किया। ऊँचे पर्वत शिखर पर विशालकाय हाया गया है और नीचे गुफा में जैवल महादेव का प्राचीन मन्दिर है।

निम्बोरानाथ तीर्थ

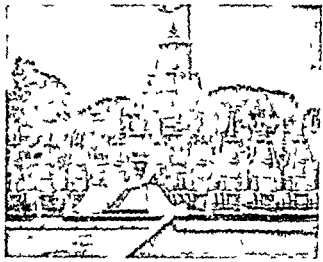
साण्डराव से 5 किलोमीटर दूर साण्डराव फालता की मुख्य सड़क पर श्री निम्बेश्वर महादेव का प्रसिद्ध तीर्थ फाम है। जनश्रुति के अनुसार यह तीर्थ पादवा न बनवाया था। इसका प्राचीन नाम हीरसिया अजनाथ था। यहाँ पर श्री नवदुर्गाजी का बसल्लारी मन्दिर है। गुणनाराथ नीम्बेश्वर महादेव के अथवा बमल्लार प्रवृत्त हैं। यह मन्दिर वनक सम्प्रदाय में साण्डराव की प्रधान गद्दी है। मन्दिर के दाहिनी ओर का बाकरी पाण्डुराज मुमिष्ठिर में बनकाई की, जो देखनीय है। बसल्लारी दुर्गिमा को यहाँ बना मत्ता भरता है। अमा अना यहाँ अथवा धमशा-राधा का निम्नान उदा है।

सुपमन्दिर, भाटूर

आरी महाना न भाटूर धाम में पञ्चमन निमित्त पाण्डव कालीन मूल मन्दिर है जो ताराव का पात्र पर बना है। यहाँ पाण्डव साण्डराव न अथवा न सत्व्या का भी।

राता महावीरजी

परावली पर्यटनमाला में स्थित राता महावीरजी (हस्तीमुखी तीर्थ) जवाहरबाघ बीजापुर स्थान (पश्चिम में 7 न पय) से 14 किलोमीटर दूर धाम में 3 वि.मी. की दूरी पर स्थित है। प्रसिद्ध इतिहासकार मुनि गानगुदरजी ने 'श्री सायनाथ भगवान की परम्परा का इतिहास (पूर्वार्ध)' में पृष्ठ 806 पर लिखा है कि वि.सं. 360 में श्री राता महावीरजी तीर्थ का निर्माण हुआ। प्राचाय श्री गिद्धगुनि के उपदेश में श्रेष्ठ योग का बीरान्त में श्री अष्टावार धाम बनवाया। चौबीस जगती का विमान नगर हस्तीमुखी से 1033 वि.सं. में रातोडा का राजधानी थी जो पञ्जाब लोग की बनी थी। यहां न महावीर धर्म के मूत्रनायक भगवान महावीर की जन्म रथ की प्रतिमा अत्यन्त उमगाय है। रथ-मन्त्र के सुन्दर की वारीयरी



राता महावीरजी

अत्यन्त सुन्दर है जिसकी सुलता रातापुर की वारीयरी से भी जा सकती है। यह मन्दिर दस क्षेत्र के आदिवासी भीला और गिरगिषिया का अष्टा-वन्द है। यहां प्रतिवर्ष वैश्व मुक्ता 10 को विशाल मत्ता भरता है। यहां उपवास अथवा अन्नाभक्षण सुरातत्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

गिरि रामपुर का कृष्ण मन्दिर

मनमा भक्त गिरामणि भीराबाई ने विवाह के बाद बारात न बापन जोटन गमय गिरि धाम में रावि विश्राम किया था। यहाँ धाम का न मीरा न श्वय अथवा हाया से कृष्ण की मूर्ति बनवाकर पूजा की थी। गिरि का वारमुजा का मन्दिर उम पावन प्रथम का स्मरण कराता है। वारमुजा (मवाठ) राज्या ओर गिरि की कृष्ण प्रतिमाएं एक जती है। इस मन्दिर के दर्शन करने पर भीराबाई के भजन की यह पति रणु पर मूल लक्षणी है—बना मीर नारा म नारायण।



परशुराम महादेव

सादडी नगर से 14 किलोमीटर पूर्व की ओर अरावली पर्वतमाला में परशुराम महादेव का गुफा-मंदिर स्थित है। प्रकृति की रमणीयता से घोषित इस तीर्थ का आकर्षण अलौकिक है। यह तीर्थधाम समुद्रतल से 3955 फीट ऊंचा है। पौराणिक मान्यता के अनुसार रामायणकालीन महर्षि परशुरामजी ने अपने फरस के आघात से पहाड़ को फोड़कर यह गुफा बनाया था। उहान इमी में प्राकृतिक शिवलिंग का पूजा कर भगवान शिव की प्रसन्न किया था। इस स्थल के आस पास का क्षेत्र राज्य सरकार ने वन्य जीव अभयारण्य घोषित किया है। यहां प्रति वर्ष थावण शुक्ला 6 व 7 को मेला लगता है।

परशुराम महादेव→



रिखी भाखरी, नाडोल

रानी स्थान से 11 मील दूर नाडोल ग्राम है। प्राचीनकाल में यह विद्यालय नगरी थी। इसमें प्राचीन नाम नन्दकुलवती नारदपुरी आदि मिलते हैं। यहां पर रिखी भाखरी (ऋषि पत्नी) है जहां मन्त्रा मुनियों ने तपस्याएं की हैं। पहाड़ों से घिरा एक ऋषि तालाब भी है। नाडोल में राजा भोज विद्यालय, गुफा भोरखनाथ एवं नारदमुनि के आने तथा तपस्या करने के प्रसंग मिलते हैं। यहां प्राचीनकाल में 999 मंदिर एवं 25 बावडिया थीं। यह शिव और शक्ति-पीठ का समग्र-स्थल रहा है।

महामुद गजनी और तुलुवुदीन ऐबक के हमला से यह मुंदर नगर लूटकर बर्बाद बन गया। यहां के स्थानीय स्थलों में महादेव मंदिर पदमप्रभु का मंदिर मूरजपोल, सोमेश्वर मंदिर, जेधपाल का स्थान आदि प्रसिद्ध हैं। इसको राजा जयनरपाल व मेवाड़ के राजाओं ने अपनी राजधानी बनाया था। प्राचीन नगरी जो अभी जूना खेडा के नाम से जानी जाती है वहां पुरातत्व विभाग मुदाई करवा रहा है। अरावलीबाई की समाधि भी धन एवं तीर्थ बन गया है। निवट के ग्राम डालोप में ब्रह्माजी का प्राचीन मंदिर है।

प्रसिद्ध इतिहासकार बर्नल टाड ने यहां की बावडियों की पूव प्रगसा की है। यहां स्थित धामापुरी माताजी का मंदिर दशनाथ

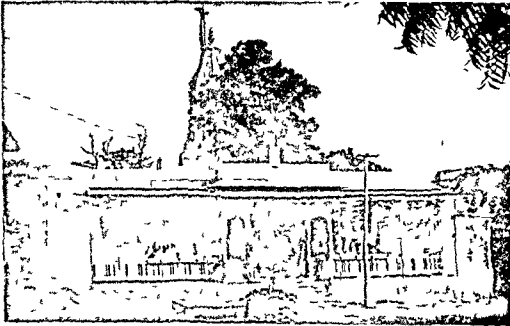
है, जहां विष्णु से 300 व लगभग गुफा देवमूर्ति की व श्रीमान देवमूर्ती ने शाकम्भरी नगरी में फले भयंकर मिरगी रोम निवारणार्थ लघु शक्ति स्तोत्र की रचना की थी। यह शक्तिरत्न की अद्भुत रचना है।

हिंगलाज माता, गुडालास

लाड विलियम वटिक के समय में धनी ग्राम में हिंगलाज माता की गुफा (मंदिर) के आसपास पिंडारिया ने मुह छिपाया था जिन्हें बर्नल स्टीमैन ने पुराजित किया था। यह मंदिर गुडालास की भाखरी धनी पर पिंडारिया द्वारा निर्मित किया गया है। हिंगलाज माता की मूर्ति गुफा के भीतर ऊपरी भाग में एक पाषाण-नगड में निर्मित की गई है। हिंगलाज का मूल स्थान विलोचिस्तान (पाकिस्तान) में हिंगाल नदी के पास है। शिव पुराण में वर्णित 52 शक्ति-पीठों में सर्वप्रथम स्थान हिंगलाज माता का है।

गोरमघाटी

पुलादे के पाग गोरमघाटी तथा नारनार्दी—नाडाल धाम में गोरम मंत्रिया एवं धूम्रिया हैं। य मठ नाथपंथी माधुषा की धाम्या रिम्व साधना की बचाएँ मरते हैं।



जवालीश्वर महादेव

जवाली ग्राम में जवालीश्वर महादेव का अति प्राचीन मंदिर शोभायमान है। जनश्रुति के अनुसार जवाली ऋषि ने जवालीश्वर (जवाली) में उद ऋचाओं की रचना की थी। इसने पास हवनकुण्ड है। मंदिर में पड़े एक प्राचीन नदी पर वि.सं. 1102 उल्लेख है। यहाँ प्रत्येक चैत्र वदी-सातमी की बहुत बड़ा मला भरता है तथा प्रति सोमवार भक्तों की भीड़ रहती है।

← जवालीश्वर महादेव

कोरटा के जन मन्दिर

जवाइवाप स्टेशन से 10 कि.मी. दूर कोरटा ग्राम प्राचीन काल में एक विशाल उपर था। श्री रत्नप्रभमूर्तियों के बीच निवास में 70 में श्री महावीर जिनालय की प्रतिष्ठा करवाया थी। श्री गान विमलमूर्ति ने इस मंदिर की प्रशंसा की लिखा है—'बौद्ध जीवितस्वामी वीर अथाह कोरटा में भगवान महावीर का जीवन-काल में ही मंदिर की स्थापना हुई थी। विभिन्न इतिहासों के प्रमाणों से यह मंदिर 3500 वर्ष पुराना सिद्ध होता है। यह मंदिर स्वायत्त-नला की दृष्टि से अत्यन्त भव्य है जो प्राचीन भारत की वास्तुशिल्प की गौरव गाथा कहता है। निरुद्ध व गाव वासनरा का मूल मंदिर भी दशतीर्थ है।

सालेश्वर महादेव

पार्ली के निरुद्ध गुवा प्रतापनिहू ग्राम की पहाड़ी गुफा में स्थित सालेश्वर महादेव तीर्थघाम पौराणिककाल से सम्बन्धित है। परमुद्राम के पिता महर्षि जम्भविन ने इस स्वान पर तपस्या की थी तभी विद्यवती है। महा स्थित भीमगाडा पाठवा के वनवागवान की मात विजता है। महा की प्राकृतिक शोभा रमणीय है।

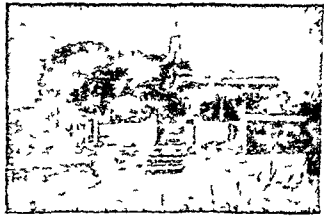
चोटीलापोर

पारला में जोधपुर का छोटा रत्न पथ पर स्थित कर्ना मन्त्र का नाम एक भाव दूर वागीला राम में मुम्बिन घमावतमिया का तीर्थस्थान माना जा रहा है जहाँ प्रतिपत्ती पीपावता का हूबर लिन मला कर्ना है। हिन्दू दर्शनार्थी का पर्याय सग्या में यहाँ ग्राम है। यह पार वागा अग्रगण्यज्ञान में वाली व्यापाराय प्रायः 10 म

रवान पर दस्तुओं में मुठभट में व काम प्राय और वस तीर्थस्थान की स्थापना हुयी।

आसन भूलेलाव का मंदिर

रायपुर में नाथ संप्रदाय का बहुत बड़ा तीर्थ आसन भूलेलाव (रायपुर) बगडी बलागिया के पास अरावली के अचल में अवस्थित है। क्या प्रचलित है कि मवाट के महाराजा राममल व लघु अज्ञात पानमिहू ने बराय न लिया था वे ही दूसरे प्रथम मठाधीश थे। विग्रह सं 1444 का एक तांत्रिक जो उदयपुर महाराजा का द्वारा दिया गया था में इसका प्रमाण मिलता है। इस आसन व अथीन 9909 बीघा भूमि एवं 210 ग्राम थे। आसन भूलेलाव का मंदिर द्वार में भद्ररावतजी ने बनवाया था।



पूतेश्वर महादेव का मंदिर



भकरमण्डी माता का मंदिर

इसे मकरमणी का मठ (भ्रासन) भी कहा जाता है। यह नीमाज के पास अति प्राचीन स्थल है। खुदाई में यहाँ अनेक प्राचीन दुर्लभ मूर्तियाँ—गणेशजी, महादेवजी, नारदजी, सरस्वती, कुबेर आदि की प्राप्ति हुई है।



नीमाज मंदिर की सरस्वती प्रतिमा

बिराटिया रामदेवजी

पश्चिमी रेल पथ के बर स्टेशन से 5 कि मी दूर बिराटिया ग्राम के नदी तट पर रामदेवजी का विशाल तिमजिला मन्दिर स्थित है। प्रतिवर्ष हजारों तीर्थयात्री यहाँ दर्शनार्थ आते हैं।

नाणा का जन मंदिर

पश्चिमी रेल पथ पर स्थित नाणा ग्जान से लगभग 40 मील दूर नाणा ग्राम में भगवान महावीर का 2500 वर्ष प्राचीन जिनानय स्थित है। यह मन्दिर भी जीवित स्वामी के रूप में सुविख्यात है। इस मूर्ति की कलात्मकता द्रव्यत हा बनती है। मूर्ति का परित्र लोहरण एवं नक्काशानुसृत है। स्थापत्य कला की एमी भव्यता अत्यंत लुभ है। अनेक शिलालया पर वि० सं० 1107

1200 1203 आदि अंकित है। स्तम्भभुक्त गोखले की आठतिया इतनी भव्य है कि सजीव मानूम होती है।

आऊवा का कामेश्वर मंदिर

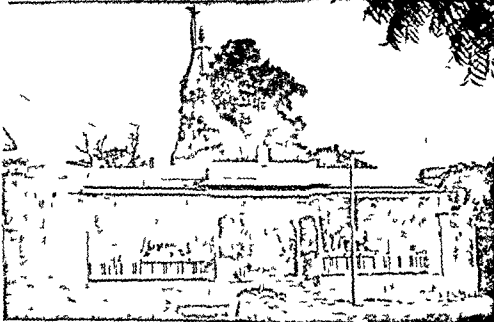
यह 9वीं शताब्दी का प्राचीन मंदिर है और चारण समाज का आराधना स्थल है। कहते हैं यहाँ 16वीं शताब्दी में जोधपुर के राजा से विद्रोह कर 11,000 चारणों ने अपन मुखिया श्री अक्खाजी के नेतृत्व में बलिदान किया था।

चामुण्डा मंदिर

नीमाज कस्बे के निचट जंगल में मगल की तरह चामुण्डा माता का प्राचीन मंदिर राजा भाज द्वारा बनवाया गया था जो पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मन्दिर के भग्नावशेष प्राचीन भारत के शिल्प की मान कथा बहते हैं। लाल पत्थर पर बारीक बारीकरी व दीवारा पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ तत्कालीन स्थापत्य कला की जीती-जागती तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। चामुण्डा माता के अनेक चमत्कारों की कथाएँ भी प्रचलित हैं।



नीमाज की एक छद्म कलापूर्ण प्रतिमा



जवालीश्वर महादेव

जवाली ग्राम में जवालाश्वर महादेव का प्रति प्राचीन मंदिर प्रोभायमान है। जनश्रुति के अनुसार जवाली ऋषि ने जवालीश्वर (जवाली) में बड़े श्रद्धाघोषों की रचना की थी। इसने पास हवनकुण्ड है। मन्दिर में एक एक प्राचीन नदी पर वि.स. 1102 उत्कीर्ण है। यहाँ प्रत्येक चतुर्दशी-सप्तमी की बहुत बड़ा मना करता है तथा प्रति मास चार नक्षत्रों की भीड़ रहती है।

← जवालीश्वर महादेव

कोरटा के जन मंदिर

जवालाश्वर स्तूपन से 10 कि.मी. दूर कोरटा ग्राम प्राचीन काल में एक विस्तार भवन था। श्री रत्नप्रभुश्रीजा ने वीर निर्माण से 70 म. श्री महावीर जिनालय की प्रतिष्ठा करवायी थी। श्री ज्ञान विमलमूर्ति ने 'स मंदिर की प्रशस्ति' में लिखा है— बार्हट जीवितस्वामी वीर शर्मान् कोरटा में भगवान महावीर की जीवन वान में ही मंदिर का स्थापना हुई था। विभिन्न इतिहासों के प्रमाणों में यह मंदिर 3500 वर्ष पुराना सिद्ध होता है। यह मंदिर स्थापन-काल की दृष्टि में अत्यन्त भव्य है जो प्राचीन भारत की वास्तुकला का शौर्य गाथा बनता है। निम्न में भाव बामनेरा या सूर्य मंदिर की दशनीय है।

सातेश्वर महादेव

पाली के निम्न श्रद्धा प्रतापसिद्ध ग्राम की पहाड़ी गुफा में स्थित सातेश्वर महादेव तीर्थस्थान पौराणिककाल से सम्प्रचित है। परशुराम के पिता महर्षि अश्वत्थि ने इस स्थान पर तपस्या की थी ऐसी श्रद्धा है। महा स्थित भीमनाथ पाठकों के वनवासकाल की याद दिवता है। यहाँ की प्राकृतिक गामा रमणीय है।

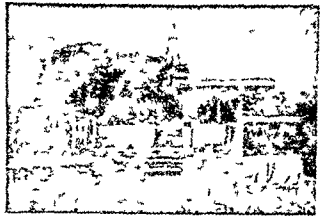
चोटीसापीर

पाली में जोधपुर की ओर रत्न पथ पर स्थित करना मन्त्रजन व पाम एक भाव दूर चाटोला ग्राम में मन्त्रिण धनजलमित्रों का तीर्थस्थान चोटीसा पीर है जहाँ प्रतिवर्ष दीपावली में दहन दिन मना करता है। शिष्ट श्रद्धाओं का पर्वकाल में यहाँ श्रावण है। यह पीर बाबा अकबानिस्तान में पाली व्यापाराथ साथ है।

स्थान पर वस्तुश्रद्धा से मुठभेद में व नाम श्रावण और इस तीर्थस्थान की स्थापना हुयी।

आमन श्रुतिलाय का मंदिर

रायपुर में नाथ संप्रदाय का बहुत बड़ा तीर्थ स्थान भूललाय (रायपुर) जगदी बलानिया के पास अरावली के आचल में अवस्थित है। यथा प्रचलित है कि मेवाड़ के महाराजा रायमल के लघु भ्राता धामसिंह ने बरगमन किया था वे ही इसने प्रथम मठाधीश थे। विषय में 1444 का एक तांत्रिक जा उदयपुर महाराजा के द्वारा दिया गया था मन्त्रका प्रमाण मिलता है। इस स्थान के अधीन 9909 बीघा भूमि एवं 210 ग्राम थे। आमन श्रुतिलाय का मंदिर द्वापर में भद्ररावन्त्री ने बनवाया था।



धूलेश्वर महादेव का मंदिर



मकरमण्डी माता का मंदिर

इसे मकरमण्डी का मठ (आसन) भी कहा जाता है। यह नीमाज के पास अति प्राचीन स्थल है। खुदाई से यहाँ अनेक प्राचीन दुसम मूर्तियाँ—गणेशजी, महादेवजी, नारदजी, सरस्वती, कुबेर आदि की प्राप्ति हुई है।



नीमाज मंदिर की सरस्वती प्रतिमा

बिराटियाँ रामदेवजी

पश्चिमी रेल पथ के दर स्टेशन से 5 कि मी दूर बिराटिया ग्राम के नदी तट पर रामदेवजी का विशाल तिमजिता मंदिर स्थित है। प्रतिवर्ष हजारों तीर्थयात्री यहाँ दर्शनार्थ आते हैं।

नागा का जन मंदिर

पश्चिमी रेल पथ पर स्थित नागा स्टेशन से लगभग उध मील दूर नागा ग्राम में भगवान महावीर का 2500 वर्ष प्राचीन जिनालय स्थित है। यह मन्दिर भी जीवित स्वामी के रूप में सुविख्यात है। इस मूर्ति की कलात्मकता देखत ही बनती है। मूर्ति का परिवार तोरण एक नवकाशीयुक्त है। स्थापत्य कला की एसा भव्यता अद्यत दुलभ है। इनक शिलालेखों पर वि० न० 1107

1200, 1203 आदि अंकित है। स्तम्भयुक्त गोखले की आडुतिमा इतनी भव्य है कि सजीव भावूम होती है।

आऊवा का कामेश्वर मंदिर

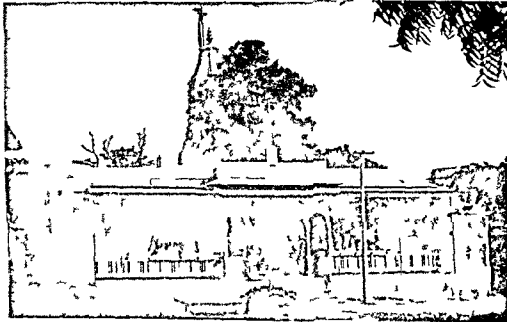
यह 9वीं शताब्दी का प्राचीन मंदिर है और चारण समाज का आराधना स्थल है। कहते हैं, यहाँ 16वीं शताब्दी में जोधपुर के राजा से विद्रोह कर 11,000 चारणों ने अपने मुखिया श्री अक्खाजी के नेतृत्व में बलिदान किया था।

चामुण्डा मंदिर

नीमाज कस्ब के निकट जंगल में भगल की तरह चामुण्डा माता का प्राचीन मन्दिर राजा भोज द्वारा बनवाया गया था जो पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मंदिर के भग्नावशेष प्राचीन भारत के शिल्प की मीन कथा कहते हैं। लाल पत्थर पर वारीक कारीगरी व दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ तत्कालीन स्थापत्य कला की जीता जागती तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। चामुण्डा माता के अनेक चमत्कारों की कथाएँ भी प्रचलित हैं।



नीमाज की एक प्राय कलात्मक प्रतिमा



जवालेश्वर महादेव

जवाली ग्राम में जवालीश्वर महादेव का अति प्राचीन मंदिर शोभायमान है। जनश्रुति के अनुसार जवाली ऋषि ने जवालीश्वर (जवाली) भू देव ऋचाओं की रचना की थी। इसके पास हवनचूड़ है। मंदिर में एक प्राचीन नदी पर वि.स. 1102 उल्लेख है। यहाँ प्रत्येक चतुर्थी-सप्तमी को बहुत बड़ा मेला भरता है तथा प्रति सोमवार भक्तों की भीड़ रहती है।

← जवालेश्वर महादेव

कोरटा के जैन मन्दिर

जवाहरवाष स्टेशन से 10 कि.मी. दूर कोरटा ग्राम प्राचीन काल में एक विशाल नगर था। श्री रत्नप्रभुमूर्तीजी ने वीर निर्वाण में 70 म. श्री महावीर जिनारज की प्रतिष्ठा करवायी थी। श्री ज्ञान विमलसूरि ने इस मंदिर की प्राप्ति म लिखा है—कोरटा जीवितस्वामी वीर अर्थात् कोरटा में भगवान महावीर का जीवन काल में ही मंदिर की स्थापना हुई थी। विभिन्न इतिहासों के प्रमाणों से यह मन्दिर 3500 वर्ष पुराना सिद्ध होता है। यह मंदिर स्थापत्य-कला की दृष्टि से अत्यन्त भव्य है जो प्राचीन भारत की वास्तुकला की गौरव गाथा कहता है। निकट में गांधी वामनरा का मूप मन्दिर भी दृशनीय है।

सालेश्वर महादेव

पाली के निकट गुवा प्रतापनिहू ग्राम की पहाड़ी श्रृंखला में स्थित सालेश्वर महादेव तीर्थधाम पौराणिककाल से सम्बन्धित है। परशुराम ने पिता महर्षि जमदग्नि ने इस स्थान पर तपस्या की थी अग्नी विवदती है। यहाँ स्थित भीमपाता पाखवा के जनवासनाल की शान्ति है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा रमणीय है।

चोटोलापीर

पाला में जोधपुर की ओर 27 फुट पर स्थित केरना स्थान के पास एक माल दूर चाटीला ग्राम में मुनिनम अमावलम्बिया का तीर्थस्थान चाटीला पाठ है जहाँ प्रतिवर्ष दीपावली के दूसरे दिन मेला लगता है। हिंदू दशनाथों को पर्याप्त संख्या में यहाँ आते हैं। यह पारयात्रा अर्चनास्थान में पारना स्थापना का शायद ही एक

स्थान पर दस्युघ्ना से मुठभड़क में नाम शायद ही इस तीर्थस्थल की स्थापना हुयी।

आसन झलेलाव का मंदिर

रायपुर में नाथ संप्रदाय का बहुत बड़ा तीर्थ आसन भूतलाल (रायपुर) बगडी कलानिया के पास अरावली के अचल में अवस्थित है। यहाँ प्रचलित है कि मेवाड़ के महाराजा रामनर के लघु भ्राता आनसिंह ने वरायल ल लिया था वे ही इसमें प्रथम गठाधीन थे। विघ्न से 1444 का एक साम्रण जो उदयपुर महाराणा के द्वारा दिया गया था में इसका प्रमाण मिलता है। इस आसन के अधीन 9909 बीघा भूमि एवं 210 ग्राम थे। आसन भूनेनाव का मंदिर द्वार में भद्ररावलजी ने बनवाया था।



धूलेश्वर महादेव का मंदिर



मकरमण्डी माता का मंदिर

इसे मकरमण्डी का मठ (आसन) भी कहा जाता है। यह नीमाज के पास अति प्राचीन स्थल है। खुदाई से यहाँ अनेक प्राचीन तुलभ मूर्तियाँ—गणेशजी, महादेवजी, नारदजी, सरस्वती, कुबेर आदि की प्राप्त हुई हैं।



नीमाज मंदिर की सरस्वती प्रतिमा

बिराटिया रामदेवजी

पश्चिमी रेल पथ के बर स्टेशन से 5 कि.मी. दूर बिराटिया ग्राम के नदी तट पर रामदेवजी का विद्याल तिमजिला मंदिर स्थित है। प्रतिवर्ष हजारों तीर्थयात्री यहाँ वसनाथ आते हैं।

नाणा का जन मंदिर

पश्चिमी रेल पथ पर स्थित नाणा स्टेशन से लगभग 80 मील दूर नाणा ग्राम में भगवान महावार का 2500 वर्ष प्राचीन जिनालय स्थित है। यह मंदिर भी जीवित स्वामी के रूप में सुविख्यात है। इस मूर्ति का बलात्मकता देवता ही बनती है। मूर्ति का परिचर चारण एवं नक्काशीयुक्त है। स्थापत्य कला की एमी भव्यता अत्यंत तुलभ है। ग्राम मिलालमा पर वि. सं. 1107

वन्दे मातरम्

1200 1203 आदि अंकित है। स्तम्भयुक्त गोपन की इतनी भव्य है कि सजीव मान्य होती है।

आऊवा का कामेश्वर मंदिर

यह 9वीं शताब्दी का प्राचीन मंदिर है और चारण का आराधना स्थल है। कहते हैं, यहाँ 16वीं शताब्दी में के राजा से विद्रोह कर 11,000 चारणों ने अपने मुखिया श्री अक्लाजी के नेतृत्व में बलिदान किया था।

चामुण्डा मंदिर

नीमाज कस्बे के निचट जयल में मंगल की तरह चामुण्डा माता का प्राचीन मंदिर राजा भोज द्वारा बनवाया गया था जो पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। मंदिर के भग्नावशेष प्राचीन भारत के शिल्प की मान कथा कहते हैं। लाल पत्थर पर बारीक वाणिज्य के शीकर पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ तत्कालीन स्थापत्य कला की जाती-जागती तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। चामुण्डा माता के अनेक चमत्कारों की वधाएँ भी पवसित हैं।

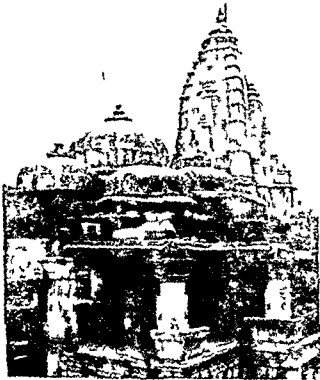


नीमाज की एक श्रृंखला



पाली नगर के मन्दिर

पाली नगर के मध्य में स्थित सोमनाथ मन्दिर मिल्पवला एवम् अपना ऐतिहासिक गृष्ट मूर्ति के लिये विख्यात है। इसका निर्माण गुजरात के राजा कुमारपाल सोलबी ने विक्रम सं 1209 में करवाया था। यहाँ की सौम्यता सं मन प्रसन्न हो जाता है। मासपुर की पहाड़ी पर बप्याव जल व मुनिम धर्मों के तापस्वला साम्प दायिक एका के अद्भुत प्रतीक हैं। पाली शहर में नौनसा नामक विख्यात जन मन्दिर है। पाली शहर के मध्य भानमठी में सीतोयरी का छतरो है।



सोमनाथ मन्दिर पाली

पेरवा की विद्यादेवी

बाला क निकट घाट विज्ञोमीटर दूर जवाई वाघ रेल्व स्ेशन के बस मार्ग पर 2000 वर्ष प्राचीन बजातवक प्रतिमा विद्यमान है। इस पर विक्रम सं 1251 अंकित है। इस वर्ष मन्दिर के जीर्णोद्धार के पश्चात् इस प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया गया था। विद्यादेवी की प्रतिमा गुम्बर परिवर में उत्कीर्ण है। परिवर में 16 विद्यादेवियों की लघु प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। मुन्दर हृम पर मोहित विद्याम्बी के बराम पुनक बाणा पुण्यमात्मा धादि का ज्यन्त घाजतिमा नवनाश्रिगम है। मना धाम्मत् गिप धाम्मलवाडा जन मन्दिर

के समान मध्य है। जनश्रुति के अनुसार यहाँ पर बलिवात सर्वज्ञ हमबद्राधाय ने सावना का थी।

पातालेश्वर

घाटवी घाटाब्दा में निर्मित यह मन्दिर पाली बसने के पूर्व का है। इस मन्दिर के बार में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि क्षत्राणियाँ अपने पति के स्वर्ग सिंघारने के बाद इस मन्दिर के शिव लिंग से क्षत्रीय पाकर सती होती थीं। इस मन्दिर के पासपास बनी सतियों की छतरियाँ आज भी इस तथ्य का प्रमाण दे रही हैं।

श्री शांतिनाथ जिनालय, साडेराल

इस जिनालय के निर्माता थे—पाण्डवा के बसधर राजाधिराज पधवसन। मन्दिर के एक प्राचीन परिवर पर विस 1115 का लख उत्कीर्ण है। एक खण्डित बाउससगिया पर विस 1236 अंकित है। साडेराल गच्छीय धावाम श्री यमोमद्रपुरीकी की मूर्ति पर विस 1197 का लख है। मन्दिर की प्राचीन मिल्प-श्रुति में



विद्यादेवी (पेरवा) का प्रतिमा



एक नवकाशीयुक्त ध्यानस्थ भगवान की प्रतिमा है। गूढ-भङ्ग की रचना भव्य है। भगवान शान्तिनाथ के तीनों श्रौर नवकाशीयुक्त तोरण हैं जिनकी अद्भुत शिल्पकला दशनीय है। मन्दिर के चोख में 4-5 छोट-छोटे गडड हैं जिनमें वर्षा का पानी बहकर न जाने कहा जाता है इसका आज तक पता नहीं लगा। ऐसी स्थापत्य कला अन्यत्र दुर्लभ है। यह मन्दिर भूमि से छह फुट नाचे निर्मित है।

बरकाणा तीर्थ

यह गोडवाड की पञ्चतीर्थों का प्रमुख स्थान है श्रौर भगवान पाश्वनाथ का प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिर में जैन शास्त्रानुसार नदीश्वर द्वीप शत्रुञ्जय, गिरनार आदि तीर्थों के भित्तिचित्र हैं। यहां की शिक्षण संस्थाएँ भी दशनीय स्थल बन गई हैं।



श्री पाश्वनाथ बरकाणा तीर्थ

साडेराव के मन्दिर

साडेराव मण्ड्य के प्रवक्त यशोधरमूर्ती की साधना-स्थली होने के कारण प्राचीनकाल में यह नगर प्रसिद्ध हुआ। यहाँ भगवान महावीर का प्राचीन मन्दिर है। साडेराव के तालाब के बिनारे एक अति प्राचीन चतुर्वरत है जिसके सभे प्राचीन शिल्पकला के नमूने हैं।

सेवाडो के मन्दिर

सेवाडो ग्राम भी प्राचीनकाल में बड़ा ही समृद्धिवासी रहा है। यहाँ भी 10वा सदी का प्राचीन जैन मन्दिर है। एक पुराना दोहा है— सेवाडो तो बावडो ऊण्डी जनन बाव मासी पीपर पारण हूच मखल पार। यहाँ ग्राम-नाम मत्तवाजा ठाय है जहाँ यात्रानुमा का भीड रहता है।

हर हर गंगा

रातामहावीरजी (हस्तीकण्ठी तीर्थ) से दो माल दूर प्ररावली की उपत्यका में स्थित हर हर गंगा तीर्थ का सम्बन्ध पौराणिक काल से है। यहां पर गौमुख से गंगाधारा प्रवाहित होती है। यहाँ का शिवालय सुप्रसिद्ध है। समीप नदी बहती है जो गंगा का नाम से लोकप्रिय है। यह स्थल हरद्वार का स्मरण दिलाता है।

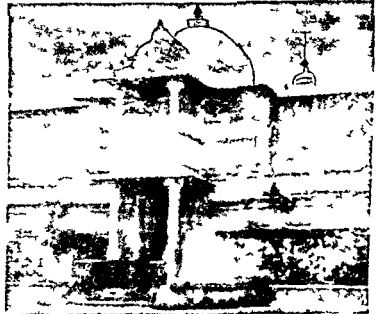
रामदेवरा, डालाप

देगुरी तहसील के ग्राम डालोप में बाबा रामसापीर की विष्णुपत्नी धूनी है जो राजस्थान गुजरात व मालवा के मेषवालो का पूजनीय स्थान है। प्रतिवर्ष मला भरता है। यहाँ ब्रह्माजी का एक प्राचीन मन्दिर भी है।

वेडा ग्राम के निकट ही जूना बडा नामक स्थान पर एवमात्र विशाल श्री दादा पाश्वनाथ जैन मन्दिर स्थित है। घने वृक्षों की छाया में सारा दृश्य बड़ा ही मनोहर लगता है।

साठराव के सेवाडो के इस क्षेत्र में जैन संस्कृति के अनेक कद रहे हैं। यहाँ के प्रधानार भी अत्यन्त प्रसिद्ध रहे हैं।

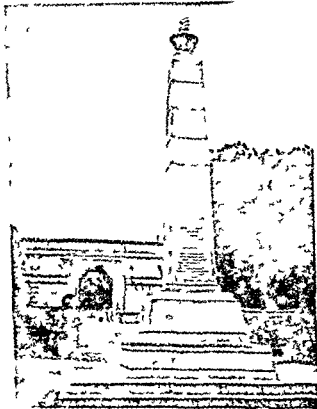
इस प्रकार पाली की सांस्कृतिक परम्परा अत्यन्त समृद्ध एवं गौरवशाली रही है। इसी वजह से जुड़े हैं यहाँ के ऐतिहासिक किले यरास्वी साहित्यकार लोचन-नृत्य समीत की परम्पराएँ, आदि। इन सबका विवरण आगे के पृष्ठों पर दिया जा रहा है।



चमारहारी तीर्थ बाबा पाश्वनाथ जैन मन्दिर
जूना चडा (वेडा-पाली)



आक़वा स्थित स्वाधीनता संग्राम के वीर सैनिकों की
आराधना रचना—सुपाली माता



सहोदर स्मारक आक़वा

पाली जिले के प्रसिद्ध मेले

- 1 शावना माता क मेल (सभा गाँवा म)
(विजयपत्ता पर मूल्य)
- 2 रामलच जा बिराडिया
- 3 जवाहीरी महादेव जवाला
- 4 परशुराम महालच साली
- 5 पारमनाथ जी मला ममली
- 6 जातडा मला
- 7 भाररी मला
- 8 मयी महादेवजी का मला
- 9 लक्ष्मण मला
- 10 पारमनाथ मला दरवागा
- 11 निम्बाग नाथ का मला
- 12 शिवरात्री मला कुल्वा
- 13 रामचन्द्र मला
- 14 नामचन्नी का मला माजल
- 15 हजरत दरगाह का मला भौलिया
- 16 ह मान जा रा मला रामारा
- 17 गंगारी मला झाडवा



पाली की विष्णु प्रतिमा



शौर्य के प्रतीक दुर्ग

वाली दुर्ग

इस दुर्ग न कई उतार-चढ़ाव दने ह । जनश्रुति के अनुसार इस किले का सम्बन्ध रामायण और महाभारतकाल की घटनाओं से रहा है । इस दुर्ग का जीर्णोद्धार महाराणा जूझा के पिता मालदेव ने करवाया था । उस समय वाली इतने बड़े क्षेत्र में फैला था कि उसकी चहारदीवानी में 35 दरवाजे और 70 बरिया थी ।



वाली के किले का यह भाग जहाँ स्वाधीनता सेनानियों को बंद रखा जाता था ।

शामलिया गिरासिया का किला तथा जैतारण का किला, विहा महत्व के हैं ।

जूना खेडा (नाडोल)

देमूरी तहसील के निकट पुरातात्विक महत्व का स्थल जूना खेडा चौहान बगोय क्षत्रियों की प्राचीन राजधानी रहा है । इस स्थल की खुदाई की जाव तो पुरातत्व महत्व की दुर्लभ वस्तुएँ प्राप्त हो सकती हैं । मारवाड और भवाड की सीमा-रेखा पर स्थित जूना खेडा एक महत्वपूर्ण स्थान है । इसका इतिहास आठवीं से दसवीं शताब्दी का है । इसे महमूद गजनवी न उजाड़ दिया था । यही मन्नाट पृथ्वीराज चौहान के पिता सोमेश्वर सोलंखियों से युद्ध करने हुए अहीद हथक । यहाँ पर स्थित वावणिया प्राज्ञ भी दगका को चमिन कर देती ।

पाली की हल्दीघाटी

गिरि का मैदान—अरावली पर्वत श्रृंखला के बीच जतारण तहसील के बीच गिरि गाव के पास का मैदान हल्दीघाटा का तरह प्रख्यात युद्ध-स्थल रहा है । यहाँ केरगाह मूरी न राठौडा स लडत हुए कहा था कि मैं मुठ्ठी भर बाजर के लिए दिल्ली का सल्तनत गवा बैठता—

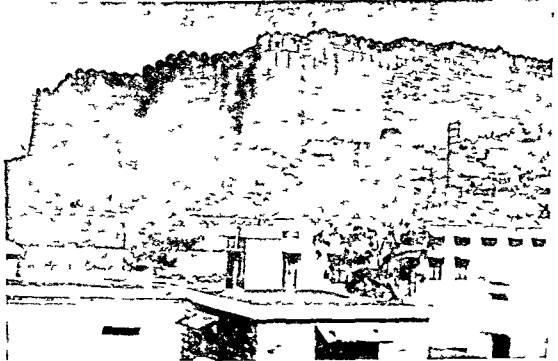
मूरी बोल्तो बरहू गिरी घाट धमसाण ।
मुठ्ठी बाजर कारखेँ मो दत्ता हिदुसाण ॥

सोजत दुर्ग

इस दुर्ग का निर्माण प्रसिद्ध वीर हरियाहना ने करवाया था । इसका नाम अपनी दुर्लभ शक्ति शौजत के नाम पर रखवा नाम सोजत रिया है । सोजत को कई बार युद्ध में न प । यहाँ के धनक मन्त्रियों में चतुसुज तम्भी नाथ स्वेश्वर के नाम उन्नतनीय हैं ।

उपरोक्त दुर्गों के अतिरिक्त पाली जिले की सीमा में कुम्भलगढ़ के पास

सोजत का किला—





प्रति केना इनकी कविता में मुखरित हुई है। देश प्रेम का स्वर इनकी कविता में प्रखर है —

होना आजाद या मिट जाना
प्राण मित्रा भले ही गवाना
पर न झुंटा नीचे फकाना।

इनका स्वयंवास वि०स० 2024 म हुआ।

श्री गुण्येन्द्र शाला

दबला बला (बण्डाबल) व स्वतंत्रता सेनानी भानाजी कवि और गायक व रूप म सुविख्यात है। य राजस्थाना भाषा व एक श्रोजस्वी कवि हैं। गरीब जनता व प्रति हमदर्दी उनसे पीता म सुवर्णित हुई है —

मजदूरा रो महान माव माडा मोज उडान रे
म महना बसे माटरा घूम, माडा खाव र
कमाई करसा रो, हा कमाई करमा रो—
धा तूट देवो लाम्बा बरसा रो

श्री महीधर शर्मा

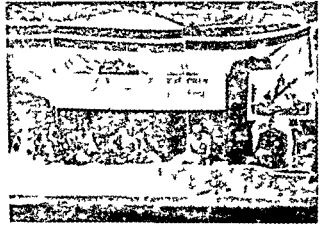
श्री महीधरजी शर्मा का जन्म धारोराब गांव म हुआ। इहू हिन्दी व झालाया मन्हुत भाषा का ब्रह्मन् गान है और ज्योतिष क विन्म्यात जानकार है। इनकी करीब 35 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनम कुछ तो बाध्यव्यव है और शेष ज्योतिष, योग धार्मिक बघाएँ व कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रकाशन हैं। इनका पुस्तक म जडी बूटिया, कुछ परिभाषा की अया और मनेन भाषा तथा लघू (बन्धर) जाति म चार माथम मराठा खोजपूण पुस्तकें भी हैं।

पाली जिले के धन्य कवियों म देववरखीजी, हिम्मतपुरीजी मगमकी माट बहादुरजी गानी गानबलजी शमा श्रीमती बजोडी देवी स्वालिमा देवा परिप्राज कविता पिटा कवि धनेराजजी कवि नवमनजी कवि रतनेकम श्रीराम वृती शालि ने भी राज स्थानी साहित्य म प्रतिष्ठि पायी है। इनक सांतिरिक्त धाराप्रखर श्रीमाली (धाम-पाली-माली) छत्रु नसिंह जी केलावत (मादरलाक) गणिकवरखीजी (धारोराब) एव उदू व शायी, सरदार प्रजीज हफ्त मालवी गुलाब मुशा शायी रतलाम मनहर बल्ला श्रादि धनेराजके साहित्यकार साहित्य-माथना म गन हैं।

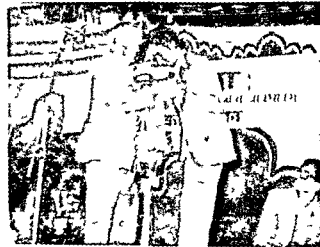
पाली जिले क और भा धनेक लेखनी के घनी स्वान्त मुलाय धनरन्त रू व रचनाक म मासामतिक व राष्ट्रीय जीवन का बिहृनिषा के विरुद्ध धाराज उठा रहे हू तथा स्वाप व स्थान पर परमाप व धमापता व स्थान पर धार्मिक मोहाद व तथा भूला व स्थान पर प्रम व पून विना छू है।

प्रमुख साहित्यिक सस्थाएँ

पाली जिले की साहित्य-सेवा म रत कतिपय सस्थाया का यागदान भा सराहनीय है। य सस्थाएँ 20 व प्राप्त-मास हैं। इनसे पाली नगर की साहित्य साधना समिति, बाली की विद्योत्तमा तथा सोजन की छत्रु साहित्य परिषद के धलावा बज्जे भदब (पाली), प्रजली (पाली), भरवली साहित्य परिषद (फालना) श्रादि प्रमुख हैं।



साहित्यिक सन्ध्या विद्योत्तमा के त-वाकपान म धायोजित लेनीय हिन्दी उपनिषद का एक दृश्य। मच पर धासनी हैं—श्रीमती शोना जोशी (स्वामताध्यक्ष) डा० मोहनदृष्य बोहरा (सिरोही), श्री धनधाम धानभ, श्री ननमन जन (जालौर), था हारासान जन (मरक्षर) था माहनराज जन (धध्यक्ष) प्रभृति।

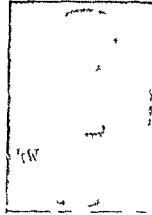


श्री मोहनराज जन (धध्यक्ष—विद्योत्तमा) द्वारा कवि श्री हुडकी कपी का सम्मान।

पाली जिले मे औद्योगिक क्रान्ति के अग्रदूत



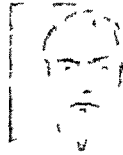
श्री हरिवर्धरा मौर



श्री मंगरीराम जी बाग



श्री सागरमल जी चावडा



श्री सम्पतराज जी शाह



श्री शिवसिंह जी कछवाह



श्री पी एन मिश्री (चखतगढ़)

M/s PG Foils Limited

Manufacturers of ALUMINIUM FOILS

M/s Paras Private Limited

Manufacturers AAC & ACSR CONDUCTORS

M/s P G Conductors

Manufacturers of AAC & ACSR CONDUCTORS

M/s. Prem Cables Private Limited

Manufacturers of

AAC & ACSR CONDUCTORS ALUMINIUM PROPERZI RODS

M/s. Pipalia Engineering Works Pvt. Ltd

Manufacturers of

CABLES & CONDUCTORS MACHINE, PROPERZI PLANT

M/s-Pipalia Cables

Manufacturers of

**PLAIN STRANDED ALUMINIUM WIRE CONDUCTOR
AND STRANDED STEEL WIRE**

P O PIPALIA KALAN 306 307

Distt PALI MARWAR (Rajasthan)

Phone No 5 (Raipur Marwar)



की ओर से

पाली के स्वतंत्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं

गणपतराज शाह



मुख्य खात रावतभाटा का पन बिजलीघर है जहाँ से मीनवाडा होती हुई बिजली पाली पहुँचाई गई है।

पाली जिले की मुख्य कृषि पद्मावार खरीफ की फसल में ज्वार बाजरा मक्का मिश्र मूँग कृषि बपास एवं तिलहन हैं, जबकि रबी की फसल में गहूँ जौ चना, राइडा और सरसो है। जिले में औसत वर्षा 450 मि०मी० है। मारवाड में पुष्पा नहायत है—दूर तीसरा साल काल (मूसा) पड़ता है पर फसल तो तीन वर्षों में केवल एक ही बार औसत वर्षा होती है।

समन कृषि कार्यक्रम

आजादी के पश्चात् कृषि व विकास पर अधिक धन उज्जामो योजना के तहत अधिक ध्यान दिया गया। सन् 1961 में लाला श्री हरिदास साधु व प्रयत्ना से फोड फाउण्डेशन के सहयोग से प्रारम्भ किये गये समन कृषि कार्यक्रम (पंचेज प्रोग्राम) के अन्तगत राजस्थान व तीन जिला में पाली का भी चयन किया गया और भारत सरकार के तत्कालीन कृषि मन्त्री श्री ए० के० पाटिल ने इस योजना का पाली में उद्घाटन कर हरित पान्ति का मूपात किया। इस योजना में कृषकों की काम योजना तैयार कर



कृषि विस्तार कार्यक्रम प्रशिक्षण शिविर का एक दृश्य

उत्पादन हेतु बना गया है जहाँ निम्न बर व फसल के फसला विभिन्न प्रकार की साम-सजी उगाने हेतु कृषकों को प्रोत्साहित किया जाता है।

जिले में जल व मिट्टी के परीक्षण हेतु भी सारी सुविधाएँ उपलब्ध है।

(उप निदेशक कृषि विस्तार कार्यक्रम के सौजन्य से)

शिक्षा और साक्षरता

आजादी के पूर्व मारवाड राज्य में शिक्षा-व्यवस्था की जानकारी से पाली जिले की तत्कालीन हकूमतो का हवालात का कुछ प्रमाण मिलता है। आजादी के पूर्व जोधपुर शहर के बाहर बही भा हाई स्कूल नहीं था। पाली जिले में केवल सोरठ बाली पाला अतारण बरवाणा में मिडिल स्कूल थ और प्राइमरी स्कूल भी नाममात्र के थ। निजी पाठशालाएँ पण्डितों का एकमात्र साधन थी जहाँ प्रतिमाह एक या दो रुपये खर्च करने वाले परिवार ही अपने बच्चा को पढा सकते थे।

पूरे मारवाड में जागीरो गाँवा में शिक्षा की अत्यन्त दयनीय स्थिति थी। चार हजार जागीर के गाँवों में मात्र 27 राजकीय स्कूलों—24 लड़कों की व 3 लड़कियों की था। इनके फसला 22 निजा सहायता प्राप्त स्कूल थ।

सन् 1927-28 में सन्ने मारवाड में शिक्षा का कुल खर्च 4 10 975 रुपये हुआ, जिसका प्राये से अधिक खर्च ब्रिटेन जोधपुर शहर में पड़ा था। बाकी बची रकम में से मारवाड की 23 हामनों में स्कूल बनते थ। प्रथम प्राथमिक शाला या सवता है वि पात्री जित का पीब हकूमतो व स्कूला व लिए तो थवत साम मात्र की राशि हा बचता थी। ज्वाला वजट मफनरो की तनस्वाह में जाता था इगसिह म्पून व्पून वन व। सन् 1927-28 में पूरे



श्री ए० के० पाटिल (कृषि मन्त्री भारत सरकार) कृषि पकज प्रोग्राम का पाली में शुभारम्भ करते हुए।

उह उन्नत बीज खाद व कीटनाशक दवाएँ उपलब्ध बनाने का अभियान चला जो बाफा मफन रहा।

कृषि विस्तार कार्यक्रम के तहत कुल 1,89,675 कृषक परिवारों को प्रशिक्षण देने व उद्देश्य में 17,145 सम्पन्न कृषकों को प्रशिक्षित कर कार्य मौवा गया। वनिपय प्रशिक्षण नेत्र बनाने गये हैं जहाँ कृषि मन्त्री व निवार गांधिशा व प्रायोजन नियमित रूप में होता रहता है।

पाली जिले व आना दमूर, गाना सोजन मुमखुर एवं त्रनारन प० म० क्षाश की फना व उद्यान तगान व मंत्रिया व



मारवाड में 4 हजार जागीर गावों में, जहाँ मारवाड की कुल झावादी 18,41,642 में से 15,41,552 लोग निवास करते थे, वहाँ केवल २० 3319 खच हुये। साक्षरता तीन प्रतिशत से भी कम थी। मात्र लोग केवल शहर में ग्रामवा उच्च व्यापारी वर्ग में ही मिलते थे।

पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का तो प्रश्न ही नहीं था, प्रेस तो क्या टाइप मशीन रखने के लिए भी महकमा खास मारवाड राज्य से स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य था।

शिक्षा के केन्द्र

झाजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में हुए विकास की स्थिति इस प्रकार है —

1 महाविद्यालय	तीन (पाली, फालना, राणावास)
2 उ० मा० वि० और मा० वि०	150
3 उ० प्रा० विद्यालय	300
4 प्रा० विद्यालय	900
शिक्षित पुंय	34 21 प्रतिशत
शिक्षित महिलाएँ	8 32 प्रतिशत

साक्षरता

पाली जिले के कस्बा और महार म नी शिक्षिता का प्रतिशत काफी कम है —

वाली	38-61 प्रतिशत	फालना खुडाला	34-69 प्रतिशत
जैतारण	34-90 प्रतिशत	निम्बाज	20-90 प्रतिशत
पाली	44-14 प्रतिशत	रायपुर	27-30 प्रतिशत
रानी	49-27 प्रतिशत	सादडी	30-41 प्रतिशत
सोजत	36-77 प्रतिशत	सोजत रोड	46-29 प्रतिशत
मुनरपुर	41-81 प्रतिशत	तननाड	34-66 प्रतिशत

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

तत्कालीन मारवाड राज्य और इसके 23 परगना म ते केवल पाली, सोजत, जैतारण बाला एवं देमूरी में ही 5 सरकारी अस्पताल थ। मारवाड क चिकित्सा विभाग का वष 19१7-28 का कुल खच 3 30 483/- रुपय हुआ जिसका अधिकां हिस्सा जोधपुर शहर म तथा बरेतन म ख्यय हुआ। झाजादी के पूव सादडी म मेठ रूपचदनी ताराचदना म तथा राणावास म सठ सगरमलजी चिमनजा म अस्पताल हेतु नवन बनवा कर दिये। तब वहाँ पर भा चिकित्सा-मुविद्याला के अभाव म बीमारियां से रहत पात का प्राण्य कवल जादू टोना साधू एं और देवा-देवताओं क नापा नोपा हा मुन्व व।

ग्राज की स्थिति —

1 जिला चिकित्सालय	1
2 रेफरल चिकित्सालय	4
3 एलोपैथिक चिकित्सालय	10
4 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	18
5 सहायक स्वास्थ्य केंद्र	5
6 शहरी डिस्पेंसरी	4
7 ई० एस० ब्राई० डिस्पेंसरी	3
8 ग्रामीण डिस्पेंसरी	28
9 एड-पोस्ट	13
10 मातृ-शिशु कल्याण केन्द्र	10
11 परिवार कल्याण केन्द्र	5
12 स्वास्थ्य उप केन्द्र	219
13 आयुर्वेदिक आयुधालय	110
14 यूनानी दवाखाने	2
15 होम्योपैथिक दवाखाने	4
16 क्षय निवारण केन्द्र	1

इनके अतिरिक्त पाली, बीसलपुर, घाणोरवा, रानी, तसतगड, सादडी सोजत एवं मुनरपुर में निजी चिकित्सालय विभिन्न नावजनिक एवं धार्मिक ट्रस्टों द्वारा संचालित किये जा रहे हैं, जहाँ अन्य चिकित्सा के साथ ग्राम सभी तरह के उपचार की व्यवस्था है।

जिले के ग्राम कस्बों शहरों में योग्य एवं अनुभवी डाक्टरों न अपने निजी चिकित्सालय स्थापित कर रखे हैं। चिकित्सालयों के साथ-साथ रोग निदान-केन्द्र भी चल रहे हैं। पाली म एक मडिलर और सर्जिकल चल-मावाइल वाहन की व्यवस्था के साथ-साथ एनड-वेन भी सेवारत है।

पाली तसतगण फालना वाली सादडी रानी घादि स्थानों पर ट्रस्टों एवं धार्मिक संस्थाओं द्वारा रोगी वाहन संचालित किये जा रहे हैं।

पाली म नगवान महावीर विज्ञानग सहायना समिति द्वारा चिकित्सा क लिपि इतिमि धरा गगने का काम मुचाररूप में चल रहा है। बानी क अतिवासा जेठ में चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के लिए संस्था अगवान रिमलनाथ तथा सप-बाला द्वारा चिकित्सा सेवा उपलब्ध है। पाली जिले में नगवान-रौघ मनी बड कस्बा म गराय व चरुमलम सोगा की मुनर और विनरग कर्ण्य भी अन्नक संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है।

“रस्सियो मे जब मुझे पेडा मे बाधा जायेगा,
 गम लोहे से मेर होठा को दागा जायेगा ।
 जब दहकती आग पर मुझको लिटाया जायेगा—
 ऐ वतन ! उस वक्त मैं तर ही नगमे गाऊंगा,
 तेरी खातिर मुस्कगकर आग पर सो जाऊगा ॥”



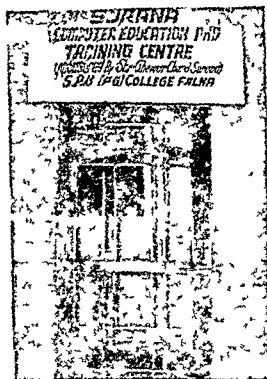
वीर शहीदो का पावन स्मरण



सौजन्य

मैसर्स माइक्रो लेब्स लिमिटेड

303, विक्स कॉन्टर अपार्टमेन्ट्स, 3-पियस रोड, बंगलोर-560 001



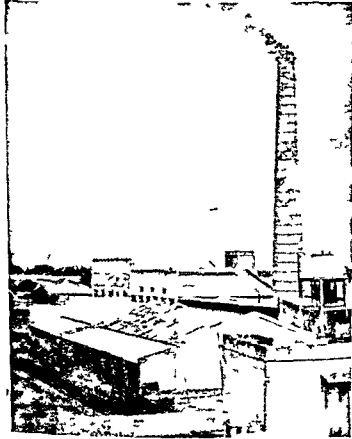
श्री धवर्च व मुराणा विद्याया मालराई के सादर प्रमितादन ।



उद्योग

पाली क्षेत्र प्राचीन काल से ही वृषि एवं उद्योग प्रधान रहा है। पाली नगर की व्यापारिक मण्डी तो मध्ययुग में एक जगत प्रसिद्ध मण्डी रही है, जहाँ से चीन और मध्य-पूर्व के देशों को सदियों तक व्यापार होता रहा है। पाली जिले के सभी गाँवों में बपडों की बुनाई रगाई, छपाई चमड़े से बनी वस्तुएँ आदि लोहारी, मुनारी एवं कुम्हारी उद्योग काफी विकसित थे। यहाँ का बना सामान दूर-दूर तक जाता था। ग्राम लोगों के काम बनाने वाली वस्तुयाँ के भलावा बिगिष्ट वस्तुएँ भी निर्मित होती थी। इनमें मुख्यतः युद्ध के लिए भस्त्र, भस्त्र का सामान यहाँ के वारीगर बड़ी कुशलता से बनाते थे। यहाँ की बनी तीर्थ तलवारें बन्दूकें बड महत्व के शस्त्र समझे जाते थे। भाऊवा और नारलाई गाँवों में इन भस्त्र शस्त्र बनाने वाले कुशल वारीगरों के अनेक परिवार थे। आज भी इन परिवारों के लोग लोह की मूल्यवान चीजें बनाने में बहुत कुशल हैं। धीरे धीरे प्राचीन काल से चले आ रहे ये उद्योग बड नारखतों की होड में नहीं टिक सके और अब मृत प्राय हो गये हैं।

सबप्रथम सन् 1940 में मारवाड के ही प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मगनीराम जी रघुनाथमल जी बागड ने महाराजा श्री उम्मेद



बागड परिवार द्वारा स्थापित महाराजा श्री उम्मेदमिस्त पाली

मिस्त की स्थापना पाली में की। नये युग के इस नये उद्योग का पाली जिले में प्रारम्भ हुआ दूसरी ओर राजाजी के परचाट मामुदायिक विकास-खण्ड बुले और लोगों को पुन गावों में लघु उद्योग स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित किया जाने लगा और सरकार की ओर से भूमि, पानी विजली, ऋण एवं अनुदान आदि की सुविधाएँ प्रदान की जाने की योजनाएँ प्रारम्भ हुयी।



रानी सुमेरपुर, फालना आदि के उद्यमियों को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया

स्वर्गीय सागरमलजी चौपडा ने फालना में महावीर मेटलस नाम के बडे उद्योग (छाता) की स्थापना कर साहस का परिचय दिया। फिर तो धीरे धीरे सोजत रोड पर सोजत लाइम कम्पनी प्रेम केवटस-पिपलिया शिव स्टील्स लि०-फालना आदि कई बड कारखाने औद्योगिक क्षेत्र में स्थापित हुए। पंचवर्षीय योजनाओं की प्रगति के माथ फालना रानी, सुमेरपुर, पाली सोजत खारवी, पोपलिया आदि स्थानों पर उद्योग बस्तियाँ स्थापित का यह और इन सब स्थानों पर आज करीब 500 से अधिक औद्योगिक इकाइयाँ चल रही हैं जिनमें एस्पूमिनियम फौड्रस टी०बी० के डिग एटना, सुपर फाइन कपडे से लेकर अनेक प्रकार की छोटी बडी वस्तुयाँ का निर्माण किया जाता है। पाली नगर तो बस्ती की रगाई-छपाई के लिए भारत में ही नहीं बल्कि पूरे एशिया में बहुत बडी मण्डी मानी जाती है। दूर-दूर तक यहाँ के प्रोसेस किये गये कपडे निर्यात होते हैं।

जिले में उद्यमियों की तो कभी कभी नहीं रही, लेकिन पूरे भारत की तरह अंग्रेजों के शासनकाल में स्थानीय उद्योग धंधे

“गरते वीभी को जब मेरी दबाया जाएगा, हुबम मुझको कत्ल करने का मुनाया जाएगा
जब मुझे फासी के तप्ले पर चढाया जायगा, ऐ वतन ! इस वक्त भी मै तेरे नगम गाऊगा,
अहद करता हू कि म तुझ पर फिदा हों जाऊगा ।”



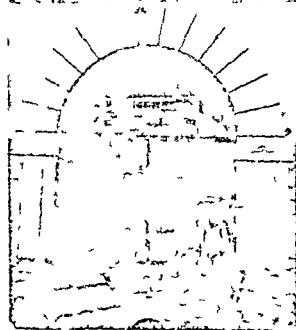
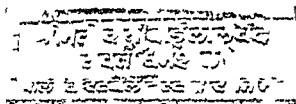
आजादी के परवानो को शत-शत नमन् !



भवरलाल सचेती, मुनील सचेती

मैसर्स संचेती फेब्रिक्स

पाली मारवाड (राजस्थान)



श्री भवरलाल जी सचेती परिवार द्वारा निर्मित धमशाला



चौपट हो गये थे व्रत यहाँ के साहसी और उद्यमी लोग बाहर प्रदेशों में प्रवास कर गये। इसीलिये यह क्षेत्र उद्योग में पिछड़ गया।



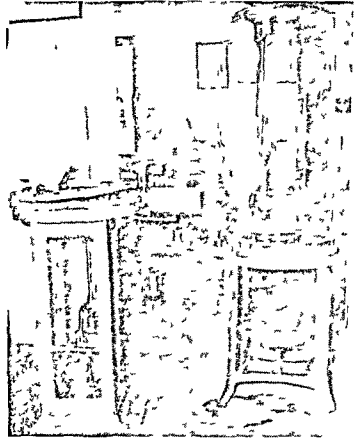
फालना स्थित महावीर मेटल इण्डस्ट्रीज में लगी औद्योगिक प्रवसनी (1967) में केन्द्रीय मंत्री श्री परमेश्वर राव चव्हाण, श्री हरिश्चंद्र सायूद एच. श्री सागरमल चौपडा

पाली जिले के उद्यमियों में स्वर्गीय सागरमलजी चौपडा (फालना) एव स्वर्गीय सम्पतराजजी शाह (पीपलिया) को सर्वप्रथम बड़े उद्योग स्थापित किये। इतना ही नहीं अपने प्रभाव का उपयोग कर इन्होंने अपने क्षेत्रों में उद्योग लगाने की प्रेरणा दी जिसके फलस्वरूप जिले का औद्योगीकरण सम्भव हो सका। इसके साथ ही स्वर्गीय श्री पी.एल. मिस्त्री (तखतगढ़) सरीखे अल्पवयस्कों को भी नहीं भूल सकते जिन्होंने किसी भी प्रकार की तकनीकी अथवा स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं की थी फिर भी अनेक जनोपयोगी विलक्षण लगने वाले उपकरणों का आविष्कार कर बड़े-बड़े इंजीनियरों को विस्मय में डाल दिया। उन्होंने एक ओटोमेटिक साईकल बिना पेट्रोल की मोटर, बिजली का वाटर पम्प, रेसिंग बुधटना रोबने का आटोमेटिक सिगनल टिकट वेचने की मशीन आदि का आविष्कार किया।

आज भी गाँवों में अनेक ऐसी प्रतिभायें छिपी पड़ी हैं जिनके बारे में जानकारी प्राप्त की जाये तो जिले के औद्योगीकरण में बहुत तेजी लानी जा सकती है।

औद्योगिक विकास के लिए कायरत सत्यापन

पाली जिन म नई औद्योगिक प्रतिष्ठान सच ममितिया एव मण्डन विद्यमान हैं जो अपने सत्यापन हितों का सम्भारण एव सम्बन्ध बनन म अस्त है। निम्न लगवा है धर्मी तख इण्ड मण्डना



श्री पी. एल मिस्त्री तखतगढ़ द्वारा निर्मित कुछ यंत्रात्मिक उपकरण

का ध्यान जिले में भावी औद्योगिक विकास की ओर नहीं गया है। कतिपय सरकारी स्थापन ऐसे हैं जो सरकारी नियमों और प्रक्रियाओं के अधीन कार्य कर रहे हैं। उनमें प्रमुख हैं —

- (1) रीको (RIICO) — राजस्थान सरकार के इस प्रमुख निगम की शाखा पाली में है। यह उद्योग एव उद्योग-वस्तियों के लिए भूमि उपलब्ध कराती है तथा अन्य सुविधायें प्रदान करती है।
- (2) राजस्थान वित्त निगम—इसका शाखा कार्यालय पाली में स्थापित है और सभी प्रकार के उद्योगों को ऋण उपलब्ध करवाने का यह संस्था करती है।

(3) जिला उद्योग केन्द्र — पाला जिले में जिला उद्योग केन्द्र भारत सरकार द्वारा प्रायोजित योजना के अन्तर्गत द्वितीय चरण के अधीन एक जून 1979 स राज्य सरकार द्वारा स्थापित करती है। इस योजनागत तलु एव कुटार उद्योगों को स्थापित करने के लिए आवश्यक वे सभी सुविधाएँ एक ही स्थान पर एव ही छत के नीचे उपलब्ध कराई जाती हैं जिनके द्वारा उद्योगों का विकास सम्भव हो सके यथा—उपयुक्त योजना का चयन



व्यावहारिकता प्रतिबन्धनों को समाप्त करवाने की सफाई का प्रथम, नये माल को व्यवस्था, भूमि का प्रावधान आदि।

(4) राजस्थान छावी एवं सामोपोग बोर्ड—इस संस्था का शाखा कार्यालय पाली में स्थित है, जहाँ उप निदेशक स्तर का प्राधिकारी नियुक्त है। प्रत्येक पंचायत समिति में भी बोर्ड का एक कनिष्ठ अधिकारी नियुक्त है जो ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू एवं ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहित करने तथा श्रद्धा एवं धन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने का काम करता है।

(5) औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान—यह संस्था पाली शरीर पालना में है जहाँ छाई टोई छाई शरीर धार की नें तहल प्रशिक्षण विधियों को समी करके के लए जसे—विजली, वायुमन, टनर, फिटर डोजल मैनेजिग वरुडर मोटर वाइडिंग, मैनेजिग पाइप फिटर आदि धनेन कायों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

(6) राजस्थान कृषि उद्योग निगम—इस संस्था द्वारा एवं ववशाप लोती गई है जहाँ किसान वग के हितों को ध्यान में रख कर सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

(7) उद्योग विभाग—पाली में जिला कार्यालय स्थापित है जहाँ राजस्थान उद्योग विभाग के उच्च अधिकारी बढते हैं जिनके अधीनस्थ जिला उद्योग अधिकारी एवं सहायक जिला उद्योग अधिकारी काम करते हैं। इनका मुख्य कार्य जिले में औद्योगिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना एवं नये उद्यमियों को मापदंडान देना है। जिले के प्रमुख कर्षियों में इस विभाग का एक-एक अधिकारी नियुक्त है जो प्राथमिक सुविधाएँ प्रदान करने का काम करता है एवं समसाम्रा के निराकरण में सहयोग प्रदान करता है।

जिले में इस समय तीस हजार से अधिक यन्त्रि छोटे-बड़े उद्योगों में लगे हुए हैं तथा निम्नांकित छोटे व बड़े उद्योग लगाये जा सकते हैं —

- 1 सनेद सीमेन्ट प्लांट
- 2 मिनी सीमेन्ट प्लांट
- 3 क्लिस्सम बाबाइड प्राधार्ति उद्योग
- 4 ब्लोबिग पाउडर
- 5 एस्बेस्टोस शीट्स
- 6 स्ट्रा वेपर मिल
- 7 मिनी स्टील प्लांट आदि

खनिज आधारित उद्योग

भू नि पाली जिला सभी सुविधाओं से युक्त है एवं यहाँ पर खनिज के रूप में बेनीकल ग्रेंड साईड स्टीन बटाउज वेल्सफाउ, केलासाईट जो कि देश में गुणवत्ता के लिए विख्यात है प्रचुर मात्रा

में उपलब्ध है। इसके प्रतिरिक्त एस्बेस्टोस, सोप स्टीन, जिप्सम, मार्बल स्टीन केमीसाईड वेराईटस भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। साथ ही साथ जिले में रायडा, कपास, चना मिर्च मेहन्दी आदि व्यावसायिक फसलों की भी अच्छी उपज होती है, जिसका 60 प्रतिशत धन्य जिले को भेज दिया जाता है। यदि सम्पूर्ण फसल का उपयोग जिले में ही किया जाए तो इति प्राधार्ति उद्योगों के शीर लगने की सम्भावना बनती है।

जिले में खनिज के प्राधार पर जो उद्योग लगाये जा सकते हैं। व हैं —

1 माबल प्राधार्ति उद्योग —पाली जिले में सेन्डहा के पास भैरु का बाटा, रायपुर तहसील में काम कल्याणपुरा, काली तहसील में दुजाना, सिन्दूर व जाडरी ग्राम में मार्बल उपलब्ध हैं प्रत यहाँ पर मार्बल कटिंग पालिशिंग चिप्स की इवाइसी स्थापित की जा सकती है।

2 चूना पाथर —सोजत क्षेत्र में मण्डला रापडिया, घटपडा ग्राम के पास बेभीकन ग्रेड का 96.2 प्रतिशत की शुद्धता वाला चूना पथर उपलब्ध है। इसका उपयोग कल्सीम कार्बाइड तथा बिल्डिंग पाउडर बनाने के काम में लिया जा सकता है। ब्यावर के पास रास ग्राम में रायपुर के पान ग्राम लिलाम्बा में 200 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान है। जिससे प्राधार पर मिनी सीमेन्ट प्लांट लगाया जा सकता है।

3 बेरसाइड —देसूरी तहसील के ग्राम गोरिया पीपलान भटून तथा रायपुर तहसील के ग्राम मुनेल में केलासाइड उपलब्ध है। जिससे प्राधार पर केलासाइड क पूल व राइजिंग उद्योग लगाये जा सकते हैं।

4 जिप्सम —ग्राम लूटाना के पास जिप्सम की खानें पाई गई हैं जिनके प्राधार पर बाल बोड व पत्थरसाईजर के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

5 एस्बेस्टोस —रायपुर तहसील के ग्राम मानुपुरा, बानोडिया, गोरिया माना में एस्बेस्टोस खनिज उपलब्ध हैं जिनके प्राधार पर सीमेन्ट पाइप एवं सीमेन्ट चट्टर निर्माण करने वाले उद्योग लगाये जा सकते हैं।

6 चार्नाईट —लिटोरिया गाँव में चार्नाईट बने के अच्छे मण्डार हैं एवम् 0.25 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान लगाया गया है। जिसके प्राधार पर चीनी मिट्टी के बतन एवं सेनेट्री वेपरस के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

7 घनाईट —सिरोही जिले के ग्राम गिवगज की सीमा पर घनाईट पथर की खानें पाई जाने की सम्भावना व्यक्त की गई



पाली जिले में मुख्य उत्पाद करने वाली इकाइयाँ

क्र० सं०	उत्पाद	सोजत	वाली	देसूरी	मा०ज०	रानी	पाली	सुमेरपुर	फालना	जैतारण	रायपुर
1	घूना	13	—	2	—	—	4	3	—	—	—
2	स्टोन कर्टिंग, पोलिशिंग	7	2	2	3	20	9	—	9	—	—
3	कृषि उपकरण व धरेलू सामान	—	—	6	6	15	16	23	3	—	5
4	पावरलूम (सूती वस्त्र)	9	—	—	—	—	17	2	4	—	1
5	सबडी के खिलौने	7	—	—	—	—	—	—	—	—	—
6	ए ए सी एण्ड ए सी एम आर कण्डक्टस	—	—	—	—	—	—	—	—	—	8
7	कपडा रगाई-छपाई	—	—	—	—	—	530	—	—	—	—
8	हाथवर्धा वस्त्र	9	—	—	—	2	17	2	—	15	21
9	स्क्रीन डिजाईन	—	—	—	—	—	28	—	—	—	—
10	चम रगाई	14	3	6	5	4	13	6	8	9	79
11	चम जूता	38	18	8	14	41	38	26	20	57	35
12	रसायन	—	—	—	—	—	37	—	4	—	—
13	एम्ब्रेला व एम्ब्रेला पाटस	—	—	—	—	—	—	—	34	—	—
14	मेहू दी पाऊडर	32	—	—	—	—	—	—	—	—	—
15	बची व चाकू	19	—	—	—	—	—	—	—	—	—
16	कॉटिंग जिनिय	—	—	—	—	2	—	8	—	—	—
17	खाद्य तेल (एक्सपेसर)	—	—	—	—	—	4	10	—	—	2
18	ग्राम्य	—	—	—	—	—	—	—	20	—	—

है। जिसके आधार पर जिले में ग्रेनाईट के उद्योग लगाये जाने की प्रबल सम्भावना है।

8 कवाटज फेल्सफार — रायपुर तहसील में ग्राम बिराठिया खुद भवीरापाटन कल्याणपुरा, कलाकोट एवं वाली तहसील के ग्राम नाना में कवाटज फेल्सफार के उपलब्ध होने के कारण यहाँ पर ग्राइडिंग के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

उपरोक्त खनिजों के उपलब्ध होने के कारण उपरोक्त उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। इनके साथ-साथ कृषि आधारित उद्योग प्रायल मिल धनाज पिसाई मसाला पिसाई दाल मिल काटन जीनिंग आदि के उद्योग भी लगाये जा सकते हैं।

पाली जिले के मुख्य उत्पाद

- 1 छाता एवं उसके पाटस
- 2 सुपर फाइन कपडा
- 3 कण्डक्टस

- 4 स्टील एवं लोहे का सामान
- 5 कर्नीचर, कृषि-उपकरण
- 6 हाथी दात एवं प्लास्टिक की वस्तुएँ
- 7 बरतन
- 8 सामान
- 9 सीमेन्ट पाइप
- 10 इमारती पत्थर, मारबल (बिराई एवं पोलिश)
- 11 सबडी का सामान
- 12 चमड़े की रगाई व जूते
- 13 हड्डी-उत्पादन
- 14 दियासलाई
- 15 रेडियो ट्रांजिस्टर
- 16 टेलीविजन डिग एन्ना
- 17 हैण्डलूम-भावरलूम वस्त्र
- 18 रगाई-छपाई वस्त्र



व्यावहारिकता प्रतिवेदना की तयारी मजानो की सम्पाई वा प्रबन्ध, वच्चे माल को व्यवस्था भूमि वा प्रावटन प्रादि ।

(4) राजस्थान छात्रो एव ग्रामीणो बोड—इस सस्था वा शाखा कार्यालय पाली मे स्थित है जहाँ उप निदेशक स्तर का प्राधिकारी नियुक्त है । अत्येक पचायत समिति म भी बोड वा एक वनिष्ठ प्राधिकारी नियुक्त है जो ग्रामीण क्षेत्रो मे धरेख एव ग्रामीण उद्योगो को प्रोत्साहित करने तथा ऋण एव ग्राम सुविधाएँ उपलब्ध कराने का काम करता है ।

(5) श्रौद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान—यह सस्था पाली श्रौर पालना मे है जहाँ कार्ई दी कार्ई श्रौर श्राव डी के तहत प्रशिक्षणार्थियों को मभा तरह के काम जमे—विजली, वायरलेन, टनर, फिट्टर, डोजल मैकेनिक, वल्डर माटर वाइडिंग मैकेनिक पाइप फिटर आदि अनेक कार्यों वा प्रशिक्षण दिया जाता है ।

(6) राजस्थान कृषि उद्योग निगम—इस सस्था द्वारा एव वक्काप खोनी गई है जहाँ किसान वग वे हितो वा ध्यान म रख कर सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती है ।

(7) उद्योग विभाग—पाली मे जिला कार्यालय स्थापित है जहाँ राजस्थान उद्योग विभाग के उच्च प्राधिकारी बटने है जिनके प्राधीनस्थ जिला उद्योग प्राधिकारी एव महापक्व जिला उद्योग प्राधिकारी काय करते हैं । इनका मुख्य काय जिले मे श्रौद्योगिक गतिविधियाँ को प्रोत्साहित करना एव तये उद्यमियों को मापदशन दना है । जिले के प्रमुख बस्वो मे इस विभाग वा एव एक प्राधिकारी नियुक्त है जो व्यवस्थिक सुविधाएँ प्रदान करने का काम करता है एव समस्याओ को निराकरण म सहयोग प्रदान करता है ।

जिले मे इस समय तास हजार से अधिक व्यक्त छोटे-बड़े उद्योगो म लगे हुए हैं तथा निम्नांकित छोटे व बड़े उद्योग लगाये जा सक्ते हैं —

- 1 शर्करा सीमेन्ट प्लांट
- 2 मिनी सीमेन्ट प्लांट
- 3 कलियम बनावड प्राधारित उद्योग
- 4 लौहिया पाउडर
- 5 एस्बेस्टोस शीट्स
- 6 स्ट्रु पियर मिल
- 7 मिनी स्टाल प्लांट प्रादि

खनिज आधारित उद्योग

बू कि पाली जिला सभी सुविधाप्रा से युक्त है एव यहाँ पर खनिज के रूप म बर्मीबल ग्रेड लाईम स्टोन ब्रवाटज फ्लसफार कैल्साइट को नि देश म गुणवत्ता के लिए विश्वस्त है प्रचुर मात्रा

मे उपलब्ध है । इसवे प्रातिरिक्त एस्बेस्टोस, सोप स्टोन, जिप्सम, मार्बल स्टोन, मेग्नीसाईट केराईटस भी प्रचुर मात्रा म उपलब्ध है । साथ ही माप जिले मे रायडा वपास वना, मिर्च, मेहन्दी प्रादि व्यावसायिक फसलो की भी अच्छी उपज होती है जिसवा 60 प्रतिशत घन्घ जिलों को भेज दिया जाता है । यदि सम्पूर्ण फसल वा उपयोग जिले म ही किया जाए तो इति प्राधारित उद्योगो मे श्रौर लगने की सम्भावना बनती है ।

जिल म खनिज मे प्राधार पर जो उद्योग लगाये जा सक्ते ह । व है —

1 सख्त प्राधारित उद्योग —पाली जिले मे सेन्डवा के पास भेरू का बाडा रायपुर तहसील म याम कन्साणपुरा, बाली तहसील म दुजगा सिन्दूर व जाडरी ग्राम म भावल उपलब्ध हैं अत यहाँ पर भावल कटिंग, पालिशिंग, चिप्स की इकाइयाँ स्थापित की जा सक्ती हैं ।

2 चूना पत्थर —सोजत क्षेत्र म मण्डला रापडिया अटपटा ग्राम के पास वेमीबल ग्रेड वा 9.6 प्रतिशत की शुद्धता वाला चूना पत्थर उपलब्ध है । इसवा उपयोग बॉल्सीयम बनावड तथा बिंदिग पाउडर बनाने वे काम मे लिया जा सकता है । व्यावर के पास रास ग्राम मे रायपुर के पास ग्राम तिलाम्बा मे 200 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान है । जिसवे प्राधार पर मिनी सीमेन्ट प्लांट लगाया जा सकता है ।

3 कैल्साइट —देयूरी तहसील के ग्राम गोरिया पीपलान नदून तथा रायपुर तहसील के ग्राम सुनेल म कैल्साइट उपलब्ध है । जिसवे प्राधार पर कैल्साइट के पूल व राईजिंग उद्योग लगाये जा सक्ते हैं ।

4 जिप्सम —ग्राम लूटाना के पास जिप्सम की खानें पाई गई हैं, जिनके प्राधार पर वास बोड व फ्ल्युराईजर क उद्योग लगाये जा सक्ते हैं ।

5 एस्बेस्टोस —रायपुर तहसील के ग्राम मानुपुरा बानोटिया, गोरिया नाना म ऐस्बेस्टोस खनिज उपलब्ध हैं जिनवे प्राधार पर सीमेन्ट पाइप एव सीमेन्ट चदर निर्माण करने वाले उद्योग लगाये जा सक्ते हैं ।

6 कार्ईना बले —लिंगेरिया गाँव म श्हाईट बले के बन्धे भण्डार हैं एवम् 0.25 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान लगाया गया है । जिसवे प्राधार पर चीना मिट्टी के बर्तन एव सेनेद्री वयरस के उद्योग लगाये जा सक्ते हैं ।

7 ब्रॉनार्डिट —सिरौली जिले के ग्राम शिवगज की सीमा पर देनाईट पत्थर की खानें पाई जाने की सम्भावना व्यक्त की गई



पाली जिले में मुख्य उत्पाद करने वाली इकाइया

क्र० सं०	उत्पाद	सोजत	वाली	देसूरी	मा०ज०	रानी	पाली	सुमेरपुर	फालना	बैतारण	रायपुर
1	चना	13	—	2	—	—	4	3	—	—	—
2	स्टोन बटिंग, पोलिशिंग	7	2	2	3	20	9	—	9	—	—
3	कृषि उपकरण व घरेलू सामान	—	—	6	6	15	16	23	3	—	5
4	पावरलूम (सूती वस्त्र)	9	—	—	—	—	17	2	4	—	1
5	लकड़ी के खिलौने	7	—	—	—	—	—	—	—	—	—
6	ए ए सी एण्ड ए सी एम थ्रार वण्डक्टस	—	—	—	—	—	—	—	—	—	8
7	बपडा रगाई-छपाई	—	—	—	—	—	530	—	—	—	—
8	हाथवधा वस्त्र	9	—	—	—	2	17	2	—	15	21
9	स्त्रीन डिजाईन	—	—	—	—	—	28	—	—	—	—
10	चम रगाई	14	3	6	5	4	13	6	8	9	79
11	चम-जूता	38	18	8	14	41	38	26	20	57	35
12	रसायन	—	—	—	—	—	37	—	4	—	—
13	एन्त्रेला व एन्त्रेला पाटस	—	—	—	—	—	—	—	34	—	—
14	मैहन्दी पाऊडर	32	—	—	—	—	—	—	—	—	—
15	बैची व चामू	19	—	—	—	—	—	—	—	—	—
16	कॉटन जिनिंग	—	—	—	—	2	—	8	—	—	—
17	खाद्य तैल (एक्सपेलर)	—	—	—	—	—	4	10	—	—	2
18	धान्य	—	—	—	—	—	—	—	20	—	—

है। जिसके आधार पर जिले में ग्रैनाईट के उद्योग लगाये जाने की प्रबल सम्भावना है।

8 क्वाटन फ्लसफार — रायपुर तहसील में ग्राम बिराडिया खुद भनीरापाटन कल्याणपुरा, कलाकोट एव वाली तहसील के ग्राम ताना में क्वाटन फ्लसफार के उपलब्ध होने के कारण यहाँ पर ग्राइडिंग के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

उपरोक्त खनिजों के उपलब्ध होने के कारण उपरोक्त उद्योग स्थापित निय जा सकते हैं। इनके साथ-साथ कृषि आधारित उद्योग धान्य मिल भ्रमाज पिसाई मसाला पिसाई दाल मिल काटन जीनिंग आदि के उद्योग भी लगाये जा सकते हैं।

पाली जिले के मुख्य उत्पाद

- 1 छाता एव उसका पाटस
- 2 मुपर फाइन बपडा
- 3 क-टबटस

- 4 स्टील एव लोहे का सामान
- 5 फर्नीचर कृषि उपकरण
- 6 हाथी दात एव प्लास्टिक की वस्तुएँ
- 7 बरतन
- 8 साबुन
- 9 सीमेन्ट पाइप
- 10 इमारती पत्थर भारवल (चिपाई एव पोलिश)
- 11 लकड़ी का सामान
- 12 चमड़े की रगाई व जूत
- 13 हड्डी-उत्पादन
- 14 दियासलाई
- 15 रेडियो ट्राजिस्टर
- 16 टेलीविजन डिग एन्ना
- 17 हेण्डलूम-पावरलूम वस्त्र
- 18 रगाई-छपाई वस्त्र



जिला उद्योग केन्द्र, पाली में
दिनांक 23.3.90 तक पंजीकृत उद्योगों का विवरण

क्र.सं.	उद्योग का नाम	पाली जिल्हा	राजपुर	सोवत	भाखाड	जगतल	जगतल	देसरी	बाली	रोहिड	रानी	पाली जिला	सुरपुर	योग
1	कृषि	272	61	93	53	54	61	58	27	98	63	86	926	
2	सजिन	40	30	56	30	15	22	36	27	9	19	49	333	
3	चर्म	149	164	180	79	105	65	157	108	107	154	205	1473	
4	कृषि उपकरण	16	8	39	11	8	5	24	4	39	7	31	192	
5	इस्पात	578	26	27	6	7	2	5	16	—	3	21	691	
6	बन	70	49	52	16	27	13	48	35	30	4	44	388	
7	बैबीकल	92	2	24	1	4	1	2	1	3	8	5	143	
8	विद्युत	43	19	47	26	24	16	20	10	5	7	75	292	
9	सोप	6	5	19	—	2	—	3	—	2	3	16	56	
10	सोडा	105	21	33	17	4	17	50	3	22	41	93	406	
11	विद्युत	152	78	57	33	28	6	35	18	14	39	63	525	
	कुल योग	1523	463	627	274	278	208	438	249	329	348	888	5425	



- 19 टैक्सटाइल्स एव गम
- 20 एल्मुनियम फोइल्स
- 21 चूना

पाली जिले से निर्यात की जाने वाली वस्तुएँ

- | | |
|--------------------|------------------|
| 1 ऊन व ऊन से बने | 2 चमड़ा |
| कम्बल व नमदे | 3 गहूँ |
| 4 गोद | 5 लकड़ी का बोयला |
| 6 तिलहन व तेल सरसा | 7 मिर्च |
| 8 महन्दी | 9 भ्रजवायन |
| 10 भेड़-बकरी | 11 रई घाटि |

सहकारिता

पाली जिला कृषि प्रधान क्षेत्र होने से एवम् औद्योगिक विकास के कारण सहकारी सस्थाओं का निर्माण इस क्षेत्र में तीव्र गति से हुआ है। वैसे तो प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति सहकारिता पर ही आधारित रही है और जीवन के हर क्षेत्र में काय का आधार सम्मिलित प्रयास ही रहा है पर भिन्न भिन्न वर्गों के प्राविर्भाव ने इस सामूहिक जीवन पद्धति पर बहुत दुठारापात किया और काय का विभाजन भी जातीयता के आधार पर हो गया। आयुनिव सहकारिता अभियान मुख्यतः व्यावसायिक जीवन में महत्व रखता है और आर्थिक विकास की दृष्टि से ही सहकारी सस्थाओं का निर्माण किया जा रहा है।

पाली जिले में मुख्यतः निम्नांकित सहकारी सस्थाएँ सेवारत हैं —

- 1 केन्द्रीय सहकारी बैंक (मुख्य कार्यालय पाली एव इसकी शाखाएँ)
- 2 पाली जिला सहकारी भूमि विकास बैंक (मुख्य कार्यालय पाली व इसकी शाखाएँ)
- 3 सहकारी उपभोक्ता होल-सेल भण्डार
- 4 क्रय विक्रय सहकारी समितियाँ (7)
- 5 प्राथमिक सहकारी उपभोक्ता भण्डार (13)
- 6 पाली अरबन कोपरेटिव बैंक व उसकी शाखाएँ
- 7 ग्राम सेवा सहकारी समितियाँ (217)
- 8 दुग्ध उत्पादक सहकारी सस्थाएँ (142)
- 9 ग्रन्थ प्रचार की सहकारी सस्थाएँ गृह निर्माण, धर्मिक टेका, चर्मोत्पादन, औद्योगिक, ट्रांसपोर्ट। कुल सख्या 408।

इनमें मुख्य हैं —

- (1) इंडस्ट्रीयल स्टेट सहकारी समिति लिमिटेड रानी एव सुमेरपुर।
- (2) ब्रह्मच तेल उत्पादन सहकारी समिति, सुमेरपुर।
- (3) वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति, पाली आदि।

पाली से टूल कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, पाली

पाली जिले में आर्थिक विकास विशेषकर कृषि-क्षेत्र के विकास में पाली केन्द्रीय सहकारी बैंक का विशेष योगदान रहा है।

छगनराज जैन (सादबो)

सघवी श्री पूनमचन्द्र जी नेमा जी

53, दागोना बाजार, मुम्बादेवी रोड, बम्बई-400 002

की ओर से

सादबो व गोडवाड के स्वतन्त्रता सेनानियों का अभिनन्दन ।



माधुश्री शेयीबाई पद्मलालजी पोषणावाला भोजनालय श्री राणकपुर तोथ

“भारत न रह सकेगा हरगिज गुलाम खाना, आजाद होगा आया है वह जमाना,
 खूँ खीलने लगा है हिंदुस्तानियो का, कर देगे जालिमो का हम बन्द जुल्म ढाना ।
 कीर्मी तिरगे भण्डे पे जाँ निसार अपनी, हिंदू इसाई मुस्लिम गाते हैं यह तराना,
 परवाह अब किसे है इस जेल के दमन की, यह पेल ही रहा है फाँसी पे भूल जाना ।
 भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे, भारत के वास्ते है मजूर सर कटाना ॥”

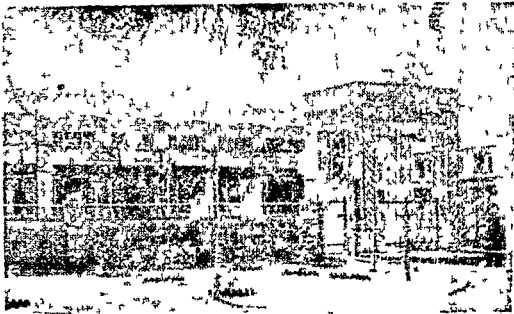
सौजन्य

नेशनल सेल्यूलोइड प्रोडक्टस्

वकील इण्डस्ट्रियल एस्टेट, वाल भट्ट रोड, गोरेगांव (पूव), बम्बई-63

अपनी जन्मभूमि के विकास के लिए समर्पित स्वर्गीय श्री मांगीलाल जी धनराज जी बदामिया की पावन स्मृति के साथ गोडवाड के स्वतन्त्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन !

—पोपटलाल मांगीलाल जी एच परिवार, सावडी



स्वर्गीय मांगीलाल जी बदामिया को धनर-कति 'गुक्ति धाम'—सवधम मी दर, सावडी

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू ए-जातिल में है,
 चर्चा अपने काल का अग्यार की महफिल में है, देखना है यह तमाशा कीनसी मजिल में है।
 वक्त आने दे बता देंगे तुझ ए आसमा, हम अभी से क्या बताए क्या हमारे दिल में है,
 ए शाहीदे मुल्को मिल्लत तेरे जजबो के निसार तेरी कुर्बानी का चर्चा गैर की महफिल में है।
 देश पर बुर्दान होते जाओ, तुम ए हिंदियों, जिंदगी का राज मुजमिर खजरे जातिल में है
 साहिले मकसूद पर ले चल खुदारा नायूदा, आज हिंदुस्तान की कसती बडी मुश्किल में है,
 अब न अगले बलबले है और न अरमानो की भीड, एक मिट जाने की हसरत अब दिने बिम्बिल म हू ॥



विनीत

देवराज राका

मैसर्स देवराज एण्ड सन्स

डूसरा माला, वृंदावन बिल्डिंग, टूबी मार्केट ऐवेन्यू रोड बगलोर-560 053

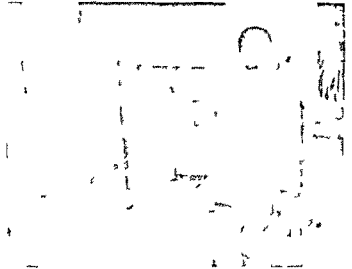


संघ कानूनाम बेसारीबाग रोड टस्ट की धोर से जनता के हिताय
 ग्राम नोमान (पाली) में नवनिमित बहव शरपतान भवन ।

पाली जिले की युवा प्रतिभाएँ



श्री हरद्वीप सुराणा-रानी, सुराणा इण्डस्ट्रीज के सह-संस्थापक सफल उद्योगपति के रूप में राष्ट्रपति अवार्ड प्राप्त ।



श्री मोहन जी लाखा (वाणी) ज्युनियर लालाकार व चित्रकार के रूप में पुरस्कार ।



श्री गीतमभद्र बघाड, पाली बहन उद्योग में ख्याति प्राप्त राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित ।



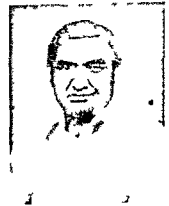
पाली जिले की तीन युवा प्रतिभाएँ युवा समाज सेवी श्री प्रमराज बाफना (सावडी), डा मोहन जैन (यू एस ए) तथा महावीर अस्पताल मुमरपुर के व्यवस्थापक श्री मोहन सिपवी ।



स्व श्री पारसराज शाह पोषणिया अपने बड़े उद्योग, अस्पताल, विद्यालय आदि जनहितकार संस्थाओं के संस्थापक ।



श्री धीमूलाल बघामिया, सावडी प्लास्टिक उद्योग में कीर्तिमान स्थापक गोरगांव-बम्बई के युवा उद्योगपति ।



श्री अन्वचन लोन्ग पाली लोन्ग फर्निचर उद्योग समूह तथा प्रबन्ध शिक्षण संस्थाओं के संस्थापक ।



डा एस आर खान (दक्ली पायूजी)
हृदय रोग विशेषज्ञ एंव नावल हॉस्पिटल
ट्रस्ट इन्चोर व सस्थापक ।



प्रोफसर सगिनुमार खन पानना
युवकी के प्ररक प्रशिक्षक



श्री बन्सावर जी राणा
युवा उद्योगपति एंव समाज सेवी



श्री हरचन्द जन मुण्डारा
सीमट पाइप उद्योग म अग्रणी



श्री मन्तुल रहमान वाली वित्तक्षण प्रतिभा के
धनी सबप्रथम 1959 म गजिस्टर सट तथा
1967 मे टा की सट के निमाता । बटे पमाने
पर टी वा ए टना डिग्न व निमाता ।



श्री विमल जी बन्सावर सादडी
मै वी सा वी कमिन्स (इण्डिया)
अहमदाबाद व सस्थापक प्रमुख सावुन
(शिनाकाई धामला आदि) निमाता ।



श्री नगड सो बोडारी रानी
बगलार ह्वेली तथा उदयपुर म पकिंग
वाक्स उद्योग म प्रमुख नाम राष्ट्रपति
अवारड प्राप्त ।



श्री अचरचन्द बनार पाती
वस्त्र छपाई रगाई व राष्ट्रपति एवार
प्राप्त युवा उद्यमी राजस्थान
इन्स्ट्राल पाती व सचालक



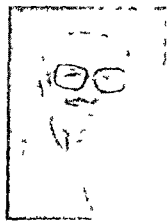
श्री धवरचन्द सुराना बालराई
माइक्रो लव तथा फामास्युटिकल उत्पादो
क वृद्ध उद्योग समूह (बगलौर व
तमिनाडु) के सचालक



श्री विमलचन्द राणावत बुडावा
राणावत हास्पिटल के सचालन, मै शिव
स्टील फालना के सस्थापन, कृपि
उपनरणा के प्रख्यात निर्माता



श्री हीरालाल मालवीय, बाली
बहुमुली युवा प्रतिभा



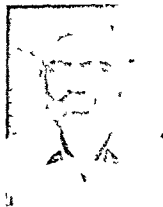
श्री छमा दे -
उच्च कोटि के - - -
मेरीन साइटा (एम.)
भाजीवन स-र



श्री भुभाप रावल पाली
जाने माने लेखक, पत्रकार



श्री नान्ति रावा, सादडी
प्रख्यात छायाकार



डा माधोसिंह डग्गा व्याख्याता (हिन्दी)
फालना बलिज राजस्थानी साहित्यकार



श्री जीहरीलाल जन जतारण
समाज सेवी महावीर विनसाग के-ड
पाली के सस्थापक सदस्य



डा हमराज बी चण्डालिया, (नारवाडी)
विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक (यूरोलाजी)
जगतोव धरपताल बम्बई के सम्बद्ध



श्री मागीलाल पूनमिया दबला पापूनी
युवा समठव एव प्रमुख समाज सेवा

युवा प्रतिभाएं



श्री भवरलाल चव्हेते पानी
युवा उद्यमी एंव समाज सेवी



श्री बाजाराम पाला
राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत विलाडी



श्री संजयनराज पुनमिया देवली पातूजी
समाज सेवी युवा प्रतिभा



श्री पृथ्वरमल जन दबली पातूजी
समाज सेवी युवा प्रतिभा



श्री देवगनगर व्यास बोया
प्रसिद्ध समाज सेवी उद्योगपति



डा सी एस मेहता सावडी
मद्रास म घनेन श्रीपति निमाएण एंव हाजसिम
नीजिम कम्पनिम क अध्यक्ष तथा घनेन प्रतिष्ठित
सत्यामी कालेजा ट्रस्टा के सचिव



श्री भवानिसिंह राजपुरोहित विनोबनी
मुजस प्रनासक समाज सेवी



श्री नौरून नी मह्ना
युवा प्रतिभा समाज सेवी



सरदार जगतार सिंह फालना
मुजल उद्योगपति, समाज सेवी



श्री भान्तिराल टी जन सवाडी
युवा समूहक एंव समाजसेवी

वंदे मातरम्



५३०७

पाँचः

अशेष

गोडवाड के समस्त स्वातंत्र्य वीरो का
हादिक अभिनन्दन !

स्वतंत्रता सेनानियो का हादिक अभिनन्दन !

निवेदक
श्री जैन संघ, नाडोल
मु०पो० नाडोल (पाली)

सौजन्य
सधवी कातीलाल पोपटलाल जवेरी
6, दागीना बाजार, मुम्बा देवी रोड
बम्बई-400002

“भारत माता की जय !” “इमलाव जि दावाद !” “करो या मरो !” के नारो के साथ
राष्ट्र की आजादी के लिए बहून की गोलिया के सामने सीना तान कर खडे रहने
वाले वीर देशभक्तो का हादिक अभिनन्दन !

मेसर्स जवेरी कपूरचंद दलीचंद

11, मुम्बादेवी रोड, दागीना बाजार, बम्बई 400002

टेली 321374/334905

‘हर विल में भिन्दा रहते हैं, आजादी पर मरने वाले !’

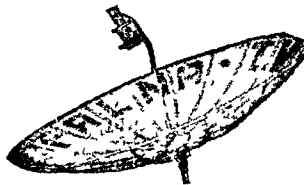
आजादी के दीवानो को हजारों प्रणाम !

M/s. Falna Television

INDUSTRIAL ESTATE FALNA-306116

(PALI - RAJASTHAN)

Phone 260



निवेदक अब्दुल रहमान (वाली)

जिले की प्रमुख नदियां

1 लुनी	2 लोलडी	3 जवाई
4 गडिया	5 बाडी	6 रेडिया
7 सूखड़ी	8 मीठडी	9 रायपुर
10 मयई	11 कूमठी	12 खारडी
13 शेखा	14 चामेसन	

जिले के प्रमुख वृक्ष

1 खेजडी	2 पीलू	3 अरवजिया
4 बबूल	5 करजा	6 गुलर
7 पीपल	8 बड	9 जामुन
10 माटडी	11 कुला	12 खैर
13 कुमटिया	14 गागण	15 केर
16 फिखरी	17 कचनार	18 आवला
19 इमली	20 नीम	21 ढाक
22 सानर	23 घब	24 हॉंगठ

मुख्य फसलें

बाजरा ज्वार मका गेहूँ जौ चना मूंग मीठ छोला रायडा मूंगफला मिर्च कपास मेहन्दी जीरा ग्वार

प्रमुख पशु मेलें

नीमा का नाथ जवाली महादेव चडावल मानपुर माडावास चाली

मुख्य धन्य-जीव

भालू, लागू रीछ सियार खरगोश सामर नीलगाय लोमडी भेंडिया

मुख्य पक्षी

कबूतर मोर तोता तीतर कौवे चिंड़िया आदि

मुख्य खनिज

लाइम स्टोन एसबेस्टस केल्टाइट्स चाईना बने फ्रडिस फनीस्पर जिप्सम बहुरंगी संगमरमर इमारती पत्थर अन्नक मैनेसाइट ग्रेनाइट बोरोनाईट माननीज ताबा बेरियल आयरन आदि।

जिले का सबसे ऊंचा पर्वत

1 099 मीटर काना पर्वत (तहसील बाली)

प्रमुख ऐतिहासिक तीर्थ एवं पर्यटन-स्थल

1 राणकपुर	2 निन्वेधर मन्नादेव
3 परशुराम महादेव	4 राती परशुराम महादेव
5 राता महावीरजी बाजापुर	6 मोरा की जन्मस्थली कुडकी
7 चामुण्डा माता नैमाज	8 सानगर चौहान छतरी

9 जुनाखेडा नाडाल	10 सालेधर महादेव
11 पातालेधर महादेव	12 मोमनाथ महादेव
13 खामरिया गरसियों का किला घाणेराव	14 देसुरी का किला
15 चाली का किला	16 मानपुर की भाखरी
17 गोरखनाथजी का मंदिर गोरमपाट	18 आशापुरा माताजी नाडोल
19 सोमनाथ मंदिर नाडोल	20 जैन मंदिर नाडान
21 भवर गुफा नारलाई	22 महादेव मंदिर एव हाथी की विशाल मूर्ति नारलाई
23 जैन मंदिर नारलाई	24 टाराबाव सादडी
25 मुछाला महावीरजी घाणेराव	26 नव नाकोडा
27 पार्शनाथ मंदिर वर्काणा	28 भैरव तीर्थ घाणेराव
29 महादेव मंदिर जवाली	30 महादेव मंदिर बिराठिया
31 ब्रह्माजी का मंदिर ढालीप	32 सूर्य मंदिर राणकपुर
33 हर-हर गंगा बाजापुर	34 धूणी मंदिर तह रायपुर

प्रमुख मेलें

1 शीनला माता के गैर नृत्य मेलें (संक्रडा गाबा भें)	2 मेला रामदेवजा बिराठिया
3 जवाली महादेव मेला	4 पारसनाथजी का मेला
5 देसली पारसनाथजी का मेला	6 भाखरी मेला पाली
7 दशहरा मेला पाली	8 मेला नीमा का नाथ
9 शिवरात्रि मेला कुडकी	10 वर्काणा पारसनाथजी का मेला
11 नाग पंचमी का मेला	12 शिवरात्रि मेला कुडकी
13 राणकपुर मेला	14 नाग पंचमी का मेला
15 हजरत दलै शाह मेला चाटीला	16 खापाला हनुमानजी का मेला
17 औवा गणगौर मेला	
18 गणगौर मेला गरिया (आदिवासी)	

प्रमुख समाचार पत्र

1 अरानाद	2 सच्चा भारत
3 विगतबार	4 गोडवाड टाइम्स
5 वैख्रीफ	6 फालना सदेश
7 आषस्त	8 टाइम्स ऑफ अरावली
9 धरती का इन्सान	10 फालना पुकार
11 सुनि घोष	12 पाली पञ्चमधेम
13 राज लीडर	14 मेरी धरती
15 विदावाडी सदेश	

(जिले की प्रशासनिक व्यवस्था एवं मानचित्र कृपया पृष्ठ 48 पर देखें)

पचायत समितिवार जनसंख्या (1991)

क्रम संख्या	जिला/पचायत समिति/ नगर/कस्बे	कुल/ग्रामीण/नगरीय	आवासीय घर (आबाद)	कुल जनसंख्या (सत्यागत व आवासहीन सहित)		
				कुल	पुरुष	महिलाएं
	1	2	3	4	5	6
	पाली जिला	कुल ग्रामीण नगरीय	278003 218190 59813	1486432 1163085 323347	759816 589854 169962	726616 573231 153385
1	जैतारण	कुल ग्रामीण नगरीय जैतारण नौमाज	29433 24373 2539 2521	164036 134851 14532 14653	84305 69221 7623 7461	79731 65630 6909 7192
2	रायपुर	कुल ग्रामीण नगरीय रायपुर	26886 24631 2255	144710 132128 12582	73820 67364 6456	70890 64764 6126
3	सोजत	कुल ग्रामीण नगरीय सोजत रोड (कस्बा) सोजत सिटी	32535 25241 1647 5647	170646 131378 9100 30168	86817 66535 4694 15588	83829 64843 4406 14580
4	पाली	कुल ग्रामीण नगरीय पाली (नगर परिषद)	41330 15600 25730	221382 84540 136842	117421 43740 73681	103961 40800 63161
5	रोहट	कुल ग्रामीण नगरीय	13565 13565 0	81290 81290 0	41822 41822 0	39468 39468 0
6	खारची (मारवाड़ जक्शन)	कुल ग्रामीण नगरीय मारवाड़ ज (कस्बा)	32145 30170 1975	164492 154855 9637	83088 78087 5001	81404 76768 4636
7	देसूरी	कुल ग्रामीण नगरीय सादही	20751 16703 4048	106520 85369 21151	53145 42543 10602	53375 42826 10549
8	रानी	कुल ग्रामीण नगरीय रानी	19663 17906 1757	103661 94105 9556	51918 46950 4968	51743 47155 4588
9	बाली	कुल ग्रामीण नगरीय बाली फालना	33999 28179 2782 3038	180832 149232 15446 16154	91567 75114 7966 8487	89265 74118 7480 7667
10	सुमेरपुर	कुल ग्रामीण नगरीय सुमेरपुर तखतगढ	27696 21822 3671 2203	148863 115337 21221 12305	75913 58478 11229 6206	72950 56859 9992 6099

पाली जिला 6 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाएँ एवं साक्षर जनसंख्या

क्रं स	जिला/पंच समिति/ नगर/कस्बे	कुल/नगरीय/ ग्रामीण	0-6 वर्ष आयु की जनसंख्या			साक्षरता		
			कुल	बालक	बालिकाएँ	कुल	पुरुष	महिला
	1	2	3	4	5	6	7	8
	पाली जिला	कुल ग्रामीण नगरीय	291892 228898 62994	153940 120850 33090	137952 108048 29904	429609 281435 148174	329716 228066 101650	99893 53369 46524
1	जैतारण	कुल ग्रामीण नगरीय जैतारण नीमाज	33334 27263 3006 3065	17479 14299 1559 1621	15855 12964 1447 1444	38160 28019 6119 4022	31543 23938 4425 3180	6617 4091 1694 842
2	रायपुर	कुल ग्रामीण नगरीय रायपुर	29927 27461 2466	15756 14488 1268	14171 12973 1198	34625 29952 4673	28833 25357 3476	5792 4595 1197
3	सोजत	कुल ग्रामीण नगरीय सोजत रोड सोजत सिटी	33863 26314 1743 5806	17912 13962 910 3040	15951 12352 833 2766	52379 34220 4724 13435	40852 28375 3085 9392	11527 5845 1639 4043
4	पाली	कुल ग्रामीण नगरीय पाली (न.प.)	44167 16612 27555	23538 8894 14644	20629 7718 12911	86140 18647 67493	61305 15760 45545	24835 2887 21948
5	रोहट	कुल ग्रामीण नगरीय	16552 16552 0	8751 8751 0	7801 7801 0	17478 17478 0	15104 15104 0	2374 2374 0
6	खारची (मारजं)	कुल ग्रामीण नगरीय मारजं	31888 30060 1828	16730 15805 925	15158 14255 903	43710 38693 5017	34984 31704 3280	8726 6989 1737
7	देसूरी	कुल ग्रामीण नगरीय सादडी	20623 16592 4031	10749 8715 2034	9874 7877 1997	28676 21568 7108	21946 16818 5128	6730 4750 1980
8	रानी	कुल ग्रामीण नगरीय रानी	19824 18121 1703	10533 9628 905	9291 8493 798	30568 25452 5116	22700 19352 3348	7868 6100 1768
9	बाली	कुल ग्रामीण नगरीय बाली फालना	34346 28688 2847 2811	18036 15058 1513 1465	16310 13630 1334 1346	51635 36852 6884 7899	37639 27570 4779 5290	13996 9282 2105 2609
10	सुमेरपुर	कुल ग्रामीण नगरीय सुमेरपुर तखतगढ़	27368 21235 4012 2121	14456 11250 2082 1124	12912 9985 1930 997	46238 30554 10538 5146	34810 24088 7125 3597	11428 6466 3413 1549

बन्दे मातरम्

पाँच अशेष चरण 4

बन्दे मातरम्

पचायत समिति, बाली

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पचा चा न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आमलियाँ	916	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	-	-	-
2	अरडवा	373	-	प्रा वि	-	-	-	-
3	बमणिया	805	-	प्रा वि	-	-	-	-
4	बरावल	348	-	प्रा वि	-	-	-	-
5	बारवा	2427	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
6	बोजापुर	5370	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	आ औ	चि	डाक/टेली	-
7	बीरोलिया	827	-	प्रा वि	-	-	-	-
8	बिसलपुर	4432	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि	ने चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
9	बेडा	8074	ग्रा प	उ मा वि/क उ/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
10	बेडल	869	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
11	भागली	459	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	भन्दर	4111	ग्रा प	मा वि/क प्रा/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
13	भाट्टन्द	3798	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि/आ	-	डाक	मा ग्रा बैं
14	भीमाणा	5317	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक	मा ग्रा बैं
15	भीटवाडा	1457	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
16	बिलिया	534	-	प्रा वि	-	-	-	-
17	बोया	1996	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
18	चामुण्डेरी (मेड)	339	-	प्रा वि	-	-	-	-
19	चामुण्डेरी (राणा)	6101	ग्रा प	मा वि/ प्रा वि	चि/आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
20	दानवारली	592	-	प्रा वि	-	-	-	-
21	दातीवाडा	1307	-	प्रा वि	-	-	-	-
22	धाणदा	740	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	धणो	1650	ग्रा प	उ प्रा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
24	डुगली	1314	-	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	टेली	-
25	दूदनी	1825	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
26	फतापुरा	578	-	प्रा वि	-	-	-	-
27	गोरीया	1656	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र/आ	-	डाक	-

संकेत

ग्रा प	=	ग्राम पचायत	उ मा वि	=	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	आ	=	आयुर्वेदिक औषधालय
न पा	=	नगर पालिका	डाक	=	डाकघर	ने चि	=	नेत्र चिकित्सालय
न प	=	नगर परिषद्	टेली	=	टेलीफोन केन्द्र/सुविधा	मा ग्रा बैं	=	मारवाड नगरीय बैंक (एम जी बी)
प्रा वि	=	प्राथमिक विद्यालय	चि	=	चिकित्सालय	सह बैं	=	सहकारी बैंक
उ प्रा वि	=	उच्च प्राथमिक विद्यालय	उप केन्द्र	=	चिकित्सा उपकेन्द्र	स स	=	सहकारी समिति (जी एम एम)
मा वि	=	माध्यमिक विद्यालय	प्रा स्वा	=	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	जय बैं	=	स्टेट बैंक ऑफ़ बीरनेर
क	=	कन्या					=	एण्ड जयपुर (एम बी जी)

1	2	3	4	5	6	7	8	9
28	गुडा देवीसिंह	128	-	प्रा वि	-	-	-	-
29	गुडा गुमानसिंह	737	-	प्रा वि	-	-	-	-
30	गुडा कल्याणसिंह	478	-	प्रा वि	-	-	-	-
31	गुडालास	1086	प्रा पं	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	-	-
32	जादरी	603	-	प्रा वि	-	-	-	-
33	जीवदा	680	-	प्रा वि	-	-	-	-
34	कामदहा	866	-	प्रा वि	-	-	-	-
35	कागने	369	-	प्रा वि	-	-	-	-
36	काकराडी	697	प्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	-	-	-
37	करनग	1254	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
38	हिरौला	202	-	प्रा वि	-	-	-	-
39	केसपुर	511	-	प्रा वि	-	-	-	-
40	खोमेल	4027	प्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	उप केन्द्र/आ	-	डाक/टेली	मा प्रा वै
41	खेवरली	1076	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
42	खिन्दावा	390	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	कौनवाडा	440	-	प्रा वि	-	-	-	-
44	कुरण	1374	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	कारवा	476	-	प्रा वि	-	-	-	-
46	कोठार	1880	प्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र/आ	-	डाक/टेली	-
47	कोटडा	160	-	प्रा वि	-	-	-	-
48	कोर भालियान	2422	प्रा पं	मा वि/क प्रा/प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
49	कोयलवाव	3753	प्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
50	कुमटिया	913	प्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
51	लातराई	1594	-	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
52	लाटाडा	2545	प्रा पं	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
53	लुनका	3942	प्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	वि	-	डाक/टेली	मा प्रा वै
54	लुन्दाडा	2147	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
55	मालारी	684	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
56	मालनू	1927	प्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
57	माताजी वाडा	1021	-	प्रा वि	-	-	-	-
58	मिर्गेश्वर	420	प्रा पं	प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
59	मोखमपुर	1757	प्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	-
60	मोरी	787	-	प्रा वि	-	-	-	-
61	मुण्डारा	6489	प्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा प्रा वै
62	नाम	8051	प्रा पं	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा प्रा वै
63	पादरला	1093	प्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
64	पाचलवाडा	838	-	प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
65	पातावा	720	-	प्रा वि	-	-	-	-
66	पैवा	1429	प्रा प	उ प्रा वि/प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
67	पालना गाँव	2298	प्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
68	पुनडिया	643	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
69	रमगियाँ	226	-	प्रा वि	-	-	-	-
70	रघुनाथपुरा	1050	-	प्रा वि	-	-	-	-
71	सादलवा	92	-	प्रा वि	-	-	-	-
72	सादडा	1275	-	प्रा वि	चि	-	-	-
73	साभरवाडा	731	-	प्रा वि	-	-	-	-
74	सरखेजडा	86	-	-	-	-	-	-
75	सेला	1368	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
76	सेणा	921	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	उप केन्द्र	-	-
77	सेन्दला	2406	-	प्रा वि	-	-	-	-
78	सेसली	1900	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
79	सेवाडी	7070	ग्रा प	उ मा वि./क मा वि./प्रा वि	चि आ	उप केन्द्र	डाक/टेली	मा ग्रा बै
80	शिवतलाब	1510	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
81	सोकडा	656	-	उ प्रा वि	-	-	टेली	-
82	टीपरी	543	-	प्रा वि	-	-	-	-
83	उडीबेरी	1210	-	प्रा वि	-	-	-	-
84	वेलार	960	-	प्रा वि	-	-	-	-
85	बाली	15446	न पा	उ मा वि./क उ मा वि./ क प्रा वि./प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बै एस बी बी जे मा ग्रा बै
86	फालना-खुडाला	16154	न पा	स्ना का व उ मा वि./प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बै
87	रामबावडी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
88	करनवा	-	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
89	पीपला	2102	-	प्रा वि	-	-	-	-
90	नाणा स्टे	-	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
91	कुण्डाल	1529	-	प्रा वि	-	-	-	-
92	मारी स्टे	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
93	बेरडी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
94	वीरमपुरा	1244	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
95	लालपुरा	516	-	प्रा वि	-	-	-	-
96	चिमनपुरा	685	-	प्रा वि	-	-	-	-
97	छोटी दूदनी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
98	भारला ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
99	भीलबस्ती नाणा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
100	उपरला भीमाणा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
101	मालदर की बस्ती	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
102	रेला बेदा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
103	चिगटा भाटा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
104	पाटरीया की ढाणी	-	-	-	-	-	-	-

आजादी की लड़ाई के महान्
सपूत वीरो का हार्दिक अभिनन्दन ।

दिलखुशभाई रूपचंदजी दोशी
सेवाडी (जि पाली)

राष्ट्र के अमर शहीदों को
कोटि कोटि वन्दन ।

सागरमल घी सोलकी, एस ई एम
(लूनावा निवासी)

मेसर्स भीकमचंद भवूतमल एण्ड क
217 गुलालवाडी गोडी जी की चाल बम्बई-2
फोन 8515138/8518091/8512073

अज्ञानता गुलामी की जड है।
शिक्षा से ही राष्ट्र का विकास है।

हार्दिक अभिनन्दन के साथ
अचल चंद फरसाजी सुथार
म पो सेवाडी (पाली)

ग्राम विकास के लिए समर्पित
स्वर्गीय श्री भीकमचंद जी जैन

पूर्व सरपच - ग्राम सेवाडी की
पावन स्मृति मे
- परिवार जन

“स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।”
- लोकमान्य तिलक

पाली जिले के शहीद वीरो को
कोटिश वन्दन ।

सोहनलाल लादाजी सुथार
(सेवाडी वाला)
4-17 रमेश नगर जयभवानी माता मार्ग
अधेरी(पश्चिम), बम्बई- 400 058

“विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा”

हार्दिक शुभकामनाओ सहित
मोहलाल बी सुराणा (सेवाडी)
मेसर्स मोहन मेटल मार्ट
ताज बिल्डिंग अगस्त क्रांति मार्ग,
बम्बई- 400 036 फोन 364796

पचायत समिति, सुमेरपुर

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पंचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आकदडा	902	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
2	अणगोर	779	-	प्रा वि	-	-	-	-
3	अनोपपुरा	1018	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
4	बाबा गाँव	1825	-	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
5	बलाना	3294	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
6	बलुपुरा	866	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
7	बलवना	3902	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	टेली	-
8	बामनेरा	776	ग्रा प	प्रा वि	सब सेन्टर	-	-	-
9	बागडा	912	-	प्रा वि	-	-	-	-
10	बाकली	4536	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	प्रा स्वा	-	डाक/टेली	मा प्रा बैं
11	बडगावडा	1265	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
12	बडली	444	-	प्रा वि	-	-	-	-
13	बसन्त	2430	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
14	बोरामी	2698	ग्रा प	उ प्रा वि/क उ प्रा वि	सब सेन्टर	-	डाक	-
15	बोट्टडा	1389	-	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
16	भाबुन्दा	1485	-	उ प्रा वि	सब सेन्टर	-	टेली	-
17	भारून्दा	3129	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	-	डाक/टेली	-
18	बीठिया	752	-	प्रा वि	-	-	-	-
19	चाणोद	5429	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा प्रा बैं
20	दौलपुरा	808	-	प्रा वि	-	-	-	-
21	देवतरा	848	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
22	धणा	1401	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
23	धनापुरा	968	-	प्रा वि	-	-	-	-
24	डोला जागीर	1744	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
25	डोला सासण	823	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
26	दुजाणा	4947	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	सब सेन्टर/आ	-	डाक/टेली	-
27	फतापुरा	441	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
28	गलथनी	1223	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
29	गोगरा	1117	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	-
30	गुडिया	687	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
31	हींगेला	1549	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
32	जाखोडा	1943	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	टेली	-
33	जाणा	1040	-	प्रा वि	-	-	-	-
34	कानपुरा	1471	-	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
35	केनपुरा	211	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
36	खागाडी	586	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
37	खीमाडा	1694	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
38	खिन्दाका गाँव	291	-	प्रा वि	-	-	-	-
39	खेडामाखी	1201	-	प्रा वि	-	-	-	-
40	खीवन्दी	4892	ग्रा पं	मा वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा प्रा वै
41	कोलीवाडा	1989	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
42	कोरटा	2428	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
43	कोसेलाव	6213	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा प्रा वै
44	स्तापोद	1500	ग्रा प	उ प्रा वि	उप के चि	-	डाक/टेली	-
45	मोरडू	340	-	प्रा वि	-	-	-	-
46	नवाखेडा	805	-	प्रा वि	-	-	-	-
47	नेतरा	1224	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
48	पालडी	3493	ग्रा प	उ प्रा वि/क उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
49	नोवी	3138	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
50	पराखीया	803	-	प्रा वि	-	-	-	-
51	भावा	5104	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
52	पीचावा	1524	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
53	पोमावा	2505	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
54	पोयना	427	-	प्रा वि	-	-	-	-
55	पुराडा	2239	-	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
56	राजपुर	1118	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
57	रामनगर (जीवनरास)	630	-	प्रा वि	-	-	-	-
58	रोजडा	992	-	प्रा वि	-	-	-	-
59	सालीदडीया	981	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	-
60	साण्डेराव	7035	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
61	सिन्दरू	2190	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
62	सोनपुरा	273	-	प्रा वि	-	-	-	-
63	वेनपुर	630	-	प्रा वि	-	-	-	-
64	सुमेरपुर	21221	न पा	उ मा वि/क उ प्रा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम बी बी एस बी बी जे
65	तखतगढ	12305	न पा	उ मा वि/क उ प्रा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	सह बैंक एम बी बी जे
66	रूपनगर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
67	मसदेवा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
68	पटेलनगर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
69	बाभूनगर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
70	पावा की दाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
71	पदमपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
72	जाखानगर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
73	जवाई बाँध	-	-	उ प्रा वि	-	सब सेर/अ	डाक/टेली	-

**“विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा”**

परसराम (पूर्व सरपच, लूनावा)

आजादी के वीर सपूतो को प्रणाम करते हैं।

मैसर्स हरिश्चंद्र हनुमानप्रसाद अग्रवाल

(हनुमान ब्राड सरसो के तेल के निर्माता)

मु पो लूनावा (बाया-बाली)

टेलीफोन 21

**पाली जिले के स्वतंत्रता सेनानियों
का हार्दिक अभिनन्दन ।**

मूलचद सी जेन (ग्राम-बेडा)

सोजन्य

सेठ श्री चन्दुलालजी पूनमचदजी

बडावाल हाल

323, गणपतराव कदम मार्ग

लोअर परेल, बम्बई- 400 013

**सामती जुल्मो के विरुद्ध अनवरत संघर्ष
करने वाले भारत के वीर सपूतो को
कोटि कोटि वन्दन ।**

देवशंकर व्यास (बोया निवासी)

मैसर्स ए-वन लोनावला चिक्की

बम्बई - पूना रोड, लोनावला- 410 401

फोन 2695

**सामती शोषण के विरुद्ध किसानों और
मजदूरों के साथी-सेनानी, ग्राम विकास
के लिए समर्पित**

श्री मीठालाल मेहता

(खीमेल निवासी)

पाली जिले के स्वतंत्रता सेनानियों का
अभिनन्दन करते हैं।

**“वे कम धज कांदा रोटी खा, मरुधर ने माथा देता,
कटका मे लडता अर लाडचा सू जुग जुग अलगा रेता।
वे धन धरा धरम पथ साचा, जुग जुग फरज बजायो,
वा सिर दे नाक बचायो।।”**

ऐसे ही वीर सपूतो का वन्दन करते हैं,

अध्यक्ष, मंत्री एवं सदस्यगण

राजस्थान सेवा परिषद्- बम्बई

सौजन्य- हीरालाल मालवीया (बाली निवासी)

17बी, हरि निवास, पहला माला, 20 गोवालिया टेक रोड,

बम्बई-36

**“प्राण मित्रो भले ही गँवाना,
पर न झण्डा यह नीचे झुकाना”**

मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए प्राण न्योछावर
करने वाले वीरों को कोटि कोटि वन्दन ।

प्रधान, सरपच एवं सदस्यगण

पचायत समिति, सुमेरपुर (पाली)

पचायत समिति, देसूरी

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	दादाई	2497	ग्रा प	मा वि./क वि./प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
2	कोटडी	1258	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
3	अना	2086	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	-	डाक	-
4	भोरख	1530	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
5	सिन्दरली	1522	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
6	बडोद	625	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	आ	-	-	-
7	ढालोप	1175	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	-
8	दूदापुरा	863	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
9	घणेरव	5985	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि./प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा प्रा बैं
10	मादा	2580	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि./प्रा वि	आ	-	डाक/टेली	-
11	माणडीगढ	1260	ग्रा प	प्रा वि	आ	-	डाक	-
12	नारलाई	5748	ग्रा प	मा वि./क प्रा वि./प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा प्रा बैं
13	देसूरी	6877	ग्रा पं	उ मा वि./क उ प्रा./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा प्रा बैं एस बी बी जे
14	नाडोल	7529	ग्रा प	उ मा वि./क उ प्रा./प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा प्रा बैं
15	केसुली	1388	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
16	सुमेर	549	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
17	डायलाना कला	2086	ग्रा प	उ प्रा वि./क वि	चि आ	चि	डाक/टेली	-
18	खामोल	1866	ग्रा प	उ प्रा वि./क प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
19	मगर तलाव	998	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	-
20	पन्नीता	1754	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
21	कोट सोलकीयान	1546	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	-	डाक	-
22	अलसीपुरा	219	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	अणेवा	707	-	प्रा वि	-	-	-	-
24	आशापुरा	624	-	प्रा वि	-	-	-	-
25	अटटीया	836	-	प्रा वि	-	-	-	-
26	बाडा सोल	537	-	प्रा वि	-	-	-	-
27	चक सुजापुरा	106	-	प्रा वि	-	-	-	-
28	चक वरडीया	70	-	प्रा वि	-	-	-	-
29	छोडा	1006	-	प्रा वि	आ	-	-	-
30	डायलाना खुर्	670	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
31	डेलरी	180	-	प्रा वि	-	-	-	-
32	गन्धी	1342	-	उ प्रा वि	-	-	टेली	-
33	डिपराची	738	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
34	गुडा अखिराज	797		प्रा वि				
35	गुडा आसकरण	538		प्रा वि				
36	गुडा भोपसिंह	690		प्रा वि				
37	गुडा देवडा मेडीयान	1240		प्रा वि				
38	गुडा सोलकीयान	274		प्रा वि				
39	गुडा दुर्जन	256		प्रा वि				
40	गुडा गोपीनाथ	348		प्रा वि				
41	गुडा जाटन	1435		उ प्रा वि				
42	गुडा जेतावता	504		प्रा वि				
43	गुडा कला	116						
44	गुडा खोबा	156						
45	गुडा किटिया	96		-				
46	गुडा मागलिया	783	-	प्रा वि				
47	गुडा पाटीया	252		प्रा वि				
48	गुडा सुथारान	616		प्रा वि				
49	जोबा	624		प्रा वि				
50	डरणा	1605		उ प्रा वि				
51	काणा	750		प्रा वि				
52	करनवा	1461		उ प्रा वि				
53	मोडपुर	763	-	प्रा वि				
54	कोलर	708		उ प्रा वि				
55	मेवोकला	743		प्रा वि				
56	लाम्पी	747		प्रा वि				
57	मुलाणा	387	-	प्रा वि				
58	नवागुडा	266		प्रा वि			-	
59	पदपुरा	432		प्रा वि				
60	पृथ्वीराज गुडा	860		उ प्रा वि			डाक	
61	राजपुरा	1241	-	प्रा वि				
62	सादडी ग्रामीण	317		प्रा वि	-			
63	सासरी	855		प्रा वि		-		
64	सारगवास	359		प्रा वि	-	-		
65	सरधूर	1171		प्रा वि				-
66	सोभावास	379		प्रा वि				
67	सोनाणा	602	-	प्रा वि				-
68	तिखी	115	-					-
69	उन्दरधल	687	-	प्रा वि				-
70	विरमपुरा का	777		प्रा वि		-	-	-
71	विरमपुरा खाडियान	451		प्रा वि				

1	2	3	4	5	6	7	8	9
72	चारका	285	-	प्रा वि	-	-	-	-
73	सादडी	21 151	न पा	ठ मा वि/बा मा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा प्रा में यू को वें
74	काकतावास	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
75	प्रामीया कोलापी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
76	नया गाँव	505	-	प्रा वि	-	-	-	-
77	सखाणीमों	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
78	मेवी खुर्द	772	-	प्रा वि	-	-	-	-
79	छोटी खारची	173	-	प्रा वि	-	-	-	-
80	मेघवाना नगर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
81	प्रतापगढ (बाबा(यो सुपा)	-	-	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
82	रेगर कौलो देसूरी	-	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
83	रणकपुर	-	-	-	-	-	टेली	-
84	पतापठ	-	-	-	-	-	-	-
85	मुसाला महावीरजी	-	-	-	-	-	-	-

राष्ट्र की आजादी की लड़ाई में सादडी के सेनानियो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
ऐसे सभी राष्ट्र-भक्त वीरो का शत-शत वदन !

सौजन्य
अध्यक्ष एव सदस्यगण
नगरपालिका, सादडी (पाली)

“मरकर जीने की धुन इनको है लगी जहाँ के हक के लिए।
मिट जाने की खाहिश है इन आजादी के परवारों की।।”
ऐसे बहादुर राष्ट्र वीरो का शत शत वदन !

सौजन्य
प्रधान, सरपंच एव सदस्यगण
पंचायत समिति, देसूरी (पाली)

आजादी के संघर्ष में आहुति देने वाले
वीरो का हार्दिक अभिनन्दन !

श्री नवयुवक विकास मंडल
पो खीमाडा (देसूरी - राजस्थान)

सामती अत्याचारो और शोषण से पीडित
पिछडे वर्ग के सघर्षशील मसीहा

स्वर्गीय श्री अमरसिंहजी मीणा (ग्राम चामुन्डेरी)
की पावन-स्मृति मे नमन करते हैं, आजादी के लिए त्याग
व बलिदान करने वाले देशभक्तो का ।

समस्त मीणा परिवार, चामुन्डेरी (नाणा-स्टेशन)
(पाली-राजस्थान)

देशभक्त सपूतो का हार्दिक अभिनन्दन ।

देवाराम रावल ब्राह्मण

पूर्व सरपच

कोठार (बाली)

पाली - राजस्थान

“जे ग्लान परिचरई - ते मम् नाणं बुज्झई” - भगवान महावीर

मानव कल्याण के कार्यों मे समर्पित श्री राजमल एस जैन (बिसलपुर)
राष्ट्र के पुनरुद्धार मे लगे सभी सपूतो का अभिनन्दन करते हैं -

मैसर्स राजमल सुरेशकुमार एण्ड कम्पनी
80/84 दादीशेठ ग्यारी लेन, बम्बई-400 002

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :-

मैसर्स शिव स्टील वर्क्स

शेरछाप कृषि उपकरणों के निर्माता

ए-38 हरिश्चन्द्र माधुर नगर, फालना-306 116 फोन 11/126
राजि कार्यालय - 31 विजयदीप, रिंगरोड, बम्बई- 400 006
फोन 320599, 334884 टेलेक्स 11-73284

बाली के महान सपूत और स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय छोटमलजी सुराणा की
पावन स्मृति हमे राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु प्रेरणा देती है।

सौजन्य
मैसर्स खजाची ब्रदर्स
दादर (पश्चिम) बम्बई-28

सौजन्य
यस्तीमल मेहता
ऑल इन्डिया ट्रेडिंग कम्पनी
306, कालवा देवी रोड, बम्बई-2
फोन 311842

पचायत समिति, रानी

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टलाफोन	बँक
					मानय	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	भालपाई	1732	ग्रा प	मा वि./क प्रा./प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	स बै
2	बूसी	3382	ग्रा पं	मा वि./क प्रा./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा प्रा बै सह बै
3	चाचौडी	3222	ग्रा प	मा वि./क प्रा./प्रा वि	चि		डाक/टेली	सह बै
4	चागव्या	812	-	प्रा वि				
5	गुडा दुर्गादास	50						
6	गुडा खुनी	986		प्रा वि				
7	हितनखुडी	159		प्रा वि				
8	कल्याणपुरा	200		प्रा वि				
9	कीरवा	1702	ग्रा प	उ प्रा वि	आ		डाक/टेली	सह बै
10	खदुकडा	1249		प्रा वि			टेली	
11	खौड	5838	ग्रा प	उ मा वि./क प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	मा प्रा बै सह बै
12	माण्डल	2616	ग्रा प	उ प्रा वि./प्रा वि			डाक/टेली	सह बै
13	नादाणा भाटान	734	ग्रा पं	उ प्रा वि			डाक/टेली	
14	नवागुडा	834		प्रा वि			टेली	
15	निम्बाडा	1226	ग्रा प	उ प्रा वि	चि		डाक/टेली	
16	पादरलो तुर्कान	431		प्रा वि				
17	प्रतापगढ	821		प्रा वि				
18	सेदरीया	471	ग्रा प	प्रा वि				
19	आकडाव्यास	505	-	प्रा वि				
20	वरकाना	1698	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि		डाक/टेली	
21	चररी	235		प्रा वि				
22	भादरलाउ	1225	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ		डाक	
23	भगवानपुरा	923		प्रा वि			टेली	
24	बिजोया	4940	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	
25	बिगरला	733		प्रा वि				
26	बोलाकुण्डा	888	-	प्रा वि			टेली	
27	बोरडी	1027		उ प्रा वि			टेली	
28	देवली	1779	ग्रा प	उ प्रा वि./क पू		चि		
29	झारिया	1262	ग्रा प	उ प्रा वि				
30	दोलजी का गुडा	42				-		
31	दूदवर	564	-	प्रा वि			-	
32	दुठारिया	1775		प्रा वि			डाक	
33	एलानी	158						

1	2	3	4	5	6	7	8	9
34	गजनीपुर	1073	ग्रा प	उ प्रा वि./क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
35	गावाडा	1428	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
36	घेनडी	2040	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
37	गुडा भीमसिंह	205	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
38	गुडा गगा	131	-	-	-	-	-	-
39	गुडा जैतसिंह	1075	-	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
40	गुडा कैशरसिंह	441	-	प्रा वि	-	-	-	-
41	गुडा मेघसिंह	98	-	-	-	-	-	-
42	गुडा मेहराम	543	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	गुडा रूपसिंह	550	-	प्रा वि	-	-	-	-
44	गुडा ठाकुरजी	714	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	इन्दर बाडा	1267	ग्रा प	प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
46	इन्दरा चारगान	1474	ग्रा प	प्रा वि./क प्रा वि	-	-	डाक	-
47	इन्दरा मेड	1936	ग्रा प	उ प्रा वि./क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
48	जवाली	3378	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	मा प्रा बै
49	जीवन्द कला	1896	ग्रा प	उ प्रा वि./क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
50	जीवन्द खुर्द	280	-	-	-	-	-	-
51	कैरली	599	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
52	खारडा	1684	-	प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
53	खिवाडा	4749	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा प्रा बै
54	किशनपुरा	2133	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
55	गदान जोधान	390	-	प्रा वि	-	-	-	-
56	नीपल	2232	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
57	ओठवाडिया	193	-	प्रा वि	-	-	-	-
58	पादरली सिपलाय	377	-	प्रा वि	-	-	-	-
59	पीलोवनी	2276	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
60	पुनाडिया	1455	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
61	रवाडीया बस	545	-	प्रा वि	-	-	-	-
62	रायपुरिया	1115	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
63	रामजी का गुडा	790	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
64	रानी कला	3699	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा प्रा बै
65	रूगडी	719	-	प्रा वि	-	-	-	-
66	सालरिया	1305	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
67	सावलता	1058	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
68	सेपटावास	527	-	प्रा वि	-	-	-	-
69	सिवास	2097	ग्रा प	उ प्रा वि./क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
70	टोकरला	925	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
71	वणदार	1327	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
72	रानी	9556	न पा	उ मा वि./क उ प्रा/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	रा बै
73	सोमेसर	704	-	मा वि./प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-

पाली जिले मे ग्रामीण क्षेत्र मे औद्योगिकरण के जन्मदाता
स्वर्गीय श्री सागरमलजी चोपडा
की पुण्य-स्मृति के साथ राष्ट्रीय-भक्तो का
अभिनन्दन करते हैं ।

मैसर्स फुटेक्स अम्ब्रेला मेन्यु क (प्रा) लिमि
औद्योगिक क्षेत्र फालना फोन 9 180,167

बम्बई कार्यालय

82/84 रामलाल विल्डिग नई हनुमान गली बम्बई-2
फोन 312823/317207

“सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ता हमारा,
हम बुलबुले हें इसकी, यह गुलिस्ताँ हमारा”

राष्ट्र की आजादी के लिए सघर्ष करने वाले
पाली जिले के सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन ।

मैसर्स खालसा मोटर्स - फालना-306 116
फोन 131, 231 निवास 15

सरदार जगत सिंह खालसा

“राष्ट्र की आजादी को सुदृढ करने के लिए आवश्यक हे -
औद्योगिक विकास”

हार्दिक शुभकामनाओ सहित

मैसर्स मिनरल ओरिएन्टल लि.

(मार्बल एण्ड ग्रेनाइट खान मालिक एवं सभी तरह की टाइल्स के विक्रेता)

ए-36 औद्योगिक क्षेत्र फालना- 306 116

रजि कार्यालय- 9/1 आर एन मुकजी रोड कलकत्ता

फैक्ट्री - ग्राम- मोरचना पो पासुन्द (उदयपुर)

फोन 112 (काकरोली)

“विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा”

का सुर अलापते हुए जिन वीर स्यूतो ने प्राणो की बली दी,
उन सेनानियो का नमन् ! श्रद्धाजलि !

अध्यक्ष एवं सदस्यगण

खुडाला-फालना नगरपालिका

फालना (राजस्थान)

“मुल्क ने मोट्यारो माथा देणा पडसी, देस ने दीवाणा माथा देणा पडसी ।
आवो अपणो देस उबारो, भारत माँ रो भार उतारा, सिर दे नाक बचावा-मुल्क ने मोट्यारा”

- श्री गणेशीलाल 'उस्ताद'

मैसर्स महावीर मेटल मेन्यु क , नई हनुमान गली, बम्बई-2

फोन 298852,298827

फैक्ट्री औद्योगिक क्षेत्र, फालना- 306 116 फोन 25/198

पंचायत समिति, जैतारण

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पंचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आगेवा	2872	ग्रा प	मा वि/क वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
2	आकोदिया	305	-	प्रा वि	-	-	-	-
3	अमरपुरा	1130	-	प्रा वि	-	-	-	जी एस एस
4	आनन्दपुरा कालू	8112	ग्रा प	उ मा वि/उ क वि/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	जी एस एस सह बैं
5	कोटडिया	1124	-	प्रा वि	-	-	-	-
6	आसरलाई	2437	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
7	बलाडा	3440	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
8	बलुपुरा	389	-	प्रा वि	-	-	-	जी एस एस
9	बलुन्दा	5776	ग्रा प	मा वि/क प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	एस जी एस जी एस एस
10	बाजाकूडी	1795	ग्रा प	उ प्रा	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
11	बाकास	375	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	बासी चौनपुरा	780	-	-	-	-	-	-
13	बीकरलाई	922	-	प्रा वि	-	-	-	-
14	बेडकला	2242	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	जी एस एस
15	बेड खुर्द	375	-	-	-	-	-	-
16	भाखर वासनी	21	-	-	-	-	-	-
17	भाकटवास	787	-	प्रा वि	-	-	-	-
18	भूबालिया	2082	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
19	विरामपुरी	411	-	प्रा वि	-	-	-	-
20	बिरोल	1449	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एस एस
21	बोगासनी	206	-	प्रा वि	-	-	-	-
22	जैतारणचक	195	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	चावण्डिया	2239	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	-	जी एस एस
24	यागला	421	-	प्रा वि	-	-	-	-
25	देवरिया	3286	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एस एस
26	बेवरिया	171	-	प्रा वि	-	-	-	-
27	घनेरिया	1653	-	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
28	डिगरणा	1824	ग्रा प	उ मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
29	फालका	2323	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
30	गागलिया	295	-	प्रा वि	-	-	-	-
31	गरनिया	2043	ग्रा प	उ मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस

1	2	3	4	5	6	7	8	9
32	धोडावर	1239	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
33	ग्यास	5212	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
34	हिमोिनिया	177	-	प्रा वि	-	-	-	-
35	हुनावासकला	612	-	प्रा वि	-	-	-	-
36	हुनावास खुर्द	414	-	प्रा वि	-	-	-	-
37	जाजनवास	901	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
38	सनासनी	251	-	ग्रा वि	-	-	-	-
39	जोधावाल	145	-	प्रा वि	-	-	-	-
40	जुज डा	1095	-	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक	-
41	कापावास	305	-	प्रा वि	-	-	-	-
42	काणेचा राणावतान	1304	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
43	कावलिया	1545	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एम एस
44	काटोतिया	439	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	कट्टोर दयालपुर	1055	-	प्रा वि	-	-	-	-
46	केकिन्दडा	1413	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
47	खराडी	1657	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
48	खारचिया	876	-	प्रा वि	-	-	-	-
49	खातीखेडा	39	-	-	-	-	-	-
50	खीन्दावास	273	-	प्रा वि	-	-	-	-
51	खेडा महाराजपुर	734	-	प्रा वि	-	-	-	-
52	खेडा मोलावास	1719	-	प्रा वि	-	-	-	-
53	खेडा नैनपुर	75	-	-	-	-	-	-
54	खिनवाडी	1176	-	प्रा वि	-	-	-	-
55	कुडकी	3329	ग्रा प	मा वि/क प्रा/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
56	लाय्यासनी	100	-	प्रा वि	-	-	-	-
57	लाम्बिया	4168	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एस एस
58	लासनी	625	-	प्रा वि	-	-	-	-
59	लिखमणिया	163	-	प्रा वि	-	-	-	-
60	लितारिया	691	-	प्रा वि	-	-	-	-
61	लौटोली	2235	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एस एस
62	लुम्बडावास	177	-	-	-	-	-	-
63	मालपुरिया	580	-	प्रा वि	-	-	-	-
64	मोडराई	1513	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
65	मुण्डावा	546	-	प्रा वि	-	-	-	-
66	निम्बेडा खुर्द	680	-	प्रा वि	-	-	-	-
67	निम्बोल	2840	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
68	ओडावास	323	-	-	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
69	पालियास	604	-	प्रा वि	-	-	-	-
70	पातुस	298	-	प्रा वि	-	-	-	-
71	पाटवा	2791	-	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
72	पीपलिया	1338	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
73	पीपाडा	359	-	प्रा वि	-	-	-	-
74	फूलमाल	1152	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
75	प्रतापपुरा	466	-	प्रा वि	-	-	-	-
76	पृथ्वीपुरा	814	-	उ प्रा वि	-	-	टेली	-
77	खाडियास	2060	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
78	राजदाडा	1097	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
79	रामावास कलापूर्व	776	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
80	रामावास खुर्द	765	-	प्रा वि	-	-	-	-
81	रानी नाल	905	-	प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
82	रास	7499	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
83	सागावास	1526	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
84	समीरवी	597	-	प्रा वि	-	-	-	-
85	सेवरिया	2550	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
86	सिनला	1033	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
87	तालकिया	1051	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
88	टीवडी	324	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
89	ठाकरवाल	719	-	प्रा वि	-	-	-	-
90	तिगरा	129	-	प्रा वि	-	-	-	-
91	टूकडा	1099	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	जी एस एस
92	जैतारण	14432	न या	उ मा वि/क उ वि/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
93	नीमाज	14653	न पा	उ मा वि/क उ वि/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
94	हनुमानजी की बावडी	195	-	प्रा वि	-	-	-	-
95	पटेलो की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
96	मालियों की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
97	काकडिया की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
98	हुगली की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
99	कोटडिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
100	चेनपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
101	गुडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
102	दयालपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
103	पाटन	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
104	भीमगढ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
105	बगतपुर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
106	कान्याछेडी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
107	रावतों की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
108	ओडायास खर्द	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
109	बकतावर पुर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
110	बरसी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
111	गुजरोँ की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
112	लिलदिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
113	भोखडा बेरा कात्	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
114	सम्कृत छेडा शम	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
115	हालियोँ की बाड	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
116	डोडाबोरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
117	फीडर स्कूल बलूना	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
118	हेम डाई	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
119	गणेशपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
120	राईकोँ की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
121	निम्बेडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
122	विजयगढ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
123	सम्कृत छेडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

“तुम्हारा नाम अमर हे दिलो की दुनिया मे, तुम्हारे नाम को दुनिया पिटा नहीं सकती, दीये जो जलाये हैं तुमने खून से अपने, उन्हे जमाने की आधी बुझा नहीं सकती।”

निम्बाज के वीर सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन ।

अध्यक्ष एव सदस्यगण

नगरपालिका, निम्बाज (पाली)

मारवाड लोक परिषद् ने उत्तरदायी शासन का सर्वप्रथम शख बजाया ग्राम खोड मे। स्वतन्त्रता के लिए सकल्प बद्ध सेनानियो का शत् शत् नमन ।

सौजन्य

मोहनलाल मेहता (निवासी खोड)

मैसर्स श्रीपाल बिल्डर्स

51/53, चिठ्ठलवाडी चम्बई-400 002 टेलीफोन 310078/255143

पचायत समिति, मारवाड जक्शन

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पचा या न या	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	अरवावास	612	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
2	आगदोप	974	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
3	आसन डाकनिया	148	-	-	-	-	-	-
4	आसन जोधवाल	317	-	प्रा वि	-	-	-	-
5	आसन मेलडा	106	-	प्रा वि	-	-	-	-
6	आऊवा	4022	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	एम जी बी बी एस एस सह बै
7	बाडिया	850	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
8	बाडसा	1673	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
9	बाली	776	-	प्रा वि	-	-	-	-
10	बानियामाली	423	-	प्रा वि	-	-	-	-
11	बासोर	741	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	बाता	3812	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	जी एस एस
13	बडी	778	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
14	वासनी	959	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
15	भगोडा	1265	ग्रा प	प्रा वि	-	-	टेली	जी एस एस
16	भीवली	449	-	प्रा वि	-	-	-	-
17	भोवावास	425	-	प्रा वि	-	-	-	-
18	भीमालिया	1963	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एम एम
19	बिठोडा कला	2209	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
20	बिठोडा खुर्द	398	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
21	बोगला	535	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
22	बोपाटी	2572	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	-	चि	डाक/टेली	जी एस एस
23	बोटीमादा	1250	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
24	बोरनडी	765	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
25	चौकडिया	1024	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
26	चवाडिया	810	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
27	चेलावास	1654	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
28	चिरपटिया	2188	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
29	दादिया	725	-	प्रा वि	-	-	-	-
30	देवली	2942	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा प्रा बै ग्रा म सं
31	ढाल	568	-	प्रा वि	-	-	-	-
32	धामली	2504	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा म ग

1	2	3	4	5	6	7	8	9
		4080	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा प्रा वै ग्रा स सं
33	धनला		-	प्रा वि	-	-	-	-
34	वेलपुग	343	-	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
35	धुधला	2645	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
36	डिगोर	479	-	उ प्रा वि	वि आ	वि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
37	दुदोड	3167	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
		1806	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
38	गागना	442	-	प्रा वि	-	-	-	-
39	गोदावास	274	-	प्रा वि	-	-	-	-
40	गोपावास	873	-	प्रा वि	-	-	-	-
41	गुडागडी	467	-	प्रा वि	-	-	-	-
42	गुडा अजवा	435	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	गुडा माया	269	-	प्रा वि	-	-	-	-
44	गुडा भोपत	335	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	गुडा धमावत	390	-	प्रा वि	-	-	-	-
46	गुडा दुर्जन	258	-	प्रा वि	-	-	-	-
47	गुडा गागा	184	-	-	-	-	-	डाक
48	गुडा हिमता	163	-	-	-	-	-	ग्रा स सं
49	गुडा हिन्दू	1863	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	-
50	गुडा केसरसिंह	284	-	प्रा वि	-	-	-	-
51	गुडा मेहकरण	263	-	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स सं
52	गुडानवा	1328	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स सं
53	गुडा रामसिंह	1022	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
54	गुडा सूरसिंह	383	-	-	-	-	-	-
55	हलावट	471	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
56	हमीर वास	563	-	प्रा वि	-	-	-	-
57	हेमलियावास कला	1369	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	ग्रा स सं
58	हेमलियावास खुर्द	606	-	प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स सं
59	हिंगोला कला	528	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
60	हिंगोला खुर्द	1893	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	-
61	ईसाली	391	-	-	-	-	-	डाक/टेली
62	जाडन जागीर	2069	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	मा प्रा वै ग्रा स सं
63	जाडन खालसा		-	-	-	-	-	मा प्रा वै
		699	-	प्रा वि	-	वि आ	-	टेली
64	जैतपुग	1419	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
65	जापुदा	855	-	प्रा वि	-	वि आ	-	-
66	जोगडावास	7150	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स सं/मा वै
67	जोजावर		-	-	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
68	जोडदुदोड	609	-	प्रा वि	-	-	-	-
69	कटालिया	6649	ग्रा प	मा वि./उ क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा ग्रा वै ग्रा स स
70	कराडी	1549	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
71	करमाल	515	-	प्रा वि	-	-	-	-
72	कारोल्या	525	-	प्रा वि	-	-	-	-
73	कारवाडा	497	-	-	-	-	-	-
74	खारची	4028	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा स स
75	खेडा कल्याणपुरा	134	-	-	-	-	-	-
76	कुशालपुरा	262	-	-	-	-	-	-
77	लीलावास	503	-	प्रा वि	-	-	-	-
78	मलसा/बावडी	2753	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
79	माडा	3411	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
80	भारवाड जक्शन	9637	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम जी बी
81	मैलाप	606	-	प्रा वि	-	-	-	-
82	मैलावास	1102	-	प्रा वि	-	-	-	-
83	मुसालिया	2270	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
84	नरसिंह पुरा	760	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
85	नया गाँव	470	-	प्रा वि	-	-	-	-
86	निमली माडा	2817	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
87	पाचेटिया	1640	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक	-
88	फूलिया	608	-	प्रा वि	-	-	-	-
89	फुलाद	1765	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
90	रडावास	1719	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
91	राडकालरा	839	-	प्रा वि	-	-	-	-
92	राजकीयावास कला	636	-	प्रा वि	-	-	-	-
93	राजकीयावास खुर्द	353	-	-	-	-	-	-
94	राजोला खुर्द	925	-	प्रा वि	-	-	-	-
95	राणावास	4652	ग्रा प	उ मा वि./क उ प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा वै ग्रा स स
96	ससानिया	680	-	प्रा वि	-	-	-	-
97	खेडिया	276	-	प्रा वि	-	-	-	-
98	खाटडी	1848	-	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
99	सारण	2923	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
100	सबसड	3879	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
101	सोचियावास	657	-	प्रा वि	-	-	-	-
102	सिरियारी	3766	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा ग्रा वै ग्रा स स

1	2	3	4	5	6	7	8	9
103	सेवाज	1916	ग्रा प	उ प्रा./क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
104	शेखावास	1649	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
105	सिधाना	941	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
106	सिनला	2026	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	ग्रा स स
107	सोडों की ढाणी	43	-	-	-	-	-	-
108	सुगालिया	301	-	प्रा वि	-	-	-	-
109	ठाकरवासा	1186	-	प्रा वि	-	-	-	-
110	तालका	234	-	प्रा वि	-	-	-	-
111	उपरली निम्बली	1007	-	प्रा वि	-	-	-	-
112	गुडा भोकम सिंह	890	-	प्रा वि	-	-	-	-
113	गुडा प्रेमसिंह	624	-	प्रा वि	-	-	-	-
114	राईकों की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
115	झोपडिया बाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
116	गोलाई की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
117	मुरडिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
118	बाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
119	झिझरी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
120	भौंझीसा का खोडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
121	गुडा रघुनाथसिंह	482	-	प्रा वि	-	-	-	-
122	कोलपुरा धनला	-	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
123	मुकनपुरा	32	-	प्रा वि	-	-	-	-
124	गुगदुर्गा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
125	राणा नाडी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
126	अजनी की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
127	निचली निम्बली	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
128	पुराना गाँव फुलाद	511	-	प्रा वि	-	-	-	-
129	वाणिया माली	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
130	शिव सागर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
131	आऊवा की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
132	काटू	477	-	प्रा वि	-	-	-	-
133	भागवान पुरा	789	-	प्रा वि	-	-	-	-
134	कोलपुरा थिखरिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
135	घोरेखर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
136	खेडिया खुर्द	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
137	पारडी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
138	समदडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
139	बेरा बिजोडिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
140	बेरा जालिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
141	सुरावास	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
142	बेरा डालिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
143	आसण आऊवा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
144	गुडाकला खावडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
145	कटालिया सरकमालिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
146	ददोडा बेरा बजूडिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
147	खोडिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
148	फूलया बेरा जालिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
149	डालियों की ढाणो मूसालिया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

आजादी के सघर्ष मे आहुति देने वाले वीरो
और देशभक्तो की जय हो !

सौजन्य

मेसर्स बॉम्बे ट्रेडिंग कम्पनी

18 जैन मंदिर रोड, बाद्रा, बम्बई-400 050

- निवेदक -

बख्तावरमल, कातिलाल, निर्मलकुमार
चाणोद (पाली)

खारची-क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियो का
हार्दिक अभिनन्दन !

सौजन्य

मेसर्स मेहता सावतराज हनवतराज

10 मुम्बा देवी रोड, दागीना बाजार

बम्बई- 400 002

दूरभाष-342707/329419

'शहीदो की चिताओ पर लगगे हर बरस मेले,
वतन पर मिटने वालो का, यही बाकी निशा होगा'

सौजन्य

मेसर्स अनराज मिश्रीमल भंडारी

मारवाड जक्शन (राजस्थान)

आजादी के लिए मर-मिटने वालो को
शत् शत् नमस्कार !

सौजन्य

मेसर्स एस उत्तमचंद एण्ड ब्रादर्स

मेसर्स के प्रकाश एण्ड कम्पनी

70/72 तेल गली, विठ्ठलवाडी बम्बई-2

दूरभाष - 290764/250253

**'हर दिल मे जिन्दा रहते है
आजादी पर मरने वाले'**

आजादी के शहीदों को शत् शत् वन्दन ।

सौजन्य

मैसर्स भैरव टेक्सटाइल्स

औद्योगिक क्षेत्र प्रथम
पाली (राजस्थान)

**"अज्ञानता, गरीबी और बेकारी से हमे लडना है,
क्योंकि ये ही स्वतंत्रता की दुश्मन हैं।
आइये, आजादी के वीर सेनानियो की तरह
हम यह लडाई भी जीते।"**

स्वागत है। अभिनन्दन हे।

प्रधान, सरपच एव मदस्यगण
पचायत समिति, रानी (पाली)

**फूटरमल के जैन, (देवली - पाबूजी) का
आजादी के वीरो को शत् शत् वन्दन ।**

सौजन्य

पाली हार्डवेयर एण्ड इलेक्ट्रिक स्टोर्स

7, सिल्वर क्राफ्ट पाली मालरोड बाद्रा बम्बई- 400 050
टेलीफोन 540 655

**"झण्डा ऊँचा रहे हमारा,
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा"**
घाणेराव के स्वातन्त्र्य वीरो की
पावन-स्मृति को लाखो वंदन ।

मैसर्स सिन्थेटिक्स सप्लायर्स

107 ताँबा काँटा बम्बई-2
टेलीफोन 326132/337121
रायचंद पारेख (घाणेराव)

स्वतंत्रता सेनानियो के बलिदानो से प्राप्त आजादी को सुरक्षित रखने हेतु
पाली जिले के सर्वांगीण विकास के लिए कृत सकल्प

दी पाली सेन्ट्रल को ऑपरेटिव बेक लि पाली

प्रधान कार्यालय - पाली (मारवाड)

रघुवीर सिंह भाटी
प्रबंध संचालक

भवानी मिह
अध्यक्ष

पचायत समिति, पाली

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बँक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आईचिया	768	-	प्रा वि	-	-	-	-
2	आकडावास कला च खुर्द	616	-	प्रा वि	-	-	-	स बँ
3	आकेती	544	-	प्रा वि	-	-	-	-
4	याला	1088	-	प्रा वि	चि	-	-	-
5	वालेलाव	592	-	प्रा वि	-	-	-	सह बँ
6	बाम्बोलाई	242	-	प्रा वि	-	-	-	-
7	वाणियावास	471	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
8	माणेसर	973	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	सह बँ
9	भालेलाव	665	-	प्रा वि	-	-	-	सह बँ
10	भाँवरी	2324	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बँ
11	भावनगर	287	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	बुसादडा	640	-	प्रा वि	-	-	-	-
13	बुपवाडा	520	-	प्रा वि	-	-	-	-
14	डते	1166	ग्रा प	क प्रा वि./उ प्रा	-	-	डाक	सह बँ
15	दयालपुरा	1536	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	सह बँ
16	डोंगाई	1828	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	सह बँ
17	डेडा	2299	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	मा ग्रा बँ
18	गिरादडा जागीर	1461	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	सह बँ
19	गिरदडा खानेला	-	-	उ प्रा वि	-	-	टेली	-
20	गोरावास	1042	-	प्रा वि	-	-	-	-
21	गुन्दोरा	4154	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मह बँ
22	गुरडाई	1296	-	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
23	गुज बिच्छु	511	-	प्रा वि	-	-	-	-
24	गुडा पैदला	4074	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बँ
25	गुडा गिरधारी	30	-	-	-	-	-	-
26	गुडानाखा	493	-	प्रा वि	-	-	-	-
27	गुडा प्रतापरिह	362	-	प्रा वि	-	-	-	-
28	गुडा सोनगिरा	226	-	प्रा वि	-	-	-	-
29	हेमावास	2321	ग्रा प	उ प्रा वि./प्रा क वि	-	-	डाक	सह बँ
30	जेतपुरा	1023	-	प्रा वि	-	-	-	-
31	जवडिया	1195	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
68	सुन्देलाव	329	-	प्रा वि	-	-	-	-
69	टेवाली कला	1102	प्रा प	क प्रा वि	-	-	-	-
70	टेवाली खुर्द	1288	प्रा प	उ प्रा वि/क वि	चि आ	-	डाक	सह बै
71	ठाकुरला	1200	प्रा प	उ प्रा वि/प्रा क वि	-	-	टेली	-
72	उतवन	879	-	प्रा वि	-	-	-	-
73	पाली नगर	136842	नगर- परिषद्	खा म वि/सो हा से वि	चि मु चि/ ई एस आई	चि	मु डाक मु टेली	एस बी बी जे रा बै बै आफ ई सह बै
74	हाथलाई	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
75	तोडावास	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
76	केनपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
77	बठेरावास	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
78	शिवपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
79	रामपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
80	इन्द्रानगर मठ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
81	निम्बाडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
82	आईजी की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
83	बरूदो की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
84	घून्टी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
85	भाटो की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
86	चवरो जी की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
87	राहजी की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
88	एन्दलावास	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
89	रामपुरा ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
90	बाला की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
91	गिरवर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
92	सुभाषनगर सोडावास	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियो रहा है दुश्मन दौरै जहाँ हमारा'

हार्दिक अभिनन्दन! स्वतंत्रता के महान् सपूतो का ।

- निवेदक -

अध्यक्ष एव पार्षद

नगर परिषद्, पाली

पचायत समिति, रोहट

क्रम संख्या	नाम ग्राम/कगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पंचा या न पंचा	विद्यालय	चिकित्सालय		हाथ पर /टलीपान	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आरण	442		प्रा.वि				
2	आरिया	1234		प्रा.वि			रेला	
3	बाणदियां	1264		प्रा.वि				
4	बन्डाई	582	-	प्रा.वि				
5	बस्ती	446		प्रा.वि				
6	बथद	1470	प्रा.पं	उ.प्रा.वि	वि.आ		डाक/रेला	सह.बैं.
7	बीरू	1581	प्रा.पं	उ.प्रा.वि			डाक	सह.बैं.
8	भयरी कला	1405	प्रा.पं	प्रा.वि			रेला	सह.बैं.
9	बीजा	1223		प्रा.वि				सह.बैं.
10	भौण्डर	353	-	प्रा.वि				
11	भूसायनी	317	-	प्रा.वि	-	-		
12	चोटलीव	1005	-	प्रा.वि				
13	चेन्डा	1841	प्रा.पं	उ.प्रा.वि./क.प्रा.	वि.	-	डाक/रेला	सह.बैं.
14	चोटीला	1966	प्रा.पं	प्रा.वि	-	-	डाक	सह.बैं.
15	दानासनी	306	-	प्रा.वि	-	-	-	-
16	देवाण	729	-	प्रा.वि	-	-	-	-
17	दाबर कला व खुर्द	1514	प्रा.पं	मा.वि./प्रा.वि	वि.आ		डाक/रेला	सह.बैं.
18	धर्मधारी	792	-	उ.प्रा.वि	-	-	-	-
19	धिगाना	620	-	उ.प्रा.वि	-	-	-	-
20	धोलेरीया जागीर	694	-	प्रा.वि	-	-	-	-
21	धोलेरीया शासन	688	-	प्रा.वि	-	-	-	-
22	धुधली	387	-	प्रा.वि	-	-	-	-
23	दिवान्दी	1325	प्रा.पं	उ.प्रा.वि./क.प्रा.वि	-	-	डाक	सह.बैं.
24	दूदीया	829	-	प्रा.वि./क.प्रा.वि	-	-	डाक	-
25	दूदलो	738	-	प्रा.वि	-	-	-	-
26	गठवाडा	1625	प्रा.पं	उ.प्रा.वि./क.प्रा.वि	-	-	डाक	सह.बैं.
27	गरवालिया	494	-	प्रा.वि	-	-	-	-
28	गैलावास	411	प्रा.पं	उ.प्रा.वि./क.प्रा.	-	-	डाक	सह.बैं.
29	हजाणा	236	-	प्रा.वि	-	-	-	-
30	हीरावास	157	-	प्रा.वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
31	जेतपुर	1892	-	मा वि./प्रा.वि	-	-	डाक	-
32	झोबडा	2121	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा प्रा व सह व
33	कलाली	1125	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	सह व
34	कानावास	223	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
35	खाण्डा	977	ग्रा प	उ प्रा.वि	-	-	-	सह व
36	खारहा	2037	-	प्रा वि	-	-	-	-
37	खेडा खुर्द	303	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
38	गाण्डावास	886	-	प्रा वि	-	-	-	-
39	खुराणो	1948	-	प्रा.वि	-	-	-	सह व
40	कुलमान	992	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	सह व
41	कुण्डली चारनौन	141	-	प्रा वि	-	-	-	-
42	लालकी	1068	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	लाम्बदा	421	-	प्रा.वि	-	-	-	-
44	फाडपुरीया	1758	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	मालवा	421	-	प्रा.वि	-	-	-	-
46	माडावास	2731	ग्रा प	मा वि./प्रा.वि	वि	वि	डाक/टेली	मा प्रा व सह व
47	भडली दरजोयान	1040	-	प्रा वि	-	-	-	-
48	मुकनपुरा	472	-	प्रा वि	-	-	-	-
49	मोदीया	524	-	प्रा वि	-	-	-	-
50	मुरदीफ	629	-	प्रा.वि	-	-	-	-
51	निम्बली बामणाट	473	-	प्रा वि	-	-	-	-
52	निम्बली पटेलान	631	-	प्रा वि	-	-	-	-
53	नेहडा	410	-	प्रा.वि	-	-	-	-
54	पचपदीत	1057	-	उ प्रा.वि	-	-	-	-
55	पाती	764	-	प्रा.वि	-	-	-	-
56	फैजागीया	580	-	प्रा.वि	-	-	-	-
57	पुखारा	291	-	प्रा.वि	-	-	-	-
58	राजाना	357	-	प्रा.वि	-	-	-	-
59	राणा	2028	-	उ प्रा.वि./क.प्रा.वि	-	-	-	-
60	रोहट	3414	ग्रा प	उ प्रा.वि./क.उ.प्रा.वि/प्रा	वि	वि	डाक टेली	मा प्रा व सह व
61	माजी	472	-	प्रा.वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
62	सखनाता कला	744		प्रा.वि				-
63	सखलाता खुर्द	909	-	उ प्रा वि				-
64	सोदीया	626		उ प्रा वि				-
65	सिणगारी	805		प्रा वि				-
66	सिराणा	866		प्रा वि				
67	सेनाई लखवा	1706		प्रा वि				-
68	सुकरलाई	415		प्रा वि				
69	सिगा उर्फ रामपुरा	873		प्रा वि				
70	उमरुली	668		प्रा वि				
71	इन्दरा उदरा	576		प्रा.वि				
72	डूगरपुर			प्रा वि				
73	विशनेई की ढाणी			प्रा वि				
74	विपलिया फी ढाणी			प्रा.वि				
75	दादीया	-		प्रा वि				
76	चवराणा की ढाणी			प्रा.वि				
77	केरला	-		प्रा वि				
78	काला पीपन ढाणी		-	प्रा वि				
79	सरदारसमद फार्म			प्रा वि				-
80	सरदारपुरा की ढाणी			प्रा वि				-
81	साँों की ढाणी	-		प्रा वि				
82	भीनों की ढाणा	-	-	प्रा वि				-
83	पाटा की ढाणी	-	-	उ प्रा वि			-	-
84	इन्ड्रीका की ढाणी	-	-					

**“शहीदों की चिताओं पर लगेगे हर बरस मेले,
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशा होगा”**

श्री शातीलाल टी जैन (मेवाडी वाला)

राष्ट्र के शहीद सपुत्रों को कोटि कोटि बदन करते ह।

मेसर्स तारोबा - पेन्स, यॉयज एण्ड क्लासिक युनिट

14 हरिभुवन, एस एल रोड, मुलुन्ड (पश्चिम), बम्बई- 400 080

पंचायत समिति, रायपुर

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पंचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आकेली	855	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
2	अमरगढ	101	-	-	-	-	-	-
3	अमरपुरा	541	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
4	आसन जिलेलाव	489	-	-	-	-	-	-
5	आसन विलारिया	326	-	-	-	-	-	-
6	बावरा	8401	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं सह बैं
7	बगियाडा	1058	-	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
8	बगडी	1846	-	प्रा वि	-	-	-	बैं
9	बासीया	2457	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
10	बर	4088	ग्रा प	मा वि/क प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
11	बासनी दूध वाडिवा	370	-	प्रा वि	चि आ	-	टेली	-
12	बासनी कवीया	611	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
13	बीर बासनी	-	-	-	-	-	-	-
14	बीसावास कला	16	-	-	-	-	-	-
15	बीसावास खुर्द	-	-	-	-	-	-	-
16	बेलपना	375	-	प्रा वि	-	-	-	-
17	मोचरडी	853	-	प्रा वि	-	-	-	-
18	बिरारिया कला	2149	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
19	बिरारिया खुर्द	3322	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	भा स बैं
20	बोगासनी	66	-	-	-	-	-	-
21	बुढीवास	1598	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
22	चैनपुरा	278	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	दीपावास्त	853	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
24	चौग	3072	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	मा ग्रा बैं ग्रा स स
25	चावन्डिया कला	165	-	-	-	-	टेली	-
26	चावन्डिया खुर्द	538	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
27	चित्ताड	3210	ग्रा पं	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
28	दीपावास्त चक	94	-	-	-	-	-	-
29	देवली कला	5034	ग्रा प	मा वि/क प्रा/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	ग्रा मा बैं ग्रा स स

1	2	3	4	5	6	7	8	9
30	दवली खुर्द	176	-	-	-	-	-	-
31	धोलिया	613	-	प्रा वि	-	-	-	-
32	धूलकोट	1168	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
33	गिरी	4598	ग्रा प	मा वि./क प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा वें ग्रा स स
34	फताखेडा	296	-	प्रा वि	-	-	-	-
35	गुडिया	980	-	प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
36	हाजीवास	1290	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
37	जमालपुरा	431	-	प्रा वि	-	-	-	-
38	जैतपुरा	404	-	प्रा वि	-	-	-	-
39	झूझ	3359	ग्रा प	मा वि./क प्रा./ग्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा वें ग्रा स स
40	कालच कला	1466	-	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
41	कालच खुर्द	929	-	प्रा वि	-	-	-	-
42	काला कोट	373	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	कलालियाँ	2067	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	-
44	काणेया खुर्द	301	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	कानपुरा	338	-	प्रा वि	-	-	-	-
46	कानुआ	2566	ग्रा प	उ प्रा वि./क प्रा	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
47	करभावाम	1586	-	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
48	केसरपुरा	593	-	प्रा वि	-	-	-	-
49	खेडा सागनोतात	-	-	-	-	-	-	-
50	कोट कोरण	1826	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	-	ग्रा स स
51	कोरडी	-	-	-	-	-	-	-
52	कुशतीया	169	-	-	-	-	-	-
53	कुशा नपुरा	7485	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	मा ग्रा वें ग्रा स स
54	खरखीना पन्ना	-	-	-	-	-	-	ग्रा स स
55	लालपुरा	235	-	प्रा वि	-	-	-	-
56	लराचा	1268	-	प्रा वि	-	-	-	-
57	लावामाली	44	-	-	-	-	-	-
58	लीलाम्या	2033	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	ग्रा स स
59	मारुईवाली	253	-	-	-	-	-	-
60	मालनी	466	-	प्रा वि	-	-	-	-
61	मानपुरा	489	-	-	-	-	-	-
62	मेगदडा	765	-	-	-	-	-	-
63	मेसीया	1188	-	उ प्रा	-	-	डाक	-
64	मोहरा कला	1491	ग्रा प	उ प्रा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स

1	2	3	4	5	6	7	8	9
65	मोहरा खुर्द	490	-	प्रा वि	-	-	-	-
66	नानगा	2260	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
67	नोख	477	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
68	निम्बेडा कला	2945	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	-	डाक/टेली	ग्रा स स
69	पचानपुर	1171	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	ग्रा स स
70	पोपलिया	4275	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	ग्रा स स सह वै
71	रामावास	653	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
72	रामगढ	395	-	प्रा वि	-	-	-	-
73	रामगढ सेडोतान	906	-	-	-	-	-	-
74	रामपुर कला	1385	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
75	रावणिया	502	-	प्रा वि	-	-	-	-
76	रेलडा	1075	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	टाक	-
77	सबलपुर	745	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
78	सबलपुर	364	-	प्रा वि	-	-	-	-
79	सराधना	410	-	प्रा वि	-	-	-	-
80	सिंगला	1136	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
81	सीरमा	877	-	प्रा वि	-	-	-	-
82	सैदडा	1491	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	मा ग्रा वै ग्रा स स
83	शाहपुर	50	-	-	-	-	-	-
84	शेरगढ	63	-	-	-	-	-	-
85	सोडपुर	1018	-	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	-	-
86	सुमेन	6788	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा वै ग्रा स स
87	रायपुर	12582	न पा	उ मा वि/उ प्रा/क प्रा	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा वै/प्रा स स/रा वै
88	रामसागर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
89	धौली घोडा	490	-	प्रा वि	-	-	-	-
90	खेडा मामावास	755	-	प्रा वि	-	-	-	-
91	नाहरपुर गिरी	720	-	प्रा वि	-	-	-	-
92	कुण्डाल	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
93	झाडली	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
94	झाला की चौकी	375	-	प्रा वि	-	-	-	-
95	भैरू का नाका	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
96	काया धील	297	-	प्रा वि	-	-	-	-
97	भीतडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
98	सादों की प्याऊ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

पचायत समिति, सोजत

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पंचा या न या	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	अबकाई की ढाणा	518	-	प्रा वि	-	-	-	-
2	अजीतपुरा	441	-	प्रा वि	-	-	-	-
3	आलावास	918	-	प्रा वि	-	-	-	-
4	अरबडा	4740	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
5	बागावास	1188	-	प्रा वि	-	-	-	-
6	बगडो नगर	9494	ग्रा प	उ मा वि/एस टी सी/क प्रा	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
7	बरियाला	225	-	प्रा वि	-	-	-	-
8	बासणा	1762	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
9	बासणी अनन्त	99	-	-	-	-	-	-
10	बासणी भदावतान	455	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
11	बासणी जोधराज	677	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	बासणी मूथा	239	-	प्रा वि	-	-	-	-
13	बासणी नरठोंग	567	-	-	-	-	-	-
14	बासणी सुरायत	81	-	-	-	-	-	-
15	बासणी तिरडियान	176	-	प्रा वि	-	-	-	-
16	बीलावास	3370	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
17	भसाणा	1454	ग्रा प	प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	ग्रा स स
18	माणिया	730	-	प्रा वि	-	-	-	-
19	बिजलियावास	499	-	प्रा वि	-	-	-	-
20	बीजपुर	694	-	प्रा वि	-	-	-	-
21	बिरावास	249	-	-	-	-	-	-
22	बोपल	875	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	बुटेलाल	785	-	प्रा वि	-	-	-	-
24	चामडियाक	468	-	प्रा वि	-	-	-	-
25	चन्दासनी	361	-	प्रा वि	-	-	-	-
26	चडावल	4796	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	ग्रा स स
27	चाडवास	1324	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
28	छीतरिया	797	-	प्रा वि	-	-	-	-
29	चोपडा	1206	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक	ग्रा स स
30	चुन्दलाई	686	-	प्रा वि/क प्रा	-	-	-	-
31	दादी	323	-	प्रा वि	-	-	-	-
32	देवली हुल्ला	1036	-	उ प्रा वि	-	-	-	ग्रा स स

“आजादी के वीरो की अमर गाथा गूँजती
रहे ओर प्रेरणा देती रहे।”

मैसर्स मालवीय एग्रिको
एव
मालवीय इन्जिनियरिंग कम्पनी
पो रानी, पाली (राजस्थान)

स्वतंत्रता सेनानियो का
हार्दिक अभिनंदन ।

मैसर्स सुराणा इण्डस्ट्रीज
आधोगिक बस्ती,
पो रानी (पाली - राजस्थान)

आजादी के दीवाने स्वर्गीय भैरूमलजी एव रानी
क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियो को शत् शत् वदन ।

मैसर्स भेसायर माइनिंग कारपोरेशन
3, आधोगिक बस्ती,
पो रानी (पाली - राजस्थान)

आजादी ओर ग्राम विकास के लिए
समर्पित महानुभावो का अभिनन्दन ।

सागरमल जैन (ग्राम विजोवा)
तथा
मैसर्स एम महिपाल टेक्सटाइल्स
34-सी देवी मराडी मारकेट, तीसरा माला
सी टो स्ट्रीट बेंगलोर- 560 002
फोन 222654

स्वतंत्रता सग्राम के वीरो का अभिनन्दन ।

मोहनराज चन्दनमलजी जैन
मैसर्स भूपेन्द्र अम्ब्रेला मेन्यु कम्पनी
21/22 महोदव शकर रोड लेन, चीरा बाजार
चम्बई- 400 002
दूरभाष - 256918

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा

मैसर्स फूटरमल अचलचद
रानी (पाली - राजस्थान)
मैसर्स सर्वोदय ट्रेडिंग कम्पनी
रानी (पाली - राजस्थान)
टेलीफोन - 284/14 कार्यालय 275/4 निवाम

आजादी के वीरो का हार्दिक अभिनन्दन

मेसर्स अजीत कुमार उमरावचद, ज्वैलर्स

(बालराई वाला)

2 दाऊदअली बिरिङ्ग

एस बी रोड अघेरी (पश्चिम)

बम्बई- 400 058

टेली 626857

ग्राम खोड के स्वतंत्रता सेनानियो
का हार्दिक अभिनन्दन ।

लालचद सचेती

मेसर्स सत्कार ज्वैलर्स

37 अब्दुल्ला बिल्डिंग डा अम्बेडकर रोड,

परेल, बम्बई-12

टेली 4131946 4135747

चेनाराम पन्नाजी चौधरी- ग्राम गुढाजंतसिह
स्वतंत्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन करता है

सौजन्य

मेसर्स चौधरी प्लास्टिक एण्ड एस्टेट

आइ बी पटेल रोड, गरिगाँव

बम्बई-400 063

टेलीफोन 683384

शहीदो की चिताओ पर लगेगे हर बरस मेले,
वतन पर मिटने वालो का यही बाकी निशा होगा।

निवेदक

रामनिवास परिहार

उदय सागर कृषि फार्म

मु पो घूसी-वाया - सोमेसर

टेली - 3 (सोमेसर)

किसानो के सामती जुल्पो से मुक्ति-सघर्ष
के शहीदो का हार्दिक अभिनन्दन ।

मेसर्स एम पी एन्टरप्राइजेज

7 गोरया मार्केट डी के लेन चिक पेठ क्रॉस,

बंगलार- 560 053 टेलीफोन - 77726

निवेदक

सीखी मेघाराम गुलाजी (पो इन्दरवाडा) टेली 57

देवली-पाबूजी के स्वतंत्रता सेनिको का
हार्दिक अभिनन्दन ।

निहालचद परमार (देवली-पाबूजी)

मैसर्स परमार ट्रेडर्स

63 डी के लेन, चिकपेठ क्रॉस,

बंगलार-560 053 (कर्नाटक)

“आजादी प्राप्त करना देशभक्तों का काम था तो
आजादी की सुरक्षा हेतु ग्राम स्वावलम्बन और
ग्राम स्वराज्य का कार्य करना कम देशभक्ति नहीं”
सभी कर्मवीरों को शत्रु शत्रु वन्दन करते हैं ।

अध्यक्ष एवं सदस्यगण

सधन क्षेत्र योजना समिति, खीमेल
पो विद्यावाडी (रानी) जिला- पाली

आजादी के सिपाही और अब
ग्राम विकास के कर्णधार

श्री मीठालाल आर जेन (कोसेलाव)
अध्यक्ष, जिला परिषद, भाईदर (जिला थाणा- महाराष्ट्र)

का

देश की आजादी के लिए बलिदान देने वालों का
शत्रु शत्रु वन्दन ।

सादडी और गोडवाड़ के
वीर सेनानियों का अभिनन्दन ।

सौजन्य

मेसर्स नथमल निहालचंद

700, गोविन्द चौक, मूलजी जेठा मार्केट
बम्बई-2

विनीत कालीदास राठोड (सादडी)

‘स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है’
- लोकमान्य तिलक की इस अमर वाणी पर
बलिदान देने वालों का हार्दिक अभिनन्दन ।

मेसर्स रुपम ट्रेडर्स

10 विकास बिल्डिंग सायन ट्राम्पे रोड चेम्पूर बम्बई-71
रायचंद जी शाह जगदीश शाह उमेश कुमार शाह किशोर शाह
(जवाली निवासी)
टेली 526515/526508/525769

खीमेल ग्राम के परम राष्ट्र भक्त व स्वतंत्रता सेनानी
स्वर्गीय प्रेमराज जी मेहता की पुण्य स्मृति मे

- सौजन्य -

चुन्नीलाल मेहता, नोरतन मेहता

मेसर्स एन सी मेहता एण्ड कम्पनी

रानी स्टेशन (पाली)
टेलीफोन 2040

‘इकलाब जिन्दाबाद’ उद्घोष के साथ हैंसते हैंसते
फासी के फंदे से लटकन वाले वीरों को शतश नमन ।

मै वी शातिलाल एण्ड कम्पनी

48, मिर्जा स्ट्रीट, बम्बई-3
सौजन्य - विमलचंद पन्नालाल राठौर (त्रिजोवा वाले)
105 धनजी स्ट्रीट, बम्बई-3
टेलीफोन 320498

सादडी के स्वतंत्रता सघर्ष के वीर सपूतो को
कोटि कोटि वन्दन !

सौजन्य

मूलचद पुनमिया (सादडी वाला)

मेसर्स नरेन्द्र प्लास्टिक्स

3-बकील इन्डस्ट्रियल एस्टेट, वालभाट रोड,
गौरगाँव (पूर्व), बम्बई- 400 083
टेली 685791

रुष्ट की आजादी के लिए सर्वस्व समर्पित करने
वालो का हार्दिक अभिनन्दन !

सौजन्य

मैसर्स चेनाजी नरसिंहजी

7, दागीना बाजार,
122, मुम्बादेवी रोड, बम्बई-400 002

आजादी के शहीदो का शत-शत वन्दन !

सौजन्य

मेसर्स राजा टेक्सटाइल्स

112, पीपलवाला बिल्डिंग,
4-माला वडगादी, बम्बई-400 003
छोटमल मेहता (नाडोल)

महान् स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, कवि और
समाज सुधारक स्वर्गीय श्री धीरजमल जी बच्छावत
की पुण्य स्मृति में

मैसर्स वी सी बी. केमिकल्स (इंडिया)

पूनमाजी एस्टेट, धोबीघाट, दूधेश्वर रोड,
अहमदाबाद-4 टेली 332250/25600
विमल डी बच्छावत - सादडीवाला

स्वतंत्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनदन !

सौजन्य

**मेसर्स एम रितेश एण्ड क
श्री मानदेव सिल्क मिल्स
एम पारसमल एण्ड क
मोहनमल नवरतनमल एण्ड क**

7/9, विठ्ठलवाडी, बम्बई-400 002
पारसमल मेहता - नाडोल निवासी

“शहीदो के बलिदान से मिली हे महगी आजादी
अब सर्वांगीण विकास से करनी हे उसकी सुरक्षा”

साजन्य

मेसर्स मोहनमल रतनमल एण्ड क

7/9, विठ्ठलवाडी बम्बई-400 002

“दिये जो तुमने जलाये हैं खून से अपने
उन्हे जमाने की आधी बुझा नहीं सकती।”

- सौजन्य -

सरदारमल पी जेन
धर्मेंश, एस जेन

जवाहर टाकिज, मुल्ड (परिचम),
बम्बई-400 080

समाज सेवा के लिए समर्पित व्यक्तित्व
स्वर्गीय श्री मिश्रीमलजी सिधवी (घाणेरव)
की याचन स्मृति मे
कातिलाल बाबूलाल, पकज कुमार, भरत कुमार

सौजन्य

मेसर्स मिश्रीमल कातिलाल एण्ड क

193 न्यू क्लथ मार्केट, अहमदाबाद-1
दूरभाष-360540/361096/441924

“सारे जहा से अच्छा, हिन्दोसता हमारा, हम बुलबुले ह इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा”
राष्ट्र की आजादी और एकता पर बलिदान होने वाले वीर सेनिको का हार्दिक अभिनन्दन !

सौजन्य

मेसर्स सेक्सोनिया वॉच कम्पनी

सर फिरोजशाह मेहता रोड फोर्ट, बम्बई-400 004 दूरभाष 2042849

निवेदक

हीरालाल, शातिलाल, महेन्द्र कुमार, जयतिलाल (धिजोवा वाले)

राष्ट्र की आजादी के शहीद सपूतो को
भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं -

डॉ एम रामनाथ, एम एस-सी, पी-एच डी

मेसर्स विजय केमिकल इण्डस्ट्रीज

61 मगाडी रोड बैंगलोर- 560 079

दूरभाष 353482

“शहीदो की चित्ताओ पर लगेगे हर बरस मेले
वतन पर मिटने वालो का यही वाकी निशा होगा”

सुरेश गेमावत के कोटिश वन्दन !

सौजन्य

मेसर्स कर्नाटक फीड्स कार्पोरेशन

ए-313 पीनीया इण्डस्ट्रीयल एरिया ॥ स्टेज

बैंगलोर-560 058 टेलीफोन-384916

“गलत न होगा, अगर ये कहूँ तुम्हारे लिये, के तुमने मरके नई हमको जिन्दगी दी है।
बुझाके पहले पहल अपनी जिन्दगी का चरण वतन के बुझते चिरागो को रोशनी दी है।”

सौजन्य

मेसर्स वेकटेश्वर पेकेजिग्स

329/330 4 मेन 9 क्रोस, पीनिया औद्योगिक बस्ती बैंगलार (कर्नाटक) टेलीफोन 385733/385751

चॉयम प्रिन्टर्स

28 क्रोस किलारी रोड बैंगलार (कर्नाटक)

सादडी के स्वतंत्रता सघर्ष के वीर सपूतो को
कोटि कोटि वन्दन ।

सौजन्य

मूलचद पुनमिया (सादडी वाला)

मेसर्स नरेन्द्र प्लास्टिक्स

3-वकील इन्डस्ट्रियल एस्टेट, बालभाट रोड,
गौरगाँव (पूर्व), बम्बई- 400 083
टेली 685791

गुष्ट की आजादी के लिए सर्वस्व समर्पित करने
वालो का हार्दिक अभिनन्दन ।

सौजन्य

मैसर्स चेनाजी नरसिंहजी

7, दागीना बाजार,
122, मुम्बादेवी रोड, बम्बई-400 002

आजादी के शहीदो का शत्-शत् वन्दन ।

सौजन्य

मेसर्स राजा टेक्सटाइल्स

112, पीपलवाला बिल्डिंग,
4-माला वडगादी, बम्बई-400 003
छोटमल मेहता (नाडोल)

महान् स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, कवि और
समाज सुधारक स्वर्गीय श्री धीरजमल जी वच्छावत
की पुण्य स्मृति मे

मेसर्स वी सी बी केमिकल्स (इंडिया)

पूनमाजी एस्टेट, घोवीघाट, दूधेश्वर रोड,
अहमदाबाद-4 टेली 332250/25600
विमल डी वच्छावत - सादडीवाला

स्वतंत्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनदन ।

सौजन्य

**मेसर्स एम रितेश एण्ड क
श्री मानदेव सिल्क मिल्स
एम पारसमल एण्ड क
मोहनमल नवरतनमल एण्ड क**

7/9, विठ्ठलवाडी बम्बई-400 002
पारसमल मेहता - नाडोल निवासी

“शहीदो के बलिदान से मिली है महगी आजादी,
अब सर्वांगीण विकास से करनी हे उसकी सुरक्षा”

सौजन्य

मेसर्स मोहनमल रतनमल एण्ड क

7/9 विठ्ठलवाडा, बम्बई-400 002

पाली जिले की प्रशासनिक व्यवस्था

उपखण्ड	चार	वाली, पाली, सोजत, जेतारण
तहसील	सात	जैतारण, रायपुर, सोजत, पाली, मारवाड-जक्शन, देसूरी, वाली
पंचायत समिति	दस	वाली, पाली, सोजत, रानी, देसूरी, खारची (मारवाड जक्शन), रायपुर, जेतारण, रोहट, सुमेरपुर,
ग्राम पंचायते		दो सौ निम्नानवे
नगर पालिकाए	ना	पाली, सुमेरपुर, फालना, रानी, सोजत, जेतारण, नीमाज, सादडी, तखतगढ
नगर परिषद्	एक	पाली
बडे कस्ये	तीन	रायपुर, सोजत रोड, मारवाड-जक्शन

जिले का मानचित्र →

